प्रकाशक:
जे. सी. सेठी, सेक्रेटरी
राधास्वामी सत्संग ब्यास
डेरा बाबा जैमल सिंह
पंजाब 143 204

पहला संस्करण 1959

दसवाँ संस्करण 2015

मुद्रक: थॉम्सन प्रेस (इंडिया) लि

Originally published in Punjabi

Published by:
J.C. Sethi, Secretary
Radha Soami Satsang Beas
Dera Baba Jaimal Singh
Punjab 143 204

First edition 1959

Tenth edition 2015

20 19 18 17 16 15 8 7 6 5 4 3 2 1

ISBN 978-81-8466-417-1

Printed in India by: Thomson Press (India) Ltd.

विषय सूची

प्रकाशक की ओर से

श्री हुज़ूर महाराज बाबा सावन सिंह जी द्वारा पंजाबी भाषा में लिखे गए ग्रंथ *गुरुमत सिद्धांत* का हिंदी अनुवाद परमार्थ के जिज्ञासुओं के लिए मूल रूप में दो भागों में छपवाया गया था। बहुत समय से इस ग्रंथ के दोनों भाग समाप्त हो चुके थे। अब अनुवाद की भाषा को सरल करके नया संस्करण संगत की सेवा में प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आशा है कि पाठक इसमें प्राप्त उपदेश से पूरा लाभ उठाएँगे।

डेरा बाबा जैमल सिंह,
ज़िला अमृतसर (पंजाब) 143 204
अप्रैल, 2002

सेवा सिंह
सेक्रेटरी
राधास्वामी सत्संग ब्यास

पाठकों से निवेदन

बानी का सही उच्चारण

गुरबानी

अकसर देखने में आया है कि हिंदी पाठक श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की बानी (गुरबानी) का शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते हैं। गुरबानी मूल रूप में गुरमुखी लिपि में लिखी गई है। इसमें कई शब्दों के अंत में ह्रस्व इ (ि) और ह्रस्व उ (ु) की मात्राओं का प्रयोग किया गया है। यह प्रयोग केवल व्याकरण की दृष्टि से है; बानी पढ़ते समय इन मात्राओं का आमतौर पर उच्चारण नहीं किया जाता। हिंदी पाठक बड़े प्रेम से गुरबानी का पाठ या गायन करने का यत्न करते हैं, लेकिन इन मात्राओं और कुछ अन्य अपरिचित हिज्जों (स्पेलिंग) के कारण अनजाने में उच्चारण ग़लत हो जाता है। हम श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का पूरा सम्मान करते हैं। हम चाहते हैं कि पाठक बानी का उच्चारण ग़लत न करें। इसलिए गुरबानी का रूपांतर देवनागरी लिपि में करते समय ये ह्रस्व मात्राएँ हटा दी गई हैं और अन्य कुछ परिवर्तन कर दिए गए हैं ताकि हिंदी भाषा के पाठक गुरबानी का सही उच्चारण कर सकें।

उदाहरण के रूप में:

मूल रूप: कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु॥
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु॥
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु॥

उच्चारण रूप: कुदरत पउण पाणी बैसंतर कुदरत धरती खाक॥
सभ तेरी कुदरत तूं कादिर करता पाकी नाई पाक॥
नानक हुकमै अंदर वेखै वरतै ताको ताक॥

यहाँ यह बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इन मात्राओं का प्रयोग पढ़ने में भले ही नहीं होता, लेकिन गुरबानी में इन मात्राओं का व्याकरण और अर्थ की

दृष्टि से विशेष महत्त्व है। गुरु साहिबान के संदेश को अधिक गहराई से समझने के इच्छुक गुरबानी का मूल रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

हिंदी बानी

हिंदी बानी में कहीं-कहीं 'ख' वर्ण को 'ष' लिखा जाता है – जैसे देषि, मूरिष, पंषी। लेकिन इन शब्दों का उच्चारण देखि, मूरिख, पंखी किया जाता है। इसलिए सही उच्चारण की दृष्टि से इस पुस्तक में आवश्यकतानुसार 'ष' के स्थान पर 'ख' वर्ण का प्रयोग किया गया है।

प्रकाशक

भूमिका

रूहानियत और धर्म

परमात्मा ने मनुष्य बनाए; धर्मों की स्थापना बाद में हुई। मनुष्य धर्म के लिए नहीं बनाए गए थे, लेकिन धर्म मनुष्य की आत्मिक उन्नति के लिए बनाए गए थे ताकि वे उस परम आनंद का अनुभव कर सकें जो केवल परमात्मा से मिलाप करने पर होता है।

आजकल नई सुविधाओं, भौतिक प्रगति, बुद्धि की उपलब्धियों और बढ़ते हुए नैतिक तथा धार्मिक संगठनों के होते हुए भी मनुष्य ख़ुश नज़र नहीं आता। लाखों लोग अपने आपसे और जीवन की दौड़-धूप से संतुष्ट नहीं हैं, उनके लिए जीवन नीरस है। उनमें से हर एक अपने आप को एक या दूसरे धर्म को माननेवाला कहता है – कोई हिंदू, कोई मुसलमान, कोई सिक्ख, कोई ईसाई, कोई बौद्ध, कोई जैन आदि। लेकिन उनमें से बहुत कम ऐसे लोग हैं जिन्हें जीवन से वह संतुष्टि मिलती है जिसकी उन्हें चाह है।

प्रत्येक धर्म का बाहरी स्वरूप दूसरे धर्मों के स्वरूपों से अलग लगता है लेकिन वास्तव में पूरी इनसानियत के लिए केवल एक ही धर्म है। अगर प्रत्येक धर्म की तह तक पहुँचा जाए तो एक ही मार्ग और एक ही नियम सब धर्मों की बुनियाद में काम करता नज़र आता है। मनुष्य होने के नाते हम सब एक ही मानव जाति के हैं और हमारी प्रेरणा का स्रोत, हमारा अंदरूनी आधार भी एक ही है।

सब मनुष्य समान हैं

मालिक ने मनुष्य पैदा किए। वे सिक्ख, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध आदि बाद में बने। आज से पाँच सौ साल पहले सिक्ख नहीं थे, चौदह सौ साल पहले मुसलमान नहीं थे। दो हज़ार साल पहले ईसाइयों का नामोनिशान नहीं था और तीन हज़ार साल पहले बौद्धों का कहीं पता न था। आर्यों के हिंदुस्तान में आकर बसने और हिंदू धर्म का अनुसरण करने से पहले भी कई कौमें अपनी धार्मिक और सामाजिक रीतियों के साथ यहाँ आकर जा चुकी थीं।

ज़ाहिर है कि सभी मनुष्य, क्या पूर्व के और क्या पश्चिम के, समान हैं और समान ही रहे हैं। मालिक की दुनिया में कोई ऊँची या नीची जाति का नहीं क्योंकि सबके अंदर आत्मा है, जो मालिक का अंश है:

कहो कबीर इह राम की अंस॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.871

सच्चा धर्म क्या है

सच्चा धर्म क्या है? यह प्रश्न समय के शुरू से मनुष्य के अंदर उठ रहा है। इस विषय पर अनेक किताबें और धर्म ग्रंथ लिखे गए हैं। कोई इसका उत्तर कुछ देता है तो कोई कुछ। लेकिन एक प्रश्न का तो केवल एक ही ठीक उत्तर हो सकता है। जिस तरह तीरंदाज़ तो अनेक हो सकते हैं, परंतु उनका निशाना एक ही होता है, उसी तरह सभी धर्म इस बात पर सहमत हैं कि उनका मुख्य उद्देश्य एक ही है और वह है परमात्मा से मिलकर परम सुख की प्राप्ति करना।

प्रभु से प्रेम करते हुए हमें उसकी रची हुई सृष्टि से प्रेम हो जाता है। महात्माओं का सृष्टि से प्रेम करना, उनके परमात्मा के प्रति प्रेम को प्रकट करता है। वे आस्तिक और नास्तिक सब जीवों के साथ प्रेम करते हैं और किसी का दिल नहीं दुखाते। शेख़ फ़रीद फ़रमाते हैं कि अगर तुझे प्रियतम से मिलने की तड़प है तो किसी का दिल न दुखा:

जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1384

शेख़ सअदी कहते हैं कि सब एक ही मूल से पैदा हुए हैं, इसलिए सब एक ही शरीर के अंग हैं। यदि एक अंग को दुःख होता है तो दूसरे अंग अपने आप ही बेचैन हो जाते हैं:

बनी आदम आअज़ाए यक दीगर अन्द,
किह दर आफ़्रीनश ज़ि यक जौहर अन्द।
चू उज़्वे ब-दर्द आवरद रोज़गार,
दिगर उज़्व-हा रा नमानद क़रार।

शेख़ सअदी, गुलिस्तान, पृ. 42

गुरु गोबिन्द सिंह जी फ़रमाते हैं कि वह मालिक सबके अंदर है, हर एक हृदय उसके रहने का स्थान है। अगर कोई उसकी ख़िलक़त को दुःख देता है, तो ख़ालिक उस पर नाराज़ होता है:

ख़लक़ ख़ालक की जान कै, ख़लक़ दुखावहि नाहिं।
ख़लक़ दुखहि नन्द लाल जी, ख़ालक़ कोपहिं ताहिं।

रहतनामे, पृ. 59

सब पवित्र आत्माओं और भक्तों का एक ही मज़हब है, 'मालिक की भक्ति और उसकी ख़िलक़त से प्यार।' इनसान तब ही इनसान कहलाने का हक़दार है जब उसमें इनसानियत के गुण मौजूद हों, जब मनुष्य मनुष्य को भाई समझे, उसका दुःख-दर्द बाँटे, दिल में हमदर्दी रखे और मालिक तथा उसकी सृष्टि के प्रति अटूट प्रेम पैदा करे।

इसके विपरीत अगर ईर्ष्या, ज़ुल्म, हरामख़ोरी, चुग़लख़ोरी, दुश्मनी, लालच, लोभ, पाखंड, पक्षपात, हठधर्म आदि हमारे अंदर बसते हों, तो हृदय का शीशा साफ़ किस प्रकार हो सकता है? इनसे मनुष्य जीवन की सारी ख़ुशी और मिठास ख़त्म हो जाती है। इतनी मैल के होते हुए दिल के शीशे में मालिक की झलक कहाँ?

हमारी आत्मा परमात्मा का अंश है, इसलिए इसका दर्जा सृष्टि में सबसे ऊँचा है। परमात्मा और उसकी रचना के साथ प्यार का गुण जितना बढ़ता है, उतना ही मनुष्य मालिक के नज़दीक होता जाता है। सब एक ही नूर से पैदा हुए हैं और उसी एक का नूर सबके अंदर चमक रहा है। फिर इनमें कोई बुरा और कोई भला कैसे हो सकता है?

अवल अलह नूर उपाइआ कुदरत के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभ जग उपजिआ कउन भले को मंदे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1349

सच्चे धर्म का सार

अंश और अंशी मूल रूप में एक ही हैं। सब मनुष्य उसी एक जौहर से पैदा हुए हैं। बाहरी रंगरूप, पोशाकों के भेद या फ़िरकों के झगड़े उनके आत्मिक तौर पर एक होने में फ़र्क़ नहीं डाल सकते। ख़िलक़त के साथ प्रेम करना भी

एक तरह से, मालिक के साथ प्रेम करना है। फ़ारस के एक फ़क़ीर तो यहाँ तक कह देते हैं कि तू शराब पी, क़ुरान शरीफ़ जला दे, काबा में आग लगा दे, जो चाहे कर, पर किसी इनसान के दिल को न दुखा:

मै ख़ुर ओ मुसहफ़ बसोज़ ओ आतिश अंदर क़अबा ज़न,
हर चिह् ख़्वाही कुन व-लेकिन मर्दुम आज़ारी मकुन।

यही सच्चा मज़हब, सच्चा धर्म, दीन और ईमान है। शेख़ सादी ने इस बारे में फ़रमाया है कि ऐ मालिक! तेरी बंदगी तेरे बंदों की ख़िदमत करने में है; तसबीह (माला) फेरने, सज्जादा (आसन) पर बैठे रहने या गुदड़ी पहन लेने में नहीं:

तरीक़त बजुज़ ख़िदमते-ख़ल्क़ नीस्त,
ब-तस्बीह ओ सज्जादा ओ दल्क़ नीस्त।

बोस्तान, पृ. 40

कबीर साहिब कहते हैं कि हर घट में मेरा साईं है, कोई सेज उससे सूनी नहीं, लेकिन जिस घट के अंदर वह प्रकट है, वह बलिहारी जाने के योग्य है:

सब घट मेरा साइयाँ, सूनी सेज न कोय।
बलिहारी वा घट्ट की, जा घट परगट होय॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 106

फ़ारस के एक सूफ़ी दरवेश कहते हैं कि अगर इनसान यह जान ले कि सबके अंदर मेरा साईं बस रहा है कोई उससे ख़ाली नहीं, तो अपने आप ही उसके अंदर हरएक दिल के लिए आदर पैदा हो जाएगा:

चू बदनिस्ती किह् दर हू दिलहा ख़ुदा अस्त,
बस तुरा आदाबे-हर दिल मुदआ अस्त।

तू ज़िंदा दिलों की परिक्रमा कर, क्योंकि यह दिल हज़ारों काबों से बेहतर है। काबा तो हज़रत इब्राहीम के पिता का बुतख़ाना था, पर यह दिल प्रभु के प्रकट होने का स्थान है:

कअबा बुंगाहे-ख़लीले-आज़र अस्त,
दिल गुज़रगाहे-जलीले-अकबर अस्त।

दिल बदस्त आवर किह् हज्जे-अकवर अस्त,
अज़ हज़ारां कअबा यक दिल विहतर अस्त।

किसी फ़क़ीर ने क्या सुंदर वचन कहे हैं कि ऐ दिल, तू दिलों की परिक्रमा कर क्योंकि यही छिपा हुआ सच्चा काबा है। काबा शरीफ़ तो हज़रत इब्राहीम ने बनवाया था, पर यह दिल उस परमात्मा ने ख़ुद बनाया है:

दिला तवाफ़े-दिलाँ कुन किह् कअबा मख़्फ़ी अस्त,
किह् आँ ख़लील बिना करद ओ ई ख़ुदा ख़ुद साख़्त।

दिल दुखाने से मालिक कभी प्रसन्न नहीं होता, चाहे कोई हज़ारों तरह की पूजा, इबादत और तौबा करे, हज़ारों रोज़े रखे और हर एक रोज़े में हज़ार-हज़ार नमाज़ें पढ़े और हज़ारों रातें उसकी याद में गुज़ार दे। यह सब कुछ मालिक को मंज़ूर नहीं अगर वह एक भी दिल को सताता है:

हज़ार ज़ुह्दो इबादत हज़ार इस्तिग़फ़ार,
हज़ार रोज़ा ओ हर रोज़ा रा नमाज़ हज़ार।
हज़ार ताअते-शब-हा हज़ार बेदारी,
क़बूल नीस्त अगर ख़ातरे ब्याज़ारी।

मसनवी बू अली शाह क़लंदर

इसलिए जब तक तू ख़ुदा के बंदों के दुःखी दिलों को राहत नहीं पहुँचाता, तू मालिक की रज़ा की प्राप्ति से ख़ाली रहेगा। अगर तू चाहता है कि मालिक तुझ पर बख़्शिश करे तो तू उसकी ख़िलक़त के साथ नेकी कर:

हासिल न-शवद रज़ाए-सुलतान, ता ख़ातिरे-बन्दगां न जूई।
ख़्वाही किह् ख़ुदाए बर तू बख़्शद, बा ख़ल्के-ख़ुदाए ब-कुन निकूई।

शेख़ सअदी, गुलिस्तान, पृ. 58

परमात्मा की नज़र में सब बराबर हैं

जब-जब महात्मा संसार में आते हैं, वे संसार को यही उपदेश देते हैं कि सब इनसान मालिक ने पैदा किए हैं, इसलिए सब बराबर हैं। अगर दुनियावी नज़र से विचार करें, तो भी मूल रूप से सब समान हैं– चाहे वे राजा हों या प्रजा, अमीर हों या ग़रीब या किसी भी देश, क़ौम व धर्म के हों।

पहली बात यह है कि सब की पैदाइश एक तरह से होती है। सब अपने माता-पिता के द्वारा संसार में आते हैं और माता के गर्भ में नौ-दस महीने रहकर, समान रूप से ही जन्म लेते हैं। यह नहीं कि ब्राह्मण का जन्म और तरह से होता है और मुसलमान का किसी और तरह से। कबीर साहिब एक ब्राह्मण जाति के व्यक्ति से कहते हैं कि अगर तू किसी ब्राह्मणी का जाया ब्राह्मण है, तो किसी और तरह से पैदा क्यों नहीं हुआ:

जौ तूं ब्राहमण ब्रहमणी जाइआ॥ तउ आन बाट काहे नही आइआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 324

सबकी मौत भी एक तरह से ही होती है। यह नहीं कि एक क़ौम के इनसान की मौत एक प्रकार से होती है और दूसरे की दूसरी तरह से। सबको एक जैसी बीमारियाँ होती हैं। यह नहीं कि एक क़ौम के बंदे को बुख़ार एक तरह से चढ़ता हो और दूसरी क़ौम के बंदे को दूसरी तरह से। इसी तरह सबकी बीमारियों का इलाज भी एक-सा ही होता है। क्या मच्छर एक क़ौम के आदमी को काटता है और दूसरी क़ौम के आदमी को नहीं?

हँसना-रोना भी सबका एक-सा ही है। सर्दी-गर्मी भी सबको एक-सी ही लगती है। जीवन के आवश्यक पदार्थ–हवा, पानी, प्रकाश, सब्ज़ी, फ़ल आदि–सबके लिए एक जैसे ही हैं। सब क़ौमों के लोगों की बनावट भी समान ही है। एक जैसी आँखें, एक जैसे कान, एक जैसे ही शरीर और उनके अंदर एक-से ही प्राण हैं। फिर ये शरीर भी पाँच तत्त्वों–मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश के बने हुए हैं। सब लोग एक ही धरती के ऊपर और एक ही आकाश के नीचे रहते हैं।

मज़हबों के फ़र्क़ इनसान के बनाए हुए हैं

जिस प्रकार शरीर के रोग मनुष्य को बेकार कर देते हैं, उसी प्रकार जीवात्मा को लगी बीमारियाँ उसे पशु से भी निकृष्ट बना देती हैं और इनसान इनसान के ख़ून का प्यासा हो जाता है। ये रोग स्वार्थ, अज्ञान और तंगदिली से पैदा होते हैं जिनमें फँसकर मनुष्य दुर्दशा को प्राप्त होता है।

जब भी संसार में पवित्र आत्माएँ आती हैं, वे यही सिखाती हैं कि धर्मों के भेद उस धार्मिक अभिमान और अहंकार के कारण हैं जो अलग-अलग मतों को माननेवालों की तंगदिली और भ्रम द्वारा पैदा होते हैं। मज़हबों में अंतर का कारण भ्रम है जिसमें स्वार्थ, अभिमान और धार्मिक संकीर्णता रूपी बिच्छू मनुष्य को

डंक मारकर, असह्य पीड़ा देकर, बेचैन और बेहाल कर देते हैं। फ़ारस के एक फ़क़ीर फ़रमाते हैं:

कुफ़्र और इस्लाम, दोनों के अंदर एक ही हक़ीक़त जल्वागर है। मज़हबों के फ़र्क़ वहमों की वजह से हैं। तअस्सुब (धार्मिक कट्टरता) और तंगदिली के कारण ही शेख़ और ब्राह्मण का प्याला अलग-अलग है; नहीं तो रूहानियत के मयख़ाने में एक ही साक़ी (मुर्शिद) है और (नाम का) एक ही प्याला है:

यक हक़ीक़त जल्वागर दर कुफ़्र ओ इस्लामस्त ओ बस,
इख़्तिलाफ़ाते-मज़ाहब जुमला औहाम अस्त ओ बस।
अज़ तअस्सुब कासा-ए-शेख़-ओ-ब्रहमन शुद जुदा,
वर्ना दरे-मयख़ाना यक साक़ी ओ यक जाम अस्त ओ बस।

दीवाने-हाफ़िज़

संत-महात्मा बताते हैं कि सबका पिता, वाहिगुरु, अकालपुरुष एक ही है। वह रब्बुल-आलमीन सारे संसार का मालिक है, किसी ख़ास जाति या धर्म का नहीं। सब मनुष्य एक समान हैं। कोई मुंडी, कोई संन्यासी, कोई योगी, कोई हिंदू, कोई तुर्की, कोई राफ़ज़ी* और कोई इमाम साफ़ी† कहलाता है, लेकिन मानव जाति केवल एक है। कर्ता और करीम एक ही परमात्मा के नाम हैं। राज़िक (रोज़ी देनेवाला) और रहीम भी वही है, इनमें कोई भिन्न-भेद नहीं। गुरु गोबिन्द सिंह जी का वचन है कि हम सब एक ही नूर से उत्पन्न हुए हैं:

कोऊ भयो मुंडीआ संन्यासी कोऊ जोगी भयो
    कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो।
हिन्दू तुरक कोऊ राफज़ी इमामसाफी मानस की जात
    सभै एकै पहिचानबो।
करता करीम सोई राज़क रहीम ओई दूसरो न भेद
    कोई भूल भ्रम मानबो।
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक एक ही सरूप
    सभै एकै जोत जानबो॥

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ.45

---

* शिया मुसलमानों का वह दल जिसने हज़रत अली के पुत्र ज़ैद का साथ छोड़ दिया था।
† फ़ारस के प्रसिद्ध फ़क़ीर साफ़ी के अनुयायी।

हमें भ्रमों से छुटकारा पाना चाहिए और उस एक मालिक की पूजा और सेवा करनी चाहिए जो हम सबका गुरुदेव है। सब उस मालिक का ही रूप हैं और सबके अंदर एक ही ज्योति काम कर रही है। ये अलग-अलग नाम भी ऋषि-मुनियों, फ़क़ीरों और संत-महात्माओं ने प्यार और भक्ति में उसे याद करने के लिए रखे हैं। असल में वह तो अनाम है, जिस नाम से भी उसे याद किया जाए, वह जवाब देता है:

बनामे ऊ किह् ऊ नामे नदारद, बहर नामे किह् ख़्वानी सर बर आरद।

पूजा का उद्देश्य और तरीक़े

पूजा के जितने तरीक़े हैं, उन सबका उद्देश्य एक ही है–परमात्मा से मिलाप। धर्म पुस्तकें अलग-अलग काल या समय में लिखी गईं, इसलिए अपने-अपने समय के अनुसार उनमें पूजा और इबादत के अलग-अलग तरीक़े बताए गए हैं। उन सबका मक़सद मालिक के लिए प्रेम पैदा करना और उसका दर्शन करना है। क़ुरान शरीफ़ (9:5) में भी यही कहा गया है, "इनसानों के वास्ते अलग-अलग शरीअतें और इबादत के तरीक़े रचे गए और हरएक क़ौम में वली (संत) और पैग़ंबर भेजे गए।"

महात्मा रज्जब कहते हैं कि जिस प्रकार तीरंदाज़ चाहे कितने ही हों, उनका निशाना एक ही होता है, उसी प्रकार सब तरह की पूजा और पाठ आदि का मक़सद भी एक ही है:

अपणे अपणे मीत की, सभी मनाएं टेक।
रज्जब निशाना एक है, तीरन्दाज़ अनेक।

उमर ख़य्याम जी फ़रमाते हैं कि मंदिर, मसजिद और गिरजाघर सब उस परमात्मा की पूजा के स्थान हैं। उनमें घंटे और शंख का बजाना जीवन का राग है। मसजिद में मेहराब के सामने नमाज़, गिरजाघर में तसबीह (माला) और ईसाइयों की सलीब (ईसा की सूली का चिह्न, क्रॉस) सब उस मालिक की इबादत के अलग-अलग चिह्न हैं:

बुतख़ाना ओ कअबाख़ाना-ए-बन्दगी अस्त,
नाक़ूस ज़दन तराना-ए-ज़िंदगी अस्त।
मिहराब ओ कलीसा ओ तस्बीह ओ सलीब,
हक़्क़ा किह् हमा निशाना-ए-बन्दगी अस्त।

रूबाइयाते-उमर ख़य्याम, रूबाई 124

सब धर्म स्थान मनुष्य के द्वारा पानी और मिट्टी से बने हैं और सब एक-से ही हैं। इनमें केवल वही स्थान उत्तम है जहाँ मालिक की याद का जल्वा दिखाई देता है:

हर्गिज़ मगो कि कअबा ज़ि बुतख़ाना बिहतर अस्त,
हर जा कि अस्त जल्वाए-जानाना ख़ुश्तर अस्त।

हाफ़िज़ साहिब फ़रमाते हैं कि ऐ मालिक! मसजिद या दूसरे धर्म स्थानों में जाना केवल तेरी याद का नशा पीने और तेरा विसाल (मिलाप) पाने की ग़रज़ से है। इसके सिवाय वहाँ जाने का और कोई मक़सद नहीं:

ग़रज़ ज़ि मसजिदो-मैख़ाना अम विसाले-शुमा अस्त,
जुज़ ईं ख़याल न दारम ख़ुदा गवाहे-मन अस्त।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 99

गुरु गोबिन्द सिंह जी इसी ख़याल का सुंदर ढंग से वर्णन करते हैं:

देहुरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई मानस सभै
एक पै अनेक को भ्रमाउ है।
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू न्यारे न्यारे देसन के भेस
को प्रभाउ है।
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान,
खाक बाद आतश औ आब को रलाउ है।
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई एक ही सरूप
सभै एक ही बनाउ है॥

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 46

गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं, चाहे कोई राम कहे या ख़ुदा, गोसाईं को पूजे या अल्लाह को, कारण करण करीम वह एक ही है। वह कृपालु सब पर समान रूप से कृपा कर रहा है, चाहे कोई तीर्थों में नहाये या हज को जाए, पूजा करे या सिर झुकाए, वेदों को पढ़े या अन्य धर्म पुस्तकों का पाठ करे, नीले कपड़े पहने या सफ़ेद बाना, तुर्क कहलाए या हिंदू, बहिश्तों की लालसा करे या स्वर्गों की। इन सबमें जो मालिक के हुक्म को पहचानता है, वही मालिक के भेद को पा सकता है:

कोई बोलै राम राम कोई खुदाए॥ कोई सेवै गुसईआ कोई अलाह॥
कारण करण करीम॥ किरपा धार रहीम॥
कोई नावै तीरथ कोई हज जाए॥ कोई करै पूजा कोई सिर निवाए॥
कोई पड़ै बेद कोई कतेब॥ कोई ओढै नील कोई सुपेद॥
कोई कहै तुरक कोई कहै हिंदू॥ कोई बाछै भिसत कोई सुरगिंदू॥
कहो नानक जिन हुकम पछाता॥ प्रभ साहिब का तिन भेद जाता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 885

परमात्मा का अपना मंदिर

परमात्मा की पूजा चाहे हम मंदिर में करें या मसजिद में, गुरुद्वारे में या गिरजाघर में अथवा किसी और जगह, हमारा उद्देश्य परमात्मा के अपने मंदिर, इस शरीर, के अंदर उसकी पूजा करना होना चाहिए। इबादत का असली संबंध हमारे मन के साथ है, वह किसी बहिर्मुखी स्थान या भक्ति के तरीक़े का मुहताज नहीं। अगर मन निर्मल है और इसमें केवल सच्चे मालिक की पूजा की जाती है और उससे केवल उसी को माँगा जाता है, तो वह पूजा सफल होती है।

यह शरीर ही केवल हरि मंदिर नहीं, यह संपूर्ण जगत हरि मंदिर है। हरि के भक्त हर जगह उसकी पूजा कर सकते हैं, क्योंकि वह सब जगह मौजूद है। क़ुरान शरीफ़ में भी हज़रत मुहम्मद साहिब यही फ़रमाते हैं, "अल्लाह ही की मिल्कियत है, मशरिक़ (पूर्व) में चाहे मग़रिब (पश्चिम) में, जिस तरफ़ भी तुम रुख़ करो, उधर ही अल्लाह का रुख़ है, क्योंकि अल्लाह-तआला हर जगह व हमा-दाँ (सर्वज्ञ) है।" (क़ुरान 2:115)

अलनिसाई, एक मुसलमान फ़क़ीर, भी कहते हैं कि मेरे वास्ते सारी ज़मीन मसजिद सी पाक है। जहाँ भी मेरे किसी मुरीद का नमाज़ का समय आ जाए, वह वहीं पर अदा कर ले।

कबीर साहिब कहते हैं कि जब वह हज करने मक्का जा रहे थे तो उन्हें रास्ते में ख़ुदा मिला और उसने डाँट के स्वर में कहा: "तुमसे किसने कहा कि मैं सिर्फ़ मक्का में हूँ?"

कबीर हज काबे हउ जाए था आगै मिलिआ खुदाए॥
सांई मुझ सिउ लर परिआ तुझै किन्है फुरमाई गाए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1375

ऑलिवर होम्स, एक अमेरिकन विद्वान, कहते हैं कि जहाँ भी हम श्रद्धा और विश्वास की भावना के साथ मालिक के आगे झुक जाएँ, वही स्थान पवित्र है। अन्य कई संतों ने भी इस विषय में ऐसा ही कहा है।

जिनके ज्ञाननेत्र नहीं खुले, उनके लिए मिट्टी और पानी के मंदिर-मसजिद ही सब कुछ हैं, पर जो साहिबे-दिल या सच्चे ज्ञानी हैं, उनका हृदय ही सच्चा मंदिर और मसजिद है जिसमें मालिक की प्राप्ति होती है:

मसजिदे कोराँ ज़ आबो-गिल बुवद,
मसजिदे-साहिब दिलां रा दिल बुवद।
मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 293

बू अली शाह क़लंदर फ़रमाते हैं कि प्रीतम तेरी बग़ल में है। तू क्यों उससे बेख़बर है? वह तेरे अंदर है पर तू दर-ब-दर भटक रहा है।

यार दर तू पस चिरा ऐ बे-खबर,
यार दर ख़ुद तू चिह् गर्दी दर ब-दर।
मसनवी बू अली शाह क़लंदर, पृ. 25

तुलसी साहिब फ़रमाते हैं कि तू मंदिर और मसजिद में जाता है जो नक़ल है, हक़ीकत तो तुम्हारे अपने अंदर है:

नकली मंदिर मस्जिदों में जाय सद अफ़सोस है।
कुदरति मसजिद का साकिन दुख उठाने के लिये॥
संत बानी, पृ. 44

जिसको हमें सिजदा करना है, जब वह हमारे अंदर है तो हमारा मसजिद में जाने का काम बेकारी से बेहतर नहीं:

गर बवुद मसजूद अंदर दिल ओ मा मसजिद रवेम,
बिहतर अज़ बेकारी ई हरगिज़ न बाशद कारे-मा।
दीवाने-बू अली शाह क़लंदर, पृ. 9

अज्ञानी लोग धर्म स्थानों की पूजा करते हैं, लेकिन सच्चे परमार्थी अपने दिल के मंदिर की सफ़ाई का प्रयास करते हैं:

अब्लहां तअज़ीमे-मसजिद मी कुनंद,
दर जफ़ाए अहले-दिल ज़िद्द मी कुनंद।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 293

सच्ची मसजिद या सच्चा मंदिर यह शरीर है जिसमें ज्ञानरूपी रत्न प्रकट होता है:

हर मंदर एह सरीर है गिआन रतन परगट होए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

गुरवाणी कहती है कि बाहर क्यों जाएँ, जब घर के अंदर ही रंग बरस रहा है। गुरु की कृपा द्वारा अपने मन मंदिर में मालिक मिल जाता है। बाहर सब जगह पानी और मिट्टी के बने हुए धर्म स्थान हैं। सब ग्रंथ खोजकर देख लिए, वे यही कहते हैं कि मालिक हर स्थान पर है, वहाँ तब जाओ जब वह यहाँ न हो। पर यह भ्रम केवल सतगुरु के मिलाप से दूर होता है:

कत जाईऐ रे घर लागो रंग॥ मेरा चित न चलै मन भइओ पंग॥
एक दिवस मन भई उमंग॥ घस चंदन चोआ बहु सुगंध॥
पूजन चाली ब्रहम ठाए॥ सो ब्रहम बताइओ गुर मन ही माहे॥
जहा जाईऐ तह जल पखान॥ तू पूर रहिओ है सभ समान॥
बेद पुरान सभ देखे जोए॥ ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होए॥
सतगुर मै बलिहारी तोर॥ जिन सकल बिकल भ्रम काटे मोर॥
रामानंद सुआमी रमत ब्रहम॥ गुर का सबद काटै कोट करम॥

स्वामी रामानंद, आदि ग्रन्थ, पृ. 1195

धार्मिक मतभेद हमारे बंधन बढ़ाते हैं

हिंदुओं की धर्म पुस्तकें संस्कृत भाषा में हैं, मुसलमानों की अरबी या फ़ारसी ज़बान में हैं, सिक्खों की पंजाबी, हिंदी आदि में है और बाइबल आदि अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी या लैटिन भाषा में हैं। इसी प्रकार अन्य धार्मिक पुस्तकें उन धर्मों को माननेवालों की अपनी-अपनी भाषाओं में हैं। मालिक के आगे बोलियों या

भाषाओं का कोई महत्त्व नहीं। वे तो केवल मालिक के प्रति प्रेम प्रकट करने के साधन हैं और उनके द्वारा हमें असलियत का ज्ञान होता है। लेकिन परमात्मा स्वयं किताबों की पहुँच से परे है। वह अनलिखा क़ानून (*अनरिटन लॉ*) है; वह अनबोली भाषा (*अनस्पोकन लैंग्वेज*) – मौन की भाषा है।

भाषा तो केवल भावों को व्यक्त करने का साधन है। जिस भाषा में भी हो, हमें तो उस मालिक की प्रेममयी वार्ता को सुनना और सुनाना है। यही विचार हाफ़िज़ साहिब प्रकट करते हैं कि परमार्थ में कोई भी ज़बान हो, चाहे तुर्की चाहे ताज़ी (अरबी), सब समान महत्त्व रखती हैं। उस प्रीतम की प्रेम-कहानी को जिस ज़बान में चाहो, सुना सकते हो:

यके अस्त तुर्की ओ ताज़ी दरीं मुआमला हाफ़िज़,
हदीसे-इश्क़ बयाँ कुन ब-हर ज़बाँ किह् तू दानी।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 423

रूहानी दृष्टि से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि कोई एक क़ौम का है या दूसरी का, एक देश का है या दूसरे देश का। सब एक ही मालिक के बंदे हैं और एक ही बाग़ के रंग-बिरंगे फूल हैं। हम सब एक ही जलवायु में पल रहे हैं। एक ही धरती के ऊपर और एक ही आकाश के नीचे हमारा निवास है। व्यर्थ में ही धर्मों के छोटे-छोटे दायरे बनाकर हम उनमें फँसे हुए हैं। धर्मों का उद्देश्य हमें तन-मन के पिंजरे से आज़ाद कराना था, उलटा वे हमारे बंधनों को बढ़ाने का कारण बने हुए हैं। फ़ारस के एक फ़क़ीर कहते हैं कि मसजिद हो चाहे मंदिर, सब एक ही चिराग़ से रोशन हो रहे हैं तो फिर मज़हबों में आपसी दुश्मनी क्यों?

अज़ यक चराग़ मसजिदो-बुतख़ाना रौशन अस्त,
दर हैरतम कि दुश्मनी-ए-कुफ़्रो-दीन चिरास्त।

मसजिद हो या मंदिर, गुरुद्वारा हो या गिरजाघर, इनके पर्दे के पीछे एक ही मालिक है। इनमें जानेवालों का मुख्य उद्देश्य केवल उस एक प्रीतम की प्राप्ति है। पत्थरों की शक़्ल अलग-अलग होने पर भी उनसे पैदा होनेवाली आग के रंग में कोई अंतर नहीं होता:

नीस्त ग़ैर अज़ यक सनम दर परदाए-दैरो-हरम,
कै शवद आतिश दो रंग अज़ इख़्तिलाफ़े-संग-हा।

मज़हबों और मिल्लतों को माननेवाले, सभी एक मालिक का आदर्श रखते हुए भी आपस में लड़-लड़कर मर रहे हैं। यह देखकर क़ुदरती तौर पर इन अज्ञानी शेख़ों, पंडितों और मज़हबों के नाम से ही लोगों के दिलों में नफ़रत बढ़ रही है और वे धर्म से दूर होते जा रहे हैं। एक सूफ़ी फ़क़ीर कहते हैं:

अज़ आँ रोज़े किह् दीदम इख़्तलाफ़े-मज़हबो-मिल्लत,
मरा बा शैख़ रबते नीस्त ओ नै बा ब्रहमन हम।

आज तन्ख़्वाहदार प्रचारकों के कारण, धार्मिक स्थान व्यापार के केंद्र बन रहे हैं। श्रद्धा, विश्वास और सत्य की कमी हो रही है। यह देखकर परमात्मा के प्रेमी इनसे दूर रहते हैं। इस हालत का चित्र साईं बुल्लेशाह बड़े मार्मिक शब्दों में खींचते हैं:

बुल्लया धरमसाला धड़वाई रैह्‌दे, ठाकर-द्वारे ठग।
विच मसीतां कुसत्तीए रैह्न्दे, आशिक रैहण अलग॥

साईं बुल्लेशाह, पृ. 368

मनुष्य मनुष्य के बीच नफ़रत और आपसी दुश्मनी उन बेसमझ लोगों द्वारा पैदा किए गए वैर-विरोध का नतीजा है, जो स्वयं स्वार्थ, अज्ञान और धार्मिक तंगदिली का शिकार हैं। गुरवाणी में उन व्यक्तियों को 'मनमुख' कहा गया है जो अविद्या, स्वार्थ और तंगदिली में फँसकर सबकी निंदा करते हैं और निर्दयतापूर्वक समाज की एकता को दर्ज़ियों की तरह कतरते चले जाते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य अपनी मान-बड़ाई होता है और वे ख़ुदग़र्ज़ी के कारण दूसरों के अधिकार छीनने में लगे रहते हैं। उन्हें किसी और की उन्नति और प्रशंसा नहीं भाती।

इनके उलट गुरुमुख हैं, जो परोपकार के पुंज होते हैं। वे मालिक के साथ प्रेम करते हैं और उसकी रचना के प्रति भ्रातृ भाव रखते हैं। हज़रत मुहम्मद साहिब ऐसे लोगों को मोमिन कहते हैं। क़ुरान शरीफ़ में मोमिन के बारे में फ़रमाया गया है कि वह उन सब मोमिन नबियों (पैग़ंबरों, अवतारों) की इज़्ज़त करता है, जिनका ज़िक्र क़ुरान शरीफ़ में किया गया है या नहीं किया गया है।

सब धर्मों का एक ही आधार है

सब धर्मों में इनसान के लिए एक-सी नैतिक और आत्मिक सच्चाइयाँ बयान की गई हैं। सब धर्मों में इसी बात का मुख्य उपदेश है कि मनुष्य शुभ कर्म करे, उस परमात्मा का आसरा ले और उसी में समा जाने का प्रयत्न करे, क्योंकि वही सब धर्मों का प्रेरणा स्रोत है। ईश्वर को पहचानना, उससे मिलाप करना,

उसकी भक्ति करना, मनुष्य जाति के प्रति भ्रातृ भाव रखते हुए मनुष्य की सेवा करना और स्वयं को पहचानना, यही सब धर्मों का उपदेश है।

यदि मनुष्य परमात्मा पर भरोसा रखकर नाम के साथ जुड़कर नेक कर्म करने लग जाए, तो यह उस सर्वश्रेष्ठ धर्म का पालन होगा जिसका उपदेश दुनिया के सब संत-महात्मा देते चले आए हैं। यही वह विश्व धर्म है जो सब मनुष्यों के लिए समान है। यह न कभी बदला है, न कभी बदलेगा। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि सब धर्मों में सर्वश्रेष्ठ धर्म हरि के नाम का जाप है जो सबसे निर्मल कर्म है, और साधु की संगति द्वारा दुर्मति की मैल को दूर करना सबसे श्रेष्ठ क्रिया है:

सरब धरम मह स्रेसट धरम॥
हर को नाम जप निरमल करम॥
सगल क्रिआ मह ऊतम किरिआ॥
साधसंग दुरमत मल हिरिआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 266

हर कीरत साधसंगत है सिर करमन कै करमा॥
कहो नानक तिस भइओ परापत जिस पुरब लिखे का लहना॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 642

गुरु अर्जुन साहिब ने ऊँची या नीची जाति में भेद नहीं किया और सब महात्माओं (चाहे वे हिंदू थे या मुसलमान) की अमूल्य वाणियों को आदि ग्रन्थ में बराबर स्थान दिया है। यह इस बात का सुबूत है कि हक़ीक़त एक ही है और उसके नाम अलग-अलग होने पर भी उसमें कोई अंतर नहीं है। संत-महात्मा दुनिया की किसी भी क़ौम में आ सकते हैं। वे पशुओं जैसी करतूतें करनेवाले मनुष्यों को मानवता का पाठ पढ़ाकर और उनमें मालिक के गुण भरकर मालिक के साथ मिलाप करने के क़ाबिल बना देते हैं।

संत धार्मिक मतभेद से मुक्त होते हैं

संत मज़हबी तंगदिली से मुक्त और कर्मकांडों की पकड़ से आज़ाद रहते हैं। सब धर्म उनके अपने होते हैं। उनकी नज़र आत्मा पर होती है, शरीर पर नहीं। वे आत्मा की उन्नति का मार्ग बताकर बिछुड़ी हुई आत्माओं का मालिक के साथ मिलाप करवाते हैं और सच्चा भ्रातृ भाव क़ायम करते हैं। उनका उद्देश्य इनसानों को प्रेम की लड़ी में पिरोना है, उनका काम जोड़ना है, तोड़ना नहीं।

संतों के इस उद्‌देश्य का महत्त्व रूमी की एक पंक्ति से स्पष्ट हो जाता है जिसमें उसने मूसा* को परमात्मा की इस डाँट का उल्लेख किया है, जब उसने एक प्रभु भक्त का दिल तोड़ा था:

तू बराए वसल करदन आमदी, नै बराए फ़सल करदन आमदी।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 173

अर्थात्, तू दुनिया में (लोगों को परमात्मा के साथ) मिलाने के लिए आया है, (परमात्मा से) जुदा करने के लिए नहीं।

जैसे पहले कहा गया है, संतों की दृष्टि में सब मनुष्य समान हैं, चाहे वे किसी भी धर्म या क़ौम के हों। गुरु नानक साहिब जहाँ हिंदुओं के तीर्थों पर गए, वहाँ मुसलमानों के मक्का और मदीना भी पहुँचे। वे हर एक मत और क़ौम के महापुरुषों से मिलकर मानव जाति को उस मालिक की एकता और सब मनुष्यों के भाई-भाई होने का उपदेश देते रहे।

इस भ्रातृ भाव के, जो सब बंधनों को तोड़ देता है इतिहास में कई उदाहरण मिलते हैं। गुरु अर्जुन साहिब, हज़रत मियाँ मीर और छज्जू भक्त बड़े पक्के मित्र थे। सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिंद सिंह जी ने मुसलमानों की इबादत के लिए हरगोबिंदपुर शहर में, जो उन्होंने ब्यास नदी के पश्चिम तट पर बसाया था, एक मसजिद बनवाकर दी। यह पंजाब के ज़िला गुरदासपुर में है। गुरु गोबिन्द सिंह जी का हिंदू और मुसलमान सबके साथ एक-सा प्रेम था, यहाँ तक कि आपको माछीवाड़ा के युद्ध में तुर्कों के घेरे से निकालकर लानेवाले मुसलमान ही थे।

उनके समय में भाई कन्हैया, जो सिक्ख था, रणभूमि में हिंदू और मुसलमान सबको पानी पिलाता था। कुछ बेसमझ लोगों ने गुरु साहिब के पास उसकी शिक़ायत की। भाई साहिब को बुलाया गया और पूछने पर भाई साहिब ने कहा, मेरे सतगुरु! मैं अपनों तथा दुश्मनों में कैसे फ़र्क़ करूँ जब मैं सबमें आपका ही जल्वा देखता हूँ। मैं उन्हें पानी देने से कैसे इनकार कर सकता हूँ? इस पर गुरु साहिब ने फ़रमाया कि भाई साहिब ने हमारी शिक्षा को ठीक ढंग से समझा है:

जा ते छूटि गयो भ्रम उर का। तिह आगै हिंदू क्या तुरका।

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 332

---

* **मूसा**=इस्लाम धर्म के सबसे बड़े नबी। सूफ़ी साहित्य में इन्हें इनसान और अल्लाह के बीच का माध्यम बताया गया है। इस ख़ास रिश्ते के कारण सूफ़ी कहानियों के अनुसार अल्लाह इनसानों की शंकाओं और कमज़ोरियों का जवाब इनके द्वारा दिया करते थे।

परमात्मा सबका मालिक है, जो उसे मानते हैं उनका भी और जो उसे नहीं मानते उनका भी। भक्तों के हृदय में सबके प्रति प्रेम होता है। एक बार हज़रत मूसा के पास एक व्यक्ति आया। जब सब खाना खाने बैठे तो उस आदमी ने ईश्वर को याद नहीं किया। मूसा के हृदय में उसके प्रति नफ़रत पैदा हुई। उसी समय उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "ऐ मूसा, उसको रोटी देनेवाला मैं हूँ, तू नहीं! अगर मैं उसका बुरा नहीं मानता तो तुम क्यों बुरा मानते हो?"

संत दुनिया में सबके लिए प्यार का संदेश लेकर आते हैं, चाहे कोई आस्तिक हो या नास्तिक। जब सब लोग मुँह मोड़ लेते हैं, तो ज़रूरत पड़ने पर वे उनकी सेवा करने से नहीं रुकते। वे महापुरुष जानते हैं कि हम सब उस मालिक के बच्चे हैं, चाहे हम उसे न भी पहचानते हों। हमें ईश्वर को पिता कहने का कोई अधिकार नहीं जब तक हम हर इनसान को अपना भाई नहीं समझते।

धर्मों के रीति-रिवाजों में अंतर

शरीअतों (कर्मकांडों) के अलग-अलग रूप होने के कई कारण है। मिसाल के तौर पर, अरब रेतीला देश है, वहाँ पानी की कमी है इसलिये वहाँ मुसलमान, स्नान के बजाए पानी से वुज़ू (हाथ, पैर, मुँह, कान और गर्दन का धोना) करके परमात्मा की नमाज़ पढ़ सकते हैं। यहाँ तक कि यदि पानी न मिल सके तो रेत से पंच-स्नान (तयम्मुम) करना काफ़ी है।

इसी प्रकार बागड़ देश (बीकानेर आदि रेगिस्तानी इलाकों में, जहाँ पानी की कमी है) के विषय में यह कहा जाता है कि जो व्यक्ति स्नान के लिए निर्धारित मात्रा से अधिक जल का प्रयोग करता है, उसे मालिक के आगे उस अतिरिक्त जल की एक-एक बूँद का हिसाब देना पड़ेगा। परंतु बाक़ी भारत में पानी बहुत है, यहाँ हिंदुओं के लिए मालिक की पूजा से पहले मन और शरीर से तरो-ताज़ा होने के लिये स्नान करना ज़रूरी समझा गया है।

पश्चिम में सिर नंगा रखना आदर और अदब की निशानी है, पर भारत में पैरों को नंगा और सिर को ढककर रखना आदर और सम्मान की निशानी माना जाता है। इसी रिवाज के कारण ईसाइयों के गिरजाघरों में सब नंगे सिर जाते हैं, पर सिक्खों के गुरुद्वारों में नंगे सिर बैठना निरादर समझा जाता है। भारत में धर्म स्थानों में सब नंगे पैर जाते हैं। ये सब बातें शरीर से संबंध रखती हैं और इनका उद्देश्य केवल इतना ही है कि मनुष्य में भक्ति भाव पैदा हो और वह आदरपूर्वक मालिक का सिमरन करे। उस मालिक की दृष्टि में बाहरी शक्लों और पहरावों

का कोई महत्त्व नहीं, उसे तो सब मनुष्य प्यारे हैं, जिस प्रकार पिता को अपने सब पुत्र प्यारे होते हैं।

जब सब धर्मों में सच्चाइयाँ एक-सी हैं, तो सारे विश्व में मनुष्य-जाति का एक ही धर्म होना चाहिए। ये अलग-अलग फ़िरके या संप्रदाय क्यों बन गए? यह सांप्रदायिकता उनके अनुयायियों के धार्मिक दृष्टिकोण और विश्वासों के परस्पर विरोध के कारण है।

जब गुरु नानक साहिब मक्का शरीफ़ गए और वहाँ के क़ाज़ियों और दूसरे लोगों से मिले, तो उन्होंने आपसे कहा कि नानक, तू तौहीद (अद्वैत) का उपदेश देता है और हम भी तौहीद के क़ायल (माननेवाले) हैं, फिर हममें और तुझमें कोई फ़र्क़ नहीं। तुझे हमारा मज़हब अपनाने में कोई दिक़्क़त नहीं होनी चाहिए। गुरु नानक साहिब ने उत्तर दिया कि मेरी तौहीद मुतलक़ (आज़ाद) है और तुम्हारी तौहीद मुक़इयद (क़ैद में) है। एक ही परमात्मा को तुम भी मानते हो, पर तुमने उस तौहीद पर बंधन लगा दिए हैं। मेरे मतानुसार उस मालिक के अनेक रसूल और नबी दुनिया में आए, जो दुनिया के लोगों का ध्यान मालिक से लगाते रहे। अनेक ब्रह्मा, विष्णु और शिव हो चुके हैं। अनेक गोरखनाथ और बुद्ध हो चुके हैं और अनेक भविष्य में आएँगे। अनेक धर्म पुस्तकें, क़ुरान आदि संसार में समय-समय पर रची गई हैं और रची जाएँगी। लाखों पृथ्वी, लाखों आकाश और अनंत पुरियाँ हैं। अनगिनत राम, कृष्ण, बुद्ध आदि अवतार हुए हैं और भविष्य में भी होंगे।

वह मालिक अथाह है। एक जुज़ (अंश) उस कुल (अंशी) के बारे में क्या कल्पना कर सकता है? सीमा में घिरा जीव उस असीम के बारे में क्या समझ सकता है? हम उस अनंत ईश्वर का क्या गुणगान कर सकते हैं? जितना अधिक उसकी ओर बढ़ते हैं, उतना ही वह विशाल से विशालतर प्रतीत होता है। वह समुद्र के समान है, एक मछली कैसे उसका अंत पा सकती है:

तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंत लहा॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 25

हरि बेअंत है, हम उसे सीमित करके उसका वर्णन करते हैं। हम क्या जानें कि वह कैसा है?

हर बिअंत हउ मित कर वरनउ किआ जाना होए कैसो रे॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 612

कर्मों में परमात्मा के प्रकाश की झलक

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने जीवन का सफ़र अकेले तय नहीं कर सकता। वह समाज में रहता हुआ उसे तय करना चाहता है। जहाँ कोई समाज न हो, वहाँ भी वह समाज बना ही लेता है–एक ऐसा समाज जो स्थिर हो और संतुलित व्यक्ति पैदा करे।

संत, मनुष्य के किसी भी बाहरी रहन-सहन में दख़ल नहीं देते। वे कहते हैं कि तुम चाहे किसी भी समाज के नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करो, हो तो तुम मनुष्य ही। तुम्हारा पहरावा तुम्हारी मनुष्यता में फ़र्क़ नहीं ला सकता। सबसे पहले इनसान बनो और सबके प्रति भ्रातृ भाव रखो। समाज का ध्येय हमें उत्तम मनुष्य बनाना है। मानवता के गुण धारण करो, सच की कमाई करो, सबसे प्रेम-प्यार और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करो।

शरीर से तुम इनसान हो, इसलिए तुम्हारे आचरण से इनसानियत की शान प्रकट होनी चाहिए। कबीर साहिब कहते हैं हमारी आत्मा परमात्मा का अंश है, इसलिए इसमें ईश्वरत्व का प्रकाश प्रकट होना चाहिए और इसे अपने ईश्वरीय गुणों को पहचानना चाहिए। परमात्मा मनुष्य में है और मनुष्य परमात्मा में है। इनसान सारे अलौकिक भेदों का गुप्त ख़ज़ाना है। वह एक शीशा है जिसमें मालिक के कौशल की नूरी किरणें चमकती हैं। वह पूर्ण सत्य की मूर्ति है और पूर्ण सत्य उसकी जान है। जान के बग़ैर इनसान का क्या मूल्य है:

सूरते-हक्क़ी व हक़्क़त जां बुवद, सूरते बे जां कुजा इन्सां बुवद।

कबीर साहिब फ़रमाते हैं कि परमात्मा ही शरीर के माध्यम से बोलता है। परमात्मा के बिना शरीर कैसे बोल सकता है:

ब्रह्म बोले काया के ओले। काया बिना ब्रह्म क्या बोले।

अगर हम अपने अंदर ईश्वर के तत्त्व का अनुभव कर लें और व्यवहार में ईश्वर के प्रति जागरूक इनसान बन जाएँ, तो यह दुनिया ईश्वर के सच्चे घर, सचखंड का प्रतिबिंब बन जाएगी। तब समाज में अहंकार, ईर्ष्या और नफ़रत नहीं रहेगी। चोरी, ज़ुल्म और अत्याचार का ख़याल तक भी नहीं रहेगा। न मनमाना राज्य होगा और न कोई किसी का अधिकार छीनेगा। वहाँ न क़ानून होगा, न क़ानून लागू करनेवाले विभाग होंगे और न सज़ा होगी। सब इनसान ख़ुदाई शान से रहेंगे। इस तरह दुनिया ईश्वर के सच्चे और 'सुच्चे' (पवित्र) लोगों के रहने की भूमि बन जाएगी।

पूर्णता की खोज

मनुष्य के सामने एक ही आदर्श है और वह है पूर्ण मनुष्य बनने का। तुम पूर्ण आदर्श मनुष्य बनो (मैथ्यू 5:48), जो रूहानियत का रूप हो। बाइबल में लिखा है कि तुम प्रभु की तरह पूर्ण हो। सब धर्मों में उन आदर्श पुरुषों की पूजा के आदेश हैं, जो मालिक से अभेद हैं और स्वयं नमूना बनकर दुनिया के सामने उस अविनाशी परम पुरुष का आदर्श रख रहे हैं (कोलोसियन्स 2:9-10)।

श्रीमद्भगवद्गीता (15:1) में ज़िक्र आया है कि इस संसाररूपी वृक्ष की जड़ें आत्मिक मंडलों में हैं और शाखाएँ धरती की ओर हैं। इसी तरह मनुष्य की जड़ें भी नज़र न आनेवाले ईश्वरत्व के अंदर हैं; भले ही उसका शरीर बाहरी दुनिया में बँधा पड़ा हो, लेकिन आत्मा उसकी अविनाशी है। हमारी चेतन हस्ती के पीछे वह अलौकिक भेद छिपा हुआ है जिसके बिना हमारी बाहरी चेतन शक्ति काम नहीं कर सकती। हमारे अंदर की चेतन शक्ति कुछ गुप्त और कुछ प्रकट है। हमें उस चेतनता को प्राप्त करना चाहिए जो शरीर, मन और इंद्रियों से स्वतंत्र है।

संसार में ऐसी ख़ुदाई हस्तियाँ आती रही हैं और इस आदर्श को दुनिया के सामने रखती रही हैं। गुरु नानक साहिब से लेकर गुरु गोबिन्द सिंह जी तक सब ने ऐसे शिष्य का उच्च आदर्श दुनिया के सामने रखा जो निष्काम सेवा, भक्ति, और प्रेम का पुंज है, जो मालिक के रंग में रँगनेवाला और सोए हुए हृदयों को जाग्रत करनेवाला है, जो नेकी को उभारने और बदी का अंत करनेवाला है। वह अद्भुत, अलौकिक और अगम मालिक की चित्रकारी का एक नमूना है जो धार्मिक अभिमान और तंगदिली से मुक्त है। मुसलमानों और ईसाइयों में भी ऐसे गुणों से परिपूर्ण एक सच्चे मोमिन और एक सच्चे और पवित्र ईसाई का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। पश्चिम में प्यूरिटन लोगों ने सत्य के सिपाहियों का नमूना दुनिया के सामने रखा। उन सब संत-महात्माओं ने जो धुरधाम तक पहुँचे, संसार के सामने यही आदर्श रखा है।

ऐसी बहुत-सी उच्च कोटि की हस्तियाँ हुई हैं जिन्होंने दुनिया के सामने पूर्ण मनुष्य का आदर्श रखा। हिंदुस्तान के एक कवि अल्लामा इक़बाल हज़रत मूसा को संबोधन करके लिखते हैं कि तुम कोहेतूर के ऊपर ख़ुदा का जल्वा देखने गए, क्योंकि तुम अपने आंतरिक भेद से परिचित नहीं थे। सब भेद मनुष्य के अंदर ही हैं। तू आदमी की तलाश में क़दम रख, क्योंकि ख़ुदा ख़ुद उसकी तलाश में है:

> गदाये जल्वा रफ़्ती बर सरे-तूर, किह् जाने तू ज़ ख़ुद ना-महरमी हस्त।
> क़दम दर जुस्तजूए-आदमी ज़न, ख़ुदा हम दर तलाशे-आदमी हस्त।

इक़बाल, (हवाल: नुक़ाते-दीवाने-शम्स तब्रेज़ी, पृ. 31)

ऐसे ही विचार धर्म निरपेक्ष नेताओं ने भी व्यक्त किए हैं। उदाहरण के लिए उन्नीसवीं सदी के प्रसिद्ध ब्रिटिश विचारक जॉन रस्किन की शिक्षा का मुख्य भाव यही है कि दुनिया में इनसान का जीवन बहुत अनमोल है। धन-दौलत, सोना-चाँदी और अन्य सामान जो इनसान इस्तेमाल करता है, क़ीमती नहीं, बल्कि उनका उपयोग करनेवाला इनसान स्वयं अनमोल है। वह कहता है कि उस ज़िंदगी से बढ़कर और कोई दौलत नहीं जो प्रेम और आनंद की शक्ति से परिपूर्ण हो। वह देश सबसे अधिक धनवान है जो अनेक भले और प्रसन्न मनुष्यों का पालन करता हो। वह मनुष्य सबसे ज़्यादा धनवान है जिसने अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त कर ली हो, और जिसके निज प्रभाव और दौलत से दूसरों के जीवन को अधिक से अधिक लाभ पहुँचता हो।

ऐसी हस्तियाँ दुनिया के उद्धार का कारण बनती हैं। दुनियावी चीज़ों की क़ीमत ऐसे महान पुरुषों की रूहानी दौलत के आगे तुच्छ है।

रूहानियत की ज़रूरत

आजकल सारे संसार में खींच-तान, चिंता और फ़िक्र का राज्य नज़र आ रहा है। पहुँचे हुए महात्माओं को छोड़कर कोई भी, चाहे वह किसी भी वर्ग से संबंधित है, इससे नहीं बच सका है। यह इस बात का प्रमाण है कि आजकल रूहानियत का दिवाला निकला हुआ है। इस अराजकता का कारण आजकल के लोगों की अशांत हालत है। दुनिया के लोगों ने हर एक विद्या में तरक़्क़ी की है लेकिन वे अपनी आत्मा की उन्नति से बिलकुल कोरे हैं। उन्होंने नदियों, पहाड़ों और समुद्रों को खोज डाला है, पर अपने आप की खोज नहीं की। सारी विद्याओं का मूल उद्देश्य क्या है? यही कि मनुष्य स्वयं को पहचाने:

> जाने-जुमला इल्म-हा ईनस्त ईं, किह् ब-दानी मन क़ियम दर यौमे-दीं।
> क़ीमते-हरकाला मी दानी किह् चीस्त, कीमते-खुदरा न-दानी अहमक़ीस्त।
>
> मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 3, पृ. 256

प्रत्येक इल्म के बारे में हम जानते हैं, पर अपनी आत्मा के बारे में, जिसके सहारे सब विद्याओं की प्राप्ति होती है, जिसके आधार पर शरीर, मन और बुद्धि का कारोबार चल रहा है, हम कुछ भी नहीं जानते। अपना मूल्य न जानकर इनसान बेवकूफ़ बना हुआ है। मनुष्य चाहे संसार के सब पदार्थों पर अधिकार प्राप्त कर ले, पर यदि वह अपनी आत्मा के संबंध में कुछ नहीं जानता तो उसका सारा जीवन निष्फल चला जाता है। बाइबल (मैथ्यू 16:26) का कथन है, "मनुष्य को

क्या लाभ होगा यदि वह सारे संसार पर अधिकार पा ले, परंतु अपनी आत्मा को खो बैठे।"

अपनी आत्मा को न जानने और अपने मूल स्रोत से न मिलने के कारण हम अशांत रहते हैं। हमारी इसी आंतरिक अशांति का प्रभाव संसार पर पड़ रहा है, जिसके फलस्वरूप हम एक ही पिता की संतान होते हुए भी आपसी भ्रातृ भाव को भूल चुके हैं। इसीलिए भाई-भाई, समाज-समाज, क़ौम-क़ौम और देश-देश आपस में टकराकर तबाह हो रहे हैं और एक दूसरे के ख़ून के प्यासे बने हुए हैं। बाहरी धर्म के उपदेश और आचारसंहिता की शिक्षाएँ हममें आपसी प्रेम उत्पन्न नहीं कर सकीं।

आजकल इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि परमार्थ का नये सिरे से प्रचार हो, जिससे मानव जाति इस दुर्दशा से निकल सके। हमें रूहानी जीवन की ज़रूरत पर ज़ोर देना चाहिए ताकि मानव जाति, जो दुःखों में डूबी हुई है और जो मैं-मेरी के भयंकर दौर से गुज़र रही है बच सके। आज दुनिया एक ओर नयी रोशनी और दूसरी ओर पुराने धार्मिक बंधनों और मत मतांतरों के भ्रमों में उलझकर आपसी वैर-विरोध और तू-तू, मैं-मैं में फँसी हुई है। प्रचारक और विद्वान लोग, जिन्हें इन कठिनाइयों को हल करना चाहिए था लोगों को सांप्रदायिकता, कर्मकांड और मनमाने धार्मिक विश्वासों की उलझनों में फँसाकर एक दूसरे से दूर कर रहे हैं।

कुछ लोग पश्चिमी रोशनी के सिद्धांत 'खाओ, पीयो और मौज करो' (ईट, ड्रिंक एंड बी मैरी) से प्रभावित हैं। वे कहते हैं कि हमें परमात्मा की आवश्यकता ही क्या है। सबकी नज़र अख़रोट के छिलके तक ही जाती है, वे उसे ही हज़म करने के पीछे पड़े हुए हैं, पर वह हज़म हो नहीं सकता। उसकी गिरी की ओर वे ध्यान नहीं देते, जिसकी रक्षा के लिए यह बाहरी आडंबर बना था। इसी खींच-तान की दशा में हम परमात्मा को खो चुके हैं और हक़ीक़त से दूर जा रहे हैं।

ऐ ख़ुदा जूयां ख़ुदा गुम करदा ईद, गुम दरीं अमवाजे-कुलज़म करदा ईद।

फ़रीद-उद्-दीन-अत्तार

ऐ परमात्मा को खोजनेवालो! तुमने परमात्मा को अपने मनरूपी समुद्र की लहरों में खो दिया है।

ऐसे अवसरों पर संत जीवों की नज़र सदा असलियत की ओर मोड़ते हैं, और संसार को एक ऐसे सरल मार्ग का संकेत देते हैं जो मनुष्य के अंदर है,

जो सत्पुरुष-कृत है और जो युगों-युगांतरों से चला आया है। संत कहते हैं कि परमात्मा है और सब धर्म उसी को प्राप्त करने का यत्न करते हैं। ईश्वर-प्राप्ति के मार्ग का नाम ही धर्म है। इसी को अंग्रेज़ी में 'रिलीजन' कहते हैं। यह शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'रिलीगेअर' से निकला है, जिसका अर्थ है पुनः बाँधना या जोड़ना। इस शब्द के मूल में ही इसका असली तात्पर्य छिपा हुआ है। इसलिए इसका अर्थ है फिर से ईश्वर के साथ जुड़ना।

यह रूहानी परंपरा सबकी साँझी है। जो परमात्मा के साथ अंतर में जुड़ जाए, वही सच्चा धर्मात्मा, मोमिन, सिक्ख, ईसाई और भक्त है। संत बताते हैं कि परमात्मा हमारे अंदर है। वह इस शरीररूपी मंदिर में ही मिलता है। इस शरीर में आत्मा और परमात्मा दोनों एक साथ रहते हैं। लेकिन इन दोनों के बीच में हौमैं (अहं) या ख़ुदी का पर्दा तना है जिसके कारण आत्मा परमात्मा के दर्शन नहीं कर पाती।

एका संगत इकत ग्रिह बसते मिल बात न करते भाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

या यों कहें कि आत्मारूपी स्त्री और परमात्मारूपी पति दोनों एक ही सेज पर हैं, अर्थात् दोनों ही शरीर के अंदर हैं, लेकिन अफ़सोस की बात है कि कई युग बीत गए पर आत्मा रूपी स्त्री ने परमात्मा रूपी पति के दर्शन नहीं किए, क्योंकि स्त्री सोई हुई है और पति सदा जागता है:

एका सेज विछी धन कंता॥ धन सूती पिर सद जागंता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 737

सारांश यह है कि मालिक की प्राप्ति के मार्ग पर चलने के लिए किसी को अपनी जाति या धर्म छोड़ने की आवश्यकता नहीं, न ही अपना रहन-सहन बदलने की ज़रूरत है, क्योंकि वही परमात्मा सबके अंदर है और अपने अंदर ही वह मिल सकता है।

धर्म क्या है और क्या होना चाहिए

धर्म आजकल रूहानी सच्चाइयों के स्थान पर धर्म ग्रंथों और पुरातन कथा-कहानियों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना ही बनकर रह गया है। वह प्राचीन महापुरुषों के जीवन की जाँच-पड़ताल करने, धर्म पुस्तकों के ईश्वर-कृत होने के प्रमाण जुटाने और उनकी शिक्षाओं के तर्क-वितर्क तक ही सीमित रह गया है। कई लोग

नये विचारों को प्राचीन पुस्तकों के सिद्धांतों के साथ मिलाने के यत्न में लगे हुए हैं जबकि कुछ अन्य लोग अपने धर्म को दूसरे धर्मों की अपेक्षा अधिक सत्य, अधिक प्रामाणिक और बेहतर घोषित कर रहे हैं।

जो लोग धार्मिक होने का दावा करते हैं वे अकसर पुराने रीति-रिवाजों में जकड़े रहने में ही अपना गौरव समझते हैं। लेकिन पुराने सिक्कों को, चाहे वे कितना ही मूल्य अथवा ऐतिहासिक महत्त्व क्यों न रखते हों, नयी टकसाल में ढालना पड़ता है ताकि वे प्रचलित राज्य-काल में चल सकें। इसलिए आज यह बहुत ज़रूरी है कि इक्कीसवीं सदी के मनुष्य के आगे ऐसी तालीम रखी जाए जो बाहरी आवरणों, रंगरूपों और छोटी-छोटी बातों को छोड़कर महत्त्वपूर्ण और मूल्यवान हो, जो पूर्ण और यथार्थ हो।

आजकल अलग-अलग धर्मों के लोगों के विचारों में जो संकीर्णता और शत्रुता प्रकट हो रही है, वह उन धर्मों के संस्थापकों की शिक्षा का नतीजा नहीं है, बल्कि उनकी सच्ची शिक्षा से अनजान होने के कारण, स्वार्थ, अविद्या, धार्मिक अभिमान और पक्षपातपूर्ण रवैये का नतीजा है। वे लोग किसी एक या दूसरे महात्मा पर, जिसे गुज़रे हुए सैकड़ों या हज़ारों साल बीत चुके हैं, विश्वास करने को ही आत्मा की मुक्ति का साधन समझे बैठे हैं। इसी धार्मिक उन्माद (जुनून) में वे इस तथ्य को संसार के आगे रखना भूल जाते हैं कि ईश्वर परम आत्मा है जिसकी सच्ची पूजा जीवात्मा का उसके साथ अभेद होना है।

धर्म, वास्तव में, परमात्मा की ओर जाने और अंत में उसमें समाकर नया जीवन पाने का साधन होना चाहिए। लेकिन ज़्यादातर संगठित धर्म तंगदिली के कारण कोई विशेष वेश धारण करने, पुजारियों द्वारा निर्धारित रीति-रिवाजों का पालन करने और जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों को विधिवत करने तक ही सीमित रह गए हैं और कुछ विशेष मंत्रों को विशेष विधि से उच्चारण करने को ही काफ़ी समझ लिया जाता है।

परमात्मा का राज्य हमारे अंदर है (ल्यूक 17:21), जिसका सब संत-महात्मा उल्लेख करते हैं और जिसके संकेत हमारे पास ग्रंथ-पोथियों में मौजूद हैं। अनुभवी पुरुषों की कमी के कारण आजकल धर्म कर्मकांडों के बाहरी बंधनों तक ही सीमित होकर रह गए हैं। वे हमें यह नहीं सिखाते कि मनुष्य किस प्रकार अपने अंदर जा सकता है और किस प्रकार परमात्मा के राज्य को पा सकता है। वे हमारी मनोवृत्ति के फैलाव के उस ज़हर से, जो हम सब पर चढ़ा हुआ है, बचने में हमारी सहायता नहीं करते। आजकल के धर्म हमें पिछले समय में हुए एक या दूसरे महात्मा (राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, कबीर, गुरु नानक आदि) की पूजा

करने का उपदेश देते हैं लेकिन वे यह नहीं बताते कि उन महात्माओं ने सत्य का अनुभव कैसे प्राप्त किया और अब हम उस सत्य से कैसे जुड़ सकते हैं।

धर्म इस बात पर विश्वास कर लेने पर बल देते हैं कि कोई ख़ास धर्म ग्रंथ प्रभु से सीधे प्राप्त आदेशों (इलहाम) पर आधारित है, पर वे यह नहीं बताते कि उनमें लिखे अनुभवों को हम कैसे अपने जीवन में उतार सकते हैं। वे यह तो बताते हैं कि हम भवसागर से पार कैसे हो सकते हैं और वह जहाज़ जिस पर चढ़कर पार जाना है, कौन-सा है, पर उस पर हमें चढ़ा नहीं सकते। उनके पास भवसागर से पार जाने का कोई सामान नहीं है, उन्हें तो इस भवसागर के सफ़र का भी पता नहीं और न ही उन्हें इसके तूफ़ानी वेग को वश में करने का कोई तरीक़ा आता है।

इन रीति-रिवाजों का, जिनको ज़्यादातर धर्मों में प्रमुखता दी गई है कोई रूहानी लाभ नहीं। जब तक मनुष्य सावधान होकर अपने अंतर में उस मालिक से नहीं मिलता, उसके गुणों और उसकी सत्ता को अपने अंदर ग्रहण नहीं करता, उसके सब कर्म-धर्म निष्फल हैं। वह परमात्मा अनंत निश्चल मौन और आनंद का सागर है। जब तक हमारे अंदर पूर्ण मौन और शांति न हो, हम उस शब्द, उस धुन से नहीं जुड़ सकते जिसके द्वारा हमें उस मौन के सागर में लीन होना है। यह मौन या शांति ही असलियत है। जो वस्तु हमेशा अटल है उसका अनुभव हमारी बुद्धि नहीं, आत्मा ही कर सकती है। उसे हम अपने अंदर जाकर देख सकते हैं। हम ईश्वर की कल्पना नहीं कर सकते क्योंकि वह मन और बुद्धि से परे है:

सोचै सोच न होवई जे सोची लख वार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

परमात्मा को हम स्थूल रूप में नहीं देख सकते, हम अपने अंदर सूक्ष्म और कारण मंडलों के पर्दों के पार अपनी सूक्ष्म शक्तियों द्वारा केवल उसका अनुभव कर सकते हैं:

वडा साहिब ऊचा थाउ॥ उचे उपर ऊचा नाउ॥
एवड ऊचा होवै कोए॥ तिस ऊचे कउ जाणै सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 5

हम उसे केवल भक्ति और प्रेम द्वारा पा सकते हैं, कल्पना या विचार द्वारा कभी नहीं, क्योंकि परमात्मा का साक्षात्कार करना मन और बुद्धि के दायरे से परे है। बुद्धि हमारी चैतन्य शक्ति के रास्ते में एक बड़ी रुकावट है। जब तक हम

इस रुकावट से ऊपर नहीं उठ जाते, तब तक हम पूर्ण चेतन मंडलों में नहीं पहुँच सकते, न ही परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं।

रूहानियत का मार्ग

संतमत सुरत-शब्द के मार्ग का नाम है यानी यह सुरत के उस परिपूर्ण प्रभु (शब्द) के साथ जुड़ने का अंतर्मुख अनुभव है। यह अनुभव मत मतांतरों से कहीं ऊँचा है। इसी को हम संतमत या संतों की शिक्षा कहकर पुकारते हैं। यह शिक्षा परमार्थ के असली सिद्धांतों का वर्णन करती है। यह धर्मों से कहीं बढ़कर है, क्योंकि धर्म तो केवल सिद्धांतों, मान्यताओं और चमत्कारों का ही वर्णन करते हैं।

सुरत-शब्द मार्ग सच्चा विज्ञान (साइंस) है जो किसी बात को यों ही मान लेने की शिक्षा नहीं देता। जब भी किसी जाति के लोगों ने इस शिक्षा को धारण करके अपने अनुभवों का वर्णन किया है, वे सब गणित की तरह एक ही नतीजे पर पहुँचे हैं। रूहानी विज्ञान का यही उद्‌देश्य है कि मनुष्य माया के पर्दों से मुक्त होकर स्वयं को पहचान ले कि वह आत्मा है, जो स्वयं चेतन है और महाचेतन के समुद्र का अंश है। जब आत्मा उस महाचेतन सागर में समा जाती है, तो उसमें परमात्मा के गुण प्रकट हो जाते हैं जिस तरह पानी की बूँद समुद्र में समाकर समुद्र हो जाती है।

बाहरी रचना को लाँघकर, कुलमालिक तक पहुँचने का यह काम मनुष्य अपने यत्न से लाखों वर्षों में भी नहीं कर सका है जबकि गुरु की सहायता से यह काम आसानी से किया जा सकता है। गुरु सुरत-शब्द योग का मार्ग बताते हैं जो सरल और सीधा है। अमीर या ग़रीब, उच्च या नीच, विद्वान या अनपढ़, पूर्वी या पश्चिमी, उत्तरी या दक्षिणी, हर मनुष्य के लिए यह एक ही मार्ग है। सुरत-शब्द योग का अभ्यास अमर जीवन और आनंद प्रदान करता है। जो लोग इस मार्ग को ठीक तरह समझकर इस पर चलते हैं, उनके लिए यह मार्ग क़ुदरत के दूसरे क़ानूनों की तरह सादा और क़ुदरती है, परंतु जो लोग बिना सोचे समझे अंधाधुंध इस मार्ग पर चलते हैं उनके लिए यह मार्ग कठिन है।

संतजन संसार सागर के मल्लाह हैं, आत्मा को परमात्मा के साथ मिलाने का ज़रिया हैं। संत वे पवित्र आत्माएँ हैं जो धुरधाम से आकर शरीररूपी पिंजरे के बंधनों को स्वीकार करके आत्माओं को मालिक की ओर, जो हमारा स्रोत है और जिसके साथ हमारा क़ुदरती संबंध है, ले जाने का व्यापार करती हैं:

चीस्त रूह आं तायरे-क़ुदसी सिफ़त,
दर कफ़स महबूस बहरे-मअरिफ़त।

आमदा बहरे-तिजारत अज़ अदम,
रू बदां सू बाशद ऊ रा दम-ब-दम।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 521

मौलाना रूम का कहना है कि आत्मा वह सद्गुणी पक्षी है जो तन के पिंजर में बंद है और आज़ाद होना चाहती है। यह सत्य का व्यापार करने के लिए इस संसार में आई है और इसका ध्यान हमेशा अपने रूहानी स्रोत से जुड़ा रहता है।

संतों के अनमोल रूहानी भंडार, सुरत-शब्द के अनुभव भरे वचन, धर्म पुस्तकों में दर्ज हैं। ये सारे संसार की सांझी संपत्ति हैं। जिस प्रकार परमात्मा सबका सांझा है, उसी प्रकार संतजनों के अनुभव संपूर्ण मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए हैं। ये किसी विशेष जाति या धर्म की संपत्ति नहीं, परमात्मा उनका है जिन्हें परमात्मा ने अपना बना लिया है:

आपन बापै नाही किसी को भावन को हर राजा॥
मोह पटल सभ जगत बिआपिओ भगत नही संतापा॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 658

गुरु साहिबान के अनमोल परमार्थी वचन रूपी लाल आदि ग्रन्थ के रूप में हमारे पास मौजूद हैं। गुरुमत सिद्धांत में इस ख़ज़ाने को संसार के सामने स्पष्ट रूप में प्रकट करने का तुच्छ-सा प्रयत्न किया गया है:

पीऊ दादे का खोल डिठा खजाना॥ ता मेरै मन भइआ निधाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 186

सुरत-शब्द योग का ध्येय हमारी आत्मा को सीधे मालिक से जोड़ने का प्रयत्न करना है। यह आत्मा को मालिक का अनुभव करवाने का मार्ग है। दीक्षा के समय गुरु शिष्य को भली प्रकार समझाकर इस मार्ग पर लगा देता है। यह साइंस उतनी ही पुरानी है जितना मनुष्य है और यह मार्ग सत्पुरुष का बनाया हुआ है।

संक्षेप में गुरुमत सिद्धांत लोगों को प्रेरणा देने का एक प्रयास है कि उठो, जागो और संतों को, जो रूहानी बादशाह हैं, गली-गली, नगर-नगर, देश-देश, जहाँ भी वे मिल सकें, ढूँढ़ो और उनकी शरण लेकर इस मार्ग पर चलो, जो खड़ग की धार के समान है और जिसमें स्थूल शरीर के मोह को सूली पर चढ़ाना पड़ता है। किसी ऐसे गुरु की तलाश करो जो तुम्हें असत्य से सत्य की ओर चलने का केवल उपदेश ही न दे, बल्कि स्वयं लोक-परलोक और रूहानी

मंडलों पर तुम्हारे साथ चले भी। गुरु नानक साहिब कहते हैं कि जो जीवन में हमारा साथ निभाते हैं वही हमारे मित्र हैं और वे ही हमारे साथ खड़े रहेंगें जहाँ हमारे कर्मों का लेखा-जोखा होना है:

सजण सेई नाल मै चलदिआ नाल चलंन्हि॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंन॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

मौलाना रूम कहते हैं कि वह इस जहाँ में भी और उस जहाँ में भी तुम्हारे साथ होगा ताकि तुम राह से भटक न जाओ:

बा तू बाशद दर मकान ओ ला-मकां
चूं बमानी अज़ सरा ओ अज़ दुकां।
मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 3, पृ. 45

गुरु अर्जुन देव जी दुनिया के झूठे मित्रों को छोड़कर संतों के साथ नाता जोड़ने की हिदायत करते हैं जो हमारे मरने के बाद भी हमारा साथ नहीं छोड़ते:

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ ढूढ सजण संत पकिआ॥
ओए जीवंदे विछुड़हि ओए मुइआ न जाही छोड़॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1102

हमारी आत्मा उन मंडलों से आई है जो समय और स्थान की सीमा से परे हैं। इसलिए तुम संतों की संगति में अंतरात्मा को जागृत करो, जो स्थान और समय की सीमा से परे हैं और परमात्मा से अभेद हैं। हमारे सारे दुःख मालिक से बिछुड़ जाने की वजह से हैं। उससे अपनी अंतरात्मा को जोड़कर सुखी हो जाओ। संत हमारे सच्चे मार्गदर्शक हैं। उनसे सीखो कि तुम किस प्रकार शांति प्राप्त कर सकते हो और किस प्रकार अंतर में पूर्ण स्थिरता और मौन को प्राप्त करके अपने अंदर सूर्यों के सूर्य (प्रकाश के स्रोत) की ओर मुख कर सकते हो।

संतों की शिक्षा क़ुदरती और सबसे प्राचीन है। यह मनुष्य के साथ ही आई है। यह एक निश्चित और अटल मार्ग है जो कभी बदला नहीं, आदि काल से चला आ रहा है और जिसे कोई घटा-बढ़ा नहीं सकता, क्योंकि यह परमात्मा का बनाया हुआ है। गुरु, संत और महात्मा जो मालिक से अभेद हैं, इस मार्ग की शिक्षा सदा से देते चले आ रहे हैं। यह मार्ग क़ुदरती है और निजी तौर पर हम

इसका अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। यह इनसान का बनाया हुआ नहीं, ख़ुद ख़ुदा का बनाया हुआ है। इस मार्ग में किसी को अंधविश्वास करने की ज़रूरत नहीं, इसका अनुभव ख़ुद अपने अंतर में प्राप्त किया जा सकता है।

धर्म और सांप्रदायिकता

आमतौर पर अधिकतर लोग कर्मकांड को परमात्मा से ज़्यादा ज़रूरी समझते हैं। सांप्रदायिक दृष्टिवाले लोग केवल धर्म पुस्तकों पर विश्वास रखनेवाले और किसी पुराने महात्मा में श्रद्धा रखनेवाले व्यक्ति को धर्मात्मा मानते हैं। वास्तव में, यह धर्म नहीं सांप्रदायिकता है जो अमर बेल का कार्य कर रही है। यह धर्म पर पलती है और धर्म का रंग लेकर उसी का रक्त चूसती है, यहाँ तक कि धर्म के प्राण तक उड़ जाते हैं और सांप्रदायिकता मुर्दा चमड़े में निवास करती है। मस्त हाथी की तरह यह उसी क़िले को नष्ट कर देती है जो इसे आश्रय देता है और जिसकी चौकीदारी और हिफ़ाज़त करने का यह दावा करती है। धर्म का ठेकेदार बनकर सांप्रदायिकता धर्म के बाहरी रीति-रिवाजों को सच्चे धर्म के रूप में स्थापित करती है। यह जातिवाद को बढ़ावा देती है और लोगों को असलियत से दूर कर देती है। सांप्रदायिकता के पुजारी, केवल बाहरी आडंबरों पर मोहित होकर यह मान बैठे हैं कि रीति-रिवाज ही सब कुछ हैं और अंतिम आदर्श हैं। इनके अतिरिक्त और सब कुछ वे पाखंड समझते हैं।

हर मज़हब, जो मनुष्य की आत्मिक मुक्ति के लिए शुरू होता है, अंत में एक अच्छा ख़ासा जेलख़ाना बन जाता है जिसके परे कुछ सोचना या समझना बहुत कठिन हो जाता है। लोगों में अपने धर्म से पहले हो चुके महापुरुषों और धर्म-पुस्तकों के लिए आदर और बाक़ी सब के लिए नफ़रत पैदा हो जाती है। दिली और दिमाग़ी ग़ुलामी का फंदा गर्दन में पड़ जाता है और धार्मिक अभिमान और तंगदिली का पर्दा आँखों पर पड़ जाता है। मनुष्य अपनी सीमाएँ आप ही बना लेता है और कुएँ के मेंढक की भाँति, उससे परे कुछ नहीं देख सकता।

धर्मों के रीति-रिवाज, जिन्हें उनके आरंभ करनेवालों ने मालिक के प्रेम, दुनिया के त्याग और पूजा की आज़ादी की नींव पर रखा था, आज सांप्रदायिकता के ठेकेदारों के हाथों में आकर हथकड़ियों और बेड़ियों का काम दे रहे हैं और अलग-अलग धर्मों के लोगों में आपसी दुश्मनी और लड़ाई का कारण बन रहे हैं। वे सच्चे और विश्वव्यापी धर्म के विचार से बहुत दूर हैं। मनुष्य जीवन का उद्‌देश्य परमात्मा से मिलाप करना, उसके प्रेम और सिमरन में मग्न रहना तथा उससे और उसकी रचना से प्यार करना है; लेकिन इसके विपरीत परमात्मा

से हटकर, प्रेम से शून्य होकर, मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बन रहा है। वह परमात्मा का प्रेमी या भक्त बनने के स्थान पर धर्मांध (दीन धर्म का ठेकेदार) यानी निपट दुनियादार बन रहा है। दुनियादारी क्या है? उस परमपिता से विमुख होना, उसे छोड़कर किसी और से प्रेम करना या किसी और की स्तुति सुनना:

दानी किह् चीस्त दुनिया दिल अज़ ख़ुदा बुरीदन,
जुज़ इश्के-ऊ गुज़ीदन जुज़ ज़िक्रे-ऊ शुनीदन।
दीवाने-बू अली शाह क़लंदर, पृ. 84

इसलिए तुम परमात्मा के प्रेमी बनो। यदि धर्म उपदेशकों के उपदेशों के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम दुनिया और दुनिया के धर्मों से मुख मोड़कर अपने अंदर सच्चे मालिक से मिलो:

गर हमी ख़्वाहीद पैवस्तन बा वाए वाइजां,
बायद अज़ दुनिया-ओ-दीं करदन शुमा रा इनक़िताअ।
दीवाने-बू अली शाह क़लंदर, पृ. 62

जिनकी आंतरिक आँख खुल जाती है वे इन बातों को समझते हुए इनसे अलग ही रहते हैं। इस बारे में साईं बुल्लेशाह फ़रमाते हैं:

बुल्लया धरमसाला धड़वाई रैहंदे, ठाकुर-द्वारे ठग।
विच मसीतां कुसत्तीए रैह्ंदे आशिक़ रैहण अलग॥
साईं बुल्लेशाह, पृ. 368

रूहानियत: धर्म का आधार

धर्म शुरू किस प्रकार होता है? जब मनुष्य यह महसूस करता है कि उसकी ज़िंदगी अपने आप में स्वतंत्र नहीं, तब वह जीवन के भेद की खोज में लगता है और इसके 'क्यों' और 'किस प्रकार' को जानने का प्रयास करता है। वह जानना चाहता है कि क्या कोई और भी हस्ती है जो इस जीवन का आधार है, यदि है तो वह उसे जानना चाहता है। जब उसके अंदर यह खोज की भावना जाग उठती है, तो वह बाहरी मत मतांतरों को आदर्श नहीं मानता और न ही किसी धार्मिक क़ानून को पूर्ण समझता है। वह उस परम तत्त्व की खोज में लगता है, जो क्या अमीर और क्या ग़रीब, क्या धार्मिक नेता और क्या साधारण व्यक्ति, सभी के अंदर छिपा हुआ है और जिसकी झलक हमें प्रार्थना या अरदास और

ध्यान में लगे मनुष्य के मुख पर नज़र आती है। इससे किसी और परम सत्ता के होने का एहसास होता है। लेकिन उसको जानने से पहले अपने आप को जानने की ज़रूरत है। अपने आप को जान लेना सब कुछ जान लेने का क, ख, ग है।

आम लोग बाहरी चिह्न-चक्रों के धारण करने और किसी एक या दूसरे मत को मानने को धर्म समझते हैं, पर परमार्थ का संबंध आत्मा के साथ है। आत्मा क्या है, उसको जानकर, उसका आधार जो परम आत्मा या सारे संसार की आत्मा है, उसमें आत्मा को मिला देने का नाम सच्चे अर्थों में धर्म है। आत्मा पर्दों में छिपी होने के कारण परतंत्र है। हमें उन पर्दों को उतारकर उसे स्वतंत्र करना है। वह पारब्रह्म (स्थूल, सूक्ष्म और कारण मंडलों से पार) में पहुँचकर ही मुक्त हो सकती है। इस प्रकार आत्मारूपी बूँद को मालिकरूपी समुद्र में मिला देने का नाम धर्म है।

बुद्धि की पहुँच

रूहानियत धर्म की जान है, उसका आंतरिक भाग या सार तत्त्व है। संत-महात्मा संसार को इस आंतरिक धर्म का उपदेश देते हैं। यद्यपि यह जीवन का आधार है, लेकिन इसके बारे में आम लोग नहीं जानते। इसकी झलक इंद्रियों और बुद्धि के स्थिर होने पर ही मिल सकती है। यह मन, इंद्रियों और सोच विचार का विषय नहीं। यह कभी विचार की सीमा में आनेवाली वस्तु नहीं। कोई भी बौद्धिक चतुराई या अक़्लमंदी हमें उस तक नहीं पहुँचा सकती, चाहे लाखों, करोड़ों विचार और चतुराइयाँ ही क्यों न की जाएँ:

> सोचै सोच न होवई जे सोची लख वार॥
> ....
> सहस सिआणपा लख होहे त इक न चलै नाल॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

सोच-विचार से उसे जानना बिलकुल असंभव है। कहा जाता है कि एक बार सेंट ऑगस्टिन समुद्र के किनारे बैठे अपनी डी ट्रिनिटेट *(De Trinitate)* नामक पुस्तक लिख रहे थे। वहाँ उन्होंने एक बालक को देखा जो समुद्र का पानी सीप में भर-भरकर रेत में अपने बनाए हुए एक छोटे-से खड्डे में डाल रहा था। प्रश्न करने पर उस बालक ने उत्तर दिया कि वह सारे समुद्र के जल को उस खड्डे में डालकर समुद्र ख़ाली कर देना चाहता है। सेंट ऑगस्टिन ने उस बच्चे से कहा

कि तेरी मेहनत सब बेकार जाएगी। बच्चे ने जवाब दिया कि उसको अपनी मेहनत का कुछ न कुछ फल मिलने की आशा है, लेकिन उस परमात्मा को, जो सबका आधार है, बुद्धि द्वारा समझने का तुम्हारा (ऑगस्टिन का) प्रयास बिलकुल व्यर्थ है।

रूहानियत का वास्तविक अनुभव

परमात्मा वह शक्ति है जो हमें समझने और ज्ञान ग्रहण करने की योग्यता प्रदान करती है। संत-महात्मा आत्मा और परमात्मा के रिश्ते को अनुभव द्वारा समझने पर ज़ोर देते हैं। वे नक़द धर्म सिखाते हैं, जिसका अनुभव इस जीवन में ही हो सकता है। हमारी आंतरिक आँखें उसके प्रकाश को देखने और हमारे आंतरिक कान उसकी मधुर वाणी को सुनने के योग्य बन सकते हैं। सच्चा धर्म हमें वह आंतरिक अनुभव करवा देता है जिसके द्वारा जीते-जी परमेश्वर की हस्ती पर दृढ़ विश्वास आ जाता है, परम आनंद और पूर्णता प्राप्त हो जाती है, यह संसार उसी का रूप प्रतीत होता है और हम पर उसकी सेवा का रंग चढ़ जाता है। मरने के बाद इन सबकी प्राप्ति का क्या भरोसा है?

फ्राँस के एक फ़िलॉसोफ़र बर्गसाँ ने इसे 'खुला धर्म' कहा है। इसके विपरीत 'उधारी धर्म' है जिसे बर्गसाँ ने 'बंद धर्म' कहा है, जो रीति-रिवाजों का केंद्र है। उनका कहना है कि मौत के बाद उसके फल की प्राप्ति का वर्णन करना सिर्फ़ ज़बानी जमा-ख़र्च है। उसका क्या विश्वास है? आज हमें नक़द या खुले धर्म की आवश्यकता है, जिसकी रूहानी लहरों में स्नान करके आत्मा नवजीवन प्राप्त करे और गद्‌गद हो जाए। मालिक और रूहानियत किसी जाति या धर्म की जायदाद नहीं हैं।

जीवन के तीन पहलू: शरीर, मन और आत्मा

प्रत्येक मनुष्य आत्मा, मन और शरीर के मेल से बना है। इसलिए वह आत्मिक, मानसिक और शारीरिक किसी भी प्रवृत्ति का हो सकता है और उसी के अनुसार अपनी क्षमता की खोज कर सकता है। जिस मनुष्य की वृत्ति आत्मिक है वही आत्मिक पूर्णता का जल्वा देख सकता है।

भौतिक शरीर के दस औज़ार या यंत्र हैं जिनके द्वारा यह कार्य करता है:

पाँच कर्म इंद्रियाँ जिनके द्वारा कार्य किए जाते हैं—हाथ, पाँव, ज़बान (बोलना) और नीचे की दो इंद्रियाँ

पाँच ज्ञान इंद्रियाँ जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है—आँखें, कान, नाक, ज़बान (स्वाद) और त्वचा

मन के चार यंत्र हैं जिनके द्वारा यह कर्म करता है:

मन – समझने, मनन करने और निर्णय करने की शक्ति
चित्त – चिंतन, स्मरण शक्ति और ध्यान
बुद्धि – विवेक और फ़ैसला करने की शक्ति
अहंकार – हौमैं या ख़ुदी, निश्चय को कार्य में बदलने की शक्ति

मन के इन पहलुओं का संबंध अक़्ल, समझ, विवेक और अनुभव या पहचान करने से है और सब मिलकर ज्ञान की ओर ले जाते हैं।

कर्म शरीर से होते हैं, विवेक मन से होता है और आनंद आत्मा द्वारा अनुभव किया जाता है। जब ये तीनों (शरीर, मन और आत्मा) समता में आकर एक-स्वर हो जाते हैं तो जीवन शांत, आनंदमय और आदर्श बन जाता है।

मनुष्य के विकास में प्रशिक्षण (ट्रेनिंग), अभ्यास, ज्ञान और मनन-चिंतन बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम सब जानते हैं कि व्यायाम करनेवाला मनुष्य पहलवान बन जाता है और सैकड़ों मनुष्य उसका मान करते हैं। मन और बुद्धि का व्यायाम करनेवाला व्यक्ति बुद्धिमान तथा चतुर हो जाता है और हज़ारों आदमियों की दृष्टि में ऊँचा हो जाता है। आत्मा का व्यायाम (अभ्यास) करनेवाला मनुष्य लाखों पर छा जाता है, सब उसका आदर करते हैं और वह हर समय प्रसन्न रहता है। यह कर्म, ज्ञान और उपासना की असलियत है।

तवज्जोह और तवज्जोह को केंद्रित करने की शक्ति आत्मा के यंत्र हैं। इनके सही उपयोग से ध्यान की एकाग्रता प्राप्त होती है और एकाग्रता से सुरत को, जो अंतर में शब्द को सुनने की शक्ति है, सहायता मिलती है। अंतर में शब्द का सुनना श्रुति है, यही प्रणव का प्राणों द्वारा गान है, आकाशवाणी का सुनना है, यही आत्मा का आनंद है। इस शब्द धुन में स्वाभाविक आकर्षण है, इसके द्वारा मन स्थिर हो जाता है। यही नक़द धर्म है, इसी को सुरत-शब्द योग कहा गया है जो केवल गुरु की दीक्षा द्वारा प्राप्त हो सकता है।

बहिर्मुखी और अंतर्मुखी धर्म

साइंस प्रत्यक्ष जगत का विज्ञान है, धार्मिक कर्मकांड के नियम शारीरिक रहन-सहन तथा आचार-व्यवहार के विषय हैं, और परमार्थ आत्मा का और घट के आंतरिक खंडों-ब्रह्मांडों का ज्ञान है। वह मालिक का अनुभव करने और उसके साथ अभिन्न होने का विज्ञान है जो एक लाबयान और निराली हक़ीक़त है। परमार्थी धर्म (संतमत) कमाई (अभ्यास) और निजी अनुभव का विषय है। यह आत्मिक उन्नति द्वारा मनुष्य के जीवन में परिवर्तन लाने का नाम है। यह बौद्धिक संपदा के

विकास का नाम नहीं है। यह तो हमारी आत्मा के उस पूर्ण प्रभु में जाग उठने या पूर्ण सत्य में प्रवेश करने का नाम है। संतमत को धारण करके आत्मा प्रफुल्लित होती है, शांति और आनंद प्राप्त करती है। जिन्हें यह अनुभव है, वे मालिक की निकटता का अनुभव करते हैं। उन्हें मालिक की हस्ती सच साबित करने के लिए तर्कयुक्त (दलीली) प्रमाणों की आवश्यकता नहीं होती।

मालिक का अनुभव मन और तर्क की पहुँच से परे है, लेकिन यह तर्क के विरुद्ध नहीं है। जो मालिक में मग्न रहते हैं, वे भी उसका पूरी तरह वर्णन नहीं कर सकते। उसके भेद वर्णन की सीमा से परे हैं, उन्हें बाहरी आँखें देख नहीं सकतीं। परमात्मा के अनुभव की प्राप्ति के लिए पूर्ण मौन आवश्यक है। लंबी-चौड़ी चर्चाएँ हमें उससे दूर ही रखती हैं। वह तर्क, सोच विचार और बौद्धिक चतुराइयों से परे की वस्तु है। वह आत्मा पर प्रकाश की भाँति प्रकट होता है, लेकिन बाहरी ज्ञान में उलझे रहने के कारण हम इसे देख नहीं सकते।

बाहरी ज्ञान हक़ीक़त से बेख़बर है। हम बाहरी विद्याओं के ज्ञान में ही फँसे हुए हैं और आंतरिक तत्त्व के ज्ञान की ओर से पूरी तरह अचेत हैं। हम अपने शारीरिक दुःखों, तापों आदि को दूर करने का इलाज तो करते हैं, पर यह कभी नहीं सोचते कि हमारे मन की नीच गति को किस तरह रोका जा सकता है। हम जन्म से लेकर मृत्यु तक अपना जीवन खाने, पीने और सोने में बिता देते हैं, लेकिन अपने आप को और अपने आधार, उस पूर्ण परमेश्वर को नहीं जानते। हम केवल बाहरी या स्थूल चीज़ों में फँसे रहते हैं, फिर हम उस मालिक को, जो अंतर में मौजूद है, कैसे पा सकते हैं?

नदरी आवै तिस सिउ मोह॥ किउ मिलीऐ प्रभ अबिनासी तोह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 801

मालिक को हम अपने अंदर ही पा सकते हैं। इसलिए हमें अपने अंदर ही दृष्टि डालनी होगी, वहीं से आनंद का ख़ज़ाना प्राप्त हो सकता है। वह मालिक नाम और शब्द रूप होकर सब जगह व्याप्त है। लेकिन हम उसे तब तक नहीं सुन सकते जब तक हम बाहरी शोर से हटकर आंतरिक सुन्न या पूर्ण मौन की एकरूपता में प्रवेश नहीं कर लेते। जो व्यक्ति अंदरूनी असलियत देखने के लिए बाहरी आँखों, सुनने के लिए बाहरी कानों और बोलने के लिए बाहरी रसना के मुहताज हैं, वे परमार्थ की दृष्टि से मुर्दा हैं। जब हम अंदर जाते हैं, हम बिना पैरों के चलते हैं, बिना हाथों के काम करते हैं, बिना नेत्रों के देखते हैं और बिना कानों के सुनते हैं:

अखी बाझहो वेखणा विण कंना सुनणा॥
पैरा बाझहो चलणा विण हथा करणा॥
जीभै बाझहो बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकम पछाण कै तउ खसमै मिलणा॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 139

तुलसीदास जी भी रामचरितमानस के बालकाण्ड में यही फ़रमाते हैं:

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥

श्रीरामचरितमानस, 1.117.3

सबसे पहले हमें अपने आप को जानना आवश्यक है। यह तभी हो सकता है जब हम अपने ध्यान को बाहर भटकने से रोकें और अंदरूनी दुनिया में प्रवेश करके अंदरूनी मौन और स्थिरता का आधार बनाएँ। तभी आत्मा अपने परमात्मा को देख सकती है। परमार्थ का मुख्य ध्येय आत्मा और परमात्मा का मिलाप है। महात्मा बुद्ध फ़रमाते हैं कि वास्तविक तत्त्व की ऊँचाइयों को हम अपने अंदर ही पा सकते हैं। बाइबल में कहा गया है: "ख़ुदा की बादशाहत हमारे अंदर है।" (ल्यूक 17:21)

आंतरिक यात्रा के लिए न घरबार न कामकाज छोड़ने की ज़रूरत है और न ही जाति या धर्म को बदलने की। यह कार्य हम सांसारिक कामकाज करते हुए भी कर सकते हैं। इसकी युक्ति पूरे सतगुरु से प्राप्त होती है जो अंतर में हमारा मार्गदर्शन भी करते हैं:

नानक सतगुर भेटिऐ पूरी होवै जुगत॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

संसार को छोड़कर जंगलों में भटकने की आवश्यकता नहीं। ख़ुद अपने अंदर स्थिर होना ही वास्तविक एकांत है। ऐसे व्यक्ति, जिन्होंने अभ्यास द्वारा आत्मिक उन्नति कर ली है, भीड़भाड़ में भी एकांत प्राप्त कर लेते हैं। वे जब चाहें अपने अंदर एकांत में जा सकते हैं। जैसा मौन, जैसी शांति उन्हें अपने अंदर मिलती है, वैसा मौन, वैसी शांति और स्थिरता बाहर किसी स्थान पर नहीं मिल सकती। बाहर के जंगलों और नदियों के किनारों पर कुछ नहीं मिल सकता, जब तक कि हमारा मन एकाग्र न हो।

धर्म के दो पहलू हैं–एक सामाजिक और दूसरा आत्मिक। सामाजिक धर्म का उद्देश्य केवल किसी विशेष समाज या श्रेणी का समर्थन और विकास है। आपसी मेल मिलाप या आचार-व्यवहार के नियमों का सुधार, पुरानी यादगारों और त्योहारों को मनाना और धार्मिक कर्मकांड का पालन करना, यह प्रवृत्ति का मार्ग है। लेकिन आत्मिक धर्म का कार्य केवल आध्यात्मिक है, वह यह जानना है कि आत्मा क्या है और उसका मालिक के साथ क्या संबंध है। इसका ध्येय केवल आत्मा की उन्नति करना और उसको मालिक के साथ जोड़ना है, ताकि जीव अपने जीवनकाल में ही सब बंधनों से मुक्त होकर परमात्मा का अनुभव प्राप्त कर ले और उसमें अभेद हो जाए।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज का आधार आत्मिक उन्नति है। जिस तरह जिस्म की क़ीमत उसके अंदर बसी रूह से है, उसी प्रकार किसी समाज का महत्त्व उसके सदस्यों की रूहानी जागृति पर निर्भर है। लेकिन आत्मिक उन्नति की कमी से समाज तंगदिली, धार्मिक पक्षपात और ख़ुदग़र्ज़ी का केंद्र हो जाता है, जो विभिन्न मतों के आपसी विवाद, द्वेष और झगड़ों का मुख्य कारण है।

संतों का मत केवल रूहानी है। वे चाहे किसी भी समाज में रहते हों, पर उनका असली उद्देश्य अचेत या सोई हुई आत्माओं को चेताना है, सुरत-शब्द योग की कमाई करवाना है। इसलिए वे धार्मिक और जाति संबंधी झगड़ों-बखेड़ों से दूर ही रहते हैं। वे न तो किसी नये धर्म या संप्रदाय की स्थापना करते हैं, न किसी पुराने धर्म को गिराते हैं।

आजकल सामाजिक धर्मों की कमी नहीं, कमी है तो आत्मिक धर्म की। मनुष्य के लिए इस असलियत को समझना आवश्यक है। यदि असलियत का बोध हो जाए तो वह चाहे गृहस्थ हो या त्यागी हो जाए, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

सब धर्मों की बुनियाद में रूहानियत (सुरत-शब्द मार्ग) का उपदेश है, जो लगभग लुप्त होता जा रहा है, केवल टेक ही टेक बाक़ी रह गई है। संतों की शिक्षा किसी ग्रंथ या कर्मकांड की रूढ़ियों और बंधनों से संबंध नहीं रखती। इसका संबंध आत्मा की उन्नति से है, आत्मा को नाम में रँग देने से है। यह आत्मिक आनंद को प्राप्त करने की विधि है जो सत्संग द्वारा प्राप्त होती है, सिखाने-पढ़ाने से प्राप्त नहीं होती। जब आत्मिक अनुभव में आनंद आता है तो जीव उसमें मग्न रहता है और सुरत स्थिर हो जाती है। सुरत के स्थिर हो जाने पर काल और माया का ख़याल तक पास नहीं फटकता।

संतों की शिक्षा 'इल्मे-लदुन्नी', आत्मज्ञान है जो बग़ैर लिखे-पढ़े प्राप्त होता है। संतों की जीवनियों पर दृष्टि डालें। उन्हें पूर्ण आत्मिक ज्ञान प्राप्त था।

सब संतों का मत चाहे वे किसी जाति या देश में हुए हों एक ही रहा है। उसमें अंतर या भेद की संभावना नहीं। संत रीति-रिवाज और कर्मकांड के झंझटों की ओर ध्यान नहीं देते। उनका उद्‌देश्य जीवों को आत्मिक शिक्षा देकर मालिक के साथ जोड़ना है। वे संसार को मालिक से विमुख करने के लिए नहीं आते। मौलाना रूम कहते हैं कि जब मूसा ने एक भक्त के दिल को ठेस पहुँचाई तो ख़ुदा ने यह कहते हुए उसे फटकार दिया कि तुम जोड़ने के लिये आए थे तोड़ने के लिए नहीं:

तू बराए वसल करदन आमदी, नै बराए फ़सल करदन आमदी।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 173

अंत में यह कहना ज़रूरी है कि संतों की शिक्षा प्रकृति के अन्य प्रसादों (प्रकाश, हवा, जल आदि) की भाँति सबके लिए मुफ़्त है।

विज्ञान और धर्म

आमतौर पर वैज्ञानिकों की धारणा है कि धर्म केवल भ्रम या अंध विश्वास है और मनुष्य धर्म के बिना भी उतने ही आराम से रह सकता है, जितना धर्म का पालन करते हुए। एक प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स का कहना है कि धर्म मनुष्य के लिए अफ़ीम का काम करता है। इसके विपरीत आस्तिक यह कहकर प्रसन्न होते हैं कि विज्ञान ने सर्वनाश के शैतानी हथियार तैयार किए हैं और संसार में झगड़े और अशांति को बढ़ाया है।

वैज्ञानिक यह तो मानते हैं कि मनुष्य के अंदर मन है और अगर इसका भली प्रकार ख़याल रखा जाए तो आत्मा (अगर इस प्रकार की कोई वस्तु है तो) अपनी चिंता आप ही कर लेगी। उनकी प्रार्थना कुछ इस प्रकार की होती है, 'हे मालिक, (अगर कोई है तो) मेरी आत्मा (यदि कोई है तो) की सँभाल कर।' उन्हें आत्मा और परमात्मा दोनों के बारे में शंका है, इनके होने में पक्का विश्वास नहीं।

संत-महात्माओं के लिए आत्मा एक सच्ची हस्ती है जो चंचल मन और शरीर – जो मिट्टी का पुतला है- के बंधनों में फँस गई है। उनके लिए जीवन का आदर्श आत्मा को इन बंधनों से मुक्त करके परमात्मा के साथ जोड़ना है। यह उन्होंने अपने अनुभव द्वारा जाना है। आत्मा की इन बंधनों से आज़ादी को वे मुक्ति कहते हैं।

बहुत-से लोग मुक्ति का वास्तविक अर्थ नहीं समझते। इसके बारे में उनकी धारणा अलग-अलग है। कई लोग तो पत्थर की भाँति जड़ हो जाने को मुक्ति कहते हैं और कई बूँद के समुद्र में मिल जाने को या ज्योति के जोत में समा

जाने को मुक्ति समझते हैं। असल में दिल या मन के कारण आत्मा और शरीर का एक दूसरे से बँध जाना बंधन है और उस बंधन के न रहने का नाम मुक्ति है। संसारिक कामकाज करते हुए भी अंदरूनी तौर पर हर वक़्त परमात्मा से लिव जोड़े हुए संसारिक ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने की गति संतों की दृष्टि में मुक्ति है। इसे ही जीवनमुक्त होना कहा जाता है।

परमार्थ की प्रथम सीढ़ी गुरु भक्ति है, फिर नाम की कमाई है जिससे मुक्ति प्राप्त होती है। यह मुक्ति की वह अवस्था है जिसमें सच्चे धुरधाम, जो आत्मा का निजधाम है की जीते-जी प्राप्ति होती है:

हाफ़िज़ा खुल्दे-बरीं ख़ानाए मौरूसे-मन अस्त।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 294

ऐ हाफ़िज़! सचखंड मेरा मौरूसी (पैतृक) घर है।

सभी जीवित वस्तुओं (जिनमें मनुष्य भी शामिल हैं) पर वातावरण के दो प्रभाव होते हैं– एक अंदरूनी और दूसरा बाहरी– जिनकी सीमा नहीं है और जो सारे संसार में समान रूप से व्याप्त हैं। जब तक मनुष्य की आकांक्षाओं और बाहरी वातावरण में तालमेल रहता है, वह ख़ुश रहता है। यदि सब कुछ हमारी इच्छानुसार होता रहे, हम प्रसन्न हैं। लेकिन देखने में आता है कि यह एकरस रहने की हालत अधिक समय तक नहीं रह सकती क्योंकि अंदर और बाहर के हालात स्थिर नहीं हैं, दोनों ही बदलते रहते हैं। मनुष्य इस एकरसता को पाने के लिए दो प्रकार से कोशिश करता है। एक तो बाहरी पदार्थों पर इस प्रकार अधिकार पाकर कि उसकी ज़रूरतें, जब भी वह चाहे, पूरी हो सकें और दूसरे अंतर की उत्तेजनाओं, तृष्णाओं को इस प्रकार वश में करके कि बाहर के सदा बदलने वाले वातावरण का उसके ऊपर असर न हो।

यदि विज्ञान और धर्म के लाभ और उनकी सीमाओं पर गहराई के साथ विचार करें, तो उन दोनों का आपस में तालमेल बैठाने के लिए कई आधार मिल जाएँगे। साइंस का संबंध भौतिक पदार्थों से है जिनका जोड़तोड़ किया जा सकता है और जिनका आकार, नाम तथा वज़न होता है। विद्युत अणुओं से लेकर तारों तक वे सब पदार्थ जिनका वर्णन हम शब्दों में कर सकते हैं, विज्ञान की सीमा के अंदर हैं। हमारे भाव तथा मानसिक विकार और बाहर के वे सब सामान भी जो हम पर प्रभाव डालते हैं, विज्ञान के दायरे में ही आते हैं। बाहर के विज्ञान में हम हर वस्तु को इन इंद्रियों (आँखें, कान, नाक आदि) द्वारा देख, सुन और

सूँघ सकते हैं पर अंदर की दुनिया निराली है, वहाँ हमारी इस प्रकार की पहुँच नहीं। बाहर की इंद्रियाँ मनुष्य के अंदर की अवस्था को नहीं देख सकतीं। दूसरी बात यह है कि विज्ञान की खोज में हम बाहर की सामग्री से बहुत कुछ सहायता ले सकते हैं और बहुत-से लोग उनके बारे में तजरबा कर सकते हैं। विज्ञान के तजरबों और नतीजों को हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं। बाहर की दुनिया में विज्ञान के विशेष महत्त्व के यही मूल कारण हैं। विज्ञान में सदा नये प्रयोग हो रहे हैं और होते रहेंगे। इनका कोई अंत नहीं और ज़िंदगी यूँ ही बदलती रहेगी।

इसके विपरीत, आत्मिक मंडल बहुत अलग हैं। वे अद्‌भुत हैं, पर वहाँ पहुँचा नहीं जा सकता क्योंकि न वे इन भौतिक आँखों द्वारा देखे जा सकते हैं और न बुद्धि द्वारा समझे जा सकते हैं। इसलिए धर्म में विश्वास केवल पहुँचे हुए महात्माओं द्वारा कही गई बातों पर निर्भर करता है, जिन्होंने अनुशासन द्वारा अपने को पवित्र किया और अपने अंदर सत्य का साक्षात्कार कर परम आनंद पाया। बाधाओं को लाँघकर शांति और आनंद अपने अंदर ही पाया जा सकता है। आनंद का वह भंडार मनुष्य के अपने अंदर है जिसे पाकर वह अंदरूनी उत्तेजनाओं पर क़ाबू पाता है और उसकी ख़ुशी का बीमा हो जाता है (ख़ुशी स्थायी हो जाती है), चाहे बाहर की दुनिया में उसे सिर छिपाने के लिए भी स्थान न हो।

धर्म के मार्ग में बहुत-सी रुकावटें हैं। सब इनसान जिनमें संत-महात्मा भी हैं मरते हैं। मौत के बाद उनके संदेशों और उपदेशों में बहुत-सी मनगढ़ंत बातें मिलाकर उन्हें खींच-तान करके तोड़-मोड़ दिया जाता है। उनकी निजी रसाई (पहुँच) और अनुभवों का दूसरे लोग विज्ञान के आविष्कारों और यंत्रों की भाँति लाभ नहीं उठा सकते, और न हमारे पास ऐसा मसाला है जिसके सहारे संतों की रूहानी रसाई और अनुभवों को हम बाहर औरों के सामने रख सकें, जिस प्रकार रेडियो से हम सारे संसार से वार्ता कर सकते हैं या हवाई जहाज़ पर सवार होकर हम सारे संसार (जल-थल) पर उड़ सकते हैं।

एक संत की अवस्था प्राप्त करने के लिए हमें उनकी शिक्षा के अनुसार चलना पड़ता है। यह शरीर संतों की प्रयोगशाला है, इसके अंदर जाना और संतों के तजरबों को अपने अनुभव में लाना पड़ता है। अंदरूनी दुनिया का आमतौर पर सबको एक साथ सामूहिक अनुभव नहीं होता। प्रत्येक आत्मा अकेले ही अपने अंदर उस अनुभव का रस लेती है, इसलिए रूहानियत निश्चयपूर्वक निजी या व्यक्तिगत अनुभव है।

धार्मिक जीवन विशाल मंदिरों, मसजिदों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों पर निर्भर नहीं करता और न ही धर्म पुस्तकें या धर्म आदेश उसकी प्रगति का सबूत हैं।

इसका सबूत गिनती के वे जीवित महापुरुष हैं, जिन्हें प्रभुरूपी परम तत्त्व का निजी अनुभव प्राप्त है और हर समय हो रहा है, जिसे पाकर उन्हें बाक़ी सब चीज़ें तुच्छ प्रतीत होती हैं।

साइंस के तजरबों की तरह रूहानी तजरबे भी एक विशेष विधि के अनुसार किए जाते हैं। जिस प्रकार विज्ञान का कोई प्रयोग करने से पहले हम उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए यह तसल्ली कर लेते हैं कि हमारे औज़ार साफ़-सुथरे हैं और बाहर की किसी वस्तु का उन पर कोई प्रभाव नहीं है, ठीक उसी प्रकार अभ्यास में सफलता के लिए जिज्ञासु को सच्चे और पवित्र जीवन की आवश्यकता है। उसमें इतनी योग्यता होनी चाहिए कि वह चैतन्य होकर अपने मन को बाहरी रुकावटों, अंदरूनी उत्तेजनाओं, प्रलोभनों और आसपास के वातावरण के प्रभावों से बचा सके। ऐसा कर लेने के बाद वह बाहर के मेलजोल के जीवन को छोड़कर उस विज्ञान की प्रयोगशाला में सब दरवाज़े बंद करके पूर्ण एकाग्रता के साथ तजरबा कर सकता है।

मूर्ति पूजा या परमात्मा की भक्ति

मनुष्य की आत्मा चेतन (परंतु अदृश्य) और शरीर (जड़) का मेल है। जहाँ तक मनुष्य जड़ है, जड़* तत्त्वों के नियम उस पर लागू होते हैं। जहाँ तक वह सजीव है उस पर सजीव† तत्त्वों के नियम लागू होते हैं, जो उसे अपने पालन-पोषण और आराम के लिए यत्न करने को प्रेरित करते हैं। जब तक मनुष्य शरीर में क़ैद है और यह नियम उस पर लागू होते हैं, तब तक उसे दुःख, दर्द और चिंता बनी रहती है। जब वह इनसे ऊपर आत्मा से संबंध रखेगा, वह सुख स्वरूप हो जाएगा। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

> *तन धर सुखिया कोइ न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।*
>
> *कबीर साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 34*

इसी विषय में महात्मा बुद्ध का कथन है कि शारीरिक जीवन दुःख का रूप है। हर समय शरीर को ही बनाने, सँवारने और उसके पालन-पोषण में लगे रहना भी वास्तव में मूर्ति पूजा है। इस शरीर के अंदर आत्मा के बनाव-श्रृंगार और मालिक के साथ उसे जोड़ने का प्रयत्न करने का नाम परमेश्वर की पूजा है।

---

* जड़ तत्त्वों के नियम: भार शक्ति, आकर्षण शक्ति, जुड़ने की शक्ति, अलंघनीयता, प्रवाह शक्ति आदि।

† सजीव शरीर के नियम: पालन-पोषण, बढ़ना, विकास, आत्म-विस्तार आदि।

लेकिन हम इस ओर से बिलकुल बेसुध हैं इसके बारे में सोचते ही नहीं। हमें यह भी नहीं पता कि आत्मा का पालन और उसका श्रृंगार किस प्रकार होता है। शरीर से पहले आत्मा का श्रृंगार आवश्यक है। शरीर घर है और आत्मा उसकी निवासी है। केवल घर की सफ़ाई और बनाव-श्रृंगार किस काम के यदि उसमें रहनेवाला भूखा, प्यासा और अचेत पड़ा हो!

पहले घर में रहनेवाला हो, उसके बाद ही घर की ज़रूरत है। हम स्वयं (आत्मा) को भूलकर शरीररूपी घर के मोह और प्यार में इतने रच गए हैं कि हम इसकी दीवारों और छत का रूप बन चुके हैं। घर में रहनेवाला स्वयं ही घर बना पड़ा है। अगर हम इस शरीररूपी घर को सुंदर देखना चाहते हैं, तो इसमें रहनेवाले को सुंदर बनाना चाहिए। यह घर तो बदलता रहता है। पुराना और कमज़ोर हो जाता है। यह सदा एकरूप नहीं रह सकता। इसे एक दिन छूट जाना है। तुम आत्मा हो, शरीर नहीं। शरीर नश्वर है, वह हमेशा रहनेवाला नहीं। शरीर की उचित देखभाल करते हुए, इसके अंदर अपनी आत्मा की बैठक पर (जो दोनों भृकुटियों के बीच, आँखों के पीछे है), ध्यान एकाग्र करके बैठ जाओ और किसी पहुँचे हुए महात्मा से शिक्षा लेकर, अपना संबंध कुलमालिक के साथ जोड़ लो। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि यदि कोई मुझे परमात्मा से मिला दे, मैं उसके पाँव पकड़ूँ, मीठे बोल बोलूँ और अपने प्राण उस पर न्योछावर कर दूँ।

> कोई जन हर सिउ देवै जोर॥
> चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजह प्रान अकोर॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 701

इस तरह हमारी आत्मा मालिक का रंग लेकर सच्चे अर्थों में सुंदर हो सकेगी और इसका झुकाव मालिक की ओर हो जाएगा। पहले अपनी आत्मा को भोजन देना चाहिए, बाद में इस शरीर को। ऐसा करने से हमारे अंदर रूहानी गुण प्रकट हो जाएँगे। इसलिए आवश्यक है कि सत्संग यानी सत्य का संग या ऐसे जीवित पुरुष की संगति करें जिसकी आत्मा परमात्मा में मिलकर परम चेतन हो चुकी हो। ऐसे आध्यात्मिक पुरुष की संगति से और मालिक की दया से हमारी आत्मा का तार कुलमालिक के साथ जल्दी जुड़ जाएगा।

काया वही सुंदर है जिसमें सुरत अपने पति, उस कुलमालिक, शब्द या नाम के साथ वास कर रही हो उस सच्चे पति के साथ मिलाप करने पर इसका सुहाग सदा बना रहता है, शरीर छूटे या रहे इसकी उसे कोई चिंता नहीं रहती।

काइआ कामण अत सुआल्हिउ पिर वसै जिस नाले॥
पिर सचे ते सदा सुहागण गुर का सबद सम्हाले॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

काया का भेद सतगुरु की सेवा करने या गुरुमुख बनने से प्राप्त होता है, यह चतुराई से प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह दात मालिक जिसे चाहे उसे देता है:

गुरमुख होवै सो काइआ खोजै होर सभ भरम भुलाई॥
जिस नो दे सोई जन पावै होर किआ को करे चतुराई॥
सा काइआ जो सतगुर सेवै सचै आप सवारी॥
विण नावै दर ढोई नाही ता जम करे खुआरी॥
नानक सच वडिआई पाए जिस नो हर किरपा धारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

आदर्श धर्म

आज हमें किस बात की ज़रूरत है? क्या एक नया विश्वव्यापी धर्म स्थापित किया जाए या एक ऐसा धर्म बनाया जाए जो सब धर्मों के गुणों और नियमों का सार हो? यह केवल विचार ही विचार है जो आज तक वास्तव में पूरा नहीं हो सका। किस शरीअत को छोड़ा जाए और किसको स्वीकार किया जाए? लोगों के स्वभाव और विचार करने के ढंग अपने-अपने और अलग-अलग हैं और हर एक अपना तरीक़ा उत्तम मानता है। संसार के मतों में समानता और अंतर सदा रहेगा। सबको एक ही विचार पर चलनेवाला नहीं बनाया जा सकता।

इसके बावजूद, इनसानों में आपस में ऐसी रूहानी समानता है, ऐसी साँझी परंपरा है, जिसे कोई ताक़त तोड़ नहीं सकती। धार्मिक रीति-रिवाजों आदि में भेद हैं लेकिन मूल बातें सबकी एक-सी हैं। इस समस्या को हल करने का केवल एक ही उपाय है कि परमार्थ को एक विज्ञान की भाँति संसार के सामने रखा जाए। जो कोई जिस भी धार्मिक विचार या नियम में है, उसी में रहते हुए परमार्थ के विज्ञान को अमल में लाकर सीखे और अपने इस शरीर की प्रयोगशाला के अंदर ही आत्मा का परमात्मा के साथ मिलाप का अनुभव करे। आत्मा का परमात्मा से मिलाप का नाम ही निजी धर्म है। दूसरे शब्दों में प्रभुरूपी 'सच' के साथ जुड़ने के अनुभव का नाम धर्म है।

महात्माओं की आत्माएँ मालिक के साथ जुड़ीं, उन्होंने अपने अनुभवों का, अर्थात् जो कुछ उन्होंने रूहानी मंडलों में देखा, ग्रंथ-पोथियों में वर्णन किया। किसी धर्म शास्त्र या मत मतांतर को झूठा न कहो। झूठा वह है जो उन पर विचार नहीं करता:

बेद कतेब कहहो मत झूठे झूठा जो न बिचारै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1350

एक और समस्या जो आदर्श धर्म को स्थापित करने की राह में आती है, वह व्यक्तिगत आचरण से संबंध रखती है। जिन्हें मालिक से मिलाप का अनुभव हो गया है वे सबके साथ प्यार करते हैं। वे मालिक के पिता होने का और सब मनुष्यों के प्रति भ्रातृ भाव का अनुभव करते हैं। निश्चित रूप से समझ लो कि जो लोग आपसी द्वेष और भेदभाव का उपदेश देते हैं, उन्होंने मालिक का अभी तक कोई अनुभव प्राप्त नहीं किया, यानी वे मालिक के अनुभव से ख़ाली हैं। हमारी आत्मा को उस मालिक का जो निजी अनुभव होता है, वही हमारा असली धर्म है। हमारे धर्म शास्त्रों में जिन रूहानी अनुभवों का वर्णन किया गया है, उन्हें जब तक गुरु के द्वारा हम अपने अंदर प्रत्यक्ष नहीं कर लेते, तब तक हम उसे अपना धर्म नहीं कह सकते, 'कैसे साहे, जो हम न विआहे'। हमें ऐसे धर्म की ज़रूरत है जिसका तजरबा हमें मालिक के साथ मिलकर हुआ हो।

यदि हम संसार के विभिन्न धर्म-शास्त्रों की व्याख्या या जाँच-पड़ताल करें तो पता लगता है कि उनमें जो सच्चाइयाँ हैं, वे उन धर्मों के चलानेवाले महापुरुषों के अपने निजी रूहानी अनुभवों का निचोड़ हैं। उन महापुरुषों ने मनुष्य के आत्मिक जीवन के अंग को विशेष रूप से प्रमुख रखा है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि मनुष्य के अंदर कोई ऐसी वस्तु है जो शरीर की भाँति बदलती नहीं। प्रत्येक मनुष्य को अपनी आत्मिक अवस्था का विकास करना चाहिए ताकि वह उस चीज़ को जान सके जो बदलती और मरती नहीं।

मनुष्य जीवन का आदर्श सांसारिक पदार्थों का भोग नहीं, बल्कि उस सत्य की प्राप्ति है जो हर एक मनुष्य के अंदर है। सब धार्मिक पुस्तकों में इस आंतरिक आत्मिक जीवन को जाग्रत करने और उस महाचेतन सत्य के गुणों को अपने अंदर धारण करने के साधनों का उल्लेख है। कोई सच्चा धर्म प्रेमी यह नहीं कह सकता कि सच्चा धर्म केवल व्यवहारों और रीति-रिवाजों का समूह है। सब मतों के अनुयायियों का मुख्य आदर्श उस सच को जानना ही है।

इसमें कोई शक़ नहीं कि सैकड़ों ऐसे धर्म और मत हैं जिनमें कर्मकांड पर ज़ोर दिया गया है, पर सबका उद्देश्य उस मालिक की प्राप्ति है और उनकी बुनियाद में एक ही सिद्धांत काम कर रहा है जो नाम, शब्द या कलमे की शिक्षा है। हमारी सुरत के इस शब्द के साथ जुड़ने में ही हमारा कल्याण है। इसी को सुरत-शब्द योग कहकर पुकारते हैं। परमात्मा से मिलाप करने का यही एकमात्र रास्ता है।

हमें सब धर्मों का प्रेमपूर्वक अध्ययन करना चाहिए और उस मूल सिद्धांत और साँझे आदर्श को धारण करना चाहिए ताकि धर्मों की आपसी खींच-तान दूर हो सके। हमारे हृदय में पिछले सभी धर्मों के प्रति सम्मान है क्योंकि सबकी बुनियाद में एक ही मुख्य सिद्धांत और आदर्श है। हमारे हृदय में उन सब पूर्ण महापुरुषों के लिए भी आदर है जो धुरधाम पहुँचे हैं या पहुँचेंगे और जो मालिक के साथ हुए या होनेवाले अपने अनुभवों को प्रकट करेंगे।

मालिक एक लाबयान भाषा में लिखी गई, कभी न ख़त्म होनेवाली अलौकिक किताब है। वेद, बाइबल, क़ुरान शरीफ़, गुरु ग्रन्थ साहिब आदि सब धर्म पुस्तकें मालिकरूपी किताब के बहुत-से पृष्ठ हैं जो लिखे जा चुके हैं और इसी प्रकार और अनगिनत पृष्ठ लिखे जाएँगे। जो पिछले संत-महात्मा उस मालिक का अनुभव वर्णन कर गए, जो वर्तमान महात्मा वर्णन कर रहे हैं और जो महात्मा आगे भी आएँगे, उन सबको हमारा नमस्कार है।

आज इस माया में फँसे हुए युग में हम धर्म के बारे में बहुत कुछ सुन रहे हैं। सबके लिए समान धर्म की स्थापना के लिए सम्मेलन होते दिखाई दे रहे हैं, अनेक पुस्तकें लिखी जा रही हैं, धर्म प्रेमियों की दृष्टि असलियत की ओर खींची जा रही है और नैतिक सच्चाइयों और नियमों को जो सबके लिए समान हैं, स्पष्ट रूप से संसार के सम्मुख रखा जा रहा है। ऐसे सम्मेलनों, उपदेशों और ऐसी पुस्तकों का अध्ययन एक ऐसे सर्वव्यापी धर्म का आदर्श हमारे सामने पेश कर रहा है जिसका मक़सद हमारी आत्मा का परमात्मा के साथ मिलाप करना है और जो आनेवाले समय में संसार का सर्वमान्य और विश्वव्यापी आत्मिक धर्म हो सकेगा। इसमें सब लोग अपने-अपने समाज में रहते हुए परमात्मा का अनुभव करने के लिये प्रेरित होंगे और भूतपूर्व तथा वर्तमान समय के आमिल फ़क़ीरों, संत-महात्माओं तथा ऋषि-मुनियों का मान करेंगे। यह ऐसा धर्म है जो परमात्मा ने ख़ुद बनाया है; यह मानव जाति को उसका उपहार है। यह उतना ही पुराना है जितना यह संसार। हमें केवल इसे अपने जीवन में उतारने की ज़रूरत है।

चेतना के स्तर

ऐ मानव! तू कब तक घड़े के बाहरी साँचे-ढाँचे और सजावट से मोहित होकर भ्रम में पड़ा रहेगा? इनसे हटकर घड़े के अंदर जो पानी है उसकी ओर दृष्टि डाल। तू कब तक बाहरी सूरतों पर मोहित होता रहेगा? तू हक़ीक़त का खोजी बन और हक़ीक़त की तलाश कर। बाहर से दिखाई देनेवाली सूरतें नाशवान हैं, केवल वह सच्चाई (हक़ीक़त) अटल और निश्चल है। तू बाहरी शक़्लों को देखकर और उनमें मग्न होकर हक़ीक़त की ओर से बेसुध हो रहा है। यदि समझदार है तो सीप में से मोती को निकाल ले, यह सीप तो केवल बाहरी खोल है। यह खोल केवल किसी बहुमूल्य वस्तु को रखने के लिए बनाया गया है। तुझे इसके अंदर झाँकने की ज़रूरत है।

सौभाग्यवश अपनी आत्मा के विकास के लिए हम कुछ क़दम उठा सकते हैं। हमें पिछले महात्माओं के अनमोल वचनों के भंडार को खोलकर देखना चाहिए, उनमें आत्मा की ख़ुराक छिपी हुई है, जिसे खाकर मन और आत्मा तृप्त हो सकती हैं। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

पीऊ दादे का खोल डिठा खजाना॥ ता मेरै मन भइआ निधाना॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 186

मनुष्य-शरीर हाथ, पैर तथा अन्य बहुमूल्य अंगों से लैस है और उसकी बनावट अत्यंत सुंदर है। पर यह बात स्पष्ट है कि शरीर के सारे अंगों में आँखों का स्थान सबसे ऊँचा है। इनका कार्य भी सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। ये हमारी आंतरिक अशांत या शांत अवस्था की झलक देती हैं। इसलिए इन्हें आत्मा के झरोखे कहा जाता है। ये हमारी आंतरिक गति और भावनाओं का प्रभाव औरों पर डालती हैं। एक ख़याल भी जब इसके अंदर झलकता है तो सैकड़ों संसार उलट-पलट हो जाते हैं। इनकी एक निराली बोली है, जो मूक है, इशारे-इशारे में ही वह सब प्रकट कर देती है जो और किसी तरह भी प्रकट नहीं किया जा सकता।

जाग्रत अवस्था में, आत्मा और मन आँखों के पीछे अपनी बैठक से कार्य करते हैं। यदि किसी अंधे को आवाज़ देकर पुकारें तो वह भी आँखों के केंद्र पर ही ज़ोर देकर कहता है, "हाँ भाई!" सपने में मन और आत्मा आँखों के केंद्र से नीचे कंठ चक्र में होते हैं और गहरी निद्रा में नाभि चक्र में। यदि हमें उस भेद को जानना है जो मन की जाग्रत अवस्था से ऊपर है, तो हमें अपनी चेतना (सुरत) को जाग्रत अवस्था से ऊँची अवस्था में ले जाने की कोशिश करनी है।

इसलिए संतों का मार्ग आँखों के केंद्र से शुरू होकर सुरत को चेतना की उच्चतर अवस्था में ले जाता है।

इस मार्ग पर चलने के लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि हम उन मंडलों का ज़िक्र करें जो आत्मा अपनी यात्रा के दौरान अनुभव करती है। समस्त सृष्टि को चार मुख्य स्तरों पर बाँटा जा सकता है:

पिंड
अंड
ब्रह्मांड
सचखंड

सृष्टि का ज्ञान प्राप्त करने और परमात्मा के पास पहुँचने का मार्ग इस भौतिक शरीर के अंदर है क्योंकि जो कुछ बाहर की रचना है, वह मनुष्य-शरीर के अंदर भी है:

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै॥
पीपा प्रणवै परम तत है सतगुर होए लखावै॥

पीपा जी, आदि ग्रन्थ, पृ. 695

ब्रह्मांड तक की सारी सृष्टि ब्रह्म की सीमा में है और प्रलय में नष्ट हो जाती है। सतलोक के प्रवेश-द्वार तक की सृष्टि महाप्रलय में नष्ट हो जाती है। सतलोक अविनाशी देश है जो प्रलय और महाप्रलय की सीमा से परे है। यह संतों का निजधाम है और संतमत का लक्ष्य है।

ब्रह्मांड में मुख्य छः चक्र हैं जिनका प्रतिबिंब अंड के छः चक्रों पर पड़ता है और अंड के छः चक्रों का प्रतिबिंब पिंड के छः चक्रों पर पड़ता है। जिस प्रकार पानी में पड़नेवाले सूर्य के प्रतिबिंब में सूर्य का आकार होता है, सूर्य की गर्मी या तेज नहीं होता और पानी के उस प्रतिबिंब की परछाईं यदि दीवार पर पड़ती है तो उसमें सूर्य का आकार भी नहीं रहता, केवल कुछ झलक मात्र होती है, उसी प्रकार ब्रह्मांड के छः चक्र, ब्रह्मांड से अंड और अंड से पिंड तक प्रतिबिंबित होकर अपने मूल रूप के आभास मात्र रह जाते हैं। पिंड के छः चक्र आँखों तक समाप्त हो जाते हैं। वे इस प्रकार हैं:

गुदा चक्र (मूलाधार)
इंद्रिय चक्र (स्वाधिष्ठान)
नाभि चक्र (मणि पूरक)
हृदय चक्र (अनाहत)

कंठ चक्र (विशुद्ध)
नेत्र चक्र (आज्ञा) जो आँखों के पीछे है

योगीजन पिंड के इन छः चक्रों को जाग्रत करके ऊपर आते हैं। वे पहले धौति, वस्ति और नेति द्वारा शरीर की मैल को साफ़ करते हैं। फिर वे अपनी तवज्जुह (ध्यान) को मूलाधार या गुदा चक्र, जिसे गणेश चक्र भी कहते हैं, पर एकाग्र करते हैं। फिर कुंडलिनी* को जगाकर उसे रीढ़ की हड्डी में जोड़ते हैं और इस प्रकार अभ्यास द्वारा इन चक्रों को पार करके वे आँखों के पीछे आज्ञा चक्र में पहुँचते हैं। ये अभ्यास बड़े कठिन हैं, क्योंकि इनमें प्राणों का संयम करना पड़ता है और गृहस्थ तथा निर्बल मनुष्यों के लिए ये हानिकारक भी हो सकते हैं।

आँखों के केंद्र पर ध्यान की एकाग्रता

संतजन प्राणायाम नहीं करवाते क्योंकि वे स्वासों का नियंत्रण करके अभ्यास करना आसान और उपयोगी नहीं समझते। वे नीचे के चक्रों को, जो ब्रह्मांड के चक्रों के प्रतिबिंब के भी प्रतिबिंब हैं, छोड़ देते हैं। वे परमार्थ का अभ्यास आँखों के पीछे मन और आत्मा की बैठक से आरंभ करवाते हैं। वे कहते हैं कि यदि आत्मा की बैठक पर मालिक का ध्यान करके, युक्ति के अनुसार प्रेमसहित नाम का सिमरन करो, तो आत्मा सिमटकर यहाँ आ जाएगी और समय आने पर प्रकाश हो जाएगा।

बाइबल में कहते हैं: "शरीर का दीया आँख है। इसलिये यदि तेरी आँख निर्मल हो, (यानी दोनों पुतलियों की धारा पीछे हटकर शिवनेत्र में आ जाए) तो तेरा सारा शरीर भी प्रकाशमय होगा।" (मैथ्यू 6:22)

इसी मार्ग का संकेत तुलसी साहिब भी करते हैं कि आँखों की पुतली में तिल है और तिल के अंदर रूहानियत का सारा भेद छिपा पड़ा है, ज़रा इस काले पर्दे के पार जाकर देख तो सही:

पुतली में तिल है तिल में भरा राज़ कुल का कुल।
इस परदाए सियाह के ज़रा पार देखना॥

संत बानी, पृ. 45

---

* कुंडलिनी=शक्ति, जो कुंडली के रूप में रीढ़ की हड्डी के निचले मार्ग में मूलाधार चक्र से ऊपर स्थित है। जब इसे जाग्रत किया जाता है तो यह रीढ़ के बीच की नाली से साँप की तरह उठती है और चमत्कारी शक्तियों को उभारती है।

मोईनुद्दीन चिश्ती साहिब फ़रमाते हैं: "तू आँख को खोल ताकि ख़ुदा का जल्वा तुझे नज़र आ जाए। तू केवल आँख ही बन जा और बोलने व सुनने के रास्ते बंद कर ले।"

चश्म बकुशाये किह् दीदारे-ख़ुदा जल्वा नमूद,
दीदा शौ यकसर ओ बर बन्द दरे-गुफ़्त ओ शनूद।

दीवाने-ग़रीब नवाज़, पृ. 60

ये आँखें सचमुच धुरधाम की खिड़कियाँ हैं और मालिक की ओर जाने की राह हैं। गुरु नानक साहिब भी इसका संकेत करते हैं:

इक महल दुई बारियां शिव शक्ती सलतान।
खिरकी खोल दीदार देन बहुत बधाइन मान।

जन्म साखी भाई बाले वाली, पृ. 214

दोनों तिल इक तार मिलाओ, तब देखो गुलज़ारा है॥

कबीर साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 66

आँखों के दो तिलों के केंद्र, शिवनेत्र, में जिसे तीसरी आँख या मुसलमान फ़क़ीर नुक़्ता-ए-सुवैदा कहते हैं, जहाँ आँखों की दो नसें जाकर मिलती हैं और जहाँ दोनों आँखों की सत्ता इकट्ठी होती है, प्रकाश दिखाई देता है। उससे आगे सुषुम्ना* (सुखमन) नाड़ी में आओ जिसे मुसलमान शाहरग कहते हैं, 'अल्लाह शाहरग तों नज़दीक' (बुल्लेशाह)। वहाँ पर शब्द धुन या वाणी प्रकट होती है, जो सारे जहान का गुरु है:

सुखमन कै घर राग सुन सुंन मंडल लिव लाए॥
अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनह समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

उच्च रूहानी मंडलों में शब्द धुन जो सारी सृष्टि में व्याप्त है, साफ़ सुनाई देती है। इस धुन को जो परमात्मा की आवाज़ है, एकाग्रता से सुनने पर मन की सभी इच्छाएँ मिट जाती हैं और जीव अपने अहं पर विजय प्राप्त कर लेता है:

---

* **सुषुम्ना**=सूक्ष्म शरीर में केंद्रिय शक्ति की धारा जो आँखों के केंद्र से अंदर के उच्चतर मंडलों तक पहुँचती है। यह योगियों की सुषुम्ना नहीं है जो रीढ़ की नाली में से ऊपर उठती है और जिसका संबंध नीचे के चक्रों से है।

> कल कीरत सबद पछान॥ एहा भगति चूकै अभिमान॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

आंतरिक यात्रा

एक बार जब आत्मा सिमटकर तीसरे तिल में आ जाती है तो वह केवल ध्यान द्वारा वहाँ ठहर सकती है। वहाँ आत्मा तारा-मंडल और चंद्र-सूर्य को पार करके गुरु के नूरी स्वरूप को पाती है, फिर वह रूहानी मंडलों का आनंद लेती हुई शब्द धुन के आसरे सचखंड पहुँच जाती है।

संतों का मत कोई विशेष जाति या धर्म नहीं है। जो भी सचखंड पहुँचे वही संत है, चाहे वह किसी भी जाति या धर्म का क्यों न हो, जिस प्रकार एम. ए. की डिग्री प्राप्त करनेवाले को हम एम. ए. कहते हैं, चाहे वह किसी जाति या धर्म का हो। संतों का मत जाति या धर्म के बंधनों से परे है।

आमतौर पर दो प्रकार के फ़क़ीर होते हैं – एक दर्जाते-सिफ़ली के और दूसरे दर्जाते-उलवी के। दर्जाते-सिफ़ली के फ़क़ीर पिंड के छः चक्रों में रहते हैं और दर्जाते-उलवी के फ़क़ीरों का मार्ग आँखों के ऊपर से शुरू होता है। फ़क़ीरों में भी अनेक आँखों के ऊपर गए। हज़रत इब्राहीम बताते हैं कि उन्होंने तारा देखा और उसे छोड़कर वे आगे गए। गुरु ग्रन्थ साहिब में भी इसका उल्लेख है:

> तारा चड़िआ लंमा किउ नदर निहालिआ राम॥
> सेवक पूर करंमा सतगुर सबद दिखालिआ राम॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1110

तुलसी साहिब भी यही फ़रमाते हैं:

> गगन द्वार दीसै इक तारा। अनहद नाद सुनै झनकारा॥
>
> घट रामायण, भाग 1, पृ. 67

हज़रत मुहम्मद साहिब फ़रमाते हैं कि उन्होंने 'शक़-अल-क़मर' (चाँद के दो टुकड़े कर देना) किया है यानी वे चाँद को लांघकर ऊपर गए। इस मार्ग पर जानेवाले सभी फ़क़ीर शक़-अल-क़मर करके ही जाते हैं।

राजा चाहे प्रकट रूप में एक ही होता है पर अनेक सेनाएँ उसके इशारे पर चलती हैं। इसी प्रकार सब आत्माएँ, सारी सृष्टि ही शब्द के अधीन है। सुरत जो आत्मा की चेतन धारा है, एक साधारण वस्तु प्रतीत होती है, लेकिन वह उस पूर्ण तत्त्व (शब्द) का अंश है जो संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त है। यदि इसे क़ाबू

और विकसित कर लें, तो इसकी शक्ति समुद्र के तूफ़ान की भाँति सारे संसार को हिला सकती है। संसार का प्रत्येक कामकाज, पढ़ना-लिखना, कार-व्यवहार आदि इसी सुरत के आसरे है। शरीर, घरबार, नगर, जंगल, पहाड़, नदियाँ, धरती-आकाश, सूर्य-चंद्र आदि सब इसी से स्थिर हैं।

मनुष्य, अज्ञानतावश शरीर को राजा और सुरत (आत्मा) को सेवक की भाँति तुच्छ समझ रहा है। उसे शरीर ही सब कुछ नज़र आ रहा है, सुरत चूहे की भाँति छोटी और तन बहुत विशाल प्रतीत हो रहा है। बुद्धिहीन जीव महाअविद्या में फँसा हुआ है और परछाईं को मनुष्य समझ रहा है। बाइबल में लिखा है, "क्या जीवन भोजन से बढ़कर नहीं और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं। क्या प्राण भोजन से और शरीर वस्त्रों से बढ़कर नहीं हैं?" (मैथ्यू, 6:25) ऐ मानव! तू इस तन के स्वादों से हट। वासनाओं और इंद्रियों के भोगों की ओर से मुख मोड़ने में ही तेरी भलाई है।

हमें यह समझ लेना चाहिए कि अगर हम शरीर और इंद्रियों के मोह को त्यागकर आत्मा की ओर ध्यान दें तो हम पर हर प्रकार से परमात्मा की कृपा होगी। जो शरीर के रसों में लिप्त हो रहा है, समझो कि वह स्वयं अपनी हत्या कर रहा है। ऐ मनुष्य! तू तो सुंदर स्वरूप यूसुफ़* की भाँति इस तन के कुएँ में गिरा पड़ा है। इससे निकलने के लिए इसके अंदर एक गुप्त रस्सी (नाम की डोर) है जो मालिक की दया की धार के रूप में आ रही है। उस रस्सी को पकड़कर इस तनरूपी कुएँ से बाहर आ, ताकि तू मालिक की दरगाह में पहुँच सके। इस तरह तू एक नई दुनिया में पहुँच जाएगा जो अभी तक तेरी आँखों से ओझल है। ये स्थूल आँखें केवल नाशवान चीज़ों को देखती हैं। अगर तेरी अंदर की आँख खुल जाए तो तू अमर देशों को देख सकेगा। हैवान का सिर ज़मीन की ओर रहता है, तू इनसान है, तेरा सिर तो ऊपर की ओर है, तू ऊपर की ओर नज़र कर:

अंदर हैवां ब-निगर सर सूये ज़मीन दारद,
ग़र आदमी आख़िर सर जानिबे-बाला कुन।

मौलाना रूम, दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 278

पशुओं की भाँति हर समय घास चरने का ही ख़याल न रख। तू इन इंद्रियों से ऊपर आ, क्योंकि जब तक इनसान इन इंद्रियों के सुखों से ऊपर नहीं आता, वह उस अदृश्य की शानदार तस्वीर से अनजान रहता है:

---

* याकूब का पुत्र जो बहुत सुंदर था, जिसे भाइयों ने ईर्ष्या-वश एक सौदागर के हाथ बेच दिया था।

चूं ज़ि हिस्स बेरूँ नयामद आदमी,
बाशद अज़ तस्वीरे-ग़ैबी आअजमी।
मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 3, पृ. 106

इस तंग शरीर से जब तू आज़ादी पा लेगा तब बग़ैर मेहनत के तू एक नई दुनिया को प्राप्त करेगा:

अज़ मज़ीके-जिस्म चूँ याबी ख़लास,
बे तजद्दद आलमे याबी जदीद।
दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 94

हाफ़िज़ साहिब फ़रमाते हैं कि जब तक तू मन की सराय से बाहर नहीं आता, तेरा हक़ीक़त की गली में जाना कैसे हो सकता है:

तू कज़ सराए तबीयत नमे रवी बेरूँ,
कुज़ा बकूए-हक़ीक़त गुज़र तवानी करद।
दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 122

इन इंद्रियों के भोगों से ऊपर आने को संतों की भाषा में जीते-जी मरना और वेदांत में जड़ और चेतन की गाँठ खुलना कहते हैं। हमारी आत्मा तन के रोम-रोम में रची हुई है। जब संतों की शिक्षा के अनुसार अभ्यास द्वारा यह शरीर को छोड़कर ऊपर आती है – जो केवल शब्द के अभ्यास द्वारा ही हो सकता है – तब सूक्ष्म, कारण और निर्मल चेतन मंडलों का अनुभव करती हुई मालिक की अकथनीय अवस्था में लीन हो जाती है, बूँद समुद्र में समा जाती है। अंत में परमात्मा से अभेद हो जाने से पहले आत्मा को परमात्मा के साक्षात्कार का उल्लासमय अनुभव होता है।

गुरवाणी और अन्य महात्माओं की वाणियों में परमात्मा के दर्शनों का उल्लेख आता है:

अदिसट अगोचर अलख निरंजन सो देखिआ गुरमुख आखी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 87

नानक का प्रभ पूर रहिओ है जत कत तत गोसाई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

नानक का पातसाह दिसै जाहरा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 397

फ़ारस के एक फ़क़ीर कहते हैं कि अपनी गुप्त आँखों से अपने प्रियतम को देखो और अपने गुप्त कानों से उसकी आवाज़ को सुनो:

ब-ख़्वाहद चश्म सरे-माशूक़ दीदन,
कलामश रा बग़ोशे-ख़ुद शुनीदन।

कुलमालिक अकथ और निराला है, वह अशब्द है; वह न प्रकाश है न आवाज़। वह न एक है, न दो। सब महात्माओं ने उसे असीम कहा है, लेकिन उसका वर्णन करने की कोशिश में उसे सीमित कर दिया है। वह जो है सो है।

हर बिअंत हउ मित कर वरनउ किआ जाना होए कैसो रे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 612

कुलमालिक ने जो अलख, अगम और सत्पुरुष का निर्मल चेतन स्वरूप रचा है, वह भी अकथनीय है। केवल आत्मा निरत द्वारा उसका अनुभव कर सकती है। संतों ने जिसका वर्णन 'अकाल' कहकर किया है, आत्मा को उस दयाल के दर्शन होते हैं। वह स्वरूप करोड़ों रचनाओं का स्वामी है लेकिन वह स्वयं अटल है, अमर और अविनाशी है।

प्रकाश की एक किरण ने जो उसमें से निकली, नीचे के देशों की स्थापना की जिनमें चेतन और माया (जड़) की मिलावट है और जो प्रलय और महाप्रलय में नष्ट हो जाते हैं। उन देशों में कहीं चेतनता का प्रभाव अधिक है और माया बहुत कम है, कहीं चेतनता और माया बराबर हैं और कहीं माया प्रबल है और चेतनता बहुत कम।

इन देशों के धनी (स्वामी) सत्पुरुष से सत्ता प्राप्त करके इन देशों को चला रहे हैं। देश जितना अधिक ऊँचा होता है, उसके स्वामी की शक्ति, उसका प्रभाव व प्रकाश उतना ही अधिक होता है। अंतर की यात्रा के दौरान हर आत्मा अपनी गति या रसाई के अनुसार इन धनियों का दर्शन करती हुई अंत में उस सतनाम या सत्पुरुष का दर्शन करती है, जिसे मुसलमान फ़क़ीरों ने 'हक़' कहकर पुकारा है।

दर्शन करने की बात से स्पष्ट है कि अभी तक आत्मा और परमात्मा में भिन्नता है। ब्रह्म और पारब्रह्म से ऊपर सत्पुरुष का निर्मल चेतन देश है, यहीं सब धर्मों के खसम, स्वामी और हरि राए की अकथ और निराली निराकार छवि है जिसका हम किन्हीं शब्दों में भी वर्णन नहीं कर सकते। उसे देखकर आत्मा इतनी मोहित

हो जाती है कि उसी में लीन हो जाती है, जिसे हम पानी के पानी में मिलने और किरण के सूर्य से मिलने के उदाहरणों द्वारा किसी हद तक समझ सकते हैं।

गुरु अर्जुन साहिब ने इस अवस्था का क्या अनोखे ढंग से वर्णन किया है। जिस प्रकार जल, जल में मिलकर एकरूप हो गया, उसी प्रकार हमारी आत्मा उस मालिक में मिलकर अभेद हो गई। फिर फ़रमाते हैं कि जिस प्रकार किरण सूर्य में मिलकर स्वयं सूर्य बन गई, उसी प्रकार मेरी आत्मारूपी बूँद उस समुद्र में समाकर उसका रूप हो गई। पूर्ण के साथ मिलकर आत्मा स्वयं पूर्ण हो गई। यह आत्मा की रसाई (पहुँच) का अंतिम मुक़ाम है:

जिउ जल महि जल आए खटाना॥
तिउ जोती संग जोत समाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 278

सूरज किरण मिले जल का जल हूआ राम॥
जोती जोत रली संपूरन थीआ राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 846

यह हालत अकथनीय है। लफ़्ज़ों में यह शक्ति नहीं कि इसका कोई इशारा भी दे सके। बस "हैरत हैरत हैरत होई।" (स्वामी जी, सारबचन संग्रह, 38:12:11) वाला हाल है। कोई उसे शब्दों के बंधन में किस प्रकार बाँध सकता है?

शरीर: रूहानी प्रयोगशाला

आत्मा का परमात्मा के साथ मिलाप का अनुभव प्राप्त करने के लिए, हमें इस शरीर की प्रयोगशाला (लेबोरेटरी) में ठीक उसी प्रकार दाख़िल होना पड़ता है जिस प्रकार विज्ञान के प्रयोग करने के लिए एक विद्यार्थी साइंस की प्रयोगशाला में दाख़िल होता है। वह बाहर के दरवाज़े बंद कर लेता है ताकि बाहरी शोर-गुल अंदर सुनाई न दे और उसका ध्यान बाहर न जाए। एक मेज़ पर सब यंत्र साफ़ करके रखे होते है। वह अपने साइंस मास्टर की उपस्थिति में उसकी शिक्षा के अनुसार तजरबा करता है। पहली बार नहीं तो दूसरी या तीसरी बार वह अपने प्रयोग में सफल हो जाता है।

ठीक इसी प्रकार रूहानी साइंस के विद्यार्थी को इस शरीर की लेबोरेटरी के अंदर जाना पड़ता है और बाहर के 'पट' बंद करके अंदर के 'पट' खोलने पड़ते हैं। यह अंदर जाना सुरत या ध्यान का सिमटकर आत्मा के केंद्र पर इकट्ठा होना है

यानी सुरत को, जो बाहरी दुनिया में फैली हुई है और शरीर के रोम-रोम में रचकर उसे सत्ता दे रही है, उसकी बैठक पर इतना एकाग्र करना है कि उसे शरीर का ख़याल ही न रहे। बाहर से शरीर के दरवाज़े पूरी तरह बंद करके अंदर बैठना है। उस स्थान पर बैठकर अपने रूहानी साइंस मास्टर का ध्यान करके अभ्यास करना है ताकि तुम्हारे ध्यान को खड़ा होने के लिए सहारा मिल जाए।

ऐसी स्थिति हो जाने पर तुम अब शरीर नहीं, शुद्ध सुरत (आत्मा) हो। तुम्हारा गुरु भी शरीर नहीं। उससे शिक्षा लेकर अंतर्मुख उस कुलमालिक के साथ जुड़ने का प्रयोग कर लो जो नाम, शब्द, गुप्त वाणी, श्रुति के रूप में इस हरि मंदिर के अंदर तुम्हारे साथ विराजमान है। यह तभी हो सकेगा जब तुम्हारा मन और बुद्धि साफ़ और पवित्र हो जाएँगे। हज़रत मुहम्मद साहिब भी मन की पवित्रता की ज़रूरत बताते हैं: "जन्नत की कुंजी नमाज़ है और नमाज़ की कुंजी पाकीज़गी है।" फिर कहते हैं, "पाकीज़गी निस्फ़ (आधा) ईमान है।" बाइबल में संेंट मैथ्यू (5:8) भी यही फ़रमाते हैं, "वे लोग धन्य हैं जिनका मन पवित्र है, क्योंकि सिर्फ़ उन लोगों को ही ख़ुदा का दीदार हासिल होगा।"

गुरु नानक साहिब कहते हैं कि केवल तन को धोने से अंदर का मैल नहीं छूटता। तन का मैल तो पानी से धोया जाता है, मल मूत्र का मैल साबुन से धोया जाता है, पर अंदर का मैल नाम या शब्द के पानी द्वारा ही धोया जा सकता है, उसको साफ़ करने का और कोई उपाय नहीं:

> भरीऐ हथ पैर तन देह॥ पाणी धोतै उतरस खेह॥
> मूत पलीती कपड़ होए॥ दे साबूण लईऐ ओह धोए॥
> भरीऐ मत पापा कै संग॥ ओह धोपै नावै कै रंग॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.4

यह प्रश्न क़ुदरती तौर पर उठता है कि नाम, शब्द या धुन के साथ हम किस तरह मिलाप कर सकते हैं। ध्यान को एकाग्र करके ही शब्द या नाम से जुड़ सकते हैं। इसके लिए जितेंद्रिय होना, यानी इंद्रियों को वश में करना ज़रूरी है:

> दस इंद्री कर राखै वास॥ ता कै आतमै होए परगास॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 236

यह आत्मा का परमात्मा से मिलाप का व्यावहारिक आंतरिक अनुभव है जो हरएक का आदर्श धर्म है। ग्रंथ-पोथियों में केवल इसका वर्णन है, लेकिन इसका

अनुभव हमें अपने अंदर करना है। इसके लिए नाम की कमाई करनेवाले किसी अभ्यासी की ज़रूरत है, जिसकी सहायता से हम मालिक से मिलने के अपने प्रयोग में सफल हो सकते हैं। ऐसे व्यक्ति का नाम संतों ने सतगुरु रखा है।

जब तक हमें ख़ुद आत्मा और परमात्मा के मिलन का अलौकिक अनुभव नहीं होता, हमारे अंदर विश्वास नहीं बँधता कि परमात्मा है। संत-महात्माओं ने ख़ुद अनुभव द्वारा उस परमात्मा को पाया है। उनकी शिक्षा पर चलो, क्योंकि वे वही कहते हैं जो उन्होंने अपनी आँखों से देखा है:

संतन की सुण साची साखी॥ सो बोलह जो पेखह आखी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 894

तुलसी साहिब फ़रमाते हैं कि जब तक हम अपनी आँखों से नहीं देखते तब तक हमें गुरु के वचनों पर पूरा-पूरा विश्वास नहीं बँधता:

जब देखैं हम अपने नैना। तब मानैं सतगुरु के बैना॥

घट रामायण, भाग 1, पृ. 103

संतों की और अन्य सभी महात्माओं की शिक्षा में यही अंतर है कि संत हमें परमात्मा से मिलाप का अनुभव ख़ुद करने के लिये प्रेरित करते हैं। उनके विचार बड़े स्वतंत्र हैं। वे तो यहाँ तक फ़रमाते हैं कि भाई, ख़ुद अनुभव करके देख, किसी के कहे-सुने पर विश्वास मत कर।

आप आप को आप पिछानो। कहा और का नेक न मानो॥

सारबचन छन्द-बन्द, 24:1:62

सही लक्ष्य

दुःख से बचने के लिए और परम सुख की प्राप्ति के लिए लोग अंधाधुंध, जी-तोड़ कोशिश करते हैं, पर कोई प्राप्ति होती नज़र नहीं आती। लेकिन समझदार इनसान पुरुषार्थ के साथ-साथ सही लक्ष्य को भी अपने सामने रखता है। यदि लक्ष्य सही न हो या स्पष्ट न हो, तो उठाया हुआ हर क़दम वक़्त की बरबादी है और कभी-कभी हमें लक्ष्य से और दूर ले जाता है। इसके विपरीत, लक्ष्य सही होने पर थोड़ा-सा परिश्रम भी व्यर्थ नहीं जाता। इसलिए किसी आदर्श की प्राप्ति के लिए केवल पुरुषार्थ करना ही काफ़ी नहीं, उसके साथ लक्ष्य का सही होना भी ज़रूरी है। जिस प्रकार वस्तु कहीं पर है और उसे ढूँढ़ा कहीं और जाता है, तो वह वस्तु मिलती नहीं, उसे खोजने में सारा समय व्यर्थ चला जाता है। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

वस्तु कहीं ढूँढै कहीं, केहि बिधि आवै हाथ।
कहै कबीर तब पाइये, जब भेदी लीजै साथ॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 5

मनुष्य का सही लक्ष्य को अपने सामने न रखना, दुनिया की बेचैनी और अशांति का सबसे बड़ा कारण है।

जीवन का सही लक्ष्य मालूम करने के लिए मनुष्य को अपनी शरीररूपी किताब को पढ़ना चाहिए, क्योंकि जितनी भी किताबें और विद्याएँ हैं, वे इसी इनसानी किताब में प्रकट हुई हैं। इनसान के अंदर परमात्मा के संदेश उतरते हैं। मनुष्य एक अत्यन्त अद्‌भुत प्राणी है। यदि इसकी आंतरिक आँख खुली हो तो यह वास्तव में स्वयं हरि का मंदिर है। यह शरीर घास का पूला है जिसके नीचे रूहानियत का अथाह सागर है। यह देखने में तो एक कण (ज़र्रा) नज़र आता है, पर अंदर से यह सौ सूर्यों की भाँति प्रकाशमान है:

तन रा चू मुश्ते काहदाँ दर ज़ेरे-ऊ दरियाए जाँ,
गरचिह् ज़ बेरूँ ज़र्रा-ए- सद आफ़ताबे अज़ दरूँ।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 259

इस शरीररूपी घर के अंदर सब कुछ मौजूद है। जो इसको छोड़कर बाहर ढूँढ़ता है, वह भ्रमों में भूला हुआ है:

सभ किछ घर मह बाहर नाही॥
बाहर टोलै सो भरम भुलाही॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 102

बाहरी ज्ञान और आंतरिक अनुभव

नीचे लिखी पंक्तियों में मौलना रूम इल्मे-सीना (आंतरिक ज्ञान) और इल्मे-सफ़ीना (बाहरी ज्ञान) का भेद बताते हैं। वे कहते हैं कि साइंस और बुद्धि चाहे कितनी भी तरक़्क़ी कर लें, उन पर आधारित ज्ञान बाहरी ज्ञान ही रहेगा, असली आत्मज्ञान नहीं होगा। एक व्यक्ति एक नज़र से दो गज़ तक रास्ता देख सकता है और दूसरा एक नज़र में दोनों जहानों को और उनके मालिक को देखता है। इन दोनों में बहुत फ़र्क़ है। मौलाना रूम कहते हैं, तू ऐसा सुरमा ढूँढ़ जिससे तुझ पर ईश्वर के गुप्त भेद प्रकट हो जाएँ:

यक नज़र दो गज़ हमी बीनद ज़ राह,
यक नज़र दो कौन दीद ओ रूए शाह।
दरम्याने-ईं दो फ़र्क़े-बे-शुमार,
सुरमा जू वल्लाहु अअलम बिस्सिरार।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 153

इल्म केवल रचना पर प्रकाश डालता है, पर इल्मुल-इल्म स्वयं इस शरीर और आत्मा को प्रकाशमान करता है। विज्ञान दृष्टिमान का ज्ञान है। विज्ञान के नियमों को जानकर हम दृष्टिमान रचना पर हुकूमत कर सकते हैं, लेकिन हम अपने आप से अनजान ही रहते हैं। अगर हम आत्मज्ञान, यानी अंतर के भेद का पाठ नहीं पढ़ते, हम अनपढ़ ही रहते हैं। अगर हमारी आँखों में देखने की शक्ति न हो, हज़ारों सूर्य-चंद्र होने पर भी हमारे लिए घोर अंधकार ही है। अगर हम अपने आप को नहीं जानते तो सब कुछ जानते हुए भी हम असल में कुछ नहीं जानते। यह बाहरी विद्या हमारी समझ बूझ बढ़ाने का कार्य तो करती है, पर हमें असली आत्मिक जीवन और उसके लक्ष्य की प्राप्ति नहीं करवा सकती। फ़ारस के एक फ़क़ीर फ़रमाते हैं कि जो कुछ दृष्टिमान के बारे में हम जानते हैं, वह सब मूर्खता है; और जो कुछ हम देख रहे हैं, वह हमें हैरान कर देता है:

आंचिह् मीदानी हमा नादानी अस्त,
व आंचिह् मी बीनी हमा हैरानी अस्त।

इल्मे-सीना (आंतरिक विद्या) के ज्ञानियों और पहुँचे हुए साधकों की दृष्टि में इल्मे-सफ़ीना (बाहरी ज्ञान) के ज्ञानी मूर्ख होते हैं, क्योंकि उनकी आँखें फ़ना (नश्वर) से परे नहीं देख सकतीं:

रूबरू आमिलाने-बातिन-फ़हम। आलिमाँ इल्मे-ज़ाहिरी जाहिल॥

स्वामी जी, सारबचन संग्रह, 21:3:14

विज्ञान, पदार्थों का आपसी संबंध बताता है, पर इन पदार्थों को बनानेवाली हस्ती से यह बिलकुल बेख़बर है। केवल 'जानना' हमारे जीवन को प्रकाशमान नहीं कर सकता। 'जाननेवाले' को जानना और उसको आधार देनेवाले कुलमालिक की हस्ती को जानना 'ज्ञान' है, इसी ज्ञान से जीव का कल्याण है। संतों ने ग्रंथ-पोथियों के विचार को ज्ञान नहीं कहा है। संतमत आंतरिक विद्या है, यह बाहरी विद्या की भाँति किताबी विद्या नहीं है। संत अपने अंदर अपने अनुभव से

यह ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह विद्या गुरु-शिष्य की प्रणाली द्वारा, पीढ़ी दर पीढ़ी, सीना-ब-सीना (एक से दूसरे तक अंदर ही अंदर) चली आ रही है।

भारतीय संत इसे परा विद्या (आंतरिक ज्ञान) कहते हैं जो किसी बाहरी विद्या की मुहताज नहीं। यह क़ुदरती विद्या है। कुछ लोगों ने इस विद्या को लिखित रूप में लाने का प्रयत्न किया है लेकिन यह प्रयत्न सदा अधूरा ही रहा है क्योंकि उसे बयान नहीं किया जा सकता और इस स्थूल संसार में उसका कोई उदाहरण नहीं है। संतों का सदा यही उपदेश रहा है कि करनी करो और सोच विचार, वाद-विवाद और बुद्धि की चतुराइयों से दूर रहो।

मुण्डकोपनिषद् (*1:1:3-5*) में ज़िक्र आता है कि शौनक नामक एक प्रसिद्ध गृहस्थ महर्षि अंगिरस के पास आया और उनसे पूछा, "महाराज, वह क्या है जिसे जानने से सब कुछ जाना जा सकता है?" महर्षि ने उत्तर दिया, "ब्रह्म के जाननेवाले यह बताते हैं कि दो प्रकार की विद्याएँ हैं—एक 'परा' और दूसरी 'अपरा'। अपरा विद्या में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष आदि शामिल हैं। इनसे ब्रह्म-दर्शन प्राप्त नहीं होता। परा विद्या वह है जिसके द्वारा अविनाशी अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति होती है, वह कमाई (अभ्यास) का विषय है।" वेद-शास्त्र, पुराण और अन्य ग्रन्थ सब अपरा विद्या हैं। यह किताबी इल्म है जिसे इल्मे-सफ़ीना कहा जाता है। संतों का मत इल्मे-सीना (आंतरिक इल्म) है जो परा विद्या कहलाता है।

इन दोनों विद्याओं में यह अंतर है कि परा विद्या ज़बानी जमा-ख़र्च पर ज़ोर नहीं देती। वह करनी को मुख्य मानती है और अनुभव के आधार पर विश्वास करने की ताक़ीद करती है। अपरा विद्या केवल किताबी ज्ञान है जिसे कोई धर्म भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उससे किसी की भी ज़िंदगी, चाहे कोई कितना ही उच्चकोटि का विद्वान हो जाए, पलटा नहीं खाती। जिस किसी को रूहानी लाभ हुआ है, वह केवल कमाई और अभ्यास के द्वारा ही हुआ है:

यह करनी का भेद है, नाहीं बुद्धि विचार।
बुद्धि छोड़ करनी करो, तो पावो कुछ सार॥

स्वामी जी, *सारबचन छन्द-बन्द*, 24:1:148

धर्म ग्रंथों का महत्त्व

ग्रंथ-पोथियों में महात्माओं की रूहानी मंडलों की यात्रा का वर्णन और उनके निजी अनुभवों का उल्लेख है, जिनको हमारे मार्गदर्शन के लिए उन्होंने पुस्तकों में लिखा। हमारे दिल में उनके लिए इज़्ज़त है। उन्हें पढ़कर हमारे अंदर किसी हद

तक परमार्थ का शौक़ और मालिक से मिलने का चाव पैदा होता है। किताबों का सिर्फ़ इतना ही मक़सद है कि वे हमारे अंदर दिल की किताब खोलने की इच्छा पैदा करें। ग्रंथ पुस्तकों के द्वारा हम पिछले महात्माओं के परमार्थ के विचारों को जान सकते हैं और उनके अनुभवों से लाभ उठाकर तथा किसी मौजूदा महात्मा से राह लेकर उनके अनुभवों को अपने निजी अनुभव बनाने का यत्न कर सकते हैं।

इन सब वाणियों में वही वाणी सबसे उत्तम है जिसे मालिक किसी पूर्ण महात्मा के मुख से कहलवाता है। मन और बुद्धि के घाट पर बैठकर महात्मा कुछ भी नहीं कहते। इनके अलावा और सब वाणियाँ अपर्याप्त और अधूरी हैं। एक बार अपने एक शिष्य से गुरु नानक साहिब ने कहा:

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो॥

गुरु नानक देव, *आदि ग्रन्थ*, पृ. 722

महात्मा के वचन मालिक के वचन होते हैं, चाहे प्रकट रूप में वे मानवीय कंठ से निकलते हुए मालूम देते हैं।

मुतलक़ आं आवाज़ ख़ुद अज़ शाह बुवद,
ग़रचिह् अज़ हलक़ूमे-अब्दुल्ला बुवद।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 213

अनुभवी महात्माओं के वचन परमार्थ के जिज्ञासुओं के लिए हीरे-जवाहरात से भी ज़्यादा क़ीमती होते हैं। ये हमें केवल अंदर जाने तथा स्वयं को और मालिक को पहचानने का उपाय बताते हैं, लेकिन ये हमें अंदर नहीं ले जा सकते और न ही हमारी सुरत (आत्मा) को कुलमालिक के साथ जोड़ सकते हैं।

संसार किताबी ज्ञान में उलझा रहता है और इनकी टेक पकड़कर जीव इनसे बँधा रहता है। जब तक कोई पूर्ण महात्मा नहीं मिलता, छुटकारे का कोई उपाय नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं:

तब ते जीव भयउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी॥
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥

तुलसीदास, *श्रीरामचरितमानस*, 7.116 (ख):3

धर्म और धर्म ग्रंथों से भी पहले इस संसार में इनसान थे। इतिहास के दौर में कई धर्म आए और चले गए। कई धर्म ग्रंथ लिखे गए। सब धर्म ग्रंथों का स्रोत मनुष्य का हृदय है क्योंकि सभी भेद मनुष्य के अंतर में हैं। किताबों में उन भेदों

का उल्लेख है, स्वयं भेद नहीं। जब तक किसी महात्मा से मार्गदर्शन पाकर हम अंदर नहीं जाते, उन भेदों को नहीं पा सकते। मनुष्य ग्रंथ-पोथियों को पढ़ता है और तत्त्व की बातों की व्याख्या करता है, लेकिन स्वयं तत्त्व से ख़ाली रह जाता है:

सिम्रिति सासत्र पड़ह पुराणा॥ वाद वखाणहे तत न जाणा॥
विण गुर पूरे तत न पाईऐ सच सूचे सच राहा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1032

पुस्तकों और मनुष्य का भेद प्रत्यक्ष है। मनुष्य चेतन है लेकिन पुस्तकें चेतन नहीं। मनुष्य को ज्ञान है और उसे इस बात का पता है कि उसे ज्ञान है, पर पुस्तकों को इस बात का पता नहीं कि उन्हें ज्ञान नहीं है। मनुष्य आगे-पीछे का विचार कर सकता है पर पुस्तकें नहीं कर सकतीं। जब तक हमें अपने अंदर का पता नहीं, हम अविद्या में भूले रहते हैं। किताबी ज्ञान तो सिर का भार बन जाता है क्योंकि वह हमारे मन और बुद्धि के फैलने का कारण होता है। केवल वही विद्या हमारे संतोष का कारण हो सकती है जिससे हमें अपनी असलियत की जानकारी प्राप्त हो। जिसकी अंतर की किताब खुल गई और वह अपने दिल को मालिक की याद में लगाये रखता है, उसे बाहरी किताबों की ज़रूरत नहीं रहती। सूफ़ी फ़क़ीर नूरी कहते हैं कि उन सैकड़ों किताबों और काग़ज़ों को, जिन्हें तुम पढ़ते हो, आग में फेंक दो और अपने दिल और अपनी आत्मा को परमात्मा की ओर मोड़ो:

सद किताब ओ सद वरक़ दर नार कुन,
जानो-दिल ए जानिबे-दिलदार कुन।

अवियाते-नूरी संदर्भ: क़िताबुल-बैअत

कठोपनिषद (1:2:23) और श्वेताश्वतर उपनषिद् (2:15) में कहा गया है कि आत्मा का ज्ञान न वेदों, ग्रंथों और पोथियों के पढ़ने से प्राप्त होता है और न उनके निरंतर सुनने से क्योंकि आत्मा का ज्ञान मन, बुद्धि और विद्या के द्वारा नहीं हो सकता। यह कहने या सुनने का विषय नहीं, अनुभव का विषय है।

ऋग्वेद (1:164:39) में और श्वेताश्वतर उपनिषद् (4:8) में कहा गया है, "जो मनुष्य उस परमात्मा को नहीं जानता जो ऋचाओं में बतायी गई अविनाशी परम सत्ता है, जिसके अंतर-आकाश में सब देवताओं का वास है, ऋचाएँ उसके किस काम आएँगी? जो उसे जान लेते हैं, वे उसमें अच्छी तरह स्थिर हो जाते हैं, टिक जाते हैं।"

मनुष्य चाहे चारों वेद, अठारह पुराण, नौ व्याकरण और छः शास्त्र (दर्शन) पढ़ ले, पर इन उक्तियों और युक्तियों में लगकर वह हक़ीक़त को नहीं पा सकता। जब तक हमें सुरत और शब्द का ज्ञान नहीं है, जब तक हमारी सुरत कुलमालिक को नहीं पहचानती, हमारी गति चंडूल पक्षी की भाँति है जो जिस भी बोली को सुनता है, उसी की नक़ल कर लेता है पर समझता कुछ भी नहीं। तुलसी साहिब ने कहा है:

चार अठारह नौ पढ़े, षट पढ़ि खोया मूल।
सुरत सबद चीन्हे बिना, ज्यों पंछी चंडूल॥

संतबानी संग्रह, भाग 1, पृ. 215

विद्वता की काट-छाँट से ख़ुश्क बुद्धि का फैलाव होता है जो सिर पर मुसीबतों का बोझ बन जाता है। इन लंबे-चौड़े हिसाबों को छोड़कर असली नुक़ते को पकड़ो, जिसके द्वारा कुफ़्र दूर होता है और जीव का कल्याण होता है:

क्यों पढ़ना ए गड्ड किताबां दी, सिर चाना ऐं पंड अजाबां दी।

साईं बुल्लेशाह, पृ. 224

फड़ नुक़ता छोड़ हिसाबां नूं। कर दूर कुफ़र दिआं बाबां नूं।

साईं बुल्लेशाह, पृ. 228

गुरवाणी कहती है कि पढ़ने, लिखने और विचार करने के लिए चाहे सारी उम्र, सालों-साल, साँसों के अंत तक, गाड़ियों की गाड़ियाँ भरकर किताबों का अध्ययन करते रहें, पर सब व्यर्थ है। केवल एक ही बात – मालिक को पहचानना – लेखे में आती है, बाक़ी सब कुछ व्यर्थ है। पढ़ाई के द्वारा काम, क्रोध आदि से छुटकारा नहीं होता:

पड़ पड़ गडी लदीअह पड़ पड़ भरीअह साथ॥
पड़ पड़ बेड़ी पाईऐ पड़ पड़ गडीअह खात॥
पड़ीअह जेते बरस बरस पड़ीअह जेते मास॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअह जेते सास॥
नानक लेखै इक गल होर हउमै झखणा झाख॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 467

गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि वेद आदि धर्म पुस्तकों को पढ़ा, वेदों पर विचार किया, न्योलि कर्म किया, कुंडलिनी को सिद्ध किया, पर पाँच

विकारों–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार–का साथ नहीं छूटा, बल्कि अहं की भावना में और अधिक बँध गया।

पाठ पड़िओ अर बेद बीचारिओ निवल भुअंगम साधे॥
पंच जना सिउ संग न छुटिकओ अधिक अहंबुध बाधे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 641

हाफ़िज़ साहिब तो यहाँ तक फ़रमाते हैं कि जब तक तू इल्मों और बुद्धि के फैलाव में फँसा रहेगा, तू हक़ीक़त से नावाक़िफ़ (अनजान) रहेगा। तुझे एक ही नुक़्ता (मूल बात) बताता हूँ कि तू अपने आपसे ऊपर उठ ताकि तू छुटकारा पा सके:

ता फ़ज़ल ओ इल्म बीनी बे मअरफ़त नशीनी,
यक़ नुक़्ता अत बिगोयम ख़ुद रा मबीं किह् रुस्ती।
दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 385

किसी विषय पर ध्यानपूर्वक विचार करने के बाद बयान किए गए सत्य की प्राप्ति के लिए तन-मन से जुट जाना चाहिए। उपनिषदों का कथन है कि मन स्थिर हो, बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का दिव्य स्वरूप प्रकट होता है। दिलवालों (पहुँचे हुओं) के गले में ज्ञान एक क़ीमती हार है, लेकिन तन के पुजारियों के सिर पर वह एक भार है:

इल्महा-ए-अहले-दिल हम्माले-शां,
इल्महा-ए-अहले-तन अहमाले-शां।
मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 355

बृहदारण्यक उपनिषद् (4:4:10) में लिखा है, "जो लोग अविद्या का सेवन करते हैं वे घोर अंधकार में हैं; पर जो विद्या में रमे हुए हैं वे उनसे कहीं अधिक अंधकार में हैं।" इसी लिए संतजन करनी के जीवन पर सबसे अधिक ज़ोर देते हैं। उनके लिए केवल वाचक-ज्ञान या चक्षु-ज्ञान का कोई मूल्य नहीं। सुनी-सुनाई या किताबी ज्ञान की चर्चाएँ करने से, व्यर्थ की बहस या धुआँधार लेक्चरबाज़ी में लगे रहने से परमार्थ की चाह नहीं उठती। पढ़ना, व्याख्यान देना आदि केवल मिठाई की बातें करना है, मिठाई खाना कुछ और बात है। यदि कोई व्यक्ति सौ साल तक भी 'हलवा', 'हलवा' पुकारता रहे या उसे बनाने की सामग्री, शक्कर,

घी, सूजी आदि के मिलाने पर ही विचार करता रहे, तो न उसे हलवे का स्वाद आता है और न कभी उसका पेट ही भरता है:

हलवा-हलवा गर बगोई सद साल,
अज़ गुफ़तने-हलवा नशवद शीरीं काम।

भाई गुरदास जी भी इसी प्रकार फ़रमाते हैं:

खांड खांड कहै जिह्वा न स्वाद मीठो आवै,
अगनि अगनि कहै सीत न बिनास है।
वैद वैद कहै रोग मिटत न काहूं को,
द्रव्य द्रव्य कहै कोऊ द्रवहि न बिलास है।
चन्दन चन्दन कहत प्रगटै न सुबास बास,
चन्द चन्द कहै उज्यारो न प्रगास है।
तैसे ज्ञान गोष्ट कहत न रहत पावै,
करनी प्रधान भानु उदति अकास है॥

कबित्त-सवैये, 437

रूहानियत के तीन अंग

परमार्थ की प्राप्ति में तीन चीज़ें–सत्संग, सतगुरु और सतनाम या शब्द–ज़रूरी हैं:

सत्संग: 'सत्' का मतलब है सत्य या सच्च, जीवित या जाग्रत, और 'संग' का मतलब है साथ या सोहबत यानी सदा क़ायम रहनेवाले पुरुष की सोहबत या संगति का नाम सत्संग है। सतगुरु के अंदर सत् प्रकट है इसलिये उसकी संगति का नाम सत्संग है। जहाँ सतगुरु सत् का उपदेश देता है, वहाँ जाने पर आत्मिक रंग चढ़ता है। अगर जल के सरोवर के किनारे बैठने से शीतलता और अग्नि के पास बैठने से गर्मी आती है, तो रूहानी बादशाहों के पास बैठने से उनका रंग क्यों नहीं चढ़ेगा? मालिक के रहने की असली जगह वह है जहाँ उसके प्रिय भक्त रहते हैं:

मन मेरा पंछी भया, उड़ि कर चढ़ा अकास।
गगन मँडल खाली पड़ा, साहिब संतों पास॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 120

मिल सतसंगत खोज दसाई विच संगत हर प्रभ वसै जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 94

सत्संग में केवल नाम का ही उपदेश होता है:

सतसंगत कैसी जाणीऐ॥
जिथै एको नाम वखाणीऐ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

सत्संग दो प्रकार का होता है: बाहरी और आंतरिक। बाहर का सत्संग सतगुरु की सोहबत या संगति का नाम है और सुरत का शब्द या नाम के साथ जुड़ना आंतरिक सत्संग है।

गुरु अमरदास जी कहते हैं:

सतगुर बाझहो संगत न होई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1068

सतगुरु: संत-सतगुरु मालिक का नररूप अवतार है जिसके अंदर सत्य प्रकट है और जो सत्य से अभेद है। उसके अंदर सत्य रमा हुआ है। मालिक से मिलकर उसमें मालिक का तेज आ गया। वह पवित्र हस्ती है, उसमें सत्य ख़ुद देहस्वरूप में प्रकट है। वह ज्ञान का पुंज और भक्ति का स्रोत है, वह जीवों को सच्चे पथ का पथिक बनाकर धुरधाम तक पहुँचाने की सामर्थ्य रखता है। वह मानव के रूप में ईश्वर है। ग्रंथ-पोथियाँ हमारा सत्य से स्पर्श नहीं करवा सकतीं। आत्म विद्या सिखाई नहीं जा सकती, वह एक स्पर्श की भाँति अनुभव की जाती है। जीवित कौन है? गुरवाणी बताती है, केवल वही जीवित है जिसके अंदर मालिक बस गया है:

सो जीविआ जिस मन वसिआ सोए॥
नानक अवर न जीवै कोए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 142

सतगुरु रब+इनसान है। वह परमात्मा के बोलने या प्रकट होने का माध्यम है। उसके वचन प्रभु के वचन होते हैं, चाहे देखने में वे इनसान के मुँह से निकलते प्रतीत होते हैं:

मुतलक़ आं आवाज़ ख़ुद अज़ शाह बुवद,
गरचिह् अज़ हलक़ूमे-अब्दुल्ला बुवद।
मसनवी, मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 213

सतगुरु के केवल उपदेश से ही रूहानी लाभ नहीं पहुँचता, बल्कि उसकी संगति से भी पहुँचता है जो आत्मिक जीवन देनेवाली, जाग्रति पैदा करनेवाली और आत्म रस प्रदान करनेवाली है। सतगुरु की संगति में आत्मिक रस की जाग लगती है। उसकी मौज और दया तन, मन, और आत्मा को प्रफुल्लित करनेवाली होती है। वह अपनी एक दृष्टि, एक स्पर्श, एक वचन या ध्यान के द्वारा हमारे अंदर आत्मिक आनंद पैदा कर सकता है। वह शिष्य को आत्मिक जीवन की संपत्ति नक़द रूप में दे सकता है। वह आत्मिक जीवन का भोजन है जो शिष्य को संतुष्ट और तृप्त करता है। लेकिन यह भोजन कोई भूखा-प्यासा ही ले सकता है। सतगुरु आत्मज्ञान का सरोवर है, जिसमें से शिष्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार रस ले सकता है।

गुरु आदर्श पुरुष है। उसका शरीर वह द्वार है जहाँ बैठकर परमेश्वर अपना कार्य करता है। गुरु पूरा हो तभी परमार्थी का काम बनता है। अज्ञानी या अधूरे गुरु से परमार्थ की प्राप्ति नहीं होती:

जाको गुरु है आँधरा, चेला काह कराए।
अंधे अंधा मेलिया, दूनो कूप पराए॥

कबीर साहिब का बीजक, पृ. 97

गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ॥
बिन सतगुर नाउ न पाईऐ बिन नावै किआ सुआउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

सतनाम: सतनाम सच्चे मालिक का नाम है जो खंडों-ब्रह्मांडों का सहारा है और जो हर एक के अंदर धुनकारें दे रहा है। यह धुनात्मक नाम जिसकी ध्वनि घट-घट में हो रही है जो मालिक से मिलने की राह है, परमात्मा की सुनी जानेवाली आवाज़ है। यह वह तार है जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ती है और दोनों का मिलाप करवा देती है। यह दिव्य ध्वनि हम सबके अंदर गूँज रही है, लेकिन कोई विरला ही इनसान इसे सुनता है। नाम का सिमरन ज़बान, कंठ या हृदय चक्र से नहीं होता। वह नाम गुप्त है और आंतरिक अभ्यास से प्रकट होता है। कबीर साहिब फ़रमाते हैं कि रामनाम निज सार है, उसके अतिरिक्त सब फ़ना है, इसलिए उस रामनाम का सिमरन करो। काल सिर पर है, पता नहीं किस समय आ पकड़े। इस राम से उनका तात्पर्य 'राम अवतार' से नहीं है बल्कि उस नाम या शब्द से है जो सबके अंदर अपने आप गूँज रहा है:

राम नाम है निज सार। अवर सब झूठ सकल संसार॥

प्राप्त नहीं

सुमिरन करहु राम का, काल गहे है केस।
ना जाने कब मारि हैं, क्या घर क्या परदेस॥

कबीर साहिब का बीजक, पृ. 10

संतमत के मूल अभ्यास

मनुष्य तीन पदार्थों का मेल है। पहला स्थूल पदार्थ, जिससे शरीर बना है, दूसरा सूक्ष्म पदार्थ, जिससे मन की रचना हुई है और तीसरी आत्मा, जो मनुष्य की जान है और शरीर और मन दोनों का आधार है। पहली दोनों वस्तुएँ नाशवान हैं। तीसरी वस्तु अमर और अविनाशी है। जिस प्रकार सारे संसार को सत्ता देनेवाला परमात्मा है, उसी प्रकार इस शरीर को जीवन देनेवाली आत्मा है। केवल यही नहीं, जो भी सृष्टि में है वही शरीर में भी है। दूसरे शब्दों में, आत्मा और परमात्मा का आपसी रिश्ता अंश-अंशी का है। दोनों तत्त्व रूप में एक ही हैं। जो ब्रह्मांड है उसी का प्रतिरूप पिंड है इसलिये जो परमात्मा को अपने अंदर खोजता है, वही उसको पाता है:

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै॥

पीपा जी, आदि ग्रन्थ, पृ. 695

मुसलमान फ़क़ीर भी आलमे-सग़ीर (पिंड) को आलमे-कबीर (ब्रह्मांड) का नमूना कहते हैं। गुरु नानक साहिब कहते हैं कि पिंड और ब्रह्मांड एक जैसे हैं, लेकिन गुरु की कृपा से और शब्द के अभ्यास द्वारा यह बात हमारी समझ में आती है:

जो ब्रहमंड खंड सो जाणहो॥
गुरमुख बूझहो सबद पछाणहो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

संत कहते हैं कि आत्मा परमात्मा का अंश है। दूसरे शब्दों में, इसके अंदर परमात्मा के गुण मौजूद हैं। मनुष्य का मुख्य उद्‌देश्य शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक तौर पर पूर्णता की प्राप्ति के लिए यत्न करना है। इसके लिए कुछ तो अपनी निजी योग्यता और कुछ बाहरी सहायता से लाभ उठाना पड़ता है।

जहाँ तक आत्मिक विकास का प्रश्न है, संतजन इस बात पर ज़ोर देते हैं कि किसी ऐसे रूहानी पुरुष की सेवा में जाओ जो रूहानी जीवन की केवल किताबी जानकारी ही न रखता हो, बल्कि जिसने ख़ुद भी आत्मिक जीवन प्राप्त कर लिया हो और अपनी आत्मा को परमात्मा में अभेद कर चुका हो।

हमारे भोजन, हमारी संगति, हमारे रहन-सहन और वातावरण का जिसमें हम रहते हैं, हमारे शरीर और मन के विकास पर बहुत अधिक असर पड़ता है। इसलिए हमें सात्त्विक भोजन करने, सांसारिक पदार्थों का केवल निर्वाह मात्र के लिए उपयोग करने और उन कामों से दूर रहने की सलाह दी जाती है जिनसे ध्यान फैलता है और शक्ति क्षीण होती है। जो परमार्थी इन संयमों को धारण करता है, उसे ऐसे साधन सिखाए जाते हैं जिनके अभ्यास से उसकी वृत्ति आध्यात्मिक बनती जाती है। ये साधन तीन हैं:

सिमरन
ध्यान
भजन (धुन या शब्द को सुनना)

हमारा मन बाहरी संसार में, सांसारिक सिमरन और ध्यान में, हर समय रमा रहता है। जब कभी भी हम मन को अंतर्मुख करने का प्रयास करते हैं तभी दोस्तों-मित्रों, घरबार आदि की याद और उनका ध्यान हमारे सामने आकर विघ्न डालता है। उनसे ख़याल को हटाने और मालिक के साथ जोड़ने के लिए जिज्ञासु को मालिक के पवित्र नामों के सिमरन और गुरु के स्वरूप का ध्यान करने की सलाह दी जाती है। संतजन आत्मा की जिह्वा द्वारा सिमरन और आत्मा के नेत्रों द्वारा ध्यान करना सिखाते हैं।

इन दोनों साधनों द्वारा मन कुछ-कुछ खड़ा होने लग जाता है। फिर आत्मा के कानों से शब्द या धुन को सुनना होता है। यह रूहानी आवाज़ हरएक मनुष्य के अंदर, चाहे वह किसी जाति या धर्म का हो, हर समय हो रही है। इस साधन से मन बिलकुल स्थिर हो जाता है। आत्मा और शब्द दोनों सजातीय हैं इसलिए दोनों में आपसी समानता है। मालिक रूपी सागर की शब्द धुन रूपी लहर आत्मारूपी बूँद को अपने में लीन कर देती है। आत्मा के लीन होने पर मन आत्मा से शक्ति नहीं पा सकता और पूर्णतया स्थिर हो जाता है।

ये तीनों युक्तियाँ या साधन, नाम का उपदेश देते समय सतगुरु जिज्ञासु को विस्तारपूर्वक समझा देते हैं। फैली हुई आत्मा, सिमरन और ध्यान द्वारा सिमटकर आँखों के पीछे अपने स्थान पर आ जाती है। फिर वह शब्द धुन के आसरे

दर्जे-ब-दर्जे उन्नति करती हुई अपने निज मुक़ाम में, जहाँ से शब्द धुन आ रही है, समा जाती है और सच्ची मुक्ति प्राप्त कर लेती है।

इस ग्रंथ के दूसरे भाग में क्या है?

गुरुमत सिद्धांत के दूसरे भाग में परमार्थ के मुख्य साधनों का वर्णन किया गया है। कौन-सी सेवा सबसे उत्तम है, निष्कर्मता, धुर-कर्म, सिमरन, ध्यान, धुन, आसन, अमृत-वेला की महानता का वर्णन किया गया है और उन साधनों पर प्रकाश डाला गया है जिनसे भजन-सिमरन में तरक़्क़ी होती है। वैराग्य, जप-तप, पूजा, भय और भाव (प्रेम) क्या हैं और कैसे बन सकते हैं, जगत की असारता पर चेतावनी, वे गुण जिनको ग्रहण करने से मालिक के दर पर आत्मा शोभा पाती है और विनती और नम्रता के विषयों पर जो परमार्थ में सहायक हैं, गुरवाणी से विचार दिए गए हैं।

सिक्ख अधिकारी, गुरुमुख, सुहागिन, जीवन-मुक्त, साधु-संत, ज्ञानी, जीवित-मृतक, अपरस की अवस्थाओं पर गुरवाणी और अन्य महात्माओं के विचार दिए गए हैं।

आंतरिक रूहानी दृश्यों, ज्योति आदि अंदर के स्थान, तिल, अमृतसर और सहज आदि का, जिनका आत्मा अपने अंदर अनुभव करती है, कुछ-कुछ वर्णन किया गया है। जीवात्मा क्या है, काया उसके रहने का घर है, सच्चा हरि मंदिर और मसजिद कौन-से हैं जिसमें परमात्मा मिलता है और इस काया में प्रवेश करने पर जो-जो वस्तुएँ प्राप्त होती हैं उनका वर्णन किया गया है।

परमार्थ में कौन-सी रुकावटें हैं, मन, मनमुख, दुहागिन और मनमत कर्म क्या हैं? माया, भ्रम, हौमें (अहं), पंच दोष, (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार), निंदा आदि क्या हैं और किस प्रकार दूर हो सकते हैं? शराब, मांस, निद्रा, कुसंगति, दुबिधा, हठ, वाद-विवाद, रसना का स्वाद, आशा-मनसा, भेष, जाति-पाँति, सूतक आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

गुरुमत में अवतारों और देवताओं का जो पद है, गुरवाणी द्वारा उसका निर्णय किया गया है। वेदों, शास्त्रों और स्मृतियों को गुरु साहिबान और अन्य संतजन जिस दृष्टि से देखते हैं, उन पर वाणी द्वारा प्रकाश डाला गया है।

गुरवाणी में सती, सूरमा, सज्जन, मुसलमान किसे कहा गया है और मूर्ति पूजा और ज्योतिष की असलियत को स्पष्ट कर दिया है। सच्चे तीर्थ, पाठ, नरकों के दुःख, रोज़ी कमाने की ज़रूरत और प्राप्ति पर भी विचार किया गया है। ग्रंथ के अंत में प्रश्नोत्तर और ख़ास-ख़ास विषयों पर गुरु का उपदेश भी सम्मिलित किया गया है।

अंतिम निवेदन

परमात्मा को संतों ने देखा है। वे इस बात को स्वीकार करते हैं:

नानक का पातसाह दिसै जाहरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 397

यह शरीर हरि का मंदिर है हम भी गुरुमुख बनकर इसके अंदर जाकर हरि के दर्शन कर सकते हैं:

अदिसट अगोचर अलख निरंजन सो देखिआ गुरमुख आखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 87

संतों की शिक्षा स्वयं अपना प्रमाण है, उसके लिए किसी गवाही की ज़रूरत नहीं। सूर्य स्वयं अपना प्रकट प्रकाश है, उसके लिए कोई और प्रमाण देना उसे मोमबत्ती जैसी अपूर्ण वस्तु द्वारा प्रमाणित करना है। सब संतों के प्रत्येक विषय पर एक-से ही विचार हैं, जिन्हें इस ग्रंथ में दिया गया है।

यदि इस ग्रंथ में किसी सिद्धांत के वर्णन को दुहराया गया है तो उसका कारण उन ख़ास-ख़ास विषयों को जिनके साथ इनका संबंध है, पुष्टि करना है। चाहे यह ग्रंथ सांसारिक विद्या की दृष्टि से अपूर्ण हो, पर इसमें उस मूल सिद्धांत को जो सब धर्मों का आधार है, स्पष्ट रूप में प्रकट करने का प्रयास किया गया है। धर्म चाहे कोई भी हो, उनके आत्मिक बादशाह यानी संत-महात्मा अपने सम्मुख केवल आत्मिक नाता रखते हैं और मनुष्यों के आपसी भ्रातृ भाव का और मालिक के सबके पिता होने का दृढ़ उपदेश देते हैं। वे नामों के भेद, धार्मिक वैर-विरोध और क़ौमी दुश्मनियों और लड़ाइयों से ऊपर रहते हैं।

इस ग्रंथ में दो बातें हैं। एक तो यह सच्चे परमार्थ का क्रमबद्ध भंडार है; इसमें हक़ीक़त के भेद की कुंजी का पता दिया गया है। दूसरे, इसमें उन विषयों और सिद्धांतों का वर्णन है जिनकी शिक्षा परमार्थ के सच्चे जिज्ञासुओं के लिए ज़रूरी है। प्राचीन ऋषि-मुनियों के वचन हैं:

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

कठ उपनिषद्, 1:3:14

अर्थात् जागो, उठो और परमार्थ के मार्ग पर बढ़ते जाओ; जब तक अपने असली ठिकाने पर न पहुँच जाओ, आराम न लो।

संतों का मत नक़द सौदा है, उधार नहीं। यदि जीव को जीते-जी अभ्यास द्वारा अपने अंदर मालिक के दर्शन न हों तो मरने के बाद मुक्ति मिलने या मालिक की प्राप्ति का क्या भरोसा है:

मूए हूए जउ मुकत देहुगे मुकत न जानै कोइला॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1292

सच्ची भक्ति और परमेश्वर की प्राप्ति इसी जन्म में हो सकती है। इसी लिए संतजन फ़रमाते हैं, आओ, अभ्यास करके उस मालिक का अपने अंदर अनुभव करो, ज़बानी जमा-ख़र्च में न रहो, कोशिश करो और इसी जन्म में अपनी आँखों से हक़ीक़त को देखो।

संतों का आदर्श वाक्य है, 'अब ही करो, फिर का भरोसा न रखो।' जो आज और अभी नहीं करते और आज का काम कल पर छोड़ देते हैं, वे कभी नहीं कर पाते। समय की क़दर करो, समय के सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं।

अंतिम विनती है कि पाठकजन इस ग्रंथ का प्रेमपूर्वक अध्ययन करें, गुरवाणी के आदेशानुसार अपने असली घर जाने का उपाय करें और अपनी अनमोल नर-देह को, जो चौरासी लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ है, सफल करें।

दासानुदास,

सावन सिंह

स्वामी या कुलमालिक

परमेश्वर क्या है? क्या वास्तव में परमेश्वर है? कौन-सी शक्ति इस ब्रह्मांड को सत्ता देकर नियम के अनुसार चला रही है? वह शक्ति जड़ है या चेतन? यदि वह जड़ है तो किस प्रकार ब्रह्मांड में सूर्य, चंद्र, तारे सब नियमपूर्वक चल रहे हैं? हमारा उस शक्ति के साथ क्या संबंध है? यह संसार कहाँ से आया, कब बना और किस प्रकार बना? इनसान के सामने ऐसे सवाल सदा उठते रहते हैं। इस विषय पर ग्रंथों के ग्रंथ लिखे गए, अनेक लोग अपना-अपना मत प्रकट करके चले गए और अनेक ही अभी तक विचार कर रहे हैं, पर यह विषय नित नया ही बना रहता है:

सदियों फ़िलासफ़ी की चुनां ओ चुनीं रही,
लेकिन ख़ुदा की बात जहाँ थी वहीं रही।

आम लोगों के मन उड़ाने भरते हैं, पर दिल का कुफ़्र (नास्तिकता) टूटता नहीं। यह विषय स्पष्ट नहीं होता और मनुष्य, बुद्धि के घने जंगलों में भटकता फिरता है।

एक कहता है कि परमेश्वर है। दूसरा कहता है कि परमेश्वर नहीं है और परमात्मा की कल्पना केवल डरपोक व्यक्तियों का ढकोसला है, बुज़दिलों के छिपने और ढारस का आधार है, वह तो दूरबीनों और ख़ुर्दबीनों द्वारा भी नज़र नहीं आता, इसलिए कोई परमेश्वर नहीं है। ज़बानी आस्तिक (जो सुने-सुनाए और पढ़े-पढ़ाए के आधार पर परमेश्वर को मानते हैं,) और नास्तिक, दोनों ही दुःखी हैं। ख़्वाजा हाफ़िज़ ने तो यहाँ तक लिख दिया है:

हदीस अज़ मुतरिबओ मै गोय ओ राज़े-दहर कमतर जू,
कि कस नकुशूद नकुशायद ब-हिकमत ईं मुअम्मा रा।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ.31

अर्थात् "मुतरिब (शब्द का राग सुनानेवाले मुर्शिद) और मै (नाम की शराब) का ज़िक्र कर, दुनिया के भेद को न ढूँढ़, क्योंकि आज तक किसी ने बुद्धि और विचार द्वारा यह पहेली न हल की है और न कभी हल कर सकेगा।"

ये सब प्रश्न काल और माया के अंदर हैं, इनका कोई उत्तर नहीं पर इसके बावजूद ये सवाल दिल से हटते नहीं। लोग कहते हैं कि यदि परमात्मा की प्राप्ति इतना कठिन विषय है तो हम उसकी चिंता क्यों करें? इसका उत्तर यही है कि जिस प्रकार भूखे को रोटी की ज़रूरत है, वह उसके बिना नहीं रह सकता, उसी प्रकार हम प्रभु के बिना नहीं रह सकते। सेंट ऑगस्टीन ने कहा है: "हे परमात्मा! तूने हमें अपने रूप में बनाया है। मनुष्य का मन तब तक बेचैन है, जब तक कि यह तेरे अंदर स्थिर होकर चैन न पाए।" संसार के सब लोग किसी न किसी कारण परमात्मा को याद करते हैं। भगवान कृष्ण ने *गीता* (7:16) में बताया है, "चार प्रकार के लोग परमेश्वर की आराधना करते हैं: दुःखी, भोगों की चाह रखनेवाले, परमार्थी और बुद्धिमान ज्ञानी।" दुःखी, दुःखों की निवृत्ति के लिए; भोगी, भोगों की प्राप्ति के लिए; ज्ञानी, ज्ञान की प्राप्ति के लिए और परमार्थी, मालिक से मिलाप के आनंद को पाने के लिए।

यह दुनिया कहाँ से आई, कब और किस प्रकार बनी, इस बारे में पूर्ण महात्मा से पूछने पर उत्तर मिलता है कि चलो भाई, जिसने इस सृष्टि की रचना की, उसी से पूछ लें। जो लोग उस तक पहुँच चुके हैं, वे अपने आप को खो चुके हैं। वे तो देश और काल के बंधनों और कारण-कार्य की हद से परे हैं:

ऐ दिल, ज़ जाँ गुज़र कुन ता जाने-जाँ बिबीनी,
बिगुज़ार ईंजहाँरा ता आँ जहाँ बिबीनी।

अर्थात् "तू अपनी जान (शरीर) से गुज़र (ऊपर आ), ताकि तू उस जान की जान (सब जीवों के आधार) को देख सके। इस जहान से निकल, ताकि ऊपर का जहान देख सके।"

आप सत कीआ सभ सत॥ आपे जानै अपनी मित गति॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284-85

करते की मित न जानै कीआ॥ नानक जो तिस भावै सो वरतीआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 285

उस तक पहुँचने पर ही इस प्रकार के सवाल ठीक-ठीक हल हो सकते हैं।

इस प्रकार की दिलचस्प बातें मंज़िले-मक़सूद (धुरधाम) पर पहुँचने पर आराम से हो सकती हैं, इस समय तो उन बातों की ज़रूरत है जो मार्ग से संबंध रखती हों। यदि अभी जानना चाहते हो तो उससे पूछो जो उन आत्मिक मंडलों पर पहुँचा है जहाँ मालिक प्रकट है। परमात्मा फ़िलॉसफ़ी (दर्शन शास्त्र), पुस्तकों और वाद-विवाद द्वारा नहीं जाना जा सकता। हाँ, इनके द्वारा उसकी हस्ती (अस्तित्व) की कल्पना हो सकती है कि ऐसी कोई शक्ति होनी चाहिए, पर उसके अस्तित्व के प्रमाण के लिए हमें संतजनों की प्रयोगशाला (लेबॉरेटरी) में दाख़िल होकर स्वयं अनुभव करना पड़ेगा। कई वैज्ञानिक कहते हैं कि परमेश्वर के होने का कोई प्रमाण नहीं, उन्हें तो उसके अस्तित्व पर विश्वास करने की ज़रूरत ही महसूस नहीं होती।

पुरातन इतिहास और धर्म पुस्तकों को पढ़ने से पता चलता है कि पुराने लोग (प्राकृतिक) शक्तियों, चंद्र, सूर्य आदि की पूजा करते-करते परमेश्वर का संकल्प दृढ़ करवाते रहे और उसके अनेक नाम रखते रहे, यहाँ तक कि परमेश्वर के इतने अधिक नाम रखे गए कि संसार नामों की उलझन में फँस गया।

संत-महात्मा हमें नामों के विवाद में नहीं फँसाते, बल्कि वे कहते हैं कि कोई भी नाम उस मालिक का वर्णन नहीं कर सकता, किसी नाम पर लड़ना-झगड़ना ठीक नहीं, सब नाम उसी के हैं। हम पानी को 'ओ' (फ़्रेंच) 'हाइडोर' (यूनानी), 'मा' (अरबी), 'जल' (हिंदी), 'वॉटर' (अंग्रेज़ी) आदि किसी भी नाम से पुकारें, कोई फ़र्क़ नहीं, हमारी प्यास तो तभी बुझेगी, जब हमें पानी पीने को मिल जाएगा। गुरु नानक साहिब कहते है:

नानक वेचारा किआ कहै॥ सभ लोक सलाहे एकसै॥
सिर नानक लोका पाव है॥ बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है॥

आदि ग्रन्थ, पृ.1168

गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने जाप साहिब में मालिक के हज़ार से अधिक नाम बताए हैं। पर वे केवल नामों के तात्पर्य को ग्रहण करने का आदेश देते हैं और कहते हैं कि तुम नामों से चलकर उस नामी को पकड़ो जो सबका इष्ट है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, परमेश्वर का ठीक-ठीक पता उन लोगों से ही लग सकता है, जिन्होंने आत्मिक मंडलों पर उस मालिक का अनुभव प्राप्त किया है, क्योंकि उनका ज्ञान ख़याली-पुलाव नहीं और न ही वह धर्म पुस्तकों के आधार पर पढ़ा या सुना-सुनाया है, बल्कि उन्होंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है,

अपनी चेतनता का विस्तार करके उसको अनुभव द्वारा देखा है, औरों को भी दिखाया है और वे आज भी जिज्ञासुओं को उसका अनुभव करा सकते हैं।

परमात्मा कहाँ है?

अज्ञानी पुरुष समझते हैं कि परमात्मा आसमानों से परे या समुद्रों के नीचे कहीं रहता है, जबकि महान आत्माएँ उसका अपने हृदय में अनुभव करती हैं और पूर्ण महात्मा मालिक को अंदर-बाहर सब स्थानों में देखते हैं। गुरु अंगद देव जी बताते हैं कि परमात्मा इस जगत के अंदर है और यह जगत उसके अंदर है, *इह जग सचै की है कोठड़ी सचे का विच वास॥* (आदि ग्रन्थ, पृ. 463)।

यह सृष्टि उसका शरीर है जिसमें वह निवास करता है। वह कण-कण में उसी प्रकार समाया हुआ है जिस प्रकार आत्मा शरीर के रोम-रोम में रची हुई है और शरीर को चला रही है। आत्मा के निकल जाने पर शरीर राख का ढेर हो जाता है। इसी प्रकार इस सृष्टि में से उसकी सत्ता खिंच जाने पर यह सृष्टि नष्ट हो जाती है। आकाश, जिससे सारी सृष्टि की बनावट हुई और प्राण, जो सारे विश्व को चला रहे हैं, ये उस परमात्मा की बनाई हुई ताक़तें हैं। वह इस संपूर्ण सृष्टि का कर्ता, धर्ता और हर्ता है।

परमात्मा मन और बुद्धि से परे है

यह अनंत सृष्टि और ब्रह्मांड हमारी आँखों के सामने है। इसके पीछे एक अकथनीय शक्ति मौजूद है जो इस सारी व्यवस्था को चला रही है। जो लोग मज़हबों की सच्चाई को स्वीकार नहीं करते और कहते हैं कि ईश्वर की प्रकृति और स्वरूप (स्वभाव) को मनुष्य नहीं जान सकता, वे भी इस महान शक्ति के आस्तित्व से इनकार नहीं कर सकते। प्रसिद्ध दार्शनिक, हरबर्ट स्पैंसर इस निर्णय पर पहुँचा है कि "हक़ीक़त न किसी को मालूम है, न हो सकती है।" वह केवल बुद्धि और विचार द्वारा हक़ीक़त तक रसाई प्राप्त करना चाहता था, पर हक़ीक़त मन और इंद्रियों की पहुँच से परे है, इसलिए उसका इस नतीजे पर पहुँचना कि हक़ीक़त बुद्धि और तर्क द्वारा नहीं जानी जा सकती, अनिवार्य था। संसार की हर एक वस्तु के बारे में तो तर्क चल सकता है, पर आत्मिक मंडलों पर गति प्राप्त करने के लिए यह बिलकुल व्यर्थ है। लेकिन स्पैंसर को इस हक़ीक़त को मानना पड़ा और उसने नाईंटींथ सेंचुरी नामक मासिक पत्र के जनवरी, सन 1884 के अंक में एक लेख में संसार के आदि-कारण के बारे में इस प्रकार कहा है, "इस दुनिया में एक अनंत और अविनाशी शक्ति मौजूद है, जिससे हर एक वस्तु प्रकट हुई है।"

जर्मन दार्शनिक कांट ने विवश होकर न जानी जा सकनेवाली हक़ीक़त पर विचार करना ही छोड़ दिया। जॉन स्टुअर्ट मिल ने भी अपनी पुस्तक, थ्री एसेज़ ऑन रिलिजन में लिखा है कि आदि-कारण के बारे में जो अनुभव बताता है और कारण शब्द का जो अर्थ हमने समझा है, वह यही है कि सब कारणों में जो आदि और व्यापक तत्त्व मौजूद है, वह उस शक्ति के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता है। इन विद्वानों का यही मत है कि एक अकथनीय शक्ति से ही यह ब्रह्मांड प्रकट हुआ है और यह आदि शक्ति अनंत और अविनाशी है।

बृहदारण्यक उपनिषद् के ऋषि ने कहा है कि वास्तविक तत्त्व (हक़ीक़त) न तो नाम और रूप के ज्ञान की तरह विद्याओं की पकड़ में आ सकता है और न ही उसका कोई वर्णन किया जा सकता है। जिस प्रकार रेत से तेल निकालना और शराब से प्यास बुझाना असंभव है, उसी प्रकार ब्रह्म को विद्या द्वारा प्राप्त करने की कल्पना तक व्यर्थ है। इस उपनिषद् में एक छोटा-सा विचार करने योग्य सूत्र आया है – 'नेति-नेति' – जिसे चार बार दोहराया गया है। इसका अभिप्राय है कि जो कुछ वर्णन किया गया है वह ब्रह्म नहीं है, यानी नाम और रूप से परे जो हस्ती है, वह ब्रह्म है। वह निर्गुण और अकथनीय होने के कारण इन आँखों का विषय नहीं है और मन और वाणी की उस तक रसाई (पहुँच) नहीं।

गुरु नानक साहिब भी फ़रमाते हैं कि वह मालिक सोच विचार की सीमा में नहीं आ सकता, सोचै सोच न होवई जे सोची लख वार॥ (आदि ग्रन्थ, पृ.1)

वह शक्ति एक है और सर्वव्यापी है

यह आदि-शक्ति एक, अनंत और अविनाशी है। इसका क्या प्रमाण है कि यह शक्ति एक है और यह ब्रह्मांड एक से अधिक शक्तियों के आपस में टकराने से उत्पन्न नहीं हुआ? इसके उत्तर में प्रसिद्ध वैज्ञानिक जॉन स्टुअर्ट मिल का मत (जो उन्होंने ऊपर लिखित पुस्तक में दिया है) लिख देना ही काफ़ी होगा, "यह शक्ति असल में एकरस है और ब्रह्मांड में एक ख़ास मात्रा में मौजूद है जो कभी घटती-बढ़ती नहीं।" यह शक्ति सर्वव्यापी है और इसके द्वारा सारी सृष्टि के काम हो रहे हैं:

सैकड़ों आशिक़ हैं दिल-आराम सब का एक है,
मज़हबो-मिल्लत जुदा हैं काम सब का एक है।

सारे मज़हबों की धर्म पुस्तकों में जहाँ भी उसका उल्लेख हुआ है उसको किसी एक जाति, धर्म या देश का नहीं, बल्कि रब्बुल-आलमीन यानी सारी

सृष्टि का मालिक कहा गया है और बताया गया है कि उस मालिक से ही सब कुछ प्रकट हुआ है (प्रमाणों के लिए फ़ुटनोट देखें)।* वह सबमें व्यापक है, कोई स्थान, कोई वस्तु, कोई भी सजीव या निर्जीव उसके जल्वे से ख़ाली नहीं।

---

* उस परमेश्वर ने सारे संसार को पैदा किया है।
यजुर्वेद, 29:9

यही एक हम सबका स्वामी है।
यजुर्वेद, 13:4

वह अकेला ही इस सृष्टि को पैदा तथा नाश करनेवाला है।
श्वेताश्वतर उपनषिद्, 2:3

उस परमात्मा की प्रशंसा करो जिसने सारी दुनिया बनाई।
ऋग्वेद, 8:58:6

वही संपूर्ण जगत का पिता तथा सबको रचनेवाला है।
गीता, 11:43

हे अर्जुन! जो सारी हस्तियों की उत्पत्ति का मूल है वह मैं ही हूँ!
जो स्थावर या जंगम हैं, वे मेरे बग़ैर नहीं।
गीता, 10:39

मैं ही सबका स्वामी हूँ तथा यह संसार का सब व्यवहार मेरे से ही चलता है।
यह समझकर बुद्धिमान लोग प्रेम सहित मुझे स्मरण करते हैं।
गीता, 10:8

एक पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰611

अवल अलह नूर उपाइआ कुदरत के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभ जग उपजिआ कउन भले को मंदे॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ॰1349

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे न्यारे न्यारे हुइ कै फेरि आग में मिलाहिगे।
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है धूर के कनूका फेर धूर ही समाहिगे।
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत है पान के तरंग सभै पान ही कहाहिगे।
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट होई ताही ते उपज सभै ताही में समाहिगे।
गुरु गोबिन्द सिंह (श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची), पृ॰46

आदि में शब्द था और शब्द परमात्मा था। वह पहले परमात्मा के साथ था, सब चीज़ें उसी ने बनाईं, कोई चीज़ भी उसके बग़ैर प्रकट नहीं हुई।
बाइबल, सेंट जॉन 1:1–3

तू, हाँ तू ही, एकमात्र परमात्मा है, तूने ही आसमान, आसमानों के आसमान तथा उनकी आबादी ज़मीन और समुद्र और जो कुछ उनके अंदर हैं, सबको बनाया। तू सबका पालन करता है। ये सब आसमान आदि तेरी पूजा कर रहे हैं।
नहे मिआह, 9:6

क़ुरान शरीफ़ की सूरत बकर की 30 वीं रकूह में कहा है कि उसी मालिके कुल ने सब जानदार इस दुनिया में फैलाए हैं।

हमारा मालिक या पिता एक ही है, हम सब उसके पुत्र हैं, इसलिए हम सब भाई, भाई हैं। चमड़े की ये आँखें उसे देख नहीं सकतीं, जिनसे मालिक दिखाई देता है वे आँखें और हैं, हमें उसके दर्शन के लिए वे आँखें खोलनी चाहिएँ:

नानक से अखड़ीआं बिअंन जिनी डिसंदो मा पिरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1100

ब-ख़्वाहद चश्मे-सरे माशूक़ दीदन,
कलामश रा बगोशे-ख़ुद शुनीदन।

अर्थात् "अंदरूनी आँख से प्रियतम (रब) को देखना चाहिए और अपने अंदरूनी कान से उसके कलाम को सुनना चाहिए।"

यह शक्ति चेतन है, जड़ नहीं

यह शक्ति चेतन है, जड़ नहीं। इस शक्ति का स्वभाव या प्रकृति क्या है? क्या यह अंध-शक्ति है? या इसका किसी चेतन पुरुष के साथ संबंध है? यदि यह कहा जाए कि जड़-शक्ति से ही ज़िंदगी पैदा हुई तो यह मानना पड़ेगा कि अचेत शक्ति से चेतन की उत्पत्ति हुई। इंसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में हक्सले ने जीव-विज्ञान के विषय पर लिखा है, "सजीव वस्तु की विशेषताएँ उसे अन्य वस्तुओं से बिलकुल अलग करती हैं। हमें जो कुछ इल्म अभी तक प्राप्त है उससे इसका पता नहीं चलता कि जड़ से चेतन किस प्रकार पैदा हुआ।" फिर इसी विषय पर एक अन्य स्थान पर कहा गया है कि "संसार में सजीव किस प्रकार उत्पन्न हुए, इसका उत्तर यही हो सकता है कि इसके बारे में हम कुछ नहीं जानते।"

न्याय शास्त्र के अनुसार विकास का मूल सिद्धांत है कि जो विशेषताएँ कारण में होंगी, वैसी ही कार्य में भी पाई जाएँगी। मिसाल के तौर पर पानी और गर्मी आदि के योग से भाप बनती है, इसलिए भाप में ऐसी कोई वस्तु नहीं मिलती जो इसके कारण में किसी न किसी रूप में पहले ही मौजूद न हो। इसलिए यदि उस आदि-शक्ति में चेतनता किसी रूप में मौजूद नहीं थी, तो इस सृष्टि में चेतनता कहाँ से आ गई? कोई यह प्रश्न उठा सकता है कि यह ज़रूरी नहीं कि हमेशा कार्य के गुण कारण के अनुसार ही हों, मिसाल के तौर पर, चूने या हल्दी में लाल रंग मौजूद नहीं, पर इन दोनों को मिलाने से लाल रंग पैदा हो जाता है, या फिर पाँच-सात चीज़ों के मिलाने से कोई दवाई बन जाती है। इसका उत्तर यह है कि रसायन शास्त्र द्वारा हम ऐसी मिली हुई वस्तुओं को अलग-अलग कर सकते हैं,

पर क्या इसी तरह हम जड़ को लेकर चेतन पैदा कर सकते हैं या चेतन के अंशों को अलग-अलग करके जड़ को प्रकट कर सकते हैं या फिर क्या शरीर के ख़ास-ख़ास परमाणुओं को ख़ास-ख़ास मात्रा में मिलाने से चेतन की उत्पत्ति हो सकती है? यह असंभव है। हमें हक्सले की तरह नम्रतापूर्वक मान लेना चाहिए कि इस बारे में हमें कुछ पता नहीं।

अमरीका के प्रसिद्ध फ़िलॉसफ़र मि. विल डुरेण्ट अपनी पुस्तक द मेंशन्स आफ़ फ़िलॉसफ़ी (पृष्ठ 67) में जड़-पदार्थ को चलानेवाली एक चेतन शक्ति के बारे में वर्णन करते हैं:

> स्थूल पदार्थ के अंतर में एक ऐसा तत्त्व है जो उसे शक़्ल और ताक़त देता है, पर जो स्वयं स्थूल नहीं है और जिसमें अपने आप ही (निजी तौर पर) ताक़त और जीवन है। यह सूक्ष्म और गुप्त सार तत्त्व है, लेकिन यही ज़िंदगी का असल जौहर हर एक चीज़ का जौहर है।

यह जौहर क्या है? यह परमेश्वर की पूर्ण सत्ता है, जो मन और बुद्धि से परे है, जिसका हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं।

कार्य के गुण कारण के गुणों से अलग हो सकते हैं, पर कार्य की सत्ता कारण की सत्ता से अलग नहीं हो सकती। हल्दी और चूने के मिश्रण से एक तीसरा रंग बन जाता है, पर उनकी हस्ती (अस्तित्व) की सत्ता में फ़र्क़ नहीं आता। इसी प्रकार यदि मूल कारण में किसी चेतन पदार्थ की सत्ता न होती तो संसार में चेतनता किसी प्रकार भी नहीं आ सकती थी। जड़ और चेतन पदार्थों के बीच एक और अंतर है। वह अंतर यह है कि चेतन पदार्थ की सत्ता अपने लिए है। चेतन पदार्थ अपनी सत्ता को स्वयं महसूस करता है, लेकिन जड़ पदार्थ की सत्ता दूसरे के लिए है। चेतन पदार्थ ही जड़ पदार्थ की सत्ता का अनुभव करता है। चेतन सत्ता स्वयं अपने लिए और जड़ सत्ता दूसरों के लिए है।

कार्य के गुण कारण के गुणों के अनुसार होते हैं। चेतन से ही चेतन प्रकट हो सकता है। आत्मा परमात्मा का अंश है:

> कहो कबीर इह राम की अंस॥
>
> कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 871

जो शक्तियाँ आत्मा के अंदर प्रकट हैं वे सब परमात्मा के अंदर भी हैं। आत्मा चेतन है, परमात्मा चेतनता का भंडार है, यह विचारवान है, वह मालिक

सब विचारों का सागर है, इसमें ज्ञान और अक़्ल है, वह ज्ञान स्वरूप और अक़्ल का ख़ज़ाना है, इसके अंदर प्रेम है, वह प्रेम का स्रोत है। जैसा उसका स्वरूप था, वैसा ही स्वरूप हमारे अंदर भी मौजूद है। हर एक अंश का अंशी होता है, हमारे निज तत्त्व का भी वह स्रोत है।

शंकराचार्य और रामानुज के मतों में नाममात्र का ही अंतर है। शंकर संप्रदाय में अद्वैत नाम रखा गया है और श्री संप्रदाय में विशिष्टाद्वैत। शंकर स्वामी ने कहा है, "जो है, चेतन है, वह अद्वैत ही है (एक के अलावा और कुछ नहीं)।" रामानुज जी मानते हैं, "अद्वैत तो है, पर इस अद्वैत के दो पक्ष, जड़ व चेतन हैं। यदि वह इनसे रहित होता तो जगत में जड़ और चेतन प्रकट न होते। ये दोनों जुड़े हुए मटर के दो टुकड़ों की भाँति एक हैं।"

उपनिषदों में भी इसी प्रकार समझाया गया है, "वास्तविक तत्त्व पहले मटर के टुकड़ों की तरह जुड़े थे, जब उनमें अंतर उत्पन्न हुआ तो एक पुरुष और दूसरा प्रकृति बना और इनकी लीला से जगत प्रकट हुआ।" जड़ क्या है? चेतन के अभाव का नाम ही जड़ है। वास्तविक तत्त्व चेतन ही है, चेतन से ही चेतन प्रकट हुआ है।

परमात्मा क्या है और हमारा उसके साथ क्या संबंध है?

परमात्मा चेतनता का भंडार है, वह विचार स्वरूप है और अक़्ल का ख़ज़ाना है, वह प्रेम और दया का भंडार है, हम अंश हैं, वह अंशी है। जिस तत्त्व से हमारी आत्मा बनी है उसी तत्त्व के भंडार को परमात्मा कहते हैं। हम चेतन तत्त्व की बूँद हैं तो वह चेतन तत्त्व का सागर है, हम चेतन तत्त्व की किरण हैं और वह चेतन तत्त्व का सूर्य है। हर अंश का अंशी होता है। हमारे निज तत्त्व का भी अंशी है, जिसे परमात्मा कहते हैं।

शास्त्र भी कहते हैं कि पुत्र पिता की आत्मा है। जिस प्रकार पेड़ से बीज और बीज से पेड़ का निर्माण होता है, उसी प्रकार ईश्वर से सब प्राणियों का निर्माण होता है। सभी प्राणियों में वही सार तत्त्व है जो परमात्मा का है। इनका उससे अंश-अंशी का संबंध है, इस प्रकार से सब उसके बच्चे हैं। जिस प्रकार बच्चा माता के मांस का हिस्सा है, उसके पेट में रहता है और उसके पेट में ही पलता है, उसी प्रकार हम परमात्मा के अंदर पैदा होते हैं, उसी से पलते हैं और उसके साथ उसी प्रकार बँधे रहते हैं जिस प्रकार बच्चा माता के साथ बँधा रहता है। वह उससे कभी भी अलग नहीं। बालक के साथ माता का स्वाभाविक संबंध है। चाहे वह बेसमझ और नादान हो, तब भी माता उसका पालन करती है और पालन करने के लिए विवश है। माँ बच्चे की ओर से कभी बेसुध नहीं होती,

हार्दिक लगन के कारण वह उससे बेमुख नहीं हो सकती। मालिक के साथ हमारा संबंध इससे भी बढ़कर है, हम राम के अंश हैं, हमारा और मालिक का अंश-अंशी का संबंध है। समुद्र और उसकी लहरों में अंतर नहीं, सूर्य और सूर्य की किरणों में भेद नहीं। वह मालिक हमारी ओर से एक पल के लिए भी बेसुध या बेपरवाह नहीं हो सकता, वह प्रतिपल हमारी रक्षा कर रहा है। हम उससे कभी अलग नहीं हुए, वह सदा हमारे अंग-संग, अंदर और बाहर मौजूद है:

तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंत लहा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 25

यदि हम बच्चे की भाँति हो जाएँ तो हमारी चिंता परमात्मा ख़ुद करता है। पर जब अक़्ल आ जाती है, सोच विचार की हालत पैदा हो जाती है, उस समय हम दुःखी हो जाते हैं। यदि हम फिर उसकी ओर मुख कर लें और उसका पल्ला दृढ़तापूर्वक पकड़ लें, संसार में रहें पर माता का पल्ला न छोड़ें, तो सुखी हो जाएँगे। माँगो, खाओ, पीओ और पुकारो, माता मैं तेरा हूँ, नालायक़ हूँ या लायक़, तेरा ही हूँ, तेरी गोद में हूँ, तुझे छोड़कर कहाँ जाऊँ या कहाँ जा सकता हूँ। पर यह बात प्रेम के साथ हो, सचाई और सादगी के साथ हो, इसमें चतुराई न की जाए। सरल बालकों की गुस्ताख़ी माफ़ की जाती है। परमात्मा भी प्रेम, भोले स्वभाव और विश्वास को चाहता है:

भोले भाए मिले रघुराइआ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 324

परमेश्वर के बच्चे बने रहो, अपने मौरूसी (पैतृक) अधिकार को न छोड़ो। परमात्मा को जीता-जागता समझो और जीता-जागता समझकर उसे याद करो। भक्ति भाव रखो। वह निराकार भी है, साकार भी है और इनसे परे भी है। जो साकार है वही निराकार भी है:

नानक सो सूखम सोई असथूल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 281

वह अपने भक्तों के सामने कई रूपों में प्रकट होता है। जिस प्रकार अथाह समुद्र में ठंडक के कारण बर्फ़ के पहाड़ बन जाते हैं, उसी प्रकार, भक्ति के खिंचाव या आकर्षण से वह निराकार, साकार होकर दिखाई देता है और ज्ञानरूपी सूर्य के चढ़ने से वह बर्फ़ (साकार) फिर पानी (निराकार) में लीन हो जाती है।

कोई उसे निराकार मानता है, कोई साकार, कोई माता, कोई पिता, कोई मित्र और कोई पति। किसी भाव से उसे याद करो, इसमें कोई झगड़ा नहीं, बात तो एक ही है, केवल वर्णन में अंतर है। दिल में उसका प्रेम पैदा करो। हज़रत मूसा एक बार जंगल में गए। वहाँ देखा कि एक भेड़ें चरानेवाला गड़रिया बैठा परमेश्वर को याद कर रहा है, "ऐ परमात्मा! यदि तू बच्चा होता तो मैं तुझे दूध पिलाता, मैं तेरे बालों में कंघी करता, तुझे भेड़ों की ऊन के कपड़े पहनाता... इत्यादि।" वह इसमें मस्त था। हज़रत मूसा ने उससे कहा, "तू काफ़िर है।" यह बात सुनकर वह चरवाहा चौंक पड़ा और रोकर कहने लगा, "हे मालिक! मैंने तेरी बेअदबी की है। हाय! मैं क्या करूँ...?"

हज़रत मूसा चले गए। जब वे समाधि की अवस्था में गए और परमेश्वर के दर्शन हुए तब हुक्म हुआ:

मूसिया आदाबे-दानाँ दीगर अन्द, सोख़ता जानओ रवानाँ दीगर अन्द।
तू बराये वसल करदन आमदी, नै बराये फ़सल करदन आमदी।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 173-74

अर्थात् "ऐ मूसा! अक़्ल वालों के अदब-आदाब के और तरीक़े हैं व प्रेमी रूहों के और। तू तो दुनिया में परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आया था, न कि तोड़ने के लिए। तूने उस जुड़े हुए जीव को मुझसे तोड़ा है।"

उधर भेड़ें चरानेवाला रो-रोकर अंतर्ध्यान हो गया। उसे परमेश्वर ने दर्शन दिए और दिलासा देते हुए कहा, "मैं तेरा दूध भी पीऊँगा, तेरे कपड़े भी पहनूँगा, जो तू देगा मैं खाऊँगा...।" इधर मूसा उसके पास पहुँचा और कहने लगा, "जो कुछ मैंने कहा है, उसके लिए माफ़ कर, परमात्मा तुझ पर प्रसन्न है...।" वह चरवाहा बोला, "मूसा! जो तेरे पास आया है वही मेरे पास भी आ चुका है।" प्यार और सरल भावों के साथ उसे याद करो।

परमात्मा संतों की दृष्टि में

क्या संत तौहीद (अद्वैत) के क़ायल हैं या वे शिर्क (द्वैत) की तस्लीस (तीन हस्तियाँ, त्रयी) को मानते हैं?

संतजन शिर्क (द्वैत) को नहीं मानते और न ही तस्लीस (तीन हस्तियों) को। जिसे दुनिया तौहीद मानती है उसे वे हक़ीक़त की दृष्टि से देखते हैं। क्या केवल

एक को मान लेना ही तौहीद (अद्वैत) है? यदि विचारपूर्वक देखें तो एक को मानने में तीन की सूरत नज़र आती है: 1. मानी जानेवाली वस्तु 2. माननेवाला मनुष्य और 3. उसको मानना। जहाँ तीन का भाव है वहाँ तौहीद (अद्वैत) कैसी? तौहीद को तर्क द्वारा प्रमाणित करनेवाला तौहीद का खंडन करता है:

दलीले-तौहीद रद्दे-तौहीद अस्त।

मौलाना रूम

जब एक ही 'एक' है तो एक में 'एक' के बारे में बातचीत नहीं हो सकती। कोई भी बातचीत तब ही हो सकती है, जब कि दो हों, एक दूसरे को सुनाए, चखे, सूँघे। यदि केवल एक ही हो तो कौन सुने और कौन चखे, कौन सूँघे और कौन कहे? इसलिए संतों ने तौहीद की हक़ीक़त की ओर ध्यान दिलाया है। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

एक कहौं तो है नहीं, दुइ कहौं तो गारि।
है जैसा तैसा रहै, कहैं कबीर बिचारि॥

कबीर साहिब का बीजक, पृ. 94

एक कहा जाए तो वह एक है नहीं, क्योंकि बग़ैर दो के 'एक' शब्द का प्रयोग नहीं हो सकता। यदि दो कहें तो दोनों ही तुच्छ व सीमित और एकदेशी बन जाते हैं। रहमान कहें या शैतान, दयाल कहें या काल, दोनों ही सीमित हो जाते हैं। इसलिए सिद्धांत में फ़र्क़ पड़ जाता है। कबीर साहिब फ़रमाते हैं, "एक तो वह है नहीं, दो कहना उसे अपशब्द कहने के समान है। वह जैसा है वैसा ही है, इसके सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता।"

यहाँ मन, वाणी और बुद्धि का दख़ल (अधिकार) नहीं। जिस समय वह अपने आप में गुप्त था, तब वह न एक था और न दो, न उसका कोई रूप था, न रंग। वह क्या था, बयान नहीं किया जा सकता। उस गुप्त का अगर वर्णन हो सकता है तो वह केवल उसके प्रकट होने पर ही हो सकता है। गुप्त हालत में वह अलख था, अगम था, अनामी था, न वह क़ादिर (कर्ता) था न क़ुदरत (प्रकृति, माया) और न मक़दूर (समर्थ) था, न वहाँ ख़ालिक (सृष्टिकर्ता) था न ख़िलक़त (रचना) थी, न मख़लूक़ (सृष्टि) थी। इसका कुछ अनुमान सुषुप्ति की हालत द्वारा लग सकेगा। इसी अनामी पद को संतों ने अपना आदर्श बनाया है। उस कुलमालिक या अनामी पुरुष का गुरवाणी में वडपुरख, स्वामी, ख़सम, आदि-निरंजन और निरंकार कहकर वर्णन किया गया है:

ठाकुर सरबे समाणा॥ किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वड पुरख सुजाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

तुम्ह वड पुरख बड अगम अगोचर हम दूढ रहे पाई नही हाथ॥
तू परै परै अपरंपर सुआमी तू आपन जानह आप जगंनाथ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1296

गुन गावत गोविंद के सभ इछ पुजामी राम॥
नानक उधरे जप हरे सभहू का सुआमी राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 848

कोट ब्रहमंड को ठाकुर सुआमी सरब जीआ का दाता रे॥
प्रतिपालै नित सार समालै इक गुन नही मूरख जाता रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 612

चीत न आवस दूजी बाता सिर ऊपर रखवारा॥
बेपरवाह रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884

ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा॥
नामो वडिआई सोभा नानक खसम पिआरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1003

आद जुगादी अपर अपारे॥ आद निरंजन खसम हमारे॥
साचे जोग जुगत वीचारी साचे ताड़ी लाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1023

आद निरंजन प्रभ निरंकारा॥ सभ मह वरतै आप निरारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

स्वामी जी ने भी इस पद का स्वामी कहकर वर्णन किया है:

सब की आदि कहूँ अब स्वामी।

सारबचन संग्रह, 23:1:8

गुरवाणी में आया है कि यह स्वामी धाम अति सुंदर है और भक्तजनों के विश्राम का स्थान है। संतों को केवल स्वामी की टेक और उसी का आसरा है:

सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लग जीवते जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 80

स्वामी पद का गुरवाणी में हरि राए (देखें: 'हरि राए' का प्रकरण) और महादयाल कहकर भी वर्णन किया गया है:

प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 249

वह कुलमालिक अलख, अपार, अगोचर और निराला है, वह स्वयंभू और स्वयं प्रकाश है:

तू अकाल पुरख नाही सिर काला॥ तू पुरख अलेख अगंम निराला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1038

अलख अपार अगंम अगोचर ना तिस काल न करमा॥
जात अजात अजोनी संभउ ना तिस भाउ न भरमा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 597

कुलमालिक, काल और अकाल, दोनों से परे, ऊँचा और न्यारा है। सारी रचना का खेल उसी के अपने हुक्म के अंदर है, फिर भी वह अकर्ता है। वह निर्गुण और सगुण दोनों से परे है; सर्वव्यापक, सर्वाधार, सृजनहार, निश्चल, समर्थ, अविनाशी, पतित-पावन, अगम, अगोचर, अनादि, अनंत और निर्मल-चेतन है। वह अटल, अछेद्य, अभेद्य, ज्ञान और अमृत का भंडार, निराकार, भक्त-वत्सल, सब ही से न्यारा, माधुर्य का सागर और सर्वव्यापी है। वह शब्द स्वरूप है और उसका नाम सर्वाधार है और नाम के अंदर भी नामी के गुण हैं। उसका जो निजस्थान है उसे वाणी में निजघर, निश्चल धाम और परम पद भी कहा है। वह, काल और अकाल, सगुण और निर्गुण, दोनों में व्याप्त है। जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब उस स्वामी का ही प्रकाश है।

गुरु नानक साहिब ने जप जी के मूल मंत्र में कुलमालिक के स्वरूप का इस प्रकार वर्णन किया है:

१ओ सत नाम करता पुरख निरभउ निरवैर
अकाल मूरत अजूनी सैभं गुर प्रसाद॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

उस महान पुरुष, स्वामी, अनामी, आदि-निरंजन और निरंकार का स्वरूप अकथनीय है। वह मन और वाणी से परे है और वह हस्ती ख़याल (बुद्धि और कल्पना) के दायरे में नहीं आ सकती। मन और बुद्धि के स्थिर होने पर आत्मा को उसका अनुभव होता है। उसको ही '१ओ' कहकर बयान किया गया है, यह पद उसके स्वरूप का चिन्ह है। पौराणिक ऋषियों ने उसको 'ॐ' या 'ओ३म्' कहकर बयान किया है। इसके अलग-अलग अक्षरों से ब्रह्मा, विष्णु, महेश (उत्पत्ति, पालन और संहार करनेवाली शक्तियाँ) आदि देवताओं की कल्पना करके त्रिधामूर्ति की स्थापना की गई है। पर गुरवाणी में एक '१' उस स्वरूप या हस्ती का वाचक है जो वर्ण-चिन्हों से परे है, अकथनीय है, जो एक ही है, जिसका कोई शरीक (साँझी या हिस्सेदार) नहीं। गुरवाणी में '१' को 'ओ' के पहले रखने से यह सिद्ध होता है कि वह 'ओ' त्रिधामूर्ति की ओर संकेत नहीं करता। ओम् को सबसे श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि जब अकालपुरुष ने संसार की रचना का संकल्प किया तो उससे एक शब्द हुआ, जिसकी ध्वनि लगभग 'ओ३म्' के उच्चारण जैसी थी। मुसलमान फ़क़ीर इसको 'हू' कहते हैं, जिससे कि ब्रह्मांड की रचना हुई।

वह उसका धुनात्मक नाम है जिसके साथ जुड़ना उसके धनी से मिलने का साधन है:

> ओअंकार अकारु जिस परवरदगारु अपारु अलाइआ॥
>
> वारां भाई गुरदास, 37:2

भाई गुरदास जी इस बारे में फ़रमाते हैं:

> एका एकंकारु लिखि देखालिआ॥ ऊड़ा ओअंकारु पासि बहालिआ।
>
> वारां भाई गुरुदास, 3:15

> इक कवाउ पसाउ करि ओअंकारि अकारु पसारा।
>
> वारां भाई गुरुदास, 6:4

> इक कवाउ पसाउ करि ओअंकार अनेक अकारा।
>
> वारां भाई गुरुदास, 18:1

> ओअंकारि आकारु करि मखी इक उपाई माइआ।
>
> वारां भाई गुरुदास, 18:11

होआ एकंकारु आपु उपाइआ॥
ओअंकारि अकारु चलतु रचाइआ॥
वारां भाई गुरुदास, 22:1

इक कवाउ अतोलु कुदरति जाणीऐ॥
वारां भाई गुरुदास, 22:14

यह सब रचना इस एकंकार का ही पसारा है (देखें: 'एकंकार' का प्रकरण)। जो '੧' के भेद को पा लेता है वह कर्ता और देव बन जाता है:

इस एके का जाणै भेउ॥ आपे करता आपे देउ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 930

यह '੧' का भेद उन परम शुद्ध हृदयों में प्रकट होता है, जिनका तन अचल, मन और इंद्रियाँ स्थिर सुरत और निरत एकाग्र हो गई हों यानी मन और बुद्धि के निश्चल हो जाने पर जीव की सद्गति हो जाती है:

एक सरेवै ता गति मित पावै आवण जाण रहाई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 930

गुरमुख एक विरला को लहै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 930

एको एक एक पछानै॥ इत उत की ओह सोझी जानै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 281

सतनाम—सतनाम वह सत्य (सत्) है, जो तीनों कालों (भूत, भविष्य, वर्तमान) में नाशवान नहीं, जिसका अस्तित्व हमेशा है और जो एकरस है; वह मालिक का अकृत्रिम (निज) नाम है। गुरबाणी में आया है:

किरतम नाम कथे तेरे जिहबा॥
सत नाम तेरा परा पूरबला॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1083

बाक़ी के सब नाम कृत्रिम (सिफ़ाती) हैं, जो किसी न किसी सिफ़त या गुण विशेष के कारण रखे गए हैं, जैसे बनानेवाले का नाम कर्ता, रहम करनेवाले का रहीम आदि।

सत् की असल समझ बड़ी बारीक़ है। यह सत्य-असत्य (सच-झूठ) से अलग है। ये द्वंद्व पद हैं और एक दूसरे से प्रकाशमान हैं। लेकिन गुरु अर्जुन साहिब जिस सत्य या सत् का उल्लेख कर रहे हैं वह स्वयं प्रकाश है और अपने आप में पूर्ण है, उसमें सत्य और असत्य दोनों का अभाव है। यह वह सत् है जिसके आसरे ये सत्य और असत्य हैं। गुरु साहिब ने इस विचार को स्पष्ट कर दिया है:

ससा सत सत सत सोऊ॥ सत पुरख ते भिंन न कोऊ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

इस सत् का अनुभव मन और इंद्रियों के स्थिर होने पर होता है और जिसके अंदर सत् का अनुभव हो जाता है वह करनहार (सृष्टा) को पहचान लेता है:

बुझनहार कउ सत सभ होए॥
नानक सत सत प्रभ सोए॥
सत सरूप रिदै जिन मानिआ॥
करन करावन तिन मूल पछानिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 285

नाम–शब्द की उत्पत्ति म्ना धातु से हुई है और इसके अर्थ, प्रसिद्ध, निश्चयवाचक और विशेषता-बोधक दिए गए हैं। जिस पद के द्वारा किसी को दूसरों से अलग करके बुलाया जाए वह नाम है। लेकिन गुरु साहिब का नाम से अभिप्राय वह पूर्ण निश्चित शक्ति है जो सब खंडों, ब्रह्मांडों और ज्ञान-ध्यान का आधार है और जो सबकी सँभाल कर रही है (विस्तार के लिए 'नाम' का प्रकरण देखें)। गुरु अर्जुन साहिब जी सुखमनी में इस नाम की प्रशंसा गाते हैं:

नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन॥
नाम के धारे आगास पाताल॥ नाम के धारे सगल आकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284

वह मालिक नामरूप होकर अस्तित्व में प्रकट होता है। सत् सदा ही अस्तित्व की लहर है, जिससे संबंधित होकर आत्मा उसका रस लेती है। वह मालिक '१' है, लेकिन जब इस '१' (एक) का भेद खुलता है तो वह सतनाम प्रतीत

होता है। आत्मा उसके निश्चित, अखंड अस्तित्व में जुड़कर उसका अनुभव करती है। यह केवल कथन मात्र नहीं और न ही कोई ख़याली पुलाव है। संत-महात्मा उसका अनुभव करते हैं और इस अनुभव को वे स्वीकार भी करते हैं। इसमें शंका का स्थान नहीं।

करता पुरख–वह '੧' सृष्टि की रचना करनेवाला है, इसलिए कर्ता है। बाहरी दुनिया में तो कोई कर्ता दूसरी वस्तुओं को लेकर ही कुछ बनाता है, पर उसे सृष्टि की रचना के लिए किसी की मदद या सहायता की ज़रूरत नहीं। वह पुरुष है और समर्थ है। वह अपनी सत्ता द्वारा ही सब कुछ बनाता है, इसलिए, वही असली कर्ता है।

कई लोग यह मानते नज़र आते हैं कि सृष्टि अपने आप बनी और कई इस सृष्टि में तीन वस्तुओं को अनादि मानते हैं (ईश्वर, आत्मा और प्रकृति) जो एक दूसरे के आसरे हैं। ये चाहे अनादि मानी जाएँ, लेकिन गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि ये सब कुछ उसी एक '੧' के बनाए हुए हैं और वह सबका समर्थ कर्ता है। बाहरी दुनिया में तो कुम्हार घड़े बनाने के लिए मिट्टी का मुहताज होता है, पर वह एक '੧' कर्ता होने के लिए किसी का मुहताज नहीं। यह सब उसी के द्वारा है, वह स्वयं कर्ता है। वह अपने हुक्म से ही सारे संसार की रचना करनेवाला है। वह पूर्ण शक्तिमान और सर्वकला समर्थ है। ये संसार की शक्तियाँ (ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि) उसके हुक्म के सहारे चल रही हैं। इसलिए कृत को छोड़कर कर्ता की सेवा करना ज़रूरी है। वही सबका कर्ता, धर्ता और हर्ता है:

करता पुरख न चेतिओ कीते नो करता करि जाणै।

वारां भाई गुरदास, 15:7

निरभउ (निर्भय)–वह एक '੧' भयरहित है, क्योंकि वह सबसे शक्तिशाली आदि पुरुष है, कर्ता है। उसके अलावा और सब उसी के बनाए हुए हैं, पर उसके तुल्य नहीं हैं, इसी लिए उसे किसी का भय नहीं। कोई देवी-देवता या अवतार उसकी बराबरी नहीं कर सकता:

नानक निरभउ निरंकार होर केते राम रवाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.464

उसकी भक्ति करने से उसके उपासक भी निर्भय हो जाते हैं:

भै ते निरभउ होए बसाना॥
जिस ते उपजिआ तिस माहे समाना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 285

निरवैर—वैर उसे तभी हो सकता है जबकि उसके अलावा कोई और भी हो। जब संसार का ताना-बाना वह स्वयं ही है, फिर उसे वैर किससे? उस एक '१' की आराधना करनेवाले स्वयं वैर-विरोध से रहित हो जाते हैं। उनके हृदय अडोल हो जाते हैं, यदि कोई दूसरा उनसे वैर करे भी तो उसके वैर की लहरें उनके निरवैर हृदय से टकराकर वापस आकर उसी हृदय को, जिससे वे लहरें उठती हैं और अधिक मलिन कर देती हैं।

वह मालिक सदा निरवैर है। चाहे कितने भी पापी हो, अपना अहंकार त्यागकर उसकी शरण ग्रहण करने से डरो नहीं, उसे हव्वा न समझो, वह प्रेम स्वरूप है, इन विकारों से रहित है।

अकाल मूरत—वह अकाल है, काल और समय के प्रभाव से रहित है। काल के तीन भाग—भूत, वर्तमान और भविष्य हैं, इनकी सीमा में सारा संसार बँधा हुआ है, इसके (काल के) अंदर ही सबका आदि, मध्य और अंत होता है। पर एक '१' इसकी क़ैद से परे है। वह अकाल, अनादि और अनंत है क्योंकि उसका कोई आदि और अंत नहीं। जब ये दोनों उसके अंदर नहीं तो उसका वर्तमान क्या हो सकता है। वह तो सदा एकरस है। देश, काल और माया से परे है। सबके सिर पर तो काल है, पर वह अकाल है (अधिक विस्तार के लिए 'काल' का प्रकरण देखें):

काल का भी काल है और महाकाल का भी काल है

काल हूँ के काल महा काल हूँ के काल हैं॥
गुरु गोबिन्द सिंह, श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 81

काल रहित अनकाल सरूपा।
गुरु गोबिन्द सिंह, श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 27

इस प्रकार के वर्णन से यह भ्रम हो सकता है कि संभव है कि ऐसी कोई हस्ती ही न हो। पर गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि वह मूरत है यानी उसकी हस्ती या अस्तित्व है। वह मूरत सबको प्रकाशित करनेवाली है जिसे हम फ़ारसी में वुजूद और अंग्रेज़ी में बीइंग (Being) कह सकते हैं।

अजूनी– उसका मूरत कहकर वर्णन करने से जन्म-मरण का भाव आ जाता है। इस भाव को दूर करने के लिए गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि वह अजूनी (अयोनि) है। वह कभी गर्भ में आनेवाला नहीं। जो गर्भवास या जन्म से रहित है वह अवश्य मरण से भी रहित है। अजूनी की उपासना द्वारा जीव भी अजूनी पद को पा लेता है, आवागमन से मुक्त हो जाता है।

सैभं (स्वयंभू) – (स्वयं=अपने आप, भू=होना) जो अपने आप में स्थिर है, अपने आप प्रकाशमान है। वह अपने अस्तित्व के लिए किसी पर निर्भर नहीं, किसी का मुहताज नहीं। वह अकारण है। उसके द्वारा सब प्रकाशमान हैं, पर वह स्वयं अपने आप चेतन और प्रकाशमान है।

गुर प्रसाद– गुरु 'गृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'शब्द करना'। जो शब्द-दाता है, वह गुरु है। प्रसाद=कृपा द्वारा प्राप्त। गुर प्रसाद यानी जिस मालिक का ऊपर वर्णन किया गया है, उसका स्वरूप गुरु की कृपा द्वारा ही अनुभव में आ सकता है। गुरु की कृपा उसकी प्राप्ति का साधन है। इसका विस्तारपूर्वक वर्णन 'गुरु' के प्रकरण में किया गया है।

उस सर्वशक्तिमान, पूर्ण स्वामी का मिलाप, सिमरन, भक्ति भाव, श्रद्धा, सेवा, सत्संग और सतगुरु से प्राप्त शब्द के अभ्यास द्वारा होता है। यह मिलाप, धुर लेख द्वारा किसी बड़भागी गुरुमुख को ही प्राप्त होता है। स्वामी, मन को वश में करने से मिलता है, केवल कर्म-धर्म, तप, तीर्थ-स्नान आदि द्वारा कुछ नहीं बनता।

स्वामी के दर्शन और सिमरन द्वारा सुख और परम आनंद की प्राप्ति होती है, हौमैं (अहंभाव) का नाश होता है और जन्म-जन्मांतरों के पाप कट जाते हैं। ऋद्धि, सिद्धि और परमात्मा की दरगाह में मान की प्राप्ति और सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है, यम का भय दूर होकर मुक्ति-लाभ होता है। अंतर में प्रकाश, सहज अवस्था की प्राप्ति और हृदय कमल का विकास होता है। ज्योति में जोत समा जाती है और जीव लौटकर संसार सागर में नहीं गिरता। इनके प्रमाणों के लिए पाठकजन 'स्वामी', 'हरि राए' और 'आदि निरंजन' के प्रकरणों को क्रमशः ध्यान देकर पढ़ें। स्वामी से विहीन होने के दोषों का भी वर्णन किया गया है। अब स्वामी के विषय में आदि ग्रन्थ में से लिए गए वाणी के प्रमाण देखें:

ੴ

गुरवाणी

1. स्वामी क्या है?

1.1. 'वड पुरखु' (महान पुरुष) है

ठाकुर सरबे समाणा॥ किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वड पुरख सुजाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

तुम्ह वड पुरख बड अगम अगोचर हम ढूढ रहे पाई नही हाथ॥
तू परै परै अपरंपर सुआमी तू आपन जानह आप जगंनाथ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1296

एक हमारा अंतरजामी॥
धर एका मै टिक एकस की सिर साहा वड पुरख सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1347

1.2. कुलमालिक है

पहिलो दे तैं रिजक समाहा॥ पिछो दे तैं जंत उपाहा॥
तुध जेवड दाता अवर न सुआमी लवै न कोई लावणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 130

आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहे ता चे॥
मेरा मन तन जीउ रास सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 169

तू वड दाता तू वड दाना अउर नही को दूजा॥
तू समरथ सुआमी मेरा हउ किआ जाणा तेरी पूजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1186

ढाकनहारे प्रभू हमारे जीअ प्रान सुखदाते॥
अबिनासी अबिगत सुआमी पूरन पुरख बिधाते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1117

तू अथाह अत बडो सुआमी क्रिपा सिंध पूरन रतनागी॥
नानक जाचक हर हर नाम मांगै मसतक आन धरिओ प्रभ पागी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1301

इह परपंच कीआ प्रभ सुआमी सभ जगजीवन जुगणे॥
जिउ सललै सलल उठह बहु लहरी मिल सललै सलल समणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 977

गुन गावत गोविंद के सभ इछ पुजामी राम॥
नानक उधरे जप हरे सभहू का सुआमी राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 848

कोट ब्रहमंड को ठाकुर सुआमी सरब जीआ का दाता रे॥
प्रतिपालै नित सार समालै इक गुन नही मूरख जाता रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 612

1.3. ख़सम है

चीत न आवस दूजी बाता सिर ऊपर रखवारा॥
बेपरवाह रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884

बरन न साकउ जैसा तू है साचे अलख अपारा॥
अतुल अथाह अडोल सुआमी नानक खसम हमारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884

ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा॥
नामो वडिआई सोभा नानक खसम पिआरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1003

काल अकाल खसम का कीन्हा इह परपंच बधावन॥
कहे कबीर ते अंते मुकते जिन्ह हिरदै राम रसाइन॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1104

1.4. सृजनहार है और 'एकंकार' होकर अनेक भाँति प्रसार कर रहा है

जल थल महीअल पूरिआ सुआमी सिरजनहार॥
अनिक भांत होए पसरिआ नानक एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

सिरजनहार विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआन॥
कहो नानक प्राणी तीजै पहरै बिख संचे अंध अगिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 77

1.5. दयाल और दातार है

दातार सदा दइआल सुआमी काए मनहो विसारीऐ॥
मिल साधसंगे भज निसंगे कुल समूहा तारीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 461

आद अंत दइआल पूरन तिस बिना नही कोए॥
जनम मरण निवार हर जप सिमर सुआमी सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 675

लाल गोपाल दइआल रंगीले॥ गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे॥
ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमर सिमर हउ जीवां जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 99

1.6. आश्चर्यमय और अनुपम है

आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुण निध पिआरिआ॥
महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1278

सांत सहज आनंद घनेरे बिनसी भूख सबाई॥
नानक गुण गावह सुआमी के अचरज जिस वडिआई राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 784

नीकी राम की धुन सोए॥ चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1228

सुंदर सुघड़ चतुर सभ बेता रिद दास निवास भगत गुन गावन॥
निरमल रूप अनूप सुआमी करम भूमि बीजन सो खावन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

1.7. अगम, अगोचर, अदृष्ट, अकथ, अलख, अपरंपार और अथाह है

दरसन पेखत भए पुनीता॥ सगल उधारे भाई मीता॥
अगम अगोचर सुआमी अपुना गुर किरपा ते सच धिआई जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 101

उर धार बीचार मुरार रमो रम मनमोहन नाम जपीने॥
अद्रिसट अगोचर अपरंपर सुआमी गुर पूरै प्रगट कर दीने॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 668

सरण समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नाम तेरा॥
अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुर मेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683

सतगुर दइआल किरपाल भेटत हरे काम क्रोध लोभ मारिआ॥
कथन न जाए अकथ सुआमी सदकै जाए नानक वारिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 81

हिरदै जपनी जपउ गुणतासा॥
हर अगम अगोचर अपरंपर सुआमी जन पग लग धिआवउ होए दासन दासा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 841

मेरी सेज सोही देख मोही सगल सहसा दुख हरा॥
नानक पइअंपै मेरी आस पूरी मिले सुआमी अपरंपरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 847

हर हर अगम अगोचर सुआमी जन जप मिल सलल सलले॥
हर के संत मिल राम रस पाइआ हम जन कै बल बलले॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 975

हर तुम वड अगम अगोचर सुआमी सभ धिआवह हर रुड़णे॥
जिन कउ तुम्हरे वड कटाख है ते गुरमुख हर सिमरणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 977

सभ सिध साधिक मुनि जना मन भावनी हर धिआइओ॥
अपरंपरो पारब्रहम सुआमी हर अलख गुरू लखाइओ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 985

कर किरपा प्रभ अंतरजामी॥ सुख निधान हर अलख सुआमी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 184

तुम सुआमी अगम अथाह तू घट घट पूर रहिआ॥
तू अलख अभेउ अगंम गुर सतगुर बचन लहिआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1114

जा बहहे गुरमुख हर नाम बोलह जा खड़े गुरमुख हर हर कहिआ॥
तुम सुआमी अगम अथाह तू घट घट पूर रहिआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1114

गोबिद गुण गोबिद सद गावह गुण गोबिद अंत न पाइआ॥
तू अमित अतोल अपरंपर सुआमी बहु जपीऐ थाह न पाइआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1319

सरण समरथ अगोचर सुआमी॥ उधर नानक प्रभ अंतरजामी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 744

अगम अगोचर बिअंत सुआमी ता का अंत न पाईऐ॥
लाहा खाट होईऐ धनवंता अपुना प्रभू धिआईऐ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1338-39

जगजीवन अपरंपर सुआमी जगदीसुर पुरख बिधाते॥
जित मारग तुम प्रेरहो सुआमी तित मारग हम जाते॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 169

सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एक निधाना॥
पारब्रहम अपरंपर सुआमी सिमरत पार पराना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 672

तू अपरंपर सुआमी अत अगाह तू भरपुर रहिआ जल थले
हर इक इको इक एकै हर थाट॥
तू जाणह सभ बिधि बूझह आपे जन नानक के प्रभ
घट घटे घट घटे घट हर घाट॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1297

1.8. ऊँचा, अथाह, अपार और बेअंत है

समरथ अगथ अपार निरमल सुणहो सुआमी बिनउ एहो॥
कर जोड़ नानक दान मागै जनम मरण निवार लेहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 457

जल थल महीअल रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा॥
बिनवंत नानक टेक जन की चरण कमल अधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 461

ऊच अपार बेअंत सुआमी कउण जाणै गुण तेरे॥
गावते उधरह सुणते उधरह बिनसह पाप घनेरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 802

सदा सदा सद होवणहारा॥ ऊचा अगम अथाह अपारा॥
ऊणे भरे भरे भर ऊणे एह चलत सुआमी के कारणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077

ऊचे ते ऊचा दरबारा॥ कहण न जाई अंत न पारा॥
गहिर गंभीर अथाह सुआमी अतुल न जाई किआ मिना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

तू अथाह अपार अत ऊचा कोई अवर न तेरी भाते॥
इह अरदास हमारी सुआमी विसर नाही सुखदाते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747

हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे॥
हर नाम सालाहह दिन रात एहा आस आधारो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 450

गुण बेअंत प्रभ गहिर गंभीरे॥
ऊच महल सुआमी प्रभ मेरे॥
तूं अपरंपर ठाकुर मेरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 805

सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई॥
तूं पारब्रहम बेअंत सुआमी तेरी कुदरत कहण न जाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

जिहवा एक कवन गुन कहीऐ॥
बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंत न किन ही लहीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 674

करण कारण समरथ सुआमी नानक तिस सरणाई॥
बंधन तोड़ चरन कमल द्रिड़ाए एक सबद लिव लाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

साच धरम का बेड़ा बांधिआ भवजल पार पवाई॥
बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बल बल जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 916

गुण बेअंत सुआमी तेरे कोई न जानई॥
देख चलत दइआल सुण भगत वखानई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

करह भगति अर रंग अपारा॥ खिन मह थाप उथापनहारा॥
भारो तोल बेअंत सुआमी हुकम मंन भगतीजा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

अगह अगह बेअंत सुआमी नह कीम कीम कीमाए॥
जन नानक तिन कै बल बल जाईऐ जिह घट परगटीआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1139

तू हमरो हम तुमरे कहीऐ इत उत तुम ही राखे॥
तू बेअंत अपरंपर सुआमी गुर किरपा कोई लाखै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1228

हर की उपमा अनिक अनिक अनिक गुन गावत
सुक नारद ब्रहमादिक तव गुन सुआमी गनिन न जात॥
तू हर बेअंत तू हर बेअंत तू हर सुआमी तू आपे ही जानह आपनी भांत॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1200

1.9. आदि सच, जुगादि सच है

आद जुगादी सेवक सुआमी भगता नाम अधारे॥
नानक सिख दे मन प्रीतम बिन हर झूठ पसारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 79

आद मध प्रभ अंत सुआमी अपना थाट बनाइओ आप॥
अपने सेवक की आपे राखै प्रभ मेरे को वड परताप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 825

गोविंद गुण निध स्रीरंग सुआमी आद कउ आदेस जीउ॥
बिनवंत नानक मइआ धारहो जुग जुगो इक वेस जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 929

1.10. अटल, सत्य और अविनाशी है

अटल अछेद अभेद सुआमी सरण ता की आउ॥
चरण कमल अराध हिरदै एक सिउ लिव लाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 501

कीरत करह सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरख मुरारे॥
जिउ भावै तिउ राखहो सुआमी जन नानक सरन दुआरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 670

सत सत हर सत सुआमी सत साधसंगेहो॥
सत ते जन जिन परतीत उपजी नानक नह भरमेहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1226

1.11. निरभउ (निर्भय) निरवैर है

काइआ नगर बसत हर सुआमी हर निरभउ निरवैर निरंकारा॥
हर निकट बसत कछु नदर न आवै हर लाधा गुर वीचारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 720

1.12. अंतर्यामी है

करण करावनहार सुआमी॥ सगल घटा के अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 178

मीत हमारा अंतरजामी॥ समरथ पुरख पारब्रहम सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

तूं समरथ तूंहै मेरा सुआमी॥ सभ किछ तुम ते तूं अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 193

सरण परे प्रभ अंतरजामी॥ नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 201

जीवन गति सुआमी अंतरजामी आप लीए लड़ लाए॥
हर रतन पदारथो परगटो पूरनो छोड न कतहू जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 454

सरण समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नाम तेरा॥
अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुर मेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683

सिमरउ सो प्रभ अपना सुआमी॥ सगल घटा का अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 741

अंतरजामी पुरख सुआमी अनबोलत ही जानहो हाल॥
तन मन सीतल होए हमारो नानक प्रभ जीउ नदर निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 828

प्रीतम प्रान अधार सुआमी॥ पूर रहे प्रभ अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 826

अचुत पारब्रहम परमेसुर अंतरजामी॥ मधुसूदन दामोदर सुआमी॥
रिखीकेस गोवरधन धारी मुरली मनोहर हर रंगा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1082

राखा एक हमारा सुआमी॥ सगल घटा का अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1136

भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पह करउ पुकारा॥
नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1167

अविगत नाथ अगोचर सुआमी॥ पूर रहिआ घट अंतरजामी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1157

कर किरपा पारब्रहम सुआमी॥ सगल घटा के अंतरजामी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1339

1.13. समर्थ है

तू समरथ पारब्रहम सुआमी कर किरपा जन तेरा॥
पूर रहिओ सरब मह ठाकुर नानक सो प्रभ नेरा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1206

अगाध बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भंजना॥
नानक पइअंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 456

जीउ पिंड धन रास प्रभ तेरी तूं समरथ सुआमी मेरा॥
दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 826

सभना गला समरथ सुआमी सो किउ मनहो विसारे॥
कहै नानक मंन मेरे सदा रहो हर नाले॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

साजन मीत सखा हर बंधप जीअ धान प्रभ प्रान अधारी॥
ओट गही सुआमी समरथह नानक दास सदा बलिहारी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1389

1.14. करण कारण है

करण करावनहार सुआमी॥ सगल घटा के अंतरजामी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 178

करण कारण समरथ सुआमी नानक तिस सरणाई॥
बंधन तोड़ चरन कमल द्रिड़ाए एक सबद लिव लाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

करन करावनहार सुआमी॥ सगल घटा के अंतरजामी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1148

सोई मेरा सुआमी करनैहार॥ कोट बार जाई बलिहार॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1152

समरथ सुआमी कारण करण॥ मोहे अनाथ प्रभ तेरी सरण॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1183

तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह॥
करण कारण समरथह दान देत प्रभ पूरनह॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1357

अब मोहे सरब उपाव बिरकाते॥
करण कारण समरथ सुआमी हर एकस ते मेरी गाते॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1209

करन करावनहार सुआमी॥ सगल घटा के अंतरजामी॥
कर किरपा जिस भगती लावहो जनम पदारथ सो जिना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

1.15. परिपूर्ण है

जल थल महीअल रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा॥
बिनवंत नानक टेक जन की चरण कमल अधारा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 461

सरण समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नाम तेरा॥
अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुर मेरा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683

प्रीतम प्रान अधार सुआमी॥ पूर रहे प्रभ अंतरजामी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 826

जीअन को दाता मेरा प्रभ॥ पूरन परमेसुर सुआमी घट घट राता मेरा प्रभ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 894

तू समरथ पारब्रहम सुआमी कर किरपा जन तेरा॥
पूर रहिओ सरब मह ठाकुर नानक सो प्रभ नेरा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1206

1.16. पतित-पावन है

हर पतित पावन नाम सुआमी भउ भगत भंजन गाइआ॥
हर हार हर उर धारिओ जन नानक नाम समाइआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 984

सरण समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नाम तेरा॥
अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुर मेरा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683

अठसठ तीरथ पुंन किरिआ महा निरमल चारा॥
पतित पावन बिरद सुआमी नानक सबद अधारा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 784

कोट पतित उधारे खिन मह करते बार न लागै रे॥
दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिस भावै तिसह निवाजै रे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

हर चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हर हरे॥
सागर संसार भव उतार नाम सिमरत बहु तरे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 456

तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउ कर मिलह जूठारी॥
हमरै जीइ होर मुख होर होत है हम करमहीण कूड़िआरी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

पतित उधारन सरन सुआमी कृपा निध दइआला॥
अंध कूप ते उधर करते सगल घट प्रतिपाला॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 546

पतित पावन भगति वछल क्रिपा सिंध सुआमीआ॥
संतसंगे भज निसंगे रंउ सदा अंतरजामीआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ पृ. 1278

करनन पूर रहिओ जस प्रीतम कलमल दोख सगल मल हरसन॥
पावन धावन सुआमी सुख पंथा अंग संग काइआ संत सरसन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1303

चरन सरन दइआल ठाकुर आन नाही जाए॥
पतित पावन बिरद सुआमी उधरते हर धिआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1306

बिन भै भगती तरन कैसे॥
करहो अनुग्रह पतित उधारन राख सुआमी आप भरोसे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 829

1.17. स्वामी शब्द या नाम-स्वरूप है और अमृत का भंडार है

सभ मह रव रहिआ सो प्रभ अंतरजामी राम॥
गुर सबद रवै रव रहिआ सो प्रभ मेरा सुआमी राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775

अंम्रित नाम तुमारा सुआमी॥ नानक दास सदा कुरबानी॥
संतसंग महा सुख पाइआ देख दरसन इह मन भीजा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

अंम्रित नाम सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास॥
जनम जनम के किलबिख नासह आगै दरगह होए खलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208

1.18. स्वामी रसायन है

नामे के सुआमी लाहे ले झगरा॥ राम रसाइन पीओ रे दगरा॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 485-486

1.19. मीत और साजन है

किआ गुण तेरे आख समाली॥ मन तन अंतर तुध नदर निहाली॥
तूं मेरा मीत साजन मेरा सुआमी तुध बिन अवर न जानणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 132

मीत साजन सखा प्रभ एक॥ नाम सुआमी का नानक टेक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 197

1.20. भक्त-वत्सल है

जो सरण आवै तिस कंठ लावै इह बिरद सुआमी संदा॥
बिनवंत नानक हर कंत मिलिआ सदा केल करंदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 544

जन के तुम्ह हर राखे सुआमी तुम्ह जुग जुग जन रखिआ॥
कहा भइआ दैत करी बखीली सभ कर कर झर परिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1319

भगत जना का राखणहारा॥ संत जीवह जप प्रान अधारा॥
करन कारन समरथ सुआमी नानक तिस कुरबान हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1008

पतित पावन भगति वछल क्रिपा सिंध सुआमीआ॥
संतसंगे भज निसंगे रंउ सदा अंतरजामीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1278

हर के हो संत भले ते ऊतम भगत भले जो भावत हर राम मुरारी॥
जिन्ह का अंग करै मेरा सुआमी तिन्ह की नानक हर पैज सवारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1201–02

अनाथ को नाथ सरण समरथा सगल स्रिसटि को माई बाप॥
भगति वछल भै भंजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 825

जीअ जुगत वस मेरे सुआमी सरब सिध तुम कारण करण॥
आद जुगाद प्रभ रखदा आइआ हर सिमरत नानक नही डरण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 827

सरब सुखा का एक हर सुआमी सो गुर नाम दइओ॥
संत प्रहलाद की पैज जिन राखी हरनाखस नख बिदरिओ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 856

मेरे मन हर ऊपर कीजै भरवासा॥
जह जाईऐ तह नाल मेरा सुआमी हर अपनी पैज रखै जन दासा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 860

भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे॥
कोट पराध मिटे खिन भीतर जां गुरमुख नाम समारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.670

निंदक प्रभू भुलाइआ काल नेरै आइआ हर जन सिउ बाद उठरीऐ॥
नानक का राखा आप प्रभ सुआमी किआ मानस बपुरे करीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.823

जह जाईऐ तह नाल मेरा सुआमी॥ नानक कउ मिलिआ अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.197

मोख मुकत दुआर जा कै संत रिदा भंडार॥
जीअ जुगत सुजाण सुआमी सदा राखणहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1017

आद मध प्रभ अंत सुआमी अपना थाट बनाइओ आप॥
अपने सेवक की आपे राखै प्रभ मेरे को वड परताप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.825

1.21. गुरु पारब्रह्म परमेश्वर स्वामी है

सफल मूरत गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे॥
नानक गुर पारब्रहम परमेसर सदा सदा हजूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.802

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा॥
गुरदेव सखा अगिआन भंजन गुरदेव बंधिप सहोदरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.262

काम करी सब तिआग कै हउ सरण परउगी॥
नानक सुआमी गर मिले हउ गुर मनावउगी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1230

1.22. स्वामी मिठ बोलड़ा (मीठा बोलनेवाला) है

मिठ बोलड़ा जी हर सजण सुआमी मोरा॥
हउ संमल थकी जी ओह कदे न बोलै कउरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.784

1.23. जो नज़र आता है, सब स्वामी का ज़ुहूर (प्रकाश) है

जो पेखा सो सभ किछ सुआमी॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी॥
जो कीनो सो तुमह कराइओ सरण सहाई संतह तना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

1.24. स्वामी का दान अमिट है

प्रभ सुघर सरूप सुजान सुआमी ता की मिटै न दाते॥
जल संग राती माछुली नानक हर माते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 454

जो तेरै रंग राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुख नासा॥
तेरी बखस न मेटै कोई सतगुर का दिलासा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 750

2. स्वामी कहाँ है?

2.1. स्वामी सर्वव्यापक है

जो पेखा सो सभ किछ सुआमी॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी॥
जो कीनो सो तुमह कराइओ सरण सहाई संतह तना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

जब देखउ प्रभ अपुना सुआमी तउ अवरह चीत न पावउ रे॥
नानक दास प्रभ आप पहिराइआ भ्रम भउ मेट लिखावउ रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 404

जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहम सभ ठाए॥
जन कहै नानक सतगुर मिलाइआ हर पाइअड़ा घर आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 542

तू वडदाता अंतरजामी॥ सभ मह रविआ पूरन प्रभ सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 563

जह जह देखउ तह तह सुआमी कोए न पहुचनहार॥
जो जो करै अवगिआ जन की होए गइआ तत छार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683

जह देखा तह अंतरजामी॥ निमख न विसरहो प्रभ मेरे सुआमी॥
सिमर सिमर जीवह तेरे दासा बन जल पूरन थालका॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1085

जह जह देखा तह तह सुआमी॥ तू घट घट रविआ अंतरजामी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

हर आराधे जम पंथ साधे दूख न विआपै कोई॥
जल थल महीअल पूरन सुआमी जत देखा तत सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 780

दह दिस पूर रहिआ जस सुआमी कीमत कहण न जाई॥
कहो नानक सतगुर बलिहारी जिन अबिचल नीव रखाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 783

आद अंते मध तूहै प्रभ बिना नाही कोए॥
पूर रहिआ सगल मंडल एक सुआमी सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 988

मीत हमारा सोई सुआमी॥ थान थनंतर अंतरजामी॥
सिमर सिमर पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1071-72

सरबे समाणा आप सुआमी गुरमुख परगट होइआ॥
मिटिआ अधेरा दूख नाठा अमिउ हर रस चोइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 542

जल थल महीअल सुआमी सोई॥ अवर न कहीऐ दूजा कोई॥
गुर गिआन अंजन काटिओ भ्रम सगला अवर न दीसै एक बिना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

जल थल पूरन अंतरजामी॥ घट घट रविआ अछल सुआमी॥
भरम भीत खोई गुर पूरै एक रविआ सरबंगना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

बिसम पेखै बिसम सुणीऐ बिसमाद नदरी आइआ॥
जल थल महीअल पूरन सुआमी घट घट रहिआ समाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 778

गुण निधान सुख सागर सुआमी जल थल महीअल सोई॥
जन नानक प्रभ की सरणाई तिस बिन अवर न कोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 782

सुण सुआमी अरदास जन तुम्ह अंतरजामी॥
थान थनंतर रव रहे नानक के सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 819

मुसलमान का एक खुदाए॥ कबीर का सुआमी रहिआ समाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1160

थान थनंतर एको सुआमी॥ सगल घटा का अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 865

सभ मह रव रहिआ सो प्रभ अंतरजामी राम॥
गुर सबद रवै रव रहिआ सो प्रभ मेरा सुआमी राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775

हर तिस की आस कीजै मन मेरे जो सभ मह सुआमी रहिआ समाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 859

आसा मनसा सभ तेरी मेरे सुआमी
जैसी तू आस करावह तैसी को आस कराई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 859-60

सरब जोत मह जा की जोत॥ धार रहिओ सुआमी ओत पोत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 294

2.2. घट-घट वासी हाज़िरा हुज़ूर है

साजन मीत सुआमी नेरो॥
पेखत सुनत सभन कै संगे थोरै काज बुरो कह फेरो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1302

मिल मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साधसंग मिल गावए॥
नानक के सुआमी धार अनुग्रह मन तन अंक समावए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.80

जाचिक जाचै नाम तेरा सुआमी घट घट अंतर सोई रे॥
नानक दास ता की सरणाई जा ते ब्रिथा न कोई रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.209

तुम सुआमी अगम अथाह तू घट घट पूर रहिआ॥
तू अलख अभेउ अगंम गुर सतगुर बचन लहिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1114

धार अनुग्रह सुआमी मेरे॥ घट घट वसह सभन कै नेरे॥
हाथ हमारै कछूऐ नाही जिस जणाइह तिसै जणावणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1086

घट घट अंतर मेरा सुआमी वूठा॥ नानक नाम पाइआ प्रभ तूठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.563

प्रभ मेरा सुआमी अंतरजामी घट घट रविआ सोई॥
गुरमत सच पाईऐ सहज समाईऐ तिस बिन अवर न कोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.775

जल थल पूरन अंतरजामी॥ घट घट रविआ अछल सुआमी॥
भरम भीत खोई गुर पूरै एक रविआ सरबंगना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1080

इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुर पाइआ॥
घट घट हर प्रभ एको सुआमी गुरमुख अलख लखाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.772

बिसम पेखै बिसम सुणीऐ बिसमाद नदरी आइआ॥
जल थल महीअल पूरन सुआमी घट घट रहिआ समाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.778

चरन कमल धिआन भीतर घट घटह सुआमी सुझै॥
सरन देव अपार नानक बहुर जम नहीं लुझै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1122

सरबे घट घट रविआ सुआमी सरब कला कल धारे॥
नानक दासन दास कहत है कर किरपा लेहो उबारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

जग मह आइआ सो परवाण॥ घट घट अपणा सुआमी जाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

जह जह देखा तह तह सुआमी॥ तू घट घट रविआ अंतरजामी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

हमरी मुद्र नाम हर सुआमी रिद अंतर दुसट दुसटारी॥
जिउ भावै तिउ राखहो सुआमी जन नानक सरण तुम्हारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

काइआ नगर बसत हर सुआमी हर निरभउ निरवैर निरंकारा॥
हर निकट बसत कछु नदर न आवै हर लाधा गुर वीचारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 720

सिमरह पसु पंखी सभ भूता॥ सिमरह बन परबत अउधूता॥
लता बली साख सभ सिमरह रव रहिआ सुआमी सभ मना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

मन तन वसिआ सचा सोई॥ बिखड़ा थान न दिसै कोई॥
दूत दुसमण सभ सजण होए एको सुआमी आहिआ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107

किआ गुण तेरे आख समाली॥ मन तन अंतर तुध नदर निहाली॥
तूं मेरा मीत साजन मेरा सुआमी तुध बिन अवर न जानणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 132

मेरे मन सो प्रभ सदा नाल है सुआमी कहो किथै हर पहो नसीऐ॥
हर आपे बखस लए प्रभ साचा हर आप छडाए छुटीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 170

जन कै रिद अंतर प्रभ सुआमी जन हर हर नाम भजथई॥
जह अंती अउसर आए बनत है तह राखै नाम साथई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1320

2.3. सगुण निर्गुण दोनों में विद्यमान है

मैं नाही प्रभ सभ किछ तेरा॥
ईधै निरगुन ऊधै सरगुन केल करत विच सुआमी मेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.827

संकर मउलिओ जोग धिआन॥ कबीर को सुआमी सभ समान॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.1193

2.4. स्वामी भक्तजन के साथ है

सो हर मेरा अंतरजामी॥ भगत जना कै संग सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.740

2.5. उसका स्थान निश्चल धाम है

नानक की बेनंतीआ कर किरपा दीजै नाम॥
हर मेलहो सुआमी संग प्रभ जिस का निहचल धाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.133

2.6. स्वामी धाम सुंदर है, वह भक्तों के विश्राम का स्थान है

सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लग जीवते जीउ॥
मन तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हर अंम्रित पीवते जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.80-81

3. स्वामी का मिलाप किस प्रकार होता है?

3.1. नाम सिमरन द्वारा

रसना जप जप जीवै सुआमी॥ पारब्रहम प्रभ अंतरजामी॥
जिन सेविआ तिन ही सुख पाइआ सो जनम न जूऐ हारी जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.107

हर जपे हर मंदर साजिआ संत भगत गुण गावह राम॥
सिमर सिमर सुआमी प्रभ अपना सगले पाप तजावह राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.781

संत सरण साजन परहो सुआमी सिमर अनंत॥
सूके ते हरिआ थीआ नानक जप भगवंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ,पृ.927

नैणी बिरहो देखा प्रभ सुआमी रसना नाम वखानी॥
स्रवणी कीरतन सुनउ दिन राती हिरदै हर हर भानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199–1200

सिध साधिक जोगी अर जंगम एक सिध जिनी धिआइआ॥
परसत पैर सिझत ते सुआमी अखर जिन कउ आइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 878

जप मन रामै नाम हर जस ऊतम काम॥
जो गावह सुणह तेरा जस सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 669

नानक नाम निरंजन गाईऐ पाईऐ सरब निधाना॥
कर किरपा जिस दे सुआमी बिरले काहू जाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 676

3.2. श्रद्धा, भक्ति और विश्वास द्वारा

जिन कै मन साचा बिस्वास॥
पेख पेख सुआमी की सोभा आनद सदा उलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 677

बिन भै भगती तरन कैसे॥
करहो अनुग्रह पतित उधारन राख सुआमी आप भरोसे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 829

गुण बेअंत सुआमी तेरे कोए न जानई॥ देख चलत दइआल सुण भगत वखानई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

3.3. सेवा द्वारा

ओट गोविंद गोपाल राए सेवा सुआमी लाहो॥
बिखिआ पोह न सकई मिल साधू गुण गाहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 135

पूरे गुर की पूरी सेव॥ आपे आप वरतै सुआमी कारज रास कीआ गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 825

बिचरदे फिरह संसार मह हर जी हुकामी॥
करम खुला गुर पाइआ हर मिलिआ सुआमी॥
जो जन हर का सेवको हर तिस की कामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1099

सफल सेवा सुआमी मेरे की मन बांछत फल पावहो॥
कहो नानक लाभ लाहा लै चालहो सुख सेती घर जावहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1218

3.4. सत्संग और साध-संगति से

दातार सदा दइआल सुआमी काए मनहो विसारीऐ॥
मिल साधसंगे भज निसंगे कुल समूहा तारीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 461

जिन कउ दइआल होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी॥
नानक पतित पवित मिल संगत गुर सतगुर पाछै छुकटी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

खोजत खोजत मारग पाइओ साधू सेव करीजै॥
धार अनुग्रह सुआमी मेरे नाम महा रस पीजै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1269

करै अनुग्रह सुआमी मेरा साध चरन चित लाईऐ॥
संकट घोर कटे खिन भीतर नानक हर दरस समाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 532

सद ही निकट जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होए रहीऐ॥
साधू संगत होए परापत ता प्रभ अपुना लहीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 713

फिरत फिरत बहुत स्रम पाइओ संत दुआरै आइओ॥
करी क्रिपा पारब्रहम सुआमी नानक लीओ समाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 531

तेरिआ संत जना की बाछउ धूर॥ जप नानक सुआमी सद हजूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1183

इन ते काढ लेहो मेरे सुआमी हार परे तुम्ह सारन॥
नानक की बेनंती प्रभ पह साधसंग रंक तारन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 820

साधू संग परापत जा कउ तिन ही पाइआ एह निधान॥
गावउ गुण कीरतन नित सुआमी कर किरपा नानक दीजै दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 827

मिले संत पिआरे दइआ धारे कथह अकथ बीचारो॥
इक चित इक मन धिआए सुआमी लाए प्रीत पिआरो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 845

संत सरण साजन परहो सुआमी सिमर अनंत॥
सूके ते हरिआ थीआ नानक जप भगवंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 927

अंम्रित नाम तुमारा सुआमी॥ नानक दास सदा कुरबानी॥
संतसंग महा सुख पाइआ देख दरसन इह मन भीजा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

जो पेखा सो सभ किछ सुआमी॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी॥
जो कीनो सो तुमह कराइओ सरण सहाई संतह तना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

आनंद अनदिन वजह वाजे अहं मत मन की तिआगी॥
बिनवंत नानक सरण सुआमी संतसंग लिव लागी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 846

अंतर का अभिमान जोर तू किछ किछ किछ जानता
इह दूर करहो आपन गहो रे॥
जन नानक कउ हर दइआल होहो सुआमी हर संतन की धूर करं हरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1119

बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर नह कोऊ बैराई॥
सुआमी सुप्रसंन भए जनम मरन दोख गए
संतन कै चरन लाग नानक गुन गाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1230

हर सिउ जाए मिलणा साधसंग रहणा सो सुख अंक न मावै॥
होहो क्रिपाल नानक के सुआमी हर चरनह संग समावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1122

हर उसतत धारहो रिद अंतर सुआमी सतसंगत मिल बुध लंञ॥
हर नामै हम प्रीत लगानी हम हर विटहो घुम वंञ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1179

एक निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोट दिनस लख बरीआ॥
साधसंगत की भीर जउ पाई तउ नानक हर संग मिरीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1209

साधसंगम भज सुआमी पाप होवत खार॥
चरनारबिंद बसाए हिरदै बहुर जनम न मार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1228

इह मन होआ साध धूर॥ नित देखै सुआमी हजूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1184

3.5. सतगुरु द्वारा

भए क्रिपाल सुआमी मेरे जीउ॥ पतित पवित लग गुर के पैरे जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 216-17

सगली रैण सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे॥
जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहे तुम सर अवर न लागे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 527

उर धार बीचार मुरार रमो रम मनमोहन नाम जपीने॥
अद्रिसट अगोचर अपरंपर सुआमी गुर पूरै प्रगट कर दीने॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 668

आपणे भाणे विच सदा रख सुआमी हर नामो देह वडिआई॥
पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिन सहज समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

जनम मरन काटे गुर बचनी बहुड़ न संकट दुआरा॥
नानक सरन गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

दह दिस पूर रहिआ जस सुआमी कीमत कहण न जाई॥
कहो नानक सतगुर बलिहारी जिन अबिचल नीव रखाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 783

प्रभ मेरा सुआमी अंतरजामी घट घट रविआ सोई॥
गुरमत सच पाईऐ सहज समाईऐ तिस बिन अवर न कोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775

जन नानक कै वल होआ मेरा सुआमी हर सजण पुरख सुजान॥
पउदी भित देख कै सभ आए पए सतगुर की पैरी
लाहिओन सभना किअहो मनहो गुमान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 854

सतगुर मिलिऐ मारग मुकता सहजे मिले सुआमी॥
धन धन से जन जिनी कल मह हर पाइआ जन नानक सद कुरबानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 883

जल थल पूरन अंतरजामी॥ घट घट रविआ अछल सुआमी॥
भरम भीत खोई गुर पूरै एक रविआ सरबंगना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

तुम सुआमी अगम अथाह तू घट घट पूर रहिआ॥
तू अलख अभेउ अगंम गुर सतगुर बचन लहिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1114

हर हर चरन रिदै उर धारे॥
सिमर सुआमी सतगुर अपुना कारज सफल हमारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 718

प्रभ आप सुआमी आपे रखा आप पिता आप माइआ॥
कहो नानक सतगुर बलिहारी जिन एह थान सुहाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.783

तू हमरो हम तुमरे कहीऐ इत उत तुम ही राखे॥
तू बेअंत अपरंपर सुआमी गुर किरपा कोई लाखै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1228

मेरा ठाकुर वडा वडा है सुआमी हम किउ कर मिलह मिलीजै॥
नानक मेल मिलाए गुर पूरा जन कउ पूरन दीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1324

3.6. स्वामी दयाल हो तभी गुरु शिष्य को गुरु-उपदेश सुनाता है

जिस नो दइआल होवै मेरा सुआमी तिस गुरसिख गुरू उपदेस सुणावै॥
जन नानक धूड़ मंगै तिस गुरसिख की जो आप जपै अवरह नाम जपावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.306

3.7. मन को वश में करने से

बोलै खेलै असथिर होवै किउ कर अलख लखाए॥
सुण सुआमी सच नानक प्रणवै अपणे मन समझाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.944

आवण जाणा बहुड़ न होवै गुरमुख सहज धिआइआ॥
मन ही ते मन मिलिआ सुआमी मन ही मंन समाइआ॥
साचे ही सच साच पतीजै विचहो आप गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1259

3.8. जो तीनों (त्रिलोकी) को सहारता है वह स्वामी है

जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिग त्रिसना भरिआ॥
नामे चे सुआमी बीठलो जिन तीनै जरिआ॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ.525

3.9. कर्मकांड से स्वामी नहीं मिलता

पाठ पड़िओ अर बेद बीचारिओ निवल भुअंगम साधे॥
पंच जना सिउ संग न छुटकिओ अधिक अहंबुध बाधे॥

पिआरे इन बिधि मिलण न जाई मै कीए करम अनेका॥
हार परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुध बिबेका॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 641

अठसठ तीरथ पुंन किरिआ महा निरमल चारा॥
पतित पावन बिरद सुआमी नानक सबद अधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ पृ. 784

पूजा वरत तिलक इसनाना पुंन दान बहु दैन॥
कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलह मीठे बैन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 674

3.10. स्वामी का मिलाप गुरुमुख को ही होता है

सरबे समाणा आप सुआमी गुरमुख परगट होइआ॥
मिटिआ अधेरा दूख नाठा अमिउ हर रस चोइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 542

जा बहहे गुरमुख हर नाम बोलह जा खड़े गुरमुख हर हर कहिआ॥
तुम सुआमी अगम अथाह तू घट घट पूर रहिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1114

इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुर पाइआ॥
घट घट हर प्रभ एको सुआमी गुरमुख अलख लखाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 772

आवण जाणा बहुड़ न होवै गुरमुख सहज धिआइआ॥
मन ही ते मन मिलिआ सुआमी मन ही मंन समाइआ॥
साचे ही सच साच पतीजै विचहो आप गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

3.11. स्वामी की अपनी दया से किसी बिरले बड़भागी को उसका मिलाप होता है और भक्ति का भंडार प्राप्त होता है

प्रेम भगति जिस कै मन लागी॥ गुण गावै अनदिन नित जागी॥
बाह पकड़ तिस सुआमी मेलै जिस कै मसतक लहणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 109

जिन कउ धुर हर लिखिआ सुआमी तिन हर हर नाम अराधिआ॥
तिन के पाप इक निमख सभ लाथे जिन गुर बचनी हर जापिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1115

हर निकट वसै जगजीवना परगास कीओ गुर मीत॥
हर सुआमी हर प्रभ तिन मिले जिन लिखिआ धुर हर प्रीत॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1316-1317

तेरी भगति भंडार असंख जिस तू देवह मेरे सुआमी तिस मिलह॥
जिस कै मसतक गुर हाथ तिस हिरदै हर गुण टिकह॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1115

स्रुत सिम्रिति गुन गावह करते सिध साधिक मुनि जन धिआइआ॥
नानक सरन क्रिपा निध सुआमी वडभागी हर हर गाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.785

नानक नाम निरंजन गाईऐ पाईऐ सरब निधाना॥
कर किरपा जिस दे सुआमी बिरले काहू जाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.676

करी नदर सुआमी सुखह गामी हलत पलत सवारिआ॥
बिनवंत नानक नित नाम जपीऐ जीउ पिंड जिन धारिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.782

जिन कउ तुम्ह हर मेलहो सुआमी ते न्हाए संतोख गुर सरा॥
दुरमत मैल गई हर भजिआ जन नानक पार परा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.799

जिउ तू चलाइह तिव चलह सुआमी होर किआ जाणा गुण तेरे॥
जिव तू चलाइह तिवै चलह जिना मारग पावहे॥
कर किरपा जिन नाम लाइह से हर हर सदा धिआवहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.919

हर हर भगति भरे भंडारा॥ गुरमुख राम करे निसतारा॥
जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी सो हर के गुण गावै जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.997

नवे छिद्र स्रवह अपवित्रा॥ बोल हर नाम पवित्र सभ किता॥
जे हर सुप्रसंन होवै मेरा सुआमी हर सिमरत मल लह जावै जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 998

भउ भाउ प्रीत नानक तिसह लागै जिस तू आपणी किरपा करह॥
तेरी भगति भंडार असंख जिस तू देवह मेरे सुआमी तिस मिलह॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1116

ता कै हिरदै बसिओ नाम॥ जा कउ सुआमी कीनो दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

जो किछ करे सो आपे सुआमी हर आपे कार कमावै॥
हर आपे ही मत देवै सुआमी हर आपे बोल बुलावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 719-20

जिन कउ क्रिपा कीनी मेरै सुआमी तिन अनदिन हर गुण गाए॥
सुण मन भीने सहज सुभाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 768

जिस आपे किरपा करे मेरा सुआमी तिस जन कउ हर लिव लावीऐ रे॥
सभ को भगति करे हर केरी हर भावै सो थाए पावीऐ रे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1118

जा कउ राख ले मेरा सुआमी ता कउ सुमत दे पै कानै॥
ता कउ कोई अपर न साकै जा की भगति मेरा प्रभ मानै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1320

तज मान मोह बिकार साधू लग तरउ तिन कै पाए॥
बिनवंत नानक सरण सुआमी बडभाग दरसन पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1312

4. यह सब कुछ स्वामी की लीला है

हम जंत विचारे किआ करह सभ खेल तुम सुआमी॥
जन नानक हाट विहाझिआ हर गुलम गुलामी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 167-68

तूं समरथ तूं है मेरा सुआमी॥ सभ किछ तुम ते तूं अंतरजामी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.193

जिन किछ कीआ सोई जानै जिन इह सभ विधि साजी॥
कहो नानक अपरंपर सुआमी कीमत अपुने काजी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.206

जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरण तुमारी अही॥
खिन मह थाप उथापनहारे कुदरत कीम न पही॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.529

पूरन बिसथीरन सुआमी आहे आइओ पाछै॥
सगलो भू मंडल खंडल प्रभ तुम ही आछै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1005-06

इह परपंच कीआ प्रभ सुआमी सभ जगजीवन जुगणे॥
जिउ सललै सलल उठह बहु लहरी मिल सललै सलल समणे॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.977

5. स्वामी के दर्शन और नाम के सिमरन के फल

5.1. उसके सिमरन से ज़िंदगी (आत्मिक जीवन) मिलती है

लाल गोपाल दइआल रंगीले॥ गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे॥
ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमर सिमर हउ जीवां जीउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.99

रसना जप जप जीवै सुआमी॥ पारब्रहम प्रभ अंतरजामी॥
जिन सेविआ तिन ही सुख पाइआ सो जनम न जूऐ हारी जीउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.107

सुण सुण जीवा सोए तुमारी॥ सदा सदा जाई बलिहारी॥
दुए कर जोड़ सिमरउ दिन राती मेरे सुआमी अगम अपारणा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1077

5.2. तन और मन अनुरक्त होता है

रसना अराधै एक सुआमी हर नाम मन तन भीना॥
नानक जिस नो हर मिलाए सो सरब गुण परबीना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 548

5.3. मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं

सिमर सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ॥
पुरबे कमाए स्रीरंग पाए हर मिले चिरी बिछुंनिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 79-80

जनम जनम के किलबिख जावह॥ मन चिंदे सेई फल पावह॥
सिमर साहिब सो सच सुआमी रिजक सभस कउ दीए जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 104

मेरे मन नाम लए जम बंध ते छूटह सरब सुखा सुख पाईऐ॥
सेव सुआमी सतगुर दाता मन बंछत फल आईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 213

सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एक निधाना॥
पारब्रहम अपरंपर सुआमी सिमरत पार पराना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 672

मिले सुआमी इछ पुंनी मन जपिआ निरमल मंत जीउ॥
बिनवंत नानक नित करहो रलीआ हर मिले स्रीधर कंत जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 929

हर मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिन हर लिव लाई॥
मन चिंदिआ फल पाइआ सुआमी हर नाम वजी वाधाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 774

जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिस बारिक भूख कैसी॥
नव निध नाम निधान ग्रिह तेरै मन बांछै सो लैसी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1266

प्रभ मिले सुआमी सुखहगामी इछ मन की पुंनीआ॥
बजी बधाई सहजे समाई बहुड़ दूख न रुंनीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1312

5.4. आनंद, सुख और शांति की प्राप्त होती है और दु:ख और चिंता का नाश होता है

तुम समरथ पुरख वडे प्रभ सुआमी मो कउ कीजै दान हर निमघा॥
जन नानक नाम मिलै सुख पावै हम नाम विटहो सद घुमघा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 731

मेरा प्रभ संगे अंतरजामी॥ आगै कुसल पाछै खेम सूखा सिमरत नाम सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1222-1223

जिन कै हिरदै तू सुआमी ते सुख फल पावह
ते तरे भव सिंध ते भगत हर जान॥
तिन सेवा हम लाए हरे हम लाए हरे जन नानक के हर तू तू तू तू तू भगवान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहन कत बारो॥
जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेख दरस सुआमी सुख सारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 829

अनद मंगल कलिआण निधाना॥ सूख सहज हर नाम वखाना॥
होए क्रिपाल सुआमी अपना नाउ नानक घर मह आइआ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 104

जिन कै मन साचा बिस्वास॥
पेख पेख सुआमी की सोभा आनद सदा उलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 677

हर हरा सुआमी सुखह गामी अनद मंगल रस घणा॥
नवल नवतन नाह बाला कवन रसना गुन भणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 847

सरब सुखा का एक हर सुआमी सो गुर नाम दइओ॥
संत प्रहलाद की पैज जिन राखी हरनाखस नख बिदरिओ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 856

आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुण निध पिआरिआ॥
महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1278

हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवह देख हर मिले॥
जन नानक हर अमल हर लाए हर मेलहो अनद भले॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 975

सिमरत सुआमी किलविख नासे॥ सूख सहज आनंद निवासे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 194

पारब्रहम परमेसुर सुआमी दूख निवारण नाराइणे॥
सगल भगत जाचह सुख सागर भव निध तरण हर चिंतामणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1321

अपुने जीअ जंत प्रतिपारे॥ जिउ बारिक माता संमारे॥
दुख भंजन सुख सागर सुआमी देत सगल आहारे जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 105

कोट पतित उधारे खिन मह करते बार न लागै रे॥
दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिस भावै तिसह निवाजै रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

जा का हर सुआमी प्रभ बेली॥ पीड़ गई फिर नही दुहेली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 378-379

जा कउ टेक तुम्हारी सुआमी ता कउ नाही चिंता॥
जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवंता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 380

मीत हमारा सोई सुआमी॥ थान थनंतर अंतरजामी॥
सिमर सिमर पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1071-72

मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे॥
पारब्रहम जिन्ह रिदै अराधिआ ता कै संग तरउ रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 383

उसतत करह सेवक मुनि केते तेरा अंत न कतहू पाईऐ॥
सुखदाते दुख भंजन सुआमी ज़न नानक सद बल जाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै॥
बिनवंत नानक तरै सागर धिआए सुआमी नरहरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

जिस के सिर ऊपर तूं सुआमी सो दुख कैसा पावै॥
बोल न जाणै माइआ मद माता मरणा चीत न आवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

सिमर सिमर सुआमी प्रभ अपना सीतल तन मन छाती॥
रूप रंग सूख धन जीअ का पारब्रहम मोरै जाती॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 681

अंतरजामी पुरख सुआमी अनबोलत ही जानहो हाल॥
तन मन सीतल होए हमारो नानक प्रभ जीउ नदर निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 828

सिव बिरंच अर इंद्र लोक ता मह जलतौ फिरिआ॥
सिमर सिमर सुआमी भए सीतल दूख दरद भ्रम हिरिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1219

मेरे मन हर सेविहो सुखदाता सुआमी जिस सेविऐ सभ भुख लहासा॥...
अपनी बिरथा कहहो हर अपुने सुआमी पह जो तुमरे दूख ततकाल कटासा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 860

सांत सहज आनंद घनेरे बिनसी भूख सबाई॥
नानक गुण गावह सुआमी के अचरज जिस वडिआई राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 784

आसा मनसा सभ तेरी मेरे सुआमी जैसी तू आस करावह तैसी को आस कराई॥
किछ किसी कै हथ नाही मेरे सुआमी ऐसी मेरै सतगुर बूझ बुझाई॥
जन नानक की आस तू जाणह हर दरसन देख हर दरसन त्रिपताई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 859–860

5.5. जन्म सफल होता है

रसना जप जप जीवै सुआमी॥ पारब्रहम प्रभ अंतरजामी॥
जिन सेविआ तिन ही सुख पाइआ सो जनम न जूऐ हारी जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107

करन करावनहार सुआमी॥ सगल घटा के अंतरजामी॥
कर किरपा जिस भगती लावहो जनम पदारथ सो जिना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

अगम अगोचर बिअंत सुआमी ता का अंत न पाईऐ॥
लाहा खाट होईऐ धनवंता अपुना प्रभू धिआईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1338–39

नित भजहो सुआमी अंतरजामी सफल जनम सबाइआ॥
गोबिद गाईऐ नित धिआईऐ परवाण सोई आइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1312

5.6. संकट, भ्रम, भय सब प्रकार के मैल, पंच-दुष्ट और हौमैं आदि विकारों के रोग मिट जाते हैं

करै अनुग्रह सुआमी मेरा साध चरन चित लाईऐ॥
संकट घोर कटे खिन भीतर नानक हर दरस समाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 532

प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी जीउ पिंड सभ तुमरा माल॥
भ्रम के बंधन काटहो परमेसर नानक के प्रभ सदा क्रिपाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 806

रे गुन हीन दीन माइआ क्रिम सिमर सुआमी एक घरी॥
कर गह लेहो क्रिपाल क्रिपा निध नानक काट भरंम भरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1387

अंगीकार कीओ मेरे सुआमी भ्रम भउ मेट सुखाइओ॥
महा अनंद करहो दास हर के नानक बिस्वास मन आइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1270

बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर नह कोऊ बैराई॥
सुआमी सुप्रसंन भए जनम मरन दोख गए
संतन कै चरन लाग नानक गुन गाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1230

जिस कै सुआमी वल निरभउ सो भई॥
जिस नो तू किरपाल सचा सो थिअई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

कुल समूह उधरे खिन भीतर जनम जनम की मल लाही॥
सिमर सिमर सुआमी प्रभ अपना अनद सेती बिखिआ बन गाही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 824

रसना गुण गावै हर तेरे॥ मिटह कमाते अवगुण मेरे॥
सिमर सिमर सुआमी मन जीवै पंच दूत तज तंगना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

सुआमी अभै निरंजन नरहरि तुम्ह राख लेहो हम पापी पाथ॥
काम क्रोध बिखिआ लोभ लुभते कासट लोह तरे संग साथ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1296

खिन किंचित क्रिपा करी जगदीसर तब हर हर हर जस धिआइओ॥
जन नानक कउ हर भेटे सुआमी दुख हउमै रोग गवाइओ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 719

आनंद अनदिन वजह वाजे अहं मत मन की तिआगी॥
बिनवंत नानक सरण सुआमी संतसंग लिव लागी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 846

हम हर सुआमी प्रीत लगाई जितने सास लीए हम ग्रास॥
किलबिख दहन भए खिन अंतर तूट गए माइआ के फास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1295

ले कंठ लाए सुख दिखाए बिकार बिनसे मंदा॥
बिनवंत नानक मिले सुआमी पुरख परमानंदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1312

5.7. पापों का नाश होता है

जो गावह सुणह तेरा जस सुआमी तिन काटे पाप कटोना॥
तुम जैसे हर पुरख जाने मत गुरमत मुख वड वड भाग वडोना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1315

साधसंगम भज सुआमी पाप होवत खार॥
चरनारबिंद बसाए हिरदै बहुर जनम न मार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1228

जिन कउ तुम हर राखहो सुआमी सभ तिन के पाप क्रिखे॥
जन नानक के दइआल प्रभ सुआमी तुम दुसट तारे हरणखे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 976

जिन कउ धुर हर लिखिआ सुआमी तिन हर हर नाम अराधिआ॥
तिन के पाप इक निमख सभ लाथे जिन गुर बचनी हर जापिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1115

दूख बिसारणहार सुआमी कीता जा का होवै॥
कोट कोटंतर पापा केरे एक घड़ी मह खोवै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 438

हर जपे हर मंदर साजिआ संत भगत गुण गावह राम॥
सिमर सिमर सुआमी प्रभ अपना सगले पाप तजावह राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 781

ऊच अपार बेअंत सुआमी कउण जाणै गुण तेरे॥
गावते उधरह सुणते उधरह बिनसह पाप घनेरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 802

जनम जनम के किलबिख जावह॥ मन चिंदे सेई फल पावह॥
सिमर साहिब सो सच सुआमी रिजक सभस कउ दीए जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 104

अंम्रित नाम सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास॥
जनम जनम के किलबिख नासह आगै दरगह होए खलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208

स्वामी सरन परिओ दरबारे॥
कोट अपराध खंडन के दाते तुझ बिन कउन उधारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 714

5.8. यम पास नहीं आता, सब लेखा (कर्मों का हिसाब) छूट जाता है

सिमर सिमर सुआमी प्रभ अपुना निकट न आवै जाम॥
मुकत बैकुंठ साध की संगत जन पाइओ हर का धाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682

हर आराधे जम पंथ साधे दूख न विआपै कोई॥
जल थल महीअल पूरन सुआमी जत देखा तत सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 780

जिन कउ तू हर मेलह सुआमी सभ तिन का लेखा छुटक गइआ॥
तिन की गणत न करिअहो को भाई जो गुर बचनी हर मेल लइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1115

हर हर नाम अमोलक हर पह हर देवै ता नाम धिआवीऐ रे॥
जिस नो नाम दे मेरा सुआमी तिस लेखा सभ छडावीऐ रे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1118

5.9. दर्शन से प्रकाश होता है और कमल खिलता है

भ्रम खोइओ सांत सहज सुआमी परगास भइआ कउल खिलिआ॥
वर पाइआ प्रभ अंतरजामी नानक सोहाग न टलिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 249

5.10. जीव का उद्धार होता है और संसार सागर से पार हो जाता है

प्रभ पूर रहिआ सरब ठाई हर नाम नव निध ग्रिह भरे॥
सिमर सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभ तरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 928

जिस कउ होत क्रिपाल सुआमी॥ सो जन नानक पारगरामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1005

हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हर देहो मती जस करा॥
तुम्हरै संग लगे से उधरे जिउ संग कासट लोह तरा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 799

हर चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हर हरे॥
सागर संसार भव उतार नाम सिमरत बह तरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 456

जिन कउ तुम्ह हर मेलहो सुआमी ते न्हाए संतोख गुर सरा॥
दुरमत मैल गई हर भजिआ जन नानक पार परा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 799

महा बिकार घोर दुख सागर तिस मह प्राणी गलत पइआ॥
सरन परे नानक सुआमी की बाह पकर प्रभ काढ लइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 826

5.11. मुक्ति की प्राप्ति, जन्म-मरण दूर होता है

भुगत मुकत का कारन सुआमी मूड़ ताहे बिसरावै॥
जन नानक कोटन मै कोऊ भजन राम को पावै॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 219

मोख मुकत दुआर जा कै संत रिदा भंडार॥
जीअ जुगत सुजाण सुआमी सदा राखणहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1017

तिन मत ऊतम तिन पत ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी॥
तिन की सेवा लाए हर सुआमी तिन सिमरत गति होए हमारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1135

कहत मुकत सुनते निसतारे जो जो सरन पइओ॥
सिमर सिमर सुआमी प्रभ अपुना कहो नानक अनद भइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 979

आद अंत दइआल पूरन तिस बिना नही कोए॥
जनम मरण निवार हर जप सिमर सुआमी सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.675

जो तेरै रंग राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुख नासा॥
तेरी बखस न मेटै कोई सतगुर का दिलासा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.750

5.12. सहज अवस्था की प्राप्ति होती है

अनद मंगल कलिआण निधाना॥ सूख सहज हर नाम वखाना॥
होए क्रिपाल सुआमी अपना नाउ नानक घर मह आइआ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.104

भ्रम खोइओ सांत सहज सुआमी परगास भइआ कउल खिलिआ॥
वर पाइआ प्रभ अंतरजामी नानक सोहाग न टलिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.249

सुभ दिवस आए सहज पाए सगल निध प्रभ पागे॥
बिनवंत नानक सरण सुआमी सदा हर जन तागे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.459

5.13. दरगाह में मान और सारे युगों में प्रतिष्ठा होती है

सो कुलवंता जे सिमरै सुआमी॥ सो पतिवंता जे आप पछानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1150

सुणी अरदास सुआमी मेरै सरब कला बण आई॥
प्रगट भई सगले जुग अंतर गुर नानक की वडिआई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.611

अंम्रित नाम सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास॥
जनम जनम के किलबिख नासह आगै दरगह होए खलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1208

तेरा थान सुहावा रूप सुहावा तेरे भगत सोहहे दरबारे॥
सरब जीआ के दाते सुआमी कर किरपा लेहो उबारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.670

जा ते बिरथा कोऊ नाही॥ आठ पहर हर रख मन माही॥
साधसंग भज अचुत सुआमी दरगह सोभा पावणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1085–86

5.14. जो स्वामी को भाते हैं वे उत्तम हैं

तू सभना का सभ को तेरा॥ साचे साहिब गहिर गंभीरा॥
कहो नानक सेई जन ऊतम जो भावह सुआमी तुम मना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079–80

6. युग-युग में भक्त स्वामी के गुण गाते हैं

जुगह जुगंतर भगत तुमारे॥ कीरत करह सुआमी तेरै दुआरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 567

7. संतों को केवल स्वामी की टेक व आसरा है

दरबवंत दरब देख गरबै भूमवंत अभिमानी॥
राजा जानै सगल राज हमरा तिउ हर जन टेक सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

स्रवणी सुणउ बिमल जस सुआमी॥ एका ओट तजउ बिख कामी॥
निव निव पाए लगउ दास तेरे कर सुक्रित नाही संगना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई॥
कहो नानक संत हर राखे निंदक दीए रुड़ाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 381

स्रवणी कीरतन सिमरन सुआमी इह साध को आचार॥
चरन कमल असथित रिद अंतर पूजा प्रान को आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1222

8. स्वामी विहीन के दोष

8.1. विरह का एक पल वर्षों के दु:ख के बराबर होता है

एक निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोट दिनस लख बरीआ॥
साधसंगत की भीर जउ पाई तउ नानक हर संग मिरीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1209

हर जीउ तुध नो सदा सालाही पिआरे जिचर घट अंतर है सासा॥
इक पल खिन विसरह तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

8.2. यम का भय होता है और सारे सज्जन यम के समान नज़र आते हैं

स्रब सीगार तंबोल रस सण देही सभ खाम॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभ जाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 133

निंदक प्रभू भुलाइआ काल नेरै आइआ हर जन सिउ वाद उठरीऐ॥
नानक का राखा आप प्रभ सुआमी किआ मानस बपुरे करीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 823

8.3. दु:ख, कलेश, अंत समय दुर्गति और मरण-समान हालत हो जाती है

सरब दूख जब बिसरह सुआमी॥ ईहा ऊहा काम न प्रानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 394

जिन कै हिरदै नाहे हर सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी॥
जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओह हर दरगह है भ्रसटी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

किरपन तन मन किलविख भरे॥
साधसंग भजन कर सुआमी ढाकन कउ इक हरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 714

हम तेरी धर सुआमीआ मेरे तू किउ मनहो बिसारे॥
इसत्री रूप चेरी की निआई सोभ नही बिन भरतारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1267-68

गुण गावा नित नित सद हर के मन जीवै नाम सुण तेरा॥
नानक जित वेला विसरै मेरा सुआमी तित वेलै मर जाए जीउ मेरा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 562

8.4. जन्म-मरण का चक्कर बना रहता है

होहो क्रिपाल सुआमी मेरे संतां संग विहावे॥
तुधहो भुले से जम जम मरदे तिन कदे न चुकन हावे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

8.5. जन्म व्यर्थ जाता है

टूटी निंदक की अध बीच॥
जन का राखा आप सुआमी बेमुख कउ आए पहूची मीच॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1224

तिआग सुआमी आन कउ चितवत मूड़ मुगध खल खर ते॥
कागर नाव लंघह कत सागर ब्रिथा कथत हम तरते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1267

हरि राए

हरि राए का वर्णन गुरवाणी में बार-बार आया है। हरि के अर्थ यहाँ किसी अवतार या देवता से नहीं हैं। हरि और स्वामी यहाँ कुलमालिक अनामी-पुरुष को ही कहा है। जिस प्रकार एकंकार के प्रकरण में बताया गया है कि स्वामी एकंकार के द्वारा सारी रचना का प्रसार कर रहा है उसी प्रकार इस प्रसंग में भी प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया गया है कि हरि राए, स्वामी और अनामी पुरुष में भेद नहीं और एकंकार की वंदना करके हरि राए की शरण में जाना चाहिए:

एकम एकंकार प्रभ करउ बंदना धिआए॥
गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरन परउ हर राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

वह अमृत-भंडार, अगम, अपार, पतित-पावन, भक्त-वत्सल, दीनदयाल और घट-घट का अंतर्यामी है। वह संतों का मोक्ष-द्वार है और उसका धाम ही परम पद निजधाम है। उसके असंख्य नाम हैं, पर किसी नाम द्वारा उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता और ये नाम उसकी महिमा को बयान करने के लिए काफ़ी नहीं:

हर के नाम असंख अगम हहे अगम अगम हर राइआ॥
गुणी गिआनी सुरत बहु कीनी इक तिल नही कीमत पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1319

इसी लिए उसे अनामी-पुरुष भी कहते हैं:

बनामे-ऊ किह् ऊ नामे नदारद, बहर नामे किह् ख़्वानी सर बर आरद।

मौलाना रूम

अर्थात् मैं उस अनामी पुरुष के पवित्र नाम से शुरू करता हूँ जिसका कि कोई नाम नहीं, जिस नाम से उसे पुकारो, वह हुँकारा भरता है।

सब ओर उसी का हुक्म चल रहा है, जिसे कोई मिटा नहीं सकता, वह सबकी सँभाल कर रहा है। उसकी प्राप्ति किसी बिरले बड़भागी को होती है और गुरुमुख ही उसके दर्शन पा सकता है, मनमुख नहीं।

हरि राए से मिलाप सेवा, सत्संग और गुरु के द्वारा और उसकी अपनी दया से ही होता है।

हरि राए की प्राप्ति द्वारा अंतर में ज्योति का प्रकाश हो जाता है, मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, सुख व आनंद मिलता है और जन्म-मरण से सदा के लिए छुटकारा हो जाता है।

इन पृष्ठों में आदि ग्रन्थ से इसके प्रमाण दिए गए हैं। अधिक विवरण 'स्वामी' के प्रकरण में पूरी तरह स्पष्ट रूप में दिया गया है।

गुरवाणी

1. हरि राए के लक्षण

1.1. सब कुछ उसी के हुक्म से होता है और वह अमिट है

धुर हर प्रभ करतै लिखिआ सो मेटणा न जाए॥
जीउ पिंड सभ तिस दा प्रतिपाल करे हर राए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1417

1.2. वह अमृत-भंडार है, अगम, अपार, पतित-पावन, भक्त-वत्सल, दीन-दयाल, घट-घट की जाननेवाला है

सावण वरस अंम्रित जग छाइआ जीउ॥ मन मोर कुहुकिअड़ा सबद मुख पाइआ॥
हर अंम्रित वुठड़ा मिलिआ हर राइआ जीउ॥ जन नानक प्रेम रतंना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 173

पपा परमित पार न पाइआ॥ पतित पावन अगम हर राइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 258

अनिक माइआ जा की लखी न जाए॥ अनिक कला खेलै हर राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1236

हर के नाम असंख अगम हहे अगम अगम हर राइआ॥
गुणी गिआनी सुरत बहु कीनी इक तिल नही कीमत पाइआ॥...

उसतत करह तुमरी जन माधौ गुन गावह हर राइआ॥
तुम्ह जल निध हम मीने तुमरे तेरा अंत न कतहू पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1319

जो जो सरण पइआ हर राए॥ सो दास रखिआ अपणै कंठ लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 868

किलविख काटण भै हरण सुख सागर हर राए॥
दीन दइआल दुख भंजनो नानक नीत धिआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 927

मेरा अंतरजामी हर राइआ॥
सभ किछ जाणै मेरे जीअ का प्रीतम बिसर गए बकबाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1003

1.3. उसके नाम असंख्य हैं, पर इन नामों द्वारा उसकी गम्यता कोई नहीं पा सका, गुणी-ज्ञानी भी विचार द्वारा उसे तिल-मात्र भी नहीं जान सके

हर के नाम असंख अगम हहे अगम अगम हर राइआ॥
गुणी गिआनी सुरत बहु कीनी इक तिल नही कीमत पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1319

2. हरि राए से मिलाप कैसे होता है?

2.1. उसका भक्तों से मिलाप उसकी अपनी दया से ही होता है

आपस कउ आप मिलाइआ॥ भ्रम भंजन हर राइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1278

जितने भगत हर सेवका मुख अठसठ तीरथ तिन तिलक कढाए॥
जन नानक तिन कउ अनदिन परसे जे क्रिपा करे हर राए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 733

2.2. एकंकार की वंदना करके हरि राए की शरण जाना चाहिए

एकम एकंकार प्रभ करउ बंदना धिआए॥
गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरन परउ हर राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

2.3. शरण और सेवा सत्संग और गुरु द्वारा मिलती है

जप तप संजम धरम न कमाइआ॥ सेवा साध न जानिआ हर राइआ॥
कहो नानक हम नीच करंमा॥ सरण परे की राखहो सरमा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 12

अटल बचन साधू जना सभ मह प्रगटाइआ॥
जिस जन होआ साधसंग तिस भेटै हर राइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 812

गुणदाता हर राए है हम अवगणिआरे॥ पापी पाथर डूबदे गुरमत हर तारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

हर राइआ मेरा सजण पिआरा गुर मेले मेरा मन जीवाईआ जीउ॥
मेरै मन तन आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हर मिलिआ मन वाधाईआ जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 174

कहो नानक जो गुर बखस मिलाइआ॥
तिस का सभ किछ जिस का हर राइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

साजन मीत सखा हर मेरै गुन गोपाल हर राइआ॥
बिसर न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1223

तू प्रभ हम सरणागती मो कउ मेल लैहो हर राए॥
हर धार क्रिपा जगजीवना गुर सतगुर की सरणाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 996

2.4. किसी बिरले बड़भागी या गुरुमुख को प्राप्त होता है

वडभागीआ सोहागणी जिन्हा गुरमुख मिलिआ हर राए॥
अंतर जोत परगासीआ नानक नाम समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1421

3. हरि राए की शरण और उसकी प्राप्ति के फल

3.1. सुख और आनंद की प्राप्ति

प्रभ विण दूजा को नही नानक हर सरणाए॥
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हर राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 135

राम रवत सद ही सुख पाइआ॥ मइआ करी पूरन हर राइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 200–201

दुख भंजन जगजीवन हर राइआ॥ सगल तिआग नानक सरणाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 741

मेरा घर बनिआ बन ताल बनिआ प्रभ परसे हर राइआ राम॥
मेरा मन सोहिआ मीत साजन सरसे गुण मंगल हर गाइआ राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 782

किलविख काटण भै हरण सुख सागर हर राए॥
दीन दइआल दुख भंजनो नानक नीत धिआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 927

3.2. मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं

सेज सुहावी सरब सुख हुण दुखा नाही जाए॥
इछ पुनी वडभागणी वर पाइआ हर राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 136

आप तजहो गोबिंद भजहो सरन परहो हर राए॥
दूख हरै भवजल तरै मन चिंदिआ फल पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 298

दुख बिनसे सहसा गइओ सरन गही हर राए॥
मन चिंदे फल पाइआ नानक हर गुन गाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

3.3. जन्म-मरण के बंधन कट जाते हैं और छुटकारा हो जाता है

गुरमुख परगट होआ हर राए॥ ना को आवै ना को जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 878

संतन के बंधन काटे हर राए॥ ता कउ कहा बिआपै माए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 182

3.4. द्वैत-भाव और भ्रम का नाश होता है और परम-पद की प्राप्ति होती है

करउ बंदना अनिक वार सरन परउ हर राए॥
भ्रम कटीऐ नानक साधसंग दुतीआ भाउ मिटाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

तजहो सिआनप सुर जनहो सिमरहो हर हर राए॥
एक आस हर मन रखहो नानक दूख भरम भउ जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 281

जीवन पुरख मिलिआ हर राइआ॥ कहो नानक परम पद पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 189

3.5. अंतर में ज्योति का प्रकाश होता है

वडभागीआ सोहागणी जिन्हा गुरमुख मिलिआ हर राए॥
अंतर जोत परगासीआ नानक नाम समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1421

आदि निरंजन

गुरवाणी में आदि निरंजन पद भी कहीं-कहीं मिलता है। आदि निरंजन, ख़सम, कुलमालिक, आदि-युगादि और 'अपर-अपार' (अपरंपार) है:

आद जुगादी अपर अपारे॥ आद निरंजन खसम हमारे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1023

वह निरंकार है, सब सृष्टि उसके हुक्म से प्रकट होती है और वह सबके अंदर विद्यमान है। उसका कोई चिह्न-चक्र नहीं:

आद निरंजन प्रभ निरंकारा॥ सभ मह वरतै आप निरारा॥
वरन जात चिहन नहीं कोई सभ हुकमे स्रिसटि उपाइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

आदि निरंजन के निज-स्थान पर न कोई सूर्य है, न चंद्र, न हम उसे अँधेरा कह सकते हैं, न उजाला। वह स्वयं अपने आनंद में मग्न है:

ऊहां सूरज नाही चंद॥ आद निरंजन करै अनंद॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1162

वह निर्मल है और उसके समान कोई नहीं। उसके मिलाप का उपाय एकंकार (देखें: 'एकंकार' का प्रकरण) को अंतर में बसाना है, तब ही आदि निरंजन का प्रेम जाग्रत होता है।

जिन्होंने स्कूलों और कालिजों में शिक्षा प्राप्त की है वे जानते हैं कि यह पृथ्वी, चंद्र सहित कई अन्य ग्रहों की भाँति, सूर्य के गिर्द घूम रही है और वह सूर्य आगे, कई और सूर्यों की भाँति, अपने से अति महान प्रकाशमान केंद्र के गिर्द प्रदक्षिणा कर रहा है। इसी प्रकार यह त्रिलोकी, त्रिलोकीनाथ सहित, सत्पुरुष निरंजन (एकंकार) के गिर्द चक्र लगा रही है और वह निरंजन आगे अपने पिता आदि निरंजन की प्रदक्षिणा कर रहा है। यह आदि निरंजन काल व अकाल, सगुण और निर्गुण से परे है।

आदि निरंजन और हरि राए स्वामी के ही नाम हैं। अधिक वृत्तांत के लिए 'हरि राए' और 'स्वामी' के प्रकरण देखें। आगे आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण दिए गए हैं।

गुरबाणी

1. वह ख़सम, कुलमालिक, आदि-युगादि और अपरंपार है

आद जुगादी अपर अपारे॥ आद निरंजन खसम हमारे॥
साचे जोग जुगत वीचारी साचे ताड़ी लाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1023

आद निरंजन प्रभ निरंकारा॥ सभ मह वरतै आप निरारा॥
वरन जात चिहन नही कोई सभ हुकमे स्रिसटि उपाइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

आद निरंजन निरमल सोई॥ अवर न जाणा दूजा कोई॥
एकंकार वसै मन भावै हउमै गरब गवाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

2. उसके निज मुक़ाम पर न सूर्य है, न चंद्र है, वह आनंद रूप अपने आप में मग्न है

अरध उरध मुख लागो कासु। सुंन मंडल मह कर परगासु।
ऊहां सूरज नाही चंद॥ आद निरंजन करै अनंद॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1162

3. वह निरंकार है, सर्वव्यापक है, रचना उसी के हुक्म से बनी है

आद निरंजन प्रभ निरंकारा॥ सभ मह वरतै आप निरारा॥
वरन जात चिहन नही कोई सभ हुकमे स्रिसटि उपाइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

4. वह निर्मल है, उसके बराबर और कोई नहीं, एकंकार के अंदर वास करने पर वह मन को प्रिय लगता है

आद निरंजन निरमल सोई॥ अवर न जाणा दूजा कोई॥
एकंकार वसै मन भावै हउमै गरब गवाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

एकंकार

आदि निरंजन अकर्ता है, सबसे न्यारा है, इसलिए जब-जब उसे रचना करनी होती है तो वह अपने प्रतिनिधि एकंकार सत्पुरुष द्वारा करता है। स्वामी या कुलमालिक एकंकार होकर अनेक भाँति प्रसार कर रहा है:

जल थल महीअल पूरिआ सुआमी सिरजनहार॥
अनिक भांत होए पसरिआ नानक एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

भाई गुरदास जी भी इसी प्रकार फ़रमाते हैं कि निरंकार, जो आदि निरंजन या ख़सम है, आकार धारण कर एकंकार कहलाया और उसने सारी रचना 'कवाओ' (हुक्म) द्वारा कर दी:

निरंकारु आकार करि एकंकारु अपार सदाइआ।
ओअंकारु अकार करि इकु कवाउ पसाउ कराइआ।

वारां भाई गुरदास, 39:2

काल अकाल खसम का कीन्हा इह परपंच बधावन॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1104

क़ुदरत में दो शक्तियाँ कार्य करती हैं, एक काल-महाकाल और दूसरी अकाल, दोनों को कुलमालिक ने रचना के विस्तार के लिए रचा है। कुलमालिक या निरंकार ने सत्पुरुष या अकालपुरुष का आकार धारण करके इस संपूर्ण रचना का प्रसार किया। एकंकार का देश (दायरा) प्रलय और महाप्रलय से परे है।

इसकी प्राप्ति संतों का आदर्श है, यहाँ से फिर पतन नहीं। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा है कि हे निरंकार! आप काल हूँ के काल महा काल हूँ के काल हैं॥ (श्री दसम ग्रन्थ, पहली सैंची, पृ. 81)।

जो सत्पुरुष या एकंकार तक पहुँचते हैं उनको संत कहते हैं और गुरवाणी में उनको ही सतगुरु कहा गया है:

सत पुरख जिन जानिआ सतगुर तिस का नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

जब आत्मा एकंकार में समा जाती है या एकंकार पद तक पहुँच जाती है तो वह आदि निरंजन या स्वामी पद की रसाई के योग्य हो जाती है। एकंकार यानी सत्पुरुष अपनी सत्ता प्रदान करके उसको स्वामी पद के दर्शन करवाता है:

आद निरंजन निरमल सोई॥ अवर न जाणा दूजा कोई॥
एकंकार वसै मन भावै हउमै गरब गवाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

करोड़ों ही ब्रह्मलोक हैं, जिनके शासक ब्रह्म, जो वाइसरॉय (प्रतिनिधि) की भाँति काम करते हैं, उसके (एकंकार के) हुक्म में चल रहे हैं और सबकी सँभाल करनेवाले उस सत्पुरुष एकंकार की प्रदक्षिणा कर रहे हैं। संतजन सत्पुरुष के हुक्म में चलते हैं। किसी भी वाइसरॉय (ब्रह्म) का संतों पर शासन या हुक्म नहीं है। संतजन आत्माओं को नाम प्रदान करके सीधा सत्पुरुष के पास पहुँचाते हैं। यह एकंकार वेद-शास्त्रों के ओंकार से भिन्न है। ओंकार तीनों लोकों और ब्रह्मांड का शिरोमणि है और त्रिकुटी तक उसकी पहुँच है। एकंकार अकालपुरुष या सत्पुरुष है। वह काल से परे है; काल तो केवल इस (ब्रह्म तक की) रचना का आधार है, लेकिन एकंकार सर्वव्यापक है, पाँचों लोकों का शिरोमणि है।

एकंकार की प्राप्ति सत्संग और सतगुरु द्वारा होती है। इसकी प्राप्ति से भ्रमों, विकारों, माया और अहंभाव (हौमैं) का नाश होता है, मन वश में आता है और जीव भवसागर से तर जाता है। आगे आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण दिए गए हैं:

गुरवाणी

1. एकंकार के लक्षण

1.1. स्वामी, सिरजनहार सर्वव्यापक है,
सबसे ऊँचा एकंकार है और उसका अनेक भाँति पसारा है

जल थल महीअल पूरिआ सुआमी सिरजनहार॥
अनिक भांत होए पसरिआ नानक एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

प्रान अधार मीत साजन प्रभ एकै एकंकारै॥
सभ ते ऊच ठाकुर नानक का बार बार नमसकारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1218

1.2. एकंकार के बिना दूसरा कोई नहीं

प्रभ नेड़ै हर दूर न जाणहो एको स्रिसटि सबाई॥
एकंकार अवर नहीं दूजा नानक एक समाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 930

एकम एकंकार प्रभ करउ बंदना धिआए॥
गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरन परउ हर राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

**1.3. एकंकार आदि निरंजन और निर्भय है,
यह अंतर में प्रकट होने पर मन को भाता है**

अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपत अघाई॥
एकंकार निरंजन निरभउ सभ जल थल रहिआ समाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 916

आद निरंजन निरमल सोई॥ अवर न जाणा दूजा कोई॥
एकंकार वसै मन भावै हउमै गरब गवाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

1.4. एकंकार काल के ऊपर है

साहा गणह न करह बीचार॥ साहे ऊपर एकंकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 904

1.5. वह कुल रचना का आधार है, जब रचना होती है वह एकंकार से होती है

बाजीगर जैसे बाजी पाई॥ नाना रूप भेख दिखलाई॥
सांग उतार थंम्हिओ पासारा॥ तब एको एकंकारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 736

जल ते ऊठह अनिक तरंगा॥ कनिक भूखन कीने बहु रंगा॥
बीज बीज देखिओ बहु परकारा॥ फल पाके ते एकंकारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 736

कई बार पसरिओ पासार॥ सदा सदा इक एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 276

नाना बिधि कीनो बिसथार॥ प्रभ अबिनासी एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284

तिस का कीआ त्रिभवण सार॥ ओह अगम अगोचर एकंकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

1.6. एकंकार 'एक' का पसारा और जुहूर है, जो संपूर्ण, निराला, अपरंपार, अमर, अयोनि और अविनाशी है

एकंकार एक पासारा एकै अपर अपारा॥
एक बिसथीरन एक संपूरन एकै प्रान अधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 821

एकम एकंकार निराला॥ अमर अजोनी जात न जाला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 838

नरनरह नमसकारं॥ जलन थलन बसुध गगन एक एकंकारं॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 901

तू एकंकार निरालम राजा॥ तू आप सवारह जन के काजा॥
अमर अडोल अपार अमोलक हर असथिर थान सुहाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

नाना बिधि कीनो बिसथार॥ प्रभ अबिनासी एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284

ऊरम धूरम जोत उजाला॥ तीन भवण मह गुर गोपाला॥
ऊगविआ असरूप दिखावै॥ कर किरपा अपुनै घर आवै॥
ऊनव बरसै नीझर धारा॥ ऊतम सबद सवारणहारा॥
इस एके का जाणै भेउ॥ आपे करता आपे देउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 930

2. साध-जन एकंकार की आराधना करते हैं

जित तन नाम न ऊपजै भाई से तन होए छार॥
साधसंगत कउ वारिआ भाई जिन एकंकार अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 608

3. एकंकार कहाँ है?

3.1. वह पाँचों लोकों का प्रधान है

देही नगरी ऊतम थाना॥ पंच लोक वसह परधाना॥
ऊपर एकंकार निरालम सुंन समाध लगाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

3.2. वह सर्वव्यापक है

अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपत अघाई॥
एकंकार निरंजन निरभउ सभ जल थल रहिआ समाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 916

सतगुर देखिआ दीखिआ लीनी॥
मन तन अरपिओ अंतरगति कीनी॥ गति मित पाई आतम चीनी॥
भोजन नाम निरंजन सार॥ परम हंस सच जोत अपार॥
जह देखउ तह एकंकार॥ रहै निरालम एका सच करणी॥
परम पद पाइआ सेवा गुर चरणी॥ मन ते मन मानिआ चूकी अहं भ्रमणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

सत सत सत प्रभ जाता॥ गुर परसाद सदा मन राता॥
सिमर सिमर जीवह जन तेरे एकंकार समाई हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1072

4. एकंकार से मिलाप के साधन

4.1. मालिक की दया

तिस भावै ता करे बिसथार॥ तिस भावै ता एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 294

आराध एकंकार साचा नित दे चड़ै सवाइआ॥
गति संग मीता संतसंगत कर नदर मेल मिलाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 688

4.2. सतगुरु द्वारा

कई बैकुंठ नाही लवै लागे॥ मुकत बपुड़ी भी गिआनी तिआगे॥
एकंकार सतगुर ते पाईऐ हउ बल बल गुर दरसाइणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1078

हर मेलहो सतगुर दइआ कर मन वसै एकंकार॥
जिन गुरमुख सुण हर मंनिआ जन नानक तिन जैकार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1314

4.3. सत्संग द्वारा

संत कै संग मिटिआ अहंकार॥ द्रिसटि आवै सभ एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 189

आराध एकंकार साचा नित दे चड़ै सवाइआ॥
गति संग मीता संतसंगत कर नदर मेल मिलाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 688

4.4. भ्रमों, विकारों, माया और हौमैं (अहंभाव) के त्याग से

सहस घटा मह एक आकास॥ घट फूटे ते ओही प्रगास॥
भरम लोभ मोह माइआ विकार॥ भ्रम छूटे ते एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 736

5. एकंकार के जप और दर्शन के फल

5.1. हौमैं, अहंकार आदि का नाश

आद निरंजन निरमल सोई॥ अवर न जाणा दूजा कोई॥
एकंकार वसै मन भावै हउमै गरब गवाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

मेरे मन तज निंदा हउमै अहंकार॥ हर जीउ सदा धिआए तू गुरमुख एकंकार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29–30

5.2. भवसागर से पार होना

उधरह आप तरै संसार॥ राम नाम जप एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 185

5.3. मन वश में आता है

मन भूलो बहु चितै विकार॥ मन भूलो सिर आवै भार॥ मन मानै हर एकंकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 222

5.4. सब गुण आ जाते हैं

जिन कै हिरदै एकंकार॥ सरब गुणी साचा बीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 905

राम राए

राम राए, अकालपुरुष, सतनाम और सत्पुरुष–ये सब नाम एक ही हस्ती के हैं। गुरवाणी में एकंकार भी इसी सत्पुरुष को कहा गया है। राम राए घट-घट में रम रहा है। वह हरि यानी स्वामी का ही रूप है और उसी के द्वारा कुलमालिक अनामी पुरुष से मिलाप हो सकता है।

वह कुलमालिक गुप्त था। वह 'सत्त' हुआ। 'सत्त' संस्कृत धातु 'अस्' से निकला है जिसका अर्थ केवल 'होना' है। वह प्रकट हुआ, इसलिए वह सत्त कहलाया। सत्त से तात्पर्य 'होनेवाला' या 'अस्तित्व में आनेवाला' है। जो हस्ती (अस्तित्व) में नहीं आती उसे गुप्त कहा जाता है, प्रकट होने का नाम हस्ती है। उस अलख, अगम गुप्त हस्ती ने प्रकट रूप धारण किया। उस हस्ती का नाम सत्पुरुष, अकालपुरुष और एकंकार हुआ। वह कुलमालिक यह रूप धारण करके 'अनिक भाँत' (अनेक भाँति) पसारा पसार रहा है और सँभाल कर रहा है। गुरवाणी में 'राम' पद कई जगह आया है। इससे किसी अवतार की ओर संकेत नहीं है। इसका संकेत सत्पुरुष निरंकार की ओर है। कबीर साहिब ने इस पद का अच्छी तरह वर्णन किया है:

जग में चारों राम हैं, तीन राम व्यवहार।
चौथा राम निज सार है, ताका करो विचार॥
एक राम दशरथ घर डोलै, एक राम घट घट में बोलै।
एक राम का सकल पसारा, एक राम त्रिभुवन ते न्यारा॥

कबीर समग्र, भाग 1, पृ. 462

एक राम तो राजा दशरथ के पुत्र रामचंद्र जी का नाम है, दूसरा राम मन है जो घट-घट के अंदर है, तीसरा राम काल है जिसका यह त्रिलोकी या तीनों गुणों का पसारा है और चौथा राम इन सबसे और त्रिगुणों (तीनों गुणों) से न्यारा है।

तीन लोकों का सब कोई ध्यान करते हैं, पर चौथे देव का मर्म कोई नहीं जानता:

तीन देव को सब कोइ ध्यावै, चौथा देव का मरम न पावै।

कबीर समग्र, भाग 1, पृ. 461

सारा जहान तीनों गुणों की भक्ति में लगा हुआ है। सतनाम के बग़ैर जीव भूला पड़ा है, सतनाम के बग़ैर वह भवसागर से कैसे पार हो सकता है?

तीन गुनन की भक्ति में, भूलि पर्‌यो संसार।
कह कबीर निज नाम बिनु, कैसे उतरै पार॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 104

यह 'राम' वास्तव में सतनाम यानी सत्पुरुष है। यही चौथा पद है जिसकी ओर संत संकेत करते हैं और जिसको अपना आदर्श मानते हैं।

काल या धर्म राए इसी अकालपुरुष, राम राए यानी सत्पुरुष के हुक्म में कार्य कर रहा है। सत्पुरुष के अवतार, संतजन भी इस संसार में काम कर रहे हैं, पर उनका काम आत्माओं को सत्पुरुष की गोद में पहुँचाने का है।

राम राए अलख है, उसके मिलाप से अटल सुहाग मिलता है। राम राए की प्राप्ति सत्संग, सतगुरु और शब्द के अभ्यास द्वारा होती है। ब्रह्मज्ञान के बिना उसकी प्राप्ति कठिन है। राम राए का मिलाप सहज अवस्था में ही होता है। उसकी प्राप्ति से सब दुःखों का नाश हो जाता है, यम पास नहीं फटकता और निर्भय पद की प्राप्ति होती है (अधिक विस्तार के लिए 'एकंकार' और 'निरंजन' के प्रकरण देखें)। राम राए घट-घट में रम रहा है और वह हरि यानी स्वामी का ही रूप है। आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण यहाँ दिए जा रहे हैं:

गुरबाणी

1. राम राए के गुण

1.1. वह अलख है

ओह अलख न लखीऐ कहहो काए॥ गुर संग दिखाइओ राम राए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1169-1170

छोड सिआनप चातुरी दुरमत बुध तिआगो राम॥
नानक पउ सरणाई राम राए थिर होए सुहागो राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 848

1.2. वह घट-घट में रम रहा है

घट घट रमईआ रमत राम राए गुर सबद गुरू लिव लागे॥
हउ मन तन देवउ काट गुरू कउ मेरा भ्रम भउ गुर बचनी भागे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 172

मेरे राम राए मुझ ते कछू न होई॥
आपे करता आप कराए सरब निरंतर सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 748

1.3. वह शीशे या पानी में प्रतिबिंब की भाँति सर्वव्यापी है

ऐसो राम राए अंतरजामी॥ जैसे दरपन माहे बदन परवानी॥
बसै घटा घट लीप न छीपै॥ बंधन मुकता जात न दीसै॥
पानी माहे देख मुख जैसा॥ नामे को सुआमी बीठल ऐसा॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1318

1.4. उसकी दया से ही भक्ति होती है और उसके नाम से उद्धार होता है

मेरे राम राए मुझ ते कछू न होई॥
आपे करता आप कराए सरब निरंतर सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 748

तन रैनी मन पुन रप कर हउ पाचउ तत बराती॥
राम राए सिउ भावर लैहउ आतम तिह रंग राती॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 482

मेरे राम राए जिउ राखह तिउ रहीऐ॥
तुध भावै ता नाम जपावह सुख तेरा दिता लहीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

2. राम राए की प्राप्ति किस प्रकार हो?

2.1. सतगुरु और शब्द द्वारा

मेरै हीअरै प्रीत राम राए की गुर मारग पंथ बताइआ॥
मेरा जीउ पिंड सभ सतगुर आगै जिन विछुड़िआ हर गल लाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 172

अंतर राम राए प्रगटे आए॥ गुर पूरै दीओ रंग लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1141

ओह अलख न लखीऐ कहहो काए॥ गुर संग दिखाइओ राम राए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1169-70

घट घट रमईआ रमत राम राए सभ वरतै सभ मह ईक॥
जन नानक कउ हर किरपा धारी गुर बचन धिआइओ घरी मीक॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1336

किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राए॥
कोई ऐसा संत सहज सुखदाता मोहे मारग दे बताई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 204

मेरे राम राए इन बिधि मिलै गुसाई॥
सहज भइआ भ्रम खिन मह नाठा मिल जोती जोत समाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

इस गड़ मह हर राम राए है किछ साद न पावै धीठा॥
हर दीन दइआल अनुग्रह कीआ हर गुर सबदी चख डीठा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 171

घट घट रमईआ रमत राम राए गुर सबद गुरू लिव लागे॥
हउ मन तन देवउ काट गुरू कउ मेरा भ्रम भउ गुर बचनी भागे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 172

2.2. ब्रह्मज्ञान से

नाभि कमल मह बेदी रच ले ब्रहम गिआन उचारा॥
राम राए सो दूलहो पाइओ अस बडभाग हमारा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 482

3. प्राप्ति का फल

3.1. दु:खों का नाश होता है, निर्भयता की प्राप्ति होती है और यम पास नहीं आता

बिख हउमै ममता परहराए॥ सभ दूख बिनासे राम राए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1169

राम नाम की उपमा देखहो हर संतहो
जो भगत जनां की पत राखै विच कलिजुग अगे॥
जन नानक का अंग कीआ मेरै राम राए दुसमन दूख गए सभ भगे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 1202

मेरे राम राए तूं संता का संत तेरे॥
तेरे सेवक कउ भउ किछ नाही जम नही आवै नेरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 749-50

3.2. सहज की प्राप्ति और भ्रमों का नाश

मेरे राम राए इन बिधि मिलै गुसाई॥
सहज भइआ भ्रम खिन मह नाठा मिल जोती जोत समाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 205

3.3. अटल सुहाग मिलता है

छोड सिआनप चातुरी दुरमत बुध तिआगो राम॥
नानक पउ सरणाई राम राए थिर होए सुहागो राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 848

निरंजन

निरंजन पद निर्+अंजन से बना है, यानी वह हस्ती (व्यक्तित्व) जो अंजन यानी माया से रहित हो। माया का विस्तार लंबा-चौड़ा है–स्थूल देशों में यह माया और सूक्ष्म व कारण देशों में यह प्रकृति कहलाती है। सचखंड के नीचे तक इसे प्रधान कहा जाता है। निरंजन ऐसी हस्ती है जो माया की सीमा से परे है, जहाँ प्रलय और महाप्रलय की पहुँच नहीं। निरंजन पद का गुरवाणी में अनेक स्थानों पर प्रयोग हुआ है। कई स्थानों पर इस पद का हरि और निरंकार के लिए प्रयोग हुआ है और यह बताया गया है कि जब कुछ भी नहीं था तब भी निरंजन निराकार था, उसका न कोई रूप है न जाति:

तब इह कहा कमावन परिआ जब इह कछू न होता॥
जब एक निरंजन निरंकार प्रभ सभ किछ आपह करता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 216

तू आपे आप निंरकार है निरंजन हर राइआ॥
जिनी तू इक मन सच धिआइआ तिन का सभ दुख गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 301

हर आपे हर आपे पुरख निरंजन सोई राम॥
हर आपे हर आपे मेलै करै सो होई राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

1. वह सदा एकरस है और आदि पुरुष है, वह अभय और परम पद है

ना ओह बढै न घटता जाए॥ अकुल निरंजन एकै भाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 343

कहत नानक जो जाणै भेउ॥ आद पुरख निरंजन देउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

अभै निरंजन परम पद ता का भूखा होए॥
तिस का भोजन नानका विरला पाए कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 949

2. निरंजन का अलख, अगम, अगोचर और अपार कहकर भी वर्णन किया गया है, उसे हरि पुरुष और सत्पुरुष भी कहा गया है

ससुरै पेईऐ पिर वसै कहो कित बिधि पाईऐ॥
आप निरंजन अलख है आपे मेलाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162-63

नाम निरंजन अगम अगोचर सतगुर दीआ बुझाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 585

सो सेवहो सत निरंजनो हर पुरख बिधाती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 138

सभ धिआवह तुध मेरे प्रीतमा तू सत सत पुरख निरंजना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1313

3. निरंजन और एकंकार (देखें: 'एकंकार' का प्रकरण) दोनों को एक ही बताया गया है

अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपत अघाई॥
एकंकार निरंजन निरभउ सभ जल थल रहिआ समाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 916

निरंजन देश के वर्णन में परम-हंसों और अपार ज्योति का उल्लेख आया है। वहाँ एकंकार का वास है। वहाँ निर्मल हंस हैं, जिनकी काया निर्मल है और जिनका भोजन नाम है:

भोजन नाम निरंजन सार॥ परम हंस सच जोत अपार॥ जह देखउ तह एकंकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

निरमल काइआ ऊजल हंसा॥ तिस विच नाम निरंजन अंसा॥
सगले दूख अंम्रित कर पीवै बाहुड़ दूख न पाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

4. गुरवाणी में 'निरंजन' पद का सूक्ष्म देश के स्वामी के लिए भी प्रयोग किया गया है

काली कवल* निरंजन जाणै॥ बूझै करम सो सबद पछाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

5. वह नाम-निरंजन है, परिपूर्ण है, वह घट-घट में ध्वनि रूप होकर गूँज रहा है

साचै सबद सहज धुन उपजै मन साचै लिव लाई॥
अगम अगोचर नाम निरंजन गुरमुख मंन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

निरंजन नाम सार-नाम और अमृत-रस है। निरंजन शब्द-स्वरूपी है। नाम और नामी एक ही हैं, इसलिए, जो गुण निरंजन के हैं वे ही नाम-निरंजन के भी हैं। गुरवाणी में दोनों का वर्णन मिला-जुला है। शब्द का स्रोत यही है। गुरमुखों और संतों को ही इसका दर्शन प्राप्त होता है। वह पारब्रह्म से ऊपर है और उसकी भक्ति उसकी दया द्वारा ही संभव है।

सत्संग और सतगुरु द्वारा गुरुमुखों को निरंजन की प्राप्ति होती है। माया, मोह, विकार और अहं से परे जाकर जीवित-मृतक होने पर सुन्न समाधि की अवस्था में उसके दर्शन होते हैं। अनहद शब्द में लीन होकर अंजन के सार निरंजन को जाना जा सकता है:

भउ बैरागा सहज समाता॥ हउमै तिआगी अनहद राता॥
अंजन सार निरंजन जाणै सरब निरंजन राइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

सतगुरु की कृपा द्वारा जीव माया (अंजन) में रहते हुए निरंजन को पा लेता है और ज्योति में स्वयं ज्योति रूप होकर समा जाता है:

अंजन माहे निरंजन पाइआ जोती जोत मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

निरंजन की प्राप्ति से मन वश में आता है, यम का भय दूर होता है और ज्योति में ज्योति समा जाती है, सच्चे ज्ञान और परम पद की प्राप्ति होती है,

* काली कवल=संतों ने जिसे सहसदल-कमल कहा है, जो सूक्ष्म देश का अधिष्ठाता है, गुरु नानक साहिब ने उसे काला कमल कहकर वर्णन किया है।

हृदय कमल विकसित होता है, निजघर में निवास मिलता है और अनेक फल प्राप्त होते हैं, जिनके लिए नीचे दिए गए आदि ग्रन्थ से प्रमाण देखें। निरंजन द्वारा ही प्रभुरूपी स्वामी (अनामी पुरुष) से मिलाप होता है। सच्चा सेवक, उदासीन या गुरुमुख वही है, जिसका निरंजन से मिलाप हुआ हो। इस पद के भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए आगे दिए गए प्रमाणों को देखें।

गुरबाणी

1. निरंजन के लक्षण

1.1. वह हरि और निरंकार है, निर्भय और निर्वैर है, जब कुछ नहीं था तब भी वह था, उसका न कोई रूप है न जाति

तब इह कहा कमावन परिआ जब इह कछू न होता॥
जब एक निरंजन निरंकार प्रभ सभ किछ आपह करता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 216

जह निरंजन निरंकार निरबान॥ तह कउन कउ मान कउन अभिमान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 291

तू आपे आप निरंकार है निरंजन हर राइआ॥
जिनी तू इक मन सच धिआइआ तिन का सभ दुख गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 301

हर आपे हर आपे पुरख निरंजन सोई राम॥
हर आपे हर आपे मेलै करै सो होई राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

हर सत निरंजन अमर है निरभउ निरवैर निरंकार॥
जिन जपिआ इक मन इक चित तिन लथा हउमै भार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

निरंकार निरंजन हर अगम किआ कह गुण गाईऐ॥
जिस आप बुझाए आप सो हर मारग पाईऐ॥
गुर पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

जप मन हर निरंजन निरंकारा॥
सदा सदा हर धिआईऐ सुखदाता जाका अंत न पारावारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 720

जा कै रूप नाही जात नाही नाही मुख मासा॥
सतगुर मिले निरंजन पाइआ तेरै नाम है निवासा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1328

1.2. निरंजन हरि पुरुष और सत्पुरुष है

गुरमुख रंग चलूलिआ रंग हर रंग राती॥
सो सेवहो सत निरंजनो हर पुरख बिधाती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 138

सभ जोत तेरी जगजीवना तू घट घट हर रंग रंगना॥
सभ धिआवह तुध मेरे प्रीतमा तू सत सत पुरख निरंजना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1313

1.3. वह निरंजन एक है, उसके सिवाय कोई नहीं, वह सबके ऊपर है

दूजा कउण कहा नही कोई॥ सभ मह एक निरंजन सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 223

अकुल निरंजन सिउ मन मानिआ मन ही ते मन मूआ॥
अंतर बाहर एको जानिआ नानक अवर न दूआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1127

ना किछ भरम न दुबिधा दूजा॥ एको एक निरंजन पूजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 887

तिस तज अवर कहा को जाए॥ सभ सिर एक निरंजन राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 292

तुध जेवड दाता तूहै निरंजना तूहै सच मेरै मन भाइआ॥
सचे मेरे साहिबा सचे सच नाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 301

1.4. वह आदि पुरुष है, सदा एकरस है, अभय और परम पद है

ना ओह बढै न घटता जाए॥ अकुल निरंजन एकै भाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 343

कहत नानक जो जाणै भेउ॥ आद पुरख निरंजन देउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

अंतर बाहर पुरख निरंजन आद पुरख आदेसो॥
घट घट अंतर सरब निरंतर रव रहिआ सच वेसो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126-27

अभै निरंजन परम पद ता का भूखा होए॥
तिस का भोजन नानका विरला पाए कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 949

घट घट सुंन का जाणै भेउ॥ आद पुरख निरंजन देउ॥
जो जन नाम निरंजन राता॥ नानक सोई पुरख बिधाता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 943

1.5. निरंजन एकंकार सर्वव्यापी है

अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपत अघाई॥
एकंकार निरंजन निरभउ सभ जल थल रहिआ समाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 916

1.6. निरंजन (सत्पुरुष) और सतगुरु में अंतर नहीं

धन धन सतगुर पुरख निरंजन जित मिल हर नाम धिआई॥
मेरा सतगुर मेरा सतगुर पिआरा मै गुर बिन रहण न जाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573-74

सतगुर बाझहो वैद न कोई॥ आपे आप निरंजन सोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1016

मधुसूदन हर माधो प्राना॥ मेरै मन तन अंम्रित मीठ लगाना॥
हर हर दइआ करहो गुर मेलहो पुरख निरंजन सोई राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 698

दूजा नही जानै कोए॥ सतगुर निरंजन सोए॥
मानुख का कर रूप न जान॥ मिली निमाने मान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 895

गुर जेवड गुर जेवड दाता मै अवर न कोई राम॥
हर दानो हर दान देवै हर पुरख निरंजन सोई राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 572

1.7. निरंजन देश में परम हंस और अपार ज्योति है। वहाँ एकंकार का वास है, उन हंसों का भोजन नाम है। जिनके अंदर नाम-निरंजन बसता है, वे उज्ज्वल हंस हैं।

भोजन नाम निरंजन सार॥ परम हंस सच जोत अपार॥
जह देखउ तह एकंकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

कंचन काइआ निरमल हंस॥ जिस मह नाम निरंजन अंस॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1256

निरमल काइआ ऊजल हंसा॥ तिस विच नाम निरंजन अंसा॥
सगले दूख अंम्रित कर पीवै बाहुड़ दूख न पाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

1.8. निरंजन अंतर्यामी है

सरब जीआं का जानै भेउ॥ क्रिपा निधान निरंजन देउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होए॥
अंतरजामी प्रभ सुजान अलख निरंजन सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

1.9. निरंजन अलख है

ससुरै पेईऐ पिर वसै कहो कित बिधि पाईऐ॥
आप निरंजन अलख है आपे मेलाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162-63

मेरे मन सेवहो अलख निरंजन नरहरि जित सेविऐ लेखा छुटीऐ॥
जन नानक हर प्रभ पूरे कीए खिन मासा तोल न घटीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 170

गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होए॥
अंतरजामी प्रभ सुजान अलख निरंजन सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

नाम निरंजन अलख है किउ लखिआ जाई॥
नाम निरंजन नाल है किउ पाईऐ भाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

अलह अलख न जाई लखिआ गुर गुड़ दीना मीठा॥
कहे कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजन डीठा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1350

अगनत अपार अलख निरंजन जिह सभ जग भरमाइओ॥
सगल भरम तज नानक प्राणी चरन ताहे चित लाइओ॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 537

ऐसा नाम निरंजन देउ॥ हउ जाचिक तू अलख अभेउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 796

हीरा देख हीरे करउ आदेस॥ कहै कबीर निरंजन अलेख॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 972

सगले जाचह गुर भंडारी॥ आप निरंजन अलख अपारी॥
नानक साच कहै प्रभ जाचै मै दीजै साच रजाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1024

तह भइआ प्रगास मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैण किराखी॥
अदिसट अगोचर अलख निरंजन सो देखिआ गुरमुख आखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 87

1.10. निरंजन अगम है

सो पुरख निरंजन हर पुरख निरंजन हर अगमा अगम अपारा॥
सभ धिआवह सभ धिआवह तुध जी हर सचे सिरजणहारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 348

इस काइआ अंदर बहुत पसारा॥ नाम निरंजन अत अगम अपारा॥
गुरमुख होवै सोई पाए आपे बखस मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

साचै सबद सहज धुन उपजै मन साचै लिव लाई॥
अगम अगोचर नाम निरंजन गुरमुख मंन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

तूं वड पुरख अगंम तरोवर हम पंखी तुझ माही॥
नानक नाम निरंजन दीजै जुग जुग सबद सलाही॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 505

तिन मिलिआ मल सभ जाए सचै सर नाए सचै सहज सुभाए॥
नाम निरंजन अगम अगोचर सतगुर दीआ बुझाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 585

निरंकार निरंजन हर अगम किआ कह गुण गाईऐ॥
जिस आप बुझाए आप सो हर मारग पाईऐ॥
गुर पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

1.11. निरंजन अगोचर है

साचै सबद सहज धुन उपजै मन साचै लिव लाई॥
अगम अगोचर नाम निरंजन गुरमुख मंन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

भउ भंजन पाइआ आप गवाइआ गुरमुख मेल मिलाई॥
कहो नानक नाम निरंजन अगम अगोचर हुकमे रहिआ समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 569

तिन मिलिआ मल सभ जाए सचै सर नाए सचै सहज सुभाए॥
नाम निरंजन अगम अगोचर सतगुर दीआ बुझाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 585

जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे॥ तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 291

तह भइआ प्रगास मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैण किराखी॥
अदिसट अगोचर अलख निरंजन सो देखिआ गुरमुख आखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 87

1.12. निरंजन अपार है

ना तिस मात पिता सुत बंधप न तिस काम न नारी॥
अकुल निरंजन अपर परंपर सगली जोत तुमारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 597

जा का अंत न जानस कोए॥ आपे आप निरंजन सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

भगति वछल अनाथह नाथे॥ गोपी नाथ सगल है साथे॥
बासुदेव निरंजन दाते बरन न साकउ गुण अंगा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1082

1.13. निरंजन सृजनहार है

पुरख निरंजन सिरजनहार॥ जीअ जंत देवै आहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1148

आपे आप निरंजना जिन आप उपाइआ॥
आपे खेल रचाइओन सभ जगत सबाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1237

1.14. निरंजन गुण-गंभीर है

तू सर सागर गुण गहीर॥ तू अकुल निरंजन परम हीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1190

1.15. निरंजन सच है

तुध जेवड दाता तूहै निरंजना तूहै सच मेरै मन भाइआ॥
सचे मेरे साहिबा सचे सच नाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 301

निरभउ जोगी निरंजन धिआवै॥ अनदिन जागै सच लिव लावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 223

अंतर बाहर पुरख निरंजन आद पुरख आदेसो॥
घट घट अंतर सरब निरंतर रव रहिआ सच वेसो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126–27

अपुने पिर हर देख विगासी तउ धन साच सीगारो॥
अकुल निरंजन सिउ सच साची गुरमत नाम अधारो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1255

असटमी असट सिध बुध साधै॥ सच निहकेवल करम अराधै॥
पउण पाणी अगनी बिसराउ॥ तही निरंजन साचो नाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 839

1.16. निरंजन का नाम सार-नाम है

भोजन नाम निरंजन सार॥ परम हंस सच जोत अपार॥
जह देखउ तह एंककार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

पूंजी नाम निरंजन सार॥ निरमल साच रता पैकार॥
सिफत सहज घर गुर करतार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

1.17. नाम-निरंजन हुक्म के अंदर बसा हुआ है

भउ भंजन पाइआ आप गवाइआ गुरमुख मेल मिलाई॥
कहो नानक नाम निरंजन अगम अगोचर हुकमे रहिआ समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 569

1.18. वह पतित-पावन और भक्त-वत्सल है

अगाध बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भंजना॥
नानक पइअंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 456

पावन पतित पुनीत नाम निरंजना॥ भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 456

भगति वछल अनाथह नाथे॥ गोपी नाथ सगल है साथे॥
बासुदेव निरंजन दाते बरन न साकउ गुण अंगा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1082

2. ज्योति-निरंजन

2.1. निरंजन पद का प्रयोग सूक्ष्म देश के स्वामी काल या ज्योति-निरंजन के लिए भी किया गया है

दुख भै भंजन प्रभ अबिनासी॥ रोग कटे काटी जम फासी॥
नानक हर प्रभ सो भउ भंजन गुर मिलिऐ हर प्रभ पाइआ॥
कालै कवल निरंजन जाणै॥ बूझै करम सो सबद पछाणै॥
आपे जाणै आप पछाणै सभ तिस का चोज सबाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

2.2. ज्योति-निरंजन का ठिकाना

मसतक पदम दुआलै मणी॥ माहे निरंजन त्रिभवण धणी॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीन बसह इक ठाई॥
बेणी संगम तह पिराग मन मजन करे तिथाई॥
संतहो तहा निरंजन राम है॥
गुर गम चीनै बिरला कोए॥ तहां निरंजन रमईआ होए॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

3. ब्रह्म, काल आदि सब उसकी आराधना करते हैं

मानह ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का काल निरंजन जचना॥
गुर प्रसाद पाईऐ परमारथ सतसंगत सेती मन खचना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1403–04

4. निरंजन की भक्ति मालिक की दया से ही हो सकती है

नानक नाम निरंजन गाईऐ पाईऐ सरब निधाना॥
कर किरपा जिस दे सुआमी बिरले काहू जाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 676

निरंकार निरंजन हर अगम किआ कह गुण गाईऐ॥
जिस आप बुझाए आप सो हर मारग पाईऐ॥
गुर पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

जे तुध नो सालाहे सो सभ किछ पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी॥
सोई साहु सचा वणजारा जिन वखर लदिआ हर नाम धन तेरी॥
सभ तिसै नो सालाहिहो संतहो जिन दूजे भाव की मार विडारी ढेरी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 555

सो सेवक जो लाइआ सेव॥ तिन ही पाए निरंजन देव॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1159

5. निरंजन का जाप बड़भागी को ही मिलता है

एह निधान जपै वडभागी जीउ॥ नाम निरंजन एक लिव लागी जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 217

6. निरंजन कहाँ है?

6.1. वह परिपूर्ण (सर्वत्र व्याप्त) है

एक क्रिस्नं त सरब देवा देव देवा त आतमह॥
आतमं स्री बास्वदेवस्य जे कोई जानस भेव॥
नानक ता को दास है सोई निरंजन देव॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1353

अलख निरंजन एको वरतै एका जोत मुरारी॥
सभ जाचिक तू एको दाता मागह हाथ पसारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 507

पारब्रहम जिस लिखिआ मन तिसै वुठा॥
इक निरंजन रव रहिआ भाउ दुया कुठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 321

नाम निरंजन वरतदा रविआ सभ ठांई॥ गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै दे दिखाई॥
नानक नदरी करम होए गुर मिलीऐ भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जल थल महीअल पूरिआ॥
इक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसह विसूरिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 456

अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपत अघाई॥
एकंकार निरंजन निरभउ सभ जल थल रहिआ समाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 916

दूजा कउण कहा नही कोई॥ सभ मह एक निरंजन सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 223

6.2. वह घट-घट में रम रहा है, उसका नाम अंतर में गूँज रहा है

इस काइआ अंदर बहुत पसारा॥ नाम निरंजन अत अगम अपारा॥
गुरमुख होवै सोई पाए आपे बखस मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

गुर कै सबद इह गुफा वीचारे॥ नाम निरंजन अंतर वसै मुरारे॥
हर गुण गावै सबद सुहाए मिल प्रीतम सुख पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 127

निरभउ सो अभ अंतर वसिआ॥ अहिनिस नाम निरंजन रसिआ॥
नानक हर जस संगत पाईऐ हर सहजे सहज मिलाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042

सभ मह एक निरंजन करता॥ सभ कर कर वेखै अपणे चलता॥
जिस हर राखै तिस कउण मारै जिस करता आप छडाई जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 998

अंतर बाहर पुरख निरंजन आद पुरख आदेसो॥
घट घट अंतर सरब निरंतर रव रहिआ सच वेसो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126-27

गुर सुप्रसंन होए भउ गए॥ नाम निरंजन मन मह लए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1149

सभ जोत तेरी जगजीवना तू घट घट हर रंग रंगना॥
सभ धिआवह तुध मेरे प्रीतमा तू सत सत पुरख निरंजना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1313

ना हर भजिओ ना गुर जन सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना॥
घट ही माहे निरंजन तेरै तै खोजत उदिआना॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 632

कीए उपाव मुकत के कारन दह दिस कउ उठ धाइआ॥
घट ही भीतर बसै निरंजन ता को मरम न पाइआ॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 703

नाम निरंजन वरतदा रविआ सभ ठांई॥ गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै दे दिखाई॥
नानक नदरी करम होए गुर मिलीऐ भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

ना तिस भूख पिआस मन मानिआ॥ सरब निरंजन घट घट जानिआ॥
अंम्रित रस राता केवल बैरागी गुरमत भाए सुभाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

गुर परसादी बूझ ले तउ होए निबेरा॥ घर घर नाम निरंजना सो ठाकुर मेरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

7. निरंजन के नाम में धुन है

साचै सबद सहज धुन उपजै मन साचै लिव लाई॥
अगम अगोचर नाम निरंजन गुरमुख मंन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

8. निरंजन का मिलाप किस प्रकार होता है?

8.1. सतगुरु और साधु-संगति से

पूंजी नाम निरंजन सार॥ निरमल साच रता पैकार॥
सिफत सहज घर गुर करतार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

पारब्रहम की लागउ सेव॥ गुर ते सुझै निरंजन देव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 862

गणत गणीऐ सहसा जीऐ॥ किउ सुख पावै दूऐ तीऐ॥
निरमल एक निरंजन दाता गुर पूरे ते पत पाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1023

निरंकार निरंजन हर अगम किआ कह गुण गाईऐ॥
जिस आप बुझाए आप सो हर मारग पाईऐ॥
गुर पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सत भाए॥
अचरज रूप निरंजनो गुर मेलाइआ माए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

हम थारे त्रिभवण जग तुमरा तू मेरा हउ तेरा॥
सतगुर मिलिऐ निरंजन पाइआ बहुर न भवजल फेरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1255

गिआन अंजन भै भंजना देख निरंजन भाए॥
गुपत प्रगट सभ जाणीऐ जे मन राखै ठाए॥
ऐसा सतगुर जे मिलै ता सहजे लए मिलाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 57

सतगुर भेटै ता सहसा तूटै धावत वरज रहाईऐ॥
निझर झरै सहज धुन लागै घर ही परचा पाईऐ॥
अंजन माहे निरंजन रहीऐ जोग जुगत इव पाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 730

सेवी सतगुर भाए नाम निरंजना॥ तुध भावै तिवै रजाए भरम भउ भंजना॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 752

जिस का सा तिन ही मेल लीआ जोती जोत समाइआ॥
नानक नाम निरंजन जपीऐ मिल सतगुर सुख पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 780

निरभउ सतगुर है रखवाला॥ भगति परापत गुर गोपाला॥
धुन अनंद अनाहद वाजै गुर सबद निरंजन पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042

अगम निगम सतगुरू दिखाइआ॥ कर किरपा अपनै घर आइआ॥
अंजन माहे निरंजन जाता जिन कउ नदर तुमारी जीउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1016

तिन मिलिआ मल सभ जाए सचै सर नाए सचै सहज सुभाए॥
नाम निरंजन अगम अगोचर सतगुर दीआ बुझाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 585

जा कै रूप नाही जात नाही नाही मुख मासा॥
सतगुर मिले निरंजन पाइआ तेरै नाम है निवासा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1328

लेहो आरती हो पुरख निरंजन सतगुर पूजहो भाई॥
ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै अलख न लखिआ जाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1350

इक मन पुरख निरंजन धिआवउ॥ गुर प्रसाद हर गुण सद गावउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1396

तन मन अरपउ पूज चरावउ॥ गुर परसाद निरंजन पावउ॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 525

गुर प्रसाद जन नानक देखिआ मै हर बिन अवर न कोई॥
हर आपे हर आपे पुरख निरंजन सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

गुर परसादी बूझ ले तउ होए निबेरा॥ घर घर नाम निरंजना सो ठाकुर मेरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

पंडित पढ़ पढ़ मोनी सभ थाके भ्रम भेख थके भेखधारी॥
गुर परसाद निरंजन पाइआ साचै सबद वीचारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

भइओ अनुग्रह प्रसाद संतन कै हर नामा है मीठा॥
जन नानक कउ गुर किरपा धारी सभ अकुल निरंजन डीठा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.612

एक निरंजन जा की रास॥ मिल साधसंगत होवत परगास॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.677

हर पुरख निरंजन सेव हर नाम धिआईऐ॥
सतसंगत साधू लग हर नाम समाईऐ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.643

गुरमत लेहो तरहो सच तारी॥ आतम चीनहो रिदै मुरारी॥
जम के फाहे काटह हर जप अकुल निरंजन पाइआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1041

8.2. शब्द या नाम द्वारा

पंडित पढ़ पढ़ मोनी सभ थाके भ्रम भेख थके भेखधारी॥
गुर परसाद निरंजन पाइआ साचै सबद वीचारी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1234

नाम संग जिस का मन मानिआ॥ नानक तिनह निरंजन जानिआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.281

जंपउ गुण बिमल सुजन जन केरे अमिअ नाम जा कउ फुरिआ॥
इन सतगुर सेव सबद रस पाया नाम निरंजन उर धरिआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1396

जप मन सत नाम सदा सत नाम॥
हलत पलत मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हर पुरख निरंजना॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.670

8.3. निरंजन अवस्था की प्राप्ति सुन्न समाधि में जीवित-मृतक होने से

जीवत मरै मरै फुन जीवै ऐसे सुंन समाइआ॥
अंजन माहे निरंजन रहीऐ बहुड़ न भवजल पाइआ॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.332

नानक जीवतिआ मर रहीऐ ऐसा जोग कमाईऐ॥
वाजे बाझहो सिंङी वाजै तउ निरभउ पद पाईऐ॥
अंजन माहे निरंजन रहीऐ जोग जुगत तउ पाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 730

8.4. ज्ञान और मन के स्थिर होने से

गिआन अंजन भै भंजना देख निरंजन भाए॥
गुपत प्रगट सभ जाणीऐ जे मन राखै ठाए॥
ऐसा सतगुर जे मिलै ता सहजे लए मिलाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 57

8.5. माया, विकार और अहंकार के त्याग से

परहर काम क्रोध झूठ निंदा तज माइआ अहंकार चुकावै॥
तज काम कामिनी मोह तजै ता अंजन माहे निरंजन पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 141

अंतर लोभ मन बिखिआ माहे॥ ओए निरंजन कैसे पाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1169

भउ बैरागा सहज समाता॥ हउमै तिआगी अनहद राता॥
अंजन सार निरंजन जाणै सरब निरंजन राइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

प्रभ दाना बीना गरब गवाए। दूजा मेटै एक दिखाए॥
आसा माहे निरालम जोनी अकुल निरंजन गाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

हउमै छोड भई बैरागन तब साची सुरत समानी॥
अकुल निरंजन सिउ मन मानिआ बिसरी लाज लुकानी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1197

8.6. गुरुमुखों को उसका दर्शन प्राप्त होता है

तह भइआ प्रगास मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैण किराखी॥
अदिसट अगोचर अलख निरंजन सो देखिआ गुरमुख आखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 87

इस काइआ अंदर बहुत पसारा॥ नाम निरंजन अत अगम अपारा॥
गुरमुख होवै सोई पाए आपे बखस मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

गुरमुख रंग चलूलिआ रंग हर रंग राती॥
सो सेवहो सत निरंजनो हर पुरख बिधाती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 138

एक निरंजन गुरमुख जाता॥ दूजा मार सबद पछाता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 223

कंचन काइआ निरमली जो सच नाम सच लागी॥
निरमल जोत निरंजन पाइआ गुरमुख भ्रम भउ भागी॥
नानक गुरमुख सदा सुख पावह अनदिन हर बैरागी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 590

साचै सबद सहज धुन उपजै मन साचै लिव लाई॥
अगम अगोचर नाम निरंजन गुरमुख मंन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

9. निरंजन के जाप और उसकी प्राप्ति के फल

9.1. मनोकामनाओं की पूर्ति

सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंग लाइआ॥
जप एक अलख प्रभ निरंजन मन चिंदिआ फल पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

सगल इछ मेरी पुंनीआ मिलिआ निरंजन राए जीउ॥
अनद भइआ वडभागीहो ग्रिह प्रगटे प्रभ आए जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 927

9.2. मन वश में आता है

अकुल निरंजन सिउ मन मानिआ मन ही ते मन मूआ॥
अंतर बाहर एको जानिआ नानक अवर न दूआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1127

लब लोभ लहर निवारणं हर नाम रास मनं॥
मन मार तुही निरंजना कहो नानका सरनं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 506

ना तिस भूख पिआस मन मानिआ॥ सरब निरंजन घट घट जानिआ॥
अंम्रित रस राता केवल बैरागी गुरमत भाए सुभाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

जपस निरंजन रचस मना॥ काहे बोलह जोगी कपट घना॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 156

९.३. सुख की प्राप्ति और पापों, दु:खों और अहंकार का नाश

जब सुप्रसंन भए प्रभ मेरे गुरमुख परचा लाए॥
नानक नाम निरंजन पाइआ नाम जपत सुख पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

नाम निरंजन निरमला सुणिऐ सुख होई॥
सुण सुण मंन वसाईऐ बूझै जन कोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1239

निधरिआ धर एक नाम निरंजनो जीउ॥
तू दाता दातार सरब दुख भंजनो जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 691

सिमरउ नाम निरंजन करते मन तन ते सभ किलविख नास॥
पूरन पारब्रहम सुखदाते अबिनासी बिमल जा को जास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 716

तू आपे आप निरंकार है निरंजन हर राइआ॥
जिनी तू इक मन सच धिआइआ तिन का सभ दुख गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 301

सरन दुख भंजन पुरख निरंजन साधू संगत रवण जैसे॥
केसव कलेस नास अघ खंडन नानक जीवत दरस दिसे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 829

नाम निरंजन नीर नराइण॥ रसना सिमरत पाप बिलाइण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 867

तज मान मोह बिकार दूजा सेव एक निरंजनो॥
लग चरण सरण दइआल प्रीतम सगल दुरत बिखंडनो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 847

उर धार हर हर पुरख पूरन पारब्रहम निरंजनो॥
भै दूर करता पाप हरता दुसह दुख भव खंडनो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

निरमल काइआ ऊजल हंसा॥ तिस विच नाम निरंजन अंसा॥
सगले दूख अंम्रित कर पीवै बाहुड़ दूख न पाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

सरब निरंजन पुरख सुजाना॥ अदल करे गुर गिआन समाना॥
काम क्रोध लै गरदन मारे हउमै लोभ चुकाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

जन जपिओ नाम निरंजन नरहरि उपदेस गुरू हर प्रीधे॥
जनम जनम की हउमै मल निकसी हर अंम्रित हर जल नीधे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1179

हर सत निरंजन अमर है निरभउ निरवैर निरंकार॥
जिन जपिआ इक मन इक चित तिन लथा हउमै भार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

9.4. हृदय कमल विकसित होता है

सतगुर मत गूढ़ बिमल सतसंगत आतम रंग चलूल भया॥
जाग्या मन कवल सहज परकास्या अभै निरंजन घरह लहा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1396-97

9.5. यम और भय दूर होते हैं

पैज राखहो हर जनह केरी हर देहो नाम निरंजनो॥
अंत चलदिआ होए बेली जमदूत काल निखंजनो॥

सुंदर, आदि ग्रन्थ, पृ. 923

गुरमत लेहो तरहो सच तारी॥ आतम चीनहो रिदै मुरारी॥
जम के फाहे काटह हर जप अकुल निरंजन पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

सेवी सतगुर भाए नाम निरंजना॥ तुध भावै तिवै रजाए भरम भउ भंजना॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 752

9.6. ज्ञान और अनुभव की प्राप्ति

पावन पतित पुनीत नाम निरंजना॥ भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना॥
गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जल थल महीअल पूरिआ॥
इक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसह विसूरिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 456

सरब निरंजन पुरख सुजाना॥ अदल करे गुर गिआन समाना॥
काम क्रोध लै गरदन मारे हउमै लोभ चुकाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

चीनत चीत निरंजन लाइआ॥ कहो कबीर तौ अनभउ पाइआ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 328

9.7. दरगाह (धुरधाम) में मानप्राप्ति

जितने धनवंत कुलवंत मिलखवंत दीसह मन मेरे
सभ बिनस जाहे जिउ रंग कसुंभ कचाण॥
हर सत निरंजन सदा सेव मन मेरे जित हर दरगह पावह तू माण॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 861

भगतां का भोजन हर नाम निरंजन पैन्हण भगति बडाई॥
निज घर वासा सदा हर सेवन हर दर सोभा पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

9.8. मुक्ति की प्राप्ति और चौरासी से छुटकारा

कीरत सूरत मुकत इक नाई॥ तही निरंजन रहिआ समाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

हम थारे त्रिभवण जग तुमरा तू मेरा हउ तेरा॥
सतगुर मिलिऐ निरंजन पाइआ बहुर न भवजल फेरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1255

सोई नाम सिवर नव नाथ निरंजन सिव सनकाद समुधरिआ॥
चवरासीह सिध बुध जित राते अंबरीक भवजल तरिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1393

मेरे मन सेवहो अलख निरंजन नरहरि जित सेविऐ लेखा छुटीऐ॥
जन नानक हर प्रभ पूरे कीए खिन मासा तोल न घटीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 170

कहै कबीर निरजंन धिआवउ॥ तित घर जाउ जे बहुर न आवउ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 327

जीवत मरै मरै फुन जीवै ऐसे सुंन समाइआ॥
अंजन माहे निरंजन रहीऐ बहुड़ न भवजल पाइआ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 332

संकट नही परै जोनि नही आवै नाम निरंजन जा को रे॥
कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुर जा कै माई न बापो रे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 339

९.९. निजघर वासा

हर का नाम निधान है सेविऐ सुख पाई॥
नाम निरंजन उचरां पत सिउ घर जांई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1239

अगम निगम सतगुरू दिखाइआ॥ कर किरपा अपनै घर आइआ॥
अंजन माहे निरंजन जाता जिन कउ नदर तुमारी जीउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1016

९.१०. जीव ज्योति-जोत समा जाता है

हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंन वसावणिआ॥
अंजन माहे निरंजन पाइआ जोती जोत मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

जिस का सा तिन ही मेल लीआ जोती जोत समाइआ॥
नानक नाम निरंजन जपीऐ मिल सतगुर सुख पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 780

सतगुर संत मिलै सांत पाईऐ किलविख दुख काटे सभ दूर॥
आतम जोत भई परफूलित पुरख निरंजन देखिआ हजूर॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1198

पारजात घर आगन मेरै पुहप पत्र तत डाला॥
सरब जोत निरंजन संभू छोडहो बहुत जंजाला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 503

सर्वव्यापक

मालिक सारी रचना का सृजनहार है। वह सृजन के लिए किसी पर निर्भर नहीं, किसी का मुहताज नहीं। उसने अपने हुक्म से सब कुछ रच दिया है। हुक्म से ही अनगिनत सृष्टियाँ बन गईं।

कीता पसाउ एको कवाउ॥ तिस ते होए लख दरीआउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 3

उसने सब कुछ अपने हुक्म से बनाया है और वह आप ही अपनी रचना में समा रहा है। वह हर चीज़ में अपना जलवा दिखा रहा है:

तू हुकमी साजह ख़िसटि साज समावही॥
तेरा रूप न जाई लखिआ किउ तुझह धिआवही॥
तू सभ मह वरतह आप कुदरत देखावही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1095

वह कृत और क्रिया दोनों का करनेवाला है। सब रचना वह आप है। उसके बिना और कुछ नहीं दिखाई देता। वह करण-कारण है:

बिन गोबिंद न दीसै कोई॥ करन करावन करता सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 189

यह सब एक का ही पसारा है। उसको छोड़कर और कोई नज़र नहीं आता। ताना-पेटा सब वही बुन रहा है:

जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार॥
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 292

सभ गोबिंद है सभ गोबिंद है गोबिंद बिन नही कोई॥
सूत एक मणि सत सहंस जैसे ओत पोत प्रभ सोई॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ पृ.485

वह मालिक कहाँ है? सृष्टि की रचना करके वह इससे कहीं अलग नहीं बैठा है। वह तो परम पुरुष है, भाव वह रचना में विश्राम करनेवाला घट-घट का वासी है, व्यापक है। वह अकाल सर्वव्यापक है और सबमें समा रहा है। इसलिए, भटकने की ज़रूरत नहीं, ज़रूरत तो उसको देखनेवाली आँख खोलने की है:

काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहो न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.535

निजी अनुभव के बग़ैर इस अवस्था को ठीक-ठीक समझना कठिन है। हाँ, हम उदाहरण द्वारा कुछ समझने का प्रयास कर सकते हैं। रेडियो की तरंगों की तरह वह हर जगह व्याप्त है और गूँज रहा है। जिनकी चित्तवृत्ति सूक्ष्म होकर उससे जुड़ गई है, वे उसकी आवाज़ को सुन रहे हैं और उसके कमाल (परिपूर्णता) को देख रहे हैं। लकड़ी के अंदर अग्नि और दूध के अंदर घी के समान वह मालिक हर जगह व्याप्त है:

सगल बनसपति मह बैसंतरु सगल दूध मह घीआ॥
ऊच नीच मह जोत समाणी घट घट माधउ जीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.617

दूध के अंदर घी है, पर वह हमें दिखाई नहीं देता। हम शंका करते हैं और कहते हैं कि घी में पूरियाँ तली जा सकती हैं, दूध से यह कार्य नहीं हो सकता। घी से हलवा बन सकता है, दूध से नहीं बन सकता। पर, अगर कोई हमारे सामने दूध को जमा दे, फिर उसको मथकर मक्खन निकाले और उसे गरम करके घी निकालकर दिखाए तो हमें विश्वास हो जाता है कि वास्तव में दूध के अंदर घी है। इसी तरह वह मालिक ऊँच-नीच, सबके अंदर व्याप्त है और महात्मा अभ्यास द्वारा उसको प्रत्यक्ष प्रकट करके दिखा देते हैं:

रतन जवेहर लाल हर नामा गुर काढ तली दिखलाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.880

वह आकाश की तरह हर जगह व्यापक है। जिस तरह घड़े के अंदर और बाहर सब जगह आकाश है, घड़े के टूटने पर उसका कुछ बनता बिगड़ता नहीं, उसी तरह वह मालिक एकरस सर्वव्यापक है, उत्पत्ति और प्रलय द्वारा उसमें कोई कमी-बेशी नहीं होती:

सहस घटा मह एक आकास॥ घट फूटे ते ओही प्रगास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 736

हम सूर्य के उदाहरण से भी कुछ-कुछ समझ सकेंगे। सूर्य जब चढ़ता है, उसकी किरणें चारों ओर फैल जाती हैं और सारे संसार को रोशन कर देती हैं, पर चमगादड़ों को दिखाई नहीं देतीं। इसी तरह वह मालिक घट-घट में, कण-कण में व्याप्त है, पर हमारे बाहरमुखी प्रसार के कारण वह हमें दिखाई नहीं देता:

जिउ पसरी सूरज किरण जोत॥ तिउ घट घट रमईआ ओत पोत॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

वह स्वर्ग, पाताल, मृत्युलोक और भू-मंडल, सबके अंदर समा रहा है:

सुरग पइआल मिरत भूअ मंडल सरब समानो एकै ओही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 207

चौदह भुवनों में और चारों तरफ़ वह प्रभु व्याप्त है, सब लोगों में वह परिपूर्ण है, दसों दिशाओं में वह रम रहा है, धरती और आकाश सबमें उसी का जलवा (शोभा) है। जल, थल, जंगल, पर्वत और पाताल सब उसी के रहने के स्थान हैं। स्थूल तो क्या सूक्ष्म मंडलों में भी वह परमात्मा स्वयं बस रहा है।

चउदह चार कुंट प्रभ आप॥ सगल भवन पूरन परताप॥
दसे दिसा रविआ प्रभ एक॥ धरन अकास सभ मह प्रभ पेख॥
जल थल बन परबत पाताल॥ परमेस्वर तह बसह दइआल॥
सूखम असथूल सगल भगवान॥ नानक गुरमुख ब्रहम पछान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299

गुरु गोबिन्द सिंह जी फ़रमाते हैं कि धरती और आकाश में, सभी जगह उसी एक का नूर समा रहा है, वह सदा एकरस है, वह बढ़ता-घटता नहीं, उसका उतार-चढ़ाव नहीं होता, उसमें जीवों वाला परिवर्तनशील स्वभाव नहीं,

वह समान रूप रहता है। वह सबमें निवास करता है और सबका उसमें निवास है। उसके तेज को परखा नहीं जा सकता। बाइबल में भी कहा गया है कि हम उसी में रहते, चलते, फिरते और अपना अस्तित्व रखते हैं। गुरु गोविन्द सिंह जी फ़रमाते हैं:

ज़िमी ज़मान के बिखै समस्त एक जोत है।
न घाट है न बाढ है न घाट बाढ होत है।
न हान है न बान है समान रूप जानीऐ।
मकीन औ मकान अप्रमान तेज मानीऐ॥

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ.61

वह सच्चा पातशाह है, सबसे श्रेष्ठ है, जंगल, जल, थल, यहाँ, वहाँ हर स्थान पर उस करुणानिधान (दया का ख़ज़ाना) की अपार शोभा है। सारे संसार में उसी का नूर फैल रहा है, धरती-आकाश सब उसी का जाप कर रहे हैं:

बन तन महीप जल थल महान। जह तह प्रसोह करुणानिधान।
जगमगत तेज पूरन प्रताप। अंबर ज़मीन जिह जपत जाप॥

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ.86

दशम गुरु गोबिन्द सिंह जी ने मालिक के सर्वव्यापी होने की क्या अनुपम महिमा गाई है:

जले हरी। थले हरी। उरे हरी। बने हरी॥
गिरे हरी। गुफे हरी। छिते हरी। नभे हरी॥
इहाँ हरी। ऊहाँ हरी। जिमी हरी। जमा हरी॥
अलेख हरी। अभेख हरी। अदोख हरी। अद्वैख हरी॥
अकाल हरी। अपाल हरी। अछेद हरी। अभेद हरी॥
अजंत्र हरी। अमंत्र हरी। सुतेज हरी। अतंत्र हरी॥
अजात हरी। अपात हरी। अमित हरी। अमात हरी॥
अरोग हरी। असोक हरी। अभरम हरी। अकरम हरी॥
अजै हरी। अभै हरी। अभेद हरी। अछेद हरी॥
अखंड हरी। अभंड हरी। अडंड हरी। प्रचंड हरी॥
अतेव हरी। अभेव हरी। अजेव हरी। अछेव हरी॥

भजो हरी। थपो हरी। तपो हरी। जपो हरी॥
जलस तुही। थलस तुही। नदिस तुही। नदस तुही॥
ब्रिछस तुही। पतस तुही। छितस तुही। उरधस तुही॥
भुजस तुअं। भजस तुअं। रटस तुअं। ठटस तुअं॥
जिमी तुही। जमा तुही। मकी तुही। मका तुही॥
अभू तुही। अभै तुही। अछू तुही। अछै तुही॥
जतस तुही। ब्रतस तुही। गतस तुही। मतस तुही॥
तुही तुही। तुही तुही। तुही तुही। तुही तुही॥
तुही तुही। तुही तुही। तुही तुही। तुही तुही॥

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ.38–40

अर्थ: तेरी कृपा से लघु (छोटा) नराज (लघु–दीर्घ के हिसाब वाला) छंद कहता हूँ, "हरि जल में है, हरि थल में है। हरि आसपास है। हरि वनों में है। हरि गिरि (पर्वतों) में है, हरि कंदराओं में है। हरि धरती में है, हरि आकाश में है। हरि यहाँ (इस लोक में) है। हरि वहाँ (परलोक में) है। हरि जमीं और ज़मां (देश–काल) में है। हरि अलेख (लिखने में न आनेवाला) है, हरि अभेष (भेषरहित) है। हरि दोषरहित है, हरि द्वेषरहित है। हरि अकाल, हरि अपाल (किसी के पालन पर निर्भर नहीं) है। हरि अछेध (नाशरहित) हरि अभेद (भेदरहित) है। हरि यंत्रों में नहीं आता, हरि मंत्रों से रहित है, हरि सतेज है, हरि स्वतन्त्र है। हरि जातिरहित है, हरि पतनरहित है। हरि मित्ररहित है, हरि मातृरहित है। हरि नीरोग है, हरि अशोक है, हरि भ्रमरहित है, हरि कर्मरहित है। हरि अजेय है, हरि अभय है, हरि अभेद्य है, हरि अछेद्य है। हरि अखंड है, हरि स्त्रीरहित है। हरि दंडरहित है। हरि प्रचंड (तेज रूप) है, हरि निश्चय पूर्वक है, हरि भेदरहित है। हरि अजित और अविनाशी है। हरि का भजन करो, हरि को धारण करो, हरि का तप करो, हरि का जप करो। तू ही जल में है, तू ही थल में है, नदी भी तू ही और समुद्र भी तू ही है। तू ही वृक्ष रूप है और तू ही पत्ते रूप भी, तू ही धरती रूप है और तू ही आकाश रूप भी। हम तेरे भजन का सुख भोगते हैं, तुझे ही याद करते हैं, तेरी ही शान में रहते हैं। ज़मीन में तू ही है, ज़मान (ज़माने) में भी तू ही है, तू ही मकीन (रहनेवाला) है, तू ही मकान भी है। तू ही अभू (धरतीरहित) और तू ही है अभय, तू ही अस्पर्श तू ही अनाम (नामरहित) तू ही जत रूप (संयमी) है, तू ही ब्रत रूप भी है, तू ही मुक्ति देनेवाला है, तू ही शिक्षा देनेवाला है। चारों युगों में, चारों दिशाओं में तू ही है, तू ही है सर्वत्र तू ही तू है।"

बाइबल (साम्ज़, 139:7–10) में भी बतलाया गया है कि कोई ऐसा स्थान नहीं जहाँ मालिक नहीं है।

> तेरी बादशाहत से कहाँ जाऊँ? तेरी हजूरी (उपस्थिति) से भागकर कहाँ जाऊँ? यदि मैं आसमानों पर चढ़ जाऊँ, तू वहाँ भी मौजूद है। यदि पाताल में अपना डेरा तान लूँ तो तू वहाँ भी है। यदि प्रभात के परों को लेकर समुद्र की गहराइयों में जा बसूँ, वहाँ भी तेरा हाथ मेरा मार्गदर्शन करेगा और तेरा दाहिना हाथ मुझे सहारा देगा।

गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं कि वह प्रभु सदा हमारे साथ है। हम उससे भागकर कहाँ जाएँ? वह आप ही बख़्शे और आप ही छुड़ाए तो हम मुक्ति पा सकते हैं:

> मेरे मन सो प्रभ सदा नाल है सुआमी कहो किथै हर पहो नसीऐ॥
> हर आपे बखस लए प्रभ साचा हर आप छडाए छुटीऐ॥
>
> गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 170

कोई स्थान उससे ख़ाली नहीं, वह अंतर–बाहर जीव के संग है, आदि, मध्य और अंत में वह प्रभु रम रहा है:

> वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाए॥ अंतर बाहर संग है नानक काए दुराए॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 259

> प्रभ पेखत जीवा ठंढी थीवा तिस जेवड अवर न कोई॥
> आद अंत मध प्रभ रविआ जल थल महीअल सोई॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 784

वह हमसे दूर नहीं हमारे अंदर है, वह हमसे अलग नहीं, जहाँ कहीं भी देखें वह वहीं रम रहा है:

> साचउ दूर न जाणीऐ अंतर है सोई॥ जह देखा तह रव रहे किन कीमत होई॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 421

यजुर्वेद में कथन है:

> **स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु ॥**
>
> यजुर्वेद, 32:8

अर्थ: वह सब जगह विद्यमान है, सब प्राणियों में ताने-बाने की भाँति समाया हुआ है।

वह एकंकार माया द्वारा विचित्र रूप धारण कर लेता है और एक से अनेक होकर प्रसार कर रहा है, जल-थल में समा रहा है:

जल थल महीअल पूरिआ सुआमी सिरजनहार॥
अनिक भांत होए पसरिआ नानक एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

अथर्ववेद में आया है:

यदेकं ज्योतिर्बहुधा विभाति।

अथर्ववेद, 13:3:17

अर्थात्, एक ही ज्योति है जो कई प्रकार से चमक रही है। यजुर्वेद में भी कथन है:

... प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः॥

यजुर्वेद, 32:4

उसका मुख हर ओर है और वह सामने खड़ा है। वह कई रूपों में प्रकट हो रहा है। निरंकार और साकार, निर्गुण और सगुण, गुप्त और प्रकट सबके अंदर वही रमा हुआ है। ये सब उसी एक से बने हैं और उसी एक के अनेक रूप होकर प्रकट हो रहे हैं:

निरगुन आप सरगुन भी ओही॥ कला धार जिन सगली मोही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 287

सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आप॥
आपन कीआ नानका आपे ही फिर जाप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 290

सारी सृष्टि की चार श्रेणियाँ हैं: अंडज (जो अंडे से उत्पन्न हो), जरायुज (जो जेर या आँवल में लिपटे हुए पैदा हो), स्वेदज (जो पसीने से उत्पन्न हो) और उदभिज्ज (जो ज़मीन से उत्पन्न हो)। इन सबके अंदर वह व्याप्त है। जितने जीव-जंतु हैं, उनमें और जल-थल में, जहाँ कहीं देखो, वह मालिक नज़र आ रहा है:

अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता॥
एक पुरब मै तेरा देखिआ तू सभना माहे रवंता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.596

जेते जीअ जंत जल थल महीअल जत्र कत्र तू सरब जीआ॥
गुर परसाद राख ले जन कउ हर रस नानक झोल पीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1127

ज्योतिरसि विश्वरूपं।

यजुर्वेद, 5:35

अर्थ: हे परमेश्वर! तू संपूर्ण जगत में व्याप्त ज्योति है।

ईशावास्यमिदं सर्वं।

यजुर्वेद, 40:1

अर्थ: यह संपूर्ण संसार ईश्वर का निवास स्थान है।

सबमें वास करता हुआ भी वह सदा निर्लेप है, सब झंझटों से दूर है:

गुण निधान नानक जस गावै सतगुर भरम चुकाइओ॥
सरब निवासी सदा अलेपा सभ मह रहिआ समाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.617

मोह-माया में फँसे हुए जीव उसे दूर समझते हैं। वह तो सदा 'हाज़िरा-हुज़ूर' (हमेशा मौजूद) है। वह अंदर-बाहर सदा हमारे संग है। वह इतना पास है कि उससे और नज़दीक कोई वस्तु नहीं, वह घट-घट में समा रहा है:

मोह मोहिआ जानै दूर है॥ कहो नानक सदा हदूर है॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.210

वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाए॥ अंतर बाहर संग है नानक काए दुराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.259

जल थल महीअल पूरन सुआमी घट घट रहिआ समाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.778

अंतर बाहर पुरख निरंजन आद पुरख आदेसो॥
घट घट अंतर सरब निरंतर रव रहिआ सच वेसो॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126–27

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च।
यजुर्वेद, 32:11

अर्थः सभी प्राणियों और संपूर्ण लोकों में परमेश्वर पूर्णतया समा रहा है। सब ओर, ऊपर और नीचे, कण–कण में वही व्याप्त है। श्वेताश्वतर उपनिषद् में आया है:

तिलेषु तैलं दधनीव सर्पिराप: स्रोत: स्वरणीषु चाग्निः।
एवमात्मात्मनि गृह्यतेऽसौ सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति॥
श्वेताश्वतर उपनिषद्, 1:15

अर्थः जिस तरह तिलों में तेल, दही में घी, नदियों में पानी और लकड़ी में अग्नि मिलती है, उसी तरह वह परमात्मा आत्मा में मिलता है, पर वह मिलता उसे है जो उसे सत्य और तप के द्वारा देखने का प्रयत्न करता है।

भक्त और भगवान, शिष्य और गुरु, सेवक और स्वामी, राजा और प्रजा के अंदर वह स्वयं विद्यमान है और सबका मालिक है। प्रकृति की सब शक्तियाँ उसी से प्रकट हुईं और उसी के आसरे हैं:

आपे भगता आप सुआमी आपन संग रता॥
नानक को प्रभ पूर रहिओ है पेखिओ जत्र कता॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 498

सरबे एक अनेकै सुआमी सभ घट भुगवै सोई॥
कहे रविदास हाथ पै नेरै सहजे होए सो होई॥
गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 658

वह सबके अंदर व्याप्त है और सदा हमारे अंग–संग है। हम बाहरी पदार्थों में फँसे होने के कारण उसे प्रत्यक्ष देख नहीं सकते। यदि चमगादड़ सूर्य को नहीं देख सकता तो इसमें सूर्य का क्या दोष। वह तो समान रूप से ही चमक रहा है। मालिक सर्वव्यापक है फिर हमें दिखाई नहीं देता? इसका कारण है कि अभी

तक हमारी उसे देख सकने वाली आँख नहीं खुली। वे आँखें और हैं जिनके द्वारा वह हर जगह दिखाई देता है:

नानक से अखड़ीआ बिअंन जिनी डिसंदो मा पिरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1100

जब हम स्वयं सूक्ष्म हो जाएँ तभी सूक्ष्म वस्तुओं को देख सकते हैं। वह मालिक अति सूक्ष्म है, जब तक हम भी अति सूक्ष्म नहीं हो जाते, हमारा मालिक से संबंध पैदा नहीं हो सकता। यह आम सिद्धांत है कि देखने का यंत्र देखी जानेवाली वस्तु के मुताबिक़ होना चाहिए। हमारी आँखें उस रोशनी को नहीं देख सकतीं, जो अत्यंत प्रचंड या अत्यंत मंद है। इसी तरह हम वे आवाज़ें भी नहीं सुन सकते जो हमारे कानों की श्रवण-शक्ति से अधिक या कम हैं। इसलिए, हम विज्ञान के ऐसे यंत्रों का प्रयोग करते हैं जिनके द्वारा हम उन आवाज़ों को सुन सकें। इस प्रकार यंत्रों की सहायता से हम अपने कानों को इतना सूक्ष्म बना लेते हैं कि हम उन सूक्ष्म आवाज़ों को सुन सकें। हम दूर की वस्तुएँ दूरबीन द्वारा और बारीक़ चीज़ें ख़ुर्दबीन द्वारा देख सकते हैं। पर यह तो स्थूल वस्तुओं के देखने का विवरण है। इसी प्रकार सूक्ष्म चीज़ों को देखने के लिए हमारे अंतर के नेत्र का सूक्ष्म होना ज़रूरी है। मालिक अति सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, उसकी प्राप्ति के लिए हमें भी उतना ही सूक्ष्म होना पड़ता है जितना कि वह स्वयं है:

एवड ऊचा होवै कोए॥ तिस ऊचे कउ जाणै सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 5

मालिक अंदर और बाहर सब जगह व्याप्त है, पर जब तक हम अपने अंदर सूक्ष्म नहीं होते, फैलाव से हटते नहीं और जब तक हमारी दृष्टि उतनी सूक्ष्म नहीं हो जाती, हम उसे कभी नहीं देख सकते। यह सूक्ष्म बनना अंतर्मुख अभ्यास द्वारा या जिसे संतजन 'अंदर जाना' कहते हैं, हो सकता है, जिसकी पूर्ण युक्ति गुरु प्रदान करता है। कोई दक्षिण की ओर हरि का निवास मानते हैं तो कोई पश्चिम में अल्लाह का मुक़ाम बताते हैं, पर वह सब जगह है और उसकी तलाश हमें अपने अंदर जाकर करनी पड़ती है:

दखन देस हरी का बासा पछिम अलह मुकामा॥
दिल मह खोज दिलै दिल खोजहो एही ठउर मुकामा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1349

सारा संसार ही उसका रूप है और शिष्य गुरु के आदेश के अनुसार अभ्यास करते-करते अपने अंदर उसके स्वरूप को देखता है:

एह विस संसार तुम देखदे एह हर का रूप है हर रूप नदरी आइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 922

वह गुरु शब्द-रूप होकर सबके अंदर रम रहा है:

सभ मह रव रहिआ सो प्रभ अंतरजामी राम॥
गुर सबद रवै रव रहिआ सो प्रभ मेरा सुआमी राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775

जो सर्वव्यापक है उसका ज्ञान कैसे हो? गुरवाणी बताती है कि जिस पर मालिक दया करके अपना ज्ञान प्रदान करे, वह उसके दर्शनों के योग्य हो सकता है और सतगुरु द्वारा ही वे आँखें खुलती हैं जिनसे घट-घट में, सब जगह वही मनमोहन हरि दिखाई देने लगता है और सब भ्रम दूर हो जाते हैं:

गुरह दिखाइओ लोइना॥ ईतह ऊतह घट घट घट घट तूंही तूंही मोहिना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 407

घट घट अंतर एको हर सोए॥ गुर मिलिऐ इक प्रगट होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

गुण निधान नानक जस गावै सतगुर भरम चुकाइओ॥
सरब निवासी सदा अलेपा सभ मह रहिआ समाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 617

सबके अंदर उसी का नूर है, उसी के तेज से सब जगह प्रकाश है। मुर्शिद (सतगुरु) की हिदायत (उपदेश) से वह नूर दिखाई देने लगता है:

सभ मह जोत जोत है सोए॥ तिस कै चानण सभ मह चानण होए॥
गुर साखी जोत परगट होए॥ जो तिस भावै सो आरती होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 663

पर यह गति किसी गुरुमुख को नसीब होती है:

सूखम असथूल सगल भगवान॥ नानक गुरमुख ब्रहम पछान॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299

सच्चा ज्ञान क्या है? वह है—सबके अंदर उस एक अविनाशी पुरुष को व्याप्त देखना। गीता में भगवान कृष्ण जी यही फ़रमाते हैं:

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्॥
श्रीमद्भगवद्गीता, 18.20

संतजन उसको सबके अंदर समाया हुआ देखकर प्रसन्न होते हैं:

सभ मह रव रहिआ प्रभ एकै पेख पेख नानक बिगसाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1299

सबमें उस परिपूर्ण को देख लेने पर न कोई हमारा शत्रु रहता है, न हम किसी के शत्रु रहते हैं। पर यह ज्ञान सतगुरु से प्राप्त होता है। हम सबको अपना मित्र बना लेते हैं और स्वयं सबके प्रिय बन जाते हैं। दिल से नफ़रत दूर हो जाती है। इस तरह मालिक से मिलाप हो जाता है:

ना को मेरा दुसमन रहिआ ना हम किस के बैराई॥
ब्रहम पसार पसारिओ भीतर सतगुर ते सोझी पाई॥
सभ को मीत हम आपन कीना हम सभना के साजन॥
दूर पराइओ मन का बिरहा ता मेल कीओ मेरै राजन॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 671

गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं कि जब मनुष्य किसी के प्रति बुरे विचार उठाता है तो सब बुराइयाँ उसे ही घेर लेती हैं। पर जब वह मेरा-तेरा के भाव को दूर कर देता है तो उसका कोई दुश्मन नहीं रहता। जब यह कुछ भेदभाव करने लगता है तो इसे दुःख और तकलीफ़ें घेर लेती हैं। पर जब हम उस एक परमात्मा को, जो परिपूर्ण है, पहचान लेते हैं तो हमें हर एक बात की असलियत मालूम हो जाती है:

जब किस कउ इह जानस मंदा॥ तब सगले इस मेलह फंदा॥
मेर तेर जब इनह चुकाई॥ ता ते इस संग नहीं बैराई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 235

जब इन किछ कर माने भेदा॥ तब ते दूख डंड अर खेदा॥
जब इन एको एकी बूझिआ॥ तब ते इस नो सभ किछ सूझिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 235

हमें किसी के साथ वैर नहीं करना चाहिए, किसी को भला-बुरा नहीं कहना चाहिए क्योंकि घट-घट में, जल-थल में, हर जगह वही मालिक समा रहा है:

ववा वैर न करीऐ काहू॥ घट घट अंतर ब्रहम समाहू॥
वासुदेव जल थल मह रविआ॥ गुर प्रसाद विरलै ही गविआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 259

बुरा भला कहो किस नो कहीऐ॥ दीसै ब्रहम गुरमुख सच लहीऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 353

जिसने स्वामी को घट-घट में परख लिया उसका संसार में आना सार्थक है:

जग मह आइआ सो परवाण॥ घट घट अपणा सुआमी जाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

गुरवाणी

1. सब कुछ अपने आप ही है

बिन गोबिंद न दीसै कोई॥ करन करावन करता सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 189

तब इह कहा कमावन परिआ जब इह कछू न होता॥
जब एक निरंजन निरंकार प्रभ सभ किछ आपह करता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 216

जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार॥
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 292

सभ गोबिंद है सभ गोबिंद है गोविंद बिन नही कोई॥
सूत एक मणि सत सहंस जैसे ओत पोत प्रभ सोई॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 485

सरब जोत रूप तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ॥
रारै रूप निरालम बैठा नदर करे विच छाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 351

तूं पेड साख तेरी फूली॥ तूं सूखम होआ असथूली॥
तूं जलनिध तूं फेन बुदबुदा तुध बिन अवर न भालीऐ जीउ॥
तूं सूत मणीए भी तूंहै॥ तूं गंठी मेर सिर तूंहै॥
आद मध अंत प्रभ सोई अवर न कोए दिखालीऐ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 102

करण कारण प्रभ एक है दूसर नाही कोए॥
नानक तिस बलिहारणै जल थल महीअल सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 276

जो पेखा सो सभ किछ सुआमी॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी॥
जो कीनो सो तुमह कराइओ सरण सहाई संतह तना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

2. वह चौदह भुवनों, खंडों-ब्रह्मांडों, जल-थल, चारों कोनों में हर जगह मौजूद है और अनेक प्रकार से व्याप्त हो रहा है

सुरग पइआल मिरत भूअ मंडल सरब समानो एकै ओही॥
सिव सिव करत सगल कर जोरह सरब मइआ ठाकुर तेरी दोही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 207

हर हर मुख ते बोलना मन वूठै सुख होए॥
नानक सभ मह रव रहिआ थान थनंतर सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 260

सुण सुआमी अरदास जन तुम्ह अंतरजामी॥
थान थनंतर रव रहे नानक के सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 819

गुण निधान नानक जस गावै सतगुर भरम चुकाइओ॥
सरब निवासी सदा अलेपा सभ मह रहिआ समाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 617

सिमर सिमर सदा सुख पाईऐ जीवणै का मूल॥
रव रहिआ सरबत ठाई सूखमो असथूल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 987

किउ भ्रमीऐ भ्रम किस का होई॥ जा जल थल महीअल रविआ सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 176

तेरा वरन न जापै रूप न लखीऐ तेरी कुदरत कउन बीचारे॥
जल थल महीअल रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 670

जल थल महीअल पूर रहिआ सरब दाता प्रभ धनी॥
गोपाल गोबिंद अंत नाही बेअंत गुण ता के किआ गनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 704

गुण निधान सुख सागर सुआमी जल थल महीअल सोई॥
जन नानक प्रभ की सरणाई तिस बिन अवर न कोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 782

जल थल महीअल पूरिआ सुआमी सिरजनहार॥
अनिक भांत होए पसरिआ नानक एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

करण कारण प्रभ एक है दूसर नाही कोए॥
नानक तिस बलिहारणै जल थल महीअल सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 276

प्रभ पेखत जीवा ठंढी थीवा तिस जेवड अवर न कोई॥
आद अंत मध प्रभ रविआ जल थल महीअल सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 784

ववा वैर न करीऐ काहू॥ घट घट अंतर ब्रहम समाहू॥
वासुदेव जल थल मह रविआ॥ गुर प्रसाद विरलै ही गविआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.259

अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहो हमारी॥
जल थल महीअल भरपुर लीणा घट घट जोत तुम्हारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.795

बिसम पेखै बिसम सुणीऐ बिसमाद नदरी आइआ॥
जल थल महीअल पूरन सुआमी घट घट रहिआ समाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.778

चार कुंट चउदह भवन सगल बिआपत राम॥
नानक ऊन न देखीऐ पूरन ता के काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.299

चउदह चार कुंट प्रभ आप॥ सगल भवन पूरन परताप॥
दसे दिसा रविआ प्रभ एक॥ धरनि अकास सभ मह प्रभ पेख॥
जल थल बन परबत पाताल॥ परमेस्वर तह बसह दइआल॥
सूखम असथूल सगल भगवान॥ नानक गुरमुख ब्रहम पछान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.299

साचउ दूर न जाणीऐ अंतर है सोई॥
जह देखा तह रव रहे किन कीमत होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.421

वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाए॥ अंतर बाहर संग है नानक काए दुराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.259

पेखन सुनन सुनावनो मन मह द्रिड़ीऐ साच॥
पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हर रंग राच॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.706

पूर रहिओ सरबत्र मह प्रभ गुणी गहीर॥
नानक भगत आनंद मै पेख प्रभ की धीर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.818

हर आराधे जम पंथ साधे दूख न विआपै कोई॥
जल थल महीअल पूरन सुआमी जत देखा तत सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 780

दह दिस पूर रहिआ जस सुआमी कीमत कहण न जाई॥
कहो नानक सतगुर बलिहारी जिन अबिचल नीव रखाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 783

मीत हमारा सोई सुआमी॥ थान थनंतर अंतरजामी॥
सिमर सिमर पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1071-72

तुझ ते बाहर किछू न होए॥ तू कर कर देखह जाणह सोए॥
किआ कहीऐ किछ कही न जाए॥ जो किछ अहै सभ तेरी रजाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1125

तू वड दाता अंतरजामी॥ सभ मह रविआ पूरन प्रभ सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 563

सरबे समाणा आप सुआमी गुरमुख परगट होइआ॥
मिटिआ अधेरा दूख नाठा अमिउ हर रस चोइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 542

मुसलमान का एक खुदाए॥ कबीर का सुआमी रहिआ समाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1160

सभ मह रव रहिआ सो प्रभ अंतरजामी राम॥
गुर सबद रवै रव रहिआ सो प्रभ मेरा सुआमी राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775

हर तिस की आस कीजै मन मेरे जो सभ मह सुआमी रहिआ समाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 859

सरब जोत मह जा की जोत॥ धार रहिओ सुआमी ओत पोत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 294

संकर मउलिओ जोग धिआन॥ कबीर को सुआमी सभ समान॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1193

3. एक ही मालिक सब जगह रमा हुआ है

जल थल महीअल सुआमी सोई॥ अवर न कहीऐ दूजा कोई॥
गुर गिआन अंजन काटिओ भ्रम सगला अवर न दीसै एक विना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

जल थल पूरन अंतरजामी॥ घट घट रविआ अछल सुआमी॥
भरम भीत खोई गुर पूरै एक रविआ सरबंगना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

थान थनंतर एको सुआमी॥ सगल घटा का अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 865

आपह कीआ कराइआ आपह करनै जोग॥
नानक एको रव रहिआ दूसर होआ न होग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

एको हर रविआ स्रब थाए॥ गुर सबदी मिलीऐ मेरी माए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

एको एक रहिआ भरपूर॥ साकत नर लोभी जाणह दूर॥
एको एक वरतै हर लोए॥ नानक हर एको करे सो होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

जह देखउ तह संग एको रव रहिआ॥
घट घट वासी आप विरलै किनै लहिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 458

भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घट घट एक रहिआ भरपूरे॥
नानक सरण परिओ दुख भंजन अंतर बाहर पेख हजूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 825-26

घट घट अंतर एको हर सोए॥ गुर मिलिऐ इक प्रगट होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुर पाइआ॥
घट घट हर प्रभ एको सुआमी गुरमुख अलख लखाइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 772

सरबे एक अनेकै सुआमी सभ घट भुगवै सोई॥
कहे रविदास हाथ पै नेरै सहजे होए सो होई॥
गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 658

आद अंते मध तूहै प्रभ बिना नाही कोए॥
पूर रहिआ सगल मंडल एक सुआमी सोए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 988

करण कारण प्रभ एक है दूसर नाही कोए॥
नानक तिस बलिहारणै जल थल महीअल सोए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 276

4. सारी सृष्टि में रम रहा है

अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता॥
एक पुरब मै तेरा देखिआ तू सभना माहे रवंता॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 596

मन तन रव रहिआ जगजीवन गुर सबदी रंग माणी॥
अंडज जेरज सेतज उतभुज घट घट जोत समाणी॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1109

जेते जीअ जंत जल थल महीअल जत्र कत्र तू सरब जीआ॥
गुर परसाद राख ले जन कउ हर रस नानक झोल पीआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1127

जल थल महीअल पूरनो अपरंपर सोई॥
जीअ जंत प्रतिपालदा जो करे सो होई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1318

सरब जीआ मह एको रवै॥ मनमुख अहंकारी फिर जूनी भवै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 228

रारै रव रहिआ सभ अंतर जेते कीए जंता॥
जंत उपाए धंधै सभ लाए करम होआ तिन नाम लइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.434

कीट हसति मह पूर समाने॥ प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.252

एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घट घट राम समाना रे॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ.988

5. सदा हाज़िर-नाज़िर और हमारे अंग-संग है

मोह मोहिआ जानै दूर है॥ कहो नानक सदा हदूर है॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.210

वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाए॥ अंतर बाहर संग है नानक काए दुराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.259

तू जल थल महीअल सभ तै भरपूर॥ जन नानक हर जप हाजरा हजूर॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1134

तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूर॥
लूक कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूर॥
थान थनंतर रव रहिआ प्रभ मेरा भरपूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.48

रसना रमत सुनत सुख स्रवना चित चेते सुख होई॥
कहो भीखन दुए नैन संतोखे जह देखां तह सोई॥

भीखा साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.659

भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घट घट एक रहिआ भरपूरे॥
नानक सरण परिओ दुख भंजन अंतर बाहर पेख हजूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.825-26

जह देखउ तह संग एको रव रहिआ॥
घट घट वासी आप विरलै किनै लहिआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 458

जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहम सभ ठाए॥
जन कहै नानक सतगुर मिलाइआ हर पाइअड़ा घर आए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 542

जब देखउ प्रभ अपुना सुआमी तउ अवरह चीत न पावउ रे॥
नानक दास प्रभ आप पहिराइआ भ्रम भउ मेट लिखावउ रे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 404

जह जह देखउ तह तह सुआमी कोए न पहुचनहार॥
जो जो करै अवगिआ जन की होए गइआ तत छार॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683

जह देखा तह अंतरजामी॥ निमख न विसरहो प्रभ मेरे सुआमी॥
सिमर सिमर जीवह तेरे दासा बन जल पूरन थालका॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1085

जह जह देखा तह तह सुआमी॥ तू घट घट रविआ अंतरजामी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

साजन मीत सुआमी नेरो॥
पेखत सुनत सभन कै संगे थोरै काज बुरो कह फेरो॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1302

मेरे मन सो प्रभ सदा नाल है सुआमी कहो किथै हर पहो नसीऐ॥
हर आपे बखस लए प्रभ साचा हर आप छडाए छुटीऐ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 170

6. वह अंदर-बाहर घट-घट में समा रहा है

जह भीतर घट भीतर बसिआ बाहर काहे नाही॥
तिन की सार करे नित साहिब सदा चिंत मन माही॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 876

अंतर एको बाहर एको सभ मह एक समाईऐ॥
घट अवघट रविआ सभ ठाई हर पूरन ब्रहम दिखाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

सगल बनसपति मह बैसंतर सगल दूध मह घीआ॥
ऊच नीच मह जोत समाणी घट घट माधउ जीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 617

कहो नानक एक धिआइआ॥ घट घट नदरी आइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 210

ववा वैर न करीऐ काहू॥ घट घट अंतर ब्रहम समाहू॥
वासुदेव जल थल मह रविआ॥ गुर प्रसाद विरलै ही गविआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 259

हेरउ घट घट सगल कै पूर रहे भगवान॥
होवत आए सद सदीव दुख भंजन गुर गिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 260

तूं घट घट अंतर सरब निरंतर जी हर एको पुरख समाणा॥
इक दाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज विडाणा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 348

सद बलिहारे कर नमसकारे जिन भेटत प्रभ जाता॥
घट घट रव रहिआ सभ थाई पूरन पुरख बिधाता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

सरब बिआपित पूरन धनी॥ जा की सोभा घट घट बनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 182

भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घट घट एक रहिआ भरपूरे॥
नानक सरण परिओ दुख भंजन अंतर बाहर पेख हजूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 825-26

तउ परसाद रंग रस माणे॥ घट घट अंतर तुमह समाणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1144

घट घट अंतर एको हर सोए॥ गुर मिलिऐ इक प्रगट होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

मात पिता सुत भ्रात मीत तिस बिन नही कोई॥
घट घट अंतर रव रहिआ जपिअहो जन कोई॥
सगल जपहो गोपाल गुन परगट सभ लोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1318

बिसम पेखै बिसम सुणीऐ बिसमाद नदरी आइआ॥
जल थल महीअल पूरन सुआमी घट घट रहिआ समाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 778

अंतर बाहर पुरख निरंजन आद पुरख आदेसो॥
घट घट अंतर सरब निरंतर रव रहिआ सच वेसो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126-27

हर अगम अगोचर सदा अबिनासी॥ सरबे रव रहिआ घट वासी॥
तिस बिन अवर न कोई दाता हर तिसह सरेवहो प्राणी हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1070

तूं आद पुरख अपरंपर करता तेरा पार न पाइआ जाए जीउ॥
तूं घट घट अंतर सरब निरंतर सभ मह रहिआ समाए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 448

तूं सत परमेसर सदा अबिनासी हर हर गुणी निधान जीउ॥
हर हर प्रभ एको अवर न कोई तूं आपे पुरख सुजान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 448

जह जह देखा तह तह सुआमी॥ तू घट घट रविआ अंतरजामी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

जाचिक जाचै नाम तेरा सुआमी घट घट अंतर सोई रे॥
नानक दास ता की सरणाई जा ते ब्रिथा न कोई रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

तुम सुआमी अगम अथाह तू घट घट पूर रहिआ॥
तू अलख अभेउ अगंम गुर सतगुर बचन लहिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1114

धार अनुग्रह सुआमी मेरे॥ घट घट वसह सभन कै नेरे॥
हाथ हमारै कछूऐ नाही जिस जणाइह तिसै जणावणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1086

घट घट अंतर मेरा सुआमी वूठा॥ नानक नाम पाइआ प्रभ तूठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 563

प्रभ मेरा सुआमी अंतरजामी घट घट रविआ सोई॥
गुरमत सच पाईऐ सहज समाईऐ तिस बिन अवर न कोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775

जल थल पूरन अंतरजामी॥ घट घट रविआ अछल सुआमी॥
भरम भीत खोई गुर पूरै एक रविआ सरबंगना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुर पाइआ॥
घट घट हर प्रभ एको सुआमी गुरमुख अलख लखाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 772

चरन कमल धिआन भीतर घट घटह सुआमी सुझै॥
सरन देव अपार नानक बहुर जम नही लुझै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1122

सरबे घट घट रविआ सुआमी सरब कला कल धारे॥
नानक दासन दास कहत है कर किरपा लेहो उबारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

जग मह आइआ सो परवाण॥ घट घट अपणा सुआमी जाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

हमरी मुद्र नाम हर सुआमी रिद अंतर दुसट दुसटारी॥
जिउ भावै तिउ राखहो सुआमी जन नानक सरण तुम्हारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

जन कै रिद अंतर प्रभ सुआमी जन हर हर नाम भजथई॥
जहा अंती अउसर आए बनत है तह राखै नाम साथई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1320

सरबे एक अनेकै सुआमी सभ घट भुगवै सोई॥
कहे रविदास हाथ पै नेरै सहजे होए सो होई॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 658

7. उसका तन-मन के अंदर निवास है

मिल मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साधसंग मिल गावए॥
नानक के सुआमी धार अनुग्रह मन तन अंक समावए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 80

सिमरह पसु पंखी सभ भूता॥ सिमरह बन परबत अउधूता॥
लता बली साख सभ सिमरह रव रहिआ सुआमी सभ मना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

मन तन वसिआ सचा सोई॥ बिखड़ा थान न दिसै कोई॥
दूत दुसमण सभ सजण होए एको सुआमी आहिआ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107

किआ गुण तेरे आख समाली॥ मन तन अंतर तुध नदर निहाली॥
तूं मेरा मीत साजन मेरा सुआमी तुध बिन अवर न जानणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 132

8. काया-नगरी में हरि (स्वामी) बसता है

काइआ नगर बसत हर सुआमी हर निरभउ निरवैर निरंकारा॥
हर निकट बसत कछु नदर न आवै हर लाधा गुर वीचारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 720

9. वह सबके अंदर है, वह आकाश, सूर्य की किरण और दूध में घी की भाँति सर्वत्र व्याप्त है

सहस घटा मह एक आकास॥ घट फूटे ते ओही प्रगास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 736

जिउ पसरी सूरज किरण जोत॥ तिउ घट घट रमईआ ओत पोत॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

सगल बनसपति मह बैसंतर सगल दूध मह घीआ॥
ऊच नीच मह जोत समाणी घट घट माधउ जीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 617

10. वह निरंकार और साकार, निर्गुण और सगुण, गुप्त और प्रकट, एक और अनेक है

निरंकार आकार आप निरगुन सरगुन एक॥
एकह एक बखाननो नानक एक अनेक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

एकै परगट एकै गुपता एकै धुंधूकारो॥
आद मध अंत प्रभ सोई कहो नानक साच बीचारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1215

जल थल महीअल पूरिआ सुआमी सिरजनहार॥
अनिक भांत होए पसरिआ नानक एकंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

मै नाही प्रभ सभ किछ तेरा॥
ईघै निरगुन ऊघै सरगुन केल करत बिच सुआमी मेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 827

आपे कीतो रचन आपे ही रतिआ॥ आपे होइओ इक आपे बहु भतिआ॥
आपे सभना मंझ आपे बाहरा॥ आपे जाणह दूर आपे ही जाहरा॥
आपे होवह गुपत आपे परगटीऐ॥ कीमत किसै न पाए तेरी थटीऐ॥
गहिर गंभीर अथाह अपार अगणत तूं॥ नानक वरतै इक इको इक तूं॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 966

सभ किछ आपे आप कराए॥ आपे सिर सिर धंधै लाए॥
आपे थाप उथापे वेखै गुरमुख आप बुझाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1061

11. भक्त और भगवान, चेला और गुरु, सेवक और स्वामी, प्रजा और राजा, मूर्ख व पंडित, सब वह स्वयं ही है

आपे भगता आप सुआमी आपन संग रता॥
नानक को प्रभ पूर रहिओ है पेखिओ जत्र कता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 498

आपे गुर चेला है आपे आपे गुणी निधाना॥
जिउ आप चलाए तिवै कोई चालै जिउ हर भावै भगवाना॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 797

आपे लिव धात है आपे॥ आप बुझाए आपे जापे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 797

आपे ठाकुर आपे सेवक सभ आपे आप गोविंदे॥
जन नानक आपे आप सभ वरतै जिउ राखै तिवै रहंदे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 800

नगर मह आप बाहर फुन आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा॥
आपे ही राजन आपे ही राइआ कह कह ठाकुर कह कह चेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 827

एक महल तूं पंडित बकता एक महल खल होता॥
एक महल तूं सभ किछ ग्राहज एक महल कछू न लेता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 206

12. अमीर-ग़रीब और ऊँच-नीच के अंदर वही रम रहा है

तूं घट घट अंतर सरब निरंतर जी हर एको पुरख समाणा॥
इक दाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज विडाणा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 348

सगल बनसपति मह बैसंतर सगल दूध मह घीआ॥
ऊच नीच मह जोत समाणी घट घट माधउ जीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.617

13. वह सर्वनिवासी (सर्वव्यापक) संतों की रसना पर बसता है

सरब निवासी घट घट वासी लेप नही अलपहीअउ॥
नानक कहत सुनहो रे लोगा संत रसन को बसहीअउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.700

14. उसका ज्ञान किस प्रकार हो?

14.1. उसकी अपनी कृपा द्वारा

तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा॥
जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.778

सभ किछ आपे आप कराए॥
आपे सिर सिर धंधै लाए॥
आपे थाप उथापे वेखै गुरमुख आप बुझाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1061

14.2. सतगुरु और शब्द की कमाई द्वारा

सभ मह रव रहिआ सो प्रभ अंतरजामी राम॥
गुर सबद रवै रव रहिआ सो प्रभ मेरा सुआमी राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.775

हर हर निकट वसै सभ जग कै अपरंपर पुरख अतोली॥
हर हर प्रगट कीओ गुर पूरै सिर वेचिओ गुर पह मोली॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.169

बुरा भला कहो किस नो कहीऐ॥
दीसै ब्रहम गुरमुख सच लहीऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.353

गुरह दिखाइओ लोइना॥
ईतह ऊतह घट घट घट घट तूंही तूंही मोहिना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 407

गुण निधान नानक जस गावै सतगुर भरम चुकाइओ॥
सरब निवासी सदा अलेपा सभ मह रहिआ समाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 617

घट घट अंतर एको हर सोए॥ गुर मिलिऐ इक प्रगट होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

सूखम असथूल सगल भगवान॥ नानक गुरमुख ब्रहम पछान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299

तउ परसाद रंग रस माणे॥ घट घट अंतर तुमह समाणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1144

ववा वैर न करीऐ काहू॥ घट घट अंतर ब्रहम समाहू॥
वासुदेव जल थल मह रविआ॥ गुर प्रसाद विरलै ही गविआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 259

15. जिनके अंदर प्रकट है वे बलिहारी जाने योग्य हैं

अगह अगह बेअंत सुआमी नह कीम कीम कीमाए॥
जन नानक तिन कै बल बल जाईऐ जिह घट परगटीआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1139

16. उपदेश

हर अगम अगोचर सदा अबिनासी॥ सरबे रव रहिआ घट वासी॥
तिस बिन अवर न कोई दाता हर तिसह सरेवहो प्राणी हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1070

मात पिता सुत भ्रात मीत तिस बिन नही कोई॥
घट घट अंतर रव रहिआ जपिअहो जन कोई॥
सगल जपहो गोपाल गुन परगट सभ लोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1318

बेपरवाह

कुलमालिक यानी हरि अगम, गंभीर और अथाह है, सब रचना उसी का प्रसार है। अगम पुरुष, अलख पुरुष और सत्पुरुष जो क्रमशः अगम, अलख और सत् लोकों के धनी हैं, उसी के द्वारा अस्तित्व में आए हैं:

लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गंभीर अथाह॥
दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 252

ये दिव्य शक्तियाँ उसी के आधार पर काम कर रही हैं। इनको पुरुष कहकर पुकारते हैं। हरि यानी कुलमालिक को परम पुरुष कहते हैं। इन्हीं पुरुषों में एक पारब्रह्म पुरुष है, जिसके हवाले ब्रह्मांड और पिंड की रचना, सँभाल और विनाश का काम है। करोड़ों ब्रह्मांड उसके आधार पर चल रहे हैं, वे एक-एक ब्रह्म के सुपुर्द हैं। वह करोड़ों ब्रह्मांडों का स्वामी है, दातार है और सबकी सँभाल कर रहा है:

कोट ब्रहमंड को ठाकुर सुआमी सरब जीआ का दाता रे॥
प्रतिपालै नित सार समालै इक गुन नही मूरख जाता रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 612

कुलमालिक या परम पुरुष के दो अंग हैं—एक रचना का कर्ता काल और दूसरा उसकी (रचना की) उलझनों और झंझटों से रहित अकाल या दयाल। इनका वर्णन पहले किया जा चुका है। वह मालिक अपने हुक्म (देखें: 'हुक्म' का प्रकरण) द्वारा संपूर्ण रचना को प्रकट कर उसकी सँभाल कर रहा है और उसके अंदर वह स्वयं प्रकट हो रहा है। यह सब उसी से है और उसी का प्रसार है:

इह जग सचै की है कोठड़ी सचे का विच वास॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 463

पसरिओ आप होए अनत तरंग॥ लखे न जाहे पारब्रहम के रंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 275

निर्मल चेतन लोक और खंड-ब्रह्मांड, सबको वह अपने हुक्म में चला रहा है। क्या इतना काम, जिसकी कल्पना मात्र से बुद्धि चकरा जाती है, उसके लिए कोई भार है? क्या आठों पहर वह इसी की चिंता में रहता है? नहीं-नहीं, वह यह सब कुछ करता हुआ भी फूल की भाँति प्रफुल्लित (खिला हुआ) है और इतने महान कार्य को करते हुए भी स्वयं निर्लेप है। वह 'बेपरवाह', स्वतंत्र और निश्चिंत है। सारी सृष्टि को रचकर और सँभालकर भी वह मुक्त है, सदा आनंदमय है। उसे किसी प्रकार का फ़िक्र या चिंता नहीं, वह सदा प्रफुल्लित रहता है। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं:

हुकमी हुकम चलाए राह॥ नानक विगसै वेपरवाह॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 2

वह बेपरवाह और अगोचर है:

वेपरवाह अगोचर आप॥ आठ पहर मन ता कउ जाप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 896

वह अगम, एकंकार और सर्वत्र व्यापक है (देखें: 'सर्वव्यापक' का प्रकरण):

एको तखत एको पातसाह॥ सरबी थाई वे परवाह॥
तिस का कीआ त्रिभवण सार॥ ओह अगम अगोचर एकंकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

वह सच है, (देखें: 'सच' का प्रकरण) सब पापों और अवगुणों का निवारण करनेवाला है:

वेपरवाह सच मेरा पिआरा॥ किलविख अवगण काटणहारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

वह समर्थ पुरुष है, जो चाहे करे। उसमें मुहताजी (निर्भरता) या कमी नहीं, किसी से पूछने की उसे आवश्यकता नहीं:

हर जो किछ करे सो आपे आपे ओह पूछ न किसै करे बीचार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1135

उसका हुक्म (अमर) बेपरवाह है, उसके साथ कोई सयानापन या चतुराई नहीं चल सकती। उसके आगे सबको अहंभाव छोड़ना और नत-मस्तक हो उसकी इच्छा स्वीकार करनी पड़ती है:

अमर वेपरवाह है तिस नाल सिआणप न चलई न हुजत करणी जाए॥
आप छोड सरणाए पवै मंन लए रजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1251

यदि वह चाहे तो ऊँचे को नीचा और नीचे को ऊँचा करके बादशाह बना दे। जो उसको जान लेते हैं वे उसके दर पर पूर्णतया स्वीकार हो जाते हैं:

ऊचा ते फुन नीच करत है नीच करै सुलतान॥
जिनी जाण सुजाणिआ जग ते पूरे परवाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1329

ऊचे ते नीचा करै नीच खिन मह थापै॥
कीमत कही न जाईऐ ठाकुर परतापै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 813

कबीर साहिब मालिक की बेपरवाही के बारे में फ़रमाते हैं कि जल से थल, थल से कुँआ और कुँओं से पहाड़ करना, धरती से आकाश पर चढ़ाना और चढ़े हुए को गिराना, भिखारी से राजा बनाना और राजा से भीख मँगवाना, वह जो चाहे सो कर सकता है, उसके सम्मुख गुमान करने का स्थान नहीं:

जल ते थल कर थल ते कूआ कूप ते मेर करावै॥
धरती ते आकास चढावै चढे अकास गिरावै॥
भेखारी ते राज करावै राजा ते भेखारी॥
खल मूरख ते पंडित करिबो पंडित ते मुगधारी॥
नारी ते जो पुरख करावै पुरखन ते जो नारी॥
कहो कबीर साधू को प्रीतम तिस मूरत बलिहारी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1252

हरि बेपरवाह है। रचना को देख-देखकर प्रफुल्लित हो रहा है, वह जिसे चाहे अपने मार्ग पर लगा ले, न चाहे वह न लगाए:

हर आपे वेखै विगसै आपे जित भावै तित लाए॥
हर इकना मारग पाए आपे हर इकना उझड़ पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 550

अगर वह दयाल हो और चाहे तो बगुले को हंस बना दे, उसके लिए यह कोई बड़ी बात नहीं:

बगुले ते फुन हंसुला हौवै जे तू करह दइआला॥
प्रणवत नानक दासन दासा दइआ करहो दइआला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

किआ हंस किआ बगुला जा कउ नदर करे॥
जो तिस भावै नानका कागहो हंस करे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 91

वह बेपरवाह है, उसके दर पर उसकी शरण लेने और उसकी बख़्शिश के लिए याचना करने के अलावा छुटकारे का और कोई उपाय नहीं:

लेखै कतह न छूटीऐ खिन खिन भूलनहार॥
बखसनहार बखस लै नानक पार उतार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

हमारे जप और तप की क्या हैसियत (सामर्थ्य) है? अंत में छुटकारा केवल उसकी बख़्शिश पर है। हमारे पापों का कोई अंत नहीं, हमारे त्रिगुणात्मक कर्म-धर्म सब बंधन के कारण हैं। वह मालिक आप ही दया करके हमें अवगुणों के सागर में से निकाल ले, तभी हम डूबते पत्थर तर सकते हैं:

जेता समुंद सागर नीर भरिआ तेते अउगण हमारे॥
दइआ करहो किछ मिहर उपावहो डुबदे पथर तारे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 156

उस बेपरवाह की प्राप्ति और जीव की मुक्ति केवल उसकी दया द्वारा ही संभव है। जिस पर वह दया करता है उसे गुरुमति (गुरु का ज्ञान) प्रदान करता है, जिसके द्वारा जीव को उसका बोध हो सकता है:

ओह वेपरवाह अतोलवा गुरमत कीमत सार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

जब सतगुरु से मिलाप होता है तो उसकी कृपा द्वारा वेपरवाह के साथ प्रेम उत्पन्न होता है:

मीत हमारा वेपरवाहा॥ गुर किरपा ते मोहे असनाहा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

अकथ शब्द को कथ कर उसका मिलाप होता है:

सबदे अकथ कथे सालाहे॥ मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे॥
आपे गुणदाता सबद मिलाए सबदै का रस ताहा हे॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

पर यह प्राप्ति इसी काया के अंदर किसी गुरुमुख को होती है और उसको पाकर निरंतर सुख का लाभ होता है:

काइआ विच तोटा काइआ विच लाहा॥ गुरमुख खोजे वेपरवाहा॥
गुरमुख वणज सदा सुख पाए सहजे सहज मिलाइदा॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1066

गुरु मालिक से अभिन्न है (देखें: 'गुरु' और 'मालिक की एकता' का प्रकरण) इसलिए वह भी बेपरवाह है। साँस-साँस से उसकी सदैव सराहना करो, उसकी शरण में जाने पर सब भय दूर होते हैं:

सास सास जन सदा सलाहे॥ पारब्रहम गुर बेपरवाहे॥
सगल भै मिटे जा की सरन॥ निंदक मार पाए सभ धरन॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 869

मालिक और गुरु एकरूप हैं। जिसको उसका ज्ञान हो जाए वह भी बेरपरवाह, सच्चा शाह और निडर हो जाता है:

जिस चीत आवह सो वेपरवाहा॥ जिस चीत आवह सो साचा साहा॥
जिस चीत आवह तिस भउ केहा अवर कहा किछ कीजा हे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

आगे आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण दिए जा रहे हैं।

ੴ

गुरवाणी

1. वह बेपरवाह कैसा है?

1.1. वह अथाह, अतुल, अगम, अगोचर, सर्वव्यापी और सच्चा है

लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गंभीर अथाह॥
दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 252

तू वेपरवाह अथाह है अतुल किउ तुलीऐ॥
से वडभागी जे तुध धिआइदे जिन सतगुर मिलीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

हर जीउ दाता अगम अथाहा॥
ओस तिल न तमाए वेपरवाहा॥
तिस नो अपड़ न सकै कोई आपे मेल मिलाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1062

वडा साहिब अगम अथाहा॥ किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा॥
काट सिलक जिस मारग पाए सो विच संगत वासा पाइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1076

अगम अगोचर वेपरवाहे॥
आपे मिहरवान अगम अथाहे॥
अपड़ कोए न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1067

सतगुर सेवह से जन साचे॥ जो मर जंमह काचन काचे॥
अगम आगेचर वेपरवाहा भगति वछल अथाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1055

वेपरवाह अगोचर आप॥ आठ पहर मन का कउ जाप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 896

एको तखत एको पातसाह॥ सरबी थाई वेपरवाह॥
तिस का कीआ त्रिभवण सार॥ ओह अगम अगोचर एकंकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

वेपरवाह सच मेरा पिआरा॥ किलविख अवगण काटणहारा॥
प्रेम प्रीत सदा धिआईऐ भै भाए भगति द्रिड़ावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

सचा अमर सचा पातसाह॥ मन साचै राते हर वेपरवाह॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 161

2. वह जो चाहे कर सकता है, वह किसी से नहीं पूछता, उसके साथ कोई सयानापन या चतुराई नहीं चल सकती

ऊचा ते फुन नीच करत है नीच करै सुलतान॥
जिनी जाण सुजाणिआ जग ते पूरे परवाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1329

आपे भांडे साजिअन आपे पूरण दे॥
इकन्ही दुध समाईऐ इक चुल्है रहन्ह चड़े॥
इक निहाली पै सवन्ह इक उपर रहन खड़े॥
तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदर करे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 475

कुम्हारै एक जो माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई॥
काहू मह मोती मुकताहल काहू बिआध लगाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 479

छिन मह राउ रंक कउ करई राउ रंक कर डारे॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 537

सीहा बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह॥
घाह खान तिना मास खवाले एह चलाए राह॥

नदीआ विच टिबे देखाले थली करे असगाह॥
कीड़ा थाप दे पातसाही लसकर करे सुआह॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 144

जल ते थल कर थल ते कूआ कूप ते मेर करावै॥
धरती ते आकास चढावै चढे अकास गिरावै॥
भेखारी ते राज करावै राजा ते भेखारी॥
खल मूरख ते पंडित करिबो पंडित ते मुगधारी॥
नारी ते जो पुरख करावै पुरखन ते जो नारी॥
कहो कबीर साधू को प्रीतम तिस मूरत बलिहारी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1252

जो तेरी सरणागती तिन लैह छडाई॥ नानक वेपरवाह है तिस तिल न तमाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 792

ऊचे ते नीचा करै नीच खिन मह थापै॥
कीमत कही न जाईऐ ठाकुर परतापै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 813

हर जो किछु करे सो आपे आपे ओह पूछ न किसै करे बीचार॥
नानक सो प्रभ सदा धिआईऐ जिन मेलिआ सतगुर किरपा धार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1135

अमर वेपरवाह है तिस नाल सिआणप न चलई न हुजत करणी जाए॥
आप छोड सरणाए पवै मंन लए रजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1251

3. वह अपने हुक्म में सबको चला रहा है

हुकमी हुकम चलाए राह॥ नानक विगसै वेपरवाह॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 2

4. जो मालिक को मंजूर है वही होता है, वह जिसे चाहे उसे दे

चिंता भि आप कराइसी अचिंत भि आपे दे॥
नानक सो सालाहीऐ जे सभना सार करे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1376

अनिक उपाव चितवीअह बहुतेरे सा होवै जे बात होवैनी॥
अपना भला सभ कोई बाछै सो करे जे मेरै चित न चितैनी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 800

बगुले ते फुन हंसुला होवै जे तू करह दइआला॥
प्रणवत नानक दासन दासा दइआ करहो दइआला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

आप भुलाए भुलीऐ आपे मेल मिलाए॥
नानक गुरमुख छुटीऐ जे चलै सतगुर भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1413

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिस नाल॥
इक जागंदे ना लहंन इकना सुतिआ दे उठाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 83

दातै दात रखी हथ अपणै जिस भावै तिस देई॥
नानक नाम रते सुख पाइआ दरगह जापह सेई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 604

हर आपे वेखै विगसै आपे जित भावै तित लाए॥
हर इकना मारग पाए आपे हर इकना उझड़ पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 550

इक भरम भुलाए इक भगती राते तेरा खेल अपारा॥
जित तुध लाए तेहा फल पाइआ तू हुकम चलावणहारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 635

किआ हंस किआ बगुला जा कउ नदर करे॥
जो तिस भावै नानका कागहो हंस करे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 91

जिसह दिखाला वाटड़ी तिसह भुलावै कउण॥
जिसह भुलाई पंध सिर तिसह दिखावै कउण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 952

कहत नानक तू साचा साहिब कउण जाणै तेरे कामां॥
इकना घर मह दे वडिआई इक भरम भवह अभिमाना॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 797

5. उसके बिना दूसरा और कोई नहीं, संत उसी को मुख्य रखते हैं

लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गंभीर अथाह॥
दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 252

संतन अवर न काहू जानी॥
बेपरवाह सदा रंग हर कै जा को पाख सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 711

6. बेपरवाह की प्राप्ति किस प्रकार होती है?

6.1. मालिक की दया से

वडी वडिआई वेपरवाहे॥ आप उपाए दान समाहे॥
आप दइआल दूर नही दाता मिलिआ सहज रजाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1025

हुकमै बूझै सो हुकम सलाहे॥ अगम अगोचर वेपरवाहे॥
जेही मत देह सो होवै तू आपे सबद बुझाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1061

मेरा प्रभ वेपरवाह है ना तिस तिल न तमाए॥
नानक तिस सरणाई भज पउ आपे बखस मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 995

हर जीउ दाता अगम अथाहा॥ ओस तिल न तमाए वेपरवाहा॥
तिस नो अपड़ न सकै कोई आपे मेल मिलाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1062

6.2. हुक्म, शब्द या नाम द्वारा

हुकमै बूझै सो हुकम सलाहे॥ अगम अगोचर वेपरवाहे॥
जेही मत देह सो होवै तू आपे सबद बुझाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1061

अगम अगोचर वेपरवाहे॥ आपे मिहरवान अगम अथाहे॥
अपड़ कोए न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1067

सबदे अकथ कथे सालाहे॥ मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे॥
आपे गुणदाता सबद मिलाए सबदै का रस ताहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

सबद बुझाए सतगुर पूरा॥ सरब कला साचे भरपूरा॥
अफरिओ वेपरवाह सदा तू ना तिस तिल न तमाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1021

चीत न आवस दूजी बाता सिर ऊपर रखवारा॥
बेपरवाह रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884

6.3. गुरुमत, सतगुरु और सत्संग के द्वारा

त्रिसना अहिनिस अगली हउमै रोग विकार॥
ओह वेपरवाह अतोलवा गुरमत कीमत सार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

मीत हमारा वेपरवाहा॥ गुर किरपा ते मोहे असनाहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

तू वेपरवाह अथाह है अतुल किउ तुलीऐ॥
से वडभागी जे तुध धिआइदे जिन सतगुर मिलीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

हर जो किछ करे सो आपे आपे ओह पूछ न किसै करे बीचार॥
नानक सो प्रभ सदा धिआईऐ जिन मेलिआ सतगुर किरपा धार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1135

सबद बुझाए सतगुर पूरा॥ सरब कला साचे भरपूरा॥
अफरिओ वेपरवाह सदा तू ना तिस तिल न तमाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1021

वडा साहिब अगम अथाहा॥ किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा॥
काट सिलक जिस मारग पाए सो विच संगत वासा पाइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1076

6.4. किसी गुरुमुख को मिलता है

काइआ विच तोटा काइआ विच लाहा॥ गुरमुख खोजे वेपरवाहा॥
गुरमुख वणज सदा सुख पाए सहजे सहज मिलाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1066

कीमत पाई पावणहारै॥ वेपरवाह पूरे भंडारै॥
सरब कला ले आपे रहिआ गुरमुख किसै बुझाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1036

7. बेपरवाह कहाँ मिलता है?

7.1. काया के अंदर

काइआ विच तोटा काइआ विच लाहा॥ गुरमुख खोजे वेपरवाहा॥
गुरमुख वणज सदा सुख पाए सहजे सहज मिलाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1066

8. बेपरवाह की प्राप्ति के फल

8.1. सुख और रस की प्राप्ति

सरम पई नाराइणै नानक दर पईआह॥
पोख सुहंदा सरब सुख जिस बखसे वेपरवाह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 135

वेपरवाह अनंद मै नाउ माणक हीरा॥
रजी धाई सदा सुख जा का तूं मीरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

अंम्रित जिन्हा चखाइओन रस आइआ सहज सुभाए॥
सचा वेपरवाह है तिस नो तिल न तमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 428

8.2. पाप और अवगुण नष्ट होते हैं और तृप्ति होती है

वेपरवाह सच मेरा पिआरा॥ किलविख अवगण काटणहारा॥
प्रेम प्रीत सदा धिआईऐ भै भाए भगति द्रिड़ावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

हर प्रभ वेपरवाह है कित खाधै तिपताए॥
सतगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हर गुण गाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414

8.3. गुरु बेपरवाह है, उसकी शरण में भय और यम के फंदे कट जाते हैं

सास सास जन सदा सलाहे॥ पारब्रहम गुर बेपरवाहे॥
सगल भै मिटे जा की सरन॥ निंदक मार पाए सभ धरन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 869

सतगुर वेपरवाह सिरंदा॥ ना जम काण न छंदा बंदा॥
जो तिस सेवे सो अबिनासी ना तिस काल संताई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1024

9. जिसको उसका ज्ञान हो जाए वह भी बेपरवाह, सच्चा शाह और निर्भय हो जाता है

जिस चीत आवह सो वेपरवाहा॥ जिस चीत आवह सो साचा साहा॥
जिस चीत आवह तिस भउ केहा अवर कहा किछ कीजा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ॥ अठी वेपरवाह रहन इकतै रंग॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 146

10. प्रार्थना

सुण नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे॥
किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 243

सच

ੴ

गुरवाणी में सच का स्थान-स्थान पर उल्लेख आया है। आम लोग यह समझते हैं कि इसका मतलब सच बोलना है। सच बोलना सतोगुण का अंग है और परमार्थ में महत्त्वपूर्ण है, पर गुरवाणी की खोज से पता चलता है कि गुरु साहिबान ने 'सच' का प्रयोग सत्पुरुष के लिए किया है, जो सबका कर्ता है:

नानक साचे कउ सच जाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 15

सच करता सच करणहार सच साहिब सच टेक॥
सचो सच वखाणीऐ सचो बुध बिबेक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

जिस प्रकार अकालपुरुष वाहिगुरु, अनादि और अनंत है, उसी प्रकार सच का भी न आदि है, न अंत। जप जी साहिब में स्पष्ट बताया गया है:

आद सच जुगाद सच॥ है भी सच नानक होसी भी सच॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

इसलिए सच ख़ुद सच्चे मालिक कर्तापुरुष का ही नाम है। जो गुण वाहिगुरु (परमात्मा) में माने गए हैं, सच में भी उन्हीं गुणों का वर्णन किया गया है। गुरु साहिबान ने सच का शब्द, नाम या वाणी कहकर भी वर्णन किया है:

सच बाणी सच सबद है जा सच धरे पिआर॥
हर का नाम मन वसै हउमै क्रोध निवार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

ओना अंदर नाम निधान है नामो परगट होए॥
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंड सदा सच सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 17

सच अंदर और बाहर है, सच हमेशा ही है:

बाणी वजी चहु जुगी सचो सच सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घट घट सच भरपूर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

अंदर विधा सच नाए बाहर भी सच डिठोम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 966

सच वर्णों–चिह्नों से रहित है, वह लिखने–पढ़ने में नहीं आ सकता:

वरना चिहना बाहरा कीमत कह न सकाउ॥
नानक कउ प्रभ मइआ कर सच देवहो अपुणा नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

सच सरा गुड़ बाहरा जिस विच सचा नाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 15–16

सच तीनों लोकों से परे है:

ऊपर आद सरब तिहु लोई सच नानक अंम्रित रस पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042

सच, हरि और सतगुरु एक ही है:

मेरे राम मै हर बिन अवर न कोए॥
सतगुर सच प्रभ निरमला सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

यह सच सर्वव्यापी है और सबका पालन करता है:

एको सच वरतै सभ अंतर सभना करे प्रतिपाला॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 559

सभो सच सच सच वरतै गुरमुख कोई जाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

यह सच सतगुरु से मिलने और उसके आदेश में चलने से मिलता है, गुरु की कृपा द्वारा ही यह हमारे अंदर बस सकता है:

बाझ गुरू गुबार है बिन सबदै बूझ न पाए॥
गुरमती परगास होए सच रहै लिव लाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

नानक सतगुर मिलिऐ हउमै गई ता सच वसिआ मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 560

आपे प्रभू दइआल है आपे दे बुझाए॥
गुरमती सद मन वसिआ सच रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

सचा साहिब सेवीऐ सच वडिआई दे॥
गुर परसादी मन वसै हउमै दूर करे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

यह सच किस प्रकार की हृदयरूपी धरती में प्रकट होता है, इस बारे में गुरबाणी में कहा गया है:

आप सुजाण न भुलई सचा वड किरसाण॥
पहिला धरती साध कै सच नाम दे दाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

सच ता पर जाणीऐ जा सिख सची ले॥
दइआ जाणै जीअ की किछ पुंन दान करे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 468

यह सच माया से रहित आत्मिक मंडलों में ही प्रकट होता है:

सच तां पर जाणीऐ जा आतम तीरथ करे निवास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.468

सच की प्राप्ति गुरुमुख बनकर ही हो सकती है:

गुरमुख सच संजम तत गिआन॥ गुरमुख साचे लगै धिआन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.559

गुरवाणी बताती है कि जिन्होंने इस सच को जान लिया है वे सच्चे हैं, वे सच का ही विचार करते हैं, सच का ही ध्यान और सिमरन करते हैं:

जिनी सच जाता से सचे होए अनदिन सच धिआइन॥
नानक सच नाम जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ दुख पाइन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.769

सच धिआइन से सचे गुर सबद वीचारी॥
हउमै मार मन निरमला हर नाम उर धारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.788

से जन साचे जिनी साच पछाणिआ॥ आप मार सहजे नाम समाणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1174

सच की कमाई के अनेक फलों का गुरवाणी में वर्णन है। इससे मनुष्य सुखी और निर्भय हो जाता है:

जिनी सच पछाणिआ से सुखीए जुग चार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.55

मन रे सच मिलै भउ जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.18

सच के अभ्यास से मालिक हृदय में बस जाता है और उदासीनता प्राप्त होती है:

जिनी सच पछाणिआ सच रते भरपूर॥
गुर सबदी मन बेधिआ प्रभ मिलिआ आप हदूर॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

सच सिमरिऐ होवै परगास॥ ता ते बिखिआ मह रहै उदास॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 661

और अंत में सच द्वारा वह भवसागर से पार उतर जाता है:

प्रीत लगी तिस सच सिउ मरै न आवै जाए॥
ना वेछोड़िआ विछुड़े सभ मह रहिआ समाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

यह सच मालिक मिलाए तभी मिल सकता है। सच के मिलने का ज़रिया सतगुरु है जो स्वयं सच से अभिन्न है, पर ऐसा गुरु भाग्य से ही मिलता है। सच के मिलाप से जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से आज़ाद, निर्लेप और निर्भय हो जाता है, काल के जाल से निकलकर संसार सागर को तर जाता है और मालिक के दर पर पूर्ण शोभा पाता है। वे धन्य हैं जिन्होंने सतगुरु से मिलकर सच को पाकर उस एक मालिक को पहचान लिया है:

सतगुर विटहो वारिआ जिन दिता सच नाउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

मुठड़े सेई साथ जिनी सच न लदिआ॥
नानक से साबास जिनी गुर मिल इक पछाणिआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 319

आगे आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण देखें।

गुरबाणी

1. सच क्या है?

1.1. सच कुलमालिक है, कर्ता है

नानक साचे कउ सच जाण॥
जित सेविऐ सुख पाईऐ तेरी दरगह चलै माण॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 15

तू सचा साहिब आप है सच साह हमारे॥
सच पूजी नाम द्रिड़ाए प्रभ वणजारे थारे॥
सच सेवह सच वणंज लैह गुण कथह निरारे॥
सेवक भाए से जन मिले गुर सबद सवारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 308

सच करता सच करणहार सच साहिब सच टेक॥
सचो सच वखाणीऐ सचो बुध बिबेक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

प्रभ की सरन उबरै सभ कोए॥ करन करावन पूरन सच सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 202

सच पातसाही अमर सच सचे सचा थान॥
सची कुदरत धारीअन सच सिरजिओन जहान॥
नानक जपीऐ सच नाम हउ सदा सदा कुरबान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 48

इह सच सभना का खसम है जिस बखसे जो जन पावहे॥
कहै नानक सच सोहिला सचै घर गावहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 922

सच की काती सच सभ सार॥ घाड़त तिस की अपर अपार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 956

1.2. सच पढ़ने-लिखने और कहने-सुनने से परे है

सच सरा गुड़ बाहरा जिस विच सचा नाउ॥
सुणह बखाणह जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 15-16

वरना चिहना बाहरा कीमत कह न सकाउ॥
नानक कउ प्रभ मइआ कर सच देवहो अपुणा नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

कहिओ न जाई एह अचंभउ सो जानै जिन चाखिआ॥
कहो नानक सच भए बिगासा गुर निधान रिदै लै राखिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 215

सच अलख विडाणी ता की गति कही न जाए॥
कहै नानक अंम्रित नाम सुणहो पवित्र होवहो साचै सुणणै नो पठाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 922

1.3. सच वाणी, शब्द, अमर और हुक्म है, वह मालिक से मिलने का साधन है

सच बाणी सच सबद है जा सच धरे पिआर॥
हर का नाम मन वसै हउमै क्रोध निवार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

गुर का सबद अंम्रित है जित पीतै तिख जाए॥
इह मन साचा सच रता सचे रहिआ समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

आखण वेखण बोलणा सबदे रहिआ समाए॥
बाणी वजी चहु जुगी सचो सच सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

ओना अंदर नाम निधान है नामो परगट होए॥
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंड सदा सच सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 17

जो किछ वरतै सभ तेरा भाणा॥ हुकम बूझै सो सच समाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 193

सचा नाम धिआईऐ सभो वरतै सच॥
नानक हुकम बुझ परवाण होए ता फल पावै सच॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 509

तिना अनंद सदा सुख है जिना सच नाम आधार॥
गुर सबदी सच पाइआ दूख निवारणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36

मेरे राम मै हर बिन अवर न कोए॥
सतगुर सच प्रभ निरमला सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

नाम नव निध पाई घर ही माहे॥ सदा रंग राते सच समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1175

सुण सुण मंन वसाईऐ बूझै जन कोई॥
बहदिआ उठदिआ न विसरै साचा सच सोई॥

—गुरू रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1239

सची भगति करह दिन राती सच रहे लिव लाए॥
सदा सच हर वेखदे गुर कै सबद सुभाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

1.4. सच नित नया है

सच पुराणा ना थीऐ नाम न मैला होए॥
गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ न आवण होए॥
नानक नाम विसारिऐ आवण जाणा दोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248

1.5. सच और गुरु एक ही है

मै गरीब सच टेक तूं मेरे सतगुर पूरे॥ देख तुम्हारा दरसनो मेरा मन धीरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 398

मेरे राम मै हर बिन अवर न कोए॥
सतगुर सच प्रभ निरमला सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

1.6. सच्चे कौन हैं?

जिनी सच जाता से सचे होए अनदिन सच धिआइन॥
नानक सच नाम जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ दुख पाइन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 769

सचिआरी सच संचिआ साचउ नाम अमोल॥
हर निरमाइल ऊजलो पत साची सच बोल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 937

सच धिआइन से सचे गुर सबद वीचारी॥
हउमै मार मन निरमला हर नाम उर धारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 788

जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभ कोए॥
गुरमुख कार कमावणी सच घट परगट होए॥
अंतर जिस कै सच वसै सचे सची सोए॥
सच मिले से न विछुड़ह तिन निज घर वासा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

मुख सचे सच दाड़ीआ सच बोलह सच कमाहे॥
सचा सबद मन वसिआ सतगुर मांहे समांहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1419

सच सलाहन से सचे सचा नाम अधार॥
सची कार कमावणी सचे नाल पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

से जन साचे जिनी साच पछाणिआ॥
आप मार सहजे नाम समाणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

साच रिदै सच प्रेम निवास॥ प्रणवत नानक हम ता के दास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 224

तेरी भगति न छोडउ किआ को हसै॥ साच नाम मेरै हिरदै वसै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1170

2. सच कहाँ है?

2.1. सच तीनों लोकों से परे है

आद सच जुगाद सच॥ है भी सच नानक होसी भी सच॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

अंतर बाहर सो प्रभ जाणै॥ रहै अलिपत चलते घर आणी॥
ऊपर आद सरब तिहु लोई सच नानक अंम्रित रस पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1042

2.2. सच अंदर है

जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घट घट सच भरपूर॥
आपे मेल मिलावही साचै महल हदूर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.20

सच थान सच बैठका सच सुआउ वणाइआ॥
सच पूंजी सच वखरो नानक घर पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1002

एको सच वरतै सभ अंतर सभना करे प्रतिपाला॥
नानक इकस बिन मै अवर न जाणा सभना दीवान दइआला॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.559

2.3. सच सब जगह है

सभो सच सच सच वरतै गुरमुख कोई जाणै॥
जंमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुख आप पछाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.754

इह जग सचै की है कोठड़ी सचे का विच वास॥
इकन्हा हुकम समाए लए इकन्हा हुकमे करे विणास॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ.463

2.4. सब अंदर और बाहर है

अंदर विधा सच नाए बाहर भी सच डिठोम॥
नानक रविआ हभ थाए वण त्रिण त्रिभवण रोम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.966

3. सच का मिलाप

3.1. मालिक मिलाए तो सच मिलता है

आप मिलावै सच ता मन भावई॥ चलै सदा रजाए अंक समावई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.420

इक आपे बखस मिलाइअन अनदिन नामे लाए॥
सच कमावह सच रहहे सचे सच समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 429

जिस नदर करे सोई सच लागै रसना राम रवीजै॥
नानक नाम रते से निरमल होर हउमै मैल भरीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 570

सच सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोए॥
नदर करे जिस आपणी भाई तिस परापत होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 609

सच रते से निरमले हउमै तज विकारा॥
जिस तू मेलह सो तुध मिलै सोई सचिआरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 786

जा कउ राखै अपणी सरणाई॥
साचे लागै साचा फल पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1128

साचे लाए तउ सच लागे साचे के बिउहारी॥
साची बसत के भार चलाए पहुचे जाए भंडारी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1123

गुरमुख आप वीचारीऐ लगै सच पिआर॥
नानक किस नो आखीऐ आपे देवणहार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1283

आपे सच भावै तिस सच॥ अंधा कचा कच निकच॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 25

आवण जाणा रह गइआ आप होआ मिहरवान॥
सच महल घर पाइआ गुर का सबद पछाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

इकनै भांडे साजिऐ इक चानण तिहु लोए॥
करम मिलै सच पाईऐ धुर बखस न मेटै कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62

साच रते भगत इक रंगी दूजा रंग न कोई॥
नानक जिस कउ मसतक लिखिआ तिस सच परापत होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 769

3.2. जिसको हरि बख़्शता है और जिसके अंदर सच है, उससे सच मिल सकता है

जिस नो हर भगति सच बखसीअन सो सचा साहु॥
तिस की मुहताजी लोक कढदा होरत हट न वथ न वेसाहु॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 852

जिस दै अंदर सच है सो सचा नाम मुख सच अलाए॥
ओह हर मारग आप चलदा होरना नो हर मारग पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 140

सचे दै दर जाए सच चवांईऐ॥ सचै अंदर महल सच बुलाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 145

3.3. सच साध, संत, गुरु से मिलता है

हर जी सचा सच तू सभ किछ तेरै चीरै॥
लख चउरासीह तरसदे फिरे बिन गुर भेटे पीरै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

बाझ गुरू गुबार है बिन सबदै बूझ न पाए॥
गुरमती परगास होए सच रहै लिव लाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

जग बिनसत हम देखिआ लोभे अहंकारा॥
गुर सेवा प्रभ पाइआ सच मुकत दुआरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 228

सेई साह भगवंत से सच संपै हर रास॥
नानक सच सुच पाईऐ तिह संतन कै पास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

डेरा निहचल सच साधसंग पाइआ॥
नानक ते जन नह डोलाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 256

अंधे चानण ता थीऐ जा सतगुर मिलै रजाए॥
बंधन तोड़ै सच वसै अगिआन अधेरा जाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 551

नानक सतगुर मिलिऐ हउमै गई ता सच वसिआ मन आए॥
सच कमावै सच रहै सचे सेव समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 560

घोखे मुनि जन सिंम्रिति पुरानां बेद पुकारह घोख॥
क्रिपा सिंध सेव सच पाईऐ दोवै सुहेले लोक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682

सच सहज अनद सतगुरू पास सची गुर मणीआ॥
नानक संत सवारे पारब्रहम सचे जिउ बणिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 854

नानक करम होवै जपीऐ कर गुर पीर॥ सच समावै एह सरीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1257

सची दरगह बैसणा सचे माहे समाहे॥
नानक विण सतगुर सच न पाईऐ मनमुख भूले जांहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1419

सच वणजह सच सेवदे जे गुरमुख पैरी पाहे॥
नानक गुर कै भाणै जे चलह सहजे सच समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

जो सच राते तिन बहुड़ न फेरा॥ नानक नाम द्रिड़ाए पूरा गुर मेरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.798

बिन गुर महल न पाईऐ नाम न परापत होए॥
ऐसा सतगुर लोड़ लहो जिदू पाईऐ सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.30

जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बल जाउ॥
दर सचै सची वडिआई सहजे सच समाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.31

सचा साहु वरतदा कोए न मेटणहार॥
मनमुख महल न पाइनी कूड़ मुठे कूड़िआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.34

सतगुर सेवह ता उबरह सच रखह उर धार॥
किरपा ते हर पाईऐ सच सबद वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.34

मसतक काट धरी तिस आगै तन मन आगै देउ॥
नानक संत मिलै सच पाईऐ सहज भाए जस लेउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.938

3.4. गुरुमत द्वारा (गुरु के ज्ञान द्वारा) सच मिलता है

गुरमती सच सलाहणा जिस दा अंत न पारावार॥
घट घट आपे हुकम वसै हुकमे करे बीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.37

आपे प्रभू दइआल है आपे दे बुझाए॥
गुरमती सद मन वसिआ सच रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.37

सची कारै सच मिलै गुरमत पलै पाए॥
सो नर जंमै ना मरै ना आवै ना जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.19

3.5. गुरु की कृपा द्वारा सच मिलता है

सचा साहिब सेवीऐ सच वडिआई दे॥
गुर परसादी मन वसै हउमै दूर करे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

सबद मरै ता उधरै पाए मोख दुआर॥
गुर परसादी मिल रहै सच नाम करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

सतगुर होए दइआल ता नव निध पाईऐ॥
सतगुर होए दइआल त सच समाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 149

रसना हर रस चाखिआ सहज सुभाए॥ गुर किरपा ते सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 158

3.6. ऐसा सतगुरु भाग्य से ही मिलता है

आवहो मिलहो सहेलीहो मै पिर देहो मिलाए॥
पूरै भाग सतगुर मिलै पिर पाइआ सच समाए॥...
जिनी इक पछाणिआ दूजा भाउ चुकाए॥
गुरमुख नाम पछाणीऐ नानक सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

3.7. गुरुमुखों को सच की प्राप्ति होती है

गुरमुख वसत वेसाहीऐ सच वखर सच रास॥
जिनी सच वणंजिआ गुर पूरे साबास॥
नानक वसत पछाणसी सच सउदा जिस पास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

गुरमुख सच संजम तत गिआन॥ गुरमुख साचे लगै धिआन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 559

गुरमुख सबद सच करणी सार॥ गुरमुख नानक परवारै साधार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 560

सच सचे के जन भगत हहे सच सचा जिनी अराधिआ॥
जिन गुरमुख खोज ढंढोलिआ तिन अंदरहो ही सच लाधिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.313

4. सच के गुण

4.1. क्रोध, माया, ममता का नाश होता है, दु:ख व पाप दूर होते हैं और सुख मिलता है

धंधा थका हउ मुई ममता माइआ क्रोध॥
करम मिलै सच पाईऐ गुरमुख सदा निरोध॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.19

सच सलाही सच लगा सचै नाए त्रिपत होए॥
गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.37

सच सभना होए दारू पाप कढै धोए॥ नानक वखाणै बेनती जिन सच पलै होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.468

हर जीउ बखसे बखस लए सूख सदा सरीरै॥
गुर परसादी सेव करी सच गहिर गंभीरै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.38

जिस सरब सुखा फल लोड़ीअह सो सच कमावउ॥
नेड़ै देखउ पारब्रहम इक नाम धिआवउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.322

म्रिग तिसना पेख भुलणे वुठे नगर गंध्रब॥
जिनी सच अराधिआ नानक मन तन फब॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1425

सच वेखण सच बोलणा तन मन सचा होए॥
सची साखी उपदेस सच सचे सची सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.69

तू आपे आप निरंकार है निरंजन हर राइआ॥
जिनी तू इक मन सच धिआइआ तिन का सभ दुख गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.301

जिनी सच पछाणिआ से सुखीए जुग चार॥
हउमै त्रिसना मार कै सच रखिआ उर धार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

मिल प्रीतम सुख पाए सच समाए सच वरतै सभ थाई॥
सचा सीगार करे दिन राती कामण सच समाई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 770

सच साहिब सचा निआउ है सिर निंदक छाई॥
जन नानक सच अराधिआ गुरमुख सुख पाई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 851

जिन सच सेविआ तिन रस पाइआ॥
नानक सहजे नाम समाइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

तुम्ह साच धिआवहो मुगध मना॥ तां सुख पावहो मेरे मना॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1176

4.2. संतोष और तृप्ति होती है, जीव निर्मल होता है और छिपाने से छिप नहीं सकता

लाल गुलाल गहबरा सचा रंग चड़ाउ॥
सच मिलै संतोखीआ हर जप एकै भाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

हर रस पी संतोख होआ सच वसिआ मन आए॥
सच धिआए अमरा पद पाइआ अनहद सबद बजाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 850

मंगणा त सच इक जिस तुस देवै आप॥
जित खाधै मन त्रिपतीऐ नानक साहिब दात॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 321

हउ आख सलाही सिफत सच सच सचे की वडिआई॥
सालाही सच सलाह सच सच कीमत किनै न पाई॥
सच सचा रस जिनी चखिआ से त्रिपत रहे आघाई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 310–11

जिनी गुरमुख नाम धिआइआ विचहो आप गवाए॥
ओए अंदरहो बाहरहो निरमले सचे सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.28

तन सूचा सो आखीऐ जिस मह साचा नाउ॥
भै सच राती देहुरी जिहवा सच सुआउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.19

ऐसा भगउती उतम होए॥ नानक सच समावै सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.88

काइआ कूड़ विगाड़ काहे नाईऐ॥ नाता सो परवाण सच कमाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.565

सचो दह दिस पसरिआ गुर कै सहज सुभाए॥
नानक जिन अंदर सच है से जन छपह न किसै दे छपाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.850

4.3. भय दूर होता है

मन रे सच मिलै भउ जाए॥
भै बिन निरभउ किउ थीऐ गुरमुख सबद समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.18

तूं सचा आप निआउ सच ता डरीऐ केत॥
जिना नानक सच पछाणिआ से सच रलेत॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.84

4.4. सच के साथ लगन लगानेवाला घर में ही उदासीन रहता है, मालिक उसके अंतर में हाज़िर-हुज़ूर है और वह ज़िंदा है

मन रे ग्रिह ही माहे उदास॥
सच संजम करणी सो करे गुरमुख होए परगास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.26

सुखा सिर सदा सुख होए जा विचहो आप गवाए॥
गुरमुख उदासी सो करे जे सच रहै लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.588

सच सिमरिऐ होवै परगास॥ ता ते बिखिआ मह रहै उदास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 661

हउमै मेरा रह गइआ सचै लइआ मिलाए॥
तिन कउ महल हदूर है जो सच रहे लिव लाए॥

गुरु अमर दास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

जिनी सच पछाणिआ सच रते भरपूर॥
गुर सबदी मन बेधिआ प्रभ मिलिआ आप हदूर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

से जन जीवे जिन हर मन माहे॥ साच सम्हालहे साच समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1172

अहिनिस अंतर रहै लिव लाए॥ सोई पुरख जे सच समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1256

4.5. जीव संसार सागर तर जाता है जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है

नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचार॥
इक आवह इक जावही पूर भरे अहंकार॥
मनहठ मती बूडीऐ गुरमुख सच सो तार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

सभ जग बाधो काल को बिन गुर काल अफार॥
सच रते से उबरे दुबिधा छोड विकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

सची कारै सच मिलै गुरमत पलै पाए॥ सो नर जंमै ना मरै ना आवै ना जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

प्रीत लगी तिस सच सिउ मरै न आवै जाए॥
ना वेछोड़िआ विछुडै सभ मह रहिआ समाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

आपे रंगण रंगिओन सबदे लइओन मिलाए॥
सचा रंग न उतरै जो सच रते लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

4.6. वह मालिक के दर पर शोभा पाता है और उससे कभी बिछुड़ता नहीं

जे प्रभ सालाहे आपणा सो सोभा पाए॥
हउमै विचहो दूर कर सच मंन वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 791

धंधा धावत रह गए लागा साच पिआर॥
सच रते मुख उजले तित साचै दरबार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

गिआन सलाहे वडा कर सचो सचा नाउ॥
सच बीजै सच उगवै दरगह पाईऐ थाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1243-44

जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभ कोए॥
गुरमुख कार कमावणी सच घट परगट होए॥
अंतर जिस कै सच वसै सचे सची सोए॥
सच मिले से न विछुड़ह तिन निज घर वासा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

जिनी सुण कै मंनिआ तिना निज घर वास॥
गुरमती सालाहे सच हर पाइआ गुणतास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहज सुभाए॥
सचै सच समाइआ मिल रहै न विछुड़ जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

सच खटणा सच रास है सचे सची सोए॥
सच मिले से न विछुड़ह नानक गुरमुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

जिना परापत तिन पीआ हउमै विचहो खोए॥
नानक गुरमुख नाम धिआईऐ सच मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

4.7. वह सत्य वचन कहता है और कोई उसे भुला नहीं सकता

हर गुण गावह हर नित पड़ह हर गुण गाए समाए॥
नानक तिन की बाणी सदा सच है जे नाम रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

गिआनीआ नो सभ सच है सच सोझी होई॥
ओए भुलाए किसै दे न भुलन्ही सच जाणन सोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 425

5. सच के लिए आधार

आप सुजाण न भुलई सचा वड किरसाण॥
पहिला धरती साध कै सच नाम दे दाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

गुणवंती सच पाइआ त्रिसना तज विकार॥
गुर सबदी मन रंगिआ रसना प्रेम पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36–37

सच ता पर जाणीऐ जा रिदै सचा होए॥
कूड़ की मल उतरै तन करे हछा धोए॥
सच ता पर जाणीऐ जा सच धरे पिआर॥
नाउ सुण मन रहसीऐ ता पाए मोख दुआर॥
सच ता पर जाणीऐ जा जुगत जाणै जीउ॥
धरत काइआ साध कै विच दे करता बीउ॥
सच ता पर जाणीऐ जा सिख सची ले॥
दइआ जाणै जीअ की किछ पुंन दान करे॥
सच तां पर जाणीऐ जा आतम तीरथ करे निवास॥
सतगुरू नो पुछ कै बह रहै करे निवास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 468

6. मनमुखों को सच की अमृत-कथा नहीं सुहाती

सुनी न जाई सच अंम्रित काथा॥
रार करत झूठी लग गाथा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.376

7. जिन्हें सच नहीं मिला उनके जीवन को धिक्कार है

खांदिआ खांदिआ मुह घठा पैनंदिआ सभ अंग॥
नानक ध्रिग तिना दा जीविआ जिन सच न लगो रंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.523

जिना रास न सच है किउ तिना सुख होए॥
खोटै वणज वणंजिऐ मन तन खोटा होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.23

8. वे धन्य हैं जिन्होंने सच को (मालिक को) पहचान लिया, उनका भोजन (आधार) सच है

मुनि जन सेवक साधिका नाम रते गुणतास॥
सच रते से जिण गए हउ सद बलिहारै जास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.57

जिना हर का साद आइआ हउ तिन बलिहारै जास॥
नानक नदरी पाईऐ सच नाम गुणतास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.26

इकस सिउ मन मानिआ ता होआ निहचल चीत॥
सच खाणा सच पैनणा टेक नानक सच कीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.44

मुठड़े सेई साथ जिनी सच न लदिआ॥
नानक से साबास जिनी गुर मिल इक पछाणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.319

9. शुक्राना

सतगुर विटहो वारिआ जिन दिता सच नाउ॥
अनदिन सच सलाहणा सचे के गुण गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

10. उपदेश

सच वापार करहो वापारी॥ दरगह निबहै खेप तुमारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

दुनीआ खोटी रास कूड़ कमाईऐ॥ नानक सच खरा सालाहे पत सिउ जाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 144

11. विनती

करउ अरदास अपने सतगुर पास॥ नानक नाम मिलै सच रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 192

धर्म राए

धर्म राए, जिसे यमराज या काल पुरुष भी कहते हैं सच्चे पातशाह सत्पुरुष के हुक्म से त्रिलोकी (पिंड, अंड और ब्रह्मांड यानी स्थूल, सूक्ष्म और कारण रचना) का प्रबंध करता है। तीनों लोक प्रलय में सिमट जाते हैं। स्वर्ग-नरक भी, जो सूक्ष्म रचना में हैं, नाशवान हैं और धर्म राए के ही अधीन हैं। धर्म राए हरि का ही बनाया हुआ है और उसके हुक्म में वह इन मंडलों का प्रबंध करता है और ठीक-ठीक न्याय करता है:

धरम राए है हर का कीआ हर जन सेवक नेड़ न आवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.555

धरम राए नो हुकम है बह सचा धरम बीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.38

मालिक के हुक्म के अनुसार वह प्राणियों के मरने पर, उनके भले-बुरे कर्मों (पाप-पुण्य) का हिसाब माँगता है और उनके अनुसार फल देता है। पापियों के लिए नरक है और पुण्यात्माओं और धर्मकर्म वाले जीवों के लिए स्वर्ग। जब उनकी अवधि पूर्ण हो जाती है तो जीव फिर चौरासी के चक्र में जन्म-मरण के दु:ख भोगने लग जाता है। उसका नाम धर्म राए है, क्योंकि वह धर्मपूर्वक न्याय करता है। इस कार्य के लिए उसके अधीन यम हैं, इसलिए, उसे यमराज भी कहते हैं। इसके अधीन यानी हुकूमत के अंदर जितनी रचना है वह काल या समय पाकर नष्ट हो जाती है, इसलिए उसका नाम काल पुरुष या काल भी है। सृष्टि की मर्यादा कायम रखने के लिए यही काल पुरुष युग-युग में अवतार भेजता रहता है। इसके अधीन तीन शक्तियाँ या देवता – ब्रह्मा, विष्णु और महेश कार्य करते हैं। जो शक्ति सृष्टि की उत्पत्ति करती है उसे ब्रह्मा, जो पालन करती है उसे विष्णु और जो शक्ति काया आदि का विनाश करती है उसे महेश कहते हैं।

माया के संबंध से उसने तीन शक्तियों या चेलों की रचना की, जिनका कार्य उत्पत्ति, पालन और विनाश करना है। ये शक्तियाँ काल के हुक्म में काम करती हैं, पर ये अपने पिता काल को देख नहीं सकतीं:

एका माई जुगत विआई तिन चेले परवाण॥
इक संसारी इक भंडारी इक लाए दीबाण॥
जिव तिस भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाण॥
ओह वेखै ओना नदर न आवै बहुता एह विडाण॥
आदेस तिसै आदेस॥
आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 7

काल के प्रकरण में यह स्पष्ट बतलाया गया है कि जिस सच्चे सत्पुरुष के हुक्म में धर्म राए यानी काल यह सब प्रबंध करता है, वह नाशवान नहीं, अविनाशी है, इसलिए उसका नाम अकालपुरुष है। आगे, उसके ऊपर अनामी पुरुष है जो काल और अकाल दोनों से परे है और जो अलख, अगम और अपार, अनंत, स्वामी, कुलमालिक है, जिसका गुरु ग्रन्थ साहिब में ख़सम, निराला और स्वामी कहकर वर्णन किया गया है। (देखें: 'स्वामी' का प्रकरण)।

काल यानी धर्म राए केवल अकाल के हुक्म के अनुसार प्रबंधकर्ता है। वह जीवात्मा का सृजनहार नहीं है। वह न तो जीवात्मा को पैदा कर सकता है और न मार सकता है, उसकी संपत्ति केवल काया यानी शरीर है। हुक्म और न्याय के अनुसार वह योनियाँ दे सकता है। जैसा प्रारब्ध हो वैसा ही शरीर देता है और समय पूर्ण होने पर वह शरीर वापस ले लेता है। पर जीवात्मा पर उसका कोई वश या ज़ोर नहीं, क्योंकि जीव उस सत्पुरुष के बच्चे हैं, इसलिए अमर हैं। इसलिए हमारी आराधना के योग्य सच्चा अकालपुरुष ही है, उसकी आराधना से ही अविनाशी पदार्थ, अटल परमानंद प्राप्त होता है। काल नहीं चाहता कि कोई जीव उसके राज यानी अधिकार क्षेत्र में से निकल जाए क्योंकि सृष्टि की रौनक जीवों से ही है। इसलिए वह मन और माया (देखें: 'मन' और 'माया' के प्रकरण) द्वारा जीवों को अनेक प्रकार से भरमाता और भटकाता रहता है। इसी वजह से काल के भ्रमों में फँसे हुए निर्बल जीव के छुटकारे के लिए सत्पुरुष समय-समय पर अपने अवतार, संत-सतगुरु, भेजता रहता है, जिनकी शरण लिए बिना 'यम-काल' नहीं छोड़ता:

बिन सतगुरु जमकाल न छोडई दूजै भाए खुआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414

संत शब्द-साधना यानी नाम की कमाई करवाकर ही जीवों को मोक्ष का मार्ग बतलाते हैं। सत्पुरुष शब्द-स्वरूपी है, (देखें: 'सत्पुरुष', 'राम नाम' और 'सिमरन' के प्रकरण) इसलिए, शब्द यानी नाम द्वारा ही उसका मिलाप और जीव का कल्याण है; कायिक (काया के) साधन—जप, तप, तीर्थ-स्नान आदि शारीरिक कर्मों द्वारा जन्म-मरण के बंधनों से मुक्ति असंभव है, क्योंकि ये सब साधन धर्म राए के दायरे और सीमा के अंदर हैं। हाँ, यदि कोई सतगुरु द्वारा बताई गई युक्ति से नाम का सिमरन करे तो यम के हिसाब-किताब, स्वर्गों-नर्कों और योनियों के चक्कर से सदा के लिए बच सकता है। जिन सौभाग्यशाली जीवों को साध-संगति मिल जाती है, धर्म राए उनकी संगति के फलस्वरूप उलटे उनकी सेवा करता है:

साधसंग धरम राए करे सेवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 271

वह पापियों को दंड देता है पर हरि के भक्तों के पास नहीं आता। जो हरि का प्यारा है वह सबका प्यारा है:

धरम राए है हर का कीआ हर जन सेवक नेड़ न आवै॥
जो हर का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झख झख आवै जावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 555

धरम राए जम नेड़ न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 980

नाम की आराधना से मन और अभिमान का नाश हो गया फिर लेखा (हिसाब-किताब) कौन माँगे? नाम के अभ्यास से धर्म राए के काग़ज़ फट जाते हैं (काल के लेन-देन से मुक्ति मिलती है):

सिमरत नाम किलबिख सभ काटे॥ धरम राए के कागर फाटे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1348

जिस यमराज यानी काल से दुनिया त्राहि-त्राहि कर रही है, हरि के भक्त उसके भय से मुक्त हो जाते हैं।

धर्म राए के गुण और कार्य

1. वह मालिक (सत्पुरुष) का सेवक है और उसके हुक्म से न्याय करता है, मरने पर जीवों से हिसाब माँगता है और पापों का दंड देता है।
2. वह महाबली है और त्रिलोकी का कर्ता-धर्ता है।
3. वह काल है, वह जीवों को माया में भरमाता है।
4. धर्म राए जप-तप, कर्मकांड, तीर्थ-यात्रा, दान-पुण्य आदि से नहीं रीझता।
5. सतगुरु की शरण के बिना धर्म राए से छुटकारा नहीं, साकत (मनमुख) सदा यम के फंदे में फँसा रहता है।
6. पल्ले में नाम का धन न हो तो धर्म राए के आगे पेश होना पड़ता है और वह हिसाब माँगता है। अब आदि ग्रन्थ में से धर्म राए के प्रमाण देखें:

गुरबाणी

1. धर्म राए मालिक का बनाया हुआ है और उसका प्रतिहार (द्वारपाल) है

धरम राए है हर का कीआ हर जन सेवक नेड़ न आवै॥
जो हर का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झख झख आवै जावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 555

धरम राए परुली प्रतिहार॥ सो ऐसा राजा स्री गोपाल॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1292

2. वह मालिक के हुक्म के अंदर सच्चा न्याय करता है

धरम राए नो हुकम है बह सचा धरम बीचार॥
दूजै भाए दुसट आतमा ओह तेरी सरकार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

नानक जीअ उपाए कै लिख नावै धरम बहालिआ॥
ओथै सचे ही सच निबड़ै चुण वख कढे जजमालिआ॥
थाउ न पाइन कूड़िआर मुह काल्है दोजक चालिआ॥
तेरै नाए रते से जिण गए हार गए से ठगण वालिआ॥
लिख नावै धरम बहालिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 463

3. वह महाबली है

आज मेरै मन प्रगट भइआ है पेखीअले धरम राओ॥
तह कर दल करन महाबली तिन आगलड़ै मै रहण न जाए॥

श्री त्रिलोचन, आदि ग्रन्थ, पृ.92

4. जीव के मरने पर हिसाब माँगता है और पापों का दंड देता है

धरम राए जब पकरस बवरे तब किआ जवाब करे॥
कहो नानक दूजै पहरै प्राणी भर जोबन लहरी दे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.77

मिथिआ संग कूड़ लपटाइओ उरझ परिओ कुसमांही॥
धरम राए जब पकरस बवरे तउ काल मुखा उठ जाही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1207

कबीर जेते पाप कीए राखे तलै दुराए॥
परगट भए निदान सभ जब पूछे धरम राए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.1370

तूं वलवंच लूक करह सभ जाणै जाणी राम॥
लेखा धरम भइआ तिल पीड़े घाणी राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.546

धरम राए जब लेखा मागै बाकी निकसी भारी॥
पंच क्रिसानवा भाग गए लै बाधिओ जीउ दरबारी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.1104

बाहर बहै पंचा विच तपा सदाए॥ अंदर बहै तपा पाप कमाए॥
हर अंदरला पाप पंचा नो उघा कर वेखालिआ॥
धरम राए जमकंकरा नो आख छडिआ एस तपे नो
तिथै खड़ पाइहो जिथै महा महां हतिआरिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.315-16

साकत जम की काण न चूकै॥ जम का डंड न कबहू मूकै॥
बाकी धरम राए की लीजै सिर अफरिओ भार अफारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1030

5. उसकी हुकूमत किन पर चलती है?

महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूर न पीजै॥
तिना तिसना जलत जलत नही बूझह डंड धरम राए का दीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1325

धरम राए नो हुकम है बह सचा धरम बीचार॥
दूजै भाए दुसट आतमा ओह तेरी सरकार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

पुंन दान जो बीजदे सभ धरम राए कै जाई॥
बिन सतगुरू जमकाल न छोडई दूजै भाए खुआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414

कबीर चावल कारणे तुख कउ मुहली लाए॥
संग कुसंगी बैसते तब पूछे धरम राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 965

रे नर काए पर ग्रिह जाए॥
कुचल कठोर काम गरधभ तुम नही सुनिओ धरम राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1001

अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाए॥
जिस नर की दुबिधा न जाए धरम राए तिस दे सजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491

मनमुख बालक बिरध समान है जिन्हा अंतर हर सुरत नाही॥
विच हउमै करम कमावदे सभ धरम राए कै जांही॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1418

खादा पैनदा मूकर पाए॥ तिस नो जोहहे दूत धरम राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 195

जब लग मोह मगन संग माए॥ तब लग धरम राए दे सजाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 278

6. नाम से रहित सब धर्म राए के पास जाते हैं

खुसी खुआर भए रस भोगण फोकट करम विकार करे॥
नाम बिसार लोभ मूल खोइओ सिर धरम राए का डंड परे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1014

प्रेत पिंजर मह दूख घनेरे॥ नरक पचह अगिआन अंधेरे॥
धरम राए की बाकी लीजै जिन हर का नाम विसारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1029

नरपति राजे रंग रस माणह बिन नावै पकड़ खड़े सभ कलघा॥
धरम राए सिर डंड लगाना फिर पछुताने हथ फलघा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 731

जउ पै राम राम रत नाही॥ ते सभ धरम राए कै जाही॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 324

7. धर्म राए या यमराज जीवों को माया की ज़ंजीर से बाँधता है, जीव मायावश विष को मीठा समझकर खाता है

ककै केस पुंडर जब हूए विण साबूणे उजलिआ॥
जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगल बंध लइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 432

सिर ऊपर ठाढो धरम राए॥ मीठी कर कर बिखिआ खाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 178

कबीर गहगच परिओ कुटंब कै कांठै रह गइओ राम॥
आए परे धरम राए के बीचह धूमा धाम॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1372

8. सतगुरु की शरण के बिना धर्म राए से छुटकारा नहीं; हरि भक्तों के हिसाब के काग़ज़ फट जाते हैं और यम उनके पास नहीं आता

पुंन दान जो बीजदे सभ धरम राए कै जाई॥
बिन सतगुरू जमकाल न छोडई दूजै भाए खुआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414

जिन कउ क्रिपा करी जगजीवन हर उर धारिओ मन माझा॥
धरम राए दर कागद फारे जन नानक लेखा समझा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.698

धरम राए है हर का कीआ हर जन सेवक नेड़ न आवै॥
जो हर का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झख झख आवै जावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.555

गुरमत राम नाम धन पाइआ सुण कहतिआ पाप निवारे॥
धरम राए जम नेड़ न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.980

9. धर्म राए से छुटकारा किस प्रकार हो सकता है?

9.1. नाम और साध-संग द्वारा

लेखा धरम राए की बाकी जप हर हर नाम किरखै॥
मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुख हर दरसन दिखै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.78

जिनी अंदर भालिआ गुर सबद सुहावै॥
जो इछिन सो पाइदे हर नाम धिआवै॥
जिस नो क्रिपा करे तिस गुर मिलै सो हर गुण गावै॥
धरम राए तिन का मित है जम मग न पावै॥
हर नाम धिआवह दिनस रात हर नाम समावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1091

सिमरत नाम किलबिख सभ काटे॥ धरम राए के कागर फाटे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1348

बहतर घर इक पुरख समाइआ उन दीआ नाम लिखाई॥
धरम राए का दफतर सोधिआ बाकी रिजम न काई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.793

ढाहन लागे धरम राए किनह न घालिओ बंध॥
नानक उबरे जप हरी साधसंग सनबंध॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.256

तज लाज अहंकार सभ तजीऐ मिल साधू संग रहीजै॥
धरम राए की कान चुकावै बिख दुबदा काढ कढीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

धरम राए जब लेखा मागै किआ मुख लै कै जाहिगा॥
कहत कबीर सुनहो रे संतहो साधसंगत तर जांहिगा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1106

इह लोके सुख पाइआ॥ नही भेटत धरम राइआ॥
हर दरगह सोभावंत॥ फुन गरभ नाही बसंत॥
जानी संत की मित्राई॥ कर किरपा दीनो हर नामा पूरब संजोग मिलाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 898

इह कारज तेरे जाहे बिकार॥ सिमरत राम नाही जम मार॥
धरम राए के दूत न जोहै॥ माइआ मगन न कछूऐ मोहै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 185

9.2. धर्म राए साधु-संगति करनेवालों और हरि के भक्तों का मित्र है, वह उनके दर्शनों की लालसा करता है और उनकी सेवा करता है

साधसंग धरम राए करे सेवा॥ साध कै संग सोभा सुरदेवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 271

अधिआतमी हर गुण तास मन जपह एक मुरार॥
तिन की सेवा धरम राए करै धंन सवारणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38-39

हर के लोक सदा गुण गावह तिन कउ मिलिआ पूरन धाम॥
जन का दरस बांछै दिन राती होए पुनीत धरम राए जाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1151

डरपै धरत अकास नख्यत्रा सिर ऊपर अमर करारा॥
पउण पाणी बैसंतर डरपै डरपै इंद्र बिचारा॥
एका निरभउ बात सुनी॥
सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुर मिल गाए गुनी॥
देहधार अर देवा डरपह सिध साधिक डर मुइआ॥

लख चउरासीह मर मर जनमे फिर फिर जोनी जोइआ॥
राजस सातक तामस डरपह केते रूप उपाइआ॥
छल बपुरी इह कउला डरपै अत डरपै धरम राइआ॥
सगल समग्री डरह बिआपी बिन डर करणैहारा॥
कहो नानक भगतन का संगी भगत सोहहे दरबारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 998-99

भणत नानक लेखा मागै कवना जा चूका मन अभिमाना॥
तास तास धरम राए जपत है पए सचे की सरना॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 993

9.3. साधु की शरण प्राप्ति द्वारा वह यम से धर्म राए हो जाता है

छोड सिआनप बहु चतुराई साधू सरणी जाए पाए॥
जउ होए क्रिपाल दीन दुख भंजन जम ते होवै धरम राए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208

9.4. जीव को मालिक की प्राप्ति होने पर धर्म राए हैरान होता है

अगम अगोचर दरस तेरा सो पाए जिस मसतक भाग॥
आप क्रिपाल क्रिपा प्रभ धारी सतगुर बखसिआ हर नाम॥
कलजुग उधारिआ गुरदेव॥
मल मूत मूड़ जे मुघद होते सभ लगे तेरी सेव॥
तू आप करता सभ स्रिसटि धरता सभ मह रहिआ समाए॥
धरम राजा बिसमाद होआ सभ पई पैरी आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 406

काल

कुलमालिक अपने आप में क़ायम और दायम (स्थिर और स्थायी) है, वह सबका आदि है। क़ुदरत के अंदर एक ख़ास सिद्धांत है, जिसे हम न सत् कह सकते हैं, न असत्। यह सत् और असत् दोनों से परे है, जहाँ मन और वाणी की पहुँच नहीं। जो चीज़ थी या है, वह न अंधकार है, न प्रकाश। उसके अंदर क्षोभ (हिलोर या हलचल) हुआ, जिसे मौज कहते हैं। इस मौज से सत्पुरुष और काल पुरुष दोनों प्रकट हुए। काल पुरुष से रचना का काम शुरू हुआ। इसके अंदर दो शक्तियाँ हैं, जिन्हें देश (Space) और काल (Time) कहा जाता है। यह सृष्टि का ताना-बाना बनाकर संसार को रचता हैं। देश या दिशा का काम रचना का प्रसार करना है और काल का काम इसमें सदा नया परिवर्तन करना है।

यह चौरासी का चक्र काल के अधीन है। सब पुरियाँ (इंद्रपुरी, ब्रह्मपुरी, शिवपुरी, विष्णुपुरी आदि) और लोक (ब्रह्मलोक, रुद्रलोक, इंद्रलोक आदि) जिनकी प्राप्ति के लिए दुनिया के लोग धर्मकर्म, दान-पुण्य आदि करते हैं, सब काल के अधिकार में हैं, क्योंकि ये स्थान अटल या अविनाशी नहीं, अपना-अपना समय पूरा होने पर नष्ट हो जाते हैं। गुरु साहिब के वचन हैं:

इंद्र पुरी मह सरपर मरणा॥ ब्रहम पुरी निहचल नही रहणा॥
सिव पुरी का होइगा काला॥ त्रै गुण माइआ बिनस बिताला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 237

ब्रहम लोक अर रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाए॥
साधसंगत कउ जोहे न साकै मल मल धोवै पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 500

सब देवी-देवता भी काल के अधिकार में हैं:

माइआ मोहे देवी सभ देवा॥ काल न छोडै बिन गुर की सेवा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

काल के दायरे में रहते हुए, हमें मन को ठहराकर और सतगुरु से नाम का बल लेकर, काल की सीमा से पार अकाल के देश में जाना है, जहाँ आत्मा को जाते देखकर काल और माया बलहीन और बेहाल हो जाते हैं:

काल बिकाल भए देवाने मन राखिआ गुर ठाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 764

काल बिकाल कहे कह बपुरे जीवत मूआ मन मारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 907-08

काल और अकाल दोनों का काम अपना-अपना है। काल की शक्ति खंडों-ब्रह्मांडों की रचना करती है, उन्हें नियम-संयम में रखती है और नाश करती है। काल में समय के विभाग हैं, जिन्हें भूत (जो गुज़र गया है), भविष्य (जो आगे आनेवाला है) और वर्तमान (जो अभी गुज़र रहा है) कहते हैं। चारों युग काल के चक्र में हैं जिनमें साल, महीने, पक्ष, दिन-रात, घड़ी, घंटे, मिनट और सेकंड के विभाग हैं।

महाभारत में एक प्रसंग आया है। यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न पूछे हैं। उनमें एक यह है कि वार्ता (जानने योग्य समाचार) क्या है? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया है कि महीनों और ऋतुओं की करछी फिराकर, सूर्य की अग्नि में तपाकर इस संसार के विशाल मोह-माया के कड़ाहे के अंदर काल जीवों को पका रहा है, बस यही वार्ता है।

प्रत्येक वस्तु अपना-अपना समय व्यतीत करके नष्ट हो जाती है। इसी लिए गुरवाणी में काल को जम काल भी कहा है। संपूर्ण जगत इस काल के वश में है, इसके बंधन में है:

सभ जग कालै वस है...॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162

इसका यही काम है कि किसी को अपनी सीमा से बाहर न जाने दे। इसने जीवों को एक प्रकार का जादू करके, छलपूर्वक अपने वश में कर रखा है, जिससे हम अपने निजघर को भूल चुके हैं और दर-बदर भटकना हमारे भाग्य में लिखा हुआ है।

मौलाना रूम साहिब फ़रमाते हैं:

आवारगी नविश्त शुदा, बस खाना फ्रामोशत शुदा,
आँ गन्दा पीरे-क़ाबली ब्रस सिहर करदत अज़ दग़ा।

कुल्लियात-शम्स तब्रेज़, पृ.37

काल के ऊपर एक और शक्ति है जिसको गुरवाणी में अकाल कहा गया है। अकाल के अंदर 'आद् सच जुगाद सच॥' (गुरु नानक देव; आदि ग्रन्थ, पृ.1) का भाव है, इसमें सदैव की 'है' और 'कभी न बदलने वाले अस्तित्व' का भाव है, इसमें काल लेशमात्र भी नहीं है। वह काल और देश की हद से परे है, समय की सीमा बनानेवाली शक्ति, काल का अभाव होने से इसमें सेकंड, मिनट और दिन, सालों और युगों का अभाव है। इसके सदैव की 'है' में वे सब लुप्त हो जाते हैं। अकाल की स्थिति में हम तीनों कालों में विचर सकते हैं।

एक फ़क़ीर कहता है:

ता ऊ न बूदे मन बुदम।

अर्थ: *जब वह अस्तित्व में नहीं आया था तब भी मैं था।*

अनुराग सागर में कबीर साहिब बतलाते हैं कि काल की कला सत्पुरुष से उत्पन्न हुई और सचखंड से निकलकर निचले देशों में आई, पर उसे वहाँ (सचखंड) जाने की इजाज़त नहीं है। तात्पर्य यह है कि अकाल की सीमा में काल पंख नहीं फैला सकता। अकाल असल है और काल उसकी नक़ल है, नक़ल असल के आधार पर है। जिस प्रकार चंद्रमा सूर्य से रोशनी लेता है और उससे प्रकाशमान होता है, उसी प्रकार काल अकाल के आधार पर है। काल अकाल की परछाईं है, जिसके द्वारा संसार का कार्य चल रहा है। वेद आदि इसी छाया पुरुष को, जिसे संतों ने काल पुरुष कहा है, सब कुछ मान रहे हैं। वेदों में काल पुरुष की बहुत महिमा आई है। अथर्ववेद के 19वें कांड में काल की महिमा के पूरे दो सूक्त हैं जिनका नाम ही काल-सूक्त है:

काल ने सृष्टि की रचना की, काल में ही सूर्य का उदय होता है, काल में सब जीव हैं।

अथर्ववेद, 19:53:6

इसी काल ने जीवों को उत्पन्न किया है, इसी ने जीवों को घेर रखा है।

अथर्ववेद, 19:53:4

काल से ऋचाएँ (वेद-मंत्र के पद) उत्पन्न हुईं यजु: काल से उत्पन्न हुए।

अथर्ववेद, 19:54:3

संत मानते हैं कि कुलमालिक या स्वामी या हरि राए, अनंत और अपार चेतनता का भंडार है, प्रेम और आनंद का अथाह सागर है, इसकी बहुत-सी कलाएँ हैं जिनके ज़िम्मे रचना को बनाने और सँभालने का कार्य है। उन्हें पुरुष कहा जाता है, इसलिए कुलमालिक को भी परम पुरुष कहा जाता है। इन कलाओं में एक काल पुरुष है जो रचनात्मक कला है, इसकी सृष्टि का समय यानी काल निश्चित है जिसके बाद वह नष्ट हो जाती है, इसलिए इसे काल पुरुष कहा जाता है। यह त्रिगुणात्मक रचना का आधार है। अनगिनत ब्रह्मांड हैं। हर एक ब्रह्मांड की सँभाल अलग-अलग ब्रह्म पुरुष के सुपुर्द है। प्रत्येक ब्रह्म पुरुष की तीन-तीन कलाएँ (शक्तियाँ) – ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं जो ब्रह्मांड को बनाने, पालन करने और संहार करने का कार्य करते हैं। ये सब ब्रह्म काल पुरुष के अंश माने गए हैं जो स्वयं अकालपुरुष के आधार पर है। ये सब रचना काल के अधिकार में है।

यह काल और अकाल दोनों ही ख़सम यानी कुलमालिक के बनाए हुए हैं, इनके हाथों में रचना के विस्तार का कार्य सौंपा गया है:

काल अकाल खसम का कीन्हा इह परपंच बधावन॥
कहे कबीर ते अंते मुकते जिन्ह हिरदै राम रसाइन॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1104

गुरवाणी में उस ख़सम को 'महादयाल' भी कहा है:

प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 249

यह ख़याल अन्य संतों की वाणियों में भी आया है। उन्होंने इन पुरुषों का (1) काल, दयाल और महादयाल, (2) काल, महाकाल, सत्पुरुष और स्वामी या अनाम और (3) धर्मराय और राम राए या हरि राए क़हकर वर्णन किया है। यह परम संतों का विचार है। बहुत-से महात्माओं की वाणी में काल और दयाल या अकाल का विचार मिलता है। दसवें गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की वाणी में भी काल अकाल का ख़याल आया है, 'नमसत्वं अकाले।' (श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 2), 'देव काल हूँ के काल, महा काल हूँ के काल हैं॥' (श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ 81) 'कालान काल' आदि।

मुसलमान फ़क़ीरों ने शैतान और रहमान का वर्णन किया है, एक नेगेटिव (Negative) शक्ति है जिसकी सीमा में तीनों लोक और खंड-ब्रह्मांड आते हैं और दूसरी पॉज़िटिव (Positive) शक्ति है जो सर्वोच्च शक्ति है। काल, दयाल के आसरे है और उसी के आदेश का पालन करता है। अकाल में काल का कोई दख़ल नहीं। ये दोनों ही एक और सबकी शिरोमणि शक्ति द्वारा बनाए गए हैं, जिसको परम संतों ने ख़सम, महादयाल या स्वामी कहकर पुकारा है। काल और दयाल का भेद अति गूढ़ है, खोज़ करने योग्य है। गुरवाणी में इसके संकेत हैं, इसलिए गुरवाणी की खोज करने की आवश्यकता है। फ़ना का आलम (नाशवान संसार) सब काल का प्रसार है। मालिक की शरण लेने पर काल बाधा नहीं डाल सकता। सच, शब्द या धुन दयाल का प्रकाश है, इसकी कमाई करने से जीव काल की सीमा से निकल जाता है। जहाँ नाम की ध्वनि है वहाँ काल अपना प्रभाव नहीं डाल सकता, वह तो वहाँ से दूर हो जाता है:

अफरिओ जम मारिआ न जाई॥ गुर कै सबदे नेड़ न आई॥
सबद सुणे ता दूरहो भागै मत मारे हर जीउ वेपरवाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1054

गुरु जो ख़ुद देहधारी शब्द है, उसकी भक्ति और प्रेम द्वारा जीव काल के पंजे से बच जाता है, उलटे धर्म राए (काल) (देखें: 'धर्म राए' का प्रकरण) उसकी सेवा करता है:

साधसंग धरम राए करे सेवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 271

अंत समय सतगुरु के द्वारा चेताए गए जीव को लेने यम-काल नहीं आता। सतगुरु स्वयं आकर आत्मा को अपने साथ ले जाते हैं, काल गुरुमुख के पास नहीं आता।

जिनको पूर्ण सतगुरु नहीं मिला वे सब काल के वश में हैं। गुरु की सेवा के बिना काल से पीछा नहीं छूटता:

काल न छोडै बिन गुर की सेवा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

काल सबसे किए हुए कर्मों का हिसाब माँगता है और उनको सज़ा देता है। जप-तप, संयम, पढ़ना-लिखना और त्रिगुण सब काल के दायरे में हैं, इसमें से

निकलने का उपाय केवल नाम यानी शब्द धुन का अभ्यास और सतगुरु की शरण है। जिनके ऊँचे भाग्य हैं वे सतगुरु की शरण ग्रहण करके काल के दायरे से निकल जाते हैं। आगे आदि ग्रन्थ के प्रमाण देखें:

गुरबाणी

1. जब काल आता है तब वह सबसे अलग कर देता है, वह बड़ा ज़बरदस्त है

भाई रे इउ सिर जाणहो काल॥
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तन छीजै॥
काल अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहो कवन बिधि कीजै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 692

संपत रथ धन राज सिउ अत नेह लगाइओ॥
काल फास जब गल परी सभ भइओ पराइओ॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 727

नानक इह जीउ मछुली झीवर त्रिसना काल॥
मनूआ अंध न चेतई पड़ै अचिंता जाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 955

कंटक काल एक है होर कंटक न सूझै॥
अफरिओ जग मह वरतदा पापी सिउ लूझै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1090

धनवंता अर निरधन मनई ता की कछू न कानी रे॥
राजा परजा सम कर मारै ऐसो काल बडानी रे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 855

राम न जपहो कवन भ्रम भूले तुम ते काल न दूरे॥
अनिक जतन कर इह तन राखहो रहै अवसथा पूरे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1124

लालच झूठ बिकार महा मद इह बिधि अउध बिहान॥
कहे कबीर अंत की बेर आए लागो काल निदान॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1124

बीत जैहै बीत जैहै जनम अकाज रे॥
निस दिन सुन कै पुरान समझत नह रे अजान॥
काल तउ पहूचिओ आन कहा जैहै भाज रे॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1352-53

सिव बिरंच असुर सुर जेते काल अगन मह जरते॥
नानक सरन चरन कमलन की तुम्ह न डारहो प्रभ करते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1267

2. जगत काल के वश में है

जमकालै वस जग बांधिआ तिस दा फरू न कोए॥
जिन जम कीता सो सेवीऐ गुरमुख दुख न होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 588

सभ जग बाधो काल को बिन गुर काल अफार॥
सच रते से उबरे दुबिधा छोड विकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

सभ जग कालै वस है बाधा दूजै भाए॥
हउमै करम कमावदे मनमुख मिलै सजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162

माइआ मोह जग बाधा जमकाल॥ बांधा छूटै नाम सम्हाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 412

3. संसार नाशवान है और वह काल का आहार है

निहचल कोए न दिसै संसारै॥ अफरिउ काल कूड़ सिर मारै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

सिव पुरी का होइगा काला॥ त्रै गुण माइआ बिनस बिताला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 237

सगली धरती माल धन वरतण सरब जंजाल॥
नानक मुसै गिआन विहूणी खाए गइआ जमकाल॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

4. मालिक की शरण लेने से काल बाधा नहीं डालता

तेरी टेक न पोहै काल॥ तेरी टेक बिनसै जंजाल॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1147

जो तेरी सरणाई हर जीउ तिन की करह प्रतिपाल॥
आप क्रिपा कर राखहो हर जीउ पोह न सकै जमकाल॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333–34

जमकाल तिन कउ लगै नाही जो इक मन धिआवहे॥
मन बचन करम जे तुध अराधह से सभे फल पावहे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 248

प्रभ कै सिमरन काल परहरै॥ प्रभ कै सिमरन दुसमन टरै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 262

जिन्ह कउ आप लए प्रभ मेल॥ तिन कउ काल न साकै पेल॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 353

जनम मरण दुख काल सिमरत मिट जावई॥
नानक कै सुख सोए जो प्रभ भावई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 399

हर चरन सरण गड़ कोट हमारै॥ काल कंटक जम तिस न बिदारै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 742

कली काल के मिटे कलेसा॥ एको नाम मन मह परवेसा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 744

5. काल और अकाल दोनों ख़सम के बनाए हुए हैं

काल अकाल खसम का कीन्हा इह परपंच बधावन॥
कहे कबीर ते अंते मुकते जिन्ह हिरदै राम रसाइन॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1104

त्रै वरताए चउथै घर वासा॥ काल बिकाल कीए इक ग्रासा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1038

प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै॥
काल कंटक लोभ मोह नासै जीअ जा कै प्रभ बसै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 249

6. जब गुरु की कृपा से मन स्थिर होता है तब काल-बिकाल (माया) का ज़ोर नहीं चलता

काल बिकाल भए देवाने मन राखिआ गुर ठाए॥
नानक अवगण सबद जलाए गुण संगम प्रभ पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 764

काल बिकाल कहे कह बपुरे जीवत मूआ मन मारी॥
ब्रहमा बिसन महेस इक मूरत आपे करता कारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 907-08

7. सच, शब्द धुन की कमाई द्वारा काल से बचाव होता है

जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचल साधू पाए॥
सहज धुन गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुन काल न खाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 373

गुरमती परगास होए सच रहै लिव लाए॥
तिथै काल न संचरै जोती जोत समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

गुर सबदी सालाहीऐ अंत न पारावार॥
तिथै काल न अपड़ै जिथै गुर का सबद अपार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

सुइना रुपा संचीऐ माल जाल जंजाल॥
सभ जग मह दोही फेरीऐ बिन नावै सिर काल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 63

गुरमुख सबद कमाईऐ हर वसै मन आए॥
घर महल सच समाईऐ जमकाल न सकै खाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.67

सहजे काल विडारिआ सच सरणाई पाए॥
सहजे हर नाम मन वसिआ सची कार कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.68

कोई गुरमुख होवै सो करै वीचार हर धिआवै मन लिव लाए॥
कहो नानक दूजै पहरै प्राणी तिस काल न कबहूं खाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.76

हर हर नाम जपंतिआ कछु न कहै जमकाल॥
नानक मन तन सुखी होए अंते मिलै गोपाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.457

सच ब्रत नेम न काल संतावै॥ सतगुर सबद करोध जलावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.411

काल जाल जम जोहे न साकै साचै सबद लिव लाए॥
सदा सच रता मन निरमल आवण जाण रहाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 569

काल मार मनसा मनह समाणी अंतर निरमल नाउ॥
अनदिन जागै कदे न सोवै सहजे अंम्रित पिआउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.853

घर सभागै सबद बाजे कला जित घर धारीआ॥
पंच दूत तुध वस कीते काल कंटक मारिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.917

पैज राखहो हर जनह केरी हर देहो नाम निरंजनो॥
अंत चलदिआ होए बेली जमदूत काल निखंजनो॥

सुन्दर, आदि ग्रन्थ, पृ.923

काल फास जब गर मह मेली तिह सुध सभ बिसराई॥
राम नाम बिन या संकट मह को अब होत सहाई॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1008

माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै॥
नाम धिआवै ता सुख पावै गुरमत काल न ग्रासै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1110

जंमण मरण काल नही छोडै विण नावै संतापी॥
नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोह विआपी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1110

काल जाल जम जोहे न साकै सच का पंथा थाटिओ॥
खात खरचत किछ निखुटत नाही राम रतन धन खाटिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 714

काल न जोहे सकै गुण गाए॥ नानक गुरमुख सबद समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

खिंचोताण विगुचीऐ बुरा भला दुए नाल जीउ॥
बिन सबदै भै रतिआ सभ जोही जमकाल जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 751

8. सतगुरु की भक्ति से काल और माया का जाल बेअसर हो जाता है

सतगुरू का खड़ग संजोउ हर भगति है जित काल कंटक मार विडारिआ॥
सतगुरू का रखणहारा हर आप है सतगुरू कै पिछै हर सभ उबारिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 312

मन करहला वडभागीआ तूं गिआन रतन समाल॥
गुर गिआन खड़ग हथ धारिआ जम मारिअड़ा जमकाल॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 235

9. गुरुमत और गुरु की भाव-भक्ति द्वारा जीव काल से बच जाता है

गुण संजम जावै चोट न खावै ना तिस जंमण मरणा॥
काल जाल जम जोहे न साकै भाए भगति भै तरणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 76

जमकाल सिरहो न उतरै त्रिबिधि मनसा॥
गुरमती काल न आवै नेड़ै जा होवै दासन दासा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 140

सेवत सेवत सदा सेव तेरै संग बसत है काल॥
कर सेवा तूं साध की हो काटीऐ जम जाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 214

हर हर नाम जप अनत तरंगा॥
जप जप नाम गुरमत सालाही
मारिआ काल जमकंकर भुइअंगा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचल साधू पाए॥
सहज धुन गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुन काल न खाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 373

ऐ जी काल सदा सिर ऊपर ठाढे जनम जनम वैराई॥
साचै सबद रते से बाचे सतगुर बूझ बुझाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 504

विचहो आप गवाए फिर काल न खाए गुरमुख एको जाता॥
कामण इछ पुंनी अंतर भिंनी मिलिआ जगजीवन दाता॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 582

कर साधसंगत सिमर माधो होहे पतित पुनीत॥
काल बिआल जिउ परिओ डोलै मुख पसारे मीत॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 631

माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै॥
नाम धिआवै ता सुख पावै गुरमत काल न ग्रासै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1110

जंमण मरण काल नही छोडै विण नावै संतापी॥
नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोह विआपी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1110

10. गुरुमुखों और भक्तों के समीप काल नहीं आता

गुरमुख जमकाल नेड़ न आवै॥ हउमै दूजा सबद जलावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.231

जमकाल तिस नेड़ न आवै॥ नानक गुरमुख साच समावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.361

भगता नो जम जोहे न साकै काल न नेड़ै जाई॥
केवल राम नाम मन वसिआ नामे ही मुकत पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.637

परिओ काल सभै जग ऊपर माहे लिखे भ्रम गिआनी॥
कहो कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.654-55

भगता कै घर कारज साचा हर गुण सदा वखाणे राम॥
भगति खजाना आपे दीआ काल कंटक मार समाणे राम॥
काल कंटक मार समाणे हर मन भाणे नाम निधान सच पाइआ॥
सदा अखुट कदे न निखुटै हर दीआ सहज सुभाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.769

11. नाम के बिना काल सब कुछ लूट लेता है

सुइना रुपा पाप कर कर संचीऐ चलै न चलदिआ नाल॥
विण नावै नाल न चलसी सभ मुठी जमकाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.756

12. जिनको सतगुरु नहीं मिला वे काल के वश में हैं

जिना सतगुर पुरख न भेटिओ से भागहीण वस काल॥
ओए फिर फिर जोनि भवाईअह विच विसटा कर विकराल॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.40

सभ जग बाधो काल को बिन गुर काल अफार॥
सच रते से उबरे दुबिधा छोड विकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.55

माइआ मोहे देवी सभ देवा॥ काल न छोडै बिन गुर की सेवा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

सच घर बैसै काल न जोहै॥ मनमुख कउ आवत जावत दुख मोहै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ पृ. 227

13. काल हिसाब माँगता है

जीवण मरणा जाए कै एथै खाजै काल॥
जिथै बह समझाईऐ तिथै कोए न चलिओ नाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 15

कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही काल॥
ओतै साथ मनुख है फाथा माइआ जाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 43

पाप करेदड़ सरपर मुठे॥ अजराईल फड़े फड़ कुठे॥
दोजक पाए सिरजणहारै लेखा मंगै बाणीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1019–20

14. पापों और सांसारिक धंधों में फँसकर भजन न करना काल का मत है, इससे दुनिया में बार-बार आना पड़ता है

जप तप संजम छोड सुक्रित मत राम नाम न अराधिआ॥
उछलिआ काम काल मत लागी तउ आन सकत गल बांधिआ॥

संत बेणी, आदि ग्रन्थ, पृ. 93

सच न धरे पिआर धंधै धाईऐ॥ काल बुरा खै काल सिर दुनीआईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 147

जाहे सवारै साझ बिआल॥ इत उत मनमुख बाधे काल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 154

जो जानह तूं अपुने काजै सो संग न चालै तेरै तसूआ॥
नागो आइओ नाग सिधासी फेर फिरिओ अर काल गरसूआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 206

बिखिआ राता बहुत दुख पावै॥
जम का गल जेवड़ा नित काल संतावै॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.231

कूड़े लुभाइआ धोह माइआ करह पाप अमितिआ॥
तन भसम ढेरी जमह हेरी काल बपुड़ै जितिआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.459

काइआ लाहण आप मद मजलस त्रिसना धात॥
मनसा कटोरी कूड़ भरी पीलाए जमकाल॥
भाई मरदाना, आदि ग्रन्थ, पृ.553

चलदिआ नाल न चलै सिर पाप लै जावणा॥
जां पकड़ चलाइआ काल तां खरा डरावणा॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.645

कहत कबीर सुनहो रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ॥
झूठी माइआ आप बंधाइआ जिउ नलनी भ्रम सूआ॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.654

मोह माइआ वे सभ कालखा इन मनमुख मूड़ सजुतीआ॥
जन नानक गुरमुख उबरे गुर सबदी हउमै छुटीआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.776

सिर उपर जमकाल न सुझई दूजै भरमिता॥
फिर वेला हथ न आवई जमकाल वस किता॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.787

पाखंड पाखंड कर कर भरमे लोभ पाखंड जग बुरिआरे॥
हलत पलत दुखदाई होवह जमकाल खड़ा सिर मारे॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.981

मनमुख काल विआपदा मोह माइआ लागे॥
खिन मह मार पछाड़सी भाए दूजै ठागे॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1090

खावै भोगै सुण सुण देखै पहिर दिखावै काल घरे॥
बिन गुर सबद न आप पछाणै बिन हर नाम न काल टरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1014

अत सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहो॥
कीते कारण पाकड़ी काल न टलै सिराहो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

15. पढ़ना-लिखना काल के दायरे में है

त्रै गुण बाणी ब्रहम जंजाला॥ पड़ वाद वखाणह सिर मारे जमकाला॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 230–31

16. तीनों गुण काल के दायरे में हैं

त्रै गुण कालै की सिर कारा॥ नाम न चेतह उपावणहारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231–32

17. काल जीव के साथ है

सेवत सेवत सदा सेव तेरै संग बसत है काल॥
कर सेवा तूं साध की हो काटीऐ जम जाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 214

18. जिसके ऊँचे भाग्य हों वही काल को मारता है

हर जन माइआ माहे निसतारे॥
नानक भाग होवै जिस मसतक कालह मार बिदारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 797

भाणा

भाणा क्या है?

भाणा का अर्थ है जो दिल को भाए, जो दिल से यानी अंतर से पसंद हो और प्रसन्नता का कारण हो। पंजाबी में आम तौर पर कहते हैं, "ओह मैनूं भांवदा, सुखांदा, अंदरों चंगा ते मिट्ठा लगदा है" (वह मुझे भाता है, अच्छा लगता है, हृदय से भला और मीठा लगता है)। गुरबाणी में इस पद (भाणा) का कई प्रकार से प्रयोग हुआ है:

> हर कै भाणै जन सेवा करै...॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 365

> जिन जिन मानिआ प्रभ का भाणा॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

> नानक जो प्रभ भाणिआ पूरी तिना परी॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 253-54

> भाणा मंने सदा सुख होए॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

> ओहो सुख ओहा वडिआई जो प्रभ जी मन भाणी॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 383

> जो तिस भावै सत कर मानै भाणा मंन वसाई॥
>
> कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 480

वह काम करो जो मालिक को भाए, वह कार्य करो जो उसकी प्रसन्नता का कारण हो। जो काम प्रभु के मन भाया हो वही हमें भी हृदय से भाए। इसलिए भाणा मानने का मतलब मालिक की मर्ज़ी में प्रसन्न रहना है, जिसे मुसलमान

फ़क़ीर 'राज़ी-ब-रज़ा' कहते हैं। भाणा माननेवाला पुरुष सदा यह कहता है कि प्रभु, 'जो तुध भावै साई भली कार॥' (गुरु नानक देव; आदि ग्रन्थ, पृ. 4) ईरान के एक मस्त फ़क़ीर का कथन है: कारे किह् निको न शुद, निको शुद किह् न शुद यानी जो काम हमारी मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं पूरा हुआ, तो भला ही हुआ कि वह न हुआ।

जो कर्म-धर्म किए जाते हैं उनका मुख्य प्रयोजन यही होता है कि वे प्रभु को भाएँ और उसकी प्रसन्नता के कारण बनें। उसके भाणे की प्राप्ति की कुंजी उसके हुक्म को मानना है और राज़ी-ब-रज़ा रहना है:

सरे-तस्लीम ख़म है जो मिज़ाजे-यार में आए।

यह विचार करने योग्य बात है कि जब हम किसी को प्रसन्न करना चाहते हैं, तब हम क्या करते हैं। किसी की प्रसन्नता का मूल कारण उसके हुक्म का पालन है। उसके आदेश से एक इंच भी बाहर न जाएँ। पशुओं की ओर दृष्टि डालो, जो जानवर अपने मालिक का इशारा समझता है, उसके हुक्म के सामने कान तक नहीं हिलाता, उसी को मालिक प्यार करता है और थपथपी देता है। आज्ञाकारी पुत्र अपने माता-पिता की प्रसन्नता और ख़ुशी प्राप्त करता है। हुक्म को प्रसन्नतापूर्वक मानने वाली स्त्री पति को भाती है। दिए हुए हुक्म पर फूल चढ़ानेवाला नौकर मालिक को प्रसन्न करता है। सरकार उन भले नागरिकों से ख़ुश रहती है जो उसके हुक्म में रहते हैं। जिस ओर भी दृष्टि डालो, यही सिद्धांत सारी क़ुदरत में काम करता दिखाई देता है कि यदि किसी की प्रसन्नता की चाह है तो उसके हुक्म को मानो और उसकी रज़ा में राज़ी रहो, ख़ुशी और भाणे की प्राप्ति का यही मार्ग है।

कर्म-धर्म और अन्य साधन भी मालिक की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ही किए जाते हैं। गुरु नानक साहिब जप जी साहिब की पहली पौड़ी में मालिक की प्राप्ति के अनेक प्रचलित साधनों पर विचार करते हुए फ़रमाते हैं कि वह सोच या बुद्धि विचार का विषय नहीं, वह काया-क्लेश (शारीरिक कष्ट), भूखे रहने, मौन धारण करने आदि से नहीं मिलता, वह सयानेपन और चतुराइयों का विषय नहीं। फिर हम उसके द्वार पर कैसे सच्चे हों और यह कूड़ (झूठ, माया) का परदा किस प्रकार टूटे कि उसके दर्शन हो जाएँ? फ़रमाते हैं कि ऐसे अनेक साधन करने से मालिक की प्राप्ति नहीं होती, केवल उसके हुक्म को मानने और उसकी रज़ा (आज्ञा) पर चलने से ही मालिक मिल सकता है। यह सिद्धांत हर एक के अंतर में समाया हुआ है:

सोचै सोच न होवई जे सोची लख वार॥
चुपै चुप* न होवई जे लाए रहा लिवतार॥
भुखिआ भुख† न उतरी जे बंना पुरीआ‡ भार॥
सहस सिआणपा लख होहे त इक न चलै नाल॥
किव सचिआरा§ होईऐ किव कूड़ै तुटै पाल॥
हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1

भाणा, हुक्म और रज़ा एक ही वस्तु हैं पर इनकी अवस्था अलग-अलग है। मालिक का भाणा मालिक की मौज, प्रसन्नता और ख़ुशी है। जब यह हो तब हुक्म उपजता है। वह हुक्म (भाणे) की मुजस्सम मूर्ति (साकार मूर्ति) होकर प्रकट होता है, जो शब्द यानी नाम है (देखें: 'हुक्म' का प्रकरण):

एको नाम हुकम है नानक सतगुर दीआ बुझाए जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.72

हुकम बूझै सोई परवान॥ साचु सबद जा का नीसान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.386

रज़ा उस हुक्म को बिना चीं-चपड़ किए, बग़ैर कुढ़ने या शिकायत के, प्रसन्न-मुख, ख़ुशी-ख़ुशी मान लेना है। रज़ा के अरबी में अर्थ हैं, प्रसन्नता, ख़ुशी या भाणा। हुक्म देनेवाले की प्रसन्नता मुख्य है, हमें हुक्म में प्रसन्न और आनंदपूर्वक रहना चाहिए। इसमें आपा या अहंभाव का पूर्ण अभाव है, यह मालिक की रज़ा में रज़ा का ही रूप हो जाना है।

राबिआ बसरी को एक बार दो फ़क़ीर मिले, जिनसे उसने रज़ा पर कोई बात सुनाने को कहा। एक फ़क़ीर ने कहा, "जो मालिक की ओर से दुःख या कष्ट आए उसे सह लेना चाहिए।" राबिआ बसरी बोली, "इस बात में अहंकार है।" दूसरे फ़क़ीर ने कहा, "जो भी कष्ट मालिक की ओर से आए उसे ख़ुशी से स्वीकार करो।" राबिआ बसरी ने कहा, इसमें भी ख़ुदी की बू है। फिर राबिआ

---

* चुप=पूर्ण ज्ञान की अवस्था।
† भुख=परमेश्वर की प्राप्ति की चाह।
‡ पुरीआ=लोकों या ब्रह्मांडों के पदार्थों का भार।
§ सचिआरा=सच को धारण करनेवाला।

बसरी ने फ़रमाया, "दु:ख या सुख, जो भी मालिक की ओर से आएँ उनमें तमीज़ (भेद करने की बुद्धि) ही न हो, दोनों ही उसकी बख़्शिश समझे जाएँ।"

केतिआ दूख भूख सद मार॥ एह भि दात तेरी दातार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 5

मालिक की रज़ा पर चलनेवाले उसकी रज़ा यानी भाणे के चैतन्य सहयोगी होकर उसी ओर चलते हैं जिस ओर वह (रज़ा) जा रही हो। इसका अर्थ यह नहीं कि जीव सुस्त व आलसी बन जाए और हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे, करे कराए कुछ नहीं। पुरुष वही है जो पुरुषार्थ करे।

तदबीर (उपाय, प्रयास) और तक़दीर और राज़ी-ब-रज़ा का प्रश्न बड़ा जटिल है, एक फ़ारसी लोकोक्ति (कहावत) है:

तदबीर कुनद बन्दा तक़दीर कुनद ख़न्दा।

अर्थ: इनसान तो अपनी तरफ़ से हज़ारों तदबीरें सोचता है और करता भी है, पर तक़दीर सिरहाने खड़ी हँसती है। तदबीर इनसान की मर्ज़ी की तजवीज़ (योजना) है पर तक़दीर रब की मर्ज़ी की तदबीर (प्रबंध) है। मालिक की मर्ज़ी के मुक़ाबले पर नाचीज़ इनसान की मर्ज़ी की क्या हैसियत है!

लाख कोशिश करे इन्सान तो क्या होता है,
वही होता है जो मंज़ूरे-ख़ुदा होता है।

संयोग और वियोग के भाणे द्वारा मिलाप और बिछुड़ना होता है। जो उसका भाणा है वही होता है। इसमें किसी का दख़ल (हस्तक्षेप) नहीं:

संजोगी मिल एकसे विजोगी उठ जाए॥
जो तिस भाणा सो थीऐ अवर न करणा जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

मूर्ख और चतुर सब एक ही रस्सी से बँधे हुए हैं। इसमें इनसान की कोई तदबीर नहीं चलती। सब में उसी का भाणा चल रहा है और कोई दूसरा कुछ करनेवाला नहीं है। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

ना को मूरख ना को सिआणा॥
वरतै सभ किछ तेरा भाणा॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 98

सोई होआ जो तिस भाणा अवर न किन ही कीता॥
तुमरै भाणै भरम मोह मोहिआ जागत नाही सूता॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 207

गुरु नानक साहिब का भी कथन है:

जो तिस भाणा सोई हूआ॥ अवर न करणै वाला दूआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 154

तेरा भाणा सभ किछ होवै॥ मनहठ कीचै अंत विगोवै॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 356

संत नामदेव जी भी यही फरमाते हैं:

मेरा कीआ कछू न होए॥ कर है राम होए है सोए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1165

शम्स तब्रेज़ साहिब फ़रमाते हैं कि आदमी तो कई तदबीरें सोचता है, वह तक़दीर नहीं जानता, पर होता वही है जो ख़ुदा को मंज़ूर होता है:

तदबीर कुनद बंदा ओ तक़दीर न-दानद, तदबीर ब-तक़दीर ख़ुदावंद नमानद।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 86

हाफ़िज़ साहिब भी फ़रमाते हैं, "तू भाणे की रज़ा में ख़ुश होकर रह, क्योंकि हमें इसमें कोई इख़्तियार (अधिकार) नहीं दिया गया है":

रज़ा बदादा बदिह वज़ जबीं गिरह बकुशाय,
किह् बर मन ओ तू दर-ए-इख़्तियार न-कुशादस्त।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 54

शेख़ सअदी ने भी कहा है:

चु रद्द मी नगरदद ख़दंगे-क़ज़ा, सिपर नीस्त मर बन्दा रा जुज़ रज़ा।

बोस्तान, पृ. 178

जब क़ज़ा (तक़दीर) का तीर ख़ाली नहीं जाता, तो रज़ा के सिवाय बंदे के लिए और कोई ढाल, यानी बचाव की सूरत नहीं।

हमारा प्रतिदिन का अनुभव है कि कोई लाख कोशिशें करे सफलता या असफलता हमारे किसी के हाथ में नहीं है। हाँ, पुरुषार्थ करना हमारा कर्तव्य है। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को यही शिक्षा दी है कि अपने कर्तव्य का पालन कर, पर उसका फल मालिक की इच्छा पर छोड़ दे, क्योंकि उस पर हमारा वश नहीं।

एक दिन एक अरब ने हज़रत मुहम्मद साहिब से निवेदन किया "या रसूल अल्लाह! ख़ुदा हमारा हरदम निगह–बान (रक्षक, निगरानी करनेवाला) है, अगर मैं ऊँट के पैर न बाँधूँ और रात के समय उसे तवक्कुल (ईश्वर के भरोसे) और रब की रज़ा पर छोड़ दूँ तो क्या कुछ नुक़सान है?" हज़रत ने उत्तर में जो कुछ फ़रमाया उसे मौलाना रूम साहिब इस प्रकार कहते हैं:

गुफ़्त पैग़ंबर ब–आवाज़े–बलंद
बर तवक्कुल ज़ानू–ए उश्तर बबंद।
मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 119

पैग़ंबर साहिब ने बड़े ज़ोर के साथ फ़रमाया कि तेरा फ़र्ज़ है कि सावधानीपूर्वक ऊँट के पैर बाँधे; तू अपना फ़र्ज़ पूरा कर, फिर राज़ी–ब–रज़ा रहकर, नतीजा मालिक की रज़ा पर छोड़ दो। अपनी ओर से पुरुषार्थ करो, बाकी मालिक पर छोड़ दो।

जीव एक ख़ास सीमा तक स्वतंत्र है, उसके परे वह बंधन में है। इस बात को हम एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं। एक लड़का पतंग उड़ा रहा है। उसके पिता ने सौ–दो सौ गज़ डोर बच्चे के पास छोड़ रखी है और स्वयं छिपकर बाक़ी डोर अपने कब्ज़े में रख ली है। बच्चा पतंग उड़ाने के लिए एक हद तक स्वतंत्र है। केवल सौ–दो सौ गज़ तक ही वह पतंग चढ़ा सकता है, उससे अधिक नहीं। इसी प्रकार हमें अपने सामर्थ्य के अनुसार पुरुषार्थ करना चाहिए और बाक़ी मालिक पर छोड़ देना चाहिए। जहाँ तक अक़्ल और पुरुषार्थ काम देवें हमें उनसे काम ले लेना चाहिए और फिर मालिक के भाणे के आगे सिर झुका देना चाहिए और उसे मीठा मानकर स्वीकार करना चाहिए।

उदम करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंच॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिल नानक उतरी चिंत॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

आगाहा कू त्राघ पिछा फेर न मुहडड़ा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1096

कबीर काल करंता अबह कर अब करता सुए ताल॥
पाछै कछु न होइगा जउ सिर पर आवै काल॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.1371

करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हर माए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.234

संतों की वाणियों में ऐसे अनेक प्रमाण मिलते हैं। यदि भाणे का यही भाव होता कि जो हो रहा है सो हो रहा है और जीव का उद्यम किसी काम का नहीं, तो बार-बार गुरुओं के अवतार धरने, शिक्षा देने, सिरदर्दी लेकर सत्संग रचाने, धर्म पुस्तकों की रचना और विचार करने की क्या आवश्यकता थी? इनका अस्तित्व इस बात को स्पष्ट करता है कि हममें पुरुषार्थ और उद्यम होना ज़रूरी है, पर हमारे उद्यम और पुरुषार्थ अकालपुरुष को भानेवाले होने चाहिएँ। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि उसे भानेवाले गुणों का हमें किस प्रकार पता लगे? इसका उत्तर गुरवाणी देती है:

हर के गुण हर भावदे से गुरू ते पाए॥
जिन गुर का भाणा मंनिआ तिन घुम घुम जाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.725

हरि के गुण जो हरि को भाते हैं, उनका पता और प्राप्ति गुरु से होती है। गुरु मालिक से अभिन्न है और मालिक का भाणा उसे प्रिय लगता है:

भगत सतगुर पुरख सोई जिस हर प्रभ भाणा भावए॥
आनंद अनहद वजह वाजे हर आप गल मेलावए॥

सुंदर, आदि ग्रन्थ पृ.923

वह (गुरु) स्वयं उसके भाणे का रूप है। इसलिए, गुरु के भाणे में चलने से ही मालिक के भाणे का बोध प्राप्त होता है। यह भाणा पूरे गुरु से ही मिलता है:

आपणे भाणे विच सदा रख सुआमी हर नामो देह वडिआई॥
पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिन सहज समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1333

इन बातों का वर्णन धर्म पुस्तकों में है। उनका विचार किसी अभ्यासी महात्मा के पास बैठकर करो। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यही है कि किसी पूरे गुरु की शरण लो और उससे पूछकर, जिस मार्ग पर वह लगाए निस्संकोच लग जाओ। उसका कलाम (वचन) ख़ुदा का कलाम है और उसका हुक्म प्रत्यक्ष मालिक का हुक्म है:

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 722

जब हुक्म का पालन करते-करते रज़ा का ज्ञान हो जाए तो वह मालिक की रज़ा का कारकुन (प्रबंधकर्ता) हो जाता है। वह जो कुछ करता है, मालिक की ओर से करता है। मालिक उसके अंदर बैठकर अपना काम करता है। उसकी इच्छा मालिक की इच्छा से एक हो जाती है।

जीव की इच्छा और बुद्धि सीमित होने के कारण निर्बल, अधूरी और अपूर्ण है, यदि हम उसे मालिक या सतगुरु की इच्छा और बुद्धि के साथ जो सदा स्थिर और पूर्ण है, अभेद कर लेंगे तो हमारी इच्छा और बुद्धि वैसे ही गुण धारण करके उसी प्रकार पूर्ण और निश्चल हो जाएगी। सामंजस्य (Harmony) के नियम के अनुसार उस महान इच्छा के साथ एक-स्वर होकर उस पूर्ण रव (ध्वनि) का गुंजन उसके अंदर आना शुरू हो जाता है और जीव की अपूर्ण मर्ज़ी (इच्छा) मालिक की पूर्ण मर्ज़ी में जाग उठती है और उसी का रूप धारण कर लेती है। वह भाणे यानी रज़ा को सच्चा समझने और माननेवाला हो जाता है। अब वह अँधेरे में नहीं भटकता। उसे सब कुछ साफ़-साफ़ नज़र आता है। वह भ्रमों से मुक्त हो जाता है:

जिना भाणे का रस आइआ॥ तिन विचहो भरम चुकाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

वह भाणे की क़लम (लिखे हुए) और हुक्म की धारा को देखने और समझने वाला हो जाता है। वह तीनों कालों को दर्शनेवाला हो जाता है। ऐसे लोग चुप ही रहते हैं, हाँ, कभी-कभी मौज में आकर इस बारे में कुछ कह भी देते हैं।

आप किसी भी हालत में हों, अमीर या ग़रीब तंदुरुस्त या बीमार, सुखी या दु:खी, यह सब उसी की दातें हैं, तुम्हारे अपने ही किए हुए कर्मों का फल है, ख़ुशी-ख़ुशी स्वीकार कर लो। उसकी रज़ा में ख़ुश रहो, सतगुरु के फ़रमानों के अनुसार पुरुषार्थ करो और मालिक के नाम द्वारा कर्मों और यम की फाँसी को

काट दो। भाणा सबसे बड़ा प्रसाद है, इससे बड़ा और कोई प्रसाद नहीं। भाणा हो तभी हुक्म माना जाता है। भाणा हो तभी सतगुरु से मिलाप होता है। भाणा हो तभी हम सच की भक्ति कर सकते हैं और परम सुख के भागी बन सकते हैं। जिनके भाग्य में पूर्व का लेख हो उन्हें ही यह सुख प्राप्त होता है।

भाणै हुकम मनाइओन भाणै सुख पाइआ॥
भाणै सतगुर मेलिओन भाणै सच धिआइआ॥
भाणे जेवड होर दात नाही सच आख सुणाइआ॥
जिन कउ पूरब लिखिआ तिन सच कमाइआ॥
नानक तिस सरणागती जिन जगत उपाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1093

जा तिस भावै ता गुरू मिलाए॥ गुरमुख नाम पदारथ पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064

संपूर्ण सृष्टि भाणे से उत्पन्न हुई है। जिसको वह प्रभु भाणा प्रदान करे उसको ही प्रभु का भाणा प्रिय लगता है:

तुध आपणै भाणै सभ स्रिसटि उपाई॥ जिस नो भाणा देह तिस भाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064

सुख–दुःख, मान–बड़ाई, जन्म–मरण, आत्मा का शरीर से मिलाप, संयोग–वियोग, स्वर्गों और नरकों का वास, योनियों का चक्कर, जप–तप, ज्ञान और भक्ति में लगना और भवसागर से पार होना, सब कुछ उसके भाणे में हो रहा है:

जा तू ता मै सभ को तू साहिब मेरी रास जीउ॥
तुध अंतर हउ सुख वसा तूं अंतर साबास जीउ॥
भाणै तखत वडाईआ भाणै भीख उदास जीउ॥
भाणै थल सिर सर वहै कमल फुलै आकास जीउ॥
भाणै भवजल लंघीऐ भाणै मंझ भरीआस जीउ॥
भाणै सो सहु रंगुला सिफत रता गुणतास जीउ॥
भाणै सहु भीहावला हउ आवण जाण मुईआस जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 762

वह सबसे बड़ा है, उसने सबको अपने बंधन में रखा है और सब पर हुक्म चलाता है। सब उसकी रज़ा में चलते हैं:

वडा आप अगंम है वडी वडिआई॥
गुर सबदी वेख विगसिआ अंतर सांत आई॥
सभ आपे आप वरतदा आपे है भाई॥
आप नाथ सभ नथीअन सभ हुकम चलाई॥
नानक हर भावै सो करे सभ चलै रजाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1251

ज्ञान-ध्यान वही है जो उसको भाए और जप और पूजा भी वही है जो प्रभु को भाए:

सो गिआन धिआन जो तुध भाई॥
सोई जप जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 100

हर साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मन वसाई॥...
गुरमुख होवै सो पूजा जाणै भाणा मन वसाई॥
भाणे ते सभ सुख पावै संतहो अंते नाम सखाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

जो मालिक को भाए और उसका भाणा माने वही स्वीकार है:

जो तुध भावै सो परवाण॥ तेरे भाणे नो कुरबाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 676

हर का भाणा मंनह से जन परवाण॥
गुर कै सबद नाम नीसाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

जो ख़सम को भा गया हम उस पर क़ुर्बान हैं:

जिस मिलिआ गुर आए तिन प्रभ जाणिआ॥
हउ बलिहारी तिन जे खसमै भाणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 958

जब वह ख़सम को भाता है तो वह स्वयं उसे बख़्शकर अपने साथ मिला लेता है:

आपे बखस मिलाए सद कुरबाणिआ॥
नानक लए मिलाए खसमै भाणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

जिनको हरि का भाणा भा गया वे जन पूर्ण हो जाते हैं:

मसतक लिलाट लिखिआ धुर ठाकुर मेटणा न जाए॥
नानक से जन पूरन होए जिन हर भाणा भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

जो मालिक का भाणा स्वीकार करता है वह उसी में समा जाता है, यह भाणे की सबसे बड़ी महत्ता है:

तेरा भाणा मंने सो मिलै तुध आए॥
जिस भाणा भावै सो तुझह समाए॥
भाणे विच वडी वडिआई भाणा किसह कराइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063-64

भाणा किसे भाता और स्वीकार होता है?

1. गुरुमुख को उसका भाणा भाता है

गुरमुख तेरा भाणा भावै॥ सहजे ही सुख सच कमावै॥
भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आप मनाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063

2. जिस पर वह दयाल हो और जिसे वह भाता हो उसको ही प्रभु का भाणा स्वीकार होता है

तेरा भाणा तूहै मनाइह जिसनो होहे दइआला॥
साई भगति जो तुध भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747

जिस नो भाणा देह तिस भाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064

जो ज़बानी जमा-ख़र्च करता है, हुक्म को नहीं समझता वह कच्चा है, किसी काम का नहीं। जो हरि का भाणा मानता है वही भक्त है:

कथनी बदनी करता फिरै हुकम न बूझै सच॥
नानक हर का भाणा मंने सो भगत होए विण मंने कच निकच॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 950

जो करतार को भाए वही सुहागिन है, उसके सब ढंग और शृंगार शोभा देते हैं। वही अपार रूप वाली है और सदा ख़ुशियाँ मनाती है:

तिस ही चज सीगार सभ साई रूप अपार री॥
साई सुहागण नानका जो भाणी करतार री॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

ऊंनव ऊंनव आइआ वरसै लाए झड़ी॥
नानक भाणै चलै कंत कै सो माणे सदा रली॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1280

जो हरि का भाणा माने वही भक्त है

सेई भगत जो तुध भाणे॥ नानक तिन कै सद कुरबाणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1270–71

प्रभु से मिलाप की निशानी क्या है?

प्रभु से मिलाप की निशानी यही है कि वह (प्रभु से मिला हुआ) उसके हुक्म (देखें: 'हुक्म' का प्रकरण) को पहचानता है। वह सदा एकरस है, तृप्त है, मालिक के भाणे के आनंद में मग्न है:

प्रभ मिलणै की एह नीसाणी॥ मन इको सचा हुकम पछाणी॥
सहज संतोख सदा त्रिपतासे अनद खसम कै भाणै जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 106

गुरु का भाणा

हम मालिक को देख नहीं सकते इसलिए हम उसके भाणे को समझने के योग्य नहीं। गुरु प्रत्यक्ष हरि की मूर्ति है उसका भाणा मानना ज़रूरी है, क्योंकि वह मालिक का भाणा मानता है और उसका रूप है:

हर भाणा गुर भाइआ मेरा हर प्रभ करे साबास जीउ॥

संुदर, आदि ग्रन्थ, पृ.923

इसलिए गुरु का भाणा मालिक का भाणा है। गुरु हमें दिखाई देता है, हम उससे पूछ भी सकते हैं। जो गुरु का भाणा मानता है उस पर हरि दयाल होता है:

नानक दइआल होआ तिन ऊपर जिन गुर का भाणा मंनिआ भला॥
तू अंतरजामी हर आप जिउ तू चलावह पिआरे हउ तिवै चला॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1115

जो उसके भाणे में आ गया वह हरि के भाणे में आ गया। वह सहज ही उन फलों को प्राप्त कर लेता है जो मालिक के भाणे में रहने से मिलते हैं।

हरि के भाणे में अमृत है। गुरु का भाणा हरि में समा रहा है इसलिए गुरु के भाणे में भी अमृत है। जब सत्पुरुष को भाए तो गुरुमुख नाम का ध्यान करके उस अमृत को पी सकता है और सच को पा लेता है:

किउ कर वेखा किउ सालाही॥ गुर परसादी सबद सलाही॥
तेरे भाणे विच अंम्रित वसै तूं भाणै अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.119

जो सेवक सतगुरु के सम्मुख अपने आप को न्योछावर कर देता है और उसके भाणे को चित्त में धारण करता है उस पर सतगुरु स्वयं ही कृपा करता है:

नानक ऐसे सतगुर की किआ ओह सेवक सेवा करे गुर आगै जीउ धरे॥
सतगुर का भाणा चित करे सतगुर आपे क्रिपा करे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.490

भाणा मानना गुरु के शिष्यों का कर्तव्य है:

गुरसिखी भाणा मंनिआ गुर पूरा पार लंघाए॥
गुरसिखां की हर धूड़ देह हम पापी भी गति पांहे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1424

जो सतगुरु का भाणा मानता है वही सिक्ख (शिष्य), सखा, बंधु और सेवक है:

सो सिख सखा बंधप है भाई जे गुर के भाणे विच आवै॥
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ चोटा खावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

नानक सेवक सोई आखीऐ जो सिर धरे उतार॥
सतगुर का भाणा मंन लए सबद रखै उर धार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1247

जो सतगुरु की सेवा करता है, वह मालिक के दर पर स्वीकार है। जिसने अपनी ज्योति हरि की ज्योति में मिला ली और भाणा मन में बसा लिया वह सेवक साहिब के समान उसका रूप हो जाता है, इसमें कोई संदेह नहीं:

सतगुर सेवह से परवाण जिन्ह जोती जोत मिलाई॥
सो साहिब सो सेवक तेहा जिस भाणा मंन वसाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1287

जो सतगुरु के भाणे में चलते हैं वे बड़े भाग्यशाली हैं, वे नामरूपी जहाज़ में सहज ही बैठ सकते हैं:

सतगुर बोहिथ हर नाव है कित बिधि चड़िआ जाए॥
सतगुर कै भाणै जो चलै विच बोहिथ बैठा आए॥
धंन धंन वडभागी नानका जिना सतगुर लए मिलाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

मौलाना रूम साहिब ने शम्स तब्रेज़ के दीवान में तालिब (शिष्य) का अपने मुर्शिद (गुरु) के भाणे में रहने के बारे में स्पष्ट वर्णन किया है, फ़रमाया है कि मैंने मुर्शिद के आगे सवाल किया, "ऐ प्यारे प्रीतम, मुझे कब तक दुनिया में खींच-घसीट करने और ख़्वार करने का इरादा है?" मुर्शिद ने उत्तर दिया, "जहाँ चाहूँ तुझे ले जाऊँ, जहाँ चाहूँ तुझे रखूँ, तू ख़ामोश रहकर हुक्म को मान।"

गुफ़्तम ऐ जान तू मरा गिर्दे-जहाँ चंद कशी,
गुफ़्त हरजात कशम ज़ूद बया हैच मगो।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 312

आख़िर फ़रमाते हैं, "हे मुर्शिद! जो भी तेरी रज़ा के अंदर है वही कुछ मैं जानता हूँ, जो तू दिखाए, वही कुछ मैं देख सकता हूँ। यदि तू ऐसा रखे तो मैं

ऐसा ही रहूँगा और यदि तू वैसा रखे तो वैसा ही रहूँगा।" यहाँ अहं का बिल्कुल अभाव है, उसकी रज़ा में वे हर तरह से राजी हैं:

बजुज़ आंचिह् तू ख़्वाही मन चिह् ख्वाहम,
बजुज़ आं कत नुमाई मन चिह् बीनम।
मरा गर तू चुनाँ दारी चुनानम, मरा गर तू चुनीं ख़्वाही चुनीनम।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 237

क्या इस खींचतान में मुर्शिद तालिब को छोड़ देता है? नहीं, नहीं। वह अंदर से हाथ रखता है और बाहर से थाप देता है ताकि वह सब संभव ऐबों से पाक व साफ़ हो जाए। इस प्रकार पात्र पूर्ण रूप से तैयार हो जाता है और उसमें अजर और अमर वस्तु को रखा जा सकता है।

मालिक ने हमें पैदा किया है, वह हमारे साथ प्यार करता है। वह हमें धनी रखे या निर्धन, स्वस्थ रखे या रोगी, सुखी रखे या दुःखी, जिस हालत में भी वह रखे हमें ख़ुश रहना चाहिए, ये सब उसी के प्रसाद हैं। लकड़ी के शहतीर के तख़्ते बनाकर बढ़ई कोई तख़्ता नीचे, कोई आसपास और कोई ऊपर ढक्कन की जगह लगाता है। सबकी अपनी-अपनी जगह आवश्यकता है। हैं सब एक ही शहतीर के तख़्ते। इसी प्रकार, मालिक ने जिस-जिस हालत में रखा है, उसी में, उसकी रज़ा में ख़ुश रहकर, सतगुरु के आदेशानुसार पुरुषार्थ करो और मालिक के नाम द्वारा यम की फाँसी काट लो:

मन मेरो गज जिहबा मेरी काती॥
मप मप काटउ जम की फासी॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 485

साधु-संत यह सुमति देते हैं कि जो मालिक करे उसको उत्तम मानो:

जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमत साधू ते पाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1299

जे तखत बैसालह तउ दास तुम्हारे घास बढावह केतक बोला॥
जन नानक के प्रभ पुरख बिधाते मेरे ठाकुर अगह अतोला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1211

जे सुख देह त तुझह अराधी दुख भी तुझै धिआई॥
जे भुख देह त इत ही राजा दुख विच सूख मनाई॥...
जे पास बहालह ता तुझह अराधी जे मार कढह भी धिआई॥
जे लोक सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै त छोड न जाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 757

जे गुर झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

जौ राज देह त कवन बडाई॥ जौ भीख मंगावह त किआ घट जाई॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 525

सतगुरु के भाणे को कौन मानता है?

जिनके लिए धुर से पूर्वलेख हों केवल वे ही गुरुमुख होकर नाम के साथ एकरस होते हैं और गुरु के भाणे को मानते हैं:

नाम धिआइन्ह रंग सिउ गुरमुख नाम लगंन्ह॥
धुर पूरब होवै लिखिआ गुर भाणा मंन लएन्ह॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 757

गुरु की कृपा द्वारा जिनको भाणा अच्छा लगता है उनका मन निर्मल हो जाता है, पर जिसको गुरु स्वयं प्रदान करे उसको ही यह प्रसाद प्राप्त हो सकता है:

गुर परसादी मन भइआ निरमल जिना भाणा भावए॥
कहै नानक जिस देह पिआरे सोई जन पावए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 918

जो गुरु के भाणे में चलते हैं उनके सब दुःख दूर हो जाते हैं, वे सदा के लिए सुखी हो जाते हैं और उनकी शोभा हर रोज़ बढ़ती रहती है:

गुर कै भाणै जो चलै सभ दुख निवारणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 89

सतगुर कै भाणै जो चलै तिन दालद दुख लह जाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1313

उपदेस जे दिता सतगुरू सो सुणिआ सिखी कंने॥
जिन सतगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगण वंने॥
इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुण मन भिंने॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.314

मनमुख मन-बुद्धि के फैलाव में उलझा है। वह चतुराइयों में रहता है और भ्रमों में भटकता फिरता है, वह भाणे को नहीं मान सकता। वह आता-जाता रहता है यानी आवागमन के चक्र में रहता है और बहुत दुःख पाता है। उसे कभी निजघर का वास नहीं मिलता। भाणा न मानने के दोषों के अन्य प्रमाण पाठकों के विचार के लिए आगे दिए गए हैं:

मनमुख अंध करे चतुराई॥ भाणा न मंने बहुत दुख पाई॥
भरमे भूला आवै जाए घर महल न कबहू पाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1064

कलियुग में मनमुखता का ज़ोर है। कोई किसी को मानने के लिए तैयार नहीं। जिनको सतगुरु मिला है और जो उसको मानकर उसके भाणे में चलते हैं, वे हरि के गुण गाते हैं और सदा तृप्त रहते हैं। कलियुग में वे लोग धन्य हैं जो सतगुरु के भाणे में चलते हैं:

सतगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हर गुण गाए॥
धन धन कलजुग नानका जे चले सतगुर भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ पृ.1414

सतगुरु के नाम का सिमरन करते हुए गुरुमुख को उसका भाणा अच्छा लगने लगता है और उसके भ्रम और भय सब मिट जाते हैं। उसके हृदय से यही निकलता है, तुध भावै तिवै रजाए...॥ (गुरु नानक देव; आदि ग्रन्थ, पृ.752) जो तुध भावै साई भली कार॥ (गुरु नानक देव; आदि ग्रन्थ, पृ.3)। हे परमपिता! तेरी इच्छा पूर्ण हो (बाइबल, सेंट मैथ्यू 6:10)। तेरा किया हुआ मुझे मीठा लगता है। हे मालिक! मुझे नाम-पदार्थ का दान दे:

सेवी सतगुर भाए नाम निरंजना॥ तुध भावै तिवै रजाए भरम भउ भंजना॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.752

तेरा कीआ मीठा लागै॥ हर नाम पदारथ नानक मांगै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 394

आगे के प्रमाण आदि ग्रन्थ से हैं:

ੴ

गुरवाणी

1. भाणे जैसी श्रेष्ठ और कोई दात नहीं, भाणा हुक्म मनवाता है

भाणै हुकम मनाइओन भाणै सुख पाइआ॥
भाणै सतगुर मेलिओन भाणै सच धिआइआ॥
भाणे जेवड होर दात नाही सच आख सुणाइआ॥
जिन कउ पूरब लिखिआ तिन सच कमाइआ॥
नानक तिस सरणागती जिन जगत उपाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1093

2. भाणे में सृष्टि उत्पन्न हुई है

हर आपणै भाणै स्रिसटि उपाई हर आपे दे अधार॥
हर आपणै भाणै मन निरमल कीआ हर सिउ लागा पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

3. जिसको वह भाणा दे उसको ही वह भाता है

जा तिस भावै ता गुरू मिलाए॥ गुरमुख नाम पदारथ पाए॥
तुध आपणै भाणै सभ स्रिसटि उपाई जिस नो भाणा देह तिस भाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064

4. सुख-दु:ख, मान-प्रतिष्ठा, जन्म-मरण, आत्मा का शरीर से मेल, संयोग-वियोग, नरक और स्वर्ग में वास, योनियों में भ्रमण, बख़्शा जाना, जप-तप, ज्ञान-भक्ति और मालिक का मिलाप सब कुछ उसके भाणे में हो रहा है

जेते जीअ तेते सभ तेरे विण सेवा फल किसै नाही॥
दुख सुख भाणा तेरा होवै विण नावै जीउ रहै नाही॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 354

दुख सुख तेरै भाणै होवै किस थै जाए रूआईऐ॥
हुकमी हुकम चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 418

जा तू ता मै सभ को तू साहिब मेरी रास जीउ॥
तुध अंतर हउ सुख वसा तूं अंतर साबास जीउ॥
भाणै तखत वडाईआ भाणै भीख उदास जीउ॥
भाणै थल सिर सर वहै कमल फुलै आकास जीउ॥
भाणै भवजल लंघीऐ भाणै मंझ भरीआस जीउ॥
भाणै सो सहु रंगुला सिफत रता गुणतास जीउ॥
भाणै सहु भीहावला हउ आवण जाण मुईआस जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 762

जो भाणे से मेलिआ विछोड़े भी आप॥
नानक प्रभ सरणागती जा का वड परताप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 928

सरवर हंस धुरे ही मेला खसमै एवै भाणा॥
सरवर अंदर हीरा मोती सो हंसा का खाणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 956

नानक नाम धिआईऐ गुर पूरा मत दे॥
भाणै जप तप संजमो भाणै ही कढ ले॥
भाणै जोनि भवाईऐ भाणै बखस करे॥
भाणै दुख सुख भोगीऐ भाणै करम करे॥
भाणै मिटी साज कै भाणै जोत धरे॥
भाणै भोग भोगाइदा भाणै मनह करे॥
भाणै नरक सुरग अउतारे भाणै धरण परे॥
भाणै ही जिस भगती लाए नानक विरले हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 963

आपे सिरजे दे वडिआई॥ आपे भाणै दे मिलाई॥
आपे नदर करे मन वसिआ मेरै प्रभ इउ फुरमाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1046

दुख सुख करते हुकम रजाए॥ भाणै बखस भाणै दे सजाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1270

5. जो उसको भाए वही होता है, सब कुछ उसका भाणा है

विण जाणाए कोए न जाणै॥ जो किछ करे सो आपण भाणै॥
लख चउरासीह जीअ उपाए भाणै साह लवाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

सुण मूरख मंन अजाणा॥ होग तिसै का भाणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 155

संजोगी मिल एकसे विजोगी उठ जाए॥
जो तिस भाणा सो थीऐ अवर न करणा जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

ना को मूरख ना को सिआणा॥ वरतै सभ किछ तेरा भाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 98

जो तिस भाणा सोई हूआ॥ अवर न करणै वाला दूआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 154

जो किछ वरतै सभ तेरा भाणा॥ हुकम बूझै सो सच समाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 193

सोई होआ जो तिस भाणा अवर न किन ही कीता॥
तुमरै भाणै भरम मोह मोहिआ जागत नाही सूता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 207

तेरा भाणा सभ किछ होवै॥ मनहठ कीचै अंत विगोवै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 356

सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई॥
कहै नानक हर का भाणा होआ कहणा कछू न जाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 490

जो किछ होआ सो तेरा भाणा॥ जो इव बूझै सो सहज समाणा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1349

बिन भागा दरसन ना थीऐ भागहीण बह रोए॥
जो हर प्रभ भाणा सो थीआ धुर लिखिआ न मेटै कोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

6. वह सब पर हुक्म चलाता है और सब उसके भाणे यानी रज़ा में चलते हैं

आपे वेखै हुकम चलाए॥ अपणा भाणा आप कराए॥
नानक नाम रते बैरागी मन तन रसना नाम सवारी हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1051

वडा आप अगंम है वडी वडिआई॥
गुर सबदी वेख विगसिआ अंतर सांत आई॥
सभ आपे आप वरतदा आपे है भाई॥
आप नाथ सभ नथीअन सभ हुकम चलाई॥
नानक हर भावै सो करे सभ चलै रजाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1251

मेरा कीआ कछू न होए॥ कर है राम होए है सोए॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1165

7. जो उसको भाए वही परवान है

जो तुध भावै सो परवाण॥ तेरे भाणे नो कुरबाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 676

8. जब ख़सम को भाता है वह ख़ुद ही बख़्शकर अपने साथ मिला लेता है

तेरै भाणै भगति जे तुध भावै आपे बखस मिलाई॥
तेरै भाणै सदा सुख पाइआ गुर त्रिसना अगन बुझाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

9. जो उसको भाए वही ज्ञान, ध्यान, जप और पूजा है

सो गिआन धिआन जो तुध भाई॥
सोई जप जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 100

हर साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मन वसाई॥...
गुरमुख होवै सो पूजा जाणै भाणा मन वसाई॥
भाणे ते सभ सुख पावै संतहो अंते नाम सखाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

10. भाणे का दान कैसे मिलता है?

10.1. जब ख़सम को भाए वह आप अपने साथ मिला लेता है

आपे बखस मिलाए सद कुरबाणिआ॥
नानक लए मिलाए खसमै भाणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

10.2. जब उसको भाए तब ही राम प्यारा लगता है

तिन्हा पिआरा राम जो प्रभ भाणिआ॥
गुर परसाद अकथ नानक वखाणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 397

जिस नो राखै सो सच भाखै गुर का सबद बीचारा॥
कहो नानक जो प्रभ कउ भाणा तिस ही कउ प्रभ पिआरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 924

11. प्रभु से मिलाप की निशानी उसके हुक्म को पहचानना और उसके भाणे में आनंदमग्न रहना है

प्रभ मिलणै की एह नीसाणी॥ मन इको सचा हुकम पछाणी॥
सहज संतोख सदा त्रिपतासे अनद खसम कै भाणै जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 106

12. भाणा कहाँ से प्राप्त होता है? पूरे गुरु से और उसकी कृपा से प्राप्त होता है

आपणे भाणे विच सदा रख सुआमी हर नामो देह वडिआई॥
पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिन सहज समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ॥
एहा सकति सिवै घर आवै जीवदिआ मर रहीऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1257

13. जो ख़सम को भा गया हम उस पर क़ुर्बान जाते हैं

जिस मिलिआ गुर आए तिन प्रभ जाणिआ॥
हउ बलिहारी तिन जे खसमै भाणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 958

14. जो हरि का भाणा माने या जिसको वह मनाए वही भक्त और सतगुरु पुरुष है

सचा मनाए अपणा भाणा॥ सोई भगत सुघड़ सुजाणा॥
नानक तिस कै सद कुरबाणा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1335

कथनी बदनी करता फिरै हुकम न बूझै सच॥
नानक हर का भाणा मंने सो भगत होए विण मंने कच निकच॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 950

भगत सतगुर पुरख सोई जिस हर प्रभ भाणा भावए॥
आनंद अनहद वजह वाजे हर आप गल मेलावए॥

सुंदर, आदि ग्रन्थ, पृ. 923

सेई भगत जो तुध भाणे॥ नानक तिन कै सद कुरबाणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1270-71

जे हर हर कीचै बहुत लोचीऐ किरत न मेटिआ जाए॥
हर का भाणा भगती मंनिआ से भगत पए दर थाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 65

तेरा भाणा तूहै मनाइह जिस नो होहे दइआला॥
साई भगति जो तुध भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747

15. हरि का भाणा गुरु को भाता है

मेरे सिख सुणहो पुत भाईहो मेरै हर भाणा आउ मै पास जीउ॥
हर भाणा गुर भाइआ मेरा हर प्रभ करे साबास जीउ॥

सुंदर, आदि ग्रन्थ, पृ. 923

16. जिसे भाणा भाए वह हरि में समा जाता है

तेरा भाणा मंने सो मिलै तुध आए॥ जिस भाणा भावै सो तुझह समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063-64

17. जो भाणे में रहता है वह सेवक साहिब जैसा है

सतगुर सेवह से परवाण जिन्ह जोती जोत मिलाई॥
सो साहिब सो सेवक तेहा जिस भाणा मंन वसाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1287

18. जिसको हरि का भाणा भाता है वह व्यक्ति पूर्ण और परवान हो जाता है

मसतक लिलाट लिखिआ धुर ठाकुर मेटणा न जाए॥
नानक से जन पूरन होए जिन हर भाणा भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

हर का भाणा मंनह से जन परवाण॥ गुर कै सबद नाम नीसाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

19. जो करतार को भाए वही सुहागिन है और वही सदा ख़ुशियाँ मनाती है

तिस ही चज सीगार सभ साई रूप अपार री॥
साई सुहागण नानका जो भाणी करतार री॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

ऊंनव ऊंनव आइआ वरसै लाए झड़ी॥
नानक भाणै चलै कंत कै सो माणे सदा रली॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, 1280

20. प्रभु के भाणे को मानने के फल

20.1. सतगुरु का मिलाप और नाम-पदार्थ का दान

हर कै भाणै सतगुर मिलै सच सोझी होई॥
गुर परसादी मन वसै हर बूझै सोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 365

हर कै भाणै जनम पदारथ पाइआ मत ऊतम होई॥
नानक नाम सलाहे तूं गुरमुख गति होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 365

जा तिस भावै ता गुरू मिलाए॥ गुरमुख नाम पदारथ पाए॥
तुध आपणै भाणै सभ स्रिसटि उपाई जिस नो भाणा देह तिस भाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064

20.2. यम का दंड मिट जाता है

जनम मरण दुख काटीऐ पिआरे चूकै जम की काणे॥
तिना परापत दरसन नानक जो प्रभ अपणे भाणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 802

20.3. सुख मिलता है और तृष्णाएँ दूर होती हैं

खेद न दूख न डान तिह जा कउ नदर करी॥
नानक जो प्रभ भाणिआ पूरी तिना परी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 253-54

भाणा मंने सदा सुख होए॥ नानक सच समावै सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

हर कै भाणै जन सेवा करै बूझै सच सोई॥
हर कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुख होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 365

धिआए सो प्रभ तरे भवजल रहे आवण जाणा॥
सदा सुख कलिआण कीरतन प्रभ लगा मीठा भाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 926

जो तुध करणा सो कर पाइआ॥ भाणे विच को विरला आइआ॥
भाणा मंने सो सुख पाए भाणे विच सुख पाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063

मन रे हुकम मंन सुख होए॥
प्रभ भाणा अपणा भावदा जिस बखसे तिस बिघन न कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

तेरै भाणै भगति जे तुध भावै आपे बखस मिलाई॥
तेरै भाणै सदा सुख पाइआ गुर त्रिसना अगन बुझाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

20.4. जीव हरि के गुण गाता है, पाप-दु:ख सब कट जाते हैं

हर कै भाणै हर गुण गाए॥ सभ किलबिख काटे दूख सबाए॥
हर निरमल निरमल है बाणी हर सेती मन राता हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1052

20.5. वास्तविक सुंदर स्वरूप और समझदारी की प्राप्ति

रूपवंत सो चतुर सिआणा॥ जिन जिन मानिआ प्रभ का भाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

20.6. प्रभु की दरगाह में मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति

जो तुध भाणा जंत सो तुध बुझई॥ जो तुध भाणा जंत सो दरगह सिझई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

ओहो सुख ओहा वडिआई जो प्रभ जी मन भाणी॥
तूं दानां तूं सद मिहरवाना नाम मिलै रंग माणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 383

जीउ पिंड धन अरपिआ सेई पतिवंते॥
आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 399

दरसन की पिआसा घणी भाणै मन भाईऐ॥
मेरे ठाकुर हाथ वडिआईआ भाणै पत पाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 421

20.7. भाणा माननेवाला घर में ही उदास, अलिप्त, शोक-वियोग रहित और हरि में रमा रहता है

विचे गिरह उदास अलिपत लिव लाइआ॥
ओना सोग विजोग न विआपई हर भाणा भाइआ॥
नानक हर सेती सदा रव रहे धुर लए मिलाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

20.8. जीवित-मृतक की गति प्राप्त होती है

आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ॥
एहा सकति सिवै घर आवै जीवदिआ मर रहीऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1257

20.9. उसके भाणे में अमृत है, जब उसको भाए तभी पिया जा सकता है

किउ कर वेखा किउ सालाही॥ गुर परसादी सबद सलाही॥
तेरे भाणे विच अंम्रित वसै तूं भाणै अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

21. जिस पर वह दयाल हो उससे ही वह भाणा मनवाता है

तेरा भाणा तूहै मनाइह जिसनो होहे दइआला॥
साई भगति जो तुध भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747

22. सतगुरु के भाणे में रहने के फल

22.1. सुख की प्राप्ति

गुर कैं भाणै जो चलै सभ दुख निवारणहार॥
लिखिआ मेट न सकीऐ जो धुर लिखिआ करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 89

हर जन ऊतम भगत सदावै आगिआ मन सुख पाई॥
जो तिस भावै सत कर मानै भाणा मंन वसाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 480

सतगुर कै भाणै जो चलै तिन दालद दुख लह जाए॥
आपणै भाणै किनै न पाइओ जन वेखहो मन पतीआए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1313

मन मेरे सतगुर कै भाणै चल॥
निज घर वसह अंम्रित पीवह ता सुख लहहे महल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

नाच रे मन गुर कै आगै॥
गुर कै भाणै नाचह ता सुख पावह अंते जम भउ भागै॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 506

22.2. चौगुना रंग चढ़ता है

उपदेस जे दिता सतगुरू सो सुणिआ सिखी कंने॥
जिन सतगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगण वंने॥
इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुण मन भिंने॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 314

22.3. मन निर्मल होता है और मैल नहीं चढ़ता

गुरमुख हछे निरमले गुर कै सबद सुभाए॥
ओना मैल पतंग न लगई जे चलन सतगुर भाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1418

गुर परसादी मन भइआ निरमल जिना भाणा भावए॥
कहै नानक जिस देह पिआरे सोई जन पावए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 918

22.4. भ्रम का नाश

जिना भाणे का रस आइआ॥ तिन विचहो भरम चुकाइआ॥
नानक सतगुर ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाए जीउ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

22.5. यम का भय दूर होता है और यम की फाँसी कट जाती है

नाच रे मन गुर कै आगै॥
गुर कै भाणै नाचह ता सुख पावह अंते जम भउ भागै॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 506

सेई भगत जे साचे भाणे॥ जमकाल ते भए निकाणे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 677

गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी॥
जो तिस भाणा सो सत कर मानिआ काटी जम की फासी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 993

सतगुर कै भाणै जो चलै हर सेती रलिआ॥
जमकाल जोहे न सकई घट चानण बलिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1245

22.6. आवागमन मिट जाता है

सच पुराणा ना थीऐ नाम न मैला होए॥
गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ न आवण होए॥
नानक नाम विसारिऐ आवण जाणा दोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248

22.7. घट-घट में वास होता है

घट घट बैस निरंतर रहीऐ चालह सतगुर भाए॥
सहजे आए हुकम सिधाए नानक सदा रजाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 938

22.8. घट में प्रकाश होता है

सतगुर कै भाणै जो चलै हर सेती रलिआ॥
जमकाल जोहे न सकई घट चानण बलिआ॥
नानक बखस मिलाइअन फिर गरभ न गलिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1245

22.9. जीव आसानी से नाम के जहाज़ पर सवार हो सकता है

सतगुर बोहिथ हर नाव है कित बिधि चड़िआ जाए॥
सतगुर कै भाणै जो चलै विच बोहिथ बैठा आए॥
धंन धंन वडभागी नानका जिना सतगुर लए मिलाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

सोहागणी आप सवारीओन लाए प्रेम पिआर॥
सतगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहज सीगार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

22.10. भक्ति का सरोवर उछालें मारता है और उभर-उभरकर बहता है

भगति सरोवर उछलै सुभर भरे वहंन॥
जिना सतगुर मंनिआ जन नानक वड भाग लहंन॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1316

22.11. नाम मन में बसता है और लिव लगती है

गुर दुआरै नाउ पाईऐ बिन सतगुर पलै न पाए॥
सतगुर कै भाणै मन वसै ता अहिनिस रहै लिव लाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1015

मन रे गुर की कार कमाए॥
गुर कै भाणै जे चलह ता अनदिन राचह हर नाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

सतगुर कै भाणै जो चलै तिस वडिआई वडी होए॥
हर का नाम उतम मन वसै मेट न सकै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 90

22.12. जीवन पदवी मिलती है

इह जगत ममता मुआ जीवण की बिधि नाहे॥
गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 508

22.13. अमृत की प्राप्ति

गुर के भाणे विच अंम्रित है सहजे पावै कोए॥
जिना परापत तिन पीआ हउमै विचहो खोए॥
नानक गुरमुख नाम धिआईऐ सच मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

मन मेरे सतगुर कै भाणै चल॥
निज घर वसह अंम्रित पीवह ता सुख लहहे महल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

22.14. मालिक बख़्शिश करके बिछुड़ों को मिला लेता है और फिर से गर्भ में नहीं लाता

भाणै बखसे पूरा धणी सच कार कमाईऐ॥
विछुड़िआ कउ मेल लए गुर कउ बल जाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1011

सतगुर कै भाणै जो चलै हर सेती रलिआ॥
जमकाल जोहे न सकई घट चानण बलिआ॥
नानक बखस मिलाइअन फिर गरभ न गलिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1245

22.15. हरि से मिलाप होता है

मुंधे तू चल गुर कै भाए॥
अनदिन रावह पिर आपणा सहजे सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

22.16. सच की प्राप्ति

जिन कै हिरदै एकंकार॥ सरब गुणी साचा बीचार॥
गुर कै भाणै करम कमावै॥ नानक साचे साच समावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 905

सच वणजह सच सेवदे जे गुरमुख पैरी पाहे॥
नानक गुर कै भाणै जे चलह सहजे सच समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

22.17. दरगाह में मान मिलता है

सतगुर कै भाणै जो चलै तिस वडिआई वडी होए॥
हर का नाम उतम मन वसै मेट न सकै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 90

सतगुर कै भाणै भी चलह ता दरगह पावह माण॥
नानक जे नाम न चेतनी तिन धिग पैनण धिग खाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 646

22.18. हरि दयाल होता है

नानक दइआल होआ तिन ऊपर जिन गुर का भाणा मंनिआ भला॥
तू अंतरजामी हर आप जिउ तू चलावह पिआरे हउ तिवै चला॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1115

23. गुरु को हरि का भाणा भाता है

मेरे सिख सुणहो पुत भाईहो मैरै हर भाणा आउ मै पास जीउ॥
हर भाणा गुर भाइआ मेरा हर प्रभ करे साबास जीउ॥

सुंदर, आदि ग्रन्थ, पृ. 923

24. गुरु का भाणा कौन मानता है?

24.1. जिसको वह स्वयं दे

से जन सुखीए सतगुर सचे लाए॥ आपे भाणे आप मिलाए॥
सतगुर राखे से जन उबरे होर माइआ मोह खुआरी हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1050-51

गुर परसादी मन भइआ निरमल जिना भाणा भावए॥
कहै नानक जिस देह पिआरे सोई जन पावए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 918

24.2. जिसका धुर से पूर्व लेख हो

नाम धिआइन्ह रंग सिउ गुरमुख नाम लगंन्ह॥
धुर पूरब होवै लिखिआ गुर भाणा मंन लएन्ह॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 757

24.3. जो कोई गुरुमुख भाणे को मन में बसाता है, उसको ही भाणा भाता है

गुरमुख तेरा भाणा भावै॥ सहजे ही सुख सच कमावै॥
भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आप मनाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063

24.4. अहंभाव और विकारों को त्यागने वाला

गुर के भाणे विच अंम्रित है सहजे पावै कोए॥
जिना परापत तिन पीआ हउमै विचहो खोए॥
नानक गुरमुख नाम धिआईऐ सच मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

किस हउ सेवी किआ जप करी सतगुर पूछउ जाए॥
सतगुर का भाणा मंन लई विचहो आप गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

से जन सचे निरमले जिन सतगुर नाल पिआर॥
सतगुर का भाणा कमावदे बिख हउमै तज विकार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 65

25. जो सतगुरु के भाणे में आए वही शिष्य, सखा, बंधु और सेवक है

सो सिख सखा बंधप है भाई जे गुर के भाणे विच आवै॥
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ चोटा खावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

नानक सेवक सोई आखीऐ जो सिर धरे उतार॥
सतगुर का भाणा मंन लए सबद रखै उर धार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1247

26. भाणा मानना गुरु-सिक्खी है

गुरसिखी भाणा मंनिआ गुर पूरा पार लंघाए॥
गुरसिखां की हर धूड़ देह हम पापी भी गति पांहे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

27. जो सतगुरु के आगे प्राण न्योछावर करके उसके भाणे को माने, उस पर सतगुरु आप ही कृपा करता है

नानक ऐसे सतगुर की किआ ओह सेवक सेवा करे गुर आगै जीउ धरे॥
सतगुर का भाणा चित करे सतगुर आपे क्रिपा करे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 490

28. कलियुग में जो सतगुरु के भाणे में चले, वह धन्य है

सतगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हर गुण गाए॥
धन धन कलजुग नानका जे चले सतगुर भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414

29. जिन्होंने सतगुरु का भाणा माना उन पर हम क़ुर्बान हैं

हर के गुण हर भावदे से गुरू ते पाए॥
जिन गुर का भाणा मंनिआ तिन घुम घुम जाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 725

30. भाणा न मानने के दोष

वेस करे कुरूप कुलखणी मन खोटै कूड़िआर॥
पिर कै भाणै ना चलै हुकम करे गावार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 89

सो सिख सखा बंधप है भाई जे गुर के भाणे विच आवै॥
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ चोटा खावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

आपणै भाणै कहो किन सुख पाइआ अंधा अंध कमाई॥
बिखिआ कदे ही रजै नाही मूरख भुख न जाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1287

गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेन॥
ओए भाणै चलन आपणै नित झूठो झूठ बोलेन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 951

खालक थावहो भुला मुठा॥ दुनीआ खेल बुरा रुठ तुठा॥
सिदक सबूरी संत न मिलिओ वतै आपण भाणीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1020

सभ को बोलै आपण भाणै॥ मनमुख दूजै बोल न जाणै॥
अंधुले की मत अंधली बोली आए गइआ दुख ताहा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1033

बहु सादहो दूख परापत होवै॥ भोगहो रोग सो अंत विगोवै॥
हरखहो सोग न मिटई कबहू विण भाणे भरमाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

31. मनमुख भाणा नहीं मानता

मनमुख अंध करे चतुराई॥ भाणा न मंने बहुत दुख पाई॥
भरमे भूला आवै जाए घर महल न कबहू पाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064

हुक्म

मालिक के भाणे (देखें: 'भाणा' का प्रकरण) से हुक्म उत्पन्न होता है। दोनों एक ही वस्तु हैं पर अवस्था की दृष्टि से उनमें भेद है। पहले कोई एक बात भाती है, फिर उसकी सिद्धि के लिए साधन की आवश्यकता होती है। वह साधन शब्द है, उसमें जो नियंत्रण या बंदोबस्त करने का भाव है उसे हुक्म कहते हैं, जो सर्वव्यापी है।

भाणे से हुक्म हुआ जो नाम यानी शब्द रूप होकर संपूर्ण रचना का कर्तापुरुष बना। इस प्रकार हुक्म कर्ता की रज़ा से संबंधित है:

> हुकमी स्रिसटि साजीअन बहु भित संसारा॥
> तेरा हुकम न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 786

सारी सृष्टि मालिक के हुक्म से बनी और वह उसे 'कर्ता' होने की हैसियत से अपने हुक्म के अंदर चला रहा है:

> हुकमी हुकम चलाए राह॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 2

शास्त्रों में तो उसे केवल साक्षी (देखनेवाला) ही माना है। पर संतों ने उसको कुलमालिक कर्ता रूप माना है। मालिक नाशवान नहीं है, उसका हुक्म भी सच है, अविनाशी है:

> सच हुकम तुमारा तखत निवासी॥ आए न जावै मेरा प्रभ अबिनासी॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 562

गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं कि सब कुछ हुक्म से प्रकट हुआ है, हुक्म में ही सब कार्य हो रहा है और हुक्म में ही इस रचना का प्रबंध काल (देखें: 'काल' का प्रकरण) के अधीन रखा गया है। मालिक के हुक्म को पहचानने से ही जीव काल के घेरे से निकल सकता है। मालिक जो चाहे करता है, जीवों का कोई वश नहीं:

हुकमी सभे ऊपजह हुकमी कार कमाहे॥
हुकमी कालै वस है हुकमी साच समाहे॥
नानक जो तिस भावै सो थीऐ इना जंता वस किछ नाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

हुक्म के अंदर ही संपूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति होती है और अंत में प्रलय होती है:

हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे मह लख॥
सभ को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1289

सबको नाथना और फिर नथ को तोड़कर मुक्त करना हुक्म का ही काम है। जब हुक्म हो जाता है, सबको जाना पड़ता है। जन्म-मरण और सब प्रसार उसके हुक्म के अंदर है:

हुकम भइआ रहणा नही धुर फाटे चीरै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1012

हुकमे आवै हुकमे जाए॥ आगै पाछै हुकम समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 151

हुकमे जुग मह आइआ चलण हुकम संजोग जीउ॥
हुकमे परपंच पसरिआ हुकम करे रस भोग जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 760

सभो सूतक भरम है दूजै लगै जाए॥
जंमण मरणा हुकम है भाणै आवै जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 472

दिन और रात, तिथि और वार, ऋतु व महीने, धरती व आकाश, पानी और पवन, अग्नि और समस्त पुरियाँ, खंड, ब्रह्मांड और चेतन लोक सबको बनानेवाला हुक्म है। कोई नहीं जान सकता कि हुक्म कितना बड़ा है और न कोई उसके कार्य के विस्तार को बतला सकता है। दुनिया के अनंत लोग उसकी प्रशंसा और उसका विचार करके थक गए हैं:

सभे राती सभ दिह सभ थिती सभ वार॥
सभे रुती माह सभ सभ धरतीं सभ भार॥
सभे पाणी पउण सभ सभ अगनी पाताल॥
सभे पुरीआ खंड सभ सभ लोअ लोअ आकार॥
हुकम न जापी केतड़ा कह न सकीजै कार॥
आखह थकह आख आख कर सिफतीं बीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1241

पर हुक्म में वही रह सकता है जो उसको भाए:

ढाह उसारे हुकम समावै॥ हुकमो वरतै जो तिस भावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

हुक्म क्या है? यह जानना बड़ा कठिन है। इसका वर्णन हम किसी प्रकार भी नहीं कर सकते। जप जी साहिब की दूसरी पौड़ी में फ़रमाया गया है, हुकम न कहिआ जाई॥ यह वर्णन का विषय नहीं, इसका केवल अंतरात्मा में अनुभव होता है। किंतु जो कुछ उसके हुक्म के अंदर हो रहा है और जिसका कुछ अनुमान लगाया जा सकता है, उसका विस्तार गुरु नानक साहिब जप जी साहिब की दूसरी पौड़ी में इस प्रकार करते हैं:

हुकमी होवन आकार हुकम न कहिआ जाई॥
हुकमी होवन जीअ हुकम मिलै वडिआई॥
हुकमी उतम नीच हुकम लिख दुख सुख पाईअह॥
इकना हुकमी बखसीस इक हुकमी सदा भवाईअह॥
हुकमै अंदर सभ को बाहर हुकम न कोए॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

आकार वाली सृष्टि, चाहे वह स्थूल है या सूक्ष्म या कारण, सब उसके हुक्म से बनी है पर उसके हुक्म का वर्णन नहीं किया जा सकता है। वह शब्द यानी नाम (देखें: 'शब्द और नाम' के प्रकरण) है जो मालिक का रूप है:

एको नाम हुकम है नानक सतगुर दीआ बुझाए जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

हुकम बूझै सोई परवान॥ साच सबद जा का नीसान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 386

हम प्रकृति (क़ुदरत) का वर्णन किसी सीमा तक कर सकते हैं, पर उसके कर्ता के विषय में कुछ नहीं कह सकते। प्राकृतिक विद्या के खोजियों ने क़ुदरत के अनेक नियमों का तो पता लगा लिया पर वे उनका अंत न पा सके, फिर भला उसके कर्ता के बारे में वे क्या कह सकते हैं! प्रकृति के नियम यानी क़ानून ख़ुद हुक्म नहीं हैं, हाँ, वे हुक्म में बँधे हुए अवश्य हैं। हुक्म तो इन सबका मूल कारण है और वह मालिक से संबंधित है। हुक्म कर्ता है, प्रकृति-कृत है। कृत को जान भी लें तो इससे उस कर्ता को किस तरह जान सकते हैं? गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि सब जीव भी उसके हुक्म से उत्पन्न हुए हैं। कहने का भाव है कि जो भी जड़ और चेतन सृष्टि है, सब उसके हुक्म से उत्पन्न हुई है। हुक्म से ही जीवों को महत्त्व मिलता है, उत्तम या नीच गति उसके हुक्म के अनुसार ही होती है। ये सब हुक्मी (हुक्म वाले) के हाथ में हैं। हमारे सुख-दुःख के लेख भी उसके हुक्म के अनुसार लिखे जाते हैं, उसके हुक्म से ही कई लोग बख़्शे जाते हैं और कई योनियों में भेजे जाते हैं। भाव यही है कि क्या जड़ और क्या चेतन, सब उसके हुक्म के अंदर हैं, कुछ भी उससे बाहर नहीं। जब यह सब कुछ उसके हुक्म के अंदर है तो अभिमान का कोई स्थान नहीं रहना चाहिए, अहंकार का अंत हो जाना चाहिए। जो कोई उसके हुक्म को पहचान लेता है उसकी हौंमैं (अहंभाव) मिट जाती है। सबका कर्ता, धर्ता और हर्ता वह मालिक स्वयं है। क़ुदरत की ताकतें अवश्य हैं पर उनको चलानेवाला क़ादिर (समर्थ) भी कोई है। बीज में उगने की शक्ति है, पर बीज बोनेवाला, पानी देनेवाला, रक्षा करने और फ़सल काटनेवाला भी कोई ज़रूर होता है। बीज में उगने की शक्ति तथा धरती और पानी को उसे उगाने की सत्ता भी उसी ने दी है। सुख-दुःख, ऊँची-नीची योनियों में वास और उसकी (परमात्मा की) बख़्शिश, सब हमारे कर्मों का फल है पर हुक्म देनेवाला मालिक है, जिसके हुक्म की लेखनी हमारे कर्मों के अनुसार चलती है:

हुकम चलाए आपणै करमी वहै कलाम॥
नानक सचा सच नाए सच सभा दीबान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1241

धधै धार कला जिन छोडी हर चीजी जिन रंग कीआ॥
तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकम पइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 433

नानक हुकमी लिखीऐ लेख॥ जेहा वेखह तेहा वेख॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 466

सारे लोकों में एक हुक्म ही कार्य कर रहा है और उस एक से ही सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय होती है:

एको हुकम वरतै सभ लोई॥ एकस ते सभ ओपत होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 223

उसका हुक्म अटल है, वह कभी मिटाया नहीं जा सकता:

सुणीऐ एक वखाणीऐ सुरग मिरत पइआल॥
हुकम न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1091

रणभूमि में सेनापति सेना को आगे बढ़ने का हुक्म देता है और कई बार ख़तरे से बचाने के लिए पीछे हटने का हुक्म भी देता है। वह हालात देखकर जैसा उचित समझता है वैसा हुक्म देता है, पर साधारण सिपाही उसके हुक्म को नहीं समझता। जो उसके हुक्म को मानकर पीछे हट जाते हैं, वे ख़तरे से बच जाते हैं।

हम किसी मनुष्य के दिल के भेद या मन्तव्य तक को तो समझ नहीं सकते फिर परमात्मा के हुक्म को किस प्रकार जान सकते हैं? एक आदमी पश्चिम की ओर जाने का संकल्प करता है पर बेइख़्तियार (जिस पर वश न चले) उसके पूर्व में जाने की व्यवस्था हो जाती है, जिसकी उसे कल्पना तक न थी। बने हुए सामान क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं और उजाड़ स्थान बस जाते हैं। हमारी हज़ार चतुराइयाँ भी किसी काम नहीं आतीं। जो ठाकुर (मालिक) का हुक्म है वह हर स्थान पर गतिमान है:

मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात॥
खिन मह थाप उथापनहारा आपन हाथ मतात॥
सिआनप काहू काम न आत॥
जो अनरूपिओ ठाकुर मेरै होए रही उह बात॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 496

हम अनेक ही उपाय सोचते हैं, पर होता वही है जो परमात्मा को मंज़ूर हो। हर कोई अपना भला चाहता है, पर होता वही कुछ है जिसकी हमें कल्पना नहीं होती:

अनिक उपाव चितवीअह बहुतेरे सा होवै जे बात होवैनी॥
अपना भला सभ कोई बाछै सो करे जे मेरै चित न चितैनी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 800

वह कौन-सी ताक़त है जो हमारे पुरुषार्थों और अथक परिश्रमों पर हुकूमत करती है? वह हुक्म है, जिसे मुसलमान फ़क़ीर मशीयते-ईज़िदी (मालिक की मरज़ी या हुक्म) कहते हैं, जिसमें हमारी बुद्धि और ज्योतिष-विद्या का दख़ल या पहुँच नहीं, क्योंकि वह (हुक्म यानी रज़ा) उनकी पहुँच के दायरे से कहीं ऊपर है। उसको कौन जान सकता है। उसका हुक्म तो सब हुक्मों का शिरोमणि है, वह प्रभु की आज्ञा है, इसलिए वह सब कर्मों का कर्म और सिद्धियों की सिद्धि है:

सिधन मह तेरी प्रभ सिधा करमन सिर करमा॥
आगिआ मह तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिर हुकमा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 507

हमारी बुद्धि सीमित है। वह हुक्म को समझने योग्य नहीं। परमात्मा के हुक्म की गति बड़ी प्रबल है, उसके आगे हमें दीनतापूर्वक सिर नीचा करना पड़ता है। उसके साथ मुक़ाबला कभी नहीं हो सकता। परमात्मा की रज़ा और हुक्म के सामने झुकने के सिवाय और कोई चारा नहीं। इस संसार के अगाध समुद्र में हाथ-पैर मारना व्यर्थ है:

बा फ़ज़ाए-आसमाँ चारा जुज़ तस्लीम नीस्त,
दर मुहीते-बेकरां ज़िनहार दस्तो-पा मज़न।

हुक्म के दरिया की लहरों से अनगिनत सृष्टियों के दरिया बह चले:

कीता पसाउ एको कवाउ॥ तिस ते होए लख दरीआउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 3

यदि कोई उसके (हुक्म के) आगे अकड़कर खड़ा हो जाए तो हुक्म का प्रबल प्रवाह उसको जड़ से उखाड़कर मलियामेट कर देता है। जो परमात्मा के हुक्म के सामने झुक जाते हैं और प्रभु के किए हुए को भला-भला कहकर

स्वीकार करते हैं, वे उसके हुक्म को समझते हैं और सुख-दुःख में उसका सिमरन करते रहते हैं:

मन की मत तिआगहो हर जन हुकम बूझ सुख पाईऐ रे॥
जो प्रभ करै सोई भल मानहो सुख दुख ओही धिआईऐ रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

जब तक हम उसके हुक्म को नहीं समझ सकते, हम दुःखी रहते हैं:

जब लग हुकम न बूझता तब ही लउ दुखीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

हुक्म के मानने में सदा सुख है। जो उस '१' की हुक्मरूपी कील से लगे रहते हैं, वे संसाररूपी चक्की के काल और देशरूपी दो पाटों में पीसे नहीं जाते और उसकी रगड़ से बच जाते हैं। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं कि यह सारी रचना चक्की के पाटों में पीसी जा रही है, कोई उससे बचता नहीं, पर यह अद्‌भुत है कि जो उसके दर पर पड़े रहते हैं, वे उबर जाते हैं:

दुए पुड़ चकी जोड़ कै पीसण आए बहिठ॥
जो दर रहे सो उबरे नानक अजब डिठ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 142

मालिक रूप हुक्म का जानना तो कठिन है ही, उसके गुणों और कार्यों का वर्णन भी कठिन है। उनका विचार करते हुए बुद्धि चकरा जाती है। जप जी साहिब की तीसरी पौड़ी में गुरु नानक देव जी ने फ़रमाया है:

गावै को ताण होवै किसै ताण॥ गावै को दात जाणै नीसाण॥
गावै को गुण वडिआईआ चार॥ गावै को विदिआ विखम वीचार॥
गावै को साज करे तन खेह॥ गावै को जीअ लै फिर देह॥
गावै को जापै दिसै दूर॥ गावै को वेखै हादरा हदूर॥
कथना कथी न आवै तोट॥ कथ कथ कथी कोटी कोट कोट॥
देदा दे लैदे थक पाहे॥ जुगा जुगंतर खाही खाहे॥
हुकमी हुकम चलाए राह॥ नानक विगसै वेपरवाह॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1-2

जो लोग यह कहते हैं कि वे उसके हुक्म का वर्णन करते हैं, वे ठीक नहीं कहते। कोई तो उसके सामर्थ्य का ज़िक्र करते हैं, पर वह सामर्थ्य हमारे अंदर कहाँ है कि हम उसका वर्णन कर सकें। कोई उसके दान व प्रसादों का वर्णन करते हैं तो कोई उसकी निशानियों का गुणगान करते हैं। पर उसके प्रसादों और उसके गुणों को भी कौन गा सकता है। उसकी विद्या, उसके ज्ञान आदि का कौन बखान कर सकता है। उसकी तो कल्पना भी अत्यंत कठिन है। जो देहों को बनाता है और फिर मिट्टी कर देता है, जो जीवन ले लेता है और फिर दे देता है, जो समीप प्रतीत होता है पर दूर दिखाई देता है, जो हमेशा हाज़िर-नाज़िर है, ऐसे समर्थ मालिक का वर्णन कौन कर सकता है! जीव तुच्छ, कम समझवाला, थोड़ा जाननेवाला और अपूर्ण है। वह उस उच्च, सर्वज्ञ और पूर्ण का क्या वर्णन कर सकता है। यदि करेगा भी तो:

तू सुलतान कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 795

करोड़ों ही, करोड़ों प्रकार से उसका वर्णन करते रहे हैं और वर्णन करके उठ गए, उसकी वार्ता का अंत न आया। यह विषय सदा नया बना रहा है:

सदियों फ़िलासफ़ी की चुनां ओ चुनीं रही,
लेकिन ख़ुदा की बात जहां थी वहीं रही।

वह दातार, अनगिनत दातें बख़्शता है जिन्हें लेनेवाले ले-लेकर थक जाते हैं, युग-युग से जीव उसकी अनगिनत दातों को पाते रहे हैं, पर उन दातों का अंत नहीं होता। वह सत् है उसका अस्तित्व सदा के लिए है, उसमें से जो हुक्म उठता है वह पूरा हो जाता है। 'कुन फ़यकून' (क़ुरान 36:82) – ख़ुदा ने कहा 'हो जा' और 'हो' गया:

कीता पसाउ एको कवाउ॥ तिस ते होए लख दरीआउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 3

वह हुक्म देनेवाला सारे संसार को अपने हुक्म की धारा में चला रहा है और वह सब करते हुए भी उसे उस कार्य की कोई चिंता या भार नहीं, वह अलेप है, बेपरवाह (निश्चिंत) होकर रहता है (देखें: 'बेपरवाह' का प्रकरण)।

सारे संसार की कला हुक्म के अंदर चल रही है, जिसका बोध हमको गुरु से प्राप्त होता है। हम उसके हुक्म से स्थापित गुप्त या प्रकट नियमों से परिचित होकर सदा के लिए सुखी हो जाते हैं:

गुर मिल हुकम पछाणिआ तब ही ते सुखीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

मालिक का हुक्म नाम के साथ सब जगह व्याप्त है, फिर हमें दिखाई क्यों नहीं देता? सुहागिन आत्माओं से पता चलता है कि हमारे और उसके बीच आपाभाव (अहं) का परदा है जब तक हम अहं को नहीं खो देते, हुक्म को नहीं पा सकते:

सोहागणी जाए पूछहो मुईए जिनी विचहो आप गवाइआ॥
पिर का हुकम न पाइओ मुईए जिनी विचहो आप न गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 568

उस हुक्म को कौन समझ सकता है?

गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं कि जिसने इस सृष्टि की रचना की है वही हुक्म की विधि को जानता है। कर्ता स्वयं ही हुक्म को ठीक-ठीक पहचानता है:

जिन कीते सोई बिधि जाणै॥
आप करे ता हुकम पछाणै॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 118

क्या उसका हुक्म उसके सिवाय किसी और से भी समझा जा सकता है? यदि समझा जा सकता है तो किस तरह? उसको वह समझ सकता है जिस पर मालिक आप कृपा की दृष्टि करे और दयालु हो:

हुकम भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदर करे॥
हुकम मंन सुख पाइआ प्रेम सुहागण होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 510

नानक जिसह दइआल बुझाए हुकम मित॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 523

जब मालिक को भाए तभी जीव उसके हुक्म को मान सकता है:

जा तिस भावै ता हुकम मनावै॥ इस बेड़े कउ पार लघावै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 337

प्रभ मन भावै ता हुकम समावै हुकम मंन सुख पाइआ॥
अनदिन जपत रहै दिन राती सहजे नाम धिआइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 690

हुक्म को पहचानने और मानने का फल शब्द और नाम की कमाई है:

हुकम जिना नो मनाइआ॥ तिन अंतर सबद वसाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

गुण अवगुण समान हहे जे आप कीते करतार॥
नानक हुकम मंनिऐ सुख पाईऐ गुर सबदी वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1092

धुर के हुक्म से ही सतगुरु होने की प्रतिष्ठा प्राप्त होती है:

सतगुर की वडिआई सतगुर दिती धुरहो हुकम बुझ नीसाण॥
पुती भातीई जावाई सकी अगहो पिछहो टोल डिठा
लाहिओन सभना का अभिमान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 853

सतगुरु में हुक्म प्रकट है। जब तक सतगुरु न मिले तब तक न नाम मिलता है न हुक्म का बोध होता है:

इउ पावह हर दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ॥
हउ आपहो बोल न जाणदा मै कहिआ सभ हुकमाउ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 763

हुक्म का बोध या समझ गुरु का प्रसाद है, वह गुरु की मौज पर निर्भर है:

हुकमै बूझै तत पछाणै॥ इह परसाद गुरू ते जाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1289

खेती वणज सभ हुकम है हुकमे मंन वडिआई राम॥
गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेल मिलाई राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 569

प्रत्यक्ष सतगुरु या सच्चे गुरु के मिलाप से ही हुक्म का बोध होता है और हुक्म अंतर में बस सकता है, इसको छोड़कर और कोई उपाय नहीं:

नानक सतगुर मिलिऐ हुकम बुझिआ एक वसिआ मन आए॥
जो तुध भावै सभ सच है सचे रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491-92

तीन भवन निहकेवल गिआन॥ साचे गुर ते हुकम पछान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

कोई गुरुमुख ही, जिस पर मालिक आप दया करे, हुक्म को समझ सकता है:

सभ किछ हुकमे आवदा सभ किछ हुकमे जाए॥
जे को मूरख आपहो जाणै अंधा अंध कमाए॥
नानक हुकम को गुरमुख बुझै जिस नो किरपा करे रजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 556

सचा तेरा हुकम गुरमुख जाणिआ॥ गुरमती आप गवाए सच पछाणिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 144

संसार में गुरुमुख का ही आना सफल है और वही मालिक के दर पर स्वीकार होता है। वह हुक्म को समझकर निहाल हो जाता है:

सफल जनम परवान गुरमुख आइआ॥
हुकमै बुझ निहाल खसम फुरमाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 523

गुरु के प्रदान किए हुए नाम के अभ्यास करते हुए आपाभाव मिटता जाता है और अपने अंदर व्याप्त हुक्म की गति को गुरुमुख समझने लग जाता है, उसके हुक्म के आगे वह सिर झुकाकर रखता है और सब जगह उसी की धारा को गतिमान देखता है। वह उसमें लीन होता रहता है और कुलमालिक में समा जाता है।

हुक्म का मानना सब कर्मों में श्रेष्ठ कर्म है, हुक्म के माननेवाले को सचखंड के मार्ग में कोई रुकावट नहीं आती:

मंने हुकम सो परगट जाए॥ सच नीसाणै ठाक न पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 355

गुरवाणी हुक्म को मानने के अनेक फलों का वर्णन करती है। भय और चिंताएँ मिट जाती हैं, जीव उज्ज्वल हो जाता है और तर जाता है, शब्द यानी नाम और सच की प्राप्ति होती है और अहंकार का नाश होता है, जन्म-मरण छूट जाता है, निरंतर सुख, निजघर और परम पद की प्राप्ति होती है और जीव मालिक में समा जाता है। गुरवाणी हुक्म को न मानने के दोषों का भी वर्णन करती है। इनके बारे में पाठकों के विचार के लिए आदि ग्रन्थ से प्रमाण आगे दिए गए हैं।

ੴ

गुरवाणी

1. हुक्म क्या है?

1.1. नाम (शब्द) है

सतसंगत कैसी जाणीऐ॥
जिथै एको नाम वखाणीऐ॥
एको नाम हुकम है नानक सतगुर दीआ बुझाए जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

हुकम बूझै सोई परवान॥
साच सबद जा का नीसान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 386

1.2. सच और अविनाशी है

सच हुकम तुमारा तखत निवासी॥
आए न जावै मेरा प्रभ अबिनासी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 562

सिधन मह तेरी प्रभ सिधा करमन सिर करमा॥
आगिआ मह तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिर हुकमा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 507

2. हुक्म के अंदर सब कुछ हो रहा है

आपे धरती आप जल पिआरा आपे करे कराइआ॥
आपे हुकम वरतदा पिआरा जल माटी बंध रखाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 605

पउण पाणी बैसंतरो हुकम करह भगती॥
एना नो भउ अगला पूरी बणत बणती॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 948

हुकमी हुकम चलाए राह॥
नानक विगसै वेपरवाह॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 2

3. हुक्म से ही इसका इंतिज़ाम काल के अधीन है, हुक्म के अंदर कार्य करके जीव सच में समा जाता है

हुकमी सभे ऊपजह हुकमी कार कमाहे॥
हुकमी कालै वस है हुकमी साच समाहे॥
नानक जो तिस भावै सो थीऐ इना जंता वस किछ नाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

4. हुक्म में ही सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय होता है

हुकमी होवन आकार हुकम न कहिआ जाई॥
हुकमी होवन जीअ हुकम मिलै वडिआई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

हुकमी स्रिसटि साजीअन बहु भित संसारा॥
तेरा हुकम न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 786

विण नावै होर धन नाही होर बिखिआ सभ छारा॥
नानक आप कराए करे आप हुकम सवारणहारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 141

माइआ ममता करतै लाई॥ एह हुकम कर स्रिसटि उपाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1261

राजे रयत सिकदार को न रहसीओ॥
हट पटण बाजार हुकमी ढहसीओ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 141

हुकम भइआ रहणा नही धुर फाटे चीरै॥
एह मन अवगण बाधिआ सहु देह सरीरै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1012

हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे मह लख॥
सभ को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1289

गोपी नै गोआलीआ॥ तुध आपे गोए उठालीआ॥
हुकमी भांडे साजिआ तूं आपे भंन सवार जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 73

हुकमे धार अधर रहावै॥ हुकमे उपजै हुकम समावै॥
हुकमे ऊच नीच बिउहार॥ हुकमे अनिक रंग परकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 277

ढढै ढाह उसारै आपे जिउ तिस भावै तिवै करे॥
कर कर वेखै हुकम चलाए तिस निसतारे जा कउ नदर करे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 433

ढाहे ढाह उसारे आपे हुकम सवारणहारो॥
जो तिस भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एह संसारो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 579

ढाह उसारे हुकम समावै॥ हुकमो वरतै जो तिस भावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

5. सारे लोकों में एक हुक्म ही व्याप्त हो रहा है

एको हुकम वरतै सभ लोई॥ एकस ते सभ ओपत होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 223

खखै खुंदकार साह आलम कर खरीद जिन खरच दीआ॥
बंधन जा कै सभ जग बाधिआ अवरी का नही हुकम पइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 432

इको हुकम वरतदा एका सिर कारा॥
आप भवाली दितीअन अंतर लोभ विकारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 425

6. सृष्टि हुक्म में रहती है

आखण वेखण बोलण चलण जीवण मरणा धात॥
हुकम साज हुकमै विच रखै नानक सचा आप॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 145

हुकम साज हुकमै विच रखै हुकमै अंदर वेखै॥
नानक अगहो हउमै तुटै तां को लिखीऐ लेखै॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1243

7. सब कुछ हुक्म में ही हो रहा है, किसी और के वश में कुछ नहीं

हुकमै अंदर सभ को बाहर हुकम न कोए॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

तेरै हुकमे सावण आइआ॥ मै सत का हल जोआइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 73

कब चंदन कब अक डाल कब उची परीत॥
नानक हुकम चलाईऐ साहिब लगी रीत॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 148

झझै झूर मरहो किआ प्राणी जो किछ देणा सो दे रहिआ॥
दे दे वेखै हुकम चलाए जिउ जीआ का रिजक पइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 433

सभ जीउ पिंड दीआ तुध आपे तुध आपे कारै लाइआ॥
जेहा तूं हुकम करह तेहे को करम कमावै जेहा तुध धुर लिख पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 736

आपे हुकम चलाइदा जग धंधै लाइआ॥
इक आपे ही आप लाइअन गुर ते सुख पाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 789

हुकमे करम कमावणे पइऐ किरत फिराउ॥
हुकमे दरसन देखणा जह भेजह तह जाउ॥
हुकमे हर हर मन वसै हुकमे सच समाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

किस नो कहीऐ नानका किस नो करता दे॥
हुकम रहाए आपणै मूरख आप गणे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1241

बुरा भला किछ आपस ते जानिआ एई सगल विकारा॥
इह फुरमाइआ खसम का होआ वरतै इह संसारा॥
इंद्री धात सबल कहीअत है इंद्री किस ते होई॥
आपे खेल करे सभ करता ऐसा बूझै कोई॥
गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी॥
जो तिस भाणा सो सत कर मानिआ काटी जम की फासी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 993

सोई करणा जे आप कराए॥ जिथै रखै सा भली जाए॥
सोई सिआणा सो पतिवंता हुकम लगै जिस मीठा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 108

जो तिस भावै सोई करसी फिर हुकम न करणा जाई॥
सो पातसाह साहा पत साहिब नानक रहण रजाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 347-48

जिउ जिउ तेरा हुकम तिवै तिउ होवणा॥
जह जह रखह आप तह जाए खड़ोवणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 523

8. हुक्म से ही जीव बख़्शे जाते हैं और प्रतिष्ठा पाते हैं, हुक्म से ही जीव दु:ख उठाते हैं

हुकमी उतम नीच हुकम लिख दुख सुख पाईअह॥
इकना हुकमी बखसीस इक हुकमी सदा भवाईअह॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

हुकमी पैधा जाए दरगह भाणीऐ॥ हुकमे ही सिर मार बंद रवाणीऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 420

इह जग सचै की है कोठड़ी सचे का विच वास॥
इकन्हा हुकम समाए लए इकन्हा हुकमे करे विणास॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 463

इकत सूत परोए जोत संजारीऐ॥ हुकमे भवजल मंझ हुकमे तारीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 518

हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगण मुठी रोए॥
हुकम सिञापै साह का पिआरे सच मिलै वडिआई होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 636

9. आना-जाना, जन्म-मरण सब उसके हुक्म में है

हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई॥
पूरे गुर ते साच कमावै गति मित सबदे पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 940

वेकी स्रिसटि उपाईअन सभ हुकम आवै जाए समाही॥
आपे वेख विगसदा दूजा को नाही॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 947

हुकमे आवै हुकमे जाए॥ आगै पाछै हुकम समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 151

हुकमै अंदर आइआ पिआरे हुकमे जादो जाए॥
हुकमे बंन्ह चलाईऐ पिआरे मनमुख लहै सजाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 636

सभ आए हुकम खसमाहो हुकम सभ वरतनी॥
सच साहिब साचा खेल सभ हर धनी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 723

हुकमे जुग मह आइआ चलण हुकम संजोग जीउ॥
हुकमे परपंच पसरिआ हुकम करे रस भोग जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 760

हुकमी सिर जंदार मारे दाईऐ॥ आपे दे पिआर मंन वसाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 147

ऐसा साचा तूं एको जाण॥ जंमण मरणा हुकम पछाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 412

सभो सूतक भरम है दूजै लगै जाए॥
जंमण मरणा हुकम है भाणै आवै जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 472

10. हुक्म की लेखनी कर्मानुसार चलती है

धधै धार कला जिन छोडी हर चीजी जिन रंग कीआ॥
तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकम पइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 433

हुकम चलाए आपणै करमी वहै कलाम॥
नानक सचा सच नाए सच सभा दीबान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1241

11. हुक्म मिटाया नहीं जा सकता

किरत पइआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ हुकम न होई॥
जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेट न सकै कोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 359

सुणीऐ एक वखाणीऐ सुरग मिरत पइआल॥
हुकम न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1091

12. हुक्म कितना बड़ा है, कोई नहीं जान सकता

सभे राती सभ दिह सभ थिती सभ वार॥
सभे रुती माह सभ सभ धरतीं सभ भार॥
सभे पाणी पउण सभ सभ अगनी पाताल॥
सभे पुरीआ खंड सभ सभ लोअ लोअ आकार॥
हुकम न जापी केतड़ा कह न सकीजै कार॥
आखह थकह आख आख कर सिफतीं वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1241

तेरा हुकम न जापी केतड़ा लिख न जाणै कोए॥
जे सउ साइर मेलीअह तिल न पुजावह रोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

13. हौमैं (अहंकार) के कारण हुक्म नहीं समझा जाता

हउमै विच भगति न होवई हुकम न बुझिआ जाए॥
हउमै विच जीउ बंध है नाम न वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 560

सोहागणी जाए पूछहो मुईए जिनी विचहो आप गवाइआ॥
पिर का हुकम न पाइओ मुईए जिनी विचहो आप न गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 568

14. हुक्म को माननेवाला प्रकट होकर जाता है, उसके मार्ग में रुकावट नहीं आती

मंने हुकम सो परगट जाए॥ सच नीसाणै ठाक न पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 355

15. हुक्म को कर्ता ही पहचानता है

जिन कीते सोई बिधि जाणै॥ आप करे ता हुकम पछाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 118

16. हुक्म किस प्रकार समझा जा सकता है?

16.1. मालिक को भाए तो

नानक जिसह दइआल बुझाए हुकम मित॥
जिसह भुलाए आप मर मर जमह नित॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 523

सिफत सालाहण तेरा हुकम रजाई॥ सो गिआन धिआन जो तुध भाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 100

वडे हथ वडिआईआ जै भावै तै दे॥
हुकम सवारे आपणै चसा न ढिल करे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

तेरा हुकम भला तुध भावै॥ नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नाम समावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 359

कर गह लीने आपणे सच हुकम रजाई॥
जो प्रभ दिती दात सा पूरन वडिआई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 399

जा तिस भावै ता हुकम मनावै॥ इस बेड़े कउ पार लघावै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 337

प्रभ मन भावै ता हुकम समावै हुकम मंन सुख पाइआ॥
अनदिन जपत रहै दिन राती सहजे नाम धिआइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 690

हुकम भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदर करे॥
हुकम मंन सुख पाइआ प्रेम सुहागण होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 510

आपे संगत सद बहाले आपे विदा करावै॥
जिस नो किरपाल होवै हर आपे तिस नो हुकम मनावै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.551

16.2. नाम (शब्द) द्वारा

राह दोवै खसम एको जाण॥ गुर कै सबद हुकम पछाण॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.223

जिना हुकम मनाइओन ते पूरे संसार॥
साहिब सेवन्ह आपणा पूरै सबद वीचार॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.512

जिन्ही पछाता हुकम तिन्ह कदे न रोवणा॥
नाउ नानक बखसीस मन माहे परोवणा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.523

गुण अवगुण समान हहे जे आप कीते करतार॥
नानक हुकम मंनिऐ सुख पाईऐ गुर सबदी वीचार॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1092

हुकमी आइआ हुकम न बूझै हुकम सवारणहारा॥
नानक साहिब सबद सिञापै साचा सिरजणहारा॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.688

हुकम जिना नो मनाइआ॥ तिन अंतर सबद वसाइआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.72

हुकम पछाणै सो हर गुण वखाणै॥ गुर कै सबद नाम नीसाणै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.109

16.3. गुरु से (सतगुरु के अंदर हुक्म प्रकट है)

इउ पावह हर दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ॥
हउ आपहो बोल न जाणदा मै कहिआ सभ हुकमाउ जीउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.763

तीन भवन निहकेवल गिआन॥ साचे गुर ते हुकम पछान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

नानक सतगुर मिलिऐ हुकम बुझिआ एक वसिआ मन आए॥
जो तुध भावै सभ सच है सचे रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491–92

हुकमै बूझै तत पछाणै॥ इह परसाद गुरू ते जाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1289

जब लग हुकम न बूझता तब ही लउ दुखीआ॥
गुर मिल हुकम पछाणिआ तब ही ते सुखीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

खेती वणज सभ हुकम है हुकमे मंन वडिआई राम॥
गुरमती हुकम बूझीऐ हुकमे मेल मिलाई राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 569

जिस सतगुर मिलै तिस भउ पवै सा कुलवंती नार॥
सा हुकम पछाणै कंत का जिस नो क्रिपा कीती करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

मरणै ते जगत डरै जीविआ लोड़ै सभ कोए॥
गुरपरसादी जीवत मरै हुकमै बूझै सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 555

धुर खसमै का हुकम पइआ विण सतगुर चेतिआ न जाए॥
सतगुर मिलिऐ अंतर रव रहिआ सदा रहिआ लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 556

हुकम मिलाई सहज समाई गुर का सबद अपारा॥
सची वडिआई गुर ते पाई सच सवारणहारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 569

गुर भरम चुकाए अकथ कहाए सच मह साच समाणा॥
आप उपाए आप समाए हुकमी हुकम पछाणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.688

17. मालिक अपना हुक्म किसको मनवाता है?

17.1. किसी बिरले को

तिस बिन अवर न कोई राजा कर तपावस बणत बणाई॥
निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकम मनाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.912

17.2. किसी गुरुमुख को

सचा तेरा हुकम गुरमुख जाणिआ॥ गुरमती आप गवाए सच पछाणिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.144

गुरमुख मन बेधिआ असथिर होए॥ हुकम पछाणै बूझै सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.232

कर बैराग तूं छोड पाखंड सो सहु सभ किछ जाणए॥
जल थल महीअल एको सोई गुरमुख हुकम पछाणए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.440

बोलह साच मिथिआ नही राई॥ चालह गुरमुख हुकम रजाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.227

जो तुध भावह सेई नाचह जिन गुरमुख सबद लिव लाए॥
से भगत से तत गिआनी जिन कउ हुकम मनाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.506

सफल जनम परवान गुरमुख आइआ॥
हुकमै बुझ निहाल खसम फुरमाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.523

सभ किछ हुकमे आवदा सभ किछ हुकमे जाए॥
जे को मूरख आपहो जाणै अंधा अंध कमाए॥
नानक हुकम को गुरमुख बुझै जिस नो किरपा करे रजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.556

भउ भंजन पाइआ आप गवाइआ गुरमुख मेल मिलाई॥
कहो नानक नाम निरंजन अगम अगोचर हुकमे रहिआ समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 569

गुरमुख हुकम मंने सह केरा हुकमे ही सुख पाए॥
हुकमो सेवे हुकम अराधे हुकमे समै समाए॥
हुकम वरत नेम सुच संजम मन चिंदिआ फल पाए॥
सदा सुहागण जे हुकमै बुझै सतगुर सेवै लिव लाए॥
नानक क्रिपा करे जिन ऊपर तिना हुकमे लए मिलाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1423

लाले नो सिर कार है धुर खसम फुरमाई॥
लालै हुकम पछाणिआ सदा रहै रजाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1011

17.3. सेवक को मालिक का हुक्म भाता है

काट सिलक प्रभ सेवा लाइआ॥ हुकम साहिब का सेवक मन भाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 101

18. सच्चा योगी और दीवाना वह है जो ख़सम के हुक्म को पहचाने और उसके अनुसार चले

हुकम बिसमाद हुकम पछाणै जीअ जुगत सच जाणै सोई॥
आप मेट निरालम होवै अंतर साच जोगी कहीऐ सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 940

तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाए॥
हुकम पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 991

19. धुर-हुक्म द्वारा ही सतगुरु पद की प्राप्ति होती है

सतगुर की वडिआई सतगुर दिती धुरहो हुकम बुझ नीसाण॥
पुती भातीई जावाई सकी अगहो पिछहो टोल डिठा
लाहिओन सभना का अभिमान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 853

20. हुक्म मानने के फल

20.1. अंदेशे और गिनतियाँ मिट जाती हैं

चिंत अंदेसा गणत तज जन हुकम पछाता॥
नह बिनसै नह छोड जाए नानक रंग राता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 813

20.2. उजला (स्वच्छ) होता है

हुकम पछाणै ऊजला सिर कासट लोहा पार॥
त्रिसना छोडै भै वसै नानक करणी सार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1089

20.3. शब्द, नाम या सच की प्राप्ति

मेरा प्रभ सभ बिधि आपे जाणै॥ हुकमे मेले सबद पछाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 157

नाम खजाना भगती पाइआ मन तन त्रिपत अघाए॥
नानक हर जीउ ता कउ देवै जा कउ हुकम मनाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 208

हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 636

जिस कउ सबद बसावै अंतर चूकै तिसह पिआसा॥
हुकमै बूझै चउपड़ खेलै मन जिण ढाले पासा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 793

जो किछ वरतै सभ तेरा भाणा॥ हुकम बूझै सो सच समाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 193

गावण सुनण सभ तेरा भाणा॥ हुकम बूझै सो साच समाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1270

20.4. हौमैं (अहंकार) का नाश

हर चेत मन मेरे तू गुर का सबद कमाए॥
हुकम मंनह ता हर मिलै ता विचहो हउमै जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 560

हुकमै अंदर सभ को बाहर हुकम न कोए॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

हुकमे सबद पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाए॥
हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 636

20.5. आना-जाना समाप्त हो जाता है

आवत हुकम बिनास हुकम आगिआ भिंन न कोए॥
आवन जाना तिह मिटै नानक जिह मन सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 251

20.6. निरंतर सुख की प्राप्ति

जीअड़ा अगन बराबर तपै भीतर वगै काती॥
प्रणवत नानक हुकम पछाणै सुख होवै दिन राती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 156

रेण सगल इआ मन करै एऊ करम कमाए॥
हुकमै बूझै सदा सुख नानक लिखिआ पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 256

नाम पदारथ अमर है हिरदै मंन वसाए॥
गुर सेवा सदा सुख है जिस नो हुकम मनाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1011–12

सभ इको हुकम वरतदा मंनिऐ सुख पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 948

हुकम भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदर करे॥
हुकम मंन सुख पाइआ प्रेम सुहागण होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 510

20.7. निजघर और परम पद की प्राप्ति

सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ॥ हुकम संजोगी निज घर जाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

सेवक कउ सेवा बन आई॥ हुकम बूझ परम पद पाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 292

20.8. मालिक की प्राप्ति

हुकम पछाणै नानका भउ चंदन लावै॥
गुण कामण कामण करै तउ पिआरे कउ पावै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 725

इत संगत नाही मरणा॥ हुकम पछाण ता खसमै मिलणा॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 92

प्रभ मिलणै की एह नीसाणी॥ मन इको सचा हुकम पछाणी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 106

सभ मह सचा एको सोई तिस का कीआ सभ कछु होई॥
हुकम पछानै सो एको जानै बंदा कहीऐ सोई॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1350

हुकम बुझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चित लाए॥
सहसा तूटै निरमल होवै जोग जुगत इव पाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

मानै हुकम सभे गुण गिआन॥ नानक दरगह पावै मान॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पाल॥
हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नाल॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1

हुकम रजाई जो चलै सो पवै खजानै॥ खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 421

हुकमे बुझ निहाल सुख सुखेटिआ॥
परख खजानै पाए से बहुड़ न खोटिआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 520

हुकम मंनिऐ होवै परवाण ता खसमै का महल पाइसी॥
खसमै भावै सो करे मनहो चिंदिआ सो फल पाइसी॥
ता दरगह पैधा जाइसी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 471

21. हुक्म न मानने के दोष

नानक करणा जिन कीआ सोई सार करे॥
हुकम न जापी खसम का किसै वडाई दे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 157

पूरे गुर का हुकम न मंनै ओह मनमुख अगिआन मुठा बिख माइआ॥
ओस अंदर कूड़ कूड़ो कर बुझै अणहोदे झगड़े दयि ओस दै गल पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 303

पिर का हुकम न जाणई भाई सा कुलखणी कुनार॥
मनहठ कार कमावणी भाई विण नावै कूड़िआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 639

हुकम न जाणह बपुड़े भूले फिरह गवार॥
मनहठ करम कमावदे नित नित होहे खुआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

सचा नाम धिआईऐ सभो वरतै सच॥
नानक हुकम बुझ परवाण होए त फल पावै सच॥
कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूल न बुझई अंधा कच निकच॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 509

आपे कर कर वेखदा आपे सभ सचा॥
जो हुकम न बूझै खसम का सोई नर कचा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1094

सो किउ अंधा आखीऐ जे हुकमहो अंधा होए॥
नानक हुकम न बुझई अंधा कहीऐ सोए॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 954-55

अंन ते रहता दुख देही सहता॥ हुकम न बूझै बिआपिआ ममता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1348

22. उपदेश

सो ऐसा हर नाम धिआईऐ मन मेरे जो सभना उपर हुकम चलाए॥
सो ऐसा हर नाम जपीऐ मन मेरे जो अंती अउसर लए छडाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.89

मन की मत तिआगहो हर जन हुकम बूझ सुख पाईऐ रे॥
जो प्रभ करै सोई भल मानहो सुख दुख ओही धिआईऐ रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.209

हुकम बूझ रंग रस माणे॥ सतगुर सेवा महा निरबाणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.385

करह कहाणी अकथ केरी कित दुआरै पाईऐ॥
तन मन धन सभ सउप गुर कउ हुकम मंनिऐ पाईऐ॥
हुकम मंनिहो गुरू केरा गावहो सची बाणी॥
कहै नानक सुणहो संतहो कथिहो अकथ कहाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.918

सचा नाम धिआए तू सभो वरतै सच॥
नानक हुकमै जो बुझै सो फल पाए सच॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.950

हुकम रजाई साखती दरगह सच कबूल॥
साहिब लेखा मंगसी दुनीआ देख न भूल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1090

शब्द

शब्द संस्कृत की 'शब्द्' धातु से बना है। इसके अर्थ हैं – आवाज़, अक्षर, कलाम, इस्म, ज़मीर, वचन, वज़ाहत, सराहत, इज़हार, तक़रीर आदि। जो बोला जाए, सुनने में आए, जिससे सब चीज़ों की असलियत प्रकट होती हो, जो किसी गुप्त भेद को प्रकट करने की शक्ति रखता हो, वह शब्द है। पर गुरवाणी में और आत्मिक मंडलों में शब्द के अर्थ बड़े गूढ़ और गहरे हैं, जिनका वर्णन आगे किया जाता है:

शब्द कुलमालिक है और सबका आधार है

रचना में पहले शब्द गुप्त था, वह अनाम था। तब वह अपने आप में स्थित था। उसे अशब्द, अनाम, अलख, अगम, अकह या अकथ कहा जाता है। जब वह प्रकट हुआ तब नाम यानी शब्द कहलाया:

> शब्द गुप्त तब हुआ अनाम। शब्द प्रगट तब धरिया नाम॥
>
> सारबचन संग्रह, 9:3

शब्द से पहले न कोई सूर्य था, न चंद्र था और न आकाश था, शब्द निराकार था। वास्तव में शब्द चेतन है। सब चीज़ें इसी शब्द के हुक्म में हैं, कोई वस्तु इसकी सहायता के बग़ैर प्रकट नहीं हो सकती। यह शब्द सबका प्राण, सबका जौहर, सबका मूल और सबका सार है। यह स्वयं किसी के सहारे प्रकट नहीं होता बल्कि जो कुछ गुप्त या प्रकट है, वह सब इसी शब्द के आसरे है। यह ईश्वर, ब्रह्म, पारब्रह्म सबका आधार है। इस रचना में जो कुछ भी है शब्द ही है और वही उत्पत्ति और प्रलय का कारण है:

> उतपत परलउ सबदे होवै॥ सबदे ही फिर ओपत होवै॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 117

सबका आदि और अंत शब्द है। सब स्थूल तत्त्व, आकाश आदि, सूक्ष्म तत्त्व या तन्मात्रा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध सब शब्द ही हैं। जो कुछ है शब्द ही है,

इसलिए उससे जो कुछ प्रकट हो वह भी शब्द के सिवाय और क्या हो सकता है। शब्द हमें पैदा करनेवाला है, वह हमारा आधार है। हम शब्द के हैं और शब्द हमारा है। गुरवाणी बतलाती है कि शब्द कुलमालिक है, सब उसके हुक्म में है, वह करण कारण समर्थ है:

आपे कवला कंत आप॥ आपे रावे सबद थाप॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1190

पुरख सुजान तूं परधान तुध जेवड अवर न कोई॥
तेरा सबद सभ तूंहै वरतह तूं आपे करह सो होई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 448

शब्द क्या है?

यह एक ऐसा विषय है जो कभी लिखने-पढ़ने या बोलने में नहीं आया। हम समझने के लिए केवल इतना ही कह सकते हैं कि शब्द मालिक की परिपूर्ण सत्ता है जो खंडों-ब्रह्मांडों का आधार है। यह चेतन की आत्मिक धारा है, यह ध्वनि सहित थरथराहट है। यह जीवन की धारा है जो मालिक से निकलकर सर्वत्र व्याप्त हो रही है। इसी धारा द्वारा मालिक सारे संसार को पैदा करता है और उसकी सँभाल करता है। इसके द्वारा संपूर्ण सृष्टि जीवन पा रही है और इसी के आसरे प्रत्येक जीव अपने निजधाम यानी मालिक तक रसाई कर सकता है। उस मालिक की धाराएँ रेडियो की तरंगों के समान सब जगह व्याप्त हैं और उसके रूहानी राग हो रहे हैं। जब तक हमारा रेडियो ठीक होकर उनसे न जुड़े, हम उन रागों को नहीं सुन सकते। ज्यों-ज्यों हम सूक्ष्म से सूक्ष्म होते जाते हैं, वे धुनें स्पष्ट सुनाई देने लगती हैं। शब्द एक ऐसी डोर है जो हर एक को मालिक के साथ जोड़ रही है। वह सच्चा (धर्म) 'रिलीजन' है, जिसके अर्थ हैं 'वह जो हमें फिर से मालिक के साथ जोड़े'। क़ुदरत की सब ताक़तें इसी शब्द के आधार पर हैं। प्राणों की शक्ति भी इसी शब्द का वह ज़ुहूर है जो माया के मंडलों में काम कर रहा है। शब्द बिजली की भाँति सब जगह, क्या गुप्त, क्या प्रकट, पूर्णतया व्याप्त है। वह सर्वशक्तिमान है और सबका कर्ता है। गुरु नानक साहिब जप जी साहिब में इसको हुक्म कहकर वर्णन करते हैं और फ़रमाते हैं कि हुक्म कहने में नहीं आ सकता। हाँ, जो कुछ उसके अंदर हो रहा है उसका उल्लेख वे अमोल गुरवाणी जप जी साहिब की दूसरी पौड़ी में इस प्रकार करते हैं:

हुकमी होवन आकार हुकम न कहिआ जाई॥
हुकमी होवन जीअ हुकम मिलै वडिआई॥
हुकमी उतम नीच हुकम लिख दुख सुख पाईअह॥
इकना हुकमी बखसीस इक हुकमी सदा भवाईअह॥
हुकमै अंदर सभ को बाहर हुकम न कोए॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1

यह शब्द दो प्रकार का है – 1. ज़ाहिरी या प्रकट और 2. आंतरिक। प्रकट शब्द को वर्णात्मक और आंतरिक को धुनात्मक कहा गया है। प्रकट शब्द की अवस्था से आंतरिक शब्द का किसी हद तक अनुमान लगाया जा सकता है। किसी के प्रेम भरे शब्दों को सुनने से हमारे रोम-रोम में प्रसन्नता आ जाती है। त्याग और वैराग्य के शब्दों को सुनने से त्याग और वैराग्य की भावनाएँ जाग्रत हो जाती हैं। किसी के कटु वचनों के द्वारा हमारे अंदर क्रोध की अग्नि भड़क उठती है। शीतल वचनों द्वारा सुख और कड़वे वचनों द्वारा दुःख उत्पन्न होता है। हमदर्दी के वचन आशा बँधानेवाले और इसके विपरीत शब्द निराशा का कारण होते हैं। ये सब ताकतें शब्द के अंदर मौजूद हैं:

सबदहि मारे मरि गये, सबदहि तजिया राज।
जिन जिन सबद पिछानिया, सरिया तिन का काज॥...
एक सबद सुखरास है, एक सबद दुखरास।
एक सबद बंधन कटै, एक सबद गल फाँस॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 93

शब्द की महिमा अगम और अपार है। जब ज़ाहरी या प्रकट शब्द का यह हाल है तो अंदर के शब्द में कितनी शक्ति होगी? सितार की ध्वनि सुनने से मस्ती आती है, वह ख़याल को अपनी ओर खींचकर मग्न करती है। यदि यह स्थूल शब्द ऐसी अवस्था उत्पन्न कर सकता है तो वह आंतरिक शब्द जो सूक्ष्म है, कितना प्रबल होगा!

शब्द कर्ता है

सब मज़हबों की धर्म पुस्तकों में शब्द को सृष्टि का कर्ता माना गया है। वेद कहते हैं कि नाद से चौदह भुवन बने। क़ुरान शरीफ़ में कलमे से चौदह तबक़ों

के बनने का उल्लेख आया है। ईसाइयों की धर्म पुस्तक सेंट जॉन की बाइबल में भी शब्द से ही सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन है, "शब्द आदि में था, शब्द परमात्मा के साथ था, शब्द परमात्मा था, सब चीज़ें उससे बनाई गईं" (बाइबल, जॉन 1:1-3)। गुरवाणी बतलाती है कि संपूर्ण रचना शब्द से ही चल रही है और वह सारी सृष्टि का कर्ता है। धरती और आकाश सब उस शब्द से बने हैं जो घट-घट के अंदर है और संपूर्ण जगत को लेकर खड़ा है:

एको सबद एको प्रभ वरतै सभ एकस ते उतपत चलै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

सबदै धरती सबदै अकासु। सबदै सबद होआ परगासु।
सारी स्रिसटि सब्द कै पाछै। नानक सबदि घटे घटि आछै॥

गुरु नानक देव, प्राण संगली, पृ. 103

आपीन्है आप साज आप पछाणिआ॥
अंबर धरत विछोड़ चंदोआ ताणिआ॥
विण थंम्हा गगन रहाए सबद नीसाणिआ॥
सूरज चंद उपाए जोत समाणिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1279

केवल उत्पत्ति ही नहीं, बल्कि प्रलय भी उसी से होती है और दोबारा सृष्टि का निर्माण भी उसी से होता है:

उतपत परलउ सबदे होवै॥ सबदे ही फिर ओपत होवै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 117

हिंदू शास्त्र शब्द को आकाश का गुण या आकाश का प्राण कहते हैं। इससे यह पता चलता है कि यह आकाश से भी कहीं सूक्ष्म और व्यापक है। यदि ग़ौर से विचार करके देखें तो इस शब्द का पता वहाँ भी लगता है जहाँ पुरुष और प्रकृति का मेल है, क्योंकि मेल मिलाप में भी गति और स्वर होता है। शब्द की सीमा केवल यहीं तक नहीं वह कुछ और भी है, स्वयं उस मालिक को भी शब्द रूप ही बताया गया है:

तेरा सबद सभ तूंहै वरतह तूं आपे करह सो होई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 448

सब धर्मों को माननेवाले मालिक को शब्द स्वरूप ही मानते हैं। दुनिया के सबसे पुराने माने जानेवाले वैदिक धर्म ने भी इसी का गुणगान किया है। सामवेद में कथन है:

शब्द ब्रह्म निशब्द प्रणवो ब्रह्म।

मुसलमान फ़क़ीर भी इसी शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं। हज़रत शाह नियाज़ फ़रमाते हैं कि यह सारा आलम शब्द द्वारा अस्तित्व में आया और इससे ही सब नूर प्रकट हुआ:

आलम अज़ सौते-ईं ज़ुहूर गरिफ़्त,
अज़ हज़ूरश बिसाते-नूर गरिफ़्त।
दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 91

हज़रत अब्दुल-रज़्ज़ाक़ काशी फ़रमाते हैं कि इस्मे-आज़म सारे नामों का स्रोत है। उसकी ज़ाहिरी सूरत सब चीज़ों का अंदरूनी आधार है। इस्मे-आज़म एक दरिया है और सारी ख़िलकत उसकी लहरें हैं। इस नुक़ते को वही समझ सकता है जो हमारी परंपरा या कामिल फ़क़ीरों में से हो:

इस्मे-आज़म जामा-ए-असमा बुवद, सूरते-ऊ मअनीऐ-अशया बुवद।
इस्म दरया ओ तईय्युन मौजे-ऊ, ईं कसे दानद किह् ऊ अज़ मा बुवद।
अब्दुल-रज़्ज़ाक़ काशी

शब्द लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आ सकता

आंतरिक शब्द महाचेतन और अपार है। वह बाहर के कानों द्वारा नहीं सुना जा सकता, न ज़बान द्वारा बोला जा सकता है और न ही लिखने में आ सकता है। वह अनरिटन लॉ (Unwritten law) और अनस्पोकन लेंग्वेज (Unspoken language) है। वह लिखने-पढ़ने से परे अकथ्य है। वह स्वयं निराधार है, पर सब कुछ उसके आसरे क़ायम है। वह जंगम-स्थावर सबमें व्याप्त है। केवल आत्मा उसका अनुभव कर सकती है। चेतन (आत्मा) महाचेतन (शब्द) में मिलकर एक हो जाता है। इसको गुरवाणी में सच्चा शब्द कहा है जो नाशरहित है:

सचै सबद सच कमावै॥ सची बाणी हर गुण गावै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

गुरवाणी में सकल सयानपों को छोड़कर सच्चे शब्द की कमाई और इसमें समा जाने का उपदेश है:

गुर के चरन मन मह धिआए॥
छोड सगल सिआणपा साच सबद लिव लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

गोबिंद भजहो मेरे सदा मीत॥ साच सबद कर सदा प्रीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1192

यह स्थूल इंद्रियों का विषय नहीं:

अखी बाझहो वेखणा विण कंना सुनणा॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 139

यह बाहरी आँखों और कानों के बग़ैर देखने और सुनने का मज़मून है। मौलाना रूम इसके बारे में फ़रमाते हैं:

तुर्क ओ कुर्द ओ पारसी गो व अरब, फ़हम क़रदा आँ निदा बे गोशो-लब।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 230

अर्थ: तुर्की, कुर्द, फ़ारस और अरब के लोगों ने उसे बग़ैर कानों और होठों के जाना है।

उपनिषदों (छान्दोग्य, 1:1:1 और मैत्रायणी, 6:4) के ऋषियों ने उसे प्रणव कहा है, जो प्राणों के द्वारा सुना जाए और जिसके गाने के लिए जिह्वा, होठ और तालु की आवश्यकता न हो, जो अपने आप हो रहा है।

कबीर साहिब कहते हैं कि शब्द निराकार है। उसका जिह्वा द्वारा वर्णन नहीं हो सकता, जिसकी निरख-परख केवल अंतरात्मा में ही हो सकती है:

सबद सबद सब कोइ कहै, वो तो सबद बिदेह।
जिभ्या पर आवै नहीं, निरखि परखि करिं देह॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 92

हज़रत बाहू भी उसका वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि उस कलमे को कहने की जिह्वा में शक्ति नहीं है, वह उसका बयान नहीं कर सकती:

ज़े-ज़बानी हर कोई पढ़दा, दिल दा कलमा कोई हू।
जित्थे कलमा दिल दा पढ़ीऐ, मिले ज़बां न ढोई हू।

हज़रत सुल्तान बाहू, बैत 101

फिर फ़रमाते हैं कि मुर्शिद ने हमें वह सबक या पाठ पढ़ाया है जो बग़ैर पढ़े, पढ़ा जाता है, जो कानों में उँगलियाँ दिए बग़ैर सुनाई देता है:

मुरशद हादी सबक़ पढ़ाया, पढ़यों बिना पढ़ीवे हू।
उगलियां विच कंनां दित्तियां, सुणयों बिना सुणीवे हू।

हज़रत सुल्तान बाहू, बैत 171

मौलाना रूम क्या सुंदर तरीक़े से इस शब्द का वर्णन करते हैं, "हे मालिक! मुझे वह मुक़ाम बता जहाँ तेरा कलाम बग़ैर अक्षरों के अपने आप हो रहा है।"

ऐ ख़ुदा बनुमा तू जाँ रा आँ मक़ाम,
क-अन्दरू बे हर्फ़ मी रूयद कलाम।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 94

सब धर्मों में शब्द की शिक्षा का उल्लेख है

सब मज़हबों की धर्म पुस्तकों में इस शब्द का ज़िक्र मिलता है। हिंदू इसी शब्द को शब्द और अशब्द ब्रह्म या नाद कहते हैं, जिससे सारी सृष्टि प्रकट हुई। पुरातन ऋषि इसी की महिमा गाते रहे। इस ध्वनि के साधन को वे लोग श्रुति कहते थे, जिसके अर्थ हैं 'जो सुनी गई या सुनी जाए'। यह विधि गुरु-शिष्य की परंपरा द्वारा सीना-ब-सीना (एक हृदय से दूसरे हृदय में) प्रचलित रही। छान्दोग्य (1:1:1) और मुण्डक उपनिषदों के ऋषियों ने उसे उद्‌गीथ (ऊपर का राग) और प्रणव (ओम्) कहा है। तात्पर्य यह है कि उद्‌गीथ ज़मीनी राग नहीं, बल्कि उद्‌गीथ ऊपर का वह आसमानी राग है जो प्राणों के कानों द्वारा सुना जाता है और जिसके गाने में जिह्वा, होठ और तालू की आवश्यकता नहीं पड़ती।

मैत्रायण्युपनिषद् (6:22-23) में आया है कि ध्यान करने के लिए दो ब्रह्म हैं, शब्द ब्रह्म और अशब्द ब्रह्म। शब्द ब्रह्म के ध्यान द्वारा अशब्द ब्रह्म प्रकट होता है। फिर बताया है कि कानों को अँगूठों के द्वारा बंद करो और सात क़िस्म की आवाज़ों को अपने अंदर सुनो... इन आवाज़ों के परे अभ्यासी अशब्द पारब्रह्म या गुप्त ब्रह्म में लीन हो जाता है। जो शहद (की मिठास की स्थिति) तक पहुँच गए, वे गुण और तमीज़ के दरजे से ऊपर पहुँच गए।

योग-संध्या नामक ग्रंथ में (पृष्ठ 112) कहा गया है कि योगी हाथों के अँगूठों को कानों के छिद्रों में लगाकर अनाहत ध्वनि (शब्द) को सुने और उस ध्वनि में चित्त को तब तक स्थिर करे जब तक तुरियावस्था प्राप्त न हो। यह शब्द दस प्रकार का सुनाई देता है। इनको पार करके योगीजन अव्यक्त में समा जाते हैं।

छान्दोग्य उपनिषद् (3:17:6 व 3:19:6) में ब्रह्मरूपी सूर्य से नाद के प्रकट होने का ज़िक्र है और यह कहा गया है कि यह भेद अंगिरस ऋषि ने देवकी के पुत्र कृष्ण जी को बतलाया था।

गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं कि प्रहलाद भक्त का उद्धार शब्द द्वारा हुआ:

जुग जुग भगता की रखदा आइआ॥
दैत पुत्र प्रहलाद गाइत्री तरपण किछू न जाणै सबदे मेल मिलाइआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1133

गीता में उल्लेख है:

पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते॥

श्रीमद्भगवद्गीता, 6:44

अर्थ: वह पराये वश में होते हुए भी पूर्वजन्म के अभ्यास द्वारा उसी योग की ओर खींचा जाता है और वह जिज्ञासु (योग की इच्छा करनेवाला) शब्द ब्रह्म को पार कर जाता है:

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्॥

श्रीमद्भगवद्गीता, 6:45

अर्थ: फिर ऐसा शुद्ध अंतःकरण वाला योगी यत्न करता हुआ अनेक जन्मों में सिद्ध होता हुआ उत्तम गति को प्राप्त होता है।

नादबिन्दु उपनिषद् (श्लोक 31) में लिखा है:

सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रां संधाय वैष्णवीम्।
शृणुयाद्दक्षिणे कर्णे नादमन्तर्गतं सदा॥

अर्थ: सिद्धासन में स्थिर होकर योगी वैष्णवी मुद्रा धारण करे और अपने अंदर दाहिनी ओर के नाद यानी आवाज़ को सुने।

योग-संध्या में भी शब्द को सुनने का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

ऋग्वेद के वागम्भृणी सूक्त (10:125) और अथर्ववेद (4:30:1-3) में भी शब्द की अनुपम महिमा है (प्रमाण के लिए 'वाणी' का प्रकरण देखें)। अथर्ववेद के हंसोपनिषद् के श्लोक 16 में लिखा है कि हंस-मंत्र के करोड़ जाप करनेवाले को नाद का अनुभव होता है। फिर नाद के दस भेदों का वर्णन करके यह बताया गया है कि नौ प्रकार के नाद का त्याग और दसवें प्रकार के नाद का जो मेघ गर्जन के समान है, अभ्यास करना चाहिए क्योंकि इससे पारब्रह्म स्वरूप की प्राप्ति होती है।

हठयोग प्रदीपिका के श्लोकों (4:80-84, 91-92, 95-98, 102 और 105) में अनेक प्रकार से अनहद शब्द की महिमा गाई गई है।

वेदों में इसका नाद और आकाशवाणी कहकर वर्णन किया गया है। बौद्ध ग्रंथों में भी इस शब्द के संकेत मिलते हैं, वे इसे 'सोनोरस लाइट' यानी शब्दमयी ज्योति कहते हैं।

प्राचीन यूनानी महात्मा भी इस शब्द का ज़िक्र करते हैं। सुकरात कहते हैं कि उन्होंने अपने अंदर एक ऐसी आवाज़ सुनी जो उन्हें अकथनीय रूहानी देशों में ले गई। पाइथागोरस भी इसके बारे में ज़िक्र करते हैं। प्लेटो ने इसको 'मंडलों का राग' कहकर वर्णन किया है। इसको यूनानी भाषा में 'लॉगॉस' (जिसका अर्थ 'शब्द' है) भी कहा गया है। 'साइलेंस' या अशब्द से जो वाणी या आवाज़ निकली उसे 'शब्द' या 'वर्ड' कहते हैं, इसी से सब कुछ प्रकट हुआ है। चीन की धर्म पुस्तकों में इसका 'टाओ' कहकर वर्णन किया गया है। पारसियों में महात्मा ज़रदुश्त ने छः रूहानी ताक़तों का ज़िक्र करते हुए एक और ताक़त का वर्णन किया है जिसे 'शरोश' कहा है, जो संस्कृत की 'श्रु' धातु से निकला है, मालिक की वह ताक़त जो सुनी जा सके। यह संतों के 'शब्द' पद से मिलता है। महात्मा ज़रदुश्त जी के ज़ेंद अवेस्ता नामक ग्रंथ में एक प्रार्थना आई है, "हे मज़दा (मालिक)! जिसे तू प्यार करता है उसे शरोशा भेज।"

कबीर साहिब, गुरु नानक साहिब से लेकर दसों पातशाहियाँ (दसों गुरु साहिबान), दादू साहिब, जगजीवन साहिब, तुलसी साहिब, दरिया साहिब, बाबा लालदास, पलटू साहिब और अनेक संत शब्द की शिक्षा देते रहे हैं।

ईसाई इसको वर्ड या लॉगॉस कहते हैं:

> *आदि में शब्द था, शब्द परमात्मा के साथ था और शब्द परमात्मा था। शुरू में यह परमात्मा के साथ था। इसी शब्द से सब चीज़ें प्रकट हुईं और इसके बग़ैर कोई ऐसी चीज़ नहीं जो बनी।*
>
> बाइबल, जॉन 1:1-3

घास सूख जाती है, फूल मुरझा जाते हैं, पर मालिक का शब्द सदा अटल रहेगा।

बाइबल, इसायाह 40:8

दृष्टांत कथा यह है कि वह बीज परमात्मा का शब्द है।

बाइबल, ल्यूक 8:11

मैडम ब्लावत्स्की ने, जो थियोसॉफ़िकल सोसाइटी की स्थापना करनेवाली थीं, इसे मौन आवाज़ (Voice of the silence) कहा है। मेसॉनिक आर्डर (Masonic Order) में लॉस्ट वर्ड (Lost Word) (गुप्त या खोया हुआ शब्द) इसी शब्द को कहा है जिसकी तलाश में हर एक मास्टर मेसन है, पर जो संतों से ही प्राप्त हो सकता है।

क़ुरान शरीफ़ में आया है कि ख़ुदा ने कहा, 'कुन फ़यकून' (36:82)। अभिप्राय यह है कि उससे आवाज़ प्रकट हुई और सारा आलम पैदा हो गया। सूफ़ियों ने इसे वादन कहकर समझाया है। सूफ़ी लोग कहते हैं:

गर ब इज़हार रू न आवुर्द, नामे-आवाज़ ईंजहाँ न बुदे।

अर्थ: यदि वह अनाम ज़ाहिर होने की ओर मुँह न करता तो नाम यानी आवाज़ न होती और यह जहान अस्तित्व में न आता।

सूफ़ी मत के दरजाते उलवी (ऊपरी मंडलों में गमन करनेवाले) के फ़क़ीर हज़रत इनायत खां फ़रमाते हैं कि यह हमारा जहान एक इलाही राग है। यह सब उसका ही ज़ुहूर है और उससे ही बना है। संतों की वाणियों में भी यह विचार मिलता है कि शब्द (आदि राग) से सब खंड-ब्रह्मांड बने। वह उद्गीथ सबके अंदर हो रहा है। हज़रत साहिब ने इस सौते-सरमदी (ख़ुदा की आवाज़) के विषय का विस्तार से स्पष्ट वर्णन किया है।

मुसलमान इसको कलामे-इलाही, निदाए-आस्मानी और इस्मे-आज़म कहकर बयान करते हैं। इसी की तालीम सुल्तानुल-अज़कार, (ज़िक्र यानी सिमरन का बादशाह), सौते-सरमद या सौते-नसीरा (कलामे-इलाही, कलामे-मजीद या कलामे-हक़्क़ जो 'वही' या 'इलहाम' अंतर में सुना जाता है) आदि साधनों के रूप में सूफ़ी मत की शाखाओं में प्रचलित रही। इसके अनेक प्रमाण हमें मुसलमान फ़क़ीरों के कलामों में मिलते हैं।

चर्ख़ रा दर ज़ेरे-पा आर ऐ शुजाअ,
बिशनौ अज़ फ़ौके-फ़लक बाँग-ए-समाअ।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 190

अर्थ: ऐ बहादुर! आसमान को पैरों के नीचे ले आ। फिर आसमान की चोटी पर 'समाअ' की बाँग को सुन।

हमा आलम पुर अस्त अज़ आवाज़, लेक दरहाए-गोश-ख़ुद कुन बाज़।...
बिशनवी यक कलामे-ना-मक़तूअ, अज़ हदूसो-फ़ना बुवद मरफ़ूअ।

दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 90

अर्थ: सारे आलम में वह आवाज़ गूँज रही है, उसको सुनने के लिए अंदर के कानों को खोल, तू एक लगातार शब्द को सुनेगा, जिसके द्वारा तू जन्म-मरण की हद से पार हो जाएगा:

तुरा ज़ किंगरा-ए-अर्श मीज़नंद सफ़ीर,
न-दांमत किह् दरीं दामगह चिह् उफ़्तादस्त।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 54

अर्थ: तुझे तो अर्श के किंगरे (ख़ुदा के घर) से हरदम आवाज़ आ रही है, मैं नहीं जानता तू दुनिया के जाल में क्यों फ़ज़ूल फँसा पड़ा है।

यह आवाज़ किस तरह सुनी जाती है, इसके बारे में वे फ़रमाते हैं:

पंबा-ए-वसवास बेरूं कुन ज़ गोश,
ता बिगोशत आयद अज़ गरदूं ख़रोश।
पस महल्ले-वही गरदद गोशे-जां,
वही चिह् बुवद गुफ़्तन अज़ हिस्से-निहां।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 170

अर्थ: शक की रूई को अपने कानों से निकाल दे ताकि आसमान से तुझे आसमानी राग सुनाई दे, यही ख़ुदा का इलहाम (आकाशवाणी) है। इस 'वही' (ईश्वर की आज्ञा) का उतरना क्या है, यानी अंदरूनी गुप्त चेतनता के साथ संबंध पैदा करना है।

गुफ़्त पैग़ंबर किह् आवाज़े-ख़ुदा,
मी रसद दर गोशे-मन हमचूँ सदा।
मुहर बर गोशे-शुमा बिनहादे-हक़्क़,
ता ब आवाज़े-ख़ुदा नारद सबक़।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 273

अर्थ: हज़रत मुहम्मद साहिब कहते हैं कि ख़ुदा की आवाज़ मेरे कानों में आम आवाज़ों की तरह आती है। मालिक ने तुम्हारे कानों पर मोहर लगा दी है जिसकी वजह से तुम ख़ुदा की आवाज़ को नहीं सुन सकते।

हज़रत मुहम्मद साहिब के बारे में ज़िक्र आया है कि वे पंद्रह साल तक आवाज़े मुस्तक़ीम यानी अनहद शब्द को सुनते रहे थे:

चूं आं हज़रत (मुहम्मद साहिब) ब सिने-चिह्ल सालगी रसीद। आसारे-वही बर वै ज़ाहिर गश्त। बरिवायते आंकिह् पांज़दह साल पेश अज़ वही आवाज़े-मुस्तक़ीम मी शुनीद। व ख़्वाबहाए रास्त मीदीद। व हफ़्त साल पेश अज़ वही अनवारे-तजल्लियात मीदीद। व दो साल यक मर्तबा ब-ग़ारे-हिरा मीरफ़्त व यक माह ब इबादत मशग़ूल मीशुद॥

हज़रत मौलाना शैख़ मुहम्मद अक्रम साबिरी, इक़्तबास-उल-अनवार, पृ. 36

फिर उसी किताब में (पृष्ठ 106 पर) ज़िक्र आया है कि पैग़ंबर साहिब ग़ारे-हिरा में छ: साल और हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी उसी ग़ार (गुफा) में बारह वर्ष सुल्तानुल-अज़कार का शुग़ल यानी सुरत-शब्द योग का अभ्यास करते रहे:

हज़रत शाह मीर लाहौरी क़ुदस सिरहु रिवायत करदा आँहज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी फ़रमूद किह् पैग़म्बर शश साल दर ग़ारे-हिरा मशग़ूल ब सुल्तान-उल-अज़कार बूद अंद। व मन दर आँ ग़ारे-मुतबर्का दो अज़ दह साल ब ईंशुग़ल इश्तग़ाल नमूदा अम।

गुरु साहिब और अन्य संतों की वाणियों में शब्द का स्पष्ट उपदेश मिलता है। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं:

बहरे करन अकल भई होछी सबद सहज नही बूझिआ॥
जनम पदारथ मनमुख हारिआ बिन गुर अंध न सूझिआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1126

गुरु अमरदास जी के कथन हैं:

सबद न जाणह से अंने बोले से कित आए संसारा॥
हर रस न पाइआ बिरथा जनम गवाइआ जंमह वारो वारा॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 601

गुर का सबद समाल तू मूड़े गति मत सबदे पाए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 550

सतगुर बाझहो संगत न होई॥ बिन सबदे पार न पाए कोई॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1068

ऊपर दिए गए प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि हिंदू, मुसलमान, ईसाई और दूसरे सब मत इस शब्द के भेद के जाननेवाले थे, चाहे उन्होंने इसका पूरा विस्तार से वर्णन नहीं किया। हिंदुओं और दूसरे मतों के फ़क़ीरों ने अंड और ब्रह्मांड तक (अनहद) शब्द का कुछ वर्णन किया है, पर संतों ने, चाहे वे किसी भी देश या धर्म में हुए हों, ब्रह्मांड से ऊपर के शब्द (सार यानी सत् शब्द) का भी पूरा-पूरा वर्णन किया है। (देखें: 'पंच-शब्द' का प्रकरण)।

शब्द में आवाज़ है

यह आवाज़ (ध्वनि) क्या है? इसकी बनावट क्या है? कोई कहते हैं कि जब दो वस्तुएँ टकराती हैं तो आवाज़ उत्पन्न होती है। कोई कहते हैं कि जहाँ हरकत (गति, हिलना-डुलना) होती है वहाँ आवाज़ का प्रकट होना आवश्यक है। हाँ, टक्कर और हरकत द्वारा भी आवाज़ पैदा होती है, पर यह ध्वनि, जिसका कि संतों ने वर्णन किया है, इन दोनों से अलग चीज़ है। यह ध्वनि सृष्टि का आधार है, यह रूहानियत की निशानी है।

संत बतलाते हैं कि सारी सृष्टि आवाज़ से प्रकट हुई। मुसलमान कहते हैं कि कुन का कलमा निकला और सारी दुनिया बन गई। ईसाई भी यही कहते हैं कि सारी रचना (कलाम) वर्ड से ही उत्पन्न हुई। यह शब्द यानी ध्वनि चेतन है, यह चेतन की भी प्राण है। ध्वनि ही ज्ञान है और असल ज्ञान से प्रकट होने का माध्यम भी है:

गिआन धिआन धुन जाणीऐ अकथ कहावै सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.59

यह आवाज़ (ध्वनि) सबके अंदर परिपूर्ण है, व्याप्त है। पत्थर और लकड़ी के अंदर भी आवाज़ है, क्योंकि इनकी बनावट परमाणुओं से है, इन परमाणुओं में हमेशा हरकत (गति) रहती है, जिसके द्वारा हर एक वस्तु बदलती रहती है। यह गति ही परिवर्तन का कारण है। असल में हर एक वस्तु परिवर्तनशील है। हर सेकंड, हर मिनट, हर घंटे यह दुनिया बदलती रहती है:

बयक लम्हा बयक साअत बयक दम, दिगर गूं मी शवद अहवाले-आलम।

चाहे हमें इसका इल्म (बोध) हो या न हो, पत्थर बदलता रहता है, उसके अंदर हरकत होती है, हरकत के द्वारा आवाज़ होना ज़रूरी है, इसलिए वह भी आवाज़ से रहित नहीं। हरकत करती हुई दृष्टिगोचर वस्तुएँ और हरकत करनेवाली अगोचर वस्तुएँ दोनों ही गतिमान हैं, इसलिए सबके अंदर आवाज़ है जो सबका जौहर है। क्या ख़ाली और क्या भरा हुआ, सब उस दोस्त (परमात्मा) के नग़मे यानी आत्मिक ध्वनि से पूर्ण हैं। तबले को देखें उसमें किस तरह आवाज़ आती है:

पुर ओ ख़ाली पुर अंद अज़ नग़मा-ए-दोस्त,
बिबीं दफ़ रा किह् चूँ बर मी दरद पोस्त।

यह ध्वनि सबके अंदर रम रही है और सबकी प्राण और आधार है। यह चेतन की धारा अति सूक्ष्म है, जिसको सुनने के लिए उतने ही सूक्ष्म कान चाहिएँ। किसी सूफ़ी की क्या सुहावनी उक्ति है:

खुश्क तार ओ खुश्क चोब ओ खुश्क पोस्त,
अज़ कुजा मी आयद ईंआवाज़े-दोस्त।

अर्थ: तार, लकड़ी और चमड़ा सबके सब ख़ुश्क हैं, इनमें से जो दोस्त की आवाज़ आ रही है, वह कहाँ से आ रही है?

असल में शब्द यानी आवाज़ ही संपूर्ण सृष्टि का ख़ालिक (कर्ता) है, यह सब ज़ुहूर (प्रताप) इस आवाज़ का ही है:

गर ब इज़हार रू न आवुर्दे, नामे-आवाज़ ईंजहाँ न बुदे।

अर्थ: अगर वह अनाम ज़ाहिर होने की ओर मुख न करता तो नाम यानी आवाज़ न होती और यह जहान अस्तित्व में न आता।

वह प्रीतम हरदम तेरे साथ कलाम (बातचीत) करता है, अफ़सोस कि तू उस क़दीम (पुरातन) कलाम को सुनता नहीं:

यारे-मा हरदम अस्त बा तू कलीम, हैफ़ तू नशनवी कलामे-क़दीम।

दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 90

पैग़ंबर साहिब इसी आवाज़ के बारे में फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की आवाज़ मेरे कानों में हरदम आम आवाज़ की तरह आ रही है – रब ने तुम्हारे कानों पर मुहर लगा दी है ताकि उसे सुन न सको:

गुफ़्त पैग़ंबर किह् आवाज़े-ख़ुदा, मी रसद दर गोशे-मन हमचूँ सदा।
मुहर बर गोशे-शुमा बिनहादे-हक़्क़, ता ब-आवाज़े-ख़ुदा नारद सबक़।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 273

यह आवाज़, जिसको दोस्त, यार और ख़ुदा की आवाज़ कहा गया है, दुनिया में हर जगह गूँज रही है। हाफ़िज़ साहिब भी फ़रमाते हैं:

जीं क़िस्सा हफ़्त गुम्बदे-अफ़लाक पुर सदास्त,
कोतह् नज़र न बीनद किह् सुख़न मुख़्तसर गरिफ़्त।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 87

अर्थ: यह क़िस्सा यानी शब्द सातों आसमानों में गूँज रहा है...। मूढ़ लोग इसे नहीं समझ सकते।

यह ध्वनि शुद्ध है, किसी के आधार पर नहीं। जहाँ तत्त्व, मन और माया का देश है वहाँ यह उनके साथ मिली-जुली है। इसका बोध मस्तक पर सुषुम्ना नाड़ी में गुरु के द्वारा प्राप्त होता है। आत्मिक ज्ञान के लिए इस शब्द का अभ्यास आवश्यक है। इस आत्मिक ध्वनि को, जिसे मुसलमान फ़क़ीरों ने सौते-सरमद या नग़्माए यज़दानी कहा है, सुनो और उन मंडलों में पहुँचो जहाँ से तुम्हारे अंदर अपने प्रीतम की कभी ख़त्म न होनेवाली आवाज़, नीचे के मंडलों में आकर गूँज रही है। मौलाना रूम कहते हैं कि तू ऐसी बाँग को खोज जो कभी ख़त्म न हो और ऐसे सूर्य की तलाश कर जो कभी अस्त न हो:

बांगो-सीते जू किह् आं ख़ामिल नशुद,
ताबे-खुशीदे किह् आँ आफ़िल नशुद।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 164

दुनिया के लोग इससे बेसुध हैं। जब किसी शब्द-अभ्यासी गुरु से राह लेकर मनुष्य अपने अंदर प्रवेश करता है, तो वह अपने अंदर सैकड़ों धुनें सुनता है जिनसे उसके आसपास बैठे लोग बेख़बर रहते हैं:

बनिगर दर नफ़से-खुद सद गुफ़्तगू, हम नशीने-ऊ नबुर्दा हेच बू।

मौलाना रूम

ये धुनें केवल कल्पना के आसरे नहीं सुनाई देतीं। जिस किसी ने किसी भी ज़माने में शब्द मार्ग का अभ्यास किया है, उसने इस प्रकार की धुनों का लगभग एक जैसा ही वर्णन किया है और आज भी संतों की संगति में अनजान बच्चे और नवीन श्रद्धालु तक इनको सुनते हैं और शहादत (गवाही) देते हैं।

उपनिषदों (नादबिन्दु उपनिषद्, 33-34) में इस शब्द की ध्वनियों का वर्णन किया गया है कि अभ्यास के प्रारंभ में बहुत ज़ोर की आवाज़ें आती हैं, ये बढ़ती हैं और अति सूक्ष्म होकर सुनाई देती हैं। ये आवाज़ें पहले तो समुद्र, बादल, ढोल और पानी के झरनों की, मृदंग और घंटे के नाद (सिंगी) की भाँति होती हैं।

भक्ति सागर में संत चरनदास जी ने दस प्रकार के नादों का वर्णन किया है:

वे चिड़ियों के बोलने, झींगुर, छोटी घंटी, घंटे, शंख, बीन, करताल या झाँझ, मुरली, मृदंग, बाँसुरी आदि की आवाज़ों और सिंह के गर्जन की भाँति होते हैं।

हठयोग प्रदीपिका (4:85-86) में लगभग इन्हीं से मिलते-जुलते दस नादों का उल्लेख है– भ्रमर गुंजार, घुँघरू, शंख, घंटी, करताल या झाँझ, मुरली, भेरी, मृदंग, बाँसुरी और सिंह गर्जन।

सारबचन में भी सहस्रदल-कमल में लगभग ऐसी ही दस धुनों के सुनाई देने का वर्णन आया है:

घंटा शंख नाद धुन गाजा।
बीन बाँसरी अचरज बाजा॥
ताल मृदंग किंगरी धधकी।
ढोल पखावज छिन छिन खड़की॥

सहस धार अमृत की बरखा।
गगन मँडल फिरे जैसे चरख़ा॥
सारबचन संग्रह, 6:5:16-18

थियोसॉफ़ी के ग्रंथ द वॉयस ऑफ़ द साइलेंस (पृ. 10) में मैडम ब्लावत्स्की लिखती हैं:

पहला शब्द बुलबुल की मीठी आवाज़ की भाँति होता है जो विरहभरी रागिनी है जिसे वह अपने साथी से बिछुड़ने के समय अलापती है। दूसरी, अभ्यासियों को झाँझ की आवाज़ की तरह सुनाई देती है, जो तारा-मंडल को प्रकट कर देती है। इसके बाद समुद्र के अंदर घिरे या निवास करते हुए किसी देवता की सुरीली रागिनी है। इसके उपरांत वीणा के अलाप की भाँति आवाज़ है। पाँचवीं बाँस की मुरली की आवाज़ उनके कानों में सुनाई देगी। यह तुरही की आवाज़ में बदल जाएगी। अंतिम आवाज़ घने बादलों की भाँति सुनाई देगी।

अमीर ख़ुसरो ने (देखें: तज़करा ग़ौसिया नामक पुस्तक, पृष्ठ 332) इन आवाज़ों का वर्णन इस प्रकार किया है:

एकी भंवर गुंजार सी दूजे घुंगरू होय।
तीजे शबद संख का चौथे घंटा होय।
पांचवें टाल जो बाजे। छटे सो मुरली नाथ।
सातवें भीर जो गाजे। अठवें शब्द मरदंग का नवें नफ़ीरी टाल।
दसवें गरजे सिंघ सास खुसरो यह ताल।
दस प्रकार अनहद बजे जित जोगी हो लीन।
इंदरी थकी मनुआ थके खुसरो ने कहि दीन।
अनहद बाजे बाजन लागे। चोर नगरीआ तज तज भागे।
गुरु निज़ाम की भी दुहाई। खुसरो ने अंतर लिव लाई।

ये शब्द की शुरू की साधारण धुनें हैं, पर असली शब्द घंटे और शंख के हैं जिनका ऊपरी मंडलों से संबंध है।

कस न-दानिस्त किह् मंज़िल-गहे मअशूक़ कुजास्त,
ईं क़दर हस्त किह् बांगे-जरसे मी आयद।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 200

अर्थ: कोई नहीं जानता कि मेरे प्रीतम की मंज़िल कहाँ है, इतना ज़रूर है कि वहाँ से घंटे की आवाज़ आ रही है।

शब्द के अंदर आत्मिक राग है, धुन है

साचै सबद सहज धुन उपजै मन साचै लिव लाई॥
अगम अगोचर नाम निरंजन गुरमुख मंन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

यह शब्द हमें सुनाई क्यों नहीं देता?

यह शब्द निरंतर हो रहा है फिर हमें सुनाई क्यों नहीं देता? इसका कारण यह है कि हमारे अंदर मन की तरंगें उठ रही हैं और 'मैं-मेरी' का अहंकार भरा हुआ है, इसलिए हम शब्द का रस नहीं ले पाते और न ही नाम के साथ हमारा प्यार उत्पन्न होता है:

जिचर इह मन लहरी विच है हउमै बहुत अहंकार॥
सबदै साद न आवई नाम न लगै पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1247

मौलाना रूम भी यही फ़रमाते हैं कि तेरे कान शब्द के नग़मों को नहीं सुन सकते, क्योंकि पापों से तेरे कानों की हिस्स (श्रवण-शक्ति) गंदी हो चुकी है:

नशनवद आं नग़महा रा गोशे-हिस्स, कज़ सुख़नहा ग़ोशे-हिस्स वाशद नजिस्स।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 211

यह हरिनाम है, यह नाम हरिरूप है जो सर्वत्र परिपूर्ण, व्याप्त हो रहा है:

गुर का सबद दारू हर नाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1189

इसको वाणी भी कहा है, जो चारों युगों में बजती चली आई है:

बाणी वजी चहु जुगी सचो सच सुणाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.35

यह वाणी हर एक स्थान पर मौजूद है, इसी को शब्द या नाम भी कहा है जो अति मीठा और प्यारा है:

जुग जुग बाणी सबद पछाणी नाउ मीठा मनह पिआरा॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.602

अफ़सोस है कि जीव इस शरीर और शरीर के बंधनों में हमेशा बँधा रहता है, स्थूल में उलझे रहने के कारण वह दयाल की उस अत्यंत सूक्ष्म से सूक्ष्म आवाज़ को नहीं सुनता:

हैफ़ दर बंदे-जिस्मे-दरमानी, नशनवी सौते-पाके-रहमानी।
दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ.90

यह आवाज़ इस जीव को बुलाने के लिए हरदम आ रही है:

आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिये॥
तुलसी साहिब, संत बानी, पृ.44

यह शब्द स्थूल कानों का विषय नहीं। हर एक के अंदर उसको सुनने की योग्यता है, पर उसको सुनने के लिए आंतरिक कानों के खोलने की आवश्यकता है, जो गुरु के आदेश पर चलने से खुल सकते हैं।

जो लोग अंदर नहीं गए, जो बाहर की विद्याओं में ही लीन हैं, वे इस रूहानी राग से बेख़बर हैं। चाहे बाहर का विज्ञान अभी तक इसको साबित करने में असमर्थ हो, पर ये ठीक-ठीक विवरण हैं जिनका आत्मिक उन्नति के तालिब-इल्म (विद्यार्थी), संतों की प्रयोगशाला में यानी अपने अंदर, आँखों के पीछे जाकर, प्रयोग करके, अनुभव करते हैं।

इस शब्द को हम किस प्रकार सुन सकते हैं?

यदि हमारे कान बाहर की आवाज़ें सुनने से रुक जाएँ और आँखें बाहर के दृश्य देखना बंद कर दें तो हम मालिक के इस बुलावे को सुन सकते हैं। जब इस प्रकार हमारे ख़याल का बाहर भटकना बंद हो जाता है तो हम अंतर्मुख होकर

उन अनोखी धुनों को सुनने और अलौकिक रस को पाने लग जाते हैं और तब मालिक के भेद प्रकट होने लगते हैं।

हमारा ख़याल सब इंद्रियों, ख़ास कर कानों, आँखों और ज़बान द्वारा बाहर फैल रहा है। इन तीनों को बंद करके यदि हम अंतर्मुख हो जाएँ तो यह शब्द सुनाई देने लग जाता है:

तीनों बंद् लगाय कर, सुण अनहद टनकोर।
नानक सुन्न समाध मह, नहीं सांझ नही भोर॥

प्राण संगली

कबीर साहिब ने फ़रमाया है:

आँख कान मुख बन्द कराओ, अनहद झिंगा सब्द सुनाओ।

कबीर साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ.65

नियाज़ साहिब कहते हैं:

हमा आलम पुर अस्त अज़ आवाज़, लेक दरहाए-गोश ख़ुद कुन बाज़।
बाज़ करदन हमीं बस अस्त तुरा, बंद साज़ी रहे-शुनीदन रा।
बिशनवी यक कलामे-ना-मक़तूअ, अज़ हदूसो-फ़ना बुवद मरफ़ूअ।

दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ.९०

अर्थ: अगर तू अपने कान खोलकर सुने तो सारे आलम में यह आवाज़ हो रही है। कानों को खोलने का केवल इतना ही मतलब है कि तू सुननेवाले रास्ते को बंद कर दे, तब तू उस दायमी (सदा होनेवाले) कलाम को सुनेगा जो प्रलय की सीमा से परे है।

मनुष्य के अंदर लतीफ़ हवास* (सूक्ष्म इंद्रियाँ) हैं जिनकी यदि स्थूल हवासे-ख़मसा (स्थूल इंद्रियों) से तुलना की जाए तो हम उन्हें सोने और इन्हें ताँबे के समान बता सकते हैं। जब अभ्यास द्वारा हम जाग्रत हो जाते हैं तो ये लतीफ़ हवास (सूक्ष्म इंद्रियाँ) काम करने लग जाते हैं और इनके द्वारा हमें रूहानी नज़ारों

* हवास=ज्ञान-इंद्रियों को हवास कहते हैं। हवास, हिस्स का बहुवचन है।

का उसी तरह ज्ञान होने लगता है जिस प्रकार जाग्रत अवस्था में हमें दुनिया का इल्म होता है। इस विषय में मौलाना रूम का कलाम है:

> पंज हिस्से-हस्त जुज़ ईं पंज हिस्स, आं चू ज़र्रे-सुर्ख़ ओ ईं हिस्सहा चू मिस।
>
> मसनवी मौलाना रूमी, दफ़्तर 2, पृ. 19

यह शब्द सुरत के कानों द्वारा सुना जाता है

आत्मा का शब्द के साथ, जो सर्वत्र रमा हुआ है, अंश-अंशी का संबंध है। आत्मा में यह शक्ति है कि वह बाहरी इंद्रियों की मदद के बग़ैर अनुभव कर सके:

> अम्र-ए-रब्बी अस्त रूह ओ सिर्र ख़ुदास्त, ज़िक्र बेकाम ओ बेज़बां ऊ रास्त।
>
> दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 90

अर्थ: रूह अम्रे-रब्बी (मालिक का अंश) है, यह ख़ुदा का भेद है, यह बिना तालू और बिना ज़बान ज़िक्र कर सकती है।

क़ुरान शरीफ़ में कहा गया है कि रूह ख़ुदा का हुक्म है, अम्रे-रब्बी (17:85) है। यहाँ अम्र या हुक्म शब्द को ही कहा है।

वह कौन-सा स्थान है जहाँ यह शब्द सुनाई देता है?

इस शरीर के दस द्वार हैं, नौ प्रकट हैं और एक गुप्त है:

> नउ दरवाजे काइआ कोट है दसवै गुपत रखीजै॥
> बजर कपाट न खुलनी गुर सबद खुलीजै॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

जब तक सुरत बाहर नौ द्वारों में भटकती फिरती है यह लूटी जा रही है, यह उस अनुपम वस्तु को, जो इसके अंदर है, देखने के योग्य नहीं बन सकती। इसके अंदर दसवाँ द्वार भी है, जहाँ पर इसकी आवाज़ सुनाई देती है:

> नउ घर देख जो कामन भूली बसत अनूप न पाई॥
> कहत कबीर नवै घर मूसे दसवैं तत समाई॥
>
> कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 339

गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं कि सुरत को नौ द्वारों से समेटकर और इंद्रियों की ओर दौड़ते मन को अंतर्मुख रोककर दसवीं गली में लाओ, यहाँ से निजघर

की ओर रास्ता जाता है। वहाँ दिन-रात, अखंड रूप से अनहद शब्द हो रहा है, पर यह केवल गुरुमत द्वारा सुनाई दे सकता है:

नउ दर ठाके धावत रहाए॥ दसवै निज घर वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद वजह दिन राती गुरमती सबद सुणाविणआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 124

गुरु नानक साहिब इस विषय का बड़ा स्पष्ट वर्णन करते हैं कि शब्द इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना से भी ऊपर हो रहा है जिसको केवल सतगुरु ही सुना सकता है:

सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलख लखाए॥
नानक तिहु ते ऊपर साचा सतगुर सबद समाए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 944

जहाँ तक तत्त्व, मन और माया हैं वहाँ तक यह शब्द इनमें मिलकर काम करता है। उसके ऊपर वह निर्लिप्त है, शुद्ध है।

यह शब्द दसों पवनों में से किसी के आधार पर नहीं

सिद्धों ने गुरु नानक साहिब से पूछा:

सो सबद का कहा वास कथीअले जित तरीऐ भवजल संसारो॥
त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिस कहो कवन अधारो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

अर्थ: उस शब्द का वास कहाँ है जिससे जुड़कर संसार सागर से तरा जा सकता है? दस तरह की जो पवनें हैं, बताओ वह (इनमें से) किसके आधार पर हैं? इसके उत्तर में गुरु साहिब फ़रमाते हैं:

सो सबद कउ निरंतर वास अलखं जह देखा तह सोई॥
पवन का वासा सुंन निवासा अकल कला धर सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

अर्थ: उस शब्द का वास हमारे अंदर है, वह अलख है, जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ वही दिखाई देता है। पवन का निकास या उद्‌गम तो सुन्न स्थान से है, पर यह शब्द किसी चीज़ के आधार पर नहीं। जब तक हम अंतर्मुख होकर

सुषुम्ना से ऊपर नहीं जाते, इसको सुन नहीं सकते। यह शब्द हमें इसी काया के अंदर मिलता है:

> *काइआ सोध तरै भव सागर आतम तत वीचारी॥*
> *गुर सेवा ते सदा सुख पाइआ अंतर सबद रविआ गुणकारी॥*
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

> *काइआ नगरी सबदे खोजे नाम नवं निध पाई॥*
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

यह इनसानी जिस्म शब्द को सुनने के लिए रेडियो की भाँति है। रेडियो सैट को जब बैट्री से जोड़ते हैं तो उसमें से आवाज़ सुनाई देने लगती है। इसी प्रकार जब सतगुरु हमको अंतर्मुख जोड़ देते हैं, तो हम उस शब्द को सुनने के लिए तैयार हो जाते हैं। फिर इस सैट को नियमपूर्वक रखकर हम शब्द की अनेक धुनें सुन सकते हैं।

शब्द और प्रकाश

संसार में दो वस्तुएँ मार्गदर्शन का काम करती हैं, एक शब्द और दूसरा प्रकाश। इनको ही कलाम और नूर भी कहा गया है। ये दो ही मार्ग हैं जिन पर चलने से परमार्थ की राह में उन्नति होती है, ये दोनों ही फलदायक हैं। ये श्रवण साधन और दृष्टि साधन से संबंधित हैं। शब्द और ज्योति के अभ्यासों का अपना-अपना कार्य है। हमारे अंदर ज्योति है और उस ज्योति के अंदर वाणी या शब्द है जिसके द्वारा सच्ची भक्ति होती है:

> *मन बैराग रतउ बैरागी सबद मन बेधिआ मेरी माई॥*
> *अंतर जोत निरंतर बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई॥*
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 634

शब्द और ज्योति वास्तव में एक ही चीज़ हैं। कंपन एक सीमा तक ध्वनि उत्पन्न करते हैं, पर यदि उनकी गति कई गुना बढ़ जाए तो वे प्रकाश में तबदील हो जाते हैं। यह शब्द ही वास्तविक जीवनधारा है जो संपूर्ण रचना को जीवन प्रदान कर रही है। यही नूर है जो हमारे अँधेरे घरों को प्रकाशित कर रहा है। पर वह असली वस्तु अगोचर है:

इन्द्रियों की पहुंच से परे

ओह बसत अगोचर ठाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

बिन सबदै अंतर आनेरा॥ न वसत लहै न चूकै फेरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

यह हमारी देह को ही नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि को भी प्रकाशमान करनेवाला है:

बिन सबदै जग आन्हेर है सबदे परगट होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1250

यह प्रकाश सबके अंदर है। हज़रत ईसा भी इसी प्रकाश का उल्लेख करते हैं कि वह सबका प्रकाशक है। क्या हिंदू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, प्रत्येक इनसान की देह को प्रकाशमान कर रहा है:

In Him was life, and life was the light of man. And the light shineth in darkness—that was the true light, which lighteth everyman that cometh into the world.

सेंट ऑगस्टीन भी इस प्रकाश के अपने अंदर प्रकट होने का इस प्रकार वर्णन करते हैं,

मैंने अपने अंतर में प्रवेश किया, तू मेरा मार्गदर्शक बना और मैं अंदर प्रवेश करने के योग्य हुआ, क्योंकि तू मेरा सहायक था। मैं अंदर दाख़िल हुआ और अपनी रूह की आँख द्वारा (वह ऐसी ही थी) देखा, अपनी रूह की उसी आँख और अपने मन के ऊपर, कभी न बदलनेवाला प्रकाश देखा। यह साधारण रोशनी नहीं जो सारी दुनिया देखती है, न ही इस प्रकार की (सांसारिक) कोई बड़ी रोशनी, जिसका प्रकाश अत्यंत उज्ज्वल हो, इतना विस्तृत कि सारे देश (*Space*) और काल (*Time*) को घेर ले। वह इस प्रकार की रोशनी नहीं थी, वह और प्रकार की रोशनी, इन रोशनियों से कहीं अलग तरह की थी... वह जो सच को जानता है, वह इस प्रकाश को जानता है और जो इस प्रकाश को जानता है वह उस अमिट सचाई को जानता है।

कबीर साहिब फ़रमाते हैं कि शब्द के बिना सुरत अंधी है; इसे कोई मार्ग नहीं सूझता; बग़ैर शब्द के वह भटकती फिरती है:

सबद बिना स्त्रुति आँधरी, कहो कहाँ को जाय।
द्वार न पावै सबद का, फिरि फिरि भटका खाय॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 93

महात्मा ज़रदुश्त भी इसी प्रकाश का ज़िक्र करते रहे और उसकी पूजा पारसियों में बाहरी अग्नि पूजा के रूप में आज तक प्रचलित है।

जिन महात्माओं (पूर्व के या पश्चिम के) ने भी अपने अंदर प्रवेश किया, और आंतरिक मंडलों पर गमन किया, उन्होंने इस शब्द और प्रकाश का ज़िक्र किया है। आत्मा इस तन-मन के पिंजरे में बंदी है और इसके अंदर ही शब्द और प्रकाश दोनों हैं। शब्द और प्रकाश का संबंध क्रमशः सुरत और निरत के साथ है। सुरत सुनती है और निरत देखती है। रूहानी मंज़िलों की चढ़ाई में निरत आगे रहती है और सुरत पीछे।

वैज्ञानिकों के अनुसार प्रकाश की गति शब्द से तेज़ है

सुरत और निरत के परिपक्व होने पर आत्मा तन और मन के पिंजरे से मुक्त हो ऊपर के मंडलों में चढ़ाई कर सकती है और जन्म-मरण से छुटकारा पा लेती है। सारबचन में इसका संकेत इस प्रकार किया गया है:

निरत सखी को अगुआ करके। पल पल शब्द समाती॥

सारबचन संग्रह, 35:20

शुरू में शब्द ही प्रकट होता है। उसके बाद नूर यानी प्रकाश आ जाता है। अभ्यास में भी पहला काम हम शब्द से लेते हैं, अगर सिमरन और ध्यान का साधन पहले शुरू किया जाता है तो इसका काम केवल शब्द के लिए धरती तैयार करना है (देखें: 'सिमरन' और 'ध्यान' का प्रकरण)। सिमरन और ध्यान का काम अपना-अपना है, पर ये दोनों ही साधन शब्दरूपी दूल्हे के अगुआ हैं, असली महत्त्व शब्द का ही है। सिमरन शब्द अभ्यास यानी धुनात्मक नाम की कुंजी है। अभ्यास के मार्ग में ऐसे स्थान भी आ जाते हैं जहाँ साधक तीव्र प्रकाश से घिर जाता है। चकाचौंध की उस हालत से निकलने का साधन शब्द ही होता है। कुछ मुक़ाम ऐसे भी हैं जहाँ अँधेरा ही अँधेरा है (महासुन्न आदि), वहाँ पर भी गुरु का बताया हुआ शब्द यानी धुनात्मक नाम ही सहायक होता है।

इन मंडलों पर शब्द ही एक सच्चा मार्गदर्शक है। जिस तरह सुनसान जंगल में, रात के समय, जब सब जगह अंधकार छाया हुआ हो, हाथ को हाथ न सूझता हो, कोई रास्ता भूला हुआ मुसाफ़िर किसी कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनाई देने पर उस आवाज़ के आसरे बस्ती तक पहुँचने में समर्थ होता है, उसी प्रकार ऐसे अंतर्मुख हालात में शब्द का आसरा अंधे को सहारे का काम देता है। यह शब्द मार्ग की महत्ता है।

शब्द सच है

गुरवाणी में शब्द का सच (देखें: 'सच' का प्रकरण) कहकर वर्णन किया गया है जो कभी नष्ट नहीं होता, जो 'आद सच जुगाद सच॥ है भी सच नानक होसी भी सच॥' (गुरु नानक देव; आदि ग्रन्थ, पृ. 1)। गुरु नानक साहिब बसंत राग में फ़रमाते हैं:

एको सबद सचा नीसाण॥ पूरे गुर ते जाणै जाण॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

गुरु अमरदास जी और गुरु अर्जुन साहिब इसी की पुष्टि करते हैं:

सच बाणी सच सबद है जा सच धरे पिआर॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 33

सुण सजण जी मैडड़े मीता राम॥
गुर मंत्र सबद सच दीता राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 576

शब्द अमृत है

गुरवाणी में शब्द को अमृत (देखें: 'अमृत' का प्रकरण) भी कहा गया है। अमृत वह है जो हमको अमर कर दे, यह शक्ति केवल शब्द में ही है। गुरु का शब्द अमृत है जिसका पान करने से हमारी सब तृष्णाएँ मिट जाती हैं और हम सच, (मालिक) में समा जाते हैं:

गुर का सबद अंम्रित है जित पीतै तिख जाए॥
इह मन साचा सच रता सचे रहिआ समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

शब्द के बिना सारा जगत बावरा हो रहा है और मनुष्य-जन्म निष्फल जा रहा है। केवल शब्द ही अमृत है जो गुरुमुख को ही प्राप्त होता है:

बिन सबदै सभ जग बउराना बिरथा जनम गवाइआ॥
अंम्रित एको सबद है नानक गुरमुख पाइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

यह अमृत हमारे अंदर भरपूर है, पर मनमुखों को इसका रस नहीं मिलता, क्योंकि वे कस्तूरी-मृग के समान हैं, जो अपने अंदर ही नाभि में कस्तूरी के होते हुए भी उससे बेख़बर बाहर भटकते हैं:

घर ही मह अंम्रित भरपूर है मनमुखा साद न पाइआ॥
जिउ कसतूरी मिरग न जाणै भ्रमदा भरम भुलाइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

इस अमृत का सरोवर हमारे अपने अंदर है। मनुष्य की आत्मा इस अमृत को शब्द के द्वारा निकालकर पी सकती है:

अंतर खूहटा अंम्रित भरिआ सबदे काढ पीऐ पनिहारी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 570

शब्द सार-पदार्थ है

गुरबाणी बतलाती है कि सब साधनों का सार शब्द की कमाई (अभ्यास) है जो मालिक के दर पर परवान यानी स्वीकार होती है और जिसके द्वारा मोक्ष-द्वार की प्राप्ति होती है:

सच करणी सबद है सार॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 114

गुर का सबद करणी है सार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1345

शब्द के अभ्यास के अलावा और कोई करनी सार वस्तु की प्राप्ति नहीं करा सकती। जीव मोह-अंधकार में उलझा रहता है। इस बारे में गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं:

इस जग मह सबद करणी है सार॥
बिन सबदै होर मोह गुबार॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

कलियुग में शब्द कीर्तन की भक्ति ही सार्थक है (देखें: 'कीर्तन' का प्रकरण):

कल कीरत सबद पछान॥ एहा भगति चूकै अभिमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

शब्द के द्वारा ही जीव का कल्याण है, शब्द से ही जीव काँच से कंचन बन जाता है, विष से अमृत हो जाता है:

कचहो कंचन भइअउ सबद गुर स्रवणह सुणिओ॥
बिख ते अंम्रित हुयउ नाम सतगुर मुख भणिअउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

इस प्रकार जीव अपने मनुष्य-जन्म को सार्थक कर लेता है:

गुरमुख जनम सकारथा सचै सबद लगंन॥
आतम राम प्रगासिआ सहजे सुख रहंन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 755

शब्द हुक्म और नाम है

मालिक की परिपूर्ण शक्ति के लिए शब्द, हुक्म और नाम आदि अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया गया है:

हुकम मंने सो जन परवाण॥ गुर कै सबद नाम नीसाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1175

शब्द महारस है

गुरु का शब्द महारस है, अत्यंत मीठा है और वह अंतर में ही मिलता है:

गुर का सबद महा रस मीठा॥ ऐसा अंम्रित अंतर डीठा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1331

शब्द अनंत भंडार है

शब्द कभी ख़त्म होनेवाला नहीं, इसका भंडार अनंत है:

तिचर मूल न थुड़ींदो जिचर आप क्रिपाल॥
सबद अखुट बाबा नानका खाहे खरच धन माल॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426

गुरु का शब्द अपार है, उसका कोई अंत नहीं, जहाँ यह है वहाँ काल नहीं पहुँच सकता:

तूंहै साजन तूं सुजाण तूं आपे मेलणहार॥
गुर सबदी सालाहीऐ अंत न पारावार॥
तिथै काल न अपड़ै जिथै गुर का सबद अपार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

शब्द सर्वव्यापक है

शब्द हमारे अंदर है, वह चारों युगों में है, वह सर्वव्यापी है:

सबद सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

वह हर जगह है, सर्वत्र भरपूर है, वह हरि का रूप है, हमसे दूर नहीं, वह सदा सब कुछ सुनता और देखता है:

ए मन मत जाणह हर दूर है सदा वेख हदूर॥
सद सुणदा सद वेखदा सबद रहिआ भरपूर॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 429

वह मालिक का हुक्म है जो सब जगह व्याप्त है, सबके अंदर है:

चहु दिस हुकम वरतै प्रभ तेरा चहु दिस नाम पतालं॥
सभ मह सबद वरतै प्रभ साचा करम मिलै बैआलं॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

शब्द काया के अंदर मिलता है

काया-नगरी की खोज करने से शब्द यानी नाम की प्राप्ति होती है:

काइआ नगरी सबदे खोजे नाम नवं निध पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

काया को साधकर अंतर्मुख होने से वह मिलता है:

काइआ सोध तरै भव सागर आतम तत वीचारी॥
गुर सेवा ते सदा सुख पाइआ अंतर सबद रविआ गुणकारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

गुरु नानक साहिब इस शब्द का ठौर-ठिकाना बताते हैं कि यह इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के ऊपर है और यह सतगुरु द्वारा सुनाई देता है:

सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलख लखाए॥
नानक तिहु ते ऊपर साचा सतगुर सबद समाए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 944

शब्द कैसे प्राप्त होता है?

1. मालिक की मेहर द्वारा

मालिक जिस पर धुर से दया दृष्टि करे वही शब्द को समझता है, उसी के अंदर शब्द प्रकट होता है:

नदर करे सबद घट मह वसै विचहो भरम गवाए॥
तन मन निरमल निरमल बाणी नामो मंन वसाए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 944

जिसह बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाए॥
अनदिन बाणी सबदे गांवै साच रहै लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

जिन पर उसकी दया दृष्टि है, उनके लिए सच की टकसाल से शब्द घढ़ा जाता है, वे ही इस ओर लगते हैं:

घड़ीऐ सबद सची टकसाल॥ जिन कउ नदर करम तिन कार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 8

2. सत्संग और सतगुरु द्वारा

जब मालिक दया-मेहर करता है तो वह सतगुरु से मिलाप करवाता है, हमारी सुरत को शब्द के साथ जोड़ देता है:

करम होवै सतगुरू मिलाए॥ सेवा सुरत सबद चित लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 109-10

यह दात सतगुरु और सत्संग के द्वारा ही मिलती है:

एको सबद सचा नीसाणु॥ पूरे गुर ते जाणै जाणु॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

पूरै सतगुर सबद सुणाइआ॥ त्रै गुण मेटे चउथै चित लाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231

सतगुर दाता सबद सुणाए॥ धावत राखै ठाक रहाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

गुरु स्वयं शब्द स्वरूप है, शब्द उससे ही प्रकट हो सकता है। यह शब्द गुरु का प्रसाद है, गुरु से ही वह अंतर में स्थिर होता है, किसी और से उसका प्रकट होना असंभव है:

पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुख होए॥
गुर का सबद गुर थै टिकै होर थै परगट न होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

यह शब्द बेज़बानी की ज़बान (मूक भाषा) में है जो मालिक के मुख से, बगैर उच्चारण किए हुए प्रकट हो रहा है। मुर्शिद (गुरु) भी अपने मुरीदों (शिष्यों) को मालिक की तरह बिना ज़बान के पाठ पढ़ाता है। मौलाना रूम कहते हैं:

शैख़े-फ़उआल अस्त बे आलत चू हक्क़। बा मुरीदां दाद बे-गुफ़्ते सबक़।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 134

गुरु इस अकथ्य और विदेह शब्द का इशारा देकर शिष्य को अंतर्मुख अपनी सत्ता प्रदान करके उसके साथ जोड़ता है।

३. विद्याओं, शौच-संयमों और जाति-पाँति के अभिमान को छोड़कर सतगुरु के चरणों में नम्रतापूर्वक बैठने से मिलता है

इस दौलत को पाने के लिए हमें विद्याओं और शौच-संयमों के अहंकार से रहित होकर किसी पूर्ण गुरु के चरणों में आना पड़ता है:

ब-शौ फारिग़ ज़ इल्मो-ज़ुहद यकदम, कश ज़ुरअ अज़ जामे-मुग़ाना।

ख़्वाजा हाफ़िज़

अपने, अहंकार, धन, विद्या, जाति-पाँति और कुलों के मान व बड़प्पन के भाव को अपने अंदर न आने दो। इनसे शब्द बंद हो जाता है। नम्रता का शृंगार करके शब्द को सुनो और उसके नशे से मस्ती प्राप्त करो।

जो भूमि अभी तैयार नहीं, उसमें बेमौसम यानी असमय बोया हुआ बीज फल नहीं देता। इसी तरह जब तक मन मलिन वासनाओं से रहित नहीं होता, स्वच्छ नहीं होता, तब तक इसका भटकना या भाग-दौड़ बंद नहीं होती। मन केवल शब्द भक्ति यानी शब्द अभ्यास द्वारा ही निर्मल होता है। जब तक मन दुविधाओं में है, किसी कार्य में सफलता नहीं होती। इससे हम शब्द (नाम) को प्राप्त नहीं कर पाते और शब्द के बिना हम मालिक के दर्शन नहीं कर सकते:

जिचरु इहु मनु लहरी विचि है हउमै बहुतु अहंकारु॥
सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1247

इसलिए अंदर मन की मलिनता को दूर करना बाहरी पवित्रता से अधिक आवश्यक है।

शब्द भक्ति क्या है?

शब्द भक्ति अंतर्मुख होकर एकाग्रतापूर्वक शब्द की ध्वनि को सुनना है। शब्द सूक्ष्म है और जब तक हम भी सूक्ष्म नहीं होते, शब्द को नहीं पकड़ सकते। शब्द चेतनता का कारण है, हमारी सुरत (आत्मा) मालिक का अंश है और मालिक शब्द रूप होकर सारे संसार में व्याप्त हो रहा है। सुरत को शब्द के साथ जोड़ना मालिक के साथ जुड़ना है:

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ।

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

इसलिए शब्द के साथ जुड़ने के लिए सुरत का सांसारिक ग़िलाफ़ों से पाक होना ज़रूरी है। जब तक हम किसी ऐसे शब्द-अभ्यासी महात्मा से नहीं मिलते, जिससे कि शब्द का दान मिल सके, तब तक मन और माया के बंधनों में जकड़ी हुई यह सुरत, मुक्त होकर अपने निजघर को नहीं जा सकती।

शब्द किसी बिरले गुरुमुख को प्राप्त होता है

मालिक के दर्शन की लालसा हर एक करता है पर कोई बिरला ही शब्द के द्वारा उसे पहचानता है:

तेरे दरसन कउ केती बिललाए॥ विरला को चीनस गुर सबद मिलाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

यह काया हरि का मंदिर है, इसके अंदर शब्द है जिसकी कमाई (अभ्यास) सरल है। सब जीव इसके अधिकारी हैं (देखें: 'सुरत-शब्द योग' का प्रकरण), वे ग़रीब या अमीर, पढ़े या अनपढ़, किसी भी देश या धर्म के हों, गुरु से दीक्षित होकर इसकी कमाई कर सकते हैं। गुरुमुख होकर इसका अभ्यास सहज ही हो सकता है और वह शीघ्र लाभदायक भी होता है:

हर मंदर हर का हाट है रखिआ सबद सवार॥
तिस विच सउदा एक नाम गुरमुख लैन सवार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

बिन सबदै सभ जग बउराना बिरथा जनम गवाइआ॥
अंम्रित एको सबद है नानक गुरमुख पाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

मनमुख, मन के चंचल होने के कारण, शब्द को नहीं पहचान सकता और वह उसके रस से वंचित रहता है:

मन चंचल बिधि नाही जाणै॥ मनमुख मैला सबद न पछाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 415

मनमुख नाम न जाणनी विण नावै पत जाए॥
सबदै साद न आइओ लागे दूजै भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

जीव मायाधारी, अति अंधा और बहरा है। वह शब्द न सुनने के कारण अंधकार और भ्रमों में फँसा रहता है:

माइआधारी अत अंना बोला॥
सबद न सुणई बहु रोल घचोला॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

शब्द अंतर में क्या करता है?

शब्द चेतन है। वह मालिकरूपी समुद्र की लहर है और जीव मालिक की ज़ात (निज स्वरूप) का क़तरा (अंश) है। इसका मालिक के साथ अंश-अंशी का संबंध है। मालिक महाचेतन का समुद्र है, शब्द उसकी लहर है और सुरत यानी आत्मा उसकी बूँद है। महाचेतन की लहर यानी चेतन शब्द, सुरत को अपनी ओर खींचता है (जैसे चुंबक लोहे को खींचता है) और अपने साथ मिला लेता है। जब तक सुरत शब्द के सहारे ऊपर निज मुक़ाम की ओर नहीं चढ़ती, वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती। शब्द हमारे अंदर गूँज रहा है, सुरत उससे जुड़कर सीमित से असीम की ओर जाने के योग्य हो जाती है।

सुरत और शब्द का क़ुदरती संबंध है। शब्द के अंदर रूप और ध्वनि हैं जिनके द्वारा मन खड़ा हो जाता है और सुरत शब्द के अंदर लीन होकर, मालिक में जा समाती है। शब्द कुलमालिक से निकलता है। सुरत उसके आसरे मालिक तक पहुँचने में समर्थ होती है। प्राणों के आसरे अभ्यास करने से हम प्राणों के उद्गम (निकास) चिदाकाश तक रसाई कर सकते हैं, आगे नहीं। गुरवाणी बतलाती है कि मालिक नित्य है और शब्द के अभ्यास द्वारा उसकी प्राप्ति होती है:

साहिब मेरा सदा है दिसै सबद कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 509

जब शब्द मिले तब हरि मिलता है:

सबद मिलह ता हर मिलै सेवा पवै सभ थाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

केवल शब्द द्वारा ही सच्चे प्रीतम (मालिक) से मिलाप हो सकता है:

जीआ अंदर जीउ सबद है जित सह मेलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1250

केवल शब्द ही एकमात्र मार्ग है जो हमको अपने निज मुक़ाम पर पहुँचा सकता है। यह वह जहाज़ है जो जीव को भवसागर से पार करके मालिक की गोद में पहुँचा देता है।

कुलमालिक, जीव और इन दोनों को जोड़नेवाला शब्द, ये तीनों एक ही रूप हैं, एक ही मालिक तीनों के रूप में है। आत्मा अकालपुरुष से कोई अलग हस्ती नहीं रखती, वह उसी का अंश है:

> कहो कबीर इह राम की अंस॥
>
> कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.871

इनका अंश–अंशी संबंध होते हुए भी हर एक आत्मा अपनी हस्ती को अलग समझती है। सचखंड की बादशाहत हमारे अंदर है, पर युक्ति के बग़ैर उसमें प्रवेश करना असंभव है। हमें अंदर जाना चाहिए। अंदर जाने का साधन शब्द ही है, इसकी कमाई ही हमें मन-माया, सुख-दुःख, द्वैत और जन्म-मरण से मुक्त कर सकती है।

शब्द मालिक की चेतन ध्वनिमयी धारा है, जो उनका रूप है और जो संपूर्ण सृष्टि को बनाकर चला रही है। शब्द संपूर्ण सृष्टि का बीज है। जो कुछ बीज के अंदर है वही उससे उत्पन्न हुए वृक्ष के फैलाव में भी है, जो कुछ भी है वह शाश्वत (वह जिसका अस्तित्व सदैव रहे) के अंदर है, जो कुछ भी काल (समय) या देश के अंदर प्रकट होता है या उसमें समाता है, उसका सारा अस्तित्व शब्द के अंदर ही है।

कार्य कारण का रूप है। शब्द सबका कारण है, संपूर्ण रचना उसका कार्य है। जो कारण में न हो वह कार्य में नहीं हो सकता। यदि सूर्य की किरण एक साफ़ शीशे पर गिरती है तो उसमें संपूर्ण सूर्य दिखाई देने लगता है। यदि हमारा मन बिलकुल निर्मल हो जाए, उसके अंदर अहंकार लेश-मात्र भी न रहे, तो उसके अंदर वह मालिक झलक देने लगेगा। सूर्य की किरण सूर्य से निकलती है, वह उससे अलग नहीं। कारण हमेशा कार्य के अंदर रहता है, इसी तरह परमात्मा के गुण इस आत्मा से अलग नहीं होते।

सच्चा शब्द धुनात्मक है जो बोलने और लिखने में नहीं आ सकता। यह हमारे अंदर गूँज रहा है। यह वही आदि शब्द है जिसके द्वारा संपूर्ण सृष्टि अस्तित्व में आई। संसार के दुःखों-क्लेशों और जन्म-मरण के चक्कर से छूटने का शब्द के अलावा और कोई साधन नहीं है। यह सब साधनों से ऊँचा और पवित्र साधन है, इसके अभ्यास करनेवाले को और सब साधनों के लाभ प्राप्त हो जाते हैं। शब्द की कमाई करनेवाले किसी महात्मा की खोज करो और उनसे इसके अभ्यास की युक्ति सीखो। इसके अभ्यास से तुम मुक्त हो जाओगे, माया के बंधनों से स्वतंत्र

हो जाओगे। जब अंदर की धरती स्वच्छ हो जाएगी तो शब्द सुनाई देने लगेगा, पर यह पता नहीं कि यह कहाँ से आ रहा है।

मौलाना रूम इसी के बारे में फ़रमाते हैं:

आमद निदाए बेचूँ नै अज़ दरूँ न बेरूँ,
नै चप नै रास्त नै पस नै अज़ बरावर आमद।
न ज़ि-पस्त-ओ नै ज़ि बाला नै ग़रबी ओ न शरक़ी,
न ज़ आबो बादो-आतिश न ज़ ख़ाके-अग़बर आमद।
गोई किह् आँ चिह् सूइअस्त अआं सू किह् जुस्तो-जूइ अस्त,
गोई कुजा कुनम रौ आँ सू किह् आँ सर आमद।
आँ सू किह् ख़ुशक माही ज़ि आबे-ख़िज़्र जिंदा,
आँ सू किह् दस्ते-मूसा चूँ माहे-अनवर आमद।
आँ सू किह् मेवहा रा ईं पुख़्तगी रसीद अस्त,
आँ सू किह् संगे-ख़ारा औसाफ़े-गौहर आमद।
काफ़िर ब-वक़ते-सख़्ती रू आवुरद बदाँ सू,
ईं सू चू दर्द बीनद-आँ सूश पा दर आमद।
दस्तूर नीस्त जां रा ता गोयद ईं बयाँ रा,
वरना ज़ि कुफ़्र रुस्ती हर जा किह् काफ़िर आमद।

कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ.312

अर्थ: मुझमें निराला शब्द आ रहा है, न वह अंदर से आ रहा है न बाहर से, न बाईं ओर से न दाईं ओर से, न पीछे से न बराबर से, न नीचे से और न ऊपर से, न पश्चिम से और न पूर्व से और न ही पानी, हवा, आग, मिट्टी आदि पाँच तत्त्वों से। तुम पूछोगे कि फिर यह कहाँ से आ रहा है? यह उधर से आ रहा है जिधर तू तलाश कर रहा है। तू पूछेगा कि किस तरफ़ मुँह करूँ? उस ओर जिधर से वह बादशाह चला आ रहा है, उस तरफ़ जिस तरफ़ से ख़ुश्क मछली पानी पाकर जीवित रहती है, जिधर से मूसा को नूर नज़र आया और जहाँ से फलों को पकना नसीब होता है, उस ओर जहाँ से पत्थरों को लाल व हीरे बनने की सत्ता मिलती है, उस तरफ़ जिस ओर कि काफ़िर (नास्तिक) भी मुसीबत के समय मुँह करता है। जब यहाँ दुःख देखता है तब वहाँ जाता है। उस तरफ़ के बारे में बयान करने का क़ायदा नहीं, नहीं तो काफ़िर भी उसे सुनते तो कुफ़्र से छूट जाते।

यह शब्द उस ओर से आ रहा है जिस ओर आत्मा को जाना है। इसके बग़ैर सुरत अँधेरे में भटकती रहती है:

> सबद बिना स्त्रुति आँधरी, कहो कहाँ को जाय।
> द्वार न पावै सबद का, फिरि फिरि भटका खाय॥
>
> कबीर साखी-संग्रह, पृ. 93

सब संत-महात्माओं ने मनुष्य के अंतर में सुनाई देनेवाले इसी शब्द को मुक्ति का साधन माना है। यह उस समय तक हाथ में नहीं आता जब तक कि जिज्ञासु किसी पूरे महात्मा से शिक्षा लेकर, अपनी सुरत को नौ द्वारों से खींचकर, दोनों भौंहों (आँखों) के पीछे की ओर नहीं ले आता। यह शब्द, सुरत को अपने निजस्थान की ओर ले जाता है।

शब्द के द्वारा जीव एक नया जीवन धारण करता है। हज़रत ईसा मसीह भी शब्द से एक नवजीवन प्राप्ति का वर्णन करते रहे, जिसको आज हमारे ईसाई बंधु भूल चुके हैं। इसी के बारे में सेंट जॉन फ़रमाते हैं:

> वह जो मांस से पैदा होता है मांस है (जिस प्रकार शरीर से शरीर पैदा होता है) पर यह मनुष्य की सुरत है जो शब्द से (नया) जन्म लेती है।
>
> बाइबल, जॉन 3:6

आगे जाकर इसी प्रकरण में शब्द के सुनने से नए जन्म की प्राप्ति का बड़ा स्पष्ट वर्णन करते हैं:

> वह हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसकी आवाज़ को सुनता है, पर तू कह नहीं सकता कि वह कहाँ से आई और कहाँ जाती है। इसी प्रकार हर एक इनसान को जिसे शब्द के द्वारा नया जन्म मिला है (शब्द सुनाई देता है)।
>
> बाइबल, जॉन 3:8

फिर फ़रमाते हैं:

> मैं सच-सच कहता हूँ कि जब तक मनुष्य फिर से (दुबारा) जन्म नहीं लेता, वह परमात्मा की बादशाहत को नहीं देख सकता।
>
> बाइबल, जॉन 3:3

मेरे कहने पर आश्चर्य न करो, तुम्हें ज़रूर फिर जन्म लेना पड़ेगा।

बाइबल, जॉन 3:7

जब कभी भी महात्मा आए वे शब्द के द्वारा नया जन्म लेने का उपदेश देते रहे।

जब सतगुरु हमको उपदेश देते समय शब्द के साथ जोड़ते हैं, उस समय हमारा नया जन्म होता है। इस विषय में गुरु नानक साहिब ने सिध गोस्ट में संकेत किया है:

सतगुर कै जनमे गवन मिटाइआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 940

शब्द हमको माया के अंधकार और उसकी मैल से निकालकर एक नया आत्मिक जीवन प्रदान करता है। शब्द की कमाई के द्वारा काया का कूज़ा (घड़ा) छूट जाता है और जीव बिना नेत्रों के एक अलौकिक जगत को देखता है:

पवन सूत सभ नीका करिआ सतगुर सबद वीचारे॥
निज घर जाए अंम्रित रस पीआ बिन नैना जगत निहारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 983

जब तक शब्द न मिले, हम मालिक की दरगाह में नहीं पहुँच सकते।

शब्द द्वारा नाम-अभ्यास का समय

शब्द के द्वारा नाम-अभ्यास के लिए सबसे उत्तम मुहूर्त प्रभात का समय है जब मन की वृत्तियाँ एकाग्र होती हैं:

नाउ प्रभातै सबद धिआईऐ छोडहो दुनी परीता॥
प्रणवत नानक दासन दासा जग हारिआ तिन जीता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1330

शब्द की कमाई के फल

शब्द की कमाई के अनेक फल हैं। शब्द शक्ति का भंडार है, यह बुद्धि का भी सरदार (अक़्ले-कुल) है। जो इससे जुड़ते हैं और जो इसका आधार प्राप्त करते हैं वे मालिक के सच्चे पुत्र हैं। यह शब्द आत्मा के समस्त बंधनों को काटकर उसको मुक्त करनेवाला है। यह 'ज़िंदगी की रोटी' है जो सचखंड से उतरती है।

जो उसे खाते हैं वे अमर हो जाते हैं और अटल पद को प्राप्त होते हैं। जो शब्द का अभ्यास करते हैं उनको किसी बाहरी रोशनी, लैंप, सूर्य, चंद्र आदि की ज़रूरत नहीं, क्योंकि उनके अंदर प्रकाशों का प्रकाश प्रकट हो जाता है।

1. मन वश में आता है और काम-क्रोधादि से छुटकारा होता है

मन करोड़ों यत्नों से वश में नहीं आता, इसको क़ाबू करना अत्यंत कठिन है। बाहरी साधनों, जप-तप, कर्म-धर्म, शौच-संयम, तीर्थ-व्रत, दान-पुण्य आदि किसी के द्वारा यह वश में नहीं आ सकता। इसको जीतना अति कठिन है (देखें: मन का प्रकरण)। वशिष्ठ जी श्री रामचंद्र जी से फ़रमाते हैं:

> यदि कोई कहे कि उसने हिमालय पर्वत को उठा लिया है, यद्यपि यह असंभव है, पर मैं पल भर के लिए मान लूँगा कि उसने यह कर लिया होगा; यदि कोई व्यक्ति कहे कि उसने सारे समुद्र का पानी पी लिया, चाहे यह असंभव हो फिर भी विश्वास कर लूँगा, पर यदि कोई कहे कि उसने मन को वश में कर लिया है तो मैं उसका विश्वास नहीं कर सकता।

शब्द को सुनने से जन्मों-जन्मों के दबे हुए संस्कारों की तहें ऐसे भस्म हो जाती हैं, जिस प्रकार अग्नि की एक चिनगारी घास के ढेरों के ढेर जलाकर राख कर देती है। जिस प्रकार मृग मृदंग की ध्वनि को सुनकर मस्त हो जाता है, जिस प्रकार पतंगे लौ को देखकर उसमें जल जाते हैं, उसी प्रकार जीव आंतरिक शब्द के आत्मिक राग को सुनकर आनंदविभोर हो जाता है।

मन लज़्ज़त का आशिक़ है (स्वादों को चाहनेवाला है), वह आंतरिक शब्द के रस को पाकर भटकना छोड़ देता है। मन मूसा पंगुल भया पी पारा हरि नाम। (रज्जब की सरबंगी, पृ.42)। मन को ठहराने यानी स्थिर करने के लिए शब्द की धुन सुनने के अलावा और कोई उपाय नहीं:

> बिन गुर सबदै मन नही ठउरा॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.415

> मनूआ असथिर सबदे राता एहा करणी सारी॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.908

शब्द की कमाई द्वारा मन की तरंगें उठना बन्द हो जाती हैं:

मन के तरंग सबद निवारे रसना सहज सुभाई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

शब्द की प्राप्ति के बग़ैर मन कभी आकाशों और कभी पातालों में दौड़ता फिरता है:

इह मनूआ खिन ऊभ पइआली जब लग सबद न जाने॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1345

शब्द के सुनने से सारे सांसारिक बंधन और बाहरी आकर्षण दूर हो जाते हैं, मन नीच वृत्तियों को त्याग देता है और मनुष्य काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकाररूपी पाँच शत्रुओं को जीत लेता है। जब सुरत इनसे मुक्त हो जाती है, तब वह आत्मिक मंडलों पर उड़ानें भरती है:

भै निरभउ हर अटल मन सबद गुर नेजा गडिओ॥
काम क्रोध लोभ मोह अपत पंच दूत बिखंडिओ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1396

गुर कै सबद अराधीऐ नाम रंग बैराग॥
जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू इह राग॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1425

फिर वह कबीर साहिब के कथन के अनुसार मालिक से 'लिव' (लगन) लगा लेता है:

पांचउ लरिका जार कै रहै राम लिव लाग॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1366

2. शब्द अहंकार रूपी रोग की औषधि है

सारे संसार को अहंकार का रोग लगा हुआ है, वह बिना शब्द के दूर नहीं हो सकता:

हउमै रोगी जगत उपाइआ बिन सबदै रोग न जाई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

अहंकार असाध्य रोग है, इसका उपचार भी मालिक ने मनुष्य के अंदर ही रखा हुआ है। यदि मालिक अपनी कृपा करे, तब ही यह गुरु के शब्द की कमाई करके हौमैं को नष्ट कर सकता है:

हउमै दीरघ रोग है दारू भी इस माहे॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबद कमाहे॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 466

गुर कै सबद हउमै बिख मारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1133

नानक हउमै सबद जलाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1189

मौलाना रूम साहिब भी अहंकार से छुटकारे का साधन शब्द ही बतलाते हैं:

अगर उफ़्तद बिगोशत सौते-आँ कौस, ज़ किब्र ओ अज़ हसद या बे रहाई।
हवा-ए-इश्के-ऊ नागाह आयद, तुरा बुरहाँद अज़ जाने-हवाई।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 405

अर्थ: जब शब्द के नगाड़े की आवाज़ तेरे कानों में पहुँचेगी तो तेरा अहंभाव और तेरी ईर्ष्या दूर हो जाएगी। जब शब्द की ध्वनि अचानक आने लगती है तो वह वासनाओं और तृष्णाओं को दूर कर देती है।

३. सुख और शांति की प्राप्ति

सारा संसार सुख और शांति की तलाश में मारा-मारा फिर रहा है। शारीरिक और बाहरी सुख क्षणभंगुर और बदल जानेवाले हैं। इंद्रियों के घाट पर जो सुख प्रतीत होते हैं, वे हमारे अपने ही मन की वृत्तियों के उनके साथ जुड़ जाने के फलस्वरूप हैं। वह सुख हमारा अपना ही है जो एकाग्रता (मन की वृत्तियों की क्षणिक एकाग्रता) के कारण प्रतीत होता है; जिस प्रकार कुत्ता हड्डी को चबाता है जिससे उसके अपने मुँह से ख़ून बहता है, वह उसे पीकर मस्त होता है और समझता है कि यह हड्डी से मिल रहा है।

आत्मा चेतन है, उसे अचेतन जड़ पदार्थों से सुख कहाँ! उसे तो केवल महाचेतन के साथ जुड़ने से सच्चा सुख मिल सकेगा। गुरु का शब्द महाचेतन की धारा है, जिसके साथ स्पर्श करके सुरत सच्चे सुख का अनुभव करती है:

गुर कै सबद सुख सांत सरीर॥ गुरमुख ता कउ लगै न पीर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.361

शब्द के अंदर शीतलता है जिससे तन और मन दोनों अत्यंत शांत हो जाते हैं:

अंतर अगन सबल अत बिखिआ हिव सीतल सबद गुर दीजै॥
तन मन सांत होए अधिकाई रोग काटै सूख सवीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1325-26

मानो शीतलता के समुद्र को पा लेते हैं:

सागर सीतल गुर सबद वीचार॥ मारग मुकता हउमै मार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1274

जब सुरत शब्द को ग्रहण करती है, वह सुख प्राप्त करती है और प्रभु में समाकर आनंदित होती है:

सबद सुरत सुख ऊपजै प्रभ रातउ सुख सार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.62

शब्द के अभ्यास से स्थायी आनंद प्राप्त होता है जो कभी मिटता नहीं:

सदा अनंद रहै दिन राती एक सबद लिव लाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1265

महा अनंद गुर सबद वीचार॥ प्रिअ सिउ राती धन सोहागण नार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.370

4. शब्द की कमाई के और अनेक फल गुरवाणी में बताए गए हैं

तृष्णा, आशा, मनसा और मोह-माया का नाश होता है

त्रिसना अगन सबद बुझाए॥ दूजा भरम सहज सुभाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.222

आसा मनसा सबद जलाए॥ राम नराइण कहै कहाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.413

माइआ मोह सबद जलाए॥ मन तन हरिआ सतगुर भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1173

शब्द मिल जाने पर मनुष्य कभी अकेला नहीं रहता, घर या बाहर कहीं भी हो, उसके साथ उसका मालिक यानी शब्द गूँजता हुआ सदा अंग-संग रहता है और उसको अपने निजस्थान की ओर बुलाता रहता है। शब्द के अभ्यास द्वारा सब रोग, अवगुण और पाप दूर हो जाते हैं; काम, क्रोध आदि की दाल नहीं गलती; जीव अति निर्मल पूर्ण बैरागी हो जाता है। शब्द जीवन का आसरा है, मौत का सहारा है, इससे मौत का डर मिट जाता है। मौत के समय अभ्यासी शरीर को इस प्रकार छोड़ देता है जिस प्रकार वह पुराना कपड़ा उतारता है। शब्द के द्वारा मरकर जीव दुबारा जन्म-मरण के चक्कर में नहीं आता, काल का क्लेश और यम का भय दूर हो जाता है, आंतरिक मार्गों की कठिनाइयाँ आसान हो जाती हैं, करोड़ों कर्मों का नाश होता है और जीव भवसागर से पार हो जाता है।

शब्द की कमाई द्वारा अंतर में प्रकाश होता है और हृदय कमल का विकास होता है। जीव अपने आप को पहचानता है और जीवित-मृतक की अवस्था को प्राप्त होता है; तीनों गुणों और काल की सीमा से पार हो जाता है, सहज यानी सुन्न समाधि लगती है और दसवाँ द्वार खुलता है; मालिक के दर की निशानी मिलती है, हरि का रंग चढ़ता है और सच्ची भक्ति और हरि रस की उत्पत्ति होती है; प्रभु की दरगाह में मान की प्राप्ति, मुक्ति और परम पद का लाभ, निजघर वासा और सच में लीनता हो जाती है; हरि की प्राप्ति होती है और जीव लोक-परलोक में सुहेला (सुखी) हो जाता है।

शब्द विहीन लोगों की गति अति दुःखदायी होती है। वे चौरासी के चक्कर में फिरते रहते हैं, भ्रमों में उलझे हुए, हर मौत के बाद यम का दंड सहते रहते हैं, उनकी ख़्वारी (परेशानी) और मोहताजी सदा बनी रहती है।

हर एक के अंदर यह शब्द का सरोवर हिलोरें मार रहा है। जो इसमें से अमृत पी लेता है उसको फिर कभी प्यास नहीं सताती और उसको अनंत आत्मिक जीवन प्राप्त होता है। यही रूहानियत का पानी था जिसे हज़रत मसीह ने साइकर के कुएँ से उसकी स्त्री को भेंट किया था ताकि उसे पीकर उसकी सब प्यास मिट जाए। इसका वर्णन ज़िंदगी की रोटी कहकर भी किया गया है, जिसे खाने से कोई भूख नहीं रहती। यह एक ऐसी दवाई है जो सब रोगों का एक ही इलाज है:



सरब रोग का अउखद नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 274

इन विषयों पर आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के अनेक प्रमाण आगे विस्तारपूर्वक दिए गए हैं। पाठकजन इन पर ध्यानपूर्वक विचार करें, शब्द की खोज में प्रवृत्त होकर शब्द के अभ्यास के सौभाग्यपूर्ण अवसर को प्राप्त करने का यत्न करें और उन अनेक फलों के अधिकारी बनें जिनका ऊपर वर्णन किया गया है। गुरवाणी कहती है कि यदि हमने शब्द की खोज नहीं की, यदि हमारी आंतरिक आँखें नहीं खुलीं और यदि हमने आंतरिक कानों द्वारा मालिक की सच्ची वाणी यानी शब्द को नहीं सुना तो दुनिया में हमारे मनुष्य जन्म पाने का क्या लाभ है?

गुरवाणी

1. शब्द क्या है?

1.1. शब्द कुलमालिक है, वह सारी सृष्टि का आधार है

आपे कवला कंत आप॥ आपे रावे सबद थाप॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1190

पुरख सुजान तूं परधान तुध जेवड अवर न कोई॥
तेरा सबद सभ तूंहै वरतह तूं आपे करह सो होई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 448

अंतर देख सबद मन मानिआ अवर न रांगनहारा॥
अहिनिस जीआ देख समाले तिस ही की सरकारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1331

हर जीउ वेखै सद हजूर॥ गुर कै सबद रहिआ भरपूर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1173

एको सबद एको प्रभ वरतै सभ एकस ते उतपत चलै॥
नानक गुरमुख मेल मिलाए गुरमुख हर हर जाए रलै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

करता सभ को तेरै जोर॥ एक सबद बीचारीऐ जा तू ता किआ होर॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 17

तुध आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुन गोई॥
सभ इको सबद वरतदा जो करे सो होई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 654

मेरा हर प्रभ अगम अगोचर है कीमत कहण न जाए॥
गुर परसादी बुझीऐ सबदे कार कमाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

चहु दिस हुकम वरतै प्रभ तेरा चहु दिस नाम पतालं॥
सभ मह सबद वरतै प्रभ साचा करम मिलै बैआलं॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

आपीन्है आप साज आप पछाणिआ॥ अंबर धरत विछोड़ चंदोआ ताणिआ॥
विण थंम्हा गगन रहाए सबद नीसाणिआ॥ सूरज चंद उपाए जोत समाणिआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1279

धावत थंम्हिआ सतगुर मिलिऐ दसवा दुआर पाइआ॥
तिथै अंम्रित भोजन सहज धुन उपजै जित सबद जगत थंम्ह रहाइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 441

1.2. शब्द उत्पत्ति और प्रलय करनेवाला है

उतपत परलउ सबदे होवै॥ सबदे ही फिर ओपत होवै॥
गुरमुख वरतै सभ आपे सचा गुरमुख उपाए समावणिआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 117

1.3. शब्द सच है

आपे मेल लए अकथ कथीऐ सच सबद सच बाणी॥
नानक साचे सच समाणे हर का नाम वखाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

सच तीरथ सच इसनान अर भोजन भाउ सच सदा सच भाखंत सोहै॥
सच पाइओ गुर सबद सच नाम संगती बोहै॥
गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1392

सभो वरतै सच सचै सबद निहालिआ॥
नानक नाम निधान है पूरै गुर देखालिआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1284

सच बाणी सच सबद है जा सच धरे पिआर॥
हर का नाम मन वसै हउमै क्रोध निवार॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

सच करणी सबद है सार॥ पूरै गुर पाईऐ मोख दुआर॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 114

एको सबद सचा नीसाण॥ पूरे गुर ते जाणै जाण॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

सुण सजण जी मैडड़े मीता राम॥ गुर मंत्र सबद सच दीता राम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 576

1.4. शब्द सच्चा है

गुर के चरन मन मह धिआए॥
छोड सगल सिआणपा साच सबद लिव लाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

गोबिंद भजहो मेरे सदा मीत॥ साच सबद कर सदा प्रीत॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1192

भाई रे गुरमत साच रहाउ॥ साचो साच कमावणा साचै सबद मिलाउ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

सचा सबद सची है बाणी॥ गुरमुख जुग जुग आख वखाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

मुख सचे सच दाड़ीआ सच बोलह सच कमाहे॥
सचा सबद मन वसिआ सतगुर मांहे समांहे॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1419

जो तेरी सरणाई हर जीउ तिना दूख भूख किछ नाहे॥
नानक नाम सलाहे सदा तू सचै सबद समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

बाबीहा तूं सहज बोल सचै सबद सुभाए॥
सभ किछ तेरै नाल है सतगुर दीआ दिखाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1420

सचै सबद सच कमावै॥ सची बाणी हर गुण गावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

1.5. शब्द चारों युगों में है

सबद सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी॥
एह मन माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबद वीचारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

1.6. शब्द अमृत है

बिन सबदै सभ जग बउराना बिरथा जनम गवाइआ॥
अंम्रित एको सबद है नानक गुरमुख पाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

गुणा का गाहक होवै सो गुण जाणै॥ अंम्रित सबद नाम वखाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

गुर का सबद अंम्रित है जित पीतै तिख जाए॥
इह मन साचा सच रता सचे रहिआ समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

1.7. शब्द सार पदार्थ है

सच करणी सबद है सार॥ पूरै गुर पाईऐ मोख दुआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 114

भउ खाणा पीणा सुख सार॥ हर जन संगत पावै पार॥
सच बोलै बोलावै पिआर॥ गुर का सबद करणी है सार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1345

सबद वीचारी करणी सारी राम नाम नीसाणो॥
नाम बिना खोटे नही ठाहर नाम रतन परवाणो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 765

इस जग मह सबद करणी है सार॥ बिन सबदै होर मोह गुबार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

ध्रंम धीर गुरमत गभीर पर दुख बिसारण॥
सबद सार हर सम उदार अहंमेव निवारण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1407

गुरमुख सबद अंम्रित है सार॥ नानक गुरमुख पावै पार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 932

त्रै गुण मेटे खाईऐ सार॥ नानक तारे तारणहार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 940

जग करड़ा मनमुख गावार॥ सबद कमाईऐ खाईऐ सार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 943

रूप न रेखिआ जात न होती तउ अकुलीण रहतउ सबद सो सार॥
गउन गगन जब तबह न होतउ त्रिभवण जोत आपे निरंकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 945-46

1.8. शब्द हुक्म और नाम है

सहज भाए पाइआ हर नाम॥
ऊतम ऊचा सबद काम॥
नानक वखाणै साच नाम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1176

गुर का सबद दारू हर नाउ॥ जिउ तू राखह तिवै रहाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1189

हर का भाणा मंनह से जन परवाण॥
गुर कै सबद नाम नीसाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

हुकम मंने सो जन परवाण॥ गुर कै सबद नाम नीसाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1175

1.9. शब्द महारस है

हउ जीवां सदा हर के गुण गाई॥
गुर का सबद महा रस मीठा हर कै नाम मुकत गति पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1262

गुर का सबद महा रस मीठा॥ ऐसा अंम्रित अंतर डीठा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1331

1.10. शब्द उत्तम है

ऊतम ऊचा सबद काम॥ नानक वखाणै साच नाम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1176

1.11. शब्द अथाह है

प्रेम भगति परवाह प्रीत पुबली न हुटए॥
सतगुर सबद अथाह अमिअ धारा रस गुटए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1397

निरमल नाम सुधा परपूरन सबद तरंग प्रगटित दिन आगर॥
गहिर गंभीर अथाह अत बड सुभर सदा सभ बिधि रतनागर॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1404

1.12. शब्द का भंडार अनंत और अपार है, वहाँ काल की गति नहीं

तिचर मूल न थुड़ींदो जिचर आप क्रिपाल॥
सबद अखुट बाबा नानका खाहे खरच धन माल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426

अहिनिस हिरदै रव रहै निरभउ नाम निरंकार॥
नानक आप मिलाइअन पूरै सबद अपार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

तूंहै साजन तूं सुजाण तूं आपे मेलणहार॥
गुर सबदी सालाहीऐ अंत न पारावार॥
तिथै काल न अपड़ै जिथै गुर का सबद अपार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

1.13. शब्द के अंदर धुन है

साचै सबद सहज धुन उपजै मन साचै लिव लाई॥
अगम अगोचर नाम निरंजन गुरमुख मंन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

धावत थंम्हिआ सतगुर मिलिऐ दसवा दुआर पाइआ॥
तिथै अंम्रित भोजन सहज धुन उपजै जित सबद जगत थंम्ह रहाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 441

गुर मिल भउजल लंघीऐ दरगह पत परवाण॥
नानक ते मुख उजले धुन उपजै सबद नीसाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 22

2. शब्द कहाँ है?

2.1. शब्द सर्वव्यापक है

ए मन मत जाणह हर दूर है सदा वेख हदूर॥
सद सुणदा सद वेखदा सबद रहिआ भरपूर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 429

चहु दिस हुकम वरतै प्रभ तेरा चहु दिस नाम पतालं॥
सभ मह सबद वरतै प्रभ साचा करम मिलै बैआलं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह॥
ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह॥
सरब सबदं त एक सबदं जे को जानस भेउ॥
नानक ता को दास है सोई निरंजन देउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1353

हर जीउ वेखै सद हजूर॥ गुर कै सबद रहिआ भरपूर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1173

जह कह तह भरपूर सबद दीपक दीपायउ॥
जिह सिखह संग्रहिओ तत हर चरण मिलायउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1395

तिस जन की है साची बाणी॥
गुर कै सबद जग माहे समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

2.2. शब्द हमारे अंदर है

मंदर मेरै सबद उजारा॥ अनद बिनोदी खसम हमारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 384

भागठ सचा सोए है जिस हर धन अंतर॥
सो छूटै महा जाल ते जिस गुर सबद निरंतर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 396–97

अंतर देख सबद मन मानिआ अवर न रांगनहारा॥
अहिनिस जीआ देख समाले तिस ही की सरकारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1331

काइआ सोध तरै भव सागर आतम तत वीचारी॥
गुर सेवा ते सदा सुख पाइआ अंतर सबद रविआ गुणकारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

सो सबद निरंतर निज घर आछै त्रिभवण जोत सो सबद लहै॥
खावै दूख भूख साचे की साचे ही त्रिपतास रहै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 945

जिन अंतर सबद आप पछाणह गति मित तिन ही पाई॥
एह मनूआ सुंन समाध लगावै जोती जोत मिलाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल॥
हिरदै चरण सबद सतगुर को नानक बांधिओ पाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 680

मन रे सदा भजहो हर सरणाई॥
गुर का सबद अंतर वसै ता हर विसर न जाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

राम नाम जप अंतर पूजा॥ गुर सबद वीचार अवर नही दूजा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1345

साजन मन आनंद है गुर का सबद वीचार॥
अंतर सबद वसाइआ दुख कटिआ चानण कीआ करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 549

चलतौ चलै चलै दह दह दिस गुर राखै हर लिव लावैगो॥
सतगुर सबद दे रिद अंतर मुख अंम्रित नाम चुआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

सो सबद का कहा वास कथीअले जित तरीऐ भवजल संसारो॥
त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिस कहो कवन अधारो॥...
सो सबद कउ निरंतर वास अलखं जह देखा तह सोई॥
पवन का वासा सुंन निवासा अकल कला धर सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

काइआ नगरी सबदे खोजे नाम नवं निध पाई॥
मनसा मार मन सहज समाणा बिन रसना उसतत कराई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

नाम जपत होआ परगास॥ गुर सबदे कीना रिदै निवास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340-41

2.3. इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना से ऊपर शब्द सुनाई देता है

सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलख लखाए॥
नानक तिहु ते ऊपर साचा सतगुर सबद समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

3. कलियुग में शब्द का कीर्तन ही भक्ति है

कल कीरत सबद पछान॥ एहा भगति चूकै अभिमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

4. शब्द किस प्रकार प्राप्त होता है?

4.1. शब्द मालिक की दया से प्राप्त होता है

सबद मिलै सो मिल रहै जिस नउ आपे लए मिलाए॥
दूजै भाए को ना मिलै फिर फिर आवै जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

धुर आपे जिन्हा नो बखसिओन भाई सबदे लइअन मिलाए॥
धूड़ तिन्हा की अघुलीऐ भाई सतसंगत मेल मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

जिसह बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाए॥
अनदिन बाणी सबदे गांवै साच रहै लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

जेता आखण साही सबदी भाखिआ भाए सुभाई॥
नानक बहुता एहो आखण सभ तेरी वडिआई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

जप हर हर सबद जपीस॥ हर हो हो किरपीस॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1296

आपे सचा बखस लए कर किरपा करै रजाए॥
हर गुण गावहो कामणी सचै सबद समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1420

नदर करे सबद घट मह वसै विचहो भरम गवाए॥
तन मन निरमल निरमल बाणी नामो मंन वसाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

चहु दिस हुकम वरतै प्रभ तेरा चहु दिस नाम पतालं॥
सभ मह सबद वरतै प्रभ साचा करम मिलै बैआलं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

घड़ीऐ सबद सची टकसाल॥
जिन कउ नदर करम तिन कार॥
नानक नदरी नदर निहाल॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 8

4.2. सत्संग और सतगुरु के द्वारा शब्द की प्राप्ति होती है

भाई रे हर हीरा गुर माहे॥
सतसंगत सतगुर पाईऐ अहिनिस सबद सलाहे॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 22

हर जीउ साचा साची नाई॥ गुर परसादी किसै मिलाई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 123

एको सबद सचा नीसाण॥ पूरे गुर ते जाणै जाण॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

सतगुर बाणी सबद सुणाए॥ इह जग हरिआ सतगुर भाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

पूरै सतगुर सबद सुणाइआ॥ त्रै गुण मेटे चउथै चित लाइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231

मुइआ जित घर जाईऐ तित जीवदिआ मर मार॥
अनहद सबद सुहावणे पाईऐ गुर वीचार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

बाबीहा तूं सहज बोल सचै सबद सुभाए॥
सभ किछ तेरै नाल है सतगुर दीआ दिखाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1420

भाई रे गुरमत साच रहाउ॥ साचो साच कमावणा साचै सबद मिलाउ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

सतगुर दाता सबद सुणाए॥ धावत राखै ठाक रहाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

एह सोहिला सबद सुहावा॥
सबदो सुहावा सदा सोहिला सतगुरू सुणाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 919

धन वांढी पिर देस निवासी सचे गुर पह सबद पठाईं
गुण संग्रह प्रभ रिदै निवासी भगति रती हरखाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1273

गुर मह आप समोए सबद वरताइआ॥
सचे ही पतीआए सच समाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1279

गुरू गुरू गुर कर मन मेरे॥
तारण तरण सम्रथ कलजुग सुनत समाध सबद जिस केरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399–1400

पूरा सतगुर जे मिलै पाईऐ सबद निधान॥
कर किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

आपे सदे ढिल न होए॥ सबद मरै सहिला जीवै सोए॥
बिन गुर सोझी किसै न होए॥ आपे करै करावै सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1344

गुर कै संग रहै दिन राती राम रसन रंग राता॥
अवर न जाणस सबद पछाणस अंतर जाण पछाता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126

मनसा मनह समाए लै गुर सबदी वीचार॥
गुर पूरे ते सोझी पवै फिर मरै न वारो वार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

अबिगत अगोचर अपरपर मन गुर सबद वसाइअउ॥
गुर रामदास कल्युचरै तै जगत उधारण पाइअउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1397

पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुख होए॥
गुर का सबद गुर थै टिकै होर थै परगट न होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

मन मेरे खिन खिन नाम सम्हाल॥
गुर की दात सबद सुख अंतर सदा निबहै तेरै नाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

चलतौ चलै चलै दह दह दिस गुर राखै हर लिव लावैगो॥
सतगुर सबद दे रिद अंतर मुख अंम्रित नाम चुआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

कबीर साचा सतगुर मै मिलिआ सबद जो बाहिआ एक॥
लागत ही भुए मिल गइआ परिआ कलेजे छेक॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1372

ते मुकते भए सतगुर सबद मन गुर परचा पाइअउ॥
गुर रामदास कल्युचरै तै सबद नीसान बजाइअउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1397-98

जाम गुरू होए वल गिआन अर धिआन अनन पर॥
जाम गुरू होए वल सबद साखी सो सचह घर॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

गुरू गुर गुरू गुर गुरू जप प्रानीअहो॥
सबद हर हर जपै नाम नव निध
अपै रसन अहिनिस रसै सत कर जानीअहो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1400

बाबीहा सगली धरती जे फिरह ऊड चड़ह आकास॥
सतगुर मिलिऐ जल पाईऐ चूकै भूख पिआस॥
जीउ पिंड सभ तिस का सभ किछ तिस कै पास॥
विण बोलिआ सभ किछ जाणदा किस आगै कीचै अरदास॥
नानक घट घट एको वरतदा सबद करे परगास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1420

सगली भूलै नही सबद अचार॥ सो समझै जिस गुर करतार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1190

गुर की बाणी गुर ते जाती जे सबद रते रंग लाए॥
पवित पावन से जन निरमल हर कै नाम समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

करण पलाव करै बिललातउ बिन गुर नाम न जापै॥
पल पंकज मह नाम छडाए जे गुर सबद सिञापै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

सतसंगत मिल मत बुध पाई हउ छूटे ममता जाल॥
हर नामा हर मीठ लगाना गुर कीए सबद निहाल॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1335

मन कुंचर काइआ उदिआनै॥ गुर अंकस सच सबद नीसानै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

मन खिन खिन भरम भरम बहु धावै तिल घर नही वासा पाईऐ॥
गुर अंकस सबद दारू सिर धारिओ घर मंदर आण वसाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1179

मै सुखी हूं सुख पाइआ॥ गुर अंतर सबद वसाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 73

4.3. शब्द गुरुमुख को मिलता है

सतगुर सबदी इह मन भेदिआ हिरदै साची बाणी॥
मेरा प्रभ अलख न जाई लखिआ गुरमुख अकथ कहाणी॥
आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंगपाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

आपे सबद सच साखी आपे जिन्ह जोती जोत मिलाई॥
देही काची पउण वजाए गुरमुख अंम्रित पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1260

गुरमुख कामण बणिआ सीगार॥
सबदे पिर राखिआ उर धार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1277

गुरमुख विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई॥
नाम रते सदा सुख पावै साच रहै लिव लाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

एको सबद एको प्रभ वरतै सभ एकस ते उतपत चलै॥
नानक गुरमुख मेल मिलाए गुरमुख हर हर जाए रलै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

ऐथै ओथै मंनीअन हर नाम लगे वापार॥
गुरमुख सबद सिञापदे तित साचै दरबार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1415

बिन सबदै सभ जग बउराना बिरथा जनम गवाइआ॥
अंम्रित एको सबद है नानक गुरमुख पाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

साचे मैल न लागई मन निरमल हर धिआए॥
गुरमुख सबद पछाणीऐ हर अंम्रित नाम समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

गुरमुखा के मुख उजले गुरसबदी बीचार॥
हलत पलत सुख पाइदे जप जप रिदै मुरार॥
घर ही विच महल पाइआ गुर सबदी वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

हर मंदर हर का हाट है रखिआ सबद सवार॥
तिस विच सउदा एक नाम गुरमुख लैन सवार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

गुरमुखा हर धन खटिआ गुर कै सबद वीचार॥
नाम पदारथ पाइआ अतुट भरे भंडार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414

गुरमुख जोग सबद आतम चीनै हिरदै एक मुरारी॥
मनूआ असथिर सबदे राता एहा करणी सारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

अंतर नावण साच पछाणै॥ अंतर की गति गुरमुख जाणै॥
साच सबद बिन महल न पछाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

गुरमुख सबद सम्हालीऐ सचे के गुण गाउ॥
नानक नाम रते जन निरमले सहजे सच समाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1286

मन रे सच मिलै भउ जाए॥
भै बिन निरभउ किउ थीऐ गुरमुख सबद समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

से जन सबदे सोहणे तित सचै दरबार॥
गुरमुख सचै सबद रते आप मेले करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

गुरमुख जनम सकारथा सचै सबद लगंन॥
आतम राम प्रगासिआ सहजे सुख रहंन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 755

जिउ तिस भावै तिवै चलावै करणा किछू न जाई॥
नानक गुरमुख सबद सम्हाले राम नाम वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

4.4. शब्द मनमुख को नहीं मिलता

मनमुख नाम न जाणनी विण नावै पत जाए॥
सबदै साद न आइओ लागे दूजै भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

मनमुख मोह विआपिआ बैराग उदासी न होए॥
सबद न चीनै सदा दुख हर दरगह पत खोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29



मन चंचल बिधि नाही जाणै॥
मनमुख मैला सबद न पछाणै॥
गुरमुख निरमल नाम वखाणै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 415

सबद चीन भै कपट न छूटे मन मुख माइआ माइआ॥
अजगर भार लदे अत भारी मर जनमे जनम गवाइआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1255

हउमै विच जग बिनसदा मर जंमै आवै जाए॥
मनमुख सबद न जाणनी जासन पत गवाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

मनमुख बोले अंधुले तिस मह अगनी का वास॥
बाणी सुरत न बुझनी सबद न करह प्रगास॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1415

4.5. हौमैं, भेष, चतुराई, दुविधा और मन की तरंगों में शब्द की प्राप्ति नहीं होती

बाहर भेख बहुत चतुराई मनूआ दह दिस धावै॥
हउमै बिआपिआ सबद न चीन्है फिर फिर जूनी आवै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 732

दुबिधा चूकै तां सबद पछाण॥ घर बाहर एको कर जाण॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1343

जिचर इह मन लहरी विच है हउमै बहुत अहंकार॥
सबदै साद न आवई नाम न लगै पिआर॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1247

4.6. किसी बिरले को शब्द मिलता है

तेरे दरसन कउ केती बिललाए॥ विरला को चीनस गुर सबद मिलाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

अंतर जूठा किउ सुच होए॥ सबदी धोवै विरला कोए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1344

5. जो शब्द की चोट को सहे वह गुरु है

कबीर चोट सुहेली सेल की लागत ले उसास॥
चोट सहारै सबद की तास गुरू मै दास॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1374

6. गुरु शब्द में समाया हुआ है

नानक आद अंगद अमर सतगुर सबद समाइअउ॥
धन धंन गुरू रामदास गुर जिन पारस परस मिलाइअउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1407

7. शब्द के ध्यान के लिए प्रभात का समय ठीक है

नाउ प्रभातै सबद धिआईऐ छोडहो दुनी परीता॥
प्रणवत नानक दासन दासा जग हारिआ तिन जीता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1330

8. शब्द-अभ्यासी गुरु को प्रिय है

से भगत सतगुर मन भाए॥ अनदिन नाम रहे लिव लाए॥
सद ही नाम वेखह हजूर॥ गुर कै सबद रहिआ भरपूर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1277–78

9. शब्द के अनेक फल

9.1. जीव का कल्याण होता है

कचहो कंचन भइअउ सबद गुर स्रवणह सुणिओ॥
बिख ते अंम्रित हुयउ नाम सतगुर मुख भणिअउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

गुरमुख जनम सकारथा सचै सबद लगंन॥
आतम राम प्रगासिआ सहजे सुख रहंन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 755

सभे थोक परापते जे आवै इक हथ॥
जनम पदारथ सफल है जे सचा सबद कथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

तुध बाझ समरथ कोए नाही क्रिपा कर बनवारीआ॥
एस नउ होर थाउ नाही सबद लाग सवारीआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

जो जन दीन भए गुर आगै तिन के दूख निवारे॥
अनदिन भगति करह गुर आगै गुर कै सबद सवारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

9.2. शब्द हौमैं रोग की औषधि है

मेरे प्रीतम कर किरपा देह बुझाई॥
हउमै रोगी जगत उपाइआ बिन सबदै रोग न जाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

मनमुख ते अभ भगति न होवस हउमै पचह दिवाने॥
इह मनूआ खिन ऊभ पइआली जब लग सबद न जाने॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1345

दूजै भाए दुख लाइदा बहुती दे सजाए॥
नानक नाम लगे से उबरे हउमै सबद गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

हउमै दीरघ रोग है दारू भी इस माहे॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबद कमाहे॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 466

हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछ कार कमाउ॥
सबद सलाही मन वसै हउमै दुख जल जाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

हउमै ममता जल बलउ लोभ जलउ अभिमान॥
नानक सबद वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

हउमै निवरै गुर सबद वीचारै॥ चंचल मत तिआगै पंच संघारै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 226

कल कीरत सबद पछान॥ एहा भगति चूकै अभिमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

अंम्रित मीठा सबद वीचार॥ अनदिन भोगे हउमै मार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

सबद सुणीऐ सबद बुझीऐ सच रहै लिव लाए॥
सबदे हउमै मारीऐ सचै महल सुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 429

मन मैला सच निरमला किउ कर मिलिआ जाए॥
प्रभ मेले ता मिल रहै हउमै सबद जलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 755

संत जना के हर जीउ कारज सवारे॥ प्रहलाद जन के इकीह कुल उधारे॥
गुर कै सबद हउमै बिख मारे॥ नानक राम नाम संत निसतारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1133

आतम मह राम राम मह आतम चीनस गुर बीचारा॥
अंम्रित बाणी सबद पछाणी दुख काटै हउ मारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1153

भगति करे सो जन निरमल होए॥
गुर सबदी विचहो हउमै खोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1173

नानक हउमै सबद जलाइआ॥ सतगुर साचा दरस दिखाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1189

सबद वीचार सदा रंग राते हउमै त्रिसना मारी॥
अंतर निहकेवल हर रविआ सभ आतम राम मुरारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

जिनी हुकम पछाणिआ से मेले हउमै सबद जलाए॥
सची भगति करह दिन राती सच रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

हउमै बिख मन मोहिआ लदिआ अजगर भारी॥
गरुड़ सबद मुख पाइआ हउमै बिख हर मारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1260

हउमै मेरा सबदे खोई॥ निरमल नाम वसै मन सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

भाउ भगति गुरमती पाए॥ हउमै विचहो सबद जलाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

अमिउ रसना बदन बर दात अलख अपार गुर सूर सबद हउमै निवार्यउ॥
पंचाहर निदलिअउ सुंन सहज निज घर सहार्यउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1408

आतमा राम न पूजनी दूजै किउ सुख होए॥
हउमै अंतर मैल है सबद न काढह धोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1415

बिन सबदै रस न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई॥
सबद रते अंम्रित रस पाइआ साचे रहे अघाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 945

त्रै गुण मेटै सबद वसाए ता मन चूकै अहंकारो॥
अंतर बाहर एको जाणै ता हर नाम लगै पिआरो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

जिन मीठा लाइआ सोई जाणै तिस विटहो बल जाई॥
सबद सलाही सदा सुखदाता विचहो आप गवाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

गुर सबद बीचारह आप जाए॥ साच जोग मन वसै आए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1190

गुर सबदी जल पाईऐ विचहो आप गवाए॥
नानक जिस बिन चसा न जीवदी सो सतगुर दीआ मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1283

सबद मंनिऐ गुर पाईऐ विचहो आप गवाए॥
अनदिन भगति करे सदा साचे की लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

9.3. चंचल बुद्धि और मन की तरंगें रुक जाती हैं और मन वश में आता है

सतगुर सबदी इह मन भेदिआ हिरदै साची बाणी॥
मेरा प्रभ अलख न जाई लखिआ गुरमुख अकथ कहाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

नानक मन समझाईऐ गुर कै सबद सालाह॥
राम नाम रंग रतिआ भार न भरम तिनाह॥
हर जप लाहा अगला निरभउ हर मन माह॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 23

मन भूलउ समझस साच नाए॥ गुर सबद बीचारे सहज भाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1187

चंचल मत तिआग भउ भंजन पाइआ एक सबद लिव लागी॥
हर रस चाख त्रिखा निवारी हर मेल लए बडभागी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1232

मन के तरंग सबद निवारे रसना सहज सुभाई॥
सतगुर मिल रहीऐ सद अपुने जिन हर सेती लिव लाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

गुरमुख जोग सबद आतम चीनै हिरदै एक मुरारी॥
मनूआ असथिर सबदे राता एहा करणी सारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

बिन गुर सबदै मन नही ठउरा॥
सिमरहो राम नाम अत निरमल अवर तिआगहो हउमै कउरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 415

से वडभागी जिन सबद पछाणिआ॥ बाहर जादा घर मह आणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1175

मनमुख ते अभ भगति न होवस हउमै पचह दिवाने॥
इह मनूआ खिन ऊभ पइआली जब लग सबद न जाने॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1345

मन सबद मरै ता मुकतो होवै हर चरणी चित लाई॥
हर सर सागर सदा जल निरमल नावै सहज सुभाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

सो गिरही सो दास उदासी जिन गुरमुख आप पछानिआ॥
नानक कहै अवर नही दूजा साच सबद मन मानिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

इन बिधि राम रमत मन मानिआ॥ गिआनु अंजन गुर सबद पछानिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

तू मोटउ ठाकुर सबद माहे॥ मन नानक मानिआ सच सलाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

जनक राज बरताइआ सतजुग आलीणा॥
गुर सबदे मन मानिआ अपतीज पतीणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1407

सबद मरै मन मार धंन जणेदी माइआ॥
दर सचै सचिआर सचा आइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1286

मन गुरमत चाल चलावैगो॥
जिउ मैगल मसत दीजै तल कुंडे गुर अंकस सबद द्रिड़ावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

सबद मरै मन मारे अउधू जोग जुगत वीचारी॥
माइआ मोह भवजल है अवधू सबद तरै कुल तारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

सचै सबद मन मारिआ अहिनिस नाम पिआर॥
जिनी पुरखी उर धारिआ सचा अलख अपार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1284

बडभागी उनमानिअउ रिद सबद बसायउ॥
मन माणक संतोखिअउ गुर नाम द्रिढ़ायउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1407

9.4. मैल उतरती है

बिन सतगुर किनै न पाइओ कर वेखहो मन वीचार॥
मनमुख मैल न उतरै जिचर गुर सबद न करे पिआर॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

फुन गुरू परमल सरस करत कंचन परस मैल दुरमत हिरत सबद गुर ध्याईऐ॥
अंम्रित परवाह छुटकंत सद द्वार जिस ग्यान गुर बिमल सर संत सिख नाईऐ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1401

9.5. तृष्णा मिट जाती है

त्रिसना अगन सबद बुझाए॥ दूजा भरम सहज सुभाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 222

गुर का सबद अत मीठा लाइआ॥
नानक त्रिसन बुझी मन तन सुख पाइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 798

सहज मिलिआ तब ही सुख पाइआ त्रिसना सबद बुझाई॥
कहो नानक तुझ ते मन मानिआ कीमत कहन न जाई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1274

प्रिउ सेवहो प्रभ प्रेम अधार॥ गुर सबदी बिख तिआस निवार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1187

बाबीहा तूं सच चउ सचे सउ लिव लाए॥
बोलिआ तेरा थाए पवै गुरमुख होए अलाए॥
सबद चीन तिख उतरै मंन लै रजाए॥
चारे कुंडा झोक वरसदा बूंद पवै सहज सुभाए॥

जल ही ते सभ ऊपजै बिन जल पिआस न जाए॥
नानक हर जल जिन पीआ तिस भूख न लागै आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1419-20

9.6. आसा-मनसा का नाश होता है

आसा मनसा सबद जलाए॥ राम नराइण कहै कहाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

9.7. मोह-माया का नाश होता है

बिसीअर बिसू भरे है पूरन गुर गरुड़ सबद मुख पावैगो॥
माइआ भुइअंग तिस नेड़ न आवै बिख झार झार लिव लावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

माइआ भुइअंगम सरप है जग घेरिआ बिख माए॥
बिख का मारण हर नाम है गुर गरुड़ सबद मुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1415

मन माइआ मन धाइआ मन पंखी आकास॥
तसकर सबद निवारिआ नगर वुठा साबास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1330

सबदं रतं हितं मइआ कीरतं कली करम क्रितुआ॥
मिटंत तत्रागत भरम मोहं॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1354

माइआ मोह सबद जलाए॥ मन तन हरिआ सतगुर भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1173

इह मन छूटा गुर लीआ छडाए॥
नानक माइआ मोह सबद जलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1176

बिन प्रीती भगति न होवई बिन सबदै थाए न पाए॥
सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रम जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

मेरे मन हर हर राम नाम जप चीत॥
हर हर वसत माइआ गढ़ वेढ़ी गुर कै सबद लीओ गड़ जीत॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1295

९.८. भ्रम का नाश होता है

गुरमुख हर सालाहिआ जिंना तिन सलाहे हर जाता॥
विचहो भरम गइआ है दूजा गुर कै सबद पछाता॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

९.९. सब विकारों, दुखों, काम-क्रोधादि अवगुणों और पापों का नाश होता है

सभो वरतै चलत चलत वखाणिआ॥
पारब्रहम परमेसर गुरमुख जाणिआ॥
लथे सभ विकार सबद नीसाणिआ॥
साधू संग उधार भए निकाणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

गुर का सबद सभ रोग गवाए जिस नो हर जीउ लाए॥
नामे नाम मिलै वडिआई जिस नो मंन वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130–31

मेरा प्रभ है गुण का दाता अवगण सबद जलाए॥
जिन मन वसिआ से जन सोहे हिरदै नाम वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1131–32

गुर कर सच बीचार गुरू कर रे मन मेरे॥
गुर कर सबद सपुंन अघन कटह सभ तेरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

किलविख मेटे सबद संतोख॥ नाम अराधन होआ जोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

साच सबद हिरदे मन माहे॥ जनम जनम के किलविख जाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

मधुसूदन जपीऐ उर धार॥
देही नगर तसकर पंच धातू गुर सबदी हर काढे मार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1135

से धनवंत जिन हर प्रभ रास॥ काम क्रोध गुर सबद नास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1184

द्रिसटि धरत तम हरन दहन अघ पाप प्रनासन॥
सबद सूर बलवंत काम अर क्रोध बिनासन॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1391

भै निरभउ हर अटल मन सबद गुर नेजा गडिओ॥
काम क्रोध लोभ मोह अपत पंच दूत बिखंडिओ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1396

सतगुर नाम एक लिव मन जपै द्रिढ़ तिन्ह
जन दुख पाप कहो कत होवै जीउ॥
तारण तरण खिन मात्र जा कउ द्रिस्टि धारै
सबद रिद बीचारै काम क्रोध खोवै जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1398

गुर कै सबद अराधीऐ नाम रंग बैराग॥
जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू इह राग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1425

गुरमती सबद सूर है काम क्रोध जिन्ही मारिआ॥
सचै अंदर महल सबद सवारिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1280

9.10. निर्मलता की प्राप्ति होती है

तूं आप निरमल तेरे जन है निरमल गुर कै सबद वीचारे॥
नानक तिन कै सद बलिहारै राम नाम उर धारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1155

सबदे मन तन निरमल होआ हर वसिआ मन आई॥
सबद गुर दाता जित मन राता हर सिउ रहिआ समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

सबद रते से निरमले हउ सद सद बलिहारै जास॥
हिरदै जिन कै हर वसै तित घट है परगास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

सबद दीपक वरतै तिहु लोए॥ जो चाखै सो निरमल होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

मेरे मन गुर मुख धिआए हर सोए॥
गुर का सबद मन वसै मन तन निरमल होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

नदर करे सबद घट मह वसै विचहो भरम गवाए॥
तन मन निरमल निरमल बाणी नामो मंन वसाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

मन मेरे हउमै मैल भर नाल॥
हर निरमल सदा सोहणा सबद सवारणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

सबद रते से निरमले तज काम क्रोध अहंकार॥
नाम सलाहन सद सदा हर राखह उर धार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

सबद चीन मन निरमल होवै ता हर के गुण गावै॥
गुरमती आपै आप पछाणै ता निज घर वासा पावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 565

बिन गुर अंधुले धंध रोए॥ मन गुरमुख निरमल मल सबद खोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1170

जग खोटौ सच निरमलौ गुर सबदीं वीचार॥
ते नर विरले जाणीअह जिन अंतर गिआन मुरार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1331

गुरमुख हर जीउ सदा धिआवहो जब लग जीअ परान॥
गुर सबदी मन निरमल होआ चूका मन अभिमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

9.11. पूर्ण वैराग्य की अवस्था की प्राप्ति

सबद रते पूरे बैरागी॥
अउहठ हसत मह भीखिआ जाची एक भाए लिव लागी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

9.12. शब्द जन्म-मरण की टेक है, इससे मौत का डर मिट जाता है, शब्द में मरकर जीव दोबारा नहीं मरता

निडरे कउ कैसा डर कवन॥ सबद पछानै तीने भउन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

सिखहो सबद पिआरिहो जनम मरन की टेक॥
मुख ऊजल सदा सुखी नानक सिमरत एक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320

जिह मरनै सभ जगत तरासिआ॥ सो मरना गुर सबद प्रगासिआ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 327

हर हर नाम भजिओ पुरखोतम सभ बिनसे दालद दलघा॥
भउ जनम मरणा मेटिओ गुर सबदी हर असथिर सेव सुख समघा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 731

मन मेरे सदा हर वेख हदूर॥ जनम मरन दुख परहरै सबद रहिआ भरपूर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

मन भावै सबद सुहाइआ॥
भ्रम भ्रम जोनि भेख बहु कीन्हे गुर राखे सच पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1255

सबद मरै सो मर रहै फिर मरै न दूजी वार॥
सबदै ही ते पाईऐ हर नामे लगै पिआर॥
बिन सबदै जग भूला फिरै मर जनमै वारो वार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

9.13. कलि के क्लेश और यम का डर दूर हो जाता है

कल कलेस गुर सबद निवारे॥ आवण जाण रहे सुख सारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 191

खिन मह उपजै खिन खपै खिन आवै खिन जाए॥
सबद पछाणै रव रहै ना तिस काल संताए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58-59

जो उपजै सो काल संघारिआ॥ हम हर राखे गुर सबद बीचारिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

मन राम नाम आराधिआ गुर सबद गुरू गुर के॥
सभ इछा मन तन पूरीआ सभ चूका डर जम के॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 731

9.14. औघट की राह की मुश्किलें आसान हो जाती हैं

अउघट रुधे राह गलीआं रोकीआं॥ सचा वेपरवाह सबद संतोखीआं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1288

9.15. आवागमन मिट जाता है और करोड़ों कर्मों का नाश होता है

आवा गउण निवार सच राते साच सबद मन भाइआ॥
सतगुर सेव सदा सुख पाईऐ जिन विचहो आप गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

रामानंद सुआमी रमत ब्रहम॥ गुर का सबद काटै कोट करम॥

श्री रामानंद, आदि ग्रन्थ, पृ. 1195

9.16. जीव संसार सागर से पार हो जाता है

आपे सागर बोहिथा आपे पार अपार॥
साची वाट सुजाणु तूं सबद लघावणहार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 54

मेरे मन सदा रहहो सतगुर की सरणा॥
हिरदै हर नाम मीठा सद लागा गुर सबदे भवजल तरणा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

इस मन की बिधि मन हू जाणै बूझै सबद वीचार॥
नानक नाम धिआए सदा तू भव सागर ज़ित पावह पार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1260

भउजल तारणहार सबद पछाणीऐ॥ चोर जार जूआर पीड़े घाणीऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1288

भउ बैराग भइआ है बोहिथ गुर खेवट सबद तरावैगो॥
राम नाम हर भेटीऐ हर रामै नाम समावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1308

गुर जिन्ह कउ सुप्रसंन मान अभिमान निवारै॥
जिन्ह कउ गुर सुप्रसंन सबद लग भवजल तारै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1398

सबद गुरू भव सागर तरीऐ इत उत एको जाणै॥
चिहन वरन नही छाइआ माइआ नानक सबद पछाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

सबद मरै मन मारे अउधू जोग जुगत वीचारी॥
माइआ मोह भवजल है अवधू सबद तरै कुल तारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

हउ बलिहारी सतगुर चरणा॥ गुर बोहिथ सबद भै तरणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

सुण मन मेरे भज सतगुर सरणा॥
गुर परसादी छुटीऐ बिख भवजल सबद गुर तरणा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

गुर पूरे ते गति मित पाई॥
इह संसार बिख वत अत भउजल गुर सबदी हर पार लंघाई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 353

✓ ना मन मरै न माइआ मरै॥
जिन किछ कीआ सोई जाणै सबद वीचार भउ सागर तरै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

भवजल बिन सबदै किउ तरीऐ॥
नाम बिना जग रोग बिआपिआ दुबिधा डुब डुब मरीऐ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1125

गण गंधरब नामे सभ उधरे गुर का सबद वीचार॥
हउमै मार सद मंन वसाइआ हर राखिआ उर धार॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

सबद सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी॥
एह मन माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबद वीचारी॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

बिन गुर सबद न छूटीऐ देखहो वीचारा॥
जे लख करम कमांवही बिन गुर अंधिआरा॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

भागठ सचा सोए है जिस हर धन अंतर॥
सो छूटै महा जाल ते जिस गुर सबद निरंतर॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 396-97

गुर कै सबद तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रंहमाद तरे॥
सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पार परे॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1125

प्राणी हर जप जनम गइओ॥
साच सबद बिन कबहु न छूटस बिरथा जनम भइओ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1125-26

9.17. सुख, शांति व आनंद की प्राप्ति होती है

गुर कै सबद सुख सांत सरीर॥ गुरमुख ता कउ लगै न पीर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

गुरमती सांत वसै सरीर॥ सबद चीन्ह फिर लगै न पीर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 842

रसना सबद वीचार रस राती लाल भई रंग लाई॥
राम नाम निहकेवल जाणिआ मन त्रिपतिआ सांत आई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

वडा आप अगंम है वडी वडिआई॥
गुर सबदी वेख विगसिआ अंतर सांत आई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1251

अंतर अगन सबल अत बिखिआ हिव सीतल सबद गुर दीजै॥
तन मन सांत होए अधिकाई रोग काटै सूख सवीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1325-26

घर होदै धन जग भुखा मुआ बिन सतगुर सोझी न होए॥
सबद सीतल मन तन वसै तिथै सोग विजोग न कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

सागर सीतल गुर सबद वीचार॥ मारग मुकता हउमै मार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1274

चात्रिक मीन जल ही ते सुख पावह सारिंग सबद सुहाई॥
रैन बबीहा बोलिओ मेरी माई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1274

सबदे सदा बसंत है जित तन मन हरिआ होए॥
नानक नाम न वीसरै जिन सिरिआ सभ कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1420

आप कराए करे आप भाई जिन हरिआ कीआ सभ कोए॥
नानक मन तन सुख सद वसै भाई सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

हर इको दाता वरतदा दूजा अवर न कोए॥
सबद सालाही मन वसै सहजे ही सुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36

मेरे मन गुर सबदी सुख होए॥ गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाए न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

सबद चीन्ह सुख पाइआ सचै नाए पिआर॥
हर मंदर सबदे सोहणा कंचन कोट अपार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

दूख विसारण सबद है जे मंन वसाए कोए॥
गुर किरपा ते मन वसै करम परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1413

हर रंग राता मन रंग माणे॥
सदा अनंद रहै दिन राती पूरे गुर कै सबद समाणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 732

महा अनंद गुर सबद वीचार॥ प्रिअ सिउ राती धन सोहागण नार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 370

तिना अनंद सदा सुख है जिना सच नाम आधार॥
गुर सबदी सच पाइआ दूख निवारणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36

साजन मन आनंद है गुर का सबद वीचार॥
अंतर सबद वसाइआ दुख कटिआ चानण कीआ करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 549

सदा अनंद रहै दिन राती एक सबद लिव लाई॥
नाम पदारथ सहजे पाइआ इह सतगुर की वडिआई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1265

९.18. सदा बसंत है

सदा बसंत गुर सबद वीचारे॥ राम नाम राखै उर धारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1176

९.19. अंतर में प्रकाश होता है

सबद रते से निरमले हउ सद बलिहारै जास॥
हिरदै जिन कै हर वसै तित घट है परगास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

नाम जपत होआ परगास॥ गुर सबदे कीना रिदै निवास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340–41

सबद दीपक वरतै तिहु लोए॥ जो चाखै सो निरमल होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

सतगुर सबद उजारो दीपा॥
बिनसिओ अंधकार तिह मंदर रतन कोठड़ी खुल्ही अनूपा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 821

९.20. हृदय कमल खिलता है

अंदर रचै सच रंग जिउ मंजीठै लाल॥
कमल विगसै सच मन गुर कै सबद निहाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1278–79

मूल पछाणन तिन निज घर वासा सहजे ही सुख होई॥
गुर कै सबद कमल परगासिआ हउमै दुरमत खोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

9.21. शब्द द्वारा कुलमालिक का भय हृदय में उत्पन्न होता है और अपने आप को पहचाना जाता है

आपणा भउ तिन पाइओन जिन गुर का सबद बीचार॥
सतसंगती सदा मिल रहे सचे के गुण सार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

गुर का सबद रतंन है कर चानण आप दिखाइआ॥
आपणा आप पछाणिआ गुरमती सच समाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1290

9.22. जीवित-मृतक की अवस्था प्राप्त होती है

जीवत मरै मर मरण सवारै॥ गुर कै सबद साच उर धारै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

कांइआ साधै उरध तप करै विचहो हउमै न जाए॥
अधिआतम करम जे करे नाम न कब ही पाए॥
गुर कै सबद जीवत मरै हर नाम वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

सतगुर सेव मन निरमला हउमै तज विकार॥
आप छोड जीवत मरै गुर कै सबद वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

गुर परसादी जीवत मरै मर जीवै सबद कमाए॥
मुकत दुआरा सोई पाए जे विचहो आप गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

9.23. जीवनमुक्त हो जाता है

जीवन मुकत जा सबद सुणाए॥ सची रहत सचा सुख पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1343

9.24. सहज और सुन्न समाधि लगती है, दसवाँ द्वार खुलता है

सहज समाध सदा लिव हर सिउ जीवां हर गुन गाई॥
गुर कै सबद रता बैरागी निज घर ताड़ी लाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1232

जिन अंतर सबद आप पछाणह गति मित तिन ही पाई॥
एह मनूआ सुंन समाध लगावै जोती जोत मिलाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

धावत थंम्हिआ सतगुर मिलिऐ दसवा दुआर पाइआ॥
तिथै अंम्रित भोजन सहज धुन उपजै जित सबद जगत थंम्ह रहाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 441

नउ दरवाजे काइआ कोट है दसवै गुपत रखीजै॥
बजर कपाट न खुलनी गुर सबद खुलीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

9.25. प्रभु के दर का निशान मिलता है

जिस निंदह सोई बिधि जाणै॥ गुर कै सबदे दर नीसाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1330

साचा सेवहो साच पछाणै॥ गुर कै सबद हर दर नीसाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174-75

9.26. हरि रंग की प्राप्ति होती है

कर किरपा घर आइआ आपे मिलिआ आए॥
गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहज सुभाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

मन रे राम जपहो सुख होए॥ बिन गुर प्रेम न पाईऐ सबद मिलै रंग होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

गुणवंती सच पाइआ त्रिसना तज विकार॥
गुर सबदी मन रंगिआ रसना प्रेम पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36-37

प्रेम पदारथ जिन घट वसिआ सहजे रहे समाई॥
सबद रते से रंग चलूले राते सहज सुभाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

मन मेरे सबद रपै रंग होए॥ सची भगति सचा हर मंदर प्रगटी साची सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

मनमुख फिरह न जाणह सतगुर हउमै अंदर लाग॥
नानक सबद रते हर नाम रंगाए बिन भै केही लाग॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

गुर की बाणी गुर ते जाती जे सबद रते रंग लाए॥
पवित पावन से जन निरमल हर कै नाम समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

9.27. भक्ति की उत्पत्ति होती है

पड़ पड़ पंडित मोनी थाके भेखी मुकत न पाई॥
नानक बिन भगती जग बउराना सचै सबद मिलाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 440

सबद बीचारे सो जन साचा जिन कै हिरदै साचा सोई॥
साची भगति करह दिन राती तां तन दूख न होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1131

अनदिन भगति करह दिन राती दुबिधा सबदे खोई॥
सदा निरमल है जो सच राते सच वसिआ मन सोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1133

फुन गुरू जल बिमल अथाह मजन
करहो संत गुरसिख तरहो नाम सच रंग सर॥
सदा निरवैर निरंकार निरभउ जपै
प्रेम गुर सबद रस करत द्रिड़ भगति हर॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1400

मन मेरे सबद रपै रंग होए॥ सची भगति सचा हर मंदर प्रगटी साची सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

जिन सबद गुरू सुण मंनिआ तिन मन धिआइआ हर सोए॥
अनदिन भगती रतिआ मन तन निरमल होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

साच सबद सिउ लागी प्रीत॥ हर प्रभ अपुना आइआ चीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

गोविंद प्रीत सनकादिक उधारे॥ राम नाम सबद बीचारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

९.28. हरि रस की उत्पत्ति होती है

रसना हर रस पीजै अंतर भीजै साच सबद बीचारी॥
अंतर खूहटा अंम्रित भरिआ सबदे काढ पीऐ पनिहारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 570

खोइओ मूल लाभ कह पावस दुरमत गिआन विहूणे॥
सबद बीचार राम रस चाखिआ नानक साच पतीणे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126

९.29. दरगाह में मान मिलता है

सबद मिले से सूचाचारी साची दरगह माने॥
अनदिन नाम रतन लिव लागे जुग जुग साच समाने॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

साच रते सच अंम्रित जिहवा मिथिआ मैल न राई॥
निरमल नाम अंम्रित रस चाखिआ सबद रते पत पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1127

मन की बिधि सतगुर ते जाणै अनदिन लागै सद हर सिउ धिआन॥
गुर सबद रते सदा बैरागी हर दरगह साची पावह मान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259-60

हर हर नाम धिआए मन हर दरगह पावह मान॥
जो इछह सो फल पाइसी गुर सबदी लगै धिआन॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1313

जल ते त्रिभवण साजिआ घट घट जोत समोए॥
निरमल मैला ना थीऐ सबद रते पत होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

9.30. मुक्ति और परम पद का लाभ

सतगुर नो सभ को वेखदा जेता जगत संसार॥
डिठै मुकत न होवई जिचर सबद न करे वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 594

सबदे नाम रखै उर धार॥ सबदे गति मत मोख दुआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

साचै सबद मुकत गति पाए॥ नानक विचहो आप गवाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 352

गुर कै सबद मरह फिर जीवह तिन कउ मुकत दुआर॥
अंतर सांत सदा सुख होवै हर राखिआ उर धार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

रोगी ब्रहमा बिसन सरुद्रा रोगी सगल संसारा॥
हर पद चीन भए से मुकते गुर का सबद वीचारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1153

धंधा करत सगली पत खोवस भरम न मिटस गवारा॥
बिन गुर सबद मुकत नही कब ही अंधुले धंध पसारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1127

पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै संधिआ करम तिकाल करै॥
बिन गुर सबद मुकत कहा प्राणी राम नाम बिन उरझ मरै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1127

सबद मरै सोई जन सिझै बिन सबदै मुकत न होई॥
भेख करह बहु करम विगुते भाए दूजै परज विगोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1416

बिन सतगुर मुकत न पाईऐ मनमुख फिरै दिवान॥
सबद न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहे समान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

अंम्रित सबद पीवै जन कोए॥ नानक ता की परम गति होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 394

भ्रमत फिरे तिन किछू ना पाइआ॥
से असथिर जिन गुर सबद कमाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 374

9.31. निजघर की प्राप्ति

सहज समाध सदा लिव हर सिउ जीवां हर गुन गाई॥
गुर कै सबद रता बैरागी निज घर ताड़ी लाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1232

सच सबद कमाईऐ निज घर जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना॥
तित साखा मूल पत नही डाली सिर सभना परधाना॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 436

कर किरपा घर आइआ आपे मिलिआ आए॥
गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहज सुभाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

तब लग महल न पाईऐ जब लग साच न चीत॥
सबद रपै घर पाईऐ निरबाणी पद नीत॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

इह मन सबद न भेदिओ किउ होवै घर वास॥
मनमुखीआ दोहागणी आवण जाण मुईआस॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1416

गुर परसादी वेख तू हर मंदर तेरै नाल॥
हर मंदर सबदे खोजीऐ हर नामो लेहो सम्हाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

9.32. जीव सच में समाता है

साचै सबद रते जन साचे हर प्रभ आप मिलाए॥
गुर की बाणी सबद पछाती साच रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1155

हर जीउ साचा साची नाई॥ गुर परसादी किसै मिलाई॥
गुर सबद मिलह से विछुड़ह नाही सहजे सच समावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 123

हुकमे वाधा कार कमाए॥ एक सबद राचै सच समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

जिसह बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाए॥
अनदिन बाणी सबदे गांवै साच रहै लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

9.33. जगत में जै-जैकार होती है

करन करावन हर अंतरजामी जन अपुने की राखै॥
जै जै कार होत जग भीतर सबद गुरू रस चाखै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 630

9.34. मालिक से मिलाप होता है

सबद गुरू भव सागर तरीऐ इत उत एको जाणै॥
चिहन वरन नही छाइआ माइआ नानक सबद पछाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 944

गुरमुख मलार राग जो करह तिन मन तन सीतल होए॥
गुर सबदी एक पछाणिआ एको सचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1285

एको करता अवर न कोए॥ गुर सबदी मेलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

एको हर रविआ स्रब थाए॥ गुर सबदी मिलीऐ मेरी माए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

एकस मह सभ जगतो वरतै विरला एकु पछाणै॥
सबद मरै ता सभ किछ सूझै अनदिन एको जाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

जिन गिआन कीआ तिस हर तू जाण॥
साच सबद प्रभ एक सिञाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

सतगुर की सेवा गाखड़ी सिर दीजै आप गवाए॥
सबद मिलह ता हर मिलै सेवा पवै सभ थाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

गणत सरीर पीर है हर बिन गुर सबदी हर पांई॥
होहो दइआल क्रिपा कर हर जीउ हर सिउ रहां समाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1232

मित्र घणेरे कर थकी मेरा दुख काटै कोए॥
मिल प्रीतम दुख कटिआ सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

जीआ अंदर जीउ सबद है जित सह मेलावा होए॥
बिन सबदै जग आन्हेर है सबदे परगट होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1250

गुर सबदी सीगारीआ तन मन पिर कै पास॥
दुए कर जोड़ खड़ी तकै सच कहै अरदास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 54

सतगुर का सच सबद कमावहो॥ थिर घर बैठे प्रभ अपना पावहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 386

गुण निधान तेरा अंत न पाइआ॥ साच सबद तुझ माहे समाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

मेरे राम मै हर बिन अवर न कोए॥
सतगुर सच प्रभ निरमला सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

जेहा सतगुर कर जाणिआ तेहो जेहा सुख होए॥
एह सहसा मूले नाही भाउ लाए जन कोए॥
नानक एक जोत दुए मूरती सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30-31

जत सत संजम नाम है विण नावै निरमल न होए॥
पूरै भाग नाम मन वसै सबद मिलावा होए॥
नानक सहजे ही रंग वरतदा हर गुण पावै सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

अनदिन नामे रतिआ दुख बिखिआ विचहो जाए॥
नानक सबद मिलावड़ा नामे नाम समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

सचै सबद मन मोहिआ प्रभ आपे लए मिलाए॥
अनदिन नामे रतिआ जोती जोत समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

जिनी सच पछाणिआ सच रते भरपूर॥
गुर सबदी मन बेधिआ प्रभ मिलिआ आप हदूर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

सदा हर सच मन वसै निहचल मत अपार॥
रतन अमोलक पाइआ गुर का सबद बीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 83

घघै घाल सेवक जे घालै सबद गुरू कै लाग रहै॥
बुरा भला जे सम कर जाणै इन बिधि साहिब रमत रहै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 432

गहिर गंभीर सागर रतनागर अवर नही अन पूजा॥
सबद बीचार भरम भउ भंजन अवर न जानिआ दूजा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

उपाए कितै न पाईऐ हर करम बिधाता॥
गुर सबदी हर मन वसै हर सहजे जाता॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 510

सभ अंतरजामी ब्रहम है ब्रहम वसै सभ थाए॥
मंदा किस नो आखीऐ सबद वेखहो लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 757

सतगुर सेव सदा सुख पाइआ हर वसिआ मंन मुरारे॥
नानक मेल लई गुर अपुनै गुर कै सबद सवारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 772

मनमुख जनम गवाइआ झूठै लालच कूर॥
नानक बखस मिलाइअन सचै सबद हदूर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 854

जुग जुग भगता की रखदा आइआ॥
दैत पुत्र प्रहलाद गाइत्री तरपण किछू न जाणै सबदे मेल मिलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1133

वडा दाता तिल न तमाए॥ नानक मिलीऐ सबद कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

हर जीउ आपे लैहो मिलाए॥ गुर कै सबद सच नाम समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1176

गुर सबदी हर चेत सुभाए॥ राम नाम रस रहै अघाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1175

अवगण छोडउ गुण कमाए॥ गुर सबदी राता सच समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

पूरन परम जोत परमेसर प्रीतम प्रान हमारे॥
मोहन मोह लीआ मन मेरा समझस सबद बीचारे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1197

मेरा प्रभ साचा दूख निवारण सबदे पाइआ जाई॥
भगती राते सद बैरागी दर साचै पत पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1260

आपे करता अगम अथाहा॥ गुर सबदी जपीऐ सच लाहा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1261

जो किछ कीनो सो प्रभू रजाए॥ जो धुर लिखिआ सो मेटणा न जाए॥
हुकमे बाधा कार कमाए॥ एक सबद राचै सच समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

कूक पुकार न होवई नदरी नदर निहाल॥
नानक नाम रते सहजे मिले सबद गुरू कै घाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1283-84

तू गुणदाता निधान हहे असी अवगणिआर॥
जिस बखसे सो पाइसी गुर सबदी वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1284

हउ किआ आखा इक जीभ तेरा अंत न किन ही पाइआ॥
सचा सबद वीचार से तुझ ही माहे समाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1290

जनम जनम की हउमै मल लागी मिल संगत मल लह जावैगो॥
जिउ लोहा तरिओ संग कासट लग सबद गुरू हर पावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1309

सबद मरै सो मुआ जापै॥ गुर परसादी हर रस ध्रापै॥
हर दरगह गुर सबद सिञापै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1418

हर गहिर गंभीर गुणी गहीर गुर कै सबद पछानिआ॥
बहु बिधि करम करह भाए दूजै बिन सबदै बउरानिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

चीनै गिआन धिआन धन साचौ एक सबद लिव लावै॥
निरालंब निरहार निहकेवल निरभउ ताड़ी लावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

सबदे मन तन निरमल होआ हर वसिआ मन आई॥
सबद गुर दाता जित मन राता हर सिउ रहिआ समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

मोहन मोह लीआ मन मोहे॥ गुर कै सबद पछाना तोहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1187

गुरमुख कामण बणिआ सीगार॥ सबदे पिर राखिआ उर धार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1277

अतुल किउ तोलीऐ विण तोले पाइआ न जाए॥
गुर कै सबद वीचारीऐ गुण मह रहै समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1282

हर जी सूखम अगम है कित बिधि मिलिआ जाए॥
गुर कै सबद भ्रम कटीऐ अचिंत वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 756

साहिब मेरा सदा है दिसै सबद कमाए॥
ओह अउहाणी कदे नाहे ना आवै ना जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 509

बिन सबदै जग आन्हेर है सबदे परगट होए॥
पंडित मोनी पड़ पड़ थके भेख थके तन धोए॥
बिन सबदै किनै न पाइओ दुखीए चले रोए॥
नानक नदरी पाईऐ करम परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1250

बिन गुर नीद न आवई दुखी रैण विहाए॥
बिन सबदै पिर न पाईऐ बिरथा जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

खुधिआ त्रिसना निंदा बुरी काम क्रोध विकराल॥
एनी अखी नदर न आवई जिचर सबद न करे बीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1279

सबद मिले से सूचाचारी साची दरगह माने॥
अनदिन नाम रतन लिव लागे जुग जुग साच समाने॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

10. शब्द विहीन के दोष

10.1. शुभ-आचरण नहीं बनता

बिन सबदै आचार न किन ही पाइआ॥
गुरमुख ओअंकार सच समाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1285

10.2. दु:ख प्राप्त होता है

ध्रिग जीवण दोहागणी मुठी दूजै भाए॥
कलर केरी कंध जिउ अहिनिस किर ढह पाए॥
बिन सबदै सुख ना थीऐ पिर बिन दूख न जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

बिन सबदै जग दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाए॥
सबदे नाम धिआईऐ सबदे सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

10.3. जीव महल नहीं पाता (मालिक के दरबार में नहीं पहुँचता) गुरु के द्वार पर शोभा नहीं पाता और सदैव भ्रमों में रहता है

अंतर की गति गुरमुख जाणै॥ साच सबद बिन महल न पछाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

सभ रस भोगण बाद हहे सभ सीगार विकार॥
जब लग सबद न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआर॥
नानक धंन सुहागणी जिन सह नाल पिआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

अउगण फिर लागू भए कूर वजावै तूर॥
बिन सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

10.4. चौरासी के जन्म-मरण का चक्कर बना रहता है

एह मनो मूरख लोभीआ लोभे लगा लुभान॥
सबद न भीजै साकता दुरमत आवन जान॥
साधू सतगुर जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

मनमुख मैले मल भरे हउमै त्रिसना विकार॥
बिन सबदै मैल न उतरै मर जंमह होए खुआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञैं घर काउ॥
गुरमती घट चानणा सबद मिलै हर नाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

मन रे सबद तरहो चित लाए॥
जिन गुरमुख नाम न बूझिआ मर जनमै आवै जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

जो जागे से उबरे सूते गए मुहाए॥
सचा सबद न पछाणिओ सुपना गइआ विहाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

10.5. जीव भूलों में भटकता है, यम का दंड सहता है और नरकों में जाता है

मन मेरे गुर सबदी हर पाइआ जाए॥
बिन सबदै जग भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 600

सबद मरै सो मर रहै फिर मरै न दूजी वार॥
सबदै ही ते पाईऐ हर नामे लगै पिआर॥
बिन सबदै जग भूला फिरै मर जनमै वारो वार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

बारह मह रावल खप जावह चहु छिअ मह संनिआसी॥
जोगी कापड़ीआ सिरखूथे बिन सबदै गल फासी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

अहिनिस निंदा तात पराई हिरदै नाम न सरब दइआ॥
बिन गुर सबद न गति पत पावह राम नाम बिन नरक गइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 906

अंम्रित का रस विरली पाइआ सतगुर मेल मिलाए॥
जब लग सबद भेद नही आइआ तब लग काल संताए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126

बिन सबदै जगत बरलिआ कहणा कछू न जाए॥
हरी रखे से उबरे सबद रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1417

सबद गुर पीरा गहिर गंभीरा बिन सबदै जग बउरानं॥
पूरा बैरागी सहज सुभागी सच नानक मन मानं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 635

हर गहिर गंभीर गुणी गहीर गुर कै सबद पछानिआ॥
बहु बिधि करम करह भाए दूजै बिन सबदै बउरानिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1234

10.6. जन्म व्यर्थ जाता है

बिन गुर नीद न आवई दुखी रैण विहाए॥
बिन सबदै पिर न पाईऐ बिरथा जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

बिन सबदै मुआ है सभ कोए॥ मनमुख मुआ अपुना जनम खोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1418

10.7. ख़्वारी और मोहताजी बनी रहती है

सतगुरू किआ फिटकिआ मंग थके संसार॥
सचा सबद न सेविओ सभ काज सवारणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

सतगुर पुरख न मंनिओ सबद न लगो पिआर॥
इसनान दान जेता करह दूजै भाए खुआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

सबद विसारन तिना ठउर न ठाउ॥
भ्रम भूले जिउ सुंञै घर काउ॥
हलत पलत तिनी दोवै गवाए दुखे दुख विहावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 123

10.8. जीव माया, तृष्णा और विकारों में फँसा रहता है

बिन सतगुर मुकत न पाईऐ मनमुख फिरै दिवान॥
सबद न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहे समान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

गुर का सबद विसारिआ दूजै भाए रचंन॥
तिसना भुख न उतरै अनदिन जलत फिरंन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 755

10.9. अज्ञान और अंधकार रहता है

बाझ गुरू गुबार है बिन सबदै बूझ न पाए॥
गुरमती परगास होए सच रहै लिव लाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

बहरे करन अकल भई होछी सबद सहज नही बूझिआ॥
जनम पदारथ मनमुख हारिआ बिन गुर अंध न सूझिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126

सिंम्रिति सासत्र पड़ह मुनि केते बिन सबदै सुरत न पाई॥
त्रै गुण सभे रोग विआपे ममता सुरत गवाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

जगत उपाए तुध धंधै लाइआ भूंडी कार कमाई॥
जनम पदारथ जूऐ हारिआ सबदै सुरत न पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1155

मनमुख बोले अंधुले तिस मह अगनी का वास॥
बाणी सुरत न बुझनी सबद न करह प्रगास॥
ओना आपणी अंदर सुध नही गुर बचन न करह विसास॥
गिआनीआ अंदर गुर सबद है नित हर लिव सदा विगास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1415

बिन सबदै सुध न होवई जे अनेक करै सीगार॥
पिर की सार न जाणई दूजै भाए पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 651-52

सबद न जाणह से अंने बोले से कित आए संसारा॥
हर रस न पाइआ बिरथा जनम गवाइआ जंमह वारो वारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

बिन सबदै आप न जापई सभ अंधी भाई॥
गुरमती घट चानणा नाम अंत सखाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

अनहद या अनाहद शब्द

शब्द दो प्रकार का है–एक 'आहत' और दूसरा 'अनाहत'। आहत वह शब्द है जो दो वस्तुओं के टकराने से पैदा हो। बाहर के सब शब्द इसके दायरे में आते हैं। अनाहत वह शब्द है जो 'हत' से रहित है तथा किसी का मोहताज नहीं, किसी पर निर्भर नहीं। मुसलमान फ़क़ीर इसे बेहद या अनहद कहकर पुकारते हैं, वे कहते हैं कि एक कभी न ख़त्म होनेवाला लगातार कलाम (ध्वनि) सुनाई देता है जो फ़ना होनेवाला नहीं है।

बिशनवी यक कलामे-लामक़तूअ, अज़ हुदूसो-फ़ना बवद मरफ़ूअ।

दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 90-91

अव्वलो-अख़िरश चूं बेहद शुद, ज़ाँ सबब नामे ऊ ब-आँहँद शुद।

अर्थ: तू लगातार एक कलाम को सुनेगा जो फ़ना (नश्वर) की सीमा से मुक्त है। जो अव्वल व आख़िर (आदि और अंत) न होने की वजह से बेहद (असीम) है, इसलिए उसका नाम अनहद (हद के बग़ैर) रखा गया है।

कुलमालिक अशब्द है, वह संपूर्ण सृष्टि का राजा है। वहाँ शब्द गुप्त है:

सरब थान को राजा॥ तह अनहद सबद अगाजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 621

मालिक की कोई रूप-रेखा नहीं, वह अनहद होकर प्रकट होता है:

तिस रूप न रेख अनाहद वाजै सबद निरंजन कीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 351

उसके (अनहद शब्द के) अंदर प्रकाश है और उससे ध्वनि उत्पन्न होती है:

सहज गुफा मह आसण बाधिआ॥ जोत सरूप अनाहद वाजिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 370

धुन वाजे अनहद घोरा॥ मन मानिआ हर रस मोरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 879

यह अनहद ध्वनि नित्य हो रही है, यह अखंड है:

अनहत धुन वाजह नित वाजे हर अंम्रित धार रस लीड़ा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 698

अनहद सबद वजै दिन राती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 904

अनहद की धुन अति रसदायक है जो कथन में नहीं आ सकती:

अनिक अनाहद आनंद झुनकार॥ उआ रस का कछु अंत न पार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1236

मालिक के दर पर अनेक शब्द बज रहे हैं:

जनम जनम के दूख निवारे॥ अनहद सबद वजे दरबारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1137

देव सथानै किआ नीसाणी॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

यह अनहद शब्द घट-घट के अंदर गगन में है:

दर वाजह अनहत वाजे राम॥ घट घट हर गोबिंद गाजे राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 578

रहै गगन पुर द्रिसटि समैसर अनहत सबद रंगीणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 907

यदि सुरत नौ द्वारों से हटकर दसवें द्वार में आ जाए तो अनहद सुना जा सकता है:

नउ दर ठाके धावत रहाए॥ दसवै निज घर वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद वजह दिन राती गुरमती सबद सुणावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

मूंद लीए दरवाजे॥ बाजीअले अनहद बाजे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 656

भाई गुरदास जी भी अनहद का वर्णन करते हैं:

सबद सुरति लिवलीण होए अनहद धुनि धीरा।

वारां भाई गुरदास, 9:8

सबद सुरति लिवलाइ अनहद वाइआ।

वारां भाई गुरदास, 19:21

अनहद शब्द ही पूर्ण ज्ञान-ध्यान है। वह हरि की कथा है जिसके सुनने से जीव का कल्याण होता है:

गिआन धिआन पूरन परमेसुर हर हर कथा नित सुणीऐ राम॥
अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीऐ राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 783

अनहद शब्द अचरज है। यह हमारे विचारों द्वारा नहीं मिलता, यह गुरु-विचार द्वारा ही प्राप्त हो सकता है; यह पूर्ण गुरु का पूर्ण प्रसाद है:

अनहद सबद सुहावणे पाईऐ गुर वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

अनहद सबद अचरज बिसमाद॥ गुर पूरा पूरा परसाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

कहो नानक जिस सतगुर पूरा॥ वाजे ता कै अनहद तूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

परमात्मा से मिलाप का साधन अनहद शब्द है और इसके प्रकट होने पर आत्मा परमात्मा का रस प्राप्त करती है:

अनहत वाजे वजह घर मह पर संग सेज विछाई॥
बिनवंत नानक सहज रहै हर मिलिआ कंत सुखदाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 247-48

गुरुमुख होकर ही अनहद शब्द सुना जा सकता है, यह मनमुख का काम नहीं:

तिन करतै इक चलत उपाइआ॥ अनहद बाणी सबद सुणाइआ॥
मनमुख भूले गुरमुख बुझाइआ॥ कारण करता करदा आइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1154

अनहद के अभ्यास द्वारा पाप, मैल व सब ताप दूर होते हैं, जन्म-जन्मांतरों के दुःखों से निवृत्ति होकर आनंद और सुख की प्राप्ति होती है। भ्रम और भय का नाश होता है, अपूर्व आनंद की स्थिति होती है तथा निजघर में वास मिलता है। महात्माओं की रूहें पिंड को छोड़कर शब्द में लीन रहती हैं। अनहद मालिक का प्रसाद है, धुर के लेख होने पर गुरु के द्वारा इसकी प्राप्ति होती है। इस बारे में पाठकजन आगे दिए गए आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के प्रमाणों में पढ़ें।

ੴ

गुरवाणी

1. कुलमालिक सारी रचना का राजा है, वहाँ अनहद शब्द गुप्त है

सरब थान को राजा॥ तह अनहद सबद अगाजा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 621

2. मालिके-कुल की रूप-रेखा कुछ नहीं, वह अनहद शब्द के रूप में प्रकट होता है और उसके अंदर धुन है

करम करतूत बेल बिसथारी राम नाम फल हूआ॥
तिस रूप न रेख अनाहद वाजै सबद निरंजन कीआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 351

खसटी खट दरसन प्रभ साजे॥ अनहद सबद निराला वाजे॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 839

कैसी आरती होए भव खंडना तेरी आरती॥ अनहता सबद वाजंत भेरी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.663

अबरन बरन सिउ मन ही प्रीत॥ हउमै गावन गावह गीत॥
अनहद सबद होत झुनकार॥ जिह पउढ़े प्रभ स्री गोपाल॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.1162

पूरे गुर ते महल पाइआ पत परगट लोई॥
नानक अनहद धुन दर वजदे मिलिआ हर सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1248

धुन वाजे अनहद घोरा॥ मन मानिआ हर रस मोरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.879

बाजे अनहद बाजा॥ रसक रसक गुण गावह हर जन अपनै गुरदेव निवाजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.892

जिन कउ क्रिपा करी सुखदाते॥ तिन साधू चरण लै रिदै पराते॥
सगल नाम निधान तिन पाइआ अनहद सबद मन वाजंगा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1083

पंच सखी मिल मंगल गाइआ॥ अनहद बाणी नाद वजाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.375

चेत अचेत मूड़ मन मेरे बाजे अनहद बाजा॥
कहे कबीर संसा भ्रम चूको ध्रू प्रहिलाद निवाजा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.856

तिन करतै इक चलत उपाइआ॥ अनहद बाणी सबद सुणाइआ॥
मनमुख भूले गुरमुख बुझाइआ॥ कारण करता करदा आइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1154

दर वाजह अनहत वाजे राम॥ घट घट हर गोबिंद गाजे राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.578

सतसंगत साध पाई वडभागी मन चलतौ भइओ अरूड़ा॥
अनहत धुन वाजह नित वाजे हर अंम्रित धार रस लीड़ा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 698

अनहद धुनी सद वजदे उनमन हर लिव लाए॥
नानक हर भगति तिना कै मन वसै जिन मसतक लिखिआ धुर पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 91

गुरमुखा नो पंथ परगटा दर ठाक न कोई पाए॥
हर नाम सलाहन नाम मन नाम रहन लिव लाए॥
अनहद धुनी दर वजदे दर सचै सोभा पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 42

भाग सुलखणा हर कंत हमारा राम॥
अनहद बाजित्रा तिस धुन दरबारा राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 846

जनम जनम के दूख निवारे॥ अनहद सबद वजे दरबारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1137

देव सथानै किआ नीसाणी॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

3. अनहद शब्द सच का मंगल गाता है

अनहत सबद सुहावा॥ सच मंगल हर जस गावा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 778

4. अनहद शब्द अखंड और भरपूर है

अनहद सबद वजै दिन राती॥ अविगत की गति गुरमुख जाती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 904

निरभउ कै घर बजावह तूर॥ अनहद बजह सदा भरपूर॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 971

5. अनहद प्रभु का उद्‌गीथ है

सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा अनहद धुनीऐ सोहिलड़ा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.924

6. उसके अंदर ज्योति है जिसमें से शब्द निकलता है

जह झिल मिल कार दिसंता॥ तह अनहद सबद वजंता॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ.657

जह अनहत सूर उज्यारा॥ तह दीपक जलै छंछारा॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ.657

अनहद वाजे धुन वजदे गुर सबद सुणीजै॥
तित घट अंतर चानणा कर भगति मिलीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.954

सहज गुफा मह आसण बाधिआ॥ जोत सरूप अनाहद वाजिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.370

प्रगटिओ जोत सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी॥
कहो नानक निहचल घर बाधिओ गुर कीओ बंधानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.672

7. मालिक से मिलने का साधन अनहद शब्द है

बीणा सबद वजावै जोगी दरसन रूप अपारा॥
सबद अनाहद सो सहु राता नानक कहै विचारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.351

अनहत बाणी गुर सबद जाणी हर नाम हर रस भोगो॥
कहै नानक प्रभ आप मिलिआ करण कारण जोगो॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.921-22

अनहत वाजे वजह घर मह पिर संग सेज विछाई॥
बिनवंत नानक सहज रहै हर मिलिआ कंत सुखदाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.247-48

हर हरे हर गुण गावहो हर गुरमुखे पाए राम॥
अनदिनो सबद रवहो अनहद सबद वजाए राम॥
अनहद सबद वजाए हर जीउ घर आए हर गुण गावहो नारी॥
अनदिन भगति करह गुर आगै सा धन कंत पिआरी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 770

8. अनहद शब्द प्रभु की दात है, जिसके लिए धुर से लिखा है उसे ही मिलता है

अनहद धुन वाजह नित वाजे गाई सतगुर बाणी॥
नानक दात करी प्रभ दातै जोती जोत समाणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

अनहद धुनी सद वजदे उनमन हर लिव लाए॥
नानक हर भगति तिना कै मन वसै जिन मसतक लिखिआ धुर पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 91

9. अनहद शब्द अंतर-गगन में है

रहै गगन पुर द्रिसटि समैसर अनहत सबद रंगीणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 907

गुर का सबद मेरै अंतर धिआन॥ हउ कबहु न छोडउ हर का नाम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1154

10. नौ द्वार बंद करने पर वह दसवें द्वार में मिलता है

नउ दर ठाके धावत रहाए॥ दसवै निज घर वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद वजह दिन राती गुरमती सबद सुणावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

मूंद लीए दरवाजे॥ बाजीअले अनहद बाजे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 656

नउ सर सुभर दसवै पूरे॥ तह अनहत सुंन वजावह तूरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 943

अदिसट अगोचर पारब्रहम मिल साधू अकथ कथाइआ था॥
अनहद सबद दसम दुआर वजिओ तह अंम्रित नाम चुआइआ था॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1002

अंम्रित रस सतगुरू चुआइआ॥ दसवै दुआर प्रगट होए आइआ॥
तह अनहद सबद वजह धुन बाणी सहजे सहज समाई है॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069

सहज गुफा मह आसण बाधिआ॥ जोत सरूप अनाहद वाजिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 370

11. अनहद शब्द की कमाई ही ज्ञान-ध्यान है

गिआन धिआन पूरन परमेसुर हर हर कथा नित सुणीऐ राम॥
अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीऐ राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 783

12. अनहद शब्द गुरु से प्राप्त होता है

अनहद सबद अचरज बिसमाद॥ गुर पूरा पूरा परसाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

नाम न विसरै संत प्रसाद॥ नाम लैत अनहद पूरे नाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1144

मुइआ जित घर जाईऐ तित जीवदिआ मर मार॥
अनहद सबद सुहावणे पाईऐ गुर वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

बाजे अनहद बाजा॥ रसक रसक गुण गावह हर जन अपनै गुरदेव निवाजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 892

पूरे गुर ते महल पाइआ पत परगट लोई॥
नानक अनहद धुनी दर वजदे मिलिआ हर सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248

अनहद वाजे धुन वजदे गुर सबद सुणीजै॥
तित घट अंतर चानणा कर भगति मिलीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

कहो नानक जिस सतगुर पूरा॥ वाजे ता कै अनहद तूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

सतगुरू सेवे सो फल पाए॥
हिरदै नाम विचहो आप गवाए॥ अनहद बाणी सबद वजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231

13. गुरुमुख ही अनहद शब्द बजाता है

तिन करतै इक चलत उपाइआ॥ अनहद बाणी सबद सुणाइआ॥
मनमुख भूले गुरमुख बुझाइआ॥ कारण करता करदा आइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1154

गुरमुख लेहो मिलाए जन पावै नाम हर॥
अनहद सबद वजाए जोती जोत धर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 790

गुरमुख एको एक पछाता गुरमुख होए लखावैगो॥
गुरमुख जाए मिलै निज महली अनहद सबद बजावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

अनहद सबद वजै दिन राती॥ अविगत की गति गुरमुख जाती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 904

14. फल

14.1. अनहद के अंदर रस है जिसका वर्णन नहीं हो सकता

अनिक अनाहद आनंद झुनकार॥ उआ रस का कछु अंत न पार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1236

14.2. अनहद शब्द मन को मोह लेता है; मन को टिकाकर लीन करता है और शांति तथा शीतलता प्रदान करता है

वाजै अनहद मेरा मन लीणा॥ गुर बचनी सच नाम पतीणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 903

सतगुर कै जनमे गवन मिटाइआ॥ अनहत राते इह मन लाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.940

अनहदो अनहद वाजै रुण झुणकारे राम॥
मेरा मनो मेरा मन राता लाल पिआरे राम॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.436

अनहद सुण मानिआ सबद वीचारी॥ आतम चीन्ह भए निरंकारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.415

माई री पेख रही बिसमाद॥
अनहद धुनी मेरा मन मोहिओ अचरज ता के स्वाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1226

गुरबाणी सुनत मेरा मन द्रविआ मन भीना निज घर आवैगो॥
तह अनहत धुनी बाजह नित बाजे नीझर धार चुआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1308

अनहत लाला बेधिआ प्रभ हेत पिआरी॥
बिन साचे जीउ जल बलउ झूठे वेकारी॥
बाद कारा सभ छोडीआ साची तर तारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1011

द्रिसटि भई तब भीतर आइओ मेरा मन अनदिन सीतलागिओ॥
कहो नानक रस मंगल गाए सबद अनाहद बाजिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1204

तपत बुझी सीतल आघाने सुन अनहद बिसम भए बिसमाद॥
अनद भइआ नानक मन साचा पूरन पूरे नाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1217-18

14.3. सब पाप, मैल और ताप दूर हो जाते हैं

अनहद झुणकारे तत बीचारे संत गोसट नित होवै॥
हर नाम अराधह मैल सभ काटह किलविख सगले खोवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.783

ताप गवाइआ गुर पूरे॥ वाजे अनहद तूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 626

14.4. जन्म-जन्म के दु:ख दूर हो जाते हैं और आनंद की प्राप्ति होती है

रसना नाम करन सुण जीवे॥ प्रभ सिमर सिमर अमर थिर थीवे॥
जनम जनम के दूख निवारे॥ अनहद सबद वजे दरबारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1137

सिमरत एक अचुत अबिनासी बिनसे माइआ माद॥
सहज अनद अनहद धुन बाणी बहुर न भए बिखाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1224

धुर करम पाइआ तुध जिन कउ से नाम हर कै लागे॥
कहै नानक तह सुख होआ तित घर अनहद वाजे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

राम नाम पिआरे सभ कुल उधारे राम नाम मुख बाणी॥
आवण जाण रहे सुख पाइआ घर अनहद सुरत समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 772

14.5. भ्रम और भय का नाश होता है

अनहद वाजै भ्रम भउ भाजै॥ सगल बिआप रहिआ प्रभ छाजै॥
सभ तेरी तू गुरमुख जाता दर सोहै गुण गाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

14.6. निजघर वास होता है

सतगुर सेवह सदा मन दासा॥ हउमै मार कमल परगासा॥
अनहद वाजै निज घर वासा॥ नाम रते घर माहे उदासा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 161

14.7. अपूर्व आनंद की हालत होती है

अनहद सबद अचरज बिसमाद॥ गुर पूरा पूरा परसाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

पंच सबद तह पूरन नाद॥ अनहद बाजे अचरज बिसमाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 888

तपत बुझी सीतल आघाने सुन अनहद बिसम भए बिसमाद॥
अनद भइआ नानक मन साचा पूरन पूरे नाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1217–18

14.8. महात्माओं की आत्माएँ पिंड को छोड़कर शब्द में रम जाती हैं

पिंड मूऐ जीउ किह घर जाता॥ सबद अतीत अनाहद राता॥

कबीर साहिब, पृ. 327

नानक आद अंगद अमर सतगुर सबद समाइअउ॥
धन धंन गुरू रामदास गुर जिन पारस परस मिलाइअउ॥

गुरु अर्जुन देव, पृ. 1407

पंच शब्द

अनहद अनेक हैं, वे गुरु के द्वारा अंतर में प्रकट होते हैं:

> अनिक अनाहद आनंद झुनकार॥ उआ रस का कछु अंत न पार॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1236

भाई गुरदास जी कहते हैं:

> अनहद नाद असंख सुणि होए हैराणै।
>
> वारां भाई गुरदास, 13:4

उन अनेक अनहद शब्दों में पाँच शब्द प्रामाणिक हैं। गुरवाणी में इन्हीं पाँच शब्दों का उपदेश है:

> पंचे सबद वजे मत गुरमत वडभागी अनहद वजिआ॥
>
> गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1315

> पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी॥
> कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी॥
>
> कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1350

> पंच सबद निरमाइल बाजे॥ ढुलके चवर संख घन गाजे॥
>
> बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

गुरवाणी में उस मालिक को पंचशब्दी भी कहा है:

> वीवाह होआ सोभ सेती पंच सबदी आइआ॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 765

पंच शब्द मालिक से उत्पन्न हुए हैं तथा वे उससे मिलने के साधन हैं:

पंचा का गुर एक धिआन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.3

भाई गुरदास जी बतलाते हैं कि पंच तत्त्वों * को पार करने के पश्चात ये पाँच शब्द सुनाई देते हैं:

पंजे तत्त उलंघिआ पंजि सबद वजी वाधाई।

वारां भाई गुरदास, 29:6

पर इन पाँच शब्दों को कोई गुरुमुख ही सुरत के द्वारा सुनता है तथा इनके सहारे वह प्रभु से जा मिलता है:

गुरमुखि सुनणा सुरति करि पंच सबदु गुर सबदि अलापै।

वारां भाई गुरदास 6:18

पंचाइण परमेसरो पंच सबद घनघोर नीसाणा।

वारां भाई गुरदास 7:5

सब संतों का पाँच शब्दों का ही उपदेश रहा है। शम्स तब्रेज़ इन पाँच शब्दों का वर्णन पाँच नौबतें कहकर करते हैं:

ख़ामोश ओ पंज नौबत बिशनौ ज़ि आसमाने,
क-आँ आसमाने-बैरूँ ज़ां हफ़्त ओ ईं शश आमद।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ.138

अर्थ: चुप होकर, आसमान से जो पाँच नौबतें (शब्द) आ रही हैं, उनको सुन। वह आसमान छः चक्रों और सातवें आसमान से परे है।

शम्स तब्रेज़ का भी पाँच शब्दों का यही उपदेश रहा है, फ़रमाते हैं:

हर रोज़े पंज नौबत बर दरे-ऊ, हमीं कोबंद कौसे-किब्रयाई।
अगर उफ़्तद-बिगोश्त सौते-आँ कौस, किब्र और अज़ हसद या-बे रहाई।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ.405

* अप तेज वाए प्रिथमी आकासा॥ ऐसी रहत रहउ हर पासा॥ (कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.327)
अप तेज वाए प्रिथमी आकासा॥ (गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1031)

अर्थ: हर रोज़ मालिक के दर पर पाँच नौबतें उसकी तारीफ़ का नक़्क़ारा (नगाड़ा) बजाती हैं, अगर उस नक़्क़ारे की आवाज़ हमारे कानों में पड़ जाए तो ख़ुदी और ईर्ष्या से छुटकारा हो जाए।

फिर वे कहते हैं कि अगर यह जीव छः चक्रों से अपना डेरा उठा ले और सातवें आसमान पर आ जाए तो ये पाँच नौबतें उस स्थान पर बजती हुई मिलेंगी।

ब-हफ़्तम चर्ख़ नौबत पंज दारी, चू ख़ैमा ज़ि शश जहत बरकंदा बाशी।

कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 824

यह शब्द असल में एक ही है। जैसे-जैसे रचना के विस्तार द्वारा मन-माया की मिलावट बढ़ती जाती है और यह शब्द निर्मल चेतन, महाकारण, कारण, सूक्ष्म और स्थूल मंडलों को बनाता हुआ, इन मंडलों को पार करता है, वैसे ही उसकी ध्वनि (आवाज़) बदलती जाती है। रचना में विशेष रूप से पाँच मंडल होने के कारण यह एक शब्द भी पाँच तरह का प्रतीत होता है। त्रिकुटी तक दो शब्द और सतलोक से नीचे (त्रिकुटी से ऊपर) तक दो शब्द तथा सतलोक में पाँचवाँ शब्द होता है–ये पाँचों शब्द सतलोक में जाकर पूर्ण हो जाते हैं। सतगुरु से इनका भेद लेकर कमाई करने से आत्मा अंतर में चढ़ाई करती हुई पंच शब्दी यानी इन पंच शब्दों के मालिक से जिससे ये निकले हैं, जा मिलती है। गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं:

गुर परसादी पिरम कसाई॥ मिलउगी दइआल पंच सबद वजाई॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1128

इन शब्दों तथा और दूसरे शब्दों के विवरण के लिए 'अंदर के बाजे' का प्रकरण पढ़ें, जिसमें गुरवाणी के प्रमाण दिए गए हैं।

इन पाँच शब्दों में ध्वनि है और यह हर मनुष्य के अंदर हो रही है, जो सुरत को इस ध्वनि के अंदर समेटकर गगन मंडल पर चढ़ता है, उसे ये पाँच शब्द मिलते हैं:

जित ग्रिह गुन गावते हर के गुन गावते राम गुन गावते
तित ग्रिह वाजे पंच सबद वड भाग मथोरा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1201

गुरवाणी बताती है कि इन शब्दों की ध्वनि मस्तक पर प्रकट होती है:

पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई॥
तेरे दुआरै धुन सहज की माथै मेरे दगाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 970

मस्तक में भी कहाँ पर? दोनों भ्रकुटियों के मध्य में जो सुषुम्ना नाड़ी है, उसके द्वारा यह ध्वनि सुनाई देती है:

सुखमन कै घर राग सुन सुंन मंडल लिव लाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

मुसलमान वलियों और दरवेशों ने इस स्थान का फ़ारसी में मेहराब कहकर वर्णन किया है। इसका शाहरग कहकर भी वर्णन किया गया है। ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी लिखते हैं:

दर नमाज़म ख़मे-अबरूए तू चूं याद आमद,
हालते हस्त किह् मिहराब ब फ़रयाद आमद।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 159

अर्थ: हे प्रीतम, मुर्शिद (सतगुरु) प्यारे! जब भजन-सिमरन के समय तेरे स्वरूप का ध्यान जमाया, तो क्या हुआ कि मेरे (मस्तक के) मेहराब के बीच गर्जन होने लगा।

अल्लाह शाह रग तों नज़दीक

बुल्लेशाह

नहनु अक़्रबु इलेही मिन हवल अल-वरीद।

क़ुरान शरीफ़ 50:16

अर्थ: हम शाहरग से नज़दीक़ हैं।

शब्द की कमाई करनेवाले जिज्ञासु को इन बाजों यानी नादों से यह लाभ होता है कि सतगुरु की शिक्षानुसार उसको एक तो सच की प्रतीति होती है और दूसरे वह बाजों की आवाज़ों को पहचानकर पता लगा लेता है कि यह अमुक स्थान या मंडल है। ये सड़क पर मील के पत्थरों के समान हैं जो राही को भूलने-भटकने नहीं देते। शब्द के अधिक विस्तार के लिए 'शब्द' का प्रकरण देखें।

पंच शब्द का मार्ग शब्द-अभ्यासी, शब्द-स्वरूपी गुरु से मिलता है, यह गुरुमत पर निर्भर है:

पंचे सबद वजे मत गुरमत वडभागी अनहद वजिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1315

कहाँ-कहाँ पर कौन-कौन-सा नाद सुनाई देता है, यह संत-सतगुरु नामदान देते समय शिष्य को स्पष्ट रूप में विस्तार के साथ समझा देते हैं। इसके बाद शिष्य कमाई करके ज्यों-ज्यों चढ़ाई करता है, अपनी आंतरिक आँख द्वारा स्वयं देखता चला जाता है।

बड़े भाग हों तो इस शरीररूपी घर में पंच शब्द सुनाई देते हैं और ऐसा शरीर भाग्यवान है:

वाजे पंच सबद तित घर सभागै॥
घर सभागै सबद वाजे कला जित घर धारीआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

ये पंच शब्द उसको सुनाई देते हैं जिसको प्रभु आप सुनाए, यह जीव के वश की बात नहीं:

पंच सबद झुणकार निरालम प्रभ आपे वाए सुणाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

ये पंच शब्द अखंड, पूर्ण और भरपूर हैं:

पंजे सबद अभंग अनहद केलिआ॥

वारां भाई गुरदास, 3:16

पंच सबद तह पूरन नाद॥ अनहद बाजे अचरज बिसमाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 888

अनहद बजह सदा भरपूर॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 971

ये पाँचों शब्द मिलकर एक ही पूर्ण शब्द बन जाते हैं। इस पूर्ण शब्द के द्वारा मन वश में आ जाता है, तीनों गुण मिट जाते हैं और जीव जन्म-मरण से रहित होकर पूर्ण आनंद प्राप्त करता है:

सबद सुरति लिव साध संगि पंच सबद इक सबद मिलाए।

वारां भाई गुरदास, 6:10

एक सबद मेरै प्रान बसत है बाहुड़ जनम न आवा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 795

सदा अनंद रहै दिन राती एक सबद लिव लाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1265

साखा तीन निवारीआ एक सबद लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

जिन्होंने एक शब्द के साथ अपनी लिव लगा ली है, वे धन्य हैं:

नानक तिन कै सद बलिहारी जिन एक सबद लिव लाई।

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 879

आगे आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के कुछ प्रमाण दिए गए हैं:

गुरवाणी

1. पंच शब्द पूर्ण नाद है

पंच सबद तह पूरन नाद॥ अनहद बाजे अचरज बिसमाद॥
केल करह संत हर लोग॥ पारब्रहम पूरन निरजोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 888

2. पाँचों शब्दों में धुन है

पंच सबद निरमाइल बाजे॥ ढुलके चवर संख घन गाजे॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

सचा अमर सबद सुहाइआ॥ पंच सबद मिल वाजा वाइआ॥
सदा कारज सच नाम सुहेला बिन सबदै कारज केहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057-58

पंच सखी मिल मंगल गाइआ॥ अनहद बाणी नाद वजाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 375

3. मनुष्य के अंदर गगन पर पाँच शब्द बजते हैं

इह भवजल जगत सबद गुर तरीऐ॥ अंतर की दुबिधा अंतर जरीऐ॥
पंच बाण ले जम कउ मारै गगनंतर धणख चड़ाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042

4. वह घट (शरीर) भाग्यवान है जिसके अंदर पंच शब्द बजते हों

वाजे पंच सबद तित घर सभागै॥
घर सभागै सबद वाजे कला जित घर धारीआ॥
पंच दूत तुध वस कीते काल कंटक मारिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

5. प्रभु पंच शब्द सुनवाता है

ना मन चलै न पउण उडावै॥ जोगी सबद अनाहद वावै॥
पंच सबद झुणकार निरालम प्रभ आपे वाए सुणाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

6. पंच शब्द के सहारे मालिक से मिलाप होता है

सभ सखीआ पंचे मिले गुरमुख निज घर वास॥
सबद खोज इह घर लहै नानक ता का दास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

गुर परसादी पिरम कसाई॥ मिलउगी दइआल पंच सबद वजाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1128

अनदिन मेल भइआ मन मानिआ घर मंदर सोहाए॥
पंच सबद धुन अनहद वाजे हम घर साजन आए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 764

प्रभ मसतके धुर लीखिआ गुरमती हर लिव लाइओ॥
पंच सबद दरगह बाजिआ हर मिलिओ मंगल गाइओ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 985

पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी॥
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1350

7. पंच शब्द का मार्ग पूरे गुरु से मिलता है

घर मह घर देखाए दे सो सतगुर पुरख सुजाण॥
पंच सबद धुनिकार धुन तह बाजै सबद नीसाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

पंचे सबद वजे मत गुरमत वडभागी अनहद वजिआ॥
आनद मूल राम सभ देखिआ गुर सबदी गोविद गजिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1315

8. सब पाप, रोग, दोष, काम-क्रोध आदि दूर हो जाते हैं

जित ग्रिह गुन गावते हर के गुन गावते राम गुन गावते
तित ग्रिह वाजे पंच सबद वड भाग मथोरा॥
तिन्ह जन के सभ पाप गए सभ दोख गए सभ रोग गए
काम क्रोध लोभ मोह अभिमान गए तिन्ह जन के हर मार कढे पंच चोरा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1201

काम क्रोध अहंकार निवारे॥ तसकर पंच सबद संघारे॥
गिआन खड़ग लै मन सिउ लूझै मनसा मनह समाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1022

अलिपत गुफा मह रहहे निरारे॥ तसकर पंच सबद संघारे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 904

9. जीव यम को मार लेता है

इह भवजल जगत सबद गुर तरीऐ॥ अंतर की दुबिधा अंतर जरीऐ॥
पंच बाण ले जम कउ मारै गगनंतर धणख चड़ाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042

अंदर के बाजे

मालिक शब्द स्वरूप है, उसके दर पर हमेशा अनेक अनहद नाद बज रहे हैं:

भाग सुलखणा हर कंत हमारा राम॥ अनहद बाजित्रा तिस धुन दरबारा राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 846

शब्द के द्वारा रचना का निर्माण हुआ, जिसके कई मंडल हैं। इन मंडलों के अंदर अपने-अपने विशेष शब्द सुनाई देते हैं, इनका विवरण सब संतों ने दिया है, गुरवाणी में भी इनका विशेष तौर पर उल्लेख मिलता है।

हम देखते हैं कि हिंदुओं के मंदिरों में घंटा बजाया जाता है, ईसाइयों के गिरजों के अंदर भी घंटा बजता है, सिक्खों के पुरातन गुरुद्वारों में घंटे और शंख बजाए जाते थे और अब भी नगारे बजाए जाते हैं। खोज करने से पता चलता है कि बाहर के घंटे, शंख आदि अंदर की आवाज़ों की नक़ल हैं। ग़ौर से विचार करो, हिंदुओं के मंदिरों की बनावट गुंबददार है जिसके बीच में घंटा लटका होता है तथा जो व्यक्ति मंदिर के अंदर जाता है वह उसको बजाता है। मनुष्य-शरीर के सिर के अंदर, जो गुंबद की शक्ल का है, रूह के मुक़ाम पर अभ्यासी को शब्द सुनाई देता है। इसी प्रकार ईसाइयों के गिरजों की शक्ल लंबाकार है जिसके पिछले भाग पर घंटा बजता है। यह भी मनुष्य की नाक की शक्ल पर है, नाक के अगले हिस्से पर, दोनों भौंहों के बीच में रूह के सिमट जाने पर घंटे का शब्द सुनाई देता है। ख़्वाजा हाफ़िज़ जो कि ईरान में हुए हैं, इस घंटे का ज़िक्र करते हैं:

कस न-दानिस्त किह् मंज़िल-गहे मअशूक़ कुजास्त,
ई क़दर हस्त किह् बांगे-जरसे मी आयद।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 200

अर्थ: कोई नहीं जानता कि मेरे प्यारे की मंज़िल कहाँ है। इतना कहना ही काफ़ी है कि वहाँ से घंटे की आवाज़ आ रही है। गुरवाणी भी बताती है:

घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

बौद्ध मंदिरों में घंटे होते हैं। घंटे के बजने का वर्णन सब मत-मतांतरों में समान रूप से मिलता है। तात्पर्य यही है कि अभ्यासियों को अंदर जाने या शरीररूपी हरि मंदिर में प्रवेश करने पर जो शब्द की ध्वनि सुनाई देती है वह घंटे की आवाज़ के समान है। इसी प्रकार आंतरिक मंडलों पर अनेक शब्द सुनाई देते हैं, जिनमें पाँच शब्द प्रधान हैं (देखें: 'पंच शब्द' प्रकरण)। इन आंतरिक बाजों की धुनों का आपस में संबंध है। किसी शब्दमार्गी गुरु से इनका नियमानुसार उपदेश लेकर कमाई करने से रूह उस मुक़ाम पर पहुँच सकती है, जहाँ से निज शब्द की धुन उठी है और जो कुलमालिक का धाम है। ये बाजों की आवाज़ें मानो पति के देश जाने के मार्ग पर लगे मीलों के निशान हैं, जो बताते हैं कि हम कहाँ पहुँच गए हैं।

भाई गुरदास जी की वारों और कबित्त-सवैयों में भी इन अंदर के बाजों का वर्णन आया है:

सिंङी सुरति विसेखु सबदु वजाइआ।

वारां भाई गुरदास, 20:17

वजनि अनहद तूर जोति जगावणा॥

वारां भाई गुरदास, 22:13

माया औ ब्रह्म सम दसम दुआर पार,
अनहद रुण झुण बाजत निसाने है।

कबित्त-सवैये, 29

सहज समाधि उन्मन जगमग जोति, अनहद धुनि रुणझुण लिव लाईऐ।

कबित्त-सवैये, 222

ख़्वाजा हाफ़िज़ ने भी इन अंदर के बाजों का ज़िक्र किया है। आप फ़रमाते हैं:

बिशनौ किह् मुतरबाने-चमन रास्त करदा अन्द,
आहंगे-चंग ओ बरबत ओ तंबूर ओ नाए ओ नै।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 406

अर्थ: तू सुन! संतजन आहंग, चंग, बरबत, तंबूरे, बाँसुरियाँ, सब अच्छी तरह से सुना रहे हैं। शुरू की, पक्षियों की चीं-चीं की ध्वनि से लेकर चंग, तंबूरा, मुरली और बाँसुरी आदि सबका ज़िक्र कर दिया है।

इन आंतरिक बाजों की धुनें सुनने से आत्मा की उन्नति होती है। इनका भेद गुरु से मिलता है और शिष्य गुरुमुख बनकर इनके द्वारा अपने निजघर को प्राप्त करता है। गुरवाणी में इन बाजों की धुनों का वर्णन मिलता है, इसके प्रमाण आदि ग्रन्थ से आगे दिए गए हैं, पाठकजन ध्यानपूर्वक विचार करें।

गुरवाणी

1. मालिक के दर पर धुन और अनहद नाद बजते हैं

हर नाम सलाहन नाम मन नाम रहन लिव लाए॥
अनहद धुनी दर वजदे दर सचै सोभा पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 42

अनहद धुनी सद वजदे उनमन हर लिव लाए॥
नानक हर भगति तिना कै मन वसै जिन मसतक लिखिआ धुर पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 91

भाग सुलखणा हर कंत हमारा राम॥ अनहद बाजित्रा तिस धुन दरबारा राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 846

सो दर तेरा केहा सो घर केहा जित बह सरब सम्हाले॥
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअह केते तेरे गावणहारे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 347

देव सथानै किआ नीसाणी॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी॥
तह चंद न सूरज पउण न पाणी॥ साखी जागी गुरमुख जाणी॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

तह गीत नाद अखारे संगा॥ ऊहा संत करह हर रंगा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 739

2. वह धुन मस्तक पर प्रकट होती है

पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई॥
तेरे दुआरै धुन सहज की माथै मेरे दगाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 970

कर कर ताल पखावज नैनहो माथै वजह रबावा॥
करनहो मधु बासुरी बाजै जिहवा धुन आगाजा॥
निरत करे कर मनूआ नाचै आणे घूघर साजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884

3. अनहद शब्द में अनेक प्रकार की धुनें दर्जे-ब-दर्जे सुनाई देती हैं

3.1. घुँघरू

घुंघरू वाजै जे मन लागै। तउ जम कहा करे मो सिउ आगै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 356

नारदी नरहर जाण हदूरे॥ घूंघर खड़क तिआग विसूरे॥
सहज अनंद दिखावै भावै॥ एह निरतिकारी जनम न आवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 885

3.2. घंटा

घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट॥ आसन जा का सदा बैकुंठ॥
जा का चवर सभ ऊपर झूलै॥ ता का धूप सदा परफुलै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

3.3. शंख

पंच सबद निरमाइल बाजे॥ ढुलके चवर संख घन गाजे॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

3.4. तबला, मृदंग और रबाब

तेरा जन निरत करे गुन गावै॥ रबाब पखावज ताल घुंगरू अनहद सबद वजावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 381

गुर मनार प्रिअ दइआर सिउ रंग कीआ॥
कीनो री सगल सींगार॥ तजिओ री सगल बिकार॥

धावतो असथिर थीआ॥
ऐसे रे मन पाए कै आप गवाए कै कर साधन सिउ संग॥
बाजे बजह म्रिदंग अनाहद कोकिल री
राम नाम बोलै मधुर बैन अत सुहीआ॥
ऐसी तेरे दरसन की सोभ अत अपार
प्रिअ अमोघ तैसे ही संग संत बने॥
भव उतार नाम भने॥ रम राम राम माल॥
मन फेरते हर संग संगीआ॥ जन नानक प्रिउ प्रीतम थीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1271-72

३.5. सिंगी

सुरत सबद साखी मेरी सिंङी बाजै लोक सुणे॥
पत झोली मंगण कै ताई भीखिआ नाम पड़े॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 877

सिव नगरी मह आसण बैसउ कलप तिआगी बादं॥
सिंङी सबद सदा धुन सोहै अहिनिस पूरै नादं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 360

चल चित जोगी आसण तेरा॥ सिंङी वाजै नित उदासेरा॥
गुर गोरख की तै बूझ न पाई॥ फिर फिर जोगी आवै जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886

मनसा मार मनै मह राखै सतगुर सबद वीचारी॥
सिंङी सुरत अनाहद वाजै घट घट जोत तुमारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 907

नानक जीवतिआ मर रहीऐ ऐसा जोग कमाईऐ॥
वाजे बाझहो सिंङी वाजै तउ निरभउ पद पाईऐ॥
अंजन माहे निरंजन रहीऐ जोग जुगत तउ पाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 730

सत संतोख पत कर झोली जोगी अंम्रित नाम भुगत पाई॥
धिआन का कर डंडा जोगी सिंङी सुरत वजाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

आपे सिंङी नाद है पिआरा धुन आप वजाए आपै॥
आपे जोगी पुरख है पिआरा आपे ही तप तापै॥
आपे सतगुर आप है चेला उपदेस करै प्रभ आपै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.605

खंड ब्रहमंड मह सिंङी मेरा बटूआ सभ जग भसमाधारी॥
ताड़ी लागी त्रिपल पलटीऐ छूटै होए पसारी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.334

जह भउ नाही तहा आसन बाधिओ सिंगी अनहत बानी॥
तत बीचार डंडा कर राखिओ जुगत नाम मन भानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.208

बुध बिभूत चढावउ अपुनी सिंगी सुरत मिलाई॥
कर बैराग फिरउ तन नगरी मन की किंगुरी बजाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.970

भउ भाउ दुए पत लाए जोगी इह सरीर कर डंडी॥
गुरमुख होवह ता तंती वाजै इन बिधि त्रिसना खंडी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.908

3.6. तूर

नउ सर सुभर दसवै पूरे॥ तह अनहत सुंन वजावह तूरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.943

गुरमत राम जपै जन पूरा॥ तित घट अनहत बाजे तूरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.228

सुणते पुनीत कहते पवित सतिगुर रहिआ भरपूरे॥
बिनवंत नानक गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.922

इह मन नाचै सतगुर आगै अनहद सबद धुन तूर वजईआ॥
हर हर उसतत करै दिन राती रख रख चरण हर ताल पूरईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.834-35

गुर पूरा आराधे॥ कारज सगले साधे॥
सगल मनोरथ पूरे॥ बाजे अनहद तूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 629

काज हमारे पूरे सतगुर॥ बाजे अनहद तूरे सतगुर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 887

नउ निध पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे॥
कहो नानक मै वर घर पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 577

भलो समूरत पूरा॥
सांत सहज आनंद नाम जप वाजे अनहद तूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 618

ताप गवाइआ गुर पूरे॥ वाजे अनहद तूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 626

भवजल तरिआ हर हर सिमरिआ सगल मनोरथ पूरे॥
महा बिकार गए सुख उपजे बाजे अनहद तूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 781

कहो नानक जिस सतगुर पूरा॥ वाजे ता कै अनहद तूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

बारस बारह उगवै सूर॥ अहिनिस बाजे अनहद तूर॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 344

निरभउ कै घर बजावह तूर॥ अनहद बजह सदा भरपूर॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 971

घर घर निरत होवै दिन राती घट घट वाजै तूरा॥
एक नचावह एक भवावह इक आए जाए होए धूरा॥
कहो नानक सो बहुर न नाचै जिस गुर भेटै पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884–85

बापार गोविंद नाए॥
साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.408

3.7. रुनझुन शब्द

अनहदो अनहद वाजै रुण झुणकारे राम॥
मेरा मनो मेरा मन राता लाल पिआरे राम॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.436

पसरी किरण जोत उजिआला॥ कर कर देखै आप दइआला॥
अनहद रुण झुणकार सदा धुन निरभउ कै घर वाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1033-34

बंधन तोड़ लीए प्रभ मोले। कर किरपा कीने घर गोले॥
अनहद रुण झुणकार सहज धुन साची कार कमाई हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1072

रुण झुणो सबद अनाहद नित उठ गाईऐ संतन कै॥
किलविख सभ दोख बिनासन हर नाम जपीऐ गुर मंतन कै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.925

सहजे रुण झुणकार सुहाइआ॥ ता कै घर पारब्रहम समाइंआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.237

3.8. किंगरी

घट घट वाजै किंगुरी अनदिन सबद सुभाए॥
विरले कउ सोझी पई गुरमुख मन समझाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.62

सरमै दीआ मुंद्रा कंनी पाए जोगी खिंथा कर तू दइआ॥
आवण जाण बिभूत लाए जोगी ता तीन भवण जिण लइआ॥
ऐसी किंगुरी वजाए जोगी॥
जित किंगुरी अनहद वाजै हर सिउ रहै लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.908

विण वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाए॥
कहै नानक मुकत होवह जोगी साचे रहहे समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 909

बुध विभूत चढावउ अपुनी सिंगी सुरत मिलाई॥
कर बैराग फिरउ तन नगरी मन की किंगुरी बजाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 970

राजा राम अनहद किंगुरी बाजै। जा की दिसटि नाद लिव लागै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 92

मन पवन दुए तूंबा करी है जुग जुग सारद साजी॥
थिर भई तंती तूटस नाही अनहद किंगुरी बाजी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 334-35

चहु मह एकै मट है कीआ॥ तह बिखड़े थान अनिक खिड़कीआ॥
खोजत खोजत दुआरे आइआ॥ ता नानक जोगी महल घर पाइआ॥
इउ किंकुरी आनूप वाजै॥ सुण जोगी कै मन मीठी लागै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886

चार पुकारह ना तू मानह॥ खट भी एका बात वखानह॥
दस असटी मिल एको कहिआ॥ ता भी जोगी भेद न लहिआ॥
किंकुरी अनूप वाजै॥ जोगीआ मतवारो रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886

मोह गइआ बैरागी जोगी घट घट किंगुरी वाई॥
नानक सरण प्रभू की छूटे सतगुर सच सखाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 907

रवि ससि लउके इह तन किंगुरी वाजै सबद निरारी॥
सिव नगरी मह आसण अउधू अलख अगंम अपारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 907

३.९. बाँसुरी

कर कर ताल पखावज नैनहो माथै वजह रबाबा॥
करनहो मधु बासुरी बाजै जिहवा धुन आगाजा॥
निरत करे कर मनूआ नाचै आणे घूघर साजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884

३.10. बीन का शब्द

रहंत जनमं हर दरस लीणा। बाजंत नानक सबद बीणां॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1355

बीणा सबद वजावै जोगी दरसन रूप अपारा॥
सबद अनाहद सो सहु राता नानक कहै विचारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 351

बेन बजावै गोधन चरै॥ नामे का सुआमी आनद करै॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 988

धन धंन ओ राम बेन बाजै॥ मधुर मधुर धुन अनहत गाजै॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 988

बेद पुरान सासत्र आनंता गीत कबित न गावउगो॥
अखंड मंडल निरंकार मह अनहद बेन बजावउगो॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 972-73

आदित करै भगति आरंभ॥ काइआ मंदर मनसा थंभ॥
अहिनिस अखंड सुरही जाए॥ तउ अनहद बेण सहज मह बाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 344

चूकीअले मोह मइआसा॥ ससि कीनो सूर गिरासा॥
जब कुंभक भरिपुर लीणा॥ तह बाजे अनहद बीणा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 972

बेण रसाल वजावै सोई॥ जा की त्रिभवण सोझी होई॥
नानक बूझहो इह बिधि गुरमत हर राम नाम लिव लाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

गुर सबद मेला तां सुहेला बाजंत अनहद बीणा॥
गुर महली घर आपणै सो भरिपुर लीणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 767

हर की प्रेम भगति मन लीना॥ नित बाजे अनहत बीना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 622

तिन्ह नाहे नरक निवास॥ नित सिमर प्रभ गुणतास॥
ते जम न पेखह नैन॥ सुन मोहे अनहत बैन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 837

बाहर के बाजे और नृत्य

बाहर के बाजों का परमार्थ में बहुत रिवाज है, हर एक मत में इनको ख़ास महत्त्व दिया गया है। योगियों में इसका रिवाज है, मुसलमानों में क़व्वाली है और हिंदुओं, सिक्खों, ईसाइयों आदि सभी में इनका विशेष रूप से प्रचलन है। जहाँ कहीं भी साधुओं की मंडली देखी जाती है, वे बाजे आदि का प्रयोग करते दिखाई देते हैं। लोग बाजों के साथ भजन आदि का गायन करते हैं, और उनकी तानों और स्वरों पर मोहित होते हैं, इनसे मन मस्त होता है, पर वह चैतन्य नहीं होता, जागता नहीं:

निरत करे बहु वाजे वजाए॥
इह मन अंधा बोला है किस आख सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

पहली बात तो यह है कि लोगों ने इनको रोज़गार का साधन बना लिया है:

रोटीआ कारण पूरह ताल॥ आप पछाड़ह धरती नाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

घूंघर बाध भए रामदासा रोटीअन के ओपावा॥
बरत नेम करम खट कीने बाहर भेख दिखावा॥
गीत नाद मुख राग अलापे मन नही हर हर गावा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1003

उनके अंतर में लोभ होता है। इसलिए उनका भ्रमजाल नहीं टूटता, न प्रकाश होता है और न ही उनको असलियत का ज्ञान होता है।

दूसरे, गायन करनेवाले गायक आदि बाजों की तानों और स्वरों के निर्माण और उनकी साधना में ही लगे रहते हैं। कई गायकों से पूछने पर पता चलता है कि वे इसी चिंता में रहते हैं कि उनका स्वर और तान न टूटे और वे लोगों को प्रभावित करते रहें। जो भजन या वाणी वे गाते हैं उसके अर्थ की ओर उनका

ध्यान नहीं होता, उनसे तो वाणी का सही उच्चारण भी नहीं होता, वे केवल दिखावे में ही रह जाते हैं:

हथ कर तंत वजावै जोगी थोथर वाजै बेन॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 368

सुननेवाले भी उस वाणी को तभी समझ सकते हैं, जब उन्हें पहले से उसकी कुछ जानकारी हो। नहीं तो वे वाणी को ठीक तौर पर नहीं समझ सकते और तानों और स्वरों में ही रह जाते हैं। संतों ने ऐसी करनी को स्वीकार नहीं किया है; वे बताते हैं कि बाहर के बाजों से असली ध्यान नहीं लगता, सच नहीं मिलता, हौंमैं (अहं) का रोग नहीं जाता और शांति नहीं आती:

इत किंगुरी धिआन न लागै जोगी ना सच पलै पाए॥
इत किंगुरी सांत न आवै जोगी अभिमान न विचहो जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

जितनी देर मनुष्य बाजों आदि की तालों के सँवारने और रागों के स्वरों को साधने में लगाता है और फिर बार-बार उनके मेल मिलाने में जो समय गँवा देता है, यदि उसे वह गुरुमत द्वारा नाम के अभ्यास में लगाए तो कहीं उत्तम है:

कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाब॥
आवत जात बार खिन लागै हउ तब लग समारउ नाम॥...
कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुन उठावै॥
मेलत चुनत खिन पल चसा लागै तब लग मेरा मन राम गुन गावै॥
कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 368

जोश में आकर बाजू ऊपर उठाना, शोर मचाना तथा मन की तरंगों में तन को पछाड़ना और नृत्य करने में लग जाना बाहरमुखी फैलाव है, इनसे वृत्ति अंतर्मुख नहीं जुड़ती। बाहर की आवाज़ फैली हुई सुरत को एकत्रित करने में सहायक है, लेकिन यह दिल को किसी ऐसे स्थान पर ले जाती है जिसका कोई ठौर-ठिकाना नहीं। इसका ऐसा फँदा है जो हमें अपने आप को और परमात्मा को भुला देता है। बीथोवन (Beethoven) ने कहा है कि बाजे का संगीत रूहानी और जिस्मानी ज़िंदगी को मिलानेवाला माध्यम है। लेकिन बाहरी रागों द्वारा हम अपने आप को

एक नई ख़याली दुनिया में फँसे हुए पाते हैं, जिसको बजानेवाला पैदा करता है। इससे दुनिया के साथ मन का लगाव नहीं टूटता और उसकी चेष्टा नहीं जाती। इस पर गुरवाणी ख़ास तौर पर प्रकाश डालती है तथा बतलाती है कि चाहे बाहर की आवाज़ें हमें मोहित करती हैं, आकर्षित करती हैं तथा सारा संसार उनमें मग्न हो जाता है, पर इनसे जीव तीन गुणों में फँसा रहता है तथा उसका जन्म बरबाद हो जाता है। सच्चे कीर्तन (देखें: 'कीर्तन' का प्रकरण) के बिना जीव सदा दुःख सहता है तथा माया की लहरों में सदा ग़ोते खाता रहता है:

वाद पड़ै रागी जग भीजै॥ त्रै गुण बिखिआ जनम मरीजै॥
राम नाम बिन दूख सहीजै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 905

माइआ लहर सबद निवारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1049

इसी लिए संतों ने बाहरी आवाज़ों को सुनने और उनकी मस्ती में नृत्य करने तथा अन्य बाहरमुखी साधनों की इजाज़त नहीं दी है, बल्कि हरि से अंतर्मुख प्रेम को मुख्य रखा है:

किनही घूघर निरत कराई॥ किनहू वरत नेम माला पाई॥
किनही तिलक गोपी चंदन लाइआ॥ मोहे दीन हर हर हर धिआइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 913

मुसलमान फ़क़ीरों ने भी बाहरी रागों व नादों को छोड़कर आंतरिक रूहानी आवाज़ को सुनने पर ज़ोर दिया है जो कलामे-क़दीम यानी आदि-धुन है:

पंबा-ए-वसवास बेरूं कुन ज़ गोश, ता बिगोशत आयद अज़ गरदूं ख़रोश।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 170

अर्थ: कानों से भ्रमों की रूई को निकाल ताकि तेरे कानों में आकाश से आ रहा रूहानी शोर सुनाई दे:

चर्ख़ रा दर ज़ेरे-पा आर ऐ शुजाअ,
बिशनौ अज़ फ़ौक़े-फ़लक बाँग-ए-समाअ।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 190

अर्थ: ऐ बहादुर! तू आसमान (गगन) पर चढ़ ताकि वह तेरे पैरों के नीचे आ जाए, वहाँ तू फ़लक (आकाश) से बाँग की ताल और राग (समाअ) को सुन सकेगा।

हैफ़ दर बंदे-जिस्मे-दरमानी,
नशनवी सौते-पाके-रहमानी।
दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ.90

अर्थ: अफ़सोस! तू जिस्म की क़ैद में बँधा पड़ा है, उस रहमान की पाक (पवित्र) आवाज़ को नहीं सुनता।

भाई गुरदास इस बारे में फ़रमाते हैं कि जब तक 'नाद-बाद' (बाहर के रागों) में फँसे रहोगे, अंदर की सच्ची आवाज़ यानी अनहद धुन प्रकट नहीं होगी:

जौ लौ नाद बाद न अनाहद् बिसेखियै॥
कबित्त-सवैये, 12

बाहर के 'नाद-बाद' या राग-रागनियों को सुनकर जीव हिरन की भाँति अज्ञानता के कारण मस्त होकर पकड़ा जाता है और अंतर्मुखी 'शब्दभेदी' नहीं कहला सकता:

जौ पै नाद बाद सुनि मृग आन ज्ञान राचै,
प्रान सुख ह्वै सबद बेधी न कहावई॥
कबित्त-सवैये, 412

'नाद-बाद' से परे होकर अभ्यासी नाम के अनहद में लवलीन होता है:

नाद-बाद परै अनहत् लिव लावई॥
कबित्त-सवैये, 11

अनहद में 'लिव' (लगन) लगाकर हम त्रिगुणातीत अर्थात् तीन गुणों से पार हो जाते हैं। वह इलाही कीर्तन हमारे सांसारिक बंधनों को तोड़ देता है और हम सच्चे अर्थों में निर्मल हो जाते हैं, कमल और मुरग़ाबी की भाँति संसार के मायामय जल से ऊपर रहते हुए, सूखे परों से उड़ जाते हैं।

गुरबाणी में बाहरी राग-रागनियों का 'बिख बैणी' या 'बिख नाद' कहकर वर्णन किया गया है, जिनसे जीव को माया का ज़हर चढ़ता है:

काल जाल जिहवा अर नैणी॥ कानी काल सुणै बिख बैणी॥
बिन सबदै मूठे दिन रैणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

बिखै नाद करन सुण भीना॥ हर जस सुनत आलस मन कीना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 738

स्पष्ट कहा गया है कि 'राग-नाद' को छोड़कर हरि का स्मरण करो जिससे उसकी दरगाह में मान प्राप्त हो:

राग नाद छोड हर सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मान॥
नानक गुरमुख ब्रहम बीचारीऐ चूकै मन अभिमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 849

'नाद-बाद' (गीत-गान) माया का शोर है, मनमुख उसी में भूले रहते हैं:

किआ मानुख कहहो किआ जोर॥ झूठा माइआ का सभ सोर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 178

इनसे परे नाम की धुनों यानी अनहद शब्द में लगना (देखें: 'नाम' और 'अनहद शब्द' के प्रकरण) गुरुमत है; गायन उसी का सफल है जिसको प्रतीति हो, नहीं तो यह सब उद्यम निष्फल है:

जिस नो परतीत होवै तिस का गाविआ थाए पवै सो पावै दरगह मान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 734

गुरवाणी बतलाती है कि नाम (शब्द) का ताल और नृत्य ही माया-मोह को समाप्त करता है, इसके सिवाय अन्य राग, ताल आदि सब व्यर्थ हैं:

मनूआ नाचै भगति द्रिड़ाए॥ गुर कै सबद मनै मन मिलाए॥
सचा ताल पूरे माइआ मोह चुकाए सबदे निरत करावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 121

गावह गीते चीत अनीते॥ राग सुणाए कहावह बीते॥
बिन नावै मन झूठ अनीते॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

असली बाजे आंतरिक शब्द के हैं जो बग़ैर हाथों-पैरों के बजाए जाते हैं, जो बाहर के बाजों के सातों स्वरों से परे हैं और जिनके द्वारा सच की प्राप्ति होती है:

कर बिन वाजा पग बिन ताला॥ जे सबद बुझै ता सच निहाला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 412

गुरवाणी बतलाती है कि ये अनहद की रबाब* और मृदंग की धुनें और सच्चे नृत्य का पदार्थ, जिनके द्वारा जीव का कल्याण होता है, साधु-संतों के पास से किसी गुरुमुख को मिलता है:

तेरा जन निरत करे गुन गावै॥
रबाब पखावज ताल घुंघरू अनहद सबद वजावै॥...
कर संग साधू चरन पखारै संत धूर तन लावै॥
मन तन अरप धरे गुर आगै सत पदारथ पावै॥
जो जो सुनै पेखै लाए सरधा ता का जनम मरन दुख भागै॥
ऐसी निरत नरक निवारै नानक गुरमुख जागै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 381

कई संत-महात्मा बाहर के कीर्तन का भी प्रयोग करते रहे हैं। परमार्थियों को एकित्रत करने और उपदेश देने के लिए वे उसका उपयोग करते रहे, क्योंकि आवाज़ में प्रबल आकर्षण है (देखें: 'कीर्तन' का प्रकरण)। लेकिन वे इसके द्वारा अंदर के बाजों और कीर्तन की ओर परमार्थियों का ध्यान आकर्षित करते रहे। आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के प्रमाण आगे दिए हैं, पाठक ग़ौर से विचार करें।

गुरवाणी

1. बाहर के बाजों का खंडन

निरत करे बहु वाजे वजाए॥ इह मन अंधा बोला है किस आख सुणाए॥
अंतर लोभ भरम अनल वाउ॥ दीवा बलै न सोझी पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

---

* सारंगी के समान एक प्रकार का बाजा।

घूंघर बाध भए रामदासा रोटीअन के ओपावा॥
बरत नेम करम खट कीने बाहर भेख दिखावा॥
गीत नाद मुख राग अलापे मन नही हर हर गावा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1003

इत किंगुरी धिआन न लागै जोगी ना सच पलै पाए॥
इत किंगुरी सांत न आवै जोगी अभिमान न विचहो जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

हथ कर तंत वजावै जोगी थोथर वाजै बेन॥
गुरमत हर गुण बोलहो जोगी इह मनूआ हर रंग भेन॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 368

कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाब॥
आवत जात बार खिन लागै हउ तब लग समारउ नाम॥

गुरु रामदास आदि ग्रन्थ, पृ. 368

कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुन उठावै॥
मेलत चुनत खिन पल चसा लागै तब लग मेरा मन राम गुन गावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 368

भगति नारदी रिदै न आई काछ कूछ तन दीना॥
राग रागनी डिंभ होए बैठा उन हर पह किआ लीना॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 654

जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुन रूप न होई॥
तागा तंत साज सभ थाका राम नाम बस होई॥
अब मोहे नाचनो न आवै॥ मेरा मन मंदरीआ न बजावै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 483

जनमे कउ वाजह वाधाए॥ सोहिलड़े अगिआनी गाए॥
जो जनमै तिस सरपर मरणा किरत पइआ सिर साहा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1032

2. इन बाजों और रागों से मन नहीं ठहरता, हम त्रिगुणों में ही रहते हैं तथा जन्म-मरण बना रहता है

गावह राग भाति बहु बोलह इह मनूआ खेलै खेल॥
जोवह कूप सिंचन कउ बसुधा उठ बैल गए चर बेल॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 368

वाद पड़ै रागी जग भीजै॥ त्रै गुण बिखिआ जनम मरीजै॥
राम नाम बिन दूख सहीजै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 905

3. बाहरी नृत्य संतों को स्वीकार नहीं

किनही घूघर निरत कराई॥ किनहू वरत नेम माला पाई॥
किनही तिलक गोपी चंदन लाइआ॥ मोहे दीन हर हर हर धिआइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 913

4. नाम (शब्द) के बिना बाहर के राग ताल व्यर्थ हैं

गावह गीते चीत अनीते॥ राग सुणाए कहावह बीते॥
बिन नावै मन झूठ अनीते॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

मनूआ नाचै भगति द्रिड़ाए॥ गुर कै सबद मनै मन मिलाए॥
सचा ताल पूरे माइआ मोह चुकाए सबदे निरत करावणिआ॥
ऊचा कूके तनह पछाड़े॥ माइआ मोह जोहिआ जमकाले॥
माइआ मोह इस मनह नचाए अंतर कपट दुख पावणिआ॥...
बहु ताल पूरे वाजे वजाए॥ न को सुणे न मंन वसाए॥
माइआ कारण पिड़ बंध नाचै दूजै भाए दुख पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 121–22

इक गावत रहे मन साद न पाए॥ हउमै विच गावह बिरथा जाए॥
गावण गावह जिन नाम पिआर॥ साची बाणी सबद बीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 158

5. वह राग उत्तम है जिसके द्वारा मालिक मन में बसे, वह राग व नाद सच का है

सभना रागां विच सो भला भाई जित वसिआ मन आए॥
राग नाद सभ सच है कीमत कही न जाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1423

6. जिसको प्रतीति हो उसी का गायन सार्थक होता है

जिस नो परतीत होवै तिस का गाविआ थाए पवै सो पावै दरगह मान॥
जो बिन परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी अखी मीटदे
उन का उतर जाइगा झूठ गुमान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 734

7. आंतरिक बाजा शब्द का है जो हाथों-पैरों के बग़ैर ही बजता है और जो सब बाजों, स्वरों और तालों से परे है

कर बिन वाजा पग बिन ताला॥ जे सबद बुझै ता सच निहाला॥
अंतर साच सभे सुख नाला॥ नदर करे राखै रखवाला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 412

ओअंकार एक धुन एकै एकै राग अलापै॥
एका देसी एक दिखावै एको रहिआ बिआपै॥
एका सुरत एका ही सेवा एको गुर ते जापै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 885

पंच बजित्र करे संतोखा सात सुरा लै चालै॥
बाजा माण ताण तज ताना पाउ न बीगा घालै॥
फेरी फेर न होवै कब ही एक सबद बंध पालै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 885

8. सच्चा नृत्य नाम का है जो गुरुमुख करता है

वाजा मत पखावज भाउ। होए अंनद सदा मन चाउ॥
एहा भगति एहो तप ताउ॥ इत रंग नाचहो रख रख पाउ॥
पूरे ताल जाणै सालाह॥ होर नचणा खुसीआ मन माह॥

सत संतोख वजह दुए ताल॥ पैरी वाजा सदा निहाल॥
राग नाद नही दूजा भाउ। इत रंग नाचहो रख रख पाउ॥
भउ फेरी होवै मन चीत॥ बहिदआ उठिदआ नीता नीत॥
लेटण लेट जाणै तन सुआह॥ इत रंग नाचहो रख रख पाउ॥
सिख सभा दीखिआ का भाउ॥ गुरमुख सुणणा साचा नाउ॥
नानक आखण वेरा वेर॥ इत रंग नाचहो रख रख पैर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 350

9. ये अनहद के रबाब, मृदंग और सच्चे नाच साधुओं द्वारा किसी गुरुमुख को प्राप्त होते हैं, मनमुख को नहीं

उदम करत होवै मन निरमल नाचै आप निवारे॥
पंच जना ले वसगत राखै मन मह एकंकारे॥
तेरा जन निरत करे गुन गावै॥
रबाब पखावज ताल घुंघरू अनहद सबद वजावै॥...
कर संग साधू चरन पखारै संत धूर तन लावै॥
मन तन अरप धरे गुर आगै सत पदारथ पावै॥
जो जो सुनै पेखै लाए सरधा ता का जनम मरन दुख भागै॥
ऐसी निरत नरक निवारै नानक गुरमुख जागै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 381

नाच रे मन गुर कै आगै॥
गुर कै भाणै नाचह ता सुख पावह अंते जम भउ भागै॥...
अनदिन नाचै सकति निवारै सिव घर नीद न होई॥
सकती घर जगत सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुख भगति न होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 506

नाम

नाम क्या है? कहने में तो यह आसान प्रतीत होता है, पर इसका ठीक बोध नाम की कमाई वालों से ही प्राप्त हो सकता है। नाम और नामी में भेद नहीं। जिसको नाम मिल गया, समझ लो उसको नामी भी मिल गया और जिन्हें नाम नहीं मिला, उनसे नामी करोड़ों कोस दूर है।

ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती फ़रमाते हैं:

म्याने-इस्म-ओ मुसम्मा चू फ़र्क़ नीस्त ब-बीं,
तू दर तजल्ली-ए-अस्मा जमाले-नामे-ख़ुदा।

दीवाने-ग़रीब नवाज़, पृ. 17

अर्थ: नाम और नामी में फ़र्क़ नहीं, तू ख़ुदा के जमाल की झलक उसके नाम के अंदर देख।

नाम ही सब कुछ है और नाम ही से सब कुछ है। जिन्होंने नाम को नहीं जाना या उसकी प्राप्ति नहीं की, उन्होंने कुछ नहीं जाना, वे ख़ाली हाथ आए और जुआरियों की तरह दोनों हाथ झाड़कर चले गए, दुनिया में अपनी पूँजी बरबाद कर गए। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

नाम जपत कुष्टी भला, चुइ चुइ परै जो चाम।
कंचन देंह केहि काम की, जा मुख नाहीं नाम॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 86

नाम की आवश्यकता और महिमा

आत्मिक मंडलों की सैर के लिए नाम के पंखों की आवश्यकता है। जिनको मालिक का जमाल (अनुपम रूप) देखने की चाह है वे नाम के पंख लगाकर ऊपर के देश में उड़ सकते हैं:

तुरा सज़्दे-तैराँ दर फ़ज़ा-ए-आलमे-कुद्स,
बशर्त-ए-आँकिह् ब पर्रे बबाले-नामे-ख़ुदा।

दीवाने-ग़रीब नवाज़, पृ. 17

अर्थ: तुझे पाक रूहानी आलम (दुनिया) की फ़िज़ाँ (वायुमंडल) में सैर करना शोभा देता है, लेकिन इसके लिए शर्त यह है कि तू ख़ुदा के नाम के पंख लगाकर ऊपर की ओर उड़े।

अगर सचमुच उसके मिलने की चाह है, तो ऐ जीव! तू उसके नाम को क्यों नहीं रटता? वह नाम से कभी भी अलग नहीं:

विसाले-हक़्क़ तलबी हमनशीने-नामश बाश,
बुवद विसाले-खुदा दर विसाले-नामे-खुदा।
यकीं बदाँ किह् बा हक़ निशस्ता-ए-शबो-रोज़,
चू हमनशीने-तू बाशद ख़याले-नामे-ख़ुदा।

दीवाने-ग़रीब नवाज़, पृ. 17

अर्थ: अगर हक़ का विसाल (सतपुरुष के साथ अभेद होना) मंज़ूर है, तो उसके नाम का जाप कर, क्योंकि ख़ुदा के नाम का विसाल (मिलाप) ख़ुदा का ही विसाल है। अगर ख़ुदा के नाम का ख़याल तेरे साथ रहेगा तो यक़ीन कर कि तू दिन-रात ख़ुदा के पास बैठा हुआ है।

नाम सब पापों का नाश करनेवाला है, इससे एकाग्रता की प्राप्ति होती है और संसार की चिंताएँ नहीं सतातीं। नाम के साथ जुड़ जाओ, बिना मेहनत-मशक़्क़त (तकलीफ़) के तुम शुद्ध हो जाओगे और अंतर में मालिक दिखाई देने लगेगा:

जमाले-दोस्त ज़ आइना-ए-दिलत ताबद,
अगर ज़ूद दिह शवद अज़ सक़ाले-नामे-ख़ुदा।

दीवाने-ग़रीब निबाज़

अर्थ: अगर तू नाम की सान पर दिल को साफ़ कर ले तो दोस्त का जमाल तेरे दिल के शीशे में चमकने लगेगा।

कबीर साहिब क्या सुहावने ढंग से नाम की महिमा गाते हैं:

नाम जो रत्ती एक है, पाप जो रत्ती हजार।
आध रत्ती घट संचरै, जारि करै सब छार॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 85

नाम जपत सब मिट गए, मन मनसा के दाग।
मानों घास के ढेर में, लागी चिणगी आग॥
नाम जपत सब जर गए, मन माया के फंद।
देखत देखत मिट गए, सब प्रपंच के द्वन्द॥

जिनके पास नाम की पूँजी है, उनके पास सब ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ हैं:

जा की गाँठी नाम है, ता के है सब सिद्धि।
कर जोरे ठाढ़ी सबै, अष्ट सिद्धि नव निद्धि॥
कबीर साखी-संग्रह, पृ. 86

चाहे कोई नेक हो या बद, चतुर हो या मूर्ख, जो भी नाम के साथ जुड़ता है, नाम उसका बेड़ा पार कर देता है। धूप में या आग के पास बैठने से या पानी के स्पर्श से हमारे अंदर गर्मी या ठंडक का असर आने लगता है, इसी तरह नाम के स्पर्श से अंदर असर होता है। भाव या अभाव के साथ, आलस या उद्यम के साथ, किसी तरह भी हम नाम जपें, वह असर किए बग़ैर नहीं रह सकता।

गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में फ़रमाते हैं:

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥
श्रीरामचरितमानस, 1:27:1

नाम में मग्नता और अपूर्व मस्ती है। ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती फ़रमाते हैं कि ख़ुदा के नाम का जमाल मेरे दिल और जान को ले गया, उसने प्यासों को ख़ुदा के विसाल (दर्शन) का शर्बत पिला दिया:

रबूद जानो-दिलम रा जमाले-नामे-ख़ुदा,
नवाख़्त तशना लबां रा ज़ुलाले-नामे-ख़ुदा।
दीवाने-ग़रीब नवाज़, पृ. 17

मालिक के अनेक नाम हैं, इनमें कौन-सा नाम पूर्ण कल्याणकारी है?

मालिक के अनेक नाम हैं जो संत-महात्माओं व ऋषि-मुनियों ने उसकी महिमा के वर्णन के लिए रखे हैं:

असंख नाव असंख थाव॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 4

मालिक सबमें परिपूर्ण है, निराला है, उसका कोई सानी नहीं। वह कुलमालिक, अनामी, हरि राए जो सबका आदि है जो अनाम है जिसका कोई नाम नहीं, संत-महात्माओं द्वारा अगम्य, अलख, सत्पुरुष, सतनाम, एकंकार, पूर्ण चेतन पुरुष, राम राए, अकाल आदि अनेक नामों द्वारा पुकारा गया है। न लखे जाने के कारण वह अलख और गम्य न होने के कारण अगम्य कहलाया। इसी प्रकार महात्माओं ने त्रिलोकी के मालिक और उसके पार की ताक़तों का नाम नि:अक्षर, पारब्रह्म, अक्षर ब्रह्म और क्षर पुरुष और धर्मराय और काल कहकर भी उसका वर्णन किया। इनके अलावा और हज़ारों नाम मालिक की किसी सिफ़्त यानी गुण विशेष को दृष्टि में रखकर रखे गए, जैसे राम, रहीम, गिरधारी, मुरारी, अल्लाह, ख़ुदा, वाहिगुरु आदि। यहूदियों और ईसाइयों में जोव, जीहोवा आदि। हम इन सब नामों पर बलिहारी जाते हैं:

बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1168

नाम की असलियत

हम नाम की आराधना और ध्यान के विषय में बहुत कुछ सुनते और कहते आए हैं, पर हमने कभी नाम की असलियत पर विचार नहीं किया कि नाम क्या है और इन नामों में वह कौन-सा नाम है जिससे जीवों को निर्वाण पद की प्राप्ति हो सकती है:

कउन नाम जग ज़ा कै सिमरै पावै पद निरबाना॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 902

वह कौन-सा नाम है जिसके सिमरन द्वारा जीव भवसागर से पार होता है?

कउन नाम गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 632

मालिक का कोई नाम नहीं, वह तो अनाम है:

नमसतं अनामे।

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 2

उसके अनंत नाम रखे गए, पर वह इन सबसे ऊपर है। उसका अंत और पारावार ही नहीं, वह नामों के बंधन में किस तरह आ सकता है! यह सब ठीक है लेकिन ऋषि-मुनियों और महात्माओं ने उसकी महिमा के वर्णन के लिए, उसके नाम रखे हैं जो अनेक और असंख्य हैं। फिर भी वे उसकी क़ीमत बयान न कर सके:

तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहण न जाही तेरे गुण केते॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

रिध सिध निध कर तल जगजीवन स्रब नाथ अनेकै नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 536

हर के नाम असंख अगम हहे अगम अगम हर राइआ॥
गुणी गिआनी सुरत बहु कीनी इक तिल नही कीमत पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1319

अनेक असंख नाम हर तेरे न जाही जिहवा इत गनणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1135

दशम पातशाह गुरु गोबिन्द सिंह भी फ़रमाते हैं:

तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरणत सुमति॥

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 1

नामों में भेद है, कोई किरतम नाम (गुण संबंधी या सिफ़ाती नाम) हैं और कोई परा पूरबला नाम जो आदि काल से चला आ रहा है:

किरतम नाम कथे तेरे जिहबा॥ सत नाम तेरा परा पूरबला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1083

इन नामों में हमारे ध्यान के लिए कौन-सा नाम ऊँचा और ग्रहण करने के योग्य है? हिंदू ओ३म नाम को मान्यता देते हैं और रामनाम की महिमा भी अनेक प्रकार से गाते हैं। मुसलमानों में अल्लाह और सिक्खों में वाहिगुरु नाम प्रचलित है। हर एक मत के अपने-अपने नाम हैं। इन सब नामों में वह कौन-सा नाम है जिसके द्वारा जीव का कल्याण होता है? नाम के आराधन या ध्यान से क्या तात्पर्य है? केवल किसी नाम के रटने या उस नाम के अर्थ पर विचार करने का,

या कुछ और भी? अक्षरों का रटना और उनके अर्थों का विचार केवल ख़याली सहारा बनने का काम दे सकता है। गुरवाणी के पाठ में नाम के विषय में कई पद मिलते हैं जिनमें कहीं नाम के जाप का, कहीं नाम के सुनने का, कहीं ध्यान का, कहीं हृदय में इसके बसने का और कहीं इसके प्रकाश का वर्णन मिलता है:

नाम जपहो मेरे गुरसिख मीता॥
नाम जपहो नामे सुख पावहो नाम रखहो गुरमत मन चीता॥
नामो नाम सुणी मन सरसा॥ नाम लाहा लै गुरमत बिगसा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

जब लग जोबन सास है तब लग नाम धिआए॥
चलदिआ नाल हर चलसी हर अंते लए छडाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

जिन हर हिरदै नाम न बसिओ तिन मात कीजै हर बांझा॥
तिन सुंञी देह फिरह बिन नावै ओए खप खप मुए करांझा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 697

हर के जन सतगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पास॥
हम कीरे किरम सतगुर सरणाई कर दइआ नाम परगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 492

गुरवाणी में नाम के रटन और विचार से परे, उसके अंदर की मधुर धुनि को सुनने का भी उल्लेख है और नाम के अंदर प्रकाश के होने का भी वर्णन किया गया है:

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणिऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥
नानक नाए सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुख धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

नाम जपत कोट सूर उजारा...॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 700

कर दइआ नाम परगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 492

नाम में सुरत और निरत दोनों की पूर्ति का साधन है। वाणी में उस नाम का हृदय में बसने का भी ज़िक्र आता है। गुरवाणी में बड़े स्पष्ट रूप से निर्णय किया गया है कि नाम मन और इंद्रियों से परे है, 'अद्रिसट अगोचर नाम अपारा॥' (गुरु नानक देव; आदि ग्रन्थ, पृ. 1041)। इन पदों से यह पता चलता है कि मालिक का सच्चा नाम लफ़्ज़ नहीं, वह कोई और वस्तु है जो हमारे अंतर में वास करती है; उसमें मीठी और रसभरी धुनें हैं, जो सुनी जा सकती हैं, उसमें प्रकाश भी है, जो देखा जा सकता है। वह नाम वास्तव में अदृष्ट, अगोचर और अपार है, वह राम-नाम (सब जगह रमा हुआ) है। कबीर साहिब ने इस विषय को बड़ा स्पष्ट कर दिया है:

कोटि नाम संसार में, ता तें मुक्ति न होय।
आदि नाम जो गुप्त जप, बूझै बिरला कोय॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 84

गुरवाणी में भी आया है कि नामों के रटने का अपना काम है और उसकी आवश्यकता है (देखें: 'सिमरन' का प्रकरण), लेकिन इस तरह हम मालिक में समा नहीं सकते। उस पूर्ण मालिक (God in action) का वर्णन शब्द या नाम कहकर किया गया है जब तक उसके साथ हमारी लिव नहीं लगती, तब तक हमारी मुक्ति संभव नहीं और उसके साथ जुड़ना केवल गुरु के द्वारा ही हो सकता है।

राम राम सभ को कहै कहिऐ राम न होए॥
गुर परसादी राम मन वसै ता फल पावै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491

'पानी-पानी' कहते हुए जब तक हम जो वस्तु पानी है उसके संपर्क में नहीं आते, न हमको ठंडक मिलती है न हमारी प्यास बुझती है। महात्मा यारी साहिब फ़रमाते हैं:

रसना राम कहत तें थाको॥
पानी कहे कहुँ प्यास बुझत है, प्यास बुझै जदि चाखो॥

यारी साहिब की रत्नावली, पृ. 3

कबीर साहिब की वाणी में भी निर्णय किया गया है:

बिन देखे बिन दरस परस बिन, नाम लिये का होई।
धन के कहे धनी जो होई, निरधन रहै न कोई॥

कबीर साहिब की शब्दावली, भाग 3, पृ. 47

अर्थ: जब तक मालिक के साथ न जुड़ा जाए, तब तक सिर्फ़ ख़ाली नाम लेने का क्या लाभ? यदि केवल 'धन-धन' पुकारने से मनुष्य धनी बन सकता हो तो संसार में कोई भी निर्धन न रहे।

सारे नाम उसी एक के लिए रखे गए हैं। पर यदि नामी के साथ, जिसके ये सब नाम रखे गए हैं, एकता हो जाए तो उसे किसी भी नाम से याद करो, कोई चिंता नहीं। अगर पानी मिल जाए तो यह मामूली बात है कि हम उसके लिए पंजाबी लफ़्ज़ पानी, यूनानी–हाइडोर, लैटिनी–एक्वा या अंग्रेज़ी–वाटर का व्यवहार करें। नामी से मिलाप हो जाने पर इन सब नामों और नामी के गुण प्राप्त हो जाते हैं। 'रोटी-रोटी' पुकारने से भूख नहीं मिटती, 'पानी-पानी' कहने से प्यास नहीं बुझती; 'रोटी' और 'पानी'–ये लफ़्ज़ कोई और चीज़ है और रोटी और पानी असली चीज़ कोई और है जिसके खाने और पीने से भूख व प्यास जाती रहती है।

नाम के द्वारा जब तक हम नामी के साथ नहीं जुड़ते, हमको नाम का श्रेष्ठ और पवित्र लाभ नहीं मिल सकता। मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

इस्म ख़्वांदी रौ मुसम्मा रा बिजू, बे मुसम्मा इस्म कै बाशद निकू।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 355

अर्थ: तू केवल नाम ले रहा है, जा, नामी को (जिसका कि यह नाम है) ढूँढ़, क्योंकि नामी के बिना नाम फल कैसे दे सकता है?

गोस्वामी तुलसीदास ने नाम को ब्रह्म और राम से बड़ा कहा है, क्योंकि ब्रह्म, पारब्रह्म, सतनाम, अलख और अगम सब नाम के ही बनाए हुए हैं:

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।

श्रीरामचरितमानस, 1: 25

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा॥
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें। किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें॥ ...
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें॥

श्रीरामचरितमानस, 1:22:1-3

अर्थ: निर्गुण और सगुण दोनों ही ब्रह्म के स्वरूप हैं जो अकथ, अनादि, अगाध और अनुपम है। मेरे विचार के अनुसार इन दोनों से बढ़कर नाम है क्योंकि नाम की ताक़त इन दोनों को चला रही है। दोनों ही अगम हैं पर नाम के द्वारा इनकी गम्यता पाई जा सकती है, इसलिए मैं कहता हूँ कि नाम राम और ब्रह्म दोनों से बड़ा है।

तुलसीदास जी तो यहाँ तक फ़रमाते हैं कि नाम की महिमा का कहाँ तक वर्णन किया जाए क्योंकि स्वयं राम भी नाम की महिमा नहीं गा सकते:

कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई॥

श्रीरामचरितमानस, 1:25:4

इसका कारण यह है कि राम ब्रह्म का अवतार है और ब्रह्म, पारब्रह्म आदि सब नाम के बनाए हुए हैं।

जिन्होंने असली नाम को भुला दिया है और दूसरे नामों के जाप में लगे हुए हैं, वे पूरा लाभ नहीं ले सकते, वे इस दुनिया में उसी तरह फँसे रहते हैं जिस तरह गंदगी का कीड़ा उसी में भागता-दौड़ता समय गँवा देता है:

जिन्ही नाम विसारिआ किआ जप जापह होर॥
बिसटा अंदर कीट से मुठे धंधै चोर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1247

नाम के अलावा और पढ़ना-बोलना सब माया में है। नाम के बिना कोई वस्तु स्थिर रहनेवाली नहीं, उसके सिवाय और सब पठन-पाठन आदि भटकना मात्र है:

होर कूड़ पड़णा कूड़ बोलणा माइआ नाल पिआर॥
नानक विण नावै को थिर नही पड़ पड़ होए खुआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 84

गुरबाणी में सच्चा पढ़ना और गुनना नाम का ही माना गया है, पर कोई बिरला ही इस बात को समझता है:

नानक पड़णा गुनणा इक नाउ है बूझै को बीचारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1246

पढ़ने-लिखने को तो गुरबाणी में सांसारिक व्यवहार कहा है:

पड़णा गुड़णा संसार की कार है...॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 650

सब धर्मों का सार नाम है; सब मतों में नाम ही महान है:

सगल मतांत केवल हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

कोई कर्म-धर्म नाम की बराबरी नहीं कर सकता, दान-पुण्य, जप-तप, वेद-शास्त्र के पाठ और अन्य अनेक कर्मों-धर्मों से नाम कहीं ऊपर है:

सभ कोए मीठा मंग देखै खसम भावै सो करे॥
किछ पुंन दान अनेक करणी नाम तुल न समसरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपर नाम॥
हर हर रसना जो जपै तिस पूरन काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 401

बेद सासत्र जन धिआवह तरण कउ संसार॥
करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपर नाम अचार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

करोड़ों कर्म-धर्म नाम की बराबरी नहीं कर सकते। बाहर के साधन तीर्थ-यात्रा, दान-पुण्य, रोज़े, ज़कात, यज्ञ आदि अनेक क्रियाएँ उस तक नहीं पहुँच सकतीं। नाम का अभ्यास ही सबसे ऊँचे आत्मिक मंडलों पर पहुँचा सकता है, इसके अलावा और कोई साधन नहीं:

तन बैसंतर होमीऐ इक रती तोल कटाए॥
तन मन समधा जे करी अनदिन अगन जलाए॥
हर नामै तुल न पुजई जे लख कोटी करम कमाए॥
अरध सरीर कटाईऐ सिर करवत धराए॥
तन हैमंचल गालीऐ भी मन ते रोग न जाए॥
हर नामै तुल न पुजई सभ डिठी ठोक वजाए॥
कंचन के कोट दत करी बहु हैवर गैवर दान॥

भूमि दान गऊआ घणी भी अंतर गरब गुमान॥
राम नाम मन बेधिआ गुर दीआ सच दान॥
मनहठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार॥
केते बंधन जीअ के गुरमुख मोख दुआर॥
सचहो ओरै सभ को उपर सच आचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.62

सुखमनी साहिब में नाम की क्या सुंदर महिमा गाई है:

जाप ताप गिआन सभ धिआन॥ खट सासत्र सिम्रिति वखिआन॥
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ॥ सगल तिआग बन मधे फिरिआ॥
अनिक प्रकार कीए बहु जतना॥ पुंन दान होमे बहु रतना॥
सरीर कटाए होमै कर राती॥ वरत नेम करै बहु भाती॥
नही तुल राम नाम बीचार॥ नानक गुरमुख नाम जपीऐ इक बार॥
नउ खंड प्रिथमी फिरै चिर जीवै॥ महा उदास तपीसर थीवै॥
अगन माहे होमत परान॥ कनिक अस्व हैवर भूमि दान॥
निउली करम करै बहु आसन॥ जैन मारग संजम अत साधन॥
निमख निमख कर सरीर कटावै॥ तउ भी हउमै मैल न जावै॥
हर के नाम समसर कछु नाहे॥ नानक गुरमुख नाम जपत गति पाहे॥
मन कामना तीरथ देह छुटै॥ गरब गुमान न मन ते हुटै॥
सोच करै दिनस अर रात॥ मन की मैल न तन ते जात॥
इस देही कउ बहु साधना करै॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै॥
जल धोवै बहु देह अनीत॥ सुध कहा होए काची भीत॥
मन हर के नाम की महिमा ऊच॥ नानक नाम उधरे पतित बहु मूच॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.265

स्मृतियाँ, वेद-पुराण और शास्त्र, सब यही उपदेश देते हैं कि नाम की कमाई के सिवाय और सब साधन व्यर्थ हैं:

सिम्रिति बेद पुराण पुकारन पोथीआ॥
नाम बिना सभ कूड़ गाल्ही होछीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.761

गुरु नानक साहिब की परंपरा में इसी नाम का उपदेश है:

नानक कै घर केवल नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1136

सब संत-महात्मा और भक्त इसी नाम की कमाई करते रहे और सब धर्मों में इसी का उपदेश मिलता है:

नानक नाम कबीर मता है, सो मोहिं प्रगट जनाई॥
ध्रुव प्रहलाद यही रस माते, सिव रहे ताड़ी लाई॥

दूलनदास की बानी, पृ. 13

जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू॥

श्रीरामचरितमानस, 1:18:3

हरि के भक्त उठते-बैठते नाम की आराधना करते हैं:

ऊठत बैठत सोवत नाम॥ कहो नानक जन कै सद काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

सब धर्मों में इसी नाम की महिमा का गान है, (प्रमाण के लिए देखें: 'शब्द' का प्रकरण):

सगल मतांत केवल हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

सरब धरम मह स्रेसट धरम॥ हर को नाम जप निरमल करम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 266

असली पूजा नाम की है, जिसके द्वारा जीव का कल्याण है

हरि की पूजा दुर्लभ है, वह कथन में नहीं आ सकती:

हर की पूजा दुलंभ है संतहो कहणा कछू न जाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

हरि के बिना सब कुछ मैला है। उस हरि पर हम क्या चढ़ा सकते हैं? सारा संसार ही उसकी पूजा करता है, पर मनमुखी पूजा होने के कारण वह सार्थक नहीं होती।

जो जीव शब्द के अंदर लीन हैं, वे पवित्र हैं, पावन हैं। नाम के बिना और कोई पूजा नहीं, केवल यही पूजा असल है। सारी दुनिया भ्रमों में भूली फिर रही है। पूजा तो कई करते हैं, पर उसकी सच्ची विधि न जानने से द्वैत भाव और दुविधा में रहते हैं:

पूजा करै सभ लोक संतहो मनमुख थाए न पाई॥
सबद मरै मन निरमल संतहो एह पूजा थाए पाई॥
पवित पावन से जन साचे एक सबद लिव लाई॥
बिन नावै होर पूज न होवी भरम भुली लोकाई॥
गुरमुख आप पछाणै संतहो राम नाम लिव लाई॥
आपे निरमल पूज कराए गुर सबदी थाए पाई॥
पूजा करह पर बिधि नही जाणह दूजै भाए मल लाई॥
गुरमुख होवै सो पूजा जाणै भाणा मन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

नाम कुलमालिक है

नाम कुलमालिक है और लोक-परलोक में वह सबका आधार है:

पिंड पतल मेरी केसउ किरिआ सच नाम करतार॥
ऐथै ओथै आगै पाछै एह मेरा आधार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

नाम अनादि और अनंत है, वह कभी फ़ना (नष्ट) होनेवाला नहीं:

तिआग सगल सिआनपा भज पारब्रहम निरंकार॥
एक साचे नाम बाझहो सगल दीसै छार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

नाम रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुर गोबिंद॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1429

सब कुछ नाम के वश में (अधीन) है

जिस नो देवै तिस मिलै गुरमती नाम बुझाई॥
नानक सभ किछ नावै कै वस है पूरै भाग को पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

आपीन्है आप साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 463

नाम तत सभ ही सिर जापै॥ बिन नावै दुख काल संतापै॥
ततो तत मिलै मन मानै॥ दूजा जाए इकत घर आनै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 943

नाम सबका कर्ता है

नाम शब्द है, जब शब्द गुप्त था (देखें: 'शब्द' का प्रकरण) तब वह अनाम था। उस (अनाम) के पहले कुछ नहीं था, वह रूप-रेखा से न्यारा था, उससे मौज उठी ज़ो सबकी कर्ता बनी। यह सारी रचना इस नाम के आधार पर है, यह सबका आदि और अंत है। गुरवाणी कहती है कि 'अनाम' ने सृष्टि के आरंभ में नाम का स्वरूप धारण किया:

आपीन्है आप साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 463

यह सब पसारा नाम का है, उसके सिवाय और कुछ नहीं। जब सब उत्पत्ति उसी से है तो उसका आधार भी नाम के सिवाय और क्या हो सकता है:

जेता कीता तेता नाउ॥ विण नावै नाही को थाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 4

चेतन और जड़, गुप्त और प्रकट सब उसी से बने हैं:

नामै ही ते सभ किंछ होआ बिन सतगुर नाम न जापै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

नाम ही संपूर्ण सृष्टि का सृजनहार है और वही सबका प्रतिपालन कर रहा है:

हर हर उतम नाम है जिन सिरिआ सभ कोए जीउ॥
हर जीअ सभे प्रतिपालदा घट घट रमईआ सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 81

नामै ते सभ ऊपजे भाई नाए विसरिऐ मर जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 603

त्रिलोकी और चौथे लोक, अनेक खंड-ब्रह्मांड, आकाश, पाताल सब पुरियों, भुवनों और उनमें आबाद जीव-जंतुओं का बनानेवाला नाम है। गुरु अर्जुन साहिब कैसे सुहावने ढंग से सुखमनी साहिब में सबके कर्ता, नाम की महिमा का वर्णन करते हैं:

नाम के धारे सगले जंत॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड॥...
नाम के धारे आगास पाताल॥ नाम के धारे सगल आकार॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन॥ नाम कै संग उधरे सुन स्रवन॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 284

खंड-ब्रह्मांड और युग सब नाम के ही आसरे चल रहे हैं:

खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुर परदा खोल दिखाइओ॥
नउ निध नाम निधान इक ठाई तउ बाहर कैठै जाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

नाम क्या है?

जिस नाम की महिमा गुरवाणी की तुक-तुक में आई है, वह नाम क्या है? इस पर विचार करने की ज़रूरत है। नाम का वर्णन करना असंभव है। समझने के लिए, नाम चेतन की यानी शब्द की धारा को कहते हैं। जब इसमें (चेतन में) थरथराहट (कंपन) होती है तो उस थरथराहट के सिलसिले (क्रम) में आवाज़ प्रकट होती है, उसे हम नाम कहते हैं, यही नाम (शब्द) (विस्तार के लिए देखें: 'शब्द' का प्रकरण) सारी रचना का आधार है। जहाँ रचना होगी वहाँ शब्द अवश्य होगा, कुछ भी आवाज़ से रहित नहीं। शब्द सब जगह व्याप्त है, कोई स्थान इससे ख़ाली नहीं। यह कहीं प्रकट है तो कहीं गुप्त; इसका गुंजन सिर से पैरों तक हो रहा है, यही सृष्टि का परम तत्त्व, जौहर और सार है:

पीपा प्रणवै परम तत है सतगुर होए लखावै॥

पीपा जी, आदि ग्रन्थ, पृ. 695

सब मज़हबों वाले मालिक को शब्द स्वरूप कहकर वर्णन करते हैं। यह नाम चेतन की धारा है जो रचना करने की ताक़त रखती है। इसी के आसरे सुरत पिंड, अंड और ब्रह्मांड के पार निजघर तक पहुँचती है। महात्माओं की वाणियों से दो प्रकार के नामों का पता चलता है। एक तो बाहरी नाम, जो लिखने-पढ़ने में आ सकता है, जिसे अपरा विद्या या इल्मे-ज़ाहिरी भी कहते हैं, जो विद्वानों का

विभाग है। इसको वर्णात्मक नाम भी कहा गया है। वर्णात्मक से दुनिया के सब काम होते हैं। सब ग्रंथ-पोथियाँ इसी में हैं। ज़बान के द्वारा जीव, क्या इनसान और क्या हैवान, अपने विचारों को एक दूसरे तक पहुँचाते हैं। एक बंदर चीं-चीं करके सब बंदरों को एकत्रित कर लेता है। वर्णात्मक नाम परमार्थ के मार्ग में हमारी पहली सीढ़ी है। इसमें चित्त को एकाग्र करने के लिए किसी नाम का ज़बान या मन द्वारा जाप करना होता है। यह वर्णात्मक नाम का जाप चार प्रकार का है:

1. बैखरी – जिसमें ज़बान द्वारा,
2. मध्यमा – जिसमें मन द्वारा कंठ चक्र पर
3. पसंती (पश्यंती) – जिसमें मन द्वारा हृदय चक्र पर और
4. परा – जिसमें मन की सूक्ष्म वृत्ति द्वारा नाभि चक्र पर जाप किया जाता है।

इस प्रकार के नाम से सुख और कुछ शांति मिलती है पर वह पूर्ण नहीं, क्योंकि ये सब मुक़ाम शिवनेत्र से नीचे-नीचे हैं।

दूसरा, अगम अगोचर या गुप्त नाम है जो स्वयं हरि से निकलता है और उसका रूप है। इसे परा विद्या या धुनात्मक नाम कहा जाता है, इसमें केवल 'परा पूरबले नाम' की ध्वनि सुनी जा सकती है। इसका अक्षरों में वर्णन नहीं हो सकता है। जो बग़ैर ज़बान के, हृदय* के अंदर जपता है, केवल वही खंडों-ब्रह्मांडों के बनानेवाले उस नाम को जानता है:

बिन जिहवा जो जपै हिआए॥ कोई जाणै कैसा नाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1256

धुनात्मक नाम की धुन है तो मनुष्य के अंदर, लेकिन जब तक कोई नाम का भेदी न मिले, वह समझ में नहीं आती। हम इस नाम के बिना अपनी उम्र व्यर्थ गँवा देते हैं।

नाम वर्ण है और नामी धुनात्मक है। लफ़्ज़ों से शुरू करके उसे जाना जा सकता है। वर्णात्मक नाम का जाप ज़बान से शुरू होता है (देखें: 'सिमरन' का प्रकरण), यह परमार्थ की पहली सीढ़ी है और इसलिए आवश्यक है। रविदास जी इसके बारे में वर्णन करते हैं:

बिन देखे उपजै नही आसा॥ जो दीसै सो होए बिनासा॥
बरन सहित जो जापै नाम॥ सो जोगी केवल निहकाम॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1167

---

* हृदय=संतों के अनुसार यह हृदय आँखों के पीछे है।

स्थूल नाम एक कठपुतली की भाँति है, जो देखने में तो आसरे से रहित मालूम होती है, पर उसके पीछे एक अदृश्य तार होता है जो नचानेवाले के हाथ में रहता है; इसी तरह नाम और नामी का संबंध है। हमको परमात्मा के अक्षरी नाम द्वारा, परमात्मारूपी असल वस्तु को पकड़ना है। वर्ण, मन को एकाग्र करने के लिए चाहिए, लेकिन धुन के बिना सुरत शरीर को छोड़कर ऊपरी मंडलों में नहीं चढ़ सकती। वर्णात्मक नाम बोल-चाल की भाषा में है, जो हर एक देश की अलग-अलग है, पर धुनात्मक नाम बोलने में न आ सकने वाली भाषा में है, जो सारे जहान के लिए एक ही है।

संतों का उपदेश सबके लिए समान है। क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र और वैश्य-संसार की सब वर्ण-जातियों के लिए, घट-घट में होनेवाले उस एक ही नाम का उपदेश है:

> खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेस चहु वरना कउ साझा॥
> गुरमुख नाम जपै उधरै सो कल मह घट घट नानक माझा॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747-48

जन्म-साखी में मियाँ मिट्ठे की साखी आई है, जिसमें नाम पर प्रकाश डाला गया है। मिठन कोट में एक फ़क़ीर मियाँ मिट्ठा जी थे जिनसे गुरु नानक साहिब मिले और अनेक विषयों पर चर्चा की। गुरु नानक साहिब ने कहा, "मियाँ मिट्ठा, सच्चे नाम के बिना मनुष्य बंधनों में फँसता है, नाम के बग़ैर उसका छुटकारा नहीं।" मियाँ मिट्ठे के पूछने पर कि नाम क्या है, गुरु साहिब ने उत्तर दिया, "मियाँ मिट्ठा! उस नाम की क़ीमत किसी ने कब पाई है! यह समझ बूझ की बात नहीं, अनुभव की बात है।" मियाँ मिट्ठे ने विनती की, "महाराज! जिस तरह भी हो सके मुझे यह गुप्त वस्तु बतलाओ।" तब गुरु साहिब ने कहा, "कान लगाकर सुन, तुझे कुछ सुनाई दे रहा है?" मियाँ मिट्ठे ने उत्तर दिया, "जी नहीं।" तब गुरु साहिब ने मियाँ मिट्ठे का बाजू पकड़ा, उसे एक तरफ़ ले गए और उस पर दृष्टि डालकर पूछने लगे, "मियाँ मिट्ठा! अब तुझे कुछ सुनाई देता है?" तब मियाँ मिट्ठे ने कहा, "हे दीनानाथ, पतित उधारन, मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वाहिगुरु के नाम की अटूट लहरें मेरे रोम-रोम में बह रही हैं।" इस साखी से पता चलता है कि नाम अकथनीय वस्तु है, उसमें कंपन है और वह केवल अनुभव की चीज़ है:

> गुरमुख रोम रोम हर धिआवै॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 941

इसलिए संत कहते हैं कि परमात्मा एक है और उससे मिलने का मार्ग भी एक ही है। यह एक ऐसा साधन है जो किसी जाति या धर्म में बाधा नहीं डालता। किसी भी क़ौम या मज़हब का व्यक्ति इस साधन को बग़ैर किसी रोक-टोक के कर सकता है। यह नाम का मार्ग सबके घट के अंदर है, जो अंदर जाए वह उस पर चलकर मालिक के साथ एक हो सकता है। लेकिन इस बात की समझ तब ही आती है जब नाम के साथ एकता स्थापित हो जाए। हर एक मनुष्य किन्हीं न किन्हीं आस्थाओं या विचारों के साथ जन्मों से बँधा पड़ा है, वह नए ख़याल शीघ्र ग्रहण नहीं कर सकता। किसी कमाई वाले महात्मा का सत्संग सुनते-सुनते नाम के भेद की कुछ समझ आने लगती है।

नाम में ध्वनि यानी आवाज़ है

नाम में निर्मल ध्वनि है। वह प्रत्येक हृदय में हो रही है, सतगुरु से बोध मिलने पर वह अंदर सुनाई देती है, उसका ज़िक्र सब धर्म शांस्त्र करते हैं:

गुण गोबिंद नाम धुन बाणी॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

हिरदै नाम सदा धुन निहचल घटै न कीमत पाई॥
बिन नावै सभ कोई निरधन सतगुर बूझ बुझाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1232

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणिऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥
नानक नाए सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुख धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

मियाँ मिट्ठे की साखी जो पिछले शीर्षक में दी गई है, नाम में ध्वनि होने पर काफ़ी प्रकाश डालती है।

नाम को सुनने का स्थान

जब कायारूपी नगरी में सुरत सिमटकर ऊपर को चढ़ती है और आँखों के पीछे अष्टदल-कमल में आ जाती है तब वह नाम को सुनती है:

काइआ नगरी मह मंगण चड़ह जोगी ता नाम पलै पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.908

नाम में बड़ी सुरीली और मनमोहिनी ध्वनि है जिसको सुनकर सुरत आत्मिक मंडलों की ओर उसी तरह खिंची चली आती है जिस तरह लोहे की सुई चुंबक की ओर खिंच जाती है क्योंकि हमारी सुरत, नाम और मालिक एक ही जौहर (तत्त्व) के हैं। नाम की कशिश से रूह इस शरीररूपी क़ब्र को छोड़कर बाहर आ जाती है। मौलाना रूम कहते हैं:

गर बिगोयम शम्मा-ए-ज़ाँ नग़्महा, जानहा सर बर ज़नंद अज़ दख़्महा।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ.212

अर्थः अगर उन रागों का तुझे थोड़ा-सा भी हाल बताऊँ तो (जिस्मरूपी) क़ब्रों से रूहें उठ खड़ी हों।

यह नाम अपने आप प्रकट है। पहले किसी न किसी नाम के उच्चारण द्वारा बाहर से वृत्तियों को हटाकर अंतर्मुख करना पड़ता है, तब इसकी धुन अपने आप सुनाई देने लगती है। नाम को सुनने से बेख़ुदी और मस्ती आ जाती है:

नामे राते अनदिन माते नामै ते सुख होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, 946

दुनिया के नशे उतर जानेवाले होते हैं, पर नाम में लीन होकर आत्मा उस मस्ती में रहती है जिसका ख़ुमार (नशा) दिन-रात कभी टूटनेवाला नहीं:

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहै दिन रात॥

प्राप्त नहीं

नाम से ही जीव जीवित है, इसके बिना मौत है:

आखा जीवा विसरै मर जाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.9

मेरे प्रीतमा हउ जीवा नाम धिआए॥
बिन नावै जीवण ना थीऐ मेरे सतगुर नाम द्रिड़ाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.40

जब तक इस गुप्त नाम (धुनात्मक) के साथ सुरत नहीं जुड़ती, जीव का पूर्ण कल्याण नहीं होता।

नाम के अभ्यास का समय

नाम किसी भी समय जपा जा सकता है, पर अमृत-वेला (प्रात: काल का समय) विशेष रूप से फलदायक है (देखें: 'अमृत-वेला' का प्रकरण)।

अंम्रित वेला सच नाउ वडिआई वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 2

झालाघे उठ नाम जप निस बासुर आराध॥
कार्हा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाध॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 255

नाम की ध्वनि सुनाई क्यों नहीं देती?

मन तरंगों में बह रहा है, इसके अंदर विषय-विकारों की मैल भरी पड़ी है, जिससे हमारा ख़याल फैल रहा है और इसलिए सुरत नाम की धुन को पकड़ नहीं सकती:

मन मैलै भगति न होवई नाम न पाइआ जाए॥
मनमुख मैले मैले मुए जासन पत गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

जिचर इह मन लहरी विच है हउमै बहुत अहंकार॥
सबदै साद न आवई नाम न लगै पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1247

नाम इंद्रियों का विषय नहीं

असली नाम अदृष्ट, अगोचर और अपार है, वह बाहर की ज़बान के बिना अपने आप हो रहा है। इस नाम के अभ्यास द्वारा चितवृत्ति सिमटती है और मन वश में आता है। गुरु नानक साहिब इसी नाम की प्राप्ति के लिए उपदेश देते हैं:

अद्रिसट अगोचर नाम अपारा॥ अत रस मीठा नाम पिआरा॥
नानक कउ जुग जुग हर जस दीजै हर जपीऐ अंत न पाइआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1041-42

असली नाम गुप्त और अलभ्य है

सच्चा नाम गुप्त है और वह सबके अंदर पूर्ण रूप से व्याप्त है। इसके प्रकट होने के लिए नाम की कमाई करनेवाले किसी पूर्ण महात्मा से जीवन-दान यानी दीक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता है:

> गुपता नाम वरतै विच कलजुग घट घट हर भरपूर रहिआ।
> नाम रतन तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भज पइआ॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

संसार में सब कुछ मिल सकता है, पर यह गुप्त नाम अलभ्य है, दुर्लभ है। यह केवल किसी गुरुमुख के हिस्से में ही आ सकता है:

> इस जग मह नाम अलभ है गुरमुख वसै मन आए॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

> जुग माहे नाम दुलंभ है गुरमुख पाइआ जाए॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 490

नाम मालिक के साथ मिलाने की डोर है

नाम की धारा सारे ब्रह्मांड में पूर्ण रूप से व्याप्त होकर सँभाल कर रही है। यह शरीर भी ब्रह्मांड का छोटा-सा नमूना है, वह इसके अंदर भी विराजमान होकर सँभाल कर रही है। इसी धारा के द्वारा हमारा मालिक के साथ तार बँधा हुआ है जो कभी तोड़ने से भी नहीं टूट सकता। यह धारा मस्तक की ओर से शरीर के नीचे के भागों तक जा रही है। जिस प्रकार मछली पानी की धार के सहारे ऊपर चढ़ जाती है, उसी प्रकार सुरत नाम की डोर को पकड़कर नाम के भंडार में पहुँच सकती है। इसलिए इस नाम की साधना को उलटा मार्ग भी कहा जाता है। इसको छोड़कर और सब साधन प्रवृत्ति (संसार के बंधन) के मार्ग हैं:

> नाम संग जिस का मन मानिआ॥ नानक तिनह निरंजन जानिआ॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 281

नाम सहज में पहुँचाने का माध्यम है

जिस प्रकार शब्द के प्रकरण में बताया गया है कि ऊपर के मंडलों में आत्मा शब्द के सहारे निजघर तक पहुँचती है, शब्द के बिना सुरत अंधी है, उसी प्रकार नाम भी सुरत के लिए टेक और आधार का काम देता है, जिसके सहारे यह

सहज में पहुँचने योग्य हो जाती है। इसकी प्राप्ति के लिए अरदास (प्रार्थना) की गई है:

नानक पइअंपै दइआ धारहो मै नाम अंधुले टोहनी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 847

मै अंधुले की टेक तेरा नाम खुंदकारा॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नाम है अधारा॥
संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 727

कलियुग में केवल नाम का साधन स्वीकार है

जब मनुष्य में गुणों का नाश हो जाता है और अवगुण प्रबल हो जाते हैं, जब धर्म-कर्म का कोई असर नहीं होता, तब घोर कलियुग में पूर्ण गुरु नाम का प्रचार करते हैं। जब देश में उपद्रव बढ़ जाते हैं, चारों ओर अंधकार फैल जाता है, मनुष्य बल-बुद्धि से हीन हो जाते हैं, ऐसे समय में नाम के अलावा और कोई सुखदायी और शीघ्र असर करनेवाला साधन नहीं। धर्मकर्म इस युग में फलदायक नहीं होते, यह बीते युगों का धर्म है:

कलजुग मह कीरतन परधाना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

रविदास जी फ़रमाते हैं कि सतयुग में सत्य, त्रेता में यज्ञ आदि और द्वापर में मूर्ति पूजा का रिवाज था, पर कलियुग में केवल नाम का ही आधार है:

सतजुग सत तेता जगी दुआपर पूजाचार॥
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कल केवल नाम अधार॥
आदि ग्रन्थ, पृ. 346

गोस्वामी तुलसीदास जी इस बारे में रविदास जी के समान मत रखते हैं:

ध्यानु प्रथम जुग मख बिधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें॥
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना॥
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन* सकल जग जाला॥
श्रीरामचरितमानस, 1:26:2-3

* समन=शमन हो जाते है; नष्ट हो जाते है।

अर्थ: सतयुग में लोग ध्यान करते थे, त्रेता में यज्ञ आदि से काम लेते थे, द्वापर में मूर्ति पूजा थी, अब कलियुग में प्राणी पापों के समुद्र में मछली के समान मग्न रहते हैं। नाम कल्पवृक्ष बनकर सिमरन द्वारा सब जंजाल काट देता है और पापों को दूर कर देता है:

कलजुग नाम प्रधान पदारथ भगत जना उधरे॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 995

कलजुग कर्म धर्म नहिं कोई। नाम बिना उद्धार न होई॥
स्वामी जी, सारबचन संग्रह, 38 मास 3

गुरु अर्जुन साहिब भी यही फ़रमाते हैं:

कलिजुग महि इक नाम उधारु॥
आदि ग्रन्थ, पृ. 1138

कलियुग में और किसी साधन की ऋतु नहीं, इसमें केवल नाम ही फल सकता है। इसलिए गुरबाणी में नाम के बीज बोने का ही आग्रहपूर्वक उपदेश है:

अब कलू आइओ रे॥ इकु नामु बोवहु बोवहु॥
अन रूति नाही नाही॥ मतु भरमि भूलहु भूलहु॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

सो कलियुग में जिनको नाम मिला है उन पर बलिहारी जाना चाहिए:

कहु नानक ता कै बलि जाउ॥ कलिजुग महि पाइआ जिनि नाउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

चारों युगों में नाम द्वारा ही उद्धार हुआ है

नाम का प्रचार प्राचीन से प्राचीन है। यह मालिक का नियम है। जब से दुनिया बनी, इसका प्रचार होता रहा है और जीव का कल्याण इसी के सहारे होता रहा है। कबीर साहिब, गुरु नानक साहिब और नौ पातशाहियाँ (नौ गुरु), दादू साहिब, पलटू साहिब, तुलसी साहिब, पिछले चार-पाँच सौ सालों में इसका प्रवाह चलाते रहे। मुसलमान फ़क़ीरों ने लगभग तेरह-चौदह सौ वर्षों से नाम की तालीम का प्रचार किया है। हज़रत मुहम्मद साहिब और अन्य फ़क़ीर, शम्स तब्रेज़, मौलाना रूम, हाफ़िज़ साहिब आदि भी इसका प्रचार करते रहे। 2000 वर्ष पूर्व ईसा

मसीह और सेंट जॉन इसके संकेत देते रहे। इसी प्रकार हज़रत ज़रदुश्त जी भी इसके उपदेशक थे। अढ़ाई हज़ार साल पहले महात्मा बुद्ध ने भी इसका अभ्यास किया था। गोरखनाथ जी भी नाम की ही तालीम देते रहे। मिस्र के पिरामिडों (Pyramids) को खोजने से पता चला है कि आज से 4000 वर्ष पहले मिस्र में अखनीटन नामक एक राजा ने नाम का प्रवाह चलाया था। वे नाम को एटन कहकर बयान करते थे। उपनिषदों के समय में भी नाम के प्रचार की प्रणाली गुप्त रूप में रही, जिसके इशारे हमको उपनिषदों में मिलते हैं। द्वापर में श्री कृष्ण महाराज जी भी नाम यानी शब्द की शिक्षा से परिचित थे। ऋग्वेद में भी जो चारों वेदों और संसार की सब धर्म पुस्तकों से पुराना माना जाता है, नाम के संकेत मिलते हैं, इसके वागम्भृणी सूक्त (10:125) में नाम यानी शब्द की महिमा की गई है (प्रमाणों के लिए देखें: 'शब्द' और 'वाणी' के प्रकरण)।

कबीर साहिब ने अपनी वाणी में बताया है कि वे चारों युगों में आए और नाम का प्रचार करते रहे और वे फ़रमाते हैं कि उन युगों में उनका नाम सतसुकृत, मुनीन्द्र और करुणामय था और अब कबीर है।

गुरवाणी तो साफ़ कहती है कि चारों युगों में लोगों का उद्धार नाम के द्वारा ही हुआ है और वह नाम केवल गुरुमुखों को ही प्राप्त हुआ है:

जुग चारे नाम उतम सबद बीचार॥ कल मह गुरमुख उतरस पार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

नामे उधरे सभ जितने लोअ॥ गुरमुख जिना परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

एक नाम जुग चार उधारे सबदे नाम विसाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1055

नाम का धन निश्चल और अविनाशी है

केवल नामरूपी धन ही निश्चल है, बाकी सब धन नाशवान हैं। इस धन को न आग जला सकती है, न पानी बहा सकता है और न ही कोई चोर चुरा सकता है:

एको निहचल नाम धन होर धन आवै जाए॥
इस धन कउ तसकर जोहे न सकई ना ओचका लै जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 511

सो धन वखर नाम रिदै हमारै॥ जिस तू देह तिसै निसतारै॥
न इह धन जलै न तसकर लै जाए॥
न इह धन डूबै न इस धन कउ मिलै सजाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.991

नाम निरंतर और अनंत भंडार है

नाम निरंतर है, वह अनंत भंडार है जो कभी ख़ाली होनेवाला नहीं। इसको प्रदान करनेवाला सतगुरु है और यह गुरुमुखों को मिलता है। इसको पाकर मुख उज्ज्वल हो जाता है:

हम घर नाम खजाना सदा है भगति भरे भंडारा॥
सतगुर दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.593

नाम अखुट निधान है गुरमुख मन वसिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.787

अखुट नाम धन कदे निखुटै नाही किनै न कीमत होए॥
नाम धन मुख उजले होए हर पाइआ सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.600

नाम सच्चा वखर यानी सौदा है

नाम का धन सच्चा सौदा है, जो घट-घट गहर गंभीर है:

सच वखर धन नाम है घट घट गहिर गंभीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.22

नाम हुक्म है, शब्द है

हुकम मंने सो जन परवाण॥ गुर कै सबद नाम नीसाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1175

नाम भक्तों की पूँजी है, गुरु इसका साहूकार और सिक्ख (शिष्य) बनजारा है

खरच खजाना नाम धन इआ भगतन की रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.253

धंन धंन से साह है जे नाम करह वापार॥
वणजारे सिख आवदे सबद लघावणहार॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

नाम का सच्चा साहूकार मालिक स्वयं है

रतन पदारथ हर नाम तुमारा जीउ॥ तूं सचा साहु भगत वणजारा जीउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 217

नाम आधार है

नाम जीवों का आधार है, सहारा है। यह भक्तजनों का सखा और मित्र है, यही भक्तों की जाति है और यही उनका मान है। वे इसकी कमाई करके स्थिर हो जाते हैं:

जन नानक नाम अधार टेक है बिन नावै अवर न कोए जीउ॥
जग उपजै बिनसै बिनस बिनासै लग गुरमुख असथिर होए जीउ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

प्रभ जी को नाम मनह साधारै॥
जीअ प्रान सूख इस मन कउ बरतन एह हमारै॥
नाम जात नाम मेरी पत है नाम मेरै परवारै॥
नाम सखाई सदा मेरै संग हर नाम मो कउ निसतारै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 713

साचा नाम मेरा आधारो॥ साच नाम अधार मेरा ज़िन भुखा सभ गवाईआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

कहै नानक सुणहो संतहो सबद धरहो पिआरो॥ साचा नाम मेरा आधारो॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

तेरा एक नाम तारे संसार॥ मै एहा आस एहो आधार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 24

नाम की साधना

नाम का उपदेश देते समय गुरु शिष्य को नाम की साधना का पूरा-पूरा हाल स्पष्ट करके समझाते हैं। इसका कुछ वर्णन ऊपर 'नाम क्या है?' शीर्षक में किया

गया है। यह विद्या परंपरा से चली आई है, यह गुरु द्वारा शिष्य को प्रदान की जाती है, यह किसी मनुष्य की रचना नहीं है, यह अकाल-कृत है। यह अमली साधन है जो (आत्मिक) जीवन-दान यानी दीक्षा के द्वारा प्राप्त हो सकता है (देखें: 'दीक्षा' का प्रकरण)।

नाम की साधना सरल है

यह नाम बग़ैर किसी शरीअत (कर्मकांड) की ज़ाहिरी पाबंदी (बंधन) के जपा जा सकता है। बाल, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष, सब धर्मों के लोग किसी भी हालत में इसको जप सकते हैं, क्योंकि यह नाम कभी भी मैला नहीं होता:

सच पुराणा ना थीऐ नाम न मैला होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248

इसके अभ्यास द्वारा न कोई बीमारी होती है और न कोई और तकलीफ़ होने का डर है। शब्द मार्ग सुखदायी मार्ग है, इसमें थोड़ी मेहनत और फल बहुत है, 'हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा आवे।' जो कुछ ऋषि-मुनियों ने अति कठिन साधनों द्वारा सैंकड़ों वर्षों में प्राप्त किया उसे शब्दयोग द्वारा जीव बहुत थोड़े समय में पा लेता है और इसके लिए कोई शारीरिक कष्ट भी नहीं उठाना पड़ता। इसके लिए शुरू-शुरू में एकांत, सत्संग और अभ्यास में विशेष समय देना पड़ता है। पर जब अंतर्मुख रसाई हो जाती है तब कोई समय हो, कोई अवस्था हो, हर समय, हर मिनट नाम की धुन जारी रहती है:

सोए बैठे खड़े उताने॥ कहे कबीर हम वही टिकाने॥

कबीर साहिब

नाम की साधना से सुरत फिर मालिक को भूलती नहीं। जीव को सहज समाधि का फल मिल जाता है, वह मालिक को हमेशा हाज़िर देखता है और उसका हर एक काम पूजा में शामिल होता है। इसी के बारे में कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

साधो सहज समाधि भली।
गुर प्रताप जा दिन से जागी, दिन दिन अधिक चली॥
जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कुछ करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा॥

कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन, खावँ पियौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव मिटावौं दूजा॥
आँख न मूँदौं कान न रूँधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं।
खुलै नैन पहिचानौं हँसि हँसि, सुन्दर रूप निहारौं॥
सब्द निरन्तर से मन लागा, मलिन बासना त्यागी।
ऊठत बैठत कबहुँ न छूटै, ऐसी तारी लागी॥
कहैं कबीर यह उनमुनि रहनी, सो परगट कर गाई।
दुख सुख से जोइ परे परम पद, तेहि पद रहा समाई॥

कबीर साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 16

बेद कतेब संसार हभा हूं बाहरा॥ नानक का पातसाहु दिसै जाहरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 397

नाम किस प्रकार मिलता है?

1. ऐसे अमूल्य नाम का दान मालिक की कृपा दृष्टि से, जिसे वह आप बख़्शे, उसे मिल सकता है

नानक नदरी पाईऐ सच नाम गुणतास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

ता कै हिरदै बसिओ नाम॥ जा कउ सुआमी कीनो दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

नावै जेवड होर धन नाही कोए॥ जिस नो बखसे साचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

नाम निधान सोई पाए क्रिपा करे प्रभ सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

2. धुर की बख़्शिश, धुर कर्म और पूरे भाग द्वारा

नानका जिन नाम मिलिआ करम होआ धुर कदे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

जिन्ह धुर लिखिआ लेख तिन्ही नाम कमाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 369

धुर करम पाइआ तुध जिन कउ से नाम हर कै लागे॥
कहै नानक तह सुख होआ तित घर अनहद वाजे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

जत सत संजम नाम है विण नावै निरमल न होए॥
पूरै भाग नाम मन वसै सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

3. नाम में रँगे हुए सतगुरु, साधु-संतों द्वारा

तेरै नाम निवे रहे लिव लाए॥ नानक तिन दर भीखिआ पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 721

जो तिन कीआ सो सच थीआ॥ अंम्रित नाम सतगुर दीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 352

नामै ही ते सभ किछ होआ बिन सतगुर नाम न जापै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

बिन सतगुर दाता को नही जो हर नाम दे आधार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1417

ऐसा नाम जपहो मन रंग॥ नानक पाईऐ साध कै संग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

मोहे निरगुण कउ प्रभ कीनी दइआ॥ साधसंग नानक नाम लइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

नाम केवल नाम के दाता गुरु से ही प्राप्त हो सकता है और कहीं से नहीं। इसी लिए गुरु नानक साहिब उपदेश देते हैं कि जहाँ कहीं से भी इस नाम का दान मिल सके, ले लो और गुरु की कृपा द्वारा उसकी कमाई करके जीवन सफल कर लो। इसमें जाति-पाँति का कोई बंधन नहीं (अधिक विस्तार के लिए देखें: 'गुरु' का प्रकरण):

जहां नाम मिलै तह जाउ॥ गुर परसादी करम कमाउ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 414-15

इस नाम की प्राप्ति के लिए किसी सतगुरु से दीक्षा लेना ज़रूरी है (देखें: 'दीक्षा' का प्रकरण) और सत्संग की आवश्यकता है, ताकि शिष्य सतगुरु की चुंबकीय हस्ती का असर लेकर जल्दी अंतर्मुख उन्नति कर सके। यदि कोई पुस्तकें पढ़कर अपने आप अभ्यास करता है तो उसको कोई फल प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि छोटी-सी ग़लती से गुमराह होने का डर है। अंदर जहाँ नाम की धाराएँ हैं वहाँ काल और माया की भी धाराएँ हैं जो हमें काम-क्रोध में गिरा देने का सामर्थ्य रखती हैं। जिनको गुरु की शरण प्राप्त नहीं वे निस्संदेह काल और माया के धोखे में आएँगे। जो बिना गुरु के धुनात्मक नाम को सुनने की कोशिश करेंगे, उनको काल और माया के शब्द सुनाई देंगे। शिष्य को चाहिए कि वह किसी ऐसे गुरु की शरण ले जो स्वयं आत्मिक मंडलों पर जाता हो। ऐसे गुरु से भेद लेकर घट में चलना सफल होगा।

नाम गुरुमुख को मिलता है, मनमुख को नहीं

जब तक सतगुरु न मिले नाम की समझ नहीं आती:

रसना नाम सभ कोई कहै॥ सतगुर सेवे ता नाम लहै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1262

नाम एक चेतन स्पर्श है जो संत-सतगुरु से शिष्य को प्राप्त होता है। यह आत्मिक जीवन-दान है, गुरु की दया दृष्टि द्वारा यह हमारे अंदर प्रकट हो जाता है। नाम है तो सबके अंदर पर जब तक शिष्य गुरुमुख नहीं बनता, यह दौलत नहीं मिलती। (देखें: 'गुरुमुख' का प्रकरण), मनमुख इससे ख़ाली रहते हैं:

नाम अखुट निधान है गुरमुख मन वसिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 787

घर ही सउदा पाईऐ अंतर सभ वथ होए॥
खिन खिन नाम समालीऐ गुरमुख पावै कोए॥
नाम निधान अखुट है वडभाग परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

नाम तुल कछु अवर न होए॥
नानक गुरमुख नाम पावै जन कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 265

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणिऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥
नानक नाए सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुख धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

बंधन तोड़ै मुकत होए सचे रहै समाए॥
इस जग मह नाम अलभ है गुरमुख वसै मन आए॥
नानक जो गुर सेवह आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

मनमुख नाम न जाणनी विण नावै पत जाए॥
सबदै साद न आइओ लागे दूजै भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

यह नाम का तत्त्व सबके अंदर है, पर बिना गुरु और बिना अभ्यास के यह प्रत्यक्ष नहीं होता और मनमुख इससे ख़ाली रहते हैं। यह कथनी का विषय नहीं है और न माँगने या किसी के कहने से मिल सकता है, यह तो करनी का मज़मून है। यदि हम किसी प्रोफ़ेसर से कहें कि वह रुपया लेकर हमें एम.ए. बना दे तो वह यही कहेगा कि पढ़ो और मेहनत करो। इसके लिए पढ़ना आवश्यक है। यह शक्ति है तो सबके अंदर, पर गुरु की दया द्वारा अभ्यास करने से जाग्रत की जा सकती है। चारों खानियाँ – अंडज, जरायुज, स्वेदज और उद्भिज्ज यानी वह सब पैदाइश जो अंडे से, पसीने से, जेर में लिपटी हुई और ज़मीन से होती है और चारों वाणियाँ (बैखरी, मध्यमा, पश्यंती और परा), सच्चे नाम के बिना भ्रम में भूली हुई हैं:

तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी॥ बिन नावै सभ भरम भुलाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 116

यह नाम केवल सतगुरु की सेवा से मिल सकता है, सतगुरु के बग़ैर इसकी प्राप्ति असंभव है:

गुर सेवा ते हर नाम पाइआ बिन सतगुर कोए न पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 116

नाम के फल

गुरबाणी में नाम के अनेक फलों का वर्णन किया गया है। नाम रूहानी जीवन की रोटी (ब्रेड ऑफ़ लाइफ़) है जिससे आत्मा बलवान होती है। यह आत्मिक जीवन का पानी (वाटर ऑफ़ लाइफ़) है जिससे रूह हरी होती है। रूह के सहारे शरीर भी बल प्राप्त करता है। नाम हर मसले का पिपलामूल है। वह आत्मिक जीवन को गति और वेग प्रदान करता है जिससे जीव सदा चढ़ती कला में रहता है।

1. नाम सब रोगों का एक ही इलाज है, वह सुख प्रदान करनेवाला है

सरब रोग का अउखद नाम॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 274

नाम दोनों लोकों में सहायता करता है और आगे साथ चलता है, इसके अलावा और कोई भी वस्तु साथ जानेवाली नहीं:

बाहर जनेऊ जिचर जोत है नाल॥ धोती टिका नाम समाल॥
ऐथै ओथै निबही नाल॥ विण नावै होर करम न भाल॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 355

रसना जपीऐ एक नाम॥
ईहा सुख आनंद घना आगै जीअ कै संग काम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 211

जिह मारग इह जात इकेला॥ तह हर नाम संग होत सुहेला॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

नाम मिलै चलै मै नाल॥ बिन नावै बाधी सभ काल॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 152

2. नाम को सुनने और मानने के फल

गुरु नानक साहिब ने जप जी की आठवीं से ग्यारहवीं पौड़ी (पदों) तक नाम को सुनने के फलों का वर्णन किया है:

सुणिऐ सिध पीर सुर नाथ॥ सुणिऐ धरत धवल आकास॥
सुणिऐ दीप लोअ पाताल॥ सुणिऐ पोह न सकै काल॥
नानक भगता सदा विगास॥ सुणिऐ दूख पाप का नास॥
सुणिऐ ईसर बरमा इंद॥ सुणिऐ मुख सालाहण मंद॥
सुणिऐ जोग जुगत तन भेद॥ सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद॥
नानक भगता सदा विगास॥ सुणिऐ दूख पाप का नास॥
सुणिऐ सत संतोख गिआन॥ सुणिऐ अठसठ का इसनान॥
सुणिऐ पड़ पड़ पावह मान॥ सुणिऐ लागै सहज धिआन॥
नानक भगता सदा विगास॥ सुणिऐ दूख पाप का नास॥
सुणिऐ सरा गुणा के गाह॥ सुणिऐ सेख पीर पातसाह॥
सुणिऐ अंधे पावह राह॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाह॥
नानक भगता सदा विगास॥ सुणिऐ दूख पाप का नास॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 2-3

हर एक के अंदर गूँजनेवाली नाम की धुन के प्रकट हो जाने के अनेक फल हैं। उसको सुनकर जीव सिद्ध, पीर और सुरनाथों का पद प्राप्त कर लेता है; जो शक्ति संपूर्ण उत्पत्ति, धरती-आकाश, दीप-लोकों और पातालों को सहारा दे रही है उससे परिचित हो जाता है और काल के प्रभाव से मुक्त हो जाता है। शिव, ब्रह्मा और विष्णु की ताक़तें उसके अंदर आ जाती हैं; नीच से नीच भी सबकी सराहना या स्तुति के योग्य हो जाता है। योग की प्राप्ति होती है और शरीर का भेद खुल जाता है; धर्म पुस्तकों, शास्त्रों, स्मृतियों और वेद आदि धर्म शास्त्रों के तात्पर्य का जानकार हो जाता है। उसको (धुन को) सुनने से सत्य, संतोष और सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है और अड़सठ तीर्थों जितनी पवित्रता अंदर आ जाती है। नाम की महिमा गाने से मनुष्य सब लोकों में आदर पाता है और तीनों गुणों से पार सहज में उसका ध्यान लग जाता है। उसको सुनने से सारे दैवी गुण अंदर आ जाते हैं। वह शेख़, पीर और सच्चा पातशाह बन जाता है। उसकी सुरत को आंतरिक मंडलों पर मार्ग मिल जाता है। नाम सुरत के लिए सहारे का काम देता है और इस तरह आत्मा मन-माया से परे, उनके प्रभाव से मुक्त, परम स्थान पर पहुँच जाती है। नाम के सुनने से सदा ख़ुशी और आनंद रहता है और सब दुःखों व पापों का नाश हो जाता है।

सुनने से उनका क्या अभिप्राय है? गुरु साहिब स्पष्ट कहते हैं कि उनका तात्पर्य केवल नाम के सुनने से है और किसी से नहीं:

नाए सुणिऐ सभ सिध है रिध पिछै आवै॥
नाए सुणिऐ नउ निध मिलै मन चिंदिआ पावै॥
नाए सुणिऐ संतोख होए कवला चरन धिआवै॥
नाए सुणिऐ सहज ऊपजै सहजे सुख पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

नाए सुणिऐ सुच संजमो जम नेड़ न आवै॥
नाए सुणिऐ घट चानणा आन्हेर गवावै॥
नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणीऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥
नानक नाए सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुख धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

नाए सुणिऐ मन रहसीऐ नामे सांत आई॥
नाए सुणिऐ मन त्रिपतीऐ सभ दुख गवाई॥
नाए सुणिऐ नाउ ऊपजै नामे वडिआई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

नाम को सुनकर जीव सचेत हो जाता है, मालिक के हुक्म को पहचानकर अपना जीवन उसके अनुसार ढालता है और अपनी इच्छा को उसकी इच्छा में मिला देता है। नाम के माननेवाले ऐसे लोगों की अवस्था का वर्णन जप जी साहिब की बारहवीं पौड़ी से लेकर पंद्रहवीं पौड़ी तक किया गया है:

मंने की गति कही न जाए॥ जे को कहै पिछै पछुताए॥
कागद कलम न लिखणहार॥ मंने का बह करन वीचार॥
ऐसा नाम निरंजन होए॥ जे को मंन जाणै मन कोए॥
मंनै सुरत होवै मन बुध॥ मंनै सगल भवण की सुध॥
मंनै मुह चोटा ना खाए॥ मंनै जम कै साथ न जाए॥
ऐसा नाम निरंजन होए॥ जे को मंन जाणै मन कोए॥
मंनै मारग ठाक न पाए॥ मंनै पत सिउ परगट जाए॥
मंनै मग न चलै पंथ॥ मंनै धरम सेती सनबंध॥

ऐसा नाम निरंजन होए॥ जे को मंन जाणै मन कोए॥
मंनै पावह मोख दुआर॥ मंनै परवारै साधार॥
मंनै तरै तारे गुर सिख॥ मंनै नानक भवह न भिख॥
ऐसा नाम निरंजन होए॥ जे को मंन जाणै मन कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.3

ऐसे पुरुषों की गति का वर्णन नहीं हो सकता। काग़ज़, कलम और बुद्धि में उनकी अवस्था का वर्णन करने का सामर्थ्य ही नहीं। नाम का मनन करके जीव जाग्रत हो जाता है, उसको सारे भुवनों का बोध हो जाता है, वह मोह-माया की चोट नहीं खाता और अंत समय में यम के हवाले नहीं होता।

नाम के माननेवाले को आत्मिक मंडलों पर कोई रुकावट नहीं होती, वह उन मंडलों में प्रकट यानी बेखटके जाता है और वहाँ सब उसका मान व आदर करते हैं। सच्चे धर्म (नाम) के साथ संबंध हो जाने के कारण वह यम की तंग गलियों में नहीं जाता। नाम को माननेवाला मोक्ष का द्वार पा लेता है और वह अपने परिवार का भी आधार बन जाता है। वह स्वयं भवसागर से तर जाता है और फिर गुरुमुख बनकर शिष्यों के उद्धार का कारण बन जाता है। वह कभी माया में फँसकर चक्कर नहीं खाता।

नाम मन-माया से रहित है, उसको मानने के अलौकिक फल हैं। यदि किसी के भाग्य में नाम हो, तभी वे प्राप्त कर सकते हैं, पर ऐसे भाग्यशाली बिरले ही हैं।

गुरवाणी इस विषय को और स्पष्ट करती है कि मानने से गुरु साहिबों की मुराद 'नाम को मानने' से ही है:

नाए मंनिऐ कुल उधरै सभ कुटंब सबाइआ॥
नाए मंनिऐ संगत उधरै जिन रिदै वसाइआ॥
नाए मंनिऐ सुण उधरे जिन रसन रसाइआ॥
नाए मंनिऐ दुख भुख गई जिन नाम चित लाइआ॥
नानक नाम तिनी सालाहिआ जिन गुरू मिलाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1241

नाए मंनिऐ दुरमत गई मत परगटी आइआ॥
नाउ मंनिऐ हउमै गई सभ रोग गवाइआ॥

नाए मंनिऐ नाम ऊपजै सहजे सुख पाइआ॥
नाए मंनिऐ सांत ऊपजै हर मंन वसाइआ॥
नानक नाम रतंन है गुरमुख हर धिआइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

नाए मंनिऐ सुरत ऊपजै नामे मत होई॥
नाए मंनिऐ गुण उचरै नामे सुख सोई॥
नाए मंनिऐ भ्रम कटीऐ फिर दुख न होई॥
नाए मंनिऐ सालाहीऐ पापां मत धोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

3. नाम की कमाई करके जन्म-जन्मांतरों का सोया हुआ जीव जाग्रत होकर अपने आप को पहचान लेता है

गुर परसाद नाम मन लागा॥ जनम जनम का सोइआ जागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 184

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

4. नाम में लीन होकर जीव का मालिक से मिलाप होता है और ज्योति जोत में समाती है, मालिक अंग-संग रहता है जीव का मुख उजला हो जाता है

नव निध नाम निधान रिध सिध ता की दासी॥
सहज सरोवर मिलिओ पुरख भेटिओ अबिनासी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1397

अनदिन नामे रतिआ जोती जोत समाए॥
जोती हू प्रभ जापदा बिन सतगुर बूझ न पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

जिना अंदर नाम निधान हर तिन के काज दयि आदे रास॥
तिन चूकी मुहताजी लोकन की हर प्रभ अंग कर बैठा पास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 305

नामे दरगह मुख उजले॥ नामे सगले कुल उधरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.863

5. नाम की कमाई से अंदर प्रकाश होता है, त्रिभुवन का पता चलता है और चौथे पद की प्राप्ति होती है

नामे ही घट चानणा नामे सोभा पाई॥ नामे ही सुख ऊपजै नामे सरणाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.426

नाम रते त्रिभवण सोझी होए॥ नानक नाम रते सदा सुख होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.941

कर किरपा जिस आपनै नाम लाए॥
नानक चउथे पद मह सो जन गति पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.284

6. नाम द्वारा जीव यम के फंदे से छूट जाता है, जन्म-मरण और नरकों से रहित हो सब बंधनों को तोड़कर मुक्त हो जाता है

जन नानक नाम धिआइआ मेरी जिंदुड़ीऐ जमकंकर नेड़ न आवै राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.540

नाए सुणिऐ सुच संजमो जम नेड़ न आवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1240

नामे नाम करे वीचार॥ आप तरै कुल उधरणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.362

नामे ही हम निरभउ भए॥ नामे आवन जावन रहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.863

नंना नरक परह ते नाही॥ जा कै मन तन नाम बसाही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.257

बंधन तोड़ै मुकत होए सचे रहै समाए॥
इस जग मह नाम अलभ है गुरमुख वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.644

गुरवाणी में नाम के और भी अनेक फलों का वर्णन आया है। नाम के अभ्यास से योग की युक्ति प्राप्त होती है और जन्म सफल होता है। मन तृप्त हो जाता है। काम, क्रोध, तृष्णा, ममता आदि छूट जाते हैं। पापों, विकारों और अहंकार का नाश होता है। जीव माया के ज़हर से बच जाता है और अंतर में सुख, आनंद और शीतलता का अनुभव होता है। नाम में लीन होना ही निरंतर तप है जिससे जीव निष्कर्म हो जाता है। उसके सामने कोई विघ्न नहीं आता, वह निर्मल हो जाता है और सच में समा जाता है। नाम का अभ्यासी सतगुरु को भाता है। जिसके हृदय में नाम है वह लाखों और करोड़ों का स्वामी है और सबका सम्राट है।

नाम विहीनों के अनेक दोषों का भी वाणी भली प्रकार वर्णन करती है। इस विषय में आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के प्रमाण दिए जाते हैं। पाठक विचार करें।

नाम के इन गुणों को ध्यान में रखकर गुरवाणी में नाम के अभ्यास का बड़ा आग्रहपूर्वक उपदेश आया है:

नाम जपहो मेरे गुरसिख मीता॥
नाम जपहो नामे सुख पावहो नाम रख गुरमत मन चीता॥
नामो नाम सुणी मन सरसा॥ नाम लाहा लै गुरमत बिगसा॥
नाम बिना कुसटी मोह अंधा॥ सभ निहफंल करम कीए दुख धंधा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

जब लग जोबन सास है तब लग नाम धिआए॥
चलदिआ नाल हर चलसी हर अंते लए छडाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

नाम की प्राप्ति के लिए बार-बार प्रार्थना की गई है:

हर के जन सतगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पास॥
हम कीरे किरम सतगुर सरणाई कर दइआ नाम परगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 492

जाचिक जाचै नाम तेरा सुआमी घट घट अंतर सोई रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

किसी नाम के रसिक (अभ्यासी) को गुरु के पास से नामदान प्राप्त करना आवश्यक है, ताकि नाम की कमाई द्वारा जन्म सफल हो और मालिक के दर पर मुख उजला हो जाए:

जिनी नाम धिआइआ गए मसकत घाल॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 8

गुरबाणी

1. नाम क्या है?

1.1. नाम कुलमालिक है और सब कुछ उसके वश में है

सच नाम पत ऊपजै करम नाम करतार॥
अहिनिस हिरदै जे वसै नानक नदरी पार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

पिंड पतल मेरी केसउ किरिआ सच नाम करतार॥
ऐथै ओथै आगै पाछै एह मेरा आधार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

एक बगीचा पेड घन करिआ॥ अंम्रित नाम तहा मह फलिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 385

जिस नो देवै तिस मिलै गुरमती नाम बुझाई॥
नानक सभ किछ नावै कै वस है पूरै भाग को पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

1.2. नाम अनादि और अनंत है

नाम रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुर गोबिंद॥
कहो नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंत॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1429

1.3. नाम सबका कर्ता है, सब कुछ नाम का पसारा है

नाम इसट मीत सुत करता मन संग तुहारै चालै॥
कर सेवा सतगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 213

नाम के धारे सगले जंत॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड॥
नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन॥
नाम के धारे आगास पाताल॥ नाम के धारे सगल आकार॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन॥ नाम कै संग उधरे सुन स्रवन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284

इह संसार सगल बिकार॥ तेरा नाम दारू अवर नासत करणहार अपार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1327

हर हर उतम नाम है जिन सिरिआ सभ कोए जीउ॥
हर जीअ सभे प्रतिपालदा घट घट रमईआ सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 81

नामै ही ते सभ किछ होआ बिन सतगुर नाम न जापै॥
गुर का सबद महा रस मीठा बिन चाखे साद न जापै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

जेता कीता तेता नाउ॥ विण नावै नाही को थाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 4

1.4. खंड-ब्रह्मांड और युग सब नाम के आसरे चल रहे हैं

खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुर परदा खोल दिखाइओ॥
नउ निध नाम निधान इक ठाई तउ बाहर कैठै जाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

अंतर रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी॥
नानक गुरमुख नाम अमोलक जुग जुग अंतर धारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1198

1.5. नाम अनंत और अमूल्य भंडार है और अपार ख़ज़ाना है

भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हर धन सच सोए॥
अखुट नाम धन कदे निखुटै नाही किनै न कीमत होए॥
नाम धन मुख उजले होए हर पाइआ सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 600

नाम अखुट निधान है गुरमुख मन वसिआ॥
कर किरपा नाम देवसी फिर लेख न लिखिआ॥
सेवक भाए से जन मिले जिन हर जप जपिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 787

घर ही सउदा पाईऐ अंतर सभ वथ होए॥
खिन खिन नाम समालीऐ गुरमुख पावै कोए॥
नाम निधान अखुट है वडभाग परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

लाल नाम जा कै भरे भंडार॥ सगल घटा देवै आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

काइआ अंदर तोल तुलावै आपे तोलणहारा॥
इह मन रतन जवाहर माणक तिस का मोल अफारा॥
मोल कित ही नाम पाईऐ नाही नाम पाईऐ गुर बीचारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

नाम अमोलक गुरमुख पावै॥ नामो सेवे नाम सहज समावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

लाल अमोला लालो॥ अगह अतोला नामो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1006

साचे नाम की तिल वडिआई॥ आख थके कीमत नही पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 9

नावै की कीमत मित कही न जाए॥
से जन धंन जिन इक नाम लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 666

हम घर नाम खजाना सदा है भगति भरे भंडारा॥
सतगुर दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 593

मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नाम निधान॥
अंतरजामी सदा संग करणैहार पछान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.46

हर का नाम निधान है जिस अंत न पारावार॥
गुरमुख सेई सोहदे जिन किरपा करे करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.65

जा कै हिरदै दीओ गुर नामा॥ कहो नानक ता कै सगल निधाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.186

राज जोबन अवध जो दीसै सभ किछ जुग मह घाटिआ॥
नाम निधान सद नवतन निरमल इह नानक हर धन खाटिआ॥

गुरु अर्जुन देव आदि ग्रन्थ, पृ.207

नाम निधान गुरमुख जो जपते॥ बिख माइआ मह ना ओए खपते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.257

एह निधान जपै वडभागी जीउ॥ नाम निरंजन एक लिव लागी जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.217

नाम निधान अपार भगता मन वसै॥ जनम मरण मोह दुख साधू संग नसै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.761

1.6. नाम अमृत है और पतित-पावन है

अंम्रित प्रिअ का नाम मै अंधुले टोहनी॥
ओह जोहै बहु परकार सुंदर मोहनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.847

सो संचिओ जित भूख तिसाइओ॥ अंम्रित नाम तोसा नही पाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.715

नउ निध अंम्रित प्रभ का नाम॥ देही मह इस का बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.293

अंम्रित नाम निधान है मिल पीवहो भाई॥
जिस सिमरत सुख पाईऐ सभ तिखा बुझाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.318

रतन जवेहर माणिका अंम्रित हर का नाउ॥
सूख सहज आनंद रस जन नानक हर गुण गाउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.48

अंम्रित साचा नाम है कहणा कछू न जाए॥
पीवत हू परवाण भइआ पूरै सबद समाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.33

पतित पावन नाम नरहरि मंदभागीआं नही भाइओ॥
ते गरभ जोनी गालीअह जिउ लोन जलह गलाइओ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.985

1.7. नाम का सच्चा शाह (साहूकार) मालिक स्वयं है

रतन पदारथ हर नाम तुमारा जीउ॥
तूं सचा साहु भगत वणजारा जीउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.217

1.8. नाम सच्चा सौदा है, वह धुन, वाणी या शब्द है

मन मह माणक लाल नाम रतन पदारथ हीर॥
सच वखर धन नाम है घट घट गहिर गंभीर॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.22

गुण गोबिंद नाम धुन बाणी॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.296

हिरदै नाम सदा धुन निहचल घटै न कीमत पाई॥
बिन नावै सभ कोई निरधन सतगुर बूझ बुझाई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1232

धंन धंन से साह है जे नाम करह वापार॥
वणजारे सिख आवदे सबद लघावणहार॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.313

1.9. नाम सहज में पहुँचाने का माध्यम और साधन है

ग्रिह बनह तीरै बरत पूजा बाट घाटै जोहनी॥
नानक पइअंपै दइआ धारहो मै नाम अंधुले टोहनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 847

मै अंधुले की टेक तेरा नाम खुंदकारा॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नाम है अधारा॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 727

1.10. नाम भक्तों की पूँजी है, गुरु इसका शाह (साहूकार) है और शिष्य बनजारे हैं

खरच खजाना नाम धन इआ भगतन की रास॥
खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहे गुणतास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 253

धंन धंन से साह है जे नाम करह वापार॥
वणजारे सिख आवदे सबद लघावणहार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

गुपता नाम वरतै विच कलजुग घट घट हर भरपूर रहिआ॥
नाम रतन तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भज पइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

2. नाम कहाँ है ?

2.1. सच्चा नाम गुप्त और दुर्लभ है

गुपता नाम वरतै विच कलजुग घट घट हर भरपूर रहिआ॥
नाम रतन तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भज पइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

बंधन तोड़ै मुकत होए सचे रहै समाए॥
इस जग मह नाम अलभ है गुरमुख वसै मन आए॥
नानक जो गुर सेवह आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

जुग माहे नाम दुलंभ है गुरमुख पाइआ जाए॥
बिन नावै मुकत न होवई वेखहो को विउपाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 490

2.2. गुप्त नाम घट-घट में है

मन मह माणक लाल नाम रतन पदारथ हीर॥
सच वखर धन नाम है घट घट गहिर गंभीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 22

हर हर उतम नाम है जिन सिरिआ सभ कोए जीउ॥
हर जीअ सभे प्रतिपालदा घट घट रमईआ सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 81

नउ निध अंम्रित प्रभ का नाम॥ देही मह इस का बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

हिरदै नाम सरब धन धारण गुर परसादी पाईऐ॥
अमर पदारथ ते किरतारथ सहज धिआन लिव लाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1127

इस काइआ अंदर बहुत पसारा॥ नाम निरंजन अत अगम अपारा॥
गुरमुख होवै सोई पाए आपे बखस मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

गुपता नाम वरतै विच कलजुग घट घट हर भरपूर रहिआ॥
नाम रतन तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भज पइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

हिरदै नाम सदा धुन निहचल घटै न कीमत पाई॥
बिन नावै सभ कोई निरधन सतगुर बूझ बुझाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1232

जाचिक जाचै नाम तेरा सुआमी घट घट अंतर सोई रे॥
नानक दास ता की सरणाई जा ते ब्रिथा न कोई रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

पूरा मारग पूरा इसनान॥ सभ किछ पूरा हिरदै नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 188

जो तिन कीआ सो सच थीआ॥ अंम्रित नाम सतगुर दीआ॥
हिरदै नाम नाही मन भंग॥ अनदिन नाल पिआरे संग॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 352

सच नाम पत ऊपजै करम नाम करतार॥
अहिनिस हिरदै जे वसै नानक नदरी पार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

घर ही सउदा पाईऐ अंतर सभ वथ होए॥
खिन खिन नाम समालीऐ गुरमुख पावै कोए॥
नाम निधान अखुट है वडभाग परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

सो धन वखर नाम रिदै हमारै॥ जिस तू देह तिसै निसतारै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 991

बेद पुराण सासत्र बीचारं॥ एकंकार नाम उर धारं॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1361

मन द्रिड़ कर आसण बैस जोगी ता तेरी कलपणा जाई॥
काइआ नगरी मह मंगण चड़ह जोगी ता नाम पलै पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

2.3. नाम इंद्रियों की हद से परे है

अद्रिसट अगोचर नाम अपारा॥ अत रस मीठा नाम पिआरा॥
नानक कउ जुग जुग हर जस दीजै हर जपीऐ अंत न पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041-42

3. नाम के लक्षण

3.1. वेद-शास्त्रों, दान-पुण्य, तीर्थ-यात्रा, पूजा और अन्य अनेक कर्मों-धर्मों से नाम कहीं उत्तम और ऊँचा है

पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपर नाम॥ हर हर रसना जो जपै तिस पूरन काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 401

बेद सासत्र जन धिआवह तरण कउ संसार॥
करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपर नाम अचार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

हउ अनदिन नाम लई करतारे॥ जिन सेवक भगत सभे निसतारे॥
दस अठ चार वेद सभ पूछहो जन नानक नाम छडाई जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 998

सिम्रिति बेद पुराण पुकारन पोथीआ॥ नाम बिना सभ कूड़ गाल्ही होछीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 761

आठ पहर सिमरहो प्रभ नाम॥ अनिक तीरथ मजन इसनान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 184

सभ कोए मीठा मंग देखै खसम भावै सो करे॥
किछ पुंन दान अनेक करणी नाम तुल न समसरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

पूजा जाप ताप इसनान॥ सिमरत नाम भए निहकाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1137

जाप ताप गिआन सभ धिआन॥ खट सासत्र सिम्रिति वखिआन॥
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ॥ सगल तिआग बन मधे फिरिआ॥
अनिक प्रकार कीए बहु जतना॥ पुंन दान होमे बहु रतना॥
सरीर कटाए होमै कर राती॥ वरत नेम करै बहु भाती॥
नही तुल राम नाम बीचार॥ नानक गुरमुख नाम जपीऐ इक बार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 265

नाम तुल कछु अवर न होए॥ नानक गुरमुख नाम पावै जन कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 265

कल मै एक नाम किरपा निध जाहे जपै गति पावै॥
अउर धरम ता कै सम नाहन इह बिधि बेद बतावै॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 632

जे लख करम कमाईअह किछ पवै न बंधा॥
जन नानक कीता नाम धर होर छोडिआ धंधा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 396

हर का नाउ अत वड ऊचा ऊची हू ऊचा होई॥
अपड़ कोए न सकई जे सउ लोचै कोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1416

बानारसी तप करै उलट तीरथ मरै अगन दहै काइआ कलप कीजै॥
असुमेध जग कीजै सोना गरभ दान दीजै राम नाम सर तऊ न पूजै॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 973

3.2. नाम कभी मैला नहीं होता

सच पुराणा ना थीऐ नाम न मैला होए॥
गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ न आवण होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248

3.3. नाम अटल है, इसके बिना सब फ़ना (नाशवान) है

एको निहचल नाम धन होर धन आवै जाए॥
इस धन कउ तसकर जोहे न सकई ना ओचका लै जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 511

सो धन वखर नाम रिदै हमारै॥ जिस तू देह तिसै निसतारै॥
न इह धन जलै न तसकर लै जाए॥
न इह धन डूबै न इस धन कउ मिलै सजाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 991

तिआग सगल सिआनपा भज पारब्रहम निरंकार॥
एक साचे नाम बाझहो सगल दीसै छार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

खूब खूब खूब खूब खूब तेरो नाम॥ झूठ झूठ झूठ झूठ दुनी गुमान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1137

होर कूड़ पड़णा कूड़ बोलणा माइआ नाल पिआर॥
नानक विण नावै को थिर नही पड़ पड़ होए खुआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 84

3.4. नाम से ही जीव जीवित है, इसके बिना मौत है

जो प्रभ भावै सो थीऐ अवर न करणा जाए॥
जन नानक जीवै नाम लै हर देवहो सहज सुभाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26–27

आखा जीवा विसरै मर जाउ॥ आखण अउखा साचा नाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 349

आप जगाए सेई जागे गुर कै सबद वीचारी॥
नानक सेई मूए जे नाम न चेतह भगत जीवे वीचारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 911

नाम बिना नही जीविआ जाए। वडै भाग गुरमुख हर पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 366

रसना नाम करन सुण जीवे॥ प्रभ सिमर सिमर अमर थिर थीवे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1137

मेरे प्रीतमा हउ जीवा नाम धिआए॥
बिन नावै जीवण ना थीऐ मेरे सतगुर नाम द्रिड़ाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

3.5. और सब रस, रंग झूठे हैं, नाम मीठा, सच्चा और अपना रंग देनेवाला है

बिन हर भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभ झूठे॥
नाम रतन पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभ मूठे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

ता मै कहिआ कहण जा तुझै कहाइआ॥
अंम्रित हर का नाम मेरै मन भाइआ॥
नाम मीठा मनह लागा दूख डेरा ढाहिआ॥

सूख मन मह आए वसिआ जाम तै फुरमाइआ॥
नदर तुध अरदास मेरी जिंन आप उपाइआ॥
ता मै कहिआ कहण जा तुझै कहाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

नामो ही मन लागा मीठा॥ जल थल सभ मह नामो डीठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

अद्रिसट अगोचर नाम अपारा॥ अत रस मीठा नाम पिआरा॥
नानक कउ जुग जुग हर जस दीजै हर जपीऐ अंत न पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा॥
साद आइआ तिन हर जनां चख साधी डिठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 321

विखै कउड़तण सगल माहे जगत रही लपटाए॥
नानक जन वीचारिआ मीठा हर का नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320

नाम तेरा है साचा सदा मै मन भाणा॥
दूख गइआ सुख आए समाणा॥ गावन सुर नर सुघड़ सुजाणा॥
सुर नर सुघड़ सुजाण गावह जो तेरै मन भावहे॥
माइआ मोहे चेतह नाही अहिला जनम गवावहे॥
इक मूड़ मुगध न चेतह मूले जो आइआ तिस जाणा॥
नाम तेरा सदा साचा सोए मै मन भाणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

तेरा एको नाम मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहज सुभाए॥
भगती रंग न उतरै सहजे रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 85

नाम रते से निरमले गुर कै सहज सुभाए॥
मन तन राता रंग सिउ रसना रसन रसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

नानक नाम नाम जप जपिआ अंतर बाहर रंग॥
गुर पूरै उपदेसिआ नरक नाहे साधसंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 257

चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगन बहुत तरंग॥
अचरज रूप संतन रचे नानक नामह रंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 319

3.6. नाम में मस्ती है और वह एकरस है

सबदै का निबेड़ा सुण तू अउधू बिन नावै जोग न होई॥
नामे राते अनदिन माते नामै ते सुख होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

नाम इक रस रंग नामा नाम लागी लीउ॥
मीत साजन सखा बंधप हर एक नानक कीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1007

3.7. नाम आधार है

जैसे जनन जठर मह प्रानी ओह रहता नाम अधार॥
अनद करै सास सास सम्हारै ना पोहै अगनार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 379

कोए न किस ही संग काहे गरबीऐ॥
एक नाम आधार भउजल तरबीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 398

जन नानक नाम अधार टेक है बिन नावै अवर न कोए जीउ॥
जग उपजै बिनसै बिनस बिनासै लग गुरमुख असथिर होए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

नाम धन जिस जन कै पालै सोई पूरा साहा॥
नाम बिउहारा नानक आधारा नाम परापत लाहा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 680

प्रभ जी को नाम मनह साधारै॥
जीअ प्रान सूख इस मन कउ बरतन एह हमारै॥
नाम जात नाम मेरी पत है नाम मेरै परवारै॥
नाम सखाई सदा मेरै संग हर नाम मो कउ निसतारै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 713

मै अंधुले की टेक तेरा नाम खुदंकारा॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नाम है अधारा॥
संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 727

जन की भूख तेरा नाम अहार॥ तूं दाता प्रभ देवणहार॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 743

लाल नाम जा कै भरे भंडार॥ सगल घटा देवै आधार॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

नाम संग कीनो बिउहार॥ नामो ही इस मन का अधार॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

साच नाम अधार मेरा जिन भुखा सभ गवाईआ॥
कर सांत सुख मन आए वसिआ जिन इछा सभ पुजाईआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

कहै नानक सुणहो संतहो सबद धरहो पिआरो॥ साचा नाम मेरा आधारो॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

तेरा एक नाम तारे संसार॥ मै एहा आस एहो आधार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 24

सिमर सिमर नाम बारं बार॥ नानक जीअ का इहै अधार॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 295

भउ बिनसै अंम्रित रसै रंग रते निरंकार॥
दुख दारिद अपवित्रता नासह नाम अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 297

3.8. नाम वर दाता है

नामे ही नाम वरतदे नामे वरतारा॥
अंतर नाम मुख नाम है नामे सबद वीचारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

3.9. नाम आसरा है

हर संता नो होर थाउ नाही हर माण निमाणे॥
जन नानक नाम दीबाण है हर ताण सताणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 450

3.10. चारों युगों में सब लोगों का उद्धार नाम द्वारा हुआ है

जुग चारे नाम उतम सबद बीचार॥ कल मह गुरमुख उतरस पार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

नामे उधरे सभ जितने लोअ॥ गुरमुख जिना परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

एक नाम जुग चार उधारे सबदे नाम विसाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1055

3.11. कलियुग में केवल नाम का ही आधार है और किसी कर्म-धर्म का नहीं

सतजुग सत तेता जगी दुआपर पूजाचार॥
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कल केवल नाम अधार॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 346

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेस चहु वरना कउ साझा॥
गुरमुख नाम जपै उधरै सो कल मह घट घट नानक माझा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747

घूलह तउ मन जउ आवह सरना॥ नाम तत कल मह पुनहचरना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 254

कलजुग मह इक नाम उधार॥ नानक बोलै ब्रहम बीचार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1138

कल मै मुकत नाम ते पावत गुर यह भेद बतावै॥
कहो नानक सोई नर गरूआ जो प्रभ के गुन गावै॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 831

इस कलजुग मह करम धरम न कोई॥
कली का जनम चंडाल कै घर होई॥
नानक नाम बिना को मुकत न होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 161

इस जुग मह नाम निधान है नामो नाल चलै॥
एह अखुट कदे न निखुटई खाए खरचिउ पलै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1091

मेरे मन काहे रोस करीजै॥
लाहा कलजुग राम नाम है गुरमत अनदिन हिरदै रवीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1262

अब कलू आइओ रे॥ इक नाम बोवहो बोवहो॥
अन रूत नाही नाही॥ मत भरम भूलहो भूलहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

3.12. कलियुग में जिनको नाम मिला है, नानक उन पर क़ुर्बान है

कहो नानक ता कै बल जाउ॥ कलिजुग मह पाइआ जिन नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

3.13. असली पूजा नाम की है उसी से जीव का उद्धार है

हर की पूजा दुलंभ है संतहो कहणा कछू न जाई॥
संतहो गुरमुख पूरा पाई॥ नामो पूज कराई॥
हर बिन सभ किछ मैला संतहो किआ हउ पूज चड़ाई॥
हर साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मन वसाई॥
पूजा करै सभ लोक संतहो मनमुख थाए न पाई॥

सबद मरै मन निरमल संतहो एह पूजा थाए पाई॥
पवित पावन से जन साचे एक सबद लिव लाई॥
बिन नावै होर पूज न होवी भरम भुली लोकाई॥
गुरमुख आप पछाणै संतहो राम नाम लिव लाई॥
आपे निरमल पूज कराए गुर सबदी थाए पाई॥
पूजा करह पर बिधि नही जाणह दूजै भाए मल लाई॥
गुरमुख होवै सो पूजा जाणै भाणा मन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

4. नाम किस प्रकार मिलता है?

4.1. नाम मालिक की दया से मिलता है, जिस जीव को मालिक मोह-माया की नींद से जगाए, वही जाग सकता है

आपे थापे थाप उथापे॥ नानक नाम देवै हर आपे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

करणी कीरत नाम वसाई॥ आपे देवै ढिल न पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 363

नावै जेवड होर धन नाही कोए॥ जिस नो बखसे साचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

जनम मरण निवारीऐ दुख न जम पुर होए॥
नाम निधान सोई पाए क्रिपा करे प्रभ सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

जिस नो देवै तिस मिलै गुरमती नाम बुझाई॥
नानक सभ किछ नावै कै वस है पूरै भाग को पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

सभ नावै नो लोचदी जिस क्रिपा करे सो पाए॥
बिन नावै सभ दुख है सुख तिस जिस मंन वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

नाम अखुट निधान है गुरमुख मन वसिआ॥
कर किरपा नाम देवसी फिर लेख न लिखिआ॥
सेवक भाए से जन मिले जिन हर जप जपिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 787

नाम अउखध सोई जन पावै॥ कर किरपा जिस आप दिवावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 179

कर किरपा जिस कउ नाम दीआ॥ नानक सो जन निरमल थीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 283

नाम खजाना भगती पाइआ मन तन त्रिपत अघाए॥
नानक हर जीउ ता कउ देवै जा कउ हुकम मनाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 208

किरपा करह गावा प्रभ सोए॥ नाम रतन सभ जग मह लोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

खिमा गही सच संचिओ खाइओ अंम्रित नाम॥
खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

हर हर नाम अमोलक हर पह हर देवै ता नाम धिआवीऐ रे॥
जिस नो नाम दे मेरा सुआमी तिस लेखा सभ छडावीऐ रे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1118

ता कै हिरदै बसिओ नाम॥ जा कउ सुआमी कीनो दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

नाम जपत सोऊ जन उधरै जिसह उधारहो आप॥
बिनस जाए मोह भै भरमा नानक संत प्रताप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1306–07

जिना हर का साद आइआ हउ तिन बलिहारै जास॥
नानक नदरी पाईऐ सच नाम गुणतास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

ए मन इह धन नाम है जित सदा सदा सुख होए॥
तोटा मूल न आवई लाहा सद ही होए॥
खाधै खरचिऐ तोट न आवई सदा सदा ओह दे॥
सहसा मूल न होवई हाणत कदे न होए॥
नानक गुरमुख पाईऐ जा कउ नदर करे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 555

नानका जिन नाम मिलिआ करम होआ धुर कदे॥
सभ उपाईअन आप आपे नदर करे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

सभ कोए मीठा मंग देखै खसम भावै सो करे॥
किछ पुंन दान अनेक करणी नाम तुल न समसरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

घर मंदर खुसी नाम की नदर तेरी परवार॥
हुकम सोई तुध भावसी होर आखण बहुत अपार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 16-17

जो प्रभ भावै सो थीऐ अवर न करणा जाए॥
जन नानक जीवै नाम लै हर देवहो सहज सुभाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26-27

आप जगाए सेई जागे गुर कै सबद वीचारी॥
नानक सेई मूए जे नाम न चेतह भगत जीवे वीचारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 911

4.2. धुर से बख़्शिश हो, पूरे भाग्य हों तब नाम मिलता है

नानका जिन नाम मिलिआ करम होआ धुर कदे॥
सभ उपाईअन आप आपे नदर करे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

जिन्ह धुर लिखिआ लेख तिन्ही नाम कमाइआ॥
दर सचै सचिआर महल बुलाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 369

धुर करम पाइआ तुध जिन कउ से नाम हर कै लागे॥
कहै नानक तह सुख होआ तित घर अनहद वाजे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

नाम मिलिऐ पत पाईऐ नाम मंनिऐ सुख होए॥
सतगुर ते नाम पाईऐ करम मिलै प्रभ सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233

जत सत संजम नाम है विण नावै निरमल न होए॥
पूरै भाग नाम मन वसै सबद मिलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

तिन हर धन पाइआ जिस पुरब लिखे का लहणा॥
जन नानक अंत वार नाम गहणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 375

वत लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाए॥
तिसह परापत नानका जिस नो लिखिआ आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 321

हर हर नाम पवित है नाम जपत दुख जाए॥
जिन कउ पूरब लिखिआ तिन मन वसिआ आए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1313

नाम निधान धिआईऐ मसतक होवै भाग॥
कारज सभ सवारीअह गुर की चरणी लाग॥
हउमै रोग भ्रम कटीऐ ना आवै ना जाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 47

4.3. वह नाम में रमे हुए सतगुरु से प्राप्त होता है, साधु-संग, गुरुमत और गुरु-प्रसाद द्वारा मिलता है

तेरै नाम निवे रहे लिव लाए॥ नानक तिन दर भीखिआ पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 721

जो तिन कीआ सो सच थीआ॥ अंम्रित नाम सतगुर दीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 352

सुख निधान नाम प्रभ तुमरा एह अबिनासी मंत्र लीओ॥
कर किरपा मोहे सतगुर दीना ताप संताप मेरा बैर गीओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 382

सतगुर नाम निधान द्रिड़ाइआ चिंता सगल बिनासी॥
कर किरपा अपुनो कर लीना मन वसिआ अबिनासी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 615-16

नामै ही ते सभ किछ होआ बिन सतगुर नाम न जापै॥
गुर का सबद महा रस मीठा बिन चाखे साद न जापै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

सतगुर ते नाम पाईऐ अउधू जोग जुगत ता होई॥
कर बीचार मन देखहो नानक बिन नावै मुकत न होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

पूरै सतगुर सोझी पाई॥ एको नाम मंन वसाई॥
नाम जपी तै नाम धिआई महल पाए गुण गाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1054

अनदिन नामे रतिआ जोती जोत समाए॥
जोती हू प्रभ जापदा बिन सतगुर बूझ न पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

मेरे प्रीतमा हउ जीवा नाम धिआए॥
बिन नावै जीवण ना थीऐ मेरे सतगुर नाम द्रिड़ाए॥
नाम अमोलक रतन है पूरे सतगुर पास॥
सतगुर सेवै लगिआ कढ रतन देवै परगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

नाम मिलिऐ पत पाईऐ नाम मंनिऐ सुख होए॥
सतगुर ते नाम पाईऐ करम मिलै प्रभ सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233

जे पुरख सुणै सो होए निहाल॥ नानक सतगुर मिलिऐ पाइआ नाम धन माल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 317

सतगुर मो कउ कीनो दान॥ अमोल रतन हर दीनो नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1157

हर हर क्रिपा करहो जगजीवन मै सरधा नाम लगावैगो॥
नानक गुरू गुरू है सतगुर मै सतगुर सरन मिलावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

सो साधू बैरागी सोई हिरदै नाम वसाए॥
अंतर लाग न तामस मूले विचहो आप गवाए॥
नाम निधान सतगुरू दिखालिआ हर रस पीआ अघाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

सचै सबद सची पत होई॥ बिन नावै मुकत न पावै कोई॥
बिन सतगुर को नाउ न पाए प्रभ ऐसी बणत बणाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1046

अंम्रित फल नाम जिन गुर ते पाइआ॥
नानक दास तरी तिन माइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 385

नाम पदारथ नउ निध सिध॥ नानक गुर ते पाई बुध॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 387

साचा नाम मेरा आधारो॥
साच नाम अधार मेरा जिन भुखा सभ गवाईआ॥
कर सांत सुख मन आए वसिआ जिन इछा सभ पुजाईआ॥
सदा कुरबाण कीता गुरू विटहो जिस दीआ एह वडिआईआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

गुर मिलिऐ नाम पाईऐ चूकै मोह पिआस॥
हर सेती मन रव रहिआ घर ही माहे उदास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

दूख संताप न लगई जिस हर का नाम अधार॥
बाह पकड़ गुर काढिआ सोई उतरिआ पार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

नाम धिआए सो सुखी तिस मुख ऊजल होए॥
पूरे गुर ते पाईऐ परगट सभनी लोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.44

नानक नाम नाम जप जपिआ अंतर बाहर रंग॥
गुर पूरै उपदेसिआ नरक नाहे साधसंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.257

नंनाकार न होता ता कहो॥ नाम मंत्र गुर दीनो जा कहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.257

नाए मंनिऐ दुख भुख गई जिन नाम चित लाइआ॥
नानक नाम तिनी सालाहिआ जिन गुरू मिलाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1241

सरब कला सोई परबीन॥ नाम मंत्र जा कउ गुर दीन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1298

हर ऊतम हर प्रभ नाम है गुर बचन सभागै लीता॥
दुख दालद सभो लह गइआ जां नाउ गुरू हर दीता॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1317

गुपता नाम वरतै विच कलजुग घट घट हर भरपूर रहिआ॥
नाम रतन तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भज पइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1334

बिन सतगुर दाता को नही जो हर नाम दे आधार॥
गुर किरपा ते नाउ मन वसै सदा रहै उर धार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1417

हर हर तेरा नाम है दुख मेटणहारा॥ गुर सेवा ते पाईऐ गुरमुख निसतारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.725

नाम निधान धिआईऐ मसतक होवै भाग॥
कारज सभ सवारीअह गुर की चरणी लाग॥
हउमै रोग भ्रम कटीऐ ना आवै ना जाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.47

नाम इसट मीत सुत करता मन संग तुहारै चालै॥
कर सेवा सतगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 213

हउमै त्रिसना मार कै सच रखिआ उर धार॥
जग मह लाहा एक नाम पाईऐ गुर वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

नाम रते से निरमले गुर कै सहज सुभाए॥
मन तन राता रंग सिउ रसना रसन रसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहज सुभाए॥
भगती रंग न उतरै सहजे रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 85

कहो नानक गुर मंत्र द्रिड़ाइआ॥ केवल नाम रिद माहे समाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 188

सपतम संचहो नाम धन टूट न जाहे भंडार॥
संतसंगत मह पाईऐ अंत न पारावार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 298

ऐसा नाम जपहो मन रंग॥ नानक पाईऐ साध कै संग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

प्रभ क्रिपाल किरपा करै। नाम नानक साधू संग मिलै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 211

साधसंग जपिओ भगवंत॥ केवल नाम दीओ गुर मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

मोहे निरगुण कउ प्रभ कीनी दइआ॥ साधसंग नानक नाम लइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

नाम अउखध मो कउ साधू दीआ॥ किलबिख काटे निरमल थीआ॥
अनद भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 101

संत जनहो मिल भाईहो सचा नाम समाल॥
तोसा बंधहो जीअ का ऐथै ओथै नाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

नाम जपहो मेरे गुरसख मीता॥
नाम जपहो नामे सुख पावहो नाम रखहो गुरमत मन चीता॥
नामो नाम सुणी मन सरसा॥ नाम लाहा लै गुरमत बिगसा॥
नाम बिना कुसटी मोह अंधा॥ सभ निहफल करम कीए दुख धंधा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

जप तप संजम मनै माहे बिन नावै ध्रिग जीवास॥
गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोह विणास॥
जिउ भावै तिउ राख तूं नानक तेरा दास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 86

सिधा सेवन सिध पीर मागह रिध सिध॥
मै इक नाम न वीसरै साचे गुर बुध॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 418–19

जिनी इक मन नाम धिआइआ गुरमती वीचार॥
तिन के मुख सद उंजले तित सचै दरबार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

मन मेरे नाम रते सुख होए॥ गुरमती नाम सलाहीऐ दूजा अवर न कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

सुपनंतर संसार सभ बाजी सभ बाजी खेल खिलावैगो॥
लाहा नाम गुरमत लै चालहो हर दरगह पैधा जावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

हर कीरत उतम नाम है विच कलिजुग करणी सार॥
मत गुरमत कीरत पाईऐ हर नामा हर उर हार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1314

सतगुर विच अंम्रित नाम है अंम्रित कहै कहाए॥
गुरमती नाम निरमलो निरमल नाम धिआए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

हिरदै नाम सरब धन धारण गुर परसादी पाइऐ॥
अमर पदारथ ते किरतारथ सहज धिआन लिव लाइऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1127

✓ जनम पदारथ पाए नाम धिआइआ॥
गुर परसादी बुझ सच समाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 369

जहां नाम मिलै तह जाउ॥ गुर परसादी करम कमाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414-15

मेरे मन मै हर बिन अवर न कोए॥
सतगुर विच नाम निधान है पिआरा कर दइआ अंम्रित मुख चोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 605

नाम अमोलक न पाइआ जाए॥ गुर परसाद वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 663

गुर परसाद नाम मन लागा॥ जनम जनम का सोइआ जागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 184

गुर प्रसाद जिन पाइआ नाम॥ नानक आइआ सो परवान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1145

नाम सिरोमण सरब मै भगत रहे लिव धार॥
सोई नाम पदारथ अमर गुर तुस दीओ करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1393

4.4. साधु और गुरु से नाम का गुरुमंत्र मिलता है

साधसंग जपिओ भगवंत॥ केवल नाम दीओ गुर मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

नंनाकार न होता ता कहो॥ नाम मंत्र गुर दीनो जा कहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 257

सरब कला सोई परबीन॥ नाम मंत्र जा कउ गुर दीन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

4.5. नाम गुरुमुख को नसीब होता है, मनमुख को नहीं

नाम बिना नही जीविआ जाए॥ वडै भाग गुरमुख हर पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 366

नाम जपहो गुरमुख परगासा॥
नाम बिना मै धर नही काई नाम रविआ सभ सास गिरासा॥
नामै सुरत सुनी मन भाई॥ जो नाम सुनावै सो मेरा मीत सखाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

अंतर नाम निधान गुरमुख पाईऐ॥ अनदिन नाम धिआए हर गुण गाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 369

नामै की सभ सेवा करै गुरमुख नाम बुझाई॥
नामहो ही नाम मंनीऐ नामे वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

जन नानक नाम अधार टेक है बिन नावै अवर न कोए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

ए मन इह धन नाम है जित सदा सदा सुख होए॥
तोटा मूल न आवई लाहा सद ही होए॥
खाधै खरचिऐ तोट न आवई सदा सदा ओह दे॥
सहसा मूल न होवई हाणत कदे न होए॥
नानक गुरमुख पाईऐ जा कउ नदर करे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 555

जुग माहे नाम दुलंभ है गुरमुख पाइआ जाए॥
बिन नावै मुकत न होवई वेखहो को विउपाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 490

नाम अखुट निधान है गुरमुख मन वसिआ॥
कर किरपा नाम देवसी फिर लेख न लिखिआ॥
सेवक भाए से जन मिले जिन हर जप जपिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 787

घर ही सउदा पाईऐ अंतर सभ वथ होए॥
खिन खिन नाम समालीऐ गुरमुख पावै कोए॥
नाम निधान अखुट है वडभाग परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

नाम अमोलक गुरमुख पावै॥ नामो सेवे नाम सहज समावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

जुग चारे नाम उतम सबद बीचार॥ कल मह गुरमुख उतरस पार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

नाम तुल कछु अवर न होए॥ नानक गुरमुख नाम पावै जन कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 265

नाम रतन जिन गुरमुख पाइआ॥ तिस किछ अवर नाही द्रिसटाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

नामे उधरे सभ जितने लोअ॥ गुरमुख जिना परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

अंतर रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी॥
नानक गुरमुख नाम अमोलक जुग जुग अंतर धारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1198

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणिऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥
नानक नाए सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुख धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

नाम जपहो मेरे साजन सैना॥
नाम बिना मै अवर न कोई वडै भाग गुरमुख हर लैना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 366

वडा वडा हर भाग कर पाइआ॥ नानक गुरमुख नाम दिवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

बंधन तोड़ै मुकत होए सचे रहै समाए॥
इस जग मह नाम अलभ है गुरमुख वसै मन आए॥
नानक जो गुर सेवह आपणा हउ तिन बलिहारै जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

बिन नावै कोए न मंनीऐ मनमुख पत गवाई॥
जम पुर बाधे मारीअह बिरथा जनम गवाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

बिन नावै को साथ न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ॥
दूजै भाए दुख होए मनमुख जम जोहिआ जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 690

पतित पावन नाम नरहरि मंदभागीआं नही भाइओ॥
ते गरभ जोनी गालीअह जिउ लोन जलह गलाइओ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 985

मनमुख नाम न जाणनी विण नावै पत जाए॥
सबदै साद न आइओ लागे दूजै भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

विण नावै होर सलाहणा सभ बोलण फिका साद॥
मनमुख अहंकार सलाहदे हउमै ममता वाद॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 301

4.6. मलीन मन द्वारा नाम नहीं मिलता

जिचर इह मन लहरी विच है हउमै बहुत अहंकार॥
सबदै साद न आवई नाम न लगै पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1247

मन मैलै भगति न होवई नाम न पाइआ जाए॥
मनमुख मैले मैले मुए जासन पत गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

5. नाम के अभ्यास का समय अमृत-वेला है

झालाघे उठ नाम जप निस बासुर आराध॥
काहाँ तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाध॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 255

अंम्रित वेला सच नाउ वडिआई वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 2

6. नाम की अवस्था

6.1. नानक के घर केवल नाम का उपदेश है

एह अहेरा कीनो दान॥ नानक कै घर केवल नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1136

6.2. जहाँ नाम मिले वहीं जाओ

जहां नाम मिलै तह जाउ॥ गुर परसादी करम कमाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414-15

6.3. नाम हमारे अंदर रच जाता है, वह सुरत और मन को भाता है, जो यह नाम सुनाए वह हमारा मित्र व सखा है

नाम रस जो जन त्रिपताने॥ मन तन नामह नाम समाने॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

नाम जपहो गुरमुख परगासा॥
नाम बिना मै धर नही काई नाम रविआ सभ सास गिरासा॥
नामै सुरत सुनी मन भाई॥ जो नाम सुनावै सो मेरा मीत सखाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

नाम रते से निरमले गुर कै सहज सुभाए॥
मन तन राता रंग सिउ रसना रसन रसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

6.4. नाम के अभ्यासी उठते-बैठते नाम का ध्यान करते हैं

ऊठत बैठत सोवत नाम॥ कहो नानक जन कै सद काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

7. नाम के फल

7.1. नाम दोनों जहानों में अंग-संग है, सहायता करता है, मृत्यु के बाद भी साथ रहता है, नाम के बिना कोई वस्तु साथ जानेवाली नहीं, नाम सभी रोगों का एक ही इलाज है

सरब रोग का अउखद नाम॥ कलिआण रूप मंगल गुण गाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 274

बाहर जनेऊ जिचर जोत है नाल॥ धोती टिका नाम समाल॥
ऐथै ओथै निबही नाल॥ विण नावै होर करम न भाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 355

रसना जपीऐ एक नाम॥ ईहा सुख आनंद घना आगै जीअ कै संग काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 211

जिह मारग इह जात इकेला॥ तह हर नाम संग होत सुहेला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

मेरे मन हर हर नाम धिआए॥ नाम सहाई सदा संग आगै लए छडाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 45

कहो नानक जो राचै नाए॥ हर माला ता कै संग जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 388

बिन नावै को साथ न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ॥
दूजै भाए दुख होए मनमुख जम जोहिआ जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 690

जब लग जोबन सास है तब लग नाम धिआए॥
चलदिआ नाल हर चलसी हर अंते लए छडाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

नाम मिलै चलै मै नाल॥ बिन नावै बाधी सभ काल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 152

नाम इसट मीत सुत करता मन संग तुहारै चालै॥
कर सेवा सतगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 213

जह मात पिता सुत मीत न भाई॥ मन ऊहा नाम तेरै संग सहाई॥
जह महा भइआन दूत जम दलै॥ तह केवल नाम संग तेरै चलै॥
जह मुसकल होवै अत भारी॥ हर को नाम खिन माहे उधारी॥...
जिह पैडै महा अंध गुबारा॥ हर का नाम संग उजीआरा॥
जहा पंथ तेरा को न सिञानू॥ हर का नाम तह नाल पछानू॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

7.2. नाम यानी शब्द से जन्म-जन्मांतरों का सोया हुआ मन जाग उठता है

गुर परसाद नाम मन लागा॥ जनम जनम का सोइआ जागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 184

आप जगाए सेई जागे गुर कै सबद वीचारी॥
नानक सेई मूए जे नाम न चेतह भगत जीवे वीचारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 911

7.3. नाम के द्वारा जीव अपने आप को पहचानता है

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणिऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥
नानक नाए सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुख धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

7.4. नाम में लीन होने से मालिक से मिलाप होता है, वह अंग-संग होता है, ज्योति जोत में मिल जाती है

नव निध नाम निधान रिध सिध ता की दासी॥
सहज सरोवर मिलिओ पुरख भेटिओ अबिनासी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1397

हिरदै नाम वडी वडिआई॥ सदा प्रीतम प्रभ होए सखाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.363

जिना अंदर नाम निधान हर तिन के काज दयि आदे रास॥
तिन चूकी मुहताजी लोकन की हर प्रभ अंग कर बैठा पास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.305

अनदिन नामे रतिआ जोती जोत समाए॥
जोती हू प्रभ जापदा बिन सतगुर बूझ न पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.35

7.5. नाम से मालिक के दर पर मुख उजला होता है, प्रशंसा मिलती है और जीव सब प्रकार के भय से रहित हो जाता है

भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हर धन सच सोए॥
अखुट नाम धुन कदे निखुटै नाही किनै न कीमत होए॥
नाम धन मुख उजले होए हर पाइआ सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.600

नामे दरगह मुख उजले॥ नामे सगले कुल उधरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.863

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणिऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥
नानक नाए सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुख धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1240

जिनी नाम धिआइआ गए मसकत घाल॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.8

नाम धिआए सो सुखी तिस मुख ऊजल होए॥
पूरे गुर ते पाईऐ परगट सभनी लोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.44

नामै की सभ सेवा करै गुरमुख नाम बुझाई॥
नामहो ही नाम मंनीऐ नांमे वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

पूरै सतगुर बूझ बुझाई॥ विण नावै मुकत किनै न पाई॥
नामे नाम मिलै वडिआई सहज रहै रंग राता हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1052

जिन नाउ पाइआ सो धनवंता जीउ॥
जिन प्रभ धिआइआ सो सोभावंता जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 217

जन नानक नाम अराध तू तिस अपड़ को न सकाही॥
नीवै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

सभ ते ऊच ता की सोभा बनी॥ नानक इह गुण नाम सुखमनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

नाम मिलिऐ पत पाईऐ नाम मंनिऐ सुख होए॥
सतगुर ते नाम पाईऐ करम मिलै प्रभ सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233

भै मह रचिओ सभ संसारा॥ तिस भउ नाही जिस नाम अधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 192

भउ बिनसै अंम्रित रसै रंग रते निरंकार॥
दुख दारिद अपवित्रता नासह नाम अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 297

नामे ही हम निरभउ भए॥ नामे आवन जावन रहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

भलो समो सिमरन की बरीआ॥ सिमरत नाम भै पार उतरीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 190

7.6. नाम के द्वारा जीव अमर और स्थिर हो जाता है

जन नानक नाम अधार टेक है बिन नावै अवर न कोए जीउ॥
जग उपजै बिनसै बिनस बिनासै लग गुरमुख असथिर होए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

कूड़ा रंग कसुंभ का बिनस जाए दुख रोए॥
जिस अंदर नाम प्रगास है ओह सदा सदा थिर होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27–28

7.7. जप, तप आदि सभी क्रियाएँ पूर्ण हो जाती हैं

पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपर नाम॥
हर हर रसना जो जपै तिस पूरन काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 401

नाम धिआए ता सतगुरु भाए जो इछै सो फल पाए॥
नानक तिस दा सभ किछ होवै जे विचहो आप गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

नाम निधान धिआईऐ मसतक होवै भाग॥
कारज सभ सवारीअह गुर की चरणी लाग॥
हउमै रोग भ्रम कटीऐ ना आवै ना जाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 47

धर जीअरे इक टेक तू लाह बिडानी आस॥
नानक नाम धिआईऐ कारज आवै रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 257

नामो गिआन नाम इसनाना हर नाम हमारे कारज सवारै॥
हर नामो सोभा नाम बडाई भउजल बिखम नाम हर तारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1302

7.8. अंदर प्रकाश होता है

नामे ही घट चानणा नामे सोभा पाई॥ नामे ही सुख ऊपजै नामे सरणाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

नाए सुणिऐ सुच संजमो जम नेड़ न आवै॥
नाए सुणिऐ घट चानणा आन्हेर गवावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

तेरा नाम रतन करम चानण सुरत तिथै लोए॥
अंधेर अंधी वापरै सगल लीजै खोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1327

सूख अराधन दूख अराधन बिसरै न काहू बेरा॥
नाम जपत कोट सूर उजारा बिनसै भरम अंधेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 700

7.9. त्रिभुवन का बोध होता है

नाम रते त्रिभवण सोझी होए॥ नानक नाम रते सदा सुख होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 941

7.10. नाम ऋद्धि-सिद्धि का देनेवाला है

नाम पदारथ नउ निध सिध॥ नानक गुर ते पाई बुध॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 387

आप सुजाण न भुलई सचा वड किरसाण॥
पहिला धरती साध कै सच नाम दे दाण॥
नउ निध उपजै नाम एक करम पवै नीसाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

सगल पदारथ असट सिध नाम महा रस माहे॥
सुप्रसंन भए केसवा से जन हर गुण गाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 203

नाए सुणिऐ सभ सिध है रिध पिछै आवै॥
नाए सुणिऐ नउ निध मिलै मन चिंदिआ पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

असट सिध नव निध एह॥ करम परापत जिस नाम देह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1184

नव निध नाम निधान रिध सिध ता की दासी॥
सहज सरोवर मिलिओ पुरख भेटिओ अबिनासी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1397

7.11. नाम से सहज की और चौथे पद की प्राप्ति होती है, जीव मालिक को स्वीकार होता है

कर किरपा जिस आपनै नाम लाए॥
नानक चउथे पद मह सो जन गति पाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284

नाए सुणिऐ सहज ऊपजै सहजे सुख पावै॥
गुरमती नाउ पाईऐ नानक गुण गावै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

सबद वीचारी करणी सारी राम नाम नीसाणो॥
नाम बिना खोटे नही ठाहर नाम रतन परवाणो॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 765

7.12. नाम यम के फंदे से छुड़ाता है

जनम मरण निवारीऐ दुख न जम पुर होए॥
नाम निधान सोई पाए क्रिपा करे प्रभ सोए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

दीवा मेरा एक नाम दुख विच पाइआ तेल॥
उन चानण ओह सोखिआ चूका जम सिउ मेल॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

सा वेला सो मूरत सा घड़ी सो मुहत सफल है मेरी जिंदुड़ीए
जित हर मेरा चित आवै राम॥
जन नानक नाम धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए
जमकंकर नेड़ न आवै राम॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 540

आवहो मिलहो सहेलीहो मेरे लाल जीउ हर हर नाम अराधे राम॥
कर सेवहो पूरा सतगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारग साधे राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 542

चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कित॥
नानक नाम समाल तूं बधा छुटह जित॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

लिख नाम सालाह लिख लिख अंत न पारावार॥
बाबा एह लेखा लिख जाण॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होए सचा नीसाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 16

जीअरे ओल्हा नाम का॥ अवर जे करन करावनो तिन मह भउ है जाम का॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 211

नाए सुणिऐ सुच संजमो जम नेड़ न आवै॥
नाए सुणिऐ घट चानणा आन्हेर गवावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

अफरिओ जम मारिआ न जाई॥ गुर कै सबदे नेड़ न आई॥
सबद सुणे ता दूरहो भागै मत मारे हर जीउ वेपरवाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1054

7.13. नाम के द्वारा जीव भवसागर तर जाता है

नामे नाम करे वीचार॥ आप तरै कुल उधरणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 362

नामे दरगह मुख उजले॥ नामे सगले कुल उधरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

7.14. जीव जन्म-मरण से रहित हो जाता है और वह नरकों में नहीं जाता

नाम धन नाम सुख राजा नाम कुटंब सहाई॥
नाम संपत गुर नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 497

नंना नरक परह ते नाही॥ जा कै मन तन नाम वसाही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.257

नामे ही हम निरभउ भए॥ नामे आवन जावन रहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.863

अनिक जोनि जनमै मर जाम॥ नाम जपत पावै बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.264

गंगा जल गुर गोबिंद नाम॥
जो सिमरै तिस की गति होवै पीवत बहुड़ न जोनि भ्रमाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1137

जनम जनम का संसा चूका रतन नाम जब पाइआ॥
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहे समाइआ॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ.1186

जनम मरण निवारीऐ दुख न जम पुर होए॥
नाम निधान सोई पाए क्रिपा करे प्रभ सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.405

नाम निधान धिआईऐ मसतक होवै भाग॥
कारज सभ सवारीअह गुर की चरणी लाग॥
हउमै रोग भ्रम कटीऐ ना आवै ना जाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.47

7.15. जीव बंधन तोड़कर मुक्त हो जाता है

नाम निधान जिन जन जपिओ तिन के बंधन काटे॥
काम क्रोध माइआ बिख ममता इह बिआध ते हाटे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.496

जुग माहे नाम दुलंभ है गुरमुख पाइआ जाए॥
बिन नावै मुकत न होवई वेखहो को विउपाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.490

कल मै एक नाम किरपा निध जाहे जपै गति पावै॥
अउर धरम ता कै सम नाहन इह बिधि बेद बतावै॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 632

बंधन तोड़ै मुकत होए सचे रहै समाए॥
इस जग मह नाम अलभ है गुरमुख वसै मन आए॥
नानक जो गुर सेवह आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

नाम रते जोग जुगत बीचार॥ नाम रते पावह मोख दुआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 941

सतगुर ते नाम पाईऐ अउधू जोग जुगत ता होई॥
कर बीचार मन देखहो नानक बिन नावै मुकत न होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

सचै सबद सची पत होई॥ बिन नावै मुकत न पावै कोई॥
बिन सतगुर को नाउ न पाए प्रभ ऐसी बणत बणाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1046

पूरै सतगुर बूझ बुझाई॥ विण नावै मुकत किनै न पाई॥
नामे नाम मिलै वडिआई सहज रहै रंग राता हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1052

इस कलिजुग मह करम धरम न कोई॥
कली का जनम चंडाल कै घर होई॥
नानक नाम बिना को मुकत न होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 161

लाख करोरी बंध न परै॥ हर का नाम जपत निसतरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

7.16. नाम के बिना जीव और किसी उपाय से छूट या तर नहीं सकता

गन मिन देखहो सगल बीचार॥ नाम बिना को सकै न तार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 893

हउ अनदिन नाम लई करतारे॥ जिन सेवक भगत सभ निसतारे॥
दस अठ चार वेद सभ पूछहो जन नानक नाम छडाई जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 998

सभ सुख मुकत नाम धुन बाणी सच नाम उर धारी॥
नाम बिना नही छूटस नानक साची तर तू तारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1013

7.17. योग की युक्ति मिलती है

सबदै का निबेड़ा सुण तू अउधू बिन नावै जोग न होई॥
नामे राते अनदिन माते नामै ते सुख होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

नाम रते जोग जुगत बीचार॥ नाम रते पावह मोख दुआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 941

सतगुर ते नाम पाईऐ अउधू जोग जुगत ता होई॥
कर बीचार मन देखहो नानक बिन नावै मुकत न होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

7.18. मन तृप्त हो जाता है

नाम मिलै मन त्रिपतीऐ बिन नामै ध्रिग जीवास॥
कोई गुरमुख सजण जे मिलै मै दसे प्रभ गुणतास॥
हउ तिस विटहो चउ खंनीऐ मै नाम करे परगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

7.19. काम, क्रोध, तृष्णा, ममता आदि दूर हो जाते हैं और जन्म-जन्मांतरों के रोग मिट जाते हैं

नाम अउखध जिह रिदै हितावै॥ ताहे रोग सुपनै नही आवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 259

नाम निधान जिन जन जपिओ तिने के बंधन काटे॥
काम क्रोध माइआ बिख ममता इह बिआध ते हाटे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 496

नाम अवखध जिन जन तेरै पाइआ॥ जनम जनम का रोग गवाइआ॥
हर कीरतन गावहो दिन राती सफल एहा है कारी जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107-108

जनम जनम का संसा चूका रतन नाम जब पाइआ॥
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहे समाइआ॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1186

7.20. नाम से पाप, विकार और अहंकार नष्ट होते हैं

किलविख सभे उतरन नीत नीत गुण गाउ॥
कोट कलेसा ऊपजह नानक बिसरै नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

नाम अउखध मो कउ साधू दीआ॥ किलबिख काटे निरमल थीआ॥
अनद भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 101

अनिक पुनहचरन करत नही तरै॥ हर को नाम कोट पाप परहरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

हउ मैला मल कबहु न धोवै॥ हर का नाम कोट पाप खोवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणिऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

अवर उपाव सभ तिआगिआ दारू नाम लइआ॥
ताप पाप सभ मिटे रोग सीतल मन भइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 817

इह संसार सगल बिकार॥ तेरा नाम दारू अवर नासत करणहार अपार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1327

नामे राते हउमै जाए॥ नाम रते सच रहे समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 941

सो साधू बैरागी सोई हिरदै नाम वसाए॥
अंतर लाग न तामस मूले विचहो आप गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

हउमै त्रिसना मार कै सच रखिआ उर धार॥
जग मह लाहा एक नाम पाईऐ गुर वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

7.21. जीव माया के विष से बच जाता है

नाम निधान गुरमुख जो जपते॥ बिख माइआ मह ना ओए खपते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 257

7.22. जन्म सफल होता है

कहो नानक जो लाइआ नाम॥ सफल जनम ता का परवान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 389

7.23. नाम सुख, आनंद और शीतलता देनेवाला है

नाम मिलिऐ पत पाईऐ नाम मंनिऐ सुख होए॥
सतगुर ते नाम पाईऐ करम मिलै प्रभ सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233

जनम जनम का संसा चूका रतन नाम जब पाइआ॥
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहे समाइआ॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1186

जाणह बिरथा सभा मन की होर किस पह आख सुणाईऐ॥
विण नावै सभ जग बउराइआ नाम मिलै सुख पाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 382

सुख निधान नाम प्रभ तुमरा एह अबिनासी मंत्र लीओ॥
कर किरपा मोहे सतगुर दीना ताप संताप मेरा बैर गीओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 382

नामे ही घट चानणा नामे सोभा पाई॥
नामे ही सुख ऊपजै नामे सरणाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ., 426

सभ नावै नो लोचदी जिस क्रिपा करे सो पाए॥
बिन नावै सभ दुख है सुख तिस जिस मंन वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

ए मन इह धन नाम है जित सदा सदा सुख होए॥
तोटा मूल न आवई लाहा सद ही होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 555

नाम तेरा है साचा सदा मै मन भाणा॥ दूख गइआ सुख आए समाणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

नाम रते त्रिभवण सोझी होए॥ नानक नाम रते सदा सुख होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 941

सबदै का निबेड़ा सुण तू अउधू बिन नावै जोग न होई॥
नामे राते अनदिन माते नामै ते सुख होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआर॥
सेई सुखीए चहु जुगी जिना नाम अखुट अपार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

मन मेरे नाम रते सुख होए॥
गुरमती नाम सलाहीऐ दूजा अवर न कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

नाम धिआए सो सुखी तिस मुख ऊजल होए॥
पूरे गुर ते पाईऐ परगट सभनी लोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

मन मेरे एको नाम धिआए॥ सरब सुखा सुख ऊपजह दरगह पैधा जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 45

दूख रोग सोग बिसरै जब नाम॥ सदा अनंद जा हर गुण गाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ., 186

रसना जपीऐ एक नाम॥ ईहा सुख आनंद घना आगै जीअ कै संग काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 211

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ॥ हर का नाम जपत होए सुखीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

नाम धन नामो रूप रंग॥ नामो सुख हर नाम का संग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

बडभागी जपिआ प्रभ सोए॥ नानक नाम रते सुख होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 289

अंम्रित नाम निधान है मिल पीवहो भाई॥
जिस सिमरत सुख पाईऐ सभ तिखा बुझाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 318

त्रिसन न बूझी बहु रंग माइआ॥ नाम लैत सरब सुख पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

डिठा सभ संसार सुख न नाम बिन॥
तन धन होसी छार जाणै कोए जन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 322

साचे नाम की लागै भूख॥ उत भूखै खाए चलीअह दूख॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 9

दूख संताप न लगई जिस हर का नाम अधार॥
बाह पकड़ गुर काढिआ सोई उतरिआ पार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

हर हर तेरा नाम है दुख मेटणहारा॥
गुर सेवा ते पाईऐ गुरमुख निसतारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 725

अंतर चिंता नैणी सुखी मूल न उतरै भुख॥
नानक सचे नाम बिन किसै न लथो दुख॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 319

उठंदिआ बहंदिआ सवंदिआ सुख सोए॥
नानक नाम सलाहिऐ मन तन सीतल होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 321

महा कसट काटै खिन भीतर रसना नाम चितारे॥
सीतल सांत सूख हर सरणी जलती अगन निवारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 210

अवर उपाव सभ तिआगिआ दारू नाम लइआ॥
ताप पाप सभ मिटे रोग सीतल मन भइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 817

7.24. नाम सब भूख, तृष्णाओं और इच्छाओं को मिटा देता है

साचा नाम मेरा आधारो॥
साच नाम अधार मेरा जिन भुखा सभ गवाईआ॥
कर सांत सुख मन आए वसिआ जिन इछा सभ पुजाईआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

अंम्रित नाम निधान है मिल पीवहो भाई॥
जिस सिमरत सुख पाईऐ सभ तिखा बुझाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 318

7.25. नाम में लीन होना निरंतर तप है

नाम रते सिध गोसट होए॥ नाम रते सदा तप होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 941

7.26. नाम जपने से जीव निष्काम हो जाता है

बरन सहित जो जापै नाम॥ सो जोगी केवल निहकाम॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1167

7.27. कोई विघ्न नहीं पड़ता

राम रमहो बडभागीहो जल थल महीअल सोए॥
नानक नाम अराधिऐ बिघन न लागै कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 521

अनिक बिघन जह आए संघारै॥ हर का नाम ततकाल उधारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

7.28. सब मैल उतर जाते हैं, जीव निर्मल होता है

अहिनिस नाम जपहो रे प्राणी मैले हछे होही॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1254

जिनी गुरमुख नाम धिआइआ विचहो आप गवाए॥
ओए अंदरहो बाहरहो निरमले सचे सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

नाम अउखध मो कउ साधू दीआ॥ किलबिख काटे निरमल थीआ॥
अनद भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 101

नाए सुणिऐ आप बुझीऐ लाहा नाउ पावै॥
नाए सुणिऐ पाप कटीअह निरमल सच पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1240

भरीऐ हथ पैर तन देह॥ पाणी धोतै उतरस खेह॥
मूत पलीती कपड़ू होए॥ दे साबूण लईऐ ओह धोए॥
भरीऐ मत पापा कै संग॥ ओह धोपै नावै कै रंग॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 4

लागी मैल मिटै सच नाए॥ गुर परसाद रहै लिव लाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 352

7.29. नाम जपनेवाले सच में समा जाते हैं

मल कूड़ी नाम उतारीअन जप नाम होआ सचिआर॥
जन नानक जिस दे एह चलत हहे सो जीवउ देवणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 951

जिनी गुरमुख नाम धिआइआ विचहो आप गवाए॥
ओए अंदरहो बाहरहो निरमले सचे सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

हउमै त्रिसना मार कै सच रखिआ उर धार॥
जग मह लाहा एक नाम पाईऐ गुर वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.55

7.30. नाम का अभ्यासी सतगुरु को भाता है

नाम धिआए ता सतगुर भाए जो इछै सो फल पाए॥
नानक तिस दा सभ किछ होवै जे विचहो आप गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.754

7.31. जिसके हृदय में नाम है, वह लाखों-करोड़ों का मालिक है, सब का राजा है

कोट लाख सरब को राजा जिस हिरदै नाम तुमारा॥
जा कउ नाम न दीआ मेरै सतगुर से मर जनमह गावारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1003

8. नाम विहीन के दोष

8.1. नाम के बिना जीव मुर्दे के समान है

आप जगाए सेई जागे गुर कै सबद वीचारी॥
नानक सेई मूए जे नाम न चेतह भगत जीवे वीचारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.911

दुलभ देह पाई वडभागी॥ नाम न जपह ते आतम घाती॥
मर न जाही जिना बिसरत राम॥ नाम बिहून जीवन कउन काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 188

8.2. नाम के बिना जीव अंधा है और लूटा जा रहा है

काली हू फुन धउले आए॥ विण नावै गथ गइआ गवाए॥
दुरमत अंधुला बिनस बिनासै मूठे रोए पूकारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1027

नाम बिना जेतो लपटाइओ कछू नही नाही कछु तेरो॥
आगै द्रिसटि आवत सभ परगट ईहा मोहिओ भरम अंधेरो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1302

बिन हर भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभ झूठे॥
नाम रतन पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभ मूठे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

8.3. नाम के बिना सब कुछ निष्फल है

सगल सरीर आवत सभ काम॥ निहफल मानुख जपै नही नाम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 190

अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा॥
जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल ब्रिथे बिन नामा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 215

8.4. नाम के बिना माथे पर स्याही और मुँह काला है, जीव धिक्कारा हुआ है

नामहीन कालख मुख माइआ॥ नाम बिना ध्रिग ध्रिग जीवाइआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 366-67

बिन बूझे को थाए न पाई॥ नाम बिहूणै माथे छाई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 412

चहु जुग मैले मल भरे जिन मुख नाम न होए॥
भगति भाए विहूणिआ मुह काला पत खोए॥
जिनी नाम विसारिआ अवगण मुठी रोए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 57

जप तप संजम मनै माहे बिन नावै ध्रिग जीवास॥
गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोह विणास॥
जिउ भावै तिउ राख तूं नानक तेरा दास॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 86

नाम बिना नकटे नर देखहो तिन घस घस नाक वढीजै॥
साकत नर अहंकारी कहीअह बिन नावै ध्रिग जीवीजै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1325

जिन हर हिरदै नाम न वसिओ तिन सभ कारज फीक॥
जैसे सीगार करै देह मानुख नाम बिना नकटे नक कीक॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1336

8.5. नाम के बग़ैर करोड़ों क्लेश आ जाते हैं

किलविख सभे उतरन नीत नीत गुण गाउ॥
कोट कलेसा ऊपजह नानक बिसरै नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

8.6. नाम विहीन मूढ़ और नंगे हैं, उनकी देह सूनी है, वे दुःखी हैं, माया में पचे हुए हैं और पच-पचकर मरते हैं

नामहीण गए मूड़ नंगा॥ पच पच मुए बिख देख पतंगा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

जिन हर हिरदै नाम न बसिओ तिन मात कीजै हर बांझा॥
तिन सुंञी देह फिरह बिन नावै ओए खप खप मुए करांझा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 697

आसा मनसा बांधो बार॥ नाम बिना सूना घर बार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1187

सभ को वणज करे वापारा॥ विण नावै सभ तोटा संसारा॥
नागो आइआ नागो जासी विण नावै दुख पाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064

काम न करही आपणा फिरह अवता लोए॥
नानक नाए विसारिऐ सुख किनेहा होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320

मनमुख नाम न चेतनी बिन नावै दुख रोए॥
आतमा राम न पूजनी दूजै किउ सुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414-15

ऐसा जग देखिआ जूआरी॥ सभ सुख मागै नाम बिसारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 222

धन धन कहा पुकारते माइआ मोह सभ कूर॥
नाम बिहूने नानका होत जात सभ धूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250-51

8.7. नाम के बिना प्राणी अंदर से थोथा है, कूड़ा है, यम की नज़र में है, जन्म लेता और मरता रहता है

कण बिना जैसे थोथर तुखा॥ नाम बिहून सूने से मुखा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 192

निरभउ नाम विसारिआ नाल माइआ रचा॥
आवै जाए भवाईऐ बहु जोनी नचा॥
बचन करे तै खिसक जाए बोले सभ कचा॥
अंदरहो थोथा कूड़िआर कूड़ी सभ खचा॥
वैर करे निरवैर नाल झूठे लालचा॥
मारिआ सचै पातसाह वेख धुर करमचा॥
जमदूती है हेरिआ दुख ही मह पचा॥
होआ तपावस धरम का नानक दर सचा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1099

कोट लाख सरब को राजा जिस हिरदै नाम तुमारा॥
जा कउ नाम न दीआ मेरै सतगुर से मर जनमह गावारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1003

जिन हर हर हर रस नाम न पाइआ ते भागहीण जम पास॥
जो सतगुर सरण संगत नही आए ध्रिग जीवे ध्रिग जीवास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 10

नाराइण नह सिमरिओ मोहिओ सुआद बिकार॥
नानक नाम बिसारिऐ नरक सुरग अवतार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 298

8.8. नाम के बिना सब निम्न जाति के हैं, शोभा और लज्जा से हीन हैं, वे ख़्वार (परेशान) होते हैं

भगति रते से ऊतमा जत पत सबदे होए॥
बिन नावै सभ नीच जात है बिसटा का कीड़ा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

इस जुग मह सोभा नाम की बिन नावै सोभ न होए॥
इह माइआ की सोभा चार दिहाड़े जादी बिलम न होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 429

रते इसक खुदाए रंग दीदार के॥ विसरिआ जिन्ह नाम ते भुए भार थीए॥

बाबा फ़रीद, आदि ग्रन्थ, पृ. 488

किती बैहन्ह बैहणे मुच वजाइन वज॥
नानक सचे नाम विण किसै न रहीआ लज॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 518

नानक मूरख एक तू अवर भला सैसार॥
जित तन नाम न ऊपजै से तन होहे खुआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1328

पावत रलीआ जोबन बलीआ॥ नाम बिना माटी संग रलीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 385

8.9. नाम के बिना जन्म अकारथ है

जिन्ही नाम विसारिआ दूजै भरम भुलाई॥
मूल छोड डाली लगे किआ पावह छाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 420

मेरी मेरी किआ करह पुत्र कलत्र सनेह॥
नानक नाम विहूणीआ निमुणीआदी देह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1101

वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुर न देखै आए॥
कहत कबीर राम की न सिमरहो जनम अकारथ जाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1124

मैला हर के नाम बिन जीउ॥
तिन प्रभ साचै आप भुलाइआ बिखै ठगउरी पीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1224

इह जग मह राम नाम सो तउ नही सुनिओ कान॥
बिखिअन सिउ अत लुभान मत नाहिन फेरी॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1352

असथिर जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होए है खेह॥
किउ न हर को नाम लेह मूरख निलाज रे॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1353

8.10. नाम के बिना यम का भय और चौरासी का चक्कर बना रहता है

मन कहा बिसारिओ राम नाम॥ तन बिनसै जम सिउ परै काम॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1186

मत हर विसरिऐ जम वस पाहे॥ अंत काल मूड़े चोट खाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1189

सुरत गई काली हू धउले किसै न भावै रखिओ घरे॥
बिसरत नाम ऐसे दोख लागह जम मार समारे नरक खरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1014

जिउ आइआ तिउ जावह बउरे जिउ जनमे तिउ मरण भइआ॥
जिउ रस भोग कीए तेता दुख लागै नाम विसार भवजल पइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 906

कबीर ऊजल पहिरह कापरे पान सुपारी खाहे॥
एकस हर के नाम बिन बाधे जम पुर जांहे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1366

8.11. नाम विहीन काल की सीमा में है

नाम मिलै चलै मै नाल॥ बिन नावै बाधी सभ काल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 152

8.12. मालिक के दर पर नाम विहीनों की कोई पूछ नहीं

जलीआ सभ सिआणपा उठी चलिआ रोए॥
नानक नाम विसारिऐ दर गइआ किआ होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 17

8.13. नाम विहीन निर्धन और चोर हैं

कह कबीर निरधन है सोई॥ जा के हिरदै नाम न होई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1159

अगन बिंब पवणै की बाणी तीन नाम के दासा॥
ते तसकर जो नाम न लेवह वासह कोट पंचासा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1328

8.14. वे नाम को भुलाकर पछताते हैं

जिन दीए तिस बुझै न बिगाना॥ नाम बिसार नानक पछुताना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 288

9. नाम की आरती

नाम तेरो आरती मजन मुरारे॥ हर के नाम बिन झूठे सगल पासारे॥
नाम तेरो आसनो नाम तेरो उरसा नाम तेरा केसरो ले छिटकारे॥
नाम तेरा अंभुला नाम तेरो चंदनो घस जपे नाम ले तुझह कउ चारे॥
नाम तेरा दीवा नाम तेरो बाती नाम तेरो तेल ले माहे पसारे॥
नाम तेरे की जोत लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे॥
नाम तेरो तागा नाम फूल माला भार अठारह सगल जूठारे॥
तेरो कीआ तुझह किआ अरपउ नाम तेरा तुही चवर ढोलारे॥
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतण है सगल संसारे॥
कहै रविदास नाम तेरो आरती सत नाम है हर भोग तुहारे॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 694

हरिनाम और रामनाम

नाम कुलमालिक है, सबका कर्ता है, सब कुछ वही है और सब कुछ उसी से है। नाम के प्रकरण में इस बारे में खोलकर बताया गया है। कुलमालिक को गुरवाणी में हरि कहकर वर्णन किया गया है। (देखें: 'हरि राए' का प्रकरण)। नाम हरि से अभिन्न (अभेद) है, वह हरि का ही नाम है तथा हरि से निकलता है, इसलिए वह हरिनाम है। नाम के इस भाव को स्पष्ट करने के लिए गुरवाणी में नाम को कई स्थानों पर हरिनाम कहा गया है।

इसी तरह नाम सभी जगह रमा हुआ है। कोई स्थान उससे ख़ाली नहीं, वह सर्वव्यापक है। उसके सर्वव्यापी भाव को प्रकट करने के लिए गुरवाणी में नाम का रामनाम कहकर भी प्रयोग किया गया है और उसके वे ही फल बताए गए हैं जो नाम के हैं। राम का अर्थ है सब स्थानों में रमा हुआ है: रमतीता सो राम।

नाम की तरह गुरवाणी में हरिनाम का भी वर्णन किया गया है, जिसके अधिक विस्तार की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। पाठकों के विचार के लिए आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के थोड़े से प्रमाण दिए जाते हैं, उनसे पता लग जाएगा कि गुरवाणी में हरिनाम का ठीक उन्हीं अर्थों में प्रयोग किया गया है जो नाम या शब्द के अर्थ हैं।

गुरवाणी

1. हरिनाम क्या है?

1.1. नाम है

गिआनीआ का धन नाम है सहज करह वापार॥
अनदिन लाहा हर नाम लैन अखुट भरे भंडार॥
नानक तोट न आवई दीए देवणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.68-69

जे वड भाग होवह वडभागी ता हर हर नाम धिआवै॥
नाम जपत नामे सुख पावै हर नामे नाम समावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 880

1.2. शब्द है

राम नाम मन वेधिआ अवर कि करी वीचार॥
सबद सुरत सुख ऊपजै प्रभ रातउ सुख सार॥
जिउ भावै तिउ राख तूं मै हर नाम अधार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62

तज मान अभिमान प्रीत सुत दारा
तज पिआस आस राम लिव लावै॥
नानक साचा मन वसै साच सबद हर नाम समावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 141

रुण झुणो सबद अनाहद नित उठ गाईऐ संतन कै॥
किलविख सभ दोख बिनासन हर नाम जपीऐ गुर मंतन कै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

बिन सबदै तुधुनो कोई न जाणी॥
तुध आपे कथी अकथ कहाणी॥
आपे सबद सदा गुर दाता हर नाम जप संबाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1056

1.3. सच है

सच हर नाम सच है सरणा॥ सच गुर सबद जितै लग तरणा॥
अकथ कथै देखै अपरंपर फुन गरभ न जोनी जाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040

1.4. अनहद धुन है

हर नाम सलाहन नाम मन नाम रहन लिव लाए॥
अनहद धुनी दर वजदे दर सचै सोभा पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 42

1.5. अकथ कथा है

सुन मन अकथ कथा हर नाम॥
रिध बुध सिध सुख पावह भज गुरमत हर राम राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 719

1.6. वाणी है

चहु जुग मह अंम्रित साची बाणी॥ पूरै भाग हर नाम समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 665

सो किछ कर जित छुटह परानी॥ हर हर नाम जप अंम्रित बानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 741

1.7. ज्योति (प्रकाश) है

गुरमुख चोर न लाग हर नाम जगाईऐ॥
सबद निवारी आग जोत दीपाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 752

निरमल जोत अंम्रित हर नाम॥ पीवत अमर भए निहकाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886-87

गुर पूरै हर नाम दिड़ाइआ तिन विचहो भरम चुकाइआ॥
राम नाम हर कीरत गाई कर चानण मग दिखाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 86

हर हर नाम जपिआ दुख बिनसिआ हर नाम परम सुख पाइआ॥
सतगुर गिआन बलिआ घट चानण अगिआन अंधेर गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 444

हर नाम पिआरे सबद निसतारे अगिआन अधेर गवाइआ॥
गिआन प्रचंड बलिआ घट चानण घर मंदर सोहाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775

1.8. अमृत है

निरमल जोत अंम्रित हर नाम॥ पीवत अमर भए निहकाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886-87

हर का नाम अंम्रित जल निरमल इह अउखध जग सारा॥
गुर परसाद कहै जन भीखन पावउ मोख दुआरा॥

भीखन साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ॰659

हर का नाम अंम्रित कल माहे॥ एह निधाना साधू पाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰888

जल थल महीअल पूर रहिओ सरब नाथ अपार॥
हर नाम अंम्रित पीउ नानक आन रस सभ खार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰1227

चहु जुग मह अंम्रित साची बाणी॥ पूरै भाग हर नाम समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰665

सो किछ कर जित छुटह परानी॥ हर हर नाम जप अंम्रित बानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰741

हर हर नाम अपार अमोला अंम्रित एक निधाना॥
सूख सहज आनंद संतन कै नानक गुर ते जाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰672

1.9. महारस है

सिमरउ अपुना सांई॥ दिनस रैन सद धिआई॥
हाथ दे जिन राखे॥ हर नाम महा रस चाखे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰630

हर हर नाम धिआईऐ हर कीरत गुरमुख चाख॥
तन धरती हर बीजीऐ विच संगत हर प्रभ राख॥
अंम्रित हर हर नाम है गुर पूरै हर रस चाख॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰997

1.10. आधार है

मै हर हर नाम अधार रमईआ॥
खिन पल रह न सकउ बिन नावै गुरमुख हर हर पाठ पड़ईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰833

2. हरिनाम के लक्षण

2.1. वह मन का आहार है और सदैव साथ रहता है

मन का तोसा हर नाम है हिरदै रखहो सम्हाल॥
एह खरच अखुट है गुरमुख निबहै नाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.756

2.2. वह अविगत, अगोचर, अविनाशी और स्वयं विधाता पुरुष है

हर नाम हमारा प्रभ अबिगत अगोचर अबिनासी पुरख बिधाता॥
हर नाम हम स्रेवह हर नाम हम पूजह हर नामे ही मन राता॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.592

2.3. वह अपार और अमोल है

हर हर नाम अपार अमोला अंम्रित एक निधाना॥
सूख सहज आनंद संतन कै नानक गुर ते जाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.672

हर हर नाम अपार अमोली॥
प्रान पिआरो मनह अधारो चीत चितवउ जैसे पान तंबोली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.822

2.4. वह सर्वव्यापक है

प्रभ पूर रहिआ सरब ठाई हर नाम नव निध ग्रिह भरे॥
सिमर सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभ तरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.928

2.5. वह सच्चा सौदा है

सचा सउदा हर नाम है सचा वापारा राम॥
गुरमती हर नाम वणजीऐ अत मोल अफारा राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.570

2.6. हरिनाम वाला सम्पूर्ण सृष्टि का राजा है

बसता तूटी झुंपड़ी चीर सभ छिंना॥
जात न पत न आदरो उदिआन भ्रमिंना॥
मित्र न इठ धन रूपहीण किछ साक न सिंना॥

राजा सगली स्रिसटि का हर नाम मन भिंना॥
तिस की धूड़ मन उधरै प्रभ होए सुप्रसंना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.707

2.7. वह अति रसदायक है, अमूल्य है

हर का नाम मीठा अत रस होए॥ पीवत रहै पीआए सोए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.361

सो जानै जिन चाखिआ हर नाम अमोला॥
कीमत कही न जाईऐ किआ कह मुख बोला॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.808

हर हर नाम अपार अमोली॥
प्रान पिआरो मनह अधारो चीत चितवउ जैसे पान तंबोली॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.822

हर हर नाम जपहो रस मीठा॥ गुरमुख हर रस अंतर डीठा॥
अहिनिस राम रहहो रंग राते एह जप तप संजम सारा हे॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1030

2.8. वह संपूर्ण कर्मों-धर्मों, वेद-कतेब से ऊँचा है, हरिनाम ही असली कर्म-धर्म, ज्ञान-ध्यान और पूजा है

तन बैसंतर होमीऐ इक रती तोल कटाए॥
तन मन समधा जे करी अनदिन अगन जलाए॥
हर नामै तुल न पुजई जे लख कोटी करम कमाए॥
अरध सरीर कटाईऐ सिर करवत धराए॥
तन हैमंचल गालीऐ भी मन ते रोग न जाए॥
हर नामै तुल न पुजई सभ डिठी ठोक वजाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.62

खिन पल हर नाम मन वसै सभ अठसठ तीरथ नाए॥
सचे मैल न लगई मल लागै दूजै भाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.87

सभ तीरथ वरत जग पुंन तुलाहा॥ हर हर नाम न पुजह पुजाहा॥
हर हर अतुल तोल अत भारी गुरमत जप ओमाहा राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.699

करम धरम इह तत गिआन॥ साधसंग जपीऐ हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.866

मै अवर गिआन न धिआन पूजा हर नाम अंतर वस रहे॥
भेख भवनी हठ न जाना नानका सच गह रहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.844

2.9. नियम, संयम, तीर्थ आदि बीते युगों का धर्म है, कलियुग में केवल हरि नाम के कीर्तन का आदेश है, हरिनाम ही असली संयम और जप-तप है

चहु जुगा का हुण निबेड़ा नर मनुखा नो एक निधाना॥
जत संजम तीरथ ओना जुगा का धरम है कल मह कीरत हर नामा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.797

आचार तू वीचार आपे हर नाम संजम जप तपो॥
सखा सैन पिआर प्रीतम नाम हर का जप जपो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1113

हर नाम पदारथ कलिजुग ऊतम हर जपीऐ सतगुर भाए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.444

हर नाम अचरज प्रभ आप सुणाए॥
कली काल विच गुरमुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.666

3. हरिनाम कहाँ है?

3.1. वह काया के अंदर है

हर का मंदर आखीऐ काइआ कोट गड़॥
अंदर लाल जवेहरी गुरमुख हर नाम पड़॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.952

गुरमत नगरी खोज खोजाई॥ हर हर नाम पदारथ पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 732

मै अवर गिआन न धिआन पूजा हर नाम अंतर वस रहे॥
भेख भवनी हठ न जाना नानका सच गह रहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 844

गुरमुख भगति करहो सद प्राणी॥
हिरदै प्रगास होवै लिव लागै गुरमत हर हर नाम समाणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 880

4. हरिनाम किस प्रकार मिलता है ?

4.1. जीते-जी मरने से

अधिआतम करम जे करे नाम न कब ही पाए॥
गुर कै सबद जीवत मरै हर नाम वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

धावत राखै इकत घर आणै॥ जीवत मरै हर नाम वखाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 88

4.2. इंद्रिय दमन से

एकादसी निकट पेखहो हर राम॥ इंद्री बस कर सुणहो हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299

4.3. मालिक की दया से

जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिस गुर की सिख सुणाए॥
हर नाम धिआवै हर नामो गावै हर नामो अंत छडाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 512

तेरै हथ निधान भावै तिस देह॥
जिस नो होए दइआल हर नाम से लेह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 521

हर आपे साहु सराफ रतन हीरा हर आप कीआ पासारा॥
नानक जिस क्रिपा करे सो हर नाम विहाझे सो साहु सचा वणजारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 720

रात दिहै हर नाउ मंन वसाईऐ॥ नानक मेल मिलाए जे तुध भाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 752

हर किरपा धारी दासन दास॥ जन नानक हर नाम धन रास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 796

हर के गुण गावा जे हर प्रभ भावा॥ अंतर हर नाम सबद सुहावा॥
गुरवाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नाम समाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1065

हर नाम अचरज प्रभ आप सुणाए॥ कली काल विच गुरमुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 666

अहिनिस लाहा हर नाम परापत गुर दाता देवणहार॥
गुरमुख सिख सोई जन पाए जिस नो नदर करे करतार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1256

4.4. बड़े भाग्य से

जिन कउ आप दइआल होए तिन उपजै मन गिआन॥
जिन कउ मसतक लिखिआ तिन पाइआ हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 45

नानक से वडभागी जिन हर नाम धिआइआ॥
गुर परसादी मंन वसाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 560

हर हर नाम मै हर मन भाइआ॥ वडभागी हर नाम धिआइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 94

हर नाम अराधह से धंन जन कहीअह
तिन मसतक भाग धुर लिख पावीऐ रे॥
तिन देखे मेरा मन बिगसै जिउ
सुत मिल मात गल लावीऐ रे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1118

हर का संत हर की हर मूरत जिस हिरदै हर नाम मुरार॥
मसतक भाग होवै जिस लिखिआ सो गुरमत हिरदै हर नाम सम्हार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1134-35

हर हर नाम तिनी आराधिआ जिन मसतक धुर लिख पाए जीउ॥
हर नाम पदारथ कलिजुग ऊतम हर जपीऐ सतगुर भाए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 444

जे वड भाग होवह वडभागी ता हर हर नाम धिआवै॥
नाम जपत नामे सुख पावै हर नामे नाम समावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 880

सिव सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा॥
धुर मसतक जिन कउ लिखिआ तिन हर नाम पिआरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

5. हरिनाम संत-सतगुरु से मिलता है

लख खुसीआ पातसाहीआ जे सतगुर नदर करे॥
निमख एक हर नाम दे मेरा मन तन सीतल होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

गुर तीरथ गुर पारजात गुर मनसा पूरणहार॥
गुर दाता हर नाम दे उधरै सभ संसार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

सतगुर सेवा सफल है बणी॥
जित मिल हर नाम धिआइआ हर धणी॥
जिन हर जपिआ तिन पीछै छूटी घणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 165

सतगुर मंत्र दीओ हर नाम॥ इह आसर पूरन भए काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 196

रोम रोम रविआ हर नाम॥ सतगुर पूरै कीनो दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1144

सतगुर हमरा भरम गवाइआ॥ हर नाम निरंजन मंन वसाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 423

मेरा सतगुर मेरा सतगुर पिआरा मै गुर बिन रहण न जाई राम॥
हर नामो हर नाम देवै मेरा अंत सखाई राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

तू अणमंगिआ दान देवणा सभनाहा जीआ॥
सभ आखहो सतगुर वाह वाह जिन दान हर नाम मुख दीआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 585-86

सो सतगुर सेविहो साध जन जिन हर हर नाम द्रिड़ाइआ॥
सो सतगुर पूजहो दिनस रात जिन जगंनाथ जगदीस जपाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 586

जिन कंउ सतगुर भेटिआ से हर कीरत सदा कमाहे॥
अचिंत हर नाम तिन कै मन वसिआ सचै सबद समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 592

हर हर नाम रतंन है गुर तुठा देवै माए॥
मै धर सचे नाम की हर नाम रहा लिव लाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

वडै भाग गुर अपुना पाइओ॥ गुर मो कउ हर नाम द्रिड़ाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 715

हर नाम दीआ गुर परउपकारी धन धंन गुरू का पिता माता॥
हंउ सतगुर अपुणे कंउ सदा नमसकारी जित मिलिऐ हर नाम मै जाता॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 592

गुरसिखां मन हर प्रीत है गुर पूजण आवह॥
हर नाम वणंजह रंग सिउ लाहा हर नाम लै जावह॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 590

तिस गुर कउ हउ सद बल जाई॥ जिस प्रसाद हर नाम धिआई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1339

गुन गावह प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाए रहे हैरान॥
जन नानक कउ गुर किरपा धारी हर नाम दीओ खिन दान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1335

गुर परसादी हर नाम सम्हाल॥ सद ही निबहै तेरै नाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

संत प्रसाद हर नाम धिआइआ॥ तब ते धावत मन त्रिपताइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 189

अमिअ सरोवरो पीउ हर हर नामा राम॥
संतह संग मिलै जप पूरन कामा राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 546

हर का नाम अंम्रित कल माहे॥ एह निधाना साधू पाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 888

हर हर नाम अपार अमोला अंम्रित एक निधाना॥
सूख सहज आनंद संतन कै नानक गुर ते जाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 672

6. हरिनाम किसे मिलता है?

6.1. किसी गुरुमुख को

हर का नाम निधान है कोई गुरमुख जाणै॥
नानक जिन सतगुर भेटिआ रंग रलीआ माणै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 726

गुरमुख आप पछाणिआ हर नाम वसिआ मन आए॥
अनदिन भगती रतिआ हर नामे सुख समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162

हर हर हर हर नाम है गुरमुख पावै कोए॥
हउमै ममता नास होए दुरमत कढै धोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1313

गुरमुखां नदरी आवदा माइआ सुट पाइआ॥
नानक भगतां होर चित न आवई हर नाम समाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1246

तन मन होवै उजला नाम वसै मन आए॥
नानक माइआ का मारण हर नाम है गुरमुख पाइआ जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 513

हर सभ मह रविआ एको सोई गुरमुख लखिआ हर नाम जीउ॥
तूं सत परमेसर सदा अबिनासी हर हर गुणी निधान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 448

गुरमुख वडभागी वडभागे जिन हर हर नाम अधारे॥
हर हर अंम्रित हर रस पावह गुरमत भगति भंडारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 493

हर नाम अचरज प्रभ आप सुणाए॥ कली काल विच गुरमुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 666

हर का नाम अउखध है जोगी जिस नो मंन वसाए॥
गुरमुख होवै सोई बूझै जोग जुगत सो पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 909

6.2. किसी बिरले को

कोट मधे किनै पछाणिआ हर नामा सच सोई॥
नानक नाम मिलै वडिआई दूजै भाए पत खोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 769

7. हरिनाम पाने का समय अमृत-वेला है

गुर सतगुर का जो सिख अखाए सो भलके उठ हर नाम धिआवै॥
उदम करे भलके परभाती इसनान करे अंम्रित सर नावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 305

8. हरिनाम की प्राप्ति के फल

8.1. चिर-बिछुड़े हरि पुरुष का मेल होता है

मिल प्रेम रहणा हर नाम गहणा प्रिअ बचन मीठे भाणे॥
बिनवंत नानक मन इछ पाई हर मिले पुरख चिराणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 544

8.2. अति शीतलता देनेवाला है

चंदन चंद न सरद रुत मूल न मिटई घांम॥
सीतल थीवै नानका जपंदड़ो हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 709

8.3. हरिनाम के पास यम नहीं आता और न ही उसे चोर लूट सकता है

हर हर नाम पोत बोहिथा खेवट सबद गुर पार लंघईआ॥
जम जागाती नेड़ न आवै ना को तसकर चोर लगईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 833

8.4. धर्म राए हरिनाम के अभ्यासियों का मित्र है, वे यम के मार्ग नहीं जाते

जिस नो क्रिपा करे तिस गुर मिलै सो हर गुण गावै॥
धरम राए तिन का मित है जम मग न पावै॥
हर नाम धिआवह दिनस रात हर नाम समावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1091

8.5. अंत समय केवल हरिनाम साथ चलता है और दोनों जहानों में सुखदायी है

बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै॥
इसट मीत नाम नानक को हर नाम मेरै भंडारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 713

इसट मीत जाण सभ छलै॥ हर हर नाम संग तेरै चलै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 889

हर जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हर हर नाम लीओ॥
गुर परसादी हर धन पाइओ अंते चलदिआ नाल चलिओ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 479

हर हर नाम मेरा अंत सखाई गुर सतगुर नाम द्रिड़ाइआ॥
जिथै पुत कलत्र कोई बेली नाही तिथै हर हर नाम छडाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

मेरा सतगुर मेरा सतगुर पिआरा मै गुर बिन रहण न जाई राम॥
हर नामो हर नाम देवै मेरा अंत सखाई राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

इस जुग का धरम पड़हो तुम भाई॥
पूरै गुर सभ सोझी पाई॥ ऐथै अगै हर नाम सखाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 230

मेरे मन धिआए हर हर नाउ॥
हलत पलत सहाए संगे एक सिउ लिव लाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

हर नाम हमारी संगत अत पिआरी हर नाम कुल हर नाम परवारा॥
जन नानक कंउ हर नाम हर गुर दीआ हर हलत पलत सदा करे निसतारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 592

हरिनाम के अन्य अनेक फलों का वर्णन भी गुरवाणी में किया गया है। विकारों व पापों का नाश होता है, हौमैं यानी अहंकार मिट जाता है, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होती है, सब कामनाएँ पूर्ण होती हैं, सुख और शांति प्राप्त होती है, मुक्ति होती है। जीव इसकी कमाई करके आप तर जाता है, साथ ही अपने कुलों को भी तार लेता है और जीवनमुक्त हो जाता है।

हरि रस

गुरवाणी में नाम और शब्द का हरि के लिए प्रयोग किया गया है। इसमें अमर कर देने की सामर्थ्य है इसलिए इसे अमृत कहा गया है (देखें: 'अमृत' का प्रकरण)। इसके अंदर अति रसभरी मस्ती है, शब्द (नाम) के इस भाव को प्रकट करने के लिए गुरवाणी में इसका हरि रस कहकर वर्णन किया गया है। ऊपर के प्रकरणों में इस विषय को विस्तारपूर्वक बताया गया है कि यह क्या वस्तु है इसलिए उन्हें दोहराने की ज़रूरत नहीं।

नाम यानी अमृत में हरि रस जीवन का अमृत रस (Elixir of Life) है। इस भाव का गुरवाणी में अच्छी तरह वर्णन किया गया है। इसे महारस कहा है तथा इसको पीने का उपदेश दिया है क्योंकि विषयों के रस फीके हैं। इनसे जो बेख़ुदी की हालत पैदा होती है वह हक़ीक़त नहीं। इन विषयों का संबंध दिल की भावनाओं के साथ है, जिनके कारण हमें नीचे उतरना पड़ता है। इनसे एकरस आनंद नहीं मिल सकता। नाम का रस महारस है, इसको न पीने से हम भवसागर में डूब जाते हैं तथा हमारी आत्मा उस सुख से वंचित रह जाती है:

> बिखै बन फीका तिआग री सखीए नाम महा रस पीओ॥
> बिन रस चाखे बुड गई सगली सुखी न होवत जीओ॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 802

> नानक नाम महा रस मीठा गुर पूरै सच पाइआ॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 243

> नाम महा रस दीजै राम॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 784

हरि रस क्या है?

हरि रस नाम है, अनहत वाणी है, इसकी प्राप्ति प्रभु की प्राप्ति है। गुरवाणी में बताया गया है कि हरि रस नाम (शब्द) का ही दूसरा नाम है। जिन्हें यह रस नहीं मिला, वे भाग्यहीन हैं तथा यम के चंगुल में हैं:

जिन हर हर हर रस नाम न पाइआ ते भागहीण जम पास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 10

हर कीए पतित पवित्र मिल साध गुर हर नामै हर रस चाखिबा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 697

अनहत बाणी गुर सबद जाणी हर नाम हर रस भोगो॥
कहै नानक प्रभ आप मिलिआ करण कारण जोगो॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 921-22

हर रस चाखै तां सुध होए॥ नानक नाम रते सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

अकथ कथा है

जिसह जगाए पीआवै इह रस अकथ कथा तिन जानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 13

दीन दइआल होवहो जन ऊपर जन देवहो अकथ कहानी॥
संत जना मिल हर रस पाइआ हर मन तन मीठ लगानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

अमृत है

सतगुर सेव सफल हर दरसन मिल अंम्रित हर रस पीअहो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 800

इह हर रस पावै जन कोए॥ अंम्रित पीवै अमर सो होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 287

हरि रस कहाँ है?

ग्रंथ-पोथियों, वेद-शास्त्रों तथा अन्य धर्म पुस्तकों में नाम रस यानी हरि रस की महिमा है, लेकिन हरि रस नहीं। यह हरि रस हमारे अंदर है, अंदर प्रवेश करके ही हम इसे पा सकते हैं। एमर्सन ने भी कहा है, 'अंदर जाओ।' यह हरि रस है तो सर्वत्र भरपूर, लेकिन इसे सब जगह देखनेवाली आँखें अंदर जाने पर ही खुलती हैं, इसलिए संत-महात्मा अंदर जाने का उपदेश देते हैं। ग्रंथ-पोथियों को पढ़ने से

हरि रस की प्राप्ति की कुछ चाह तो उत्पन्न हो जाती है, पर केवल पढ़ने-पढ़ाने से इस रस का मिलना असंभव है:

वेद पड़ह हर रस नही आइआ॥ वाद वखाणह मोहे माइआ॥
अगिआनमती सदा अंधिआरा गुरमुख बूझ हर गावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 128

1. हरि रस सभी जगह है

नाम खंडों-ब्रह्मांडों में परिपूर्ण है। उसका रस भी सभी जगह पूर्ण है। वह यहाँ, वहाँ, सब स्थानों पर भरपूर है। पर भाग्यहीन व्यक्ति इस रस को नहीं पा सकते:

इह हर रस वण तिण सभत है भागहीण नही खाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

2. हृदय (तीसरी आँख) में है

चरन कमल बसे रिद अंतर अंम्रित हर रस चाखे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 616

भ्रम का संगल तोड़ निराला हर अंतर हर रस पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

3. काया के अंदर दसवें द्वार में है

जब सुरत शरीर के नौ द्वारों से सिमटकर आँखों के पीछे दसवें द्वार में आती है तब इस रस को चखती है:

काइआ नगर नगर है नीको विच सउदा हर रस कीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

नउ दरवाज नवे दर फीके रस अंम्रित दसवे चुईजै॥
क्रिपा क्रिपा किरपा कर पिआरे गुर सबदी हर रस पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

हरि रस किस प्रकार मिल सकता है?

1. मालिक की दया से

मालिक स्वयं ही अमृत है और रस भी वह स्वयं ही है, वह आप ही जीव को हरि रस में मग्न करता है, पर वह जिसे स्वयं दे वही इसे पाता है:

आपे अंम्रित आप है पिआरा आपे ही रस आपै॥
आपे आप सलाहदा पिआरा जन नानक हर रस ध्रापै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 605

जिस देवै पुरख बिधाता॥ हर रस तिन ही जाता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 623

जिस पर वह कृपा दृष्टि करे वह हरि रस को पाता है। पर उस पर किसी का अधिकार नहीं, वह जिसे चाहे उसे देता है:

नदर करे ता हर रस पावै॥ नानक हर रस हर गुण गावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 733

क्रिपा करह ता हर गुण गावह हर रस अंतर पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 607

सदा हर रस पाए जा हर भाए रसना सबद सुहाए॥
नाम धिआए सदा सुख पाए नाम रहै लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 246

2. पूरे भाग्य से

गुरमुख हर रस चाखै कोए॥
तिस सदा अनंद होवै दिन राती पूरै भाग परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

हर रस भोग महा निरजोग वडभागी हर रस पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 445

हर हर रस पाइआ गुरमत हर धिआइआ धुर मसतक भाग पुरान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

3. सतगुरु द्वारा

जिस पर मालिक का करम (मेहर या कृपा) हो, उसे सतगुरु मिलता है और हरि रस की प्राप्ति होती है। नाम रस से शिष्य की सुरत महकती है और मग्न होती है। दूसरे सब फीके रसों को भूलकर वह उसमें लीन हो जाती है:

एह हर रस करमी पाईऐ सतगुर मिलै जिस आए॥
कहै नानक होर अन रस सभ वीसरे जा हर वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 921

सतगुर मिलै वडभाग संजोग॥ हिरदै नाम नित हर रस भोग॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162

सतगुर नाम द्रिड़ाए अत मीठा मैलागर मलगारे॥
नामै सुरत वजी है दह दिस हर मुसकी मुसक गंधारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 981

हर कित बिधि पाईऐ संत जनहो जिस देख हउ जीवा॥
हर बिन चसा न जीवती गुर मेलिहो हर रस पीवा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

भाउ भोजन सतगुर तुठै पाए॥ अन रस चूकै हर रस मंन वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

हर का नाम मीठा पिरा जीउ जा चाखह चित लाएं॥
रसना हर रस चाख मुये जीउ अन रस साद गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 246

4. गुरु की कृपा से

गुर किरपा ते हर रस पाए॥ नानक नाम रते गति पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

जिस नो क्रिपा करे सो धिआवै॥ नित हर जप जापै जप हर सुख पावै॥
गुर परसादी हर रस आवै जप हर हर पार लंघाई जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 998

5. साध संग और सत्संग से

साधसंग मिल हर रस पाइआ॥ कहो नानक सफल ओह काइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 374

साधसंगत मह हर रस पाईऐ गुर मिलिऐ जम भउ भागा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

सतसंगत मिलै वडभाग ता हर रस आवए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.690

हउ हर प्रभ पिआरा ढूढ ढूढाई॥ सतसंगत मिल हर रस पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.732

6. भाणा मानने से

गुरमुख होवै सो भाणा मंने सहजे हर रस पीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1246

हरि रस किसे मिलता है?

हरि रस किसी बिरले गुरुमुख को मिलता है, जिसके दिल में सतगुरु की लगन हो। (देखें: 'गुरुमुख' का प्रकरण)। साकत और मनमुख पुरुष इससे वंचित रहते हैं:

ऐसो रे हर रस मीठा॥ गुरमुख किनै विरलै डीठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.886

गुरमुख हर रस चाखै कोए॥
तिस सदा अनंद होवै दिन राती पूरै भाग परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.664

पंखी पंच उडर नही धावह॥ सफलिओ बिरख अंम्रित फल पावह॥
गुरमुख सहज रवै गुण गावै हर रस चोग चुगाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1033

साकत हर रस साद न जाणिआ तिन अंतर हउमै कंडा हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 13

साकत मुठे दुरमती हर रस न जाणंन्ह॥
जिन्ही अंम्रित भरम लुटाइआ बिख सिउ रचह रचंन्ह॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.854

मनमुख हर रस चाखिआ न जाए॥ हउमै करै बहुती मिलै सजाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.733

हरि रस के लक्षण

जिन्होंने हरि रस की सर्वोत्तम मिठास का स्वाद चखा उन्हें और सब स्वाद फीके लगते हैं। वे बिसमाद यानी आश्चर्यचकित हो जाते हैं:

रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ॥ हर रस बिन सभ सुआद फिकरीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 385

हर रस जन चाखहो जे भाई॥ तउ कत अनत साद लोभाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 733

जा कउ रस हर रस है आइओ॥ सो अन रस नाही लपटाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 186

हर रस का तूं चाखह साद॥ चाखत होए रहहे बिसमाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 180

हरिभक्तों के लिए संसार के सब पदार्थों की तुलना में हरि रस अति उत्तम और अनमोल है:

बसुधा सपत दीप है सागर कढ कंचन काढ धरीजै॥
मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछह हर मागह हर रस दीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

ऋषि, मुनि, सनकादिक, ब्रह्मादिक, शुक, प्रहलाद आदि हरि रस पीकर बिसमाद को प्राप्त हुए:

सनकादिक ब्रहमादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद॥
पीवत अमिउ मनोहर हर रस जप नानक हर बिसमाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1224

हरि रस के फल

नाम के समुद्र में हरि रस की लहरें हिलोरें मार रही हैं। जब नाम की धुनें अंदर प्रकट होती हैं, मनुष्य महारस में मस्त हो जाता है तथा उस पर दिन-रात, निरंतर, मस्ती और ख़ुमार (नशा) चढ़ा रहता है जिससे उसे सारे संसार के पदार्थ तुच्छ प्रतीत होते हैं:

हर रस पीवत सद ही राता॥ आन रसा खिन मह लह जाता॥...
हर रस पीवै अलमसत मतवारा॥ आन रसा सभ होछे रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 377

माई री मन मेरो मतवारो॥ पेख दइआल अनद सुख पूरन हर रस रपिओ खुमारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1225

इस नशे को प्रदान करनेवाला सतगुरु है, इसलिए उसे हाफ़िज़ साहिब आदि ने साक़ी कहकर पुकारा है। सतगुरु इस हरि रस का प्याला पिलाकर अपने शिष्यों को संसार के बंधनों से मुक्त कर लेता है। इस हरि रसरूपी शराब के प्याले के लिए हाफ़िज़ साहिब ने अरदास (प्रार्थना) की है:

बदिह साक़ी मए बाक़ी किह् दर जन्नत न-ख़्वाही याफ़्त।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 30

अर्थ: हे मुर्शिद। मुझे वह शराब दे जो जन्नत (स्वर्ग) में भी नहीं मिल सकती। भाई नन्दलाल जी ने इस प्रकार प्रार्थना की है:

बदिह साक़ी मरा यक़ जामे-ज़ाँ रंगीनिए दिलहा।
ब-चश्मे-पाक बीं आसां कुनम ईं जुमला मुश्किलहा।

कुल्लियात भाई नन्दलाल गोया, ग़ज़ल 3, पृ. 50

अर्थ: हे सतगुरु! मुझे एक प्याला दे जिससे मुझमें मस्ती का रंग आ जाए। ऐसा प्याला कि जिसे पीते ही सब मुश्किलें हल हो जाएँ।

हरि रस के अनेक ही फल गुरवाणी में बताए गए हैं। हरि रस के पान से ही विकारों और अहंभाव का नाश होता है। मन निर्मल होता है, सुख-शांति की प्राप्ति होती है, बुद्धि तीक्ष्ण हो जाती है तथा हृदय कमल सीधा होता है। इसके द्वारा सुन्न समाधि लगती है, जीव भवसागर से पार होकर मुक्ति का भागी बनता है, सहज तक की रसाई हो जाती है, अमर पद की प्राप्ति होती है, मालिक की दरगाह में मान मिलता है, निजघर में वास मिलता है और आख़िर मालिक के दर्शन हो जाते हैं।

गुरवाणी में हरि रस विहीन होने के दोषों का भी वर्णन किया गया है।

इन फलों तथा अन्य विषयों पर आगे आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के प्रमाण दिए जाते हैं, पाठकजन ग़ौर सहित विचार करें। गुरवाणी ऐसे हरि रस को पाने का उपदेश करती है:

ऐसा हर रस रमहो सभ कोए॥
सरब कला पूरन प्रभ सोए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 196

ੴ

गुरवाणी

1. हरि रस क्या है?

1.1. नाम है

जिन हर हर हर रस नाम न पाइआ ते भागहीण जम पास॥
जो सतगुर सरण संगत नही आए ध्रिग जीवे ध्रिग जीवास॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 10

हर हर नाम धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीए गुरमुख नाम अमोले राम॥
हर रस बीधा हर मन पिआरा मन हर रस नाम झकोले राम॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 537-38

मेरा मन राम नाम रस लागिबा॥
हर कीए पतित पवित्र मिल साध गुर हर नामै हर रस चाखिबा॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 697

अनहत बाणी गुर सबद जाणी हर नाम हर रस भोगो॥
कहै नानक प्रभ आप मिलिआ करण कारण जोगो॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 921-22

विछुड़िआ गुर मेलसी हर रस नाम पिआर॥
साच सहिज सोभा घणी हर गुण नाम अधार॥
जिउ भावै तिउ रख तूं मै तुझ बिन कवन भतार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 60-61

हर रस चाखै तां सुध होए॥ नानक नाम रते सच सोए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

गावत सुनत सुनावत सरधा हर रस पी वडभागे॥
कल कलेस मिटे सभ तन ते राम नाम लिव जागे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1206

1.2. शब्द है

जिन्ह हर मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हर हर लोग जीउ॥
हर नाम वडाई हर नाम सखाई गुर सबदी हर रस भोग जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 445

सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाए॥
सबदे ही हर मन वसै रसना हर रस खाए॥

गुरु अमरदास,, आदि ग्रन्थ, पृ. 68

1.3. अकथ कथा है

इह संसार बिकार संसे मह तरिओ ब्रहम गिआनी॥
जिसह जगाए पीआवै इह रस अकथ कथा तिन जानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 13

दीन दइआल होवहो जन ऊपर जन देवहो अकथ कहानी॥
संत जना मिल हर रस पाइआ हर मन तन मीठ लगानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

1.4. अमृत है

ता कउ बिघन न कोऊ लागै जो सतगुर अपुनै राखे॥
चरन कमल बसे रिद अंतर अंम्रित हर रस चाखे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 616

भै बिच भाउ भाए कोऊ बूझह हर रस पावै भाई॥
जेते घट अंम्रित सभ ही मह भावै तिसह पीआई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1123

काइआ नगर मह राम रस ऊतम किउ पाईऐ उपदेस जन करहो॥
सतगुर सेव सफल हर दरसन मिल अंम्रित हर रस पीअहो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 800

अंदर अंम्रित भरपूर है चाखिआ साद जापै॥
जिन चाखिआ से निरभउ भए से हर रस ध्रापै॥
हर किरपा धार पीआइआ फिर काल न विआपै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1092

इह हर रस पावै जन कोए॥ अंम्रित पीवै अमर सो होए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 287

गुर राखे से उबरे भाई हर रस अंम्रित पीआए॥
विचहो हउमै दुख उठ गइआ भाई सुख वुठा मन आए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

2. हरि रस कहाँ है?

2.1. यहाँ वहाँ, सब जगह है

इह हर रस वण तिण सभत है भागहीण नही खाए॥
बिन सतगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाए॥
ओए सतगुर आगै ना निवह ओना अंतर क्रोध बलाए॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

2.2. हृदय में है

ता कउ बिघन न कोऊ लागै जो सतगुर अपुनै राखै॥
चरन कमल बसे रिद अंतर अंम्रित हर रस चाखे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 616

काम क्रोध परहर पर निंदा॥ लब लोभ तज होह निचिंदा॥
भ्रम का संगल तोड़ निराला हर अंतर हर रस पाइआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

रसना हर रस पीजै अंतर भीजै साच सबद बीचारी॥
अंतर खूहटा अंम्रित भरिआ सबदे काढ पीऐ पनिहारी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 570

भै बिच भाउ भाए कोऊ बूझह हर रस पावै भाई॥
जेते घट अंम्रित सभ ही मह भावै तिसह पीआई॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1123

2.3. काया के अंदर है

काइआ नगर नगर है नीको विच सउदा हर रस कीजै॥
रतन लाल अमोल अमोलक सतगुर सेवा लीजै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

हर रस छोड होछै रस माता॥ घर मह वसत बाहर उठ जाता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.376

2.4. दसवें द्वार में है

नउ दरवाज नवे दर फीके रस अंम्रित दसवे चुईजै॥
क्रिपा क्रिपा किरपा कर पिआरे गुर सबदी हर रस पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1323

3. हरि रस किस प्रकार मिलता है?

3.1. मालिक की दया से

अंम्रित हर रस हर आप पीआइआ॥ गुर पूरै नानक हर पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.366

आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जप जापै॥
आपे अंम्रित आप है पिआरा आपे ही रस आपै॥
आपे आप सलाहदा पिआरा जन नानक हर रस ध्रापै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.605

क्रिपा करह ता हर गुण गावह हर रस अंतर पाई॥
नानक दीन दइआल भए है त्रिसना सबद बुझाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.607

अंम्रित नाम रसना नित गावै॥ जिस नो क्रिपा करे सो हर रस पावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.232

बहुत खजाने मेरै पालै परिआ अमोल लाल आखूटा॥
जन नानक प्रभ किरपा धारी तउ मन मह हर रस घूटा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1210

जिस देवै पुरख बिधाता॥ हर रस तिन ही जाता॥
जमकंकर नेड़ न आइआ॥ सुख नानक सरणी पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.623-24

गुर सागर रतनी भरपूरे॥ अंम्रित संत चुगह नही दूरे॥
हर रस चोग चुगह प्रभ भावै॥ सरवर मह हंस प्रानपति पावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.685

नदर करे ता हर रस पावै॥ नानक हर रस हर गुण गावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.733

मेरे हर प्रभ भावै सो करै हर रंग हर रापै राम॥
जन नानक सहज मिलाइआ हर रस हर ध्रापै राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.844

तुधुनो सेवह जो तुध भावह॥ गुर कै सबदे सच समावह॥
अनदिन गुण रवह दिन राती रसना हर रस भाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1067

सदा हर रस पाए जा हर भाए रसना सबद सुहाए॥
नाम धिआए सदा सुख पाए नाम रहै लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.246

आप करता आप भुगता आप कारण कीआ॥
बिनवंत नानक सेई जाणह जिन्ही हर रस पीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.846

हर होहो दइआल हर नाम धिआई जीउ॥ जन नानक हर रस पाई जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.175

इह संसार बिकार संसे मह तरिओ ब्रहम गिआनी॥
जिसह जगाए पीआवै इह रस अकथ कथा तिन जानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.13

मन का जीउ पवनपति देही देही मह देउ समागा॥
जे तू देह त हर रस गाई मन त्रिपतै हर लिव लागा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.598

प्रभ की द्रिसटि महा सुख होए॥ हर रस पावै बिरला कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.289

3.2. पूरे भाग्य से

गुरमुख हर रस चाखै कोए॥
तिस सदा अनंद होवै दिन राती पूरै भाग परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.664

हर रस भोग महा निरजोग वडभागी हर रस पाइआ॥
से धंन वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमत नाम धिआइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.445

हर कीरत मन भाई परम गति पाई हर मन तन मीठ लगान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.446

हर हर रस पाइआ गुरमत हर धिआइआ धुर मसतक भाग पुरान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.446

एह हर रस करमी पाईऐ सतगुर मिलै जिस आए॥
कहै नानक होर अन रस सभ वीसरे जा हर वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.921

गावत सुनत सुनावत सरधा हर रस पी वडभागे॥
कल कलेस मिटे सभ तन ते राम नाम लिव जागे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1206

गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मन आए॥
सतगुर वचन रतंन है जो मंने सो हर रस खाए॥
से वडभागी वड जाणीअह जिन हर रस खाधा गुर भाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.41

जिन हर रस पाइआ सो त्रिपत अघाना॥
जिन हर साद पाइआ सो नाहे डुलाना॥
तिसह परापत हर हर नामा जिस मसतक भागीठा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.101

३.३. सतगुरु से और सतगुरु की सेवा द्वारा

नानक प्रीत लाई तिन साचै तिस बिन रहण न जाई॥
सतगुर मिलै त पूरा पाईऐ हर रस रसन रसाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 652

गुर राखे से उबरे भाई हर रस अंम्रित पीआए॥
विचहो हउमै दुख उठ गइआ भाई सुख वुठा मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

जा कउ सतगुर अपना राखै॥ सो जन हर रस रसना चाखै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

वडभागी हर संत मिलाइआ॥ गुर पूरै हर रस मुख पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 95

सतगुर मिलै वडभाग संजोग॥ हिरदै नाम नित हर रस भोग॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162

हर कित बिधि पाईऐ संत जनहो जिस देख हउ जीवा॥
हर बिन चसा न जीवती गुर मेलिहो हर रस पीवा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

नानक प्रीत लाई तिन सचै तिस बिन रहण न जाई॥
सतगुर मिलै त पूरा पाईऐ हर रस रसन रसाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1318

सूख सहज अर घनो अनंदा गुर ते पाइओ नाम हरी॥
ऐसो हर रस बरन न साकउ गुर पूरै मेरी उलट धरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 822-23

अखी प्रेम कसाईआ जिउ बिलक मसाई राम॥
गुर पूरै हर मेलिआ हर रस आघाई राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 845

ऊतम सतगुर पुरख निराले॥ सबद रते हर रस मतवाले॥
रिध बुध सिध गिआन गुरू ते पाईऐ पूरै भाग मिलाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1038

निहचल एक सदा सच सोई॥ पूरे गुर ते सोझी होई॥
हर रस भीने सदा धिआइन गुरमत सील संनाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

अंतर लाग न तामस मूले विचहो आप गवाए॥
नाम निधान सतगुरू दिखालिआ हर रस पीआ अघाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मन आए॥
सतगुर वचन रतंन है जो मंने सो हर रस खाए॥
से वडभागी वड जाणीअह जिन हर रस खाधा गुर भाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

हर गुर गिआन हर रस हर पाइआ॥ मन हर रंग राता हर रस पीआइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 95

अंम्रित रस हर गुर ते पीआ॥ हर पैनण नाम भोजन थीआ॥
नाम रंग नाम चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 99

हउ हर गुण गावा नित हर सुणी हर हर गति कीनी॥
हर रस गुर ते पाइआ मेरा मन तन लीनी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

भाउ भोजन सतगुर तुठै पाए॥ अन रस चूकै हर रस मंन वसाए॥
सच संतोख सहज सुख बाणी पूरे गुर ते पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

गुर ते समझ रहै मिहमाण॥ हर रस राता जन परवाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188-89

मनूआ मार निरमल पद चीनिआ हर रस रते अधिकाई॥
एकस बिन मै अवर न जानां सतगुर बूझ बुझाई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

गुरमुख जोत भली सिव नीकी आन पानी सकति भरीजै॥
मैन दंत निकसे गुर बचनी सार चब चब हर रस पीजै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1324

मेरे मन गुर की सिख सुणीजै॥
हर का नाम सदा सुखदाता सहजे हर रस पीजै॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

हर रस पीवहो भाई॥ नाम जपहो नामो आराधहो गुर पूरे की सरनाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 630

संत रसन वूठा आप तूठा हर रसह सेई मातिआ॥
गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिन जागिआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 691

गाईऐ रात दिनंत गावण जोगिआ॥
जो गुर की पैरी पाहे तिनी हर रस भोगिआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

काइआ नगर मह राम रस ऊतम किउ पाईऐ उपदेस जन करहो॥
सतगुर सेव सफल हर दरसन मिल अंम्रित हर रस पीअहो॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 800

हउ वारी जीउ वारी हउमै मार मिलावणिआ॥
गुर सेवा ते हर मन वसिआ हर रस सहज पीआवणिआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 128

3.4. गुरुमत द्वारा

गुरमत हर रस हर फल पाइआ हर हर नाम उर धार जीउ॥
जिन्ह इक मन धिआइआ तिन्ह सुख पाइआ ते विरले संसार जीउ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 438

हर कीरत मन भाई परम गति पाई हर मन तन मीठ लगान जीउ॥
हर हर रस पाइआ गुरमत हर धिआइआ धुर मसतक भाग पुरान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

मन हर हर वसिआ गुरमत हर रसिआ हर हर रस गटाक पीआउ जीउ॥
मन नाम जपाना हर हर मन भाना हर भगत जना मन चाउ जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

आपे गुर दाता करम बिधाता॥ सेवक सेवह गुरमुख हर जाता॥
अंम्रित नाम सदा जन सोहहे गुरमत हर रस पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 126

जनम पदारथ जीतिआ कदे न आवै हार॥
धन धन वडभागी नानका जिन गुरमत हर रस सार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1312

गुरुमुख वडभागी वडभागे जिन हर हर नाम अधारे॥
हर हर अंम्रित हर रस पावह गुरमत भगति भंडारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 493

वाह वाह सहजे गुण रवीजै॥
राम नाम इस जुग मह दुलभ है गुरमत हर रस पीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 565

हंउमै माइआ मैल है माइआ मैल भरीजै राम॥
गुरमती मन निरमला रसना हर रस पीजै राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 570

गुरमत रस राखहो उर धार॥ हर रस राते रंग मुरार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 733

गुरमती भउ मन पवै तां हर रस लगै पिआर॥
नाउ मिलै धुर लिखिआ जन नानक पार उतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414

गुरमती हर रस चाखिआ से पुंन पराणी॥
बिन गुर किनै न पाइओ पच मुए अजाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 515

पाठ पड़ै ना बूझई भेखी भरम भुलाए॥
गुरमती हर सदा पाइआ रसना हर रस समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

मेरे मन भज राम नामै रामा॥
गुरमत हर रस पाईऐ होर तिआगहो निहफल कामा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 799

3.5. गुरु की कृपा और प्रसन्नता (प्रसाद) द्वारा

गुर किरपा ते हर रस पाए॥ नानक नाम रते गति पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

रसना हर रस चाखिआ सहज सुभाए॥ गुर किरपा ते सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 158

हर जीउ राखहो अपनी सरणाई॥
गुर परसादी हर रस पाइआ नाम पदारथ नउ निध पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 352–53

नानक सूतक जनम मरीजै॥ गुर परसादी हर रस पीजै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

हर चेत अचेत मना जो इछह सो फल होई॥
गुर परसादी हर रस पावह पीवत रहहे सदा सुख होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491

सबद मरै सो मुआ जापै॥ गुर परसादी हर रस ध्रापै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1418

जिस नो क्रिपा करे सो धिआवै॥ नित हर जप जापै जप हर सुख पावै॥
गुर परसादी हर रस आवै जप हर हर पार लंघाई जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 998

अगिआनी अंध न बूझई सिर ऊपर जम खड़ग कलखा॥
गुर परसादी उबरे जिन हर रस चखा॥ आप कराए करे आप आपे हर रखा॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1087-88

जेते जीअ जंत जल थल महीअल जत्र कत्र तू सरब जीआ॥
गुर परसाद राख ले जन कउ हर रस नानक झोल पीआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1127

3.6. साध संग या सत्संग द्वारा

साधसंग मिल हर रस पाइआ॥ कहो नानक सफल ओह काइआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 374

हर रस की कीमत कही न जाए॥ हर रस साधू हाट समाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 377

बैठत हर हर सोवत हर हर हर रस भोजन खाता॥
अठसठ तीरथ मजन कीनो साधू धूरी नाता॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 532

अन ते टूटीऐ रिख ते छूटीऐ॥ मन हर रस घूटीऐ संग साधू उलटीऐ॥
अन नाही नाही रे॥ नानक प्रीत चरन चरन हे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 830

हर रस पीवहो पुरख गिआनी॥
सुण सुण महा त्रिपत मन पावै साधू अंम्रित बानी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 611

मेरा मन राम नाम रस लागिबा॥
हर कीए पतित पवित्र मिल साध गुर हर नामै हर रस चाखिबा॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 697

दीन दइआल होवहो जन ऊपर जन देवहो अकथ कहानी॥
संत जना मिल हर रस पाइआ हर मन तन मीठ लगानी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

संगत संत मिलहो सतसंगत मिल संगत हर रस आवैगो॥
बिन संगत करम करै अभिमानी कढ पाणी चीकड़ पावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1309

साधू साध सरन मिल संगत जित हर रस काढ कढीजै॥
परउपकार बोलह बहु गुणीआ मुख संत भगत हर दीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

साधसंगत मिल हर रस पाइआ॥ पारब्रहम रिद माहे समाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1348

साधसंगत मह हर रस पाईऐ गुर मिलिऐ जम भउ भागा॥
नानक राम नाम जप गुरमुख हर पाए मसतक भागा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

डोल डोल महा दुख पाइआ बिना साधू संग॥
खाट लाभ गोबिंद हर रस पारब्रहम इक रंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

सतसंगत मन भाई हर रसन रसाई विच संगत हर रस होए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

हर हर आराधिआ गुर सबद विगासिआ बीजा अवर न कोए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

हर भाउ लगा बैरागीआ वडभागी हर मन राख॥
मिल संगत सरधा ऊपजै गुर सबदी हर रस चाख॥
सभ मन तन हरिआ होइआ गुरबाणी हर गुण भाख॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 997

सतसंगत मिलै वडभाग ता हर रस आवए जीउ॥
अनदिन रहै लिव लाए त सहज समावए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 690

हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभ करे सो भावए॥
सतसंगत मिलै वडभाग ता हर रस आवए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.690

हउ हर प्रभ पिआरा दूढ दूढाई॥ सतसंगत मिल हर रस पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.732

जिन हर जन सतगुर संगत पाई तिन धुर मसतक लिखिआ लिखास॥
धन धंन सतसंगत जित हर रस पाइआ मिल जन नानक नाम परगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.10

गोबिंद सतसंगत मेलाए॥ हर रस रसना राम गुन गाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.164

3.7. भाणा मानने से

गुरमुख होवै सो भाणा मंने सहजे हर रस पीजै॥
नानक सुखदाता सदा सलाहिहो रसना राम रवीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1246-47

4. वेद-कतेब में हरि रस नहीं, केवल उसकी महिमा का वर्णन है

वेद पड़ह हर रस नही आइआ॥ वाद वखाणह मोहे माइआ॥
अगिआनमती सदा अंधिआरा गुरमुख बूझ हर गावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.128

बेद पड़ह पड़ बाद वखाणह॥ घट मह ब्रहम तिस सबद न पछाणह॥
गुरमुख होवै सो तत बिलोवै रसना हर रस ताहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1058

5. हरि रस गुरुमुख को मिलता है, मनमुख को नहीं

गुरमुख वडभागी वडभागे जिन हर हर नाम अधारे॥
हर हर अंम्रित हर रस पावह गुरमत भगति भंडारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.493

सरबे समाणा आप सुआमी गुरमुख परगट होइआ॥
मिटिआ अधेरा दूख नाठा अमिउ हर रस चोइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 542

गुरमुख सभ वापार भला जे सहजे कीजै राम॥
अनदिन नाम वखाणीऐ लाहा हर रस पीजै राम॥
लाहा हर रस लीजै हर रावीजै अनदिन नाम वखाणै
गुण संग्रह अवगण विकणह आपै आप पछाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 568

बिन जल कमल सो ना थीऐ बिन जल मीन मराए॥
नानक गुरमुख हर रस मिलै जीवा हर गुण गाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 63

तन प्रेम हर हर लाए चाबक मन जिणै गुरमुख जीतिआ॥
अघड़ो घड़ावै सबद पावै अपिउ हर रस पीतिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 575

गुरमुख जोत भली सिव नीकी आन पानी सकति भरीजै॥
मैन दंत निकसे गुर बचनी सार चब चब हर रस पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1324

गुरमुख होवै सो भाणा मंने सहजे हर रस पीजै॥
नानक सुखदाता सदा सलाहिहो रसना राम रवीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1246-47

ऐसो रे हर रस मीठा॥ गुरमुख किनै विरलै डीठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886

आपे देह बुझाई अवर न भाई गुरमुख हर रस चाखिआ॥
दर साचै सदा है साचा साचै सबद सुभाखिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 571-72

गुरमुख हर रस चाखै कोए॥
तिस सदा अनंद होवै दिन राती पूरै भाग परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

धधै धावत वरज रख मूड़े अंतर तैरै निधान पइआ॥
गुरमुख होवह ता हर रस पीवह जुगा जुगंतर खाहे पइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 435

आपै आप खाए हउ मेटै अनदिन हर रस गीत गवईआ॥
गुरमुख परचै कंचन काइआ निरभउ जोती जोत मिलईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 833

जिहवा हर रस रही अघाए॥ गुरमुख पीवै सहज समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 733

पंखी पंच उडर नही धावह॥ सफलिओ बिरख अंम्रित फल पावह॥
गुरमुख सहज रवै गुण गावै हर रस चोग चुगाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1033

बेद पड़ह पड़ बाद वखाणह॥ घट मह ब्रहम तिस सबद न पछाणह॥
गुरमुख होवै सो तत बिलोवै रसना हर रस ताहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1058

अगै नाउ जात न जाइसी मनमुख दुख खाता॥
रसना हर रस न चखिओ फीका बोलाता॥
जिना गुरमुख अंम्रित चाखिआ से जन त्रिपताता॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 514

मनमुख हर रस चाखिआ न जाए॥ हउमै करै बहुती मिलै सजाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 733

साकत हर रस साद न जाणिआ तिन अंतर हउमै कंडा हे॥
जिउ जिउ चलह चुभै दुख पावह जमकाल सहहे सिर डंडा हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 13

हर रस ऊपर अवर किआ कहीऐ जिन पीआ सो त्रिपतागा॥
माइआ मोहित जिन इह रस खोइआ जा साकत दुरमत लागा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

साकत मुठे दुरमती हर रस न जाणंन्ह॥
जिन्ही अंम्रित भरम लुटाइआ बिख सिउ रचह रचंन्ह॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 854

इह हर रस वण तिण सभत है भागहीण नही खाए॥
बिन सतगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाए॥
ओए सतगुर आगै ना निवह ओना अंतर क्रोध बलाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

6. हरि रस के लक्षण

6.1. हरि रस सबसे मीठा है और सब स्वाद फीके हैं

रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ॥ हर रस बिन सभ सुआद फिकरीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 385

अंम्रित नाम सदा निरमलीआ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ॥
अवर साद चख सगले देखे मन हर रस सभ ते मीठा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 100–01

हर रस मीठा मन मह वूठा सतगुर तूठा सहज भइआ॥
ग्रिह वस आइआ मंगल गाइआ पंच दुसट ओए भाग गइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 452

हर रस जन चाखहो जे भाई॥ तउ कत अनत साद लोभाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 733

हर हर नाम अंम्रित हर मीठा हर संतहो चाख दिखहो॥
गुरमत हर रस मीठा लागा तिन बिसरे सभ बिख रसहो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 800

राम मो कउ हर जन मेल मन भावै॥
अमिउ अमिउ हर रस है मीठा मिल संत जना मुख पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 881

ऐसो रे हर रस मीठा॥ गुरमुख किनै विरलै डीठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886

जलउ इह जिहवा दूजै भाए॥ हर रस न चाखै फीका आलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 158

हर रस का तूं चाखह साद॥ चाखत होए रहहे बिसमाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 180

जा कउ रस हर रस है आइओ॥ सो अन रस नाही लपटाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 186

भगत जना के हर रखवारे जन हर रस मीठ लगावैगो॥
खिन खिन नाम दे वडिआई सतगुर उपदेस समावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1309

6.2. हरि रस को पीकर जीव अलमस्त होता है

हर रस पीवत सद ही राता॥ आन रसा खिन मह लह जाता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 377

हर रस के माते मन सदा अनंद॥ आन रसा मह विआपै चिंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 377

हर रस पीवै अलमसत मतवारा॥ आन रसा सभ होछे रे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 377

नित उठ कोरी गागर आनै लीपत जीउ गइओ॥
ताना बाना कछू न सूझै हर हर रस लपटिओ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 856

माई री मन मेरो मतवारो॥ पेख दइआल अनद सुख पूरन॥
हर रस रपिओ खुमारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1225

6.3. हरि भक्तों के लिए संसार के सब पदार्थों से हरि रस उत्तम और अमोलक होता है

बसुधा सपत दीप है सागर कढ कंचन काढ धरीजै॥
मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछह हर मागह हर रस दीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

6.4. ऋषि, मुनि और भक्तजन हरि रस को पीकर बिसमाद को प्राप्त हुए (प्रभु की आश्चर्य रूप स्थिति को पा गए)

सनकादिक ब्रहमादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद॥
पीवत अमिउ मनोहर हर रस जप नानक हर बिसमाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1224

6.5. जिनको हरि रस मिले, वे सच्चे हैं

बहु रंगी रस भोगिआ सबद रहै निरबाण॥
हर रस फल राते नानका करम सच नीसाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 550

से जन साचे सदा सदा जिनी हर रस पीता॥
गुरमुख सचा मन वसै सच सउदा कीता॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 955

नेत्र संतोखे एक लिव तारा॥ जिहवा सूची हर रस सारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 224

हर रस चाखै तां सुध होए॥ नानक नाम रते सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

7. हरि रस के फल

7.1. विकारों का नाश होता है

हर रस मीठा मन मह वूठा सतगुर तूठा सहज भइआ॥
ग्रिह वस आइआ मंगल गाइआ पंच दुसट ओए भाग गइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 452

7.2. हौमैं का नाश होता है

सतगुर सेवे सो वडभागी जिस नो आप मिलाए॥
हर रस पी जन सदा त्रिपतासे विचहो आप गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 603

जिनी सतगुर सेविआ तिनी पाइआ नाम निधान॥
अंतर हर रस रव रहिआ चूका मन अभिमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

हर सर सागर निरमल सोई॥ संत चुगह नित गुरमुख होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 128

गुर राखे से उबरे भाई हर रस अंम्रित पीआए॥
विचहो हउमै दुख उठ गइआ भाई सुख वुठा मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

7.3. तृष्णा का नाश होता है और तृप्ति होती है

ए रसना तू अन रस राच रही तेरी पिआस न जाए॥
पिआस न जाए होरत कितै जिचर हर रस पलै न पाए॥
हर रस पाए पलै पीऐ हर रस बहुड़ न त्रिसना लागै आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 921

हर रस जिन जन चाखिआ॥ ता की त्रिसना लाथीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 211

चंचल मत तिआग भउ भंजन पाइआ एक सबद लिव लागी॥
हर रस चाख त्रिखा निवारी हर मेल लए बडभागी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1232

मन मेरे हर रस चाख तिख जाए॥ जिनी गुरमुख चाखिआ सहजे रहे समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

हर रस जिन्ही चाखिआ पिआरे त्रिपत रहे आघाए॥
अंचल गहिआ साध का नानक भै सागर पार पराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 431

हर रस ऊपर अवर किआ कहीऐ जिन पीआ सो त्रिपतागा॥
माइआ मोहित जिन इह रस खोइआ जा साकत दुरमत लागा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

गुर की बाणी निरमली हर रस पीआइआ॥
हर रस जिनी चाखिआ अन रस ठाक रहाइआ॥
हर रस पी सदा त्रिपत भए फिर त्रिसना भुख गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1088

उन संतन कै मेरा मन कुरबाने॥ जिन तूं जाता जो तुध मन भाने॥
तिन कै संग सदा सुख पाइआ हर रस नानक त्रिपत अघाना जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 100

जिन हर रस पाइआ सो त्रिपत अघाना॥
जिन हर साद पाइआ सो नाहे डुलाना॥
तिसह परापत हर हर नामा जिस मसतक भागीठा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 101

ऊतम जनम सुथान है वासा॥ सतगुर सेवह घर माहे उदासा॥
हर रंग रहहे सदा रंग राते हर रस मन त्रिपतावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 127

जिउ चात्रिक जल प्रेम पिआसा॥ जिउ मीना जल माहे उलासा॥
नानक हर रस पी त्रिपतासा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 226

मन का जीउ पवनपति देही देही मह देउ समागा॥
जे तू देह त हर रस गाई मन त्रिपतै हर लिव लागा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

सतगुर सेव जिन नाम पछाता सफल जनम जग आइआ॥
हर रस चाख सदा मन त्रिपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 602

जिहवा सालाहे न रजई हर प्रीतम चित लाए॥
नानक नावै की मन भुख है मन त्रिपतै हर रस खाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

हर रस चाखिआ तउ मन भीजा॥ प्रणवत नानक अवर न दूजा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1345

हर हर नाम जपहो जन भाई॥
गुर प्रसाद मन असथिर होवै अनदिन हर रस रहिआ अघाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

7.4. मन निर्मल होता है

हर चरणी तूं लाग रहो गुर सबद सोझी होई॥
हर रस रसना चाख तूं तां मन निरमल होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 492

मनसा मार दुबिधा सहज समाणी पाइआ नाम अपारा॥
हर रस चाख मन निरमल होआ किलबिख काटणहारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 603

हउ वारी जीउ वारी हर रस चख साद पावणिआ॥
हर रस चाखह से जन निरमल निरमल नाम धिआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 128

मन हर रंग रतड़ा हर रस सदा पीवा जीउ॥ हर पाइअड़ा मन जीवा जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 175

7.5. सुख और शांति प्राप्त होती है

जिन हर रस चाखिआ सो हर जन लोग॥ तिस सदा हरख नाही कदे सोग॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

बिन तागे बिन सूई आनी मन हर भगती संग सीवना॥
मातिआ हर रस मह राते तिस बहुड़ न कबहू अउखीवना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1019

हउ तिन बलिहारी जो साचै लागे॥ हर गुण गावह अनदिन जागे॥
साचा सूख सदा तिन अंतर रसना हर रस रासी हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1048

सगले करम धरम जुग साधा॥ बिन हर रस सुख तिल नही लाधा॥
भई क्रिपा नानक सतसंगे तउ धन पिर अनंद उलासा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1072-73

राम नाम जप दिनस रात गुरमुख हर धन जान॥
सभ सुख हर रस भोगणे संत सभा मिल गिआन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

हर गुर गिआन हर रस हर पाइआ॥ मन हर रंग राता हर रस पीआइआ॥
हर हर नाम मुख हर हर बोली मन हर रस टुल टुल पउदा जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 95

आस निरास रहै संनिआसी एकस सिउ लिव लाए॥
हर रस पीवै ता सात आवै निज घर ताड़ी लाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1013

7.6. बुद्धि का विकास होता है और हृदय कमल खिल जाता है

हर रस चाखत ध्रापिआ मन रस लै हसना॥
बुध प्रगास प्रगट भई उलट कमल बिगसना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 811

गुर सबदी कमल बिगासिआ इव हर रस पीजै॥
आवण जाणा ठाकिआ सुख सहज सवीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1089

7.7. सुन्न समाधि लगती है

ओत पोत जन हर रस राते॥ सुंन समाध नाम रस माते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 265

7.8. जीव भवसागर से पार होता है

ऊतम जन संत भले हर पिआरे॥ हर रस माते पार उतारे॥
नानक रेण संत जन संगत हर गुर परसादी पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1038

7.9. मुक्ति की प्राप्ति

मुकत पदारथ हर रस चाखे॥ आवण जाण रहे गुर राखे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 685

खंडे धार गली अत भीड़ी॥ लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी॥
मात पिता कलत्र सुत बेली नाही बिन हर रस मुकत न कीना हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1028

7.10. सहज की प्राप्ति

विछुड़िआ गुर मेलसी हर रस नाम पिआर॥
साच सहज सोभा घणी हर गुण नाम अधार॥
जिउ भावै तिउ रख तूं मै तुझ बिन कवन भतार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.60-61

वाह वाह सहजे गुण रवीजै॥
राम नाम इस जुग मह दुलभ है गुरमत हर रस पीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.565

रसना हर रस चाखिआ सहज सुभाए॥ गुर किरपा ते सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.158

सतसंगत मिलै वडभाग ता हर रस आवए जीउ॥
अनदिन रहै लिव लाए त सहज समावए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.690

जिहवा हर रस रही अघाए॥ गुरमुख पीवै सहज समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.733

पंखी बिरख सुहावड़ा सच चुगै गुर भाए॥
हर रस पीवै सहज रहै उडै न आवै जाए॥
निज घर वासा पाइआ हर हर नाम समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.66

मन मेरे हर रस चाख तिख जाए॥ जिनी गुरमुख चाखिआ सहजे रहे समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.26

निज घर बैस सहज घर लहीऐ॥ हर रस माते इह सुख कहीऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.227

गुर सबदी कमल बिगासिआ इव हर रस पीजै॥
आवण जाणा ठाकिआ सुख सहज सवीजै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1089

हर रस मीठा मन मह वूठा सतगुर तूठा सहज भइआ॥
ग्रिह वस आइआ मंगल गाइआ पंच दुसट ओए भाग गइआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.452

रसना हर रस राती रंग लाए॥ मन तन मोहिआ सहज सुभाए॥
सहजे प्रीतम पिआरा पाइआ सहजे सहज मिलावणिआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 114

7.11. अमर पद की प्राप्ति

अंदर अंम्रित भरपूर है चाखिआ साद जापै॥
जिन चाखिआ से निरभउ भए से हर रस ध्रापै॥
हर किरपा धार पीआइआ फिर काल न विआपै॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1092

इह हर रस पावै जन कोए॥ अंम्रित पीवै अमर सो होए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 287

7.12. प्रभु की दरगाह में मान मिलता है

बिन साचे नही दरगह मान॥ हर रस पीवै छुटै निदान॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 937

मन चलै न जाई ठाक राख॥ बिन हर रस राते पत न साख॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

7.13. निजघर में वास होता है

पंखी बिरख सुहावड़ा सच चुगै गुर भाए॥
हर रस पीवै सहज रहै उडै न आवै जाए॥
निज घर वासा पाइआ हर हर नाम समाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

आस निरास रहै संनिआसी एकस सिउ लिव लाए॥
हर रस पीवै ता सात आवै निज घर ताड़ी लाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1013

निज घर बैस सहज घर लहीऐ॥ हर रस माते इह सुख कहीऐ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

7.14. मालिक के दर्शन होते हैं

जिन हर रस चाखिआ सबद सुभाखिआ हर सर रही भरपूरं॥
नानक कामण सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 568

त्रिपत अघाए पेख प्रभ दरसन अंम्रित हर रस भोजन खात॥
चरन सरन नानक प्रभ तेरी कर किरपा संतसंग मिलात॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 821

अनहत बाणी गुर सबद जाणी हर नाम हर रस भोगो॥
कहै नानक प्रभ आप मिलिआ करण कारण जोगो॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 921-22

8. हरि रस विहीन के दोष

8.1. दुखी होते हैं और विष खाते हैं

जिनी नाम विसारिआ से मुए मर जाहे॥
हर रस साद न आइओ बिसटा माहे समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 429

जिन जिहवा हर रस न चखिओ सा जिहवा जल जाउ॥
अन रस सादे लग रही दुख पाइआ दूजै भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 558

मात गरभ मह हाथ दे राखिआ॥
हर रस छोड बिखिआ फल चाखिआ॥
भज गोबिद सभ छोड जंजाल॥
जब जम आए संघारै मूड़े तब तन बिनस जाए बेहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 805

कुचिल कुरूप कुनार कुलखनी पिर का सहज न जानिआ॥
हर रस रंग रसन नही त्रिपती दुरमत दूख समानिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1197

8.2. जन्म व्यर्थ जाता है

ए मन मेरे बावले हर रस चख साद पाए॥
अन रस लागा तूं फिरह बिरथा जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 430

सबद न जाणह से अंने बोले से कित आए संसारा॥
हर रस न पाइआ बिरथा जनम गवाइआ जंमह वारो वारा॥
बिसटा के कीड़े बिसटा माहे समाणे मनमुख मुगध गुबारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

8.3. यम के वश में रहते हैं

जिन हर हर हर रस नाम न पाइआ ते भागहीण जम पास॥
जो सतगुर सरण संगत नही आए ध्रिग जीवे ध्रिग जीवास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 10

8.4. हृदय कमल का विकास नहीं होता

सहजे सतगुर न सेविओ विच हउमै जनम बिनास॥
रसना हर रस न चखिओ कमल न होइओ परगास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 949

9. उपदेश

ऐसा हर रस रमहो सभ कोए॥ सरब कला पूरन प्रभ सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 196

गुरुनाम या गुरुमुख नाम

नाम की व्याख्या विस्तारपूर्वक नाम के प्रकरण में दी गई है। गुरवाणी में उस नाम को ही गुरुनाम, गुरुमत या गुरुमुख नाम कहा है। इसलिए जो कुछ नाम के प्रकरण में लिखा गया है उसको यहाँ पर दोहराने की आवश्यकता नहीं। यह गुरु की मत, गुरु के द्वारा यानी गुरु के ज़रिये प्राप्त होता है तथा किसी गुरुमुख को ही इसकी प्राप्ति होती है, इसलिए इस नाम का गुरुमत नाम, गुरुनाम या गुरुमुख नाम कहकर वर्णन किया गया है। गुरवाणी से पता चलता है कि गुरुमत नाम, गुरुनाम और गुरुमुख नाम गुप्त धुनात्मक नाम को ही कहा है।

गुरुमत नाम

गुरुमत नाम का भाव शब्द यानी अनहद धुन है (देखें: 'नाम' का प्रकरण) तथा सच्चा नाम यही है:

> गुरमत नाम न वीसरै सहजे पत पाईऐ॥
> अंतर सबद निधान है मिल आप गवाईऐ॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 228

> ऐसे प्रेम भगति वीचारी॥ गुरमुख साचा नाम मुरारी॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

> त्राहे त्राहे सरन प्रभ आए मो कउ गुरमत नाम द्रिड़ीजै॥
>
> गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1325

मालिक की दया और बड़े भाग्य से ही गुरुनाम या गुरुमत नाम मिलता है:

> प्राणी गुरमुख नाम धिआई॥
> हर हर क्रिपा करे गुर मेले हर हर नाम समाई॥
>
> गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1265

जे वड भाग होए अत नीका तां गुरमत नाम द्रिड़ीजै॥
सभ माइआ मोह बिखम जग तरीऐ सहजे हर रस पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

गुरुमुख नाम सतगुरु से ही प्राप्त हो सकता है और गुरुमुख को ही मिलता है:

विण गुर पूरे कोए न जाणी॥ माइआ मोह दूजै लोभाणी॥
गुरमुख नाम मिलै हर बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 423

पाप पुंन वरतै संसारा॥ हरख सोग सभ दुख है भारा॥
गुरमुख होवै सो सुख पाए जिन गुरमुख नाम पछाता हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1052

गुरुनाम के फल

गुरवाणी में इसके फलों का वर्णन किया गया है:

1. इससे सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा यह सब सुखों का दाता है

अनदिन जपउ गुरू गुर नाम॥ ता ते सिध भए सगल कांम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 202

सरब सुखा का एक हर सुआमी सो गुर नाम दइओ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 856

2. पापों, विकारों और अहंकार का नाश होता है

सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए
मल गुरमुख नाम उतारे राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 539

गुरमत नाम न वीसरै सहजे पत पाईऐ॥
अंतर सबद निधान है मिल आप गवाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 228

अहंबुध बहु सघन माइआ महा दीरघ रोग॥
हर नाम अउखध गुर नाम दीनो करण कारण जोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 502

आप अतीत अलिपत है निरजोग हर जोगी॥
जो तिस भावै सो करे हर करे सो होगी॥
हर गुरमुख नाम धिआईऐ लह जाहे विजोगी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 514

3. सहज गति की प्राप्ति होती है

गुरमुख नाम परापत होवै॥ सहजे जागै सहजे सोवै॥
गुरमुख नाम समाए समावै नानक नाम धिआई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069-70

अब आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण देखिए।

गुरवाणी

1. गुरुनाम क्या है?

1.1. गुरुनाम या गुरुमुख नाम गुरु-शब्द, सच्चा नाम, शब्द यानी वाणी है

गुरमत नाम न वीसरै सहजे पत पाईऐ॥
अंतर सबद निधान है मिल आप गवाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 228

मै आए मिलहो जगजीवन पिआरे॥ हर हर नाम दइआ मन धारे॥
गुरमत नाम मीठा मन भाइआ जन नानक नाम मन भीजै जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 95

मंगत जन दीन खरे दर ठाढे अत तरसन कउ दान दीजै॥
त्राहे त्राहे सरन प्रभ आए मो कउ गुरमत नाम द्रिड़ीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1325

जप मन राम नाम रव रहे॥
दीन दइआल दुख भंजन गाइओ गुरमत नाम पदारथ लहे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1336

सभ जग देखिआ माइआ छाइआ॥ नानक गुरमत नाम धिआइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 354

गुरमुख नाम प्रगटी है सोए॥ चहु जुग निरमल हछा लोए॥
नामे नाम रते सुख पाइआ नाम रहिआ लिव लाई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069

नाम तुल कछु अवर न होए॥ नानक गुरमुख नाम पावै जन कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 265

महा बिखम जम पंथ दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा॥
नानक गुरमुख नाम धिआइआ ता पाए मोख दुआरा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

पाए ठगउली सभ जग जोहिआ॥ ब्रहमा बिसन महादेउ मोहिआ॥
गुरमुख नाम लगे से सोहिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 394

ऐसे प्रेम भगति वीचारी॥ गुरमुख साचा नाम मुरारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

गुरमुख नाम सबद सालाहे॥ अगम अगोचर वेपरवाहे॥
एक नाम जुग चार उधारे सबदे नाम विसाहा हे॥

गुरु अमरदास आदि ग्रन्थ, पृ. 1055

करण पलाव करै बिललातउ बिन गुर नाम न जापै॥
पल पंकज मह नाम छडाए जे गुर सबद सिञापै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

विण गुर पूरे कोए न जाणी॥ माइआ मोह दूजै लोभाणी॥
गुरमुख नाम मिलै हर बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 423

हम कुचल कुचील अत अभिमानी मिल सबदे मैल उतारी॥
संतहो गुरमुख नाम निसतारी॥
सचा नाम वसिआ घट अंतर करतै आप सवारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.910

से गुरसिख धन धंन है जिनी गुर उपदेस सुणिआ हर कंनी॥
गुर सतगुर नाम द्रिड़ाइआ तिन हंउमै दुबिधा भंनी॥
बिन हर नावै को मित्र नाही वीचार डिठा हर जंनी॥
जिना गुरसिखा कउ हर संतुसट है तिनी सतगुर की गल मंनी॥
जो गुरमुख नाम धिआइदे तिनी चड़ी चवगण वंनी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.590-91

अनिक रूप रंग भोग रसै॥ गुरमुख नाम निमख रिदै वसै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.890

जिस नाल जोर न चलई खले कीचै अरदास॥
नानक गुरमुख नाम मन वसै ता सुण करे साबास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.994

सभ किलविख पाप दुख कटिआ
मेरी जिंदुड़ीए मल गुरमुख नाम उतारे राम॥
वड पुंनी हर धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.539

भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे॥
कोट पराध मिटे खिन भीतर जां गुरमुख नाम समारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.670

इन्ह बिधि पासा ढालहो बीर॥
गुरमुख नाम जपहो दिन राती अंत काल नह लागै पीर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1185

हर कै रंग रते बैरागी जिन्ह गुरमत नाम पछानी॥
पुरखै पुरख मिलिआ सुख पाइआ सभ चूकी आवण जानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1199

गुरमुख नाम जपहो मन मेरे॥ नानक पावहो सूख घनेरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 264

गुरमुख नाम परापत होवै॥ सहजे जागै सहजे सोवै॥
गुरमुख नाम समाए समावै नानक नाम धिआई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069-70

मेरे मन गुरमुख नाम हर धिआए॥
सदा हर चरणी लाग रहा इक मन एकै भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 994

निरमल नाम जित मैल न लागै गुरमत नाम जपै लिव लावै॥
नाम पदारथ जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुए मर जावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 494

मै आए मिलहो जगजीवन पिआरे॥ हर हर नाम दइआ मन धारे॥
गुरमत नाम मीठा मन भाइआ जन नानक नाम मन भीजै जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 95

2. गुरुमुख नाम धुनात्मक है, इसके अंदर धुन है

गुरमुख नाम सुनहो मेरी भैना॥
एको रव रहिआ घट अंतर मुख बोलहो गुर अंम्रित बैना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 366

गुरमुख नाम प्रगटी है सोए॥ चहु जुग निरमल हछा लोए॥
नामे नाम रते सुख पाइआ नाम रहिआ लिव लाई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069

3. गुरुमुख नाम कहाँ है?

3.1. काया में, यह नाम घट के अंदर रम रहा है

काइआ अंदर सभ किछ वसै खंड मंडल पाताला॥
काइआ अंदर जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला॥
काइआ कामण सदा सुहेली गुरमुख नाम सम्हाला॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

हम कुचल कुचील अत अभिमानी मिल सबदे मैल उतारी॥
संतहो गुरमुख नाम निसतारी॥
सचा नाम वसिआ घट अंतर करतै आप सवारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेस चहु वरना कउ साझा॥
गुरमुख नाम जपै उधरै सो कल मह घट घट नानक माझा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747-48

अंतर रतन बीचारे॥ गुरमुख नाम पिआरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775

गुरमुख नाम सुनहो मेरी भैना॥
एको रव रहिआ घट अंतर मुख बोलहो गुर अंम्रित बैना॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 366

4. गुरुमुख नाम किस प्रकार मिलता है?

4.1. जीवित मरने से

जीवतिआ मरीऐ भउजल तरीऐ गुरमुख नाम समावै॥
पूरा पुरख पाइआ वडभागी सच नाम लिव लावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 775-76

4.2. मालिक की दया से

प्राणी गुरमुख नाम धिआई॥
हर हर क्रिपा करे गुर मेले हर हर नाम समाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1265

आप करे तै आप कराए॥ आपे गुरमुख नाम वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

जो धुर रखिअन मेल मिलाए॥ कदे न विछुड़ह सबद समाए॥
आपणी कला आपे प्रभ जाणै॥ नानक गुरमुख नाम पछाणै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 665

4.3. बड़े भाग्य से

जे वड भाग होए अत नीका तां गुरमत नाम द्रिड़ीजै॥
सभ माइआ मोह बिखम जग तरीऐ सहजे हर रस पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

4.4. सतगुरु तथा सत्संग से

से गुरसिख धन धंन है जिनी गुर उपदेस सुणिआ हर कंनी॥
गुर सतगुर नाम द्रिड़ाइआ तिन हंउमै दुबिधा भंनी॥
बिन हर नावै को मित्र नाही वीचार डिठा हर जंनी॥
जिना गुरसिखा कउ हर संतुसट है तिनी सतगुर की गल मंनी॥
जो गुरमुख नाम धिआइदे तिनी चड़ी चवगण वंनी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 590–91

सुण सुण गुरमुख नाम वखाणह सतसंगत मेलाई॥
गुरमुख गावै आप गवावै दर साचै सोभा पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

5. गुरुमुख ही गुरुमुख नाम को पहचानता है

गुरमुख नाम धिआईऐ बूझै वीचारा॥
गुरमुख भगति सलाह है अंतर सबद अपारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

पाप पुंन वरतै संसारा॥ हरख सोग सभ दुख है भारा॥
गुरमुख होवै सो सुख पाए जिन गुरमुख नाम पछाता हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1052

6. गुरुनाम के फल

6.1. सब कार्य सिद्ध होते हैं और सुख मिलता है

अनदिन जपउ गुरू गुर नाम॥ ता ते सिध भए सगल कांम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 202

सरब सुखा का एक हर सुआमी सो गुर नाम दइओ॥
संत प्रहलाद की पैज जिन राखी हरनाखस नख बिदरिओ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 856

6.2. अहंकार, पापों, विकारों और भ्रमों का नाश

गुरमत नाम न वीसरै सहजे पत पाईऐ॥
अंतर सबद निधान है मिल आप गवाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 228

अहंबुध बहु सघन माइआ महा दीरघ रोग॥
हर नाम अउखध गुर नाम दीनो करण कारण जोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 502

सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए
मल गुरमुख नाम उतारे राम॥
वड पुंनी हर धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 539

सुण गुरमुख सुण गुरमुख नाम सभ बिनसे हंउमै पापा राम॥
जप हर हर जप हर हर नाम लथिअड़े जग तापा राम॥...
हर प्रभ क्रिपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप संतापा॥
सुण गुरमुख सुण गुरमुख नाम सभ बिनसे हंउमै पापा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 574

भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे॥
कोट पराध मिटे खिन भीतर जां गुरमुख नाम समारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 670

6.3. गुरुमुख नाम अंत समय की पीड़ा से बचाता है और इससे आवागमन छूट जाता है

इन्ह बिधि पासा ढालहो बीर॥
गुरमुख नाम जपहो दिन राती अंत काल नह लागै पीर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

हर कै रंग रते बैरागी जिन्ह गुरमत नाम पछानी॥
पुरखै पुरख मिलिआ सुख पाइआ सभ चूकी आवण जानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

संसार भवजल किउ तरै॥
गुरमुख नाम निरंजन पाईऐ अफरिओ भार अफार टरै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1013

6.4. गुरुमुख नाम सुखदायक है, यह जीव को अलिप्त और अतीत रखता है

आप अतीत अलिपत है निरजोग हर जोगी॥
जो तिस भावै सो करे हर करे सो होगी॥
हर गुरमुख नाम धिआईऐ लह जाहे विजोगी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 514

6.5. गुरुमुख नाम से सहज की प्राप्ति होती है

गुरमुख नाम परापत होवै॥ सहजे जागै सहज़े सोवै॥
गुरमुख नाम समाए समावै नानक नाम धिआई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069-70

7. प्रार्थना

जो गुरमुख नाम धिआइदे तिन दरसन दीजै॥
हम तिन के चरण पखालदे धूड़ घोल घोल पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 726

आत्मिक जीवन दान देनेवाली वस्तु अमृत है

अमृत

अमृत, आबे हयात या महारस उस वस्तु को कहा जाता है जो ग्रहण करने या चखनेवाले मनुष्य को अमर कर दे और जन्म-मरण से रहित कर दे।

अमृत की प्राप्ति के लिए अनेक तपस्वियों ने तप किए तथा अकथनीय कष्ट सहे। लोगों ने तीर्थों, पहाड़ों, जंगलों, नदियों, नालों तथा सरोवरों में भटक-भटककर खोज की, पर कहीं भी ऐसा आत्मिक जीवन-दान देनेवाली वस्तु न मिली। वास्तव में यह विचित्र पदार्थ इस स्थूल संसार में कहीं नहीं है। वनस्पति शास्त्री (Botanists) और दूसरे विद्वान भी हार चुके पर इसका ठौर-ठिकाना नहीं मिला।

सब मज़हबों की धर्म पुस्तकों में अमृत की चर्चा मिलती है। मुसलमान फ़क़ीरों ने इसको आबे हयात कहा है और वे इसके पीने के गुणगान करते रहे हैं। ऋषि-मुनि कहते हैं कि मानसरोवर अमृत का सरोवर है, जिसका पान करके मनुष्य अमर पद को प्राप्त होता है। वेदों में जगह-जगह सोम रस का उल्लेख आता है, जिसको पीकर ऋषि-मुनि अमर हो जाते थे। संत-महात्मा इस मानसरोवर या चश्मा-ए-कौसर को अमृतसर कहकर वर्णन करते हैं।

बाइबल में ईसा मसीह के इतिहास से पता चलता है कि वे मुर्दों के बीच में से उठे और मुर्दों को जीवित करते रहे। स्पार्टन लेडी को ज़िंदगी का पानी देने का इक़रार (वचन) किया। इन बातों से पता चलता है कि अमृत का प्रयोग वे भी करते थे। दसों पातशाहियों ने तथा अनेक भक्तजनों ने अमृत पिया और अपनी संगत (शिष्यों) को पिलाते रहे।

अमृत क्या है?

गहराई से सोचना चाहिए कि अमृत क्या है? गुरु साहिब ने हमें कौन-से अमृत के बारे में बताया है। गुरवाणी में अमृत का वर्णन किया गया है, उसके विचार से पता लगता है कि गुरु साहिबान ने अमृत नाम शब्द को कहा है तथा इसी के पीने का उपदेश दिया है:

अंम्रित साचा नाम है कहणा कछू न जाए॥
पीवत हू परवाण भइआ पूरै सबद समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

अंम्रित हर हर नाम है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रित गुरमत पाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 538

हर का नाम अंम्रित जल निरमल इह अउखध जग सारा॥
गुर परसाद कहै जन भीखन पावउ मोख दुआरा॥

भीखन साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 659

अंम्रित हर का नाउ देवै दीखिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

अंम्रित हर का नाम है जित पीतै तिख जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1283

हर का नाम अंम्रित कल माहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 888

अंम्रित नाम निधान है मिल पीवहो भाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 318

गुर का सबद महा रस मीठा॥ ऐसा अंम्रित अंतर डीठा॥
जिन चाखिआ पूरा पद होए॥ नानक ध्रापिओ तन सुख होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1331

गुर का सबद अंम्रित है जित पीतै तिख जाए॥
इह मन साचा सच रता सचे रहिआ समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

अंम्रित एको सबद है नानक गुरमुख पाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

डूगर वास तिखा घणी जब देखा नही दूर॥
तिखा निवारी सबद मंन अंम्रित पीआ भरपूर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 933

अमृत 'सच' तथा 'अनहद वाणी' को भी कहा है:

अंम्रित नाम निधान सच गुरमुख पाइआ जाए॥
वडभागी ते संत जन जिन मन वुठा आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

अंम्रित वरखै अनहद बाणी॥ मन तन अंतर सांत समाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 105

अमृत का हरि और हरि कीर्तन कहकर भी वर्णन किया गया है:

साखा तीन निवारीआ एक सबद लिव लाए॥
अंम्रित फल हर एक है आपे दे खवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसन सभे छार॥
हर अंम्रित बूंद सुहावणी मिल साधू पीवणहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

हर अंम्रित हर जल पाइआ सभ लाथी तिस तिस के॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 731

हर हर नाम अंम्रित है हर जपीऐ सतगुर भाए॥
हर हर नाम पवित है हर जपत सुनत दुख जाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1316

अंम्रित रस हर कीरतनो को विरला पीवै॥
वजहो नानक मिलै एक नाम रिद जप जप जीवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

अंम्रित नाम महा रस मीठा गुरमती अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

गुरवाणी बताती है कि वह अमृत एक ही है तथा वह अमृत केवल नाम है, इसके सिवाय और कोई दूसरा अमृत नहीं। इसका पान करने से अंदर रंग आ जाता है:

जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहे॥
नानक अंम्रित एक है दूजा अंम्रित नाहे॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1238

कलियुग में अमृत केवल नाम ही है:

हर का नाम अंम्रित कल माहे॥ एह निधाना साधू पाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 888

अमृत में धुन (आवाज़) है

अमृत में रसीली धुनें तथा अनहद शब्द है जो संपूर्ण जगत का आधार है। अमृत ज़िंदगी की रोटी (Bread of Life) है जो आत्मा का आहार है:

धावत थंम्हिआ सतगुर मिलिऐ दसवा दुआर पाइआ॥
तिथै अंम्रित भोजन सहज धुन उपजै जित सबद जगत थंम्ह रहाइआ॥
तह अनेक वाजे सदा अनद है सचे रहिआ समाए॥
इउ कहै नानक सतगुर मिलिऐ धावत थंम्हिआ निज घर वसिआ आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 441

साध मिलै साधू जनै संतोख वसै गुर भाए॥
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतगुर माहे समाए॥
पी अंम्रित संतोखिआ दरगह पैधा जाए॥
घट घट वाजै किंगुरी अनदिन सबद सुभाए॥
विरले कउ सोझी पई गुरमुख मन समझाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62

अमृत में प्रकाश है

जो दृष्टि की शक्ति (निगाह) दोनों आँखों के पीछे देख रही है, उसको उलटकर गगन की ओर स्थिर करने से प्रकाश हो जाता है। पहले बिजली की चमक, तारा-मंडल, सूर्य, चंद्र तथा अन्य कई प्रकार के प्रकाश दिखाई देते हैं। जब सुरत इन मंडलों के पार चली जाती है तो ऊपर, त्रिकुटी के देश में ब्रह्म का सूर्य तथा पारब्रह्म देश में वहाँ चंद्र दिखाई देता है।

तुलसी साहिब की तरह अन्य संतों ने भी अपनी वाणी में इनकी चर्चा की है (देखें: 'ज्योति' का प्रकरण)।

हर अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी॥
तह भइआ प्रगास मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैण किराखी॥
अदिसट अगोचर अलख निरंजन सो देखिआ गुरमुख आखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 87

अंम्रित बाणी गुर की मीठी॥ गुरमुख विरलै किनै चख डीठी॥
अंतर परगास महा रस पीवै दर सचै सबद वजावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 113

निरमल जोत अंम्रित हर नाम॥ पीवत अमर भए निहकाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886-87

अमृत कहाँ है?

1. वह शरीर के अंदर पिया जाता है

अमृत यानी आबे हयात बाहरी संसार में नहीं है, वास्तव में यह आंतरिक आत्मिक मंडलों यानी रूहानी मंज़िलों पर मिलता है, जिसका पान करके जीव सदा के लिए अमर हो जाता है।

अमृत का पान करने के लिए शरीररूपी घर के अंदर प्रवेश करना पड़ता है। अंदर जाने से संतों का तात्पर्य क्या है, शरीर में वह स्थान कौन-सा है जहाँ से इस अमृत की प्राप्ति होती है?

यह शरीर सुरत (आत्मा) का घर है, इसमें खिड़कियाँ और द्वार हैं जिनके द्वारा रूह बाहरी संसार में विचरती है, पर वह इनके अंदर क़ैद है। शरीर के नौ द्वार तो प्रकट हैं (दो आँखें, दो कान, दो नासिका, एक मुँह, एक गुदा तथा एक इंद्री), जब तक सुरत इन नौ द्वारों में फँसी रहती है, वह अमृत से ख़ाली रहती है। इन द्वारों को छोड़कर एक और गुप्त द्वार है जो आँखों के पीछे है। जब रूह इन नौ द्वारों को छोड़कर या इनसे सिमटकर इस स्थान पर आती है, तब वह इस अनुपम वस्तु (अमृत) का पान करती है:

नउ घर देख जो कामन भूली बसत अनूप न पाई॥
कहत कबीर नवै घर मूसे दसवैं तत समाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 339

नउ दरवाज नवे दर फीके रस अंम्रित दसवे चुईजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

अंम्रित रस सतगुरू चुआइआ॥ दसवै दुआर प्रगट होए आइआ॥
तह अनहद सबद वजह धुन बाणी सहजे सहज समाई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069

बाहर ढूढन ते छूट परे गुर घर ही माहे दिखाइआ था॥...
अनहद सबद दसम दुआर वजिओ तह अंम्रित नाम चुआइआ था॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1002

अमृत इस शरीर के अंदर प्रवेश करने से प्राप्त होता है, यह नौ निधियों का देनेवाला है, किसी भी बाहरमुखी साधन द्वारा इसकी प्राप्ति असंभव है:

नउ निध अंम्रित प्रभ का नाम॥ देही मह इस का बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

यह अमृत सब घटों में भरपूर है, कोई घट इससे ख़ाली नहीं है:

जेते घट अंम्रित सभ ही मह भावै तिसह पीआई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1123

अमृत का सरोवर सबके अंदर हिलोरें मार रहा है, वह केवल शब्द द्वारा ही पिया जा सकता है:

अंतर खूहटा अंम्रित भरिआ सबदे काढ पीऐ पनिहारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 570

यह अमृत मनुष्य के अपने अंदर है, पर दुनिया इसकी खोज में बाहर भटक रही है। जिस प्रकार कस्तूरी की थैली होती तो हिरन की नाभि में है, पर वह उसके लिए ज़ंगलों में भटकता फिरता है और उसको पा नहीं सकता:

घर ही मह अंम्रित भरपूर है मनमुखा साद न पाइआ॥
जिउ कसतूरी मिरग न जाणै भ्रमदा भरम भुलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

एक सूफ़ी दरवेश फ़रमाते हैं कि यार तो शरीररूपी घर में है और हम दुनिया में मारे-मारे फिरते हैं। अमृत-जल गगन मंडलरूपी गागर में भरा हुआ है और हम प्यासे फिर रहे हैं:

यार दर खाना ओ मन गिर्दे-जहाँ मीगरदम,
आब दर कूज़ा ओ मन तश्ना लबाँ मीगरदम।

गगन के अंदर उलटा कुआँ है जिसका मुँह नेत्रों के पीछे हृदय कमल में खुलता है। उस कुएँ में से अमृत की धारा काया के अंदर आ रही है। सुरत उस धारा को भूलकर बाहरमुखी होकर संसार में भटक रही है और दुःखी हो रही है।

सब कुछ शरीररूपी घर के अंदर है, बाहर कुछ नहीं। जिन्होंने गुरु की कृपा से अंतर में अमृत प्राप्त किया है, वे अंदर-बाहर सदा सुहेले (सुखी) हैं। अमृतधारा अंतर में सदा रिमझिम बरस रही है, जिसे पीकर वे दिन-रात आनंद में मग्न रहते हैं। जन्म-जन्मांतरों से बिछुड़ा हुआ जीव, संतों से सुमति पाकर, गुरुमुख बनकर इस अवस्था को प्राप्त करता है। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

सभ किछ घर मह बाहर नाही॥ बाहर टोलै सो भरम भुलाही॥
गुर परसादी जिनी अंतर पाइआ सो अंतर बाहर सुहेला जीउ॥
झिम झिम वरसै अंम्रित धारा॥ मन पीवै सुन सबद बीचारा॥
अनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हर केला जीउ॥
जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ॥ साध क्रिपा ते सूका हरिआ॥
सुमत पाए नाम धिआए गुरमुख होए मेला जीउ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 102

2. मन के परदे के अंदर है

अमृत मन के परदे के अंदर है। मन के स्थिर होने पर यह प्रकट हो जाता है। इसे प्राप्त करके मनुष्य अमर जीवन को पा लेता है:

मेरा बिरही नाम मिलै ता जीवा जीउ॥
मन अंदर अंम्रित गुरमत हर लीवा जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 175

नानक अंम्रित मनै माहे पाईऐ गुर परसाद॥
तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आद॥
गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1238-39

मन जब विषय-विकारों की मलिन वासनाओं से निर्मल होता है तब अमृत के तत्त्व को प्राप्त करता है:

गुरमती मन निरमल होआ अंम्रित तत वखानै॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

अमृत कौन चख सकता है?

गुरबाणी के विचार से पता लगता है कि इस अमृत को वह पीता है जो मरकर जीवित है, यानी जीवित-मृतक हो जाए (विस्तार के लिए देखें 'जीते-जी-मरना' का प्रकरण):

जो जन मर जीवे तिन्ह अंम्रित पीवे मन लागा गुरमत भाउ जीउ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

हमारी स्थूल इंद्रियों की दुकान बाहर खुली हुई है और अंदर की सूक्ष्म और कारण इंद्रियाँ बंद हैं। जब रूह बाहरी स्थूल इंद्रियों की दुकान को भली प्रकार बंद करके आंतरिक सूक्ष्म मंडलों पर सफ़र करती है तब इस अवस्था को मर-जीवा होना (मर कर जीवित होना) कहते हैं। यदि रूह नौ द्वारों को छोड़कर आँखों के पीछे दसवीं गली में आ जाए तो वह इस अमृत को पी सकती है।

अमृत किस प्रकार मिलता है?

1. मालिक की दया द्वारा

इस अमृत की प्राप्ति मालिक की कृपा दृष्टि द्वारा होती है, जीव के हाथ में कुछ नहीं। सब यत्न करते हैं, पर जब हरि को भाए तब ही हृदयरूपी धरती में यह फल लगता है:

हर हर नाम अंम्रित है नदरी पाइआ जाए॥
अनदिन हर हर उचरै गुर कै सहज सुभाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

सभ को बीजे आपणे भले नो हर भावै सो खेत जमाइआ॥
गुरसिखी हर अंम्रित बीजिआ हर अंम्रित नाम फल अंम्रित पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.304

2. धुर भाग्य से

धुर भाग्य और मस्तक में लिखा हुआ हो, तभी हरि अमृत की श्रेष्ठ कथा का रस अपने अंदर चखा जा सकता है:

जिस धुर भाग होवै मुख मसतक तिन जन लै हिरदै राखी॥
हर अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.87

3. सतगुरु तथा उसकी सेवा से

अमृत है तो सभी जगह भरपूर, कोई स्थान इससे ख़ाली नहीं है, पर हम लोग मनमुखता के कारण उसकी एक बूँद भी नहीं पी सकते। *"Water, water! everywhere, but not a drop to drink"* यानी पानी सब जगह है, पर पीने को एक बूँद तक नहीं।

यह अमृत जिसको देवी-देवता और ऋषि-मुनि खोज रहे हैं, गुरु से ही मिल सकता है।

सुर नर मुनि जन अंम्रित खोजदे सो अंम्रित गुर ते पाइआ॥
पाइआ अंम्रित गुर क्रिपा कीनी सचा मन वसाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.918

अमृत की प्राप्ति अपने आप नहीं हो सकती। जब तक हम किसी जीवित अमृत दाता सतगुरु की शरण में न जाएँ, तब तक अमृत की प्राप्ति संभव नहीं, यह दान उसकी सेवा से मिलता है:

अउखध नाम निरमल जल अंम्रित पाईऐ गुरू दुआरी॥
कहो नानक जिस मसतक लिखिआ तिस गुर मिल रोग बिदारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.616

अंम्रित रस हर गुर ते पीआ॥ हर पैनण नाम भोजन थीआ॥
नाम रंग नाम चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.99

मेरे सतगुरा हउ तुध विटहो कुरबाण॥
तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुस दिता अंम्रित नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

आपे ही प्रभ देह मत हर नाम धिआईऐ॥
वडभागी सतगुर मिलै मुख अंम्रित पाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

अंम्रित सबद अंम्रित हर बाणी॥ सतगुर सेविऐ रिदै समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

4. सतगुरु के भाणे और आदेश पर चलने से

सतगुरु का भाणा मानने, उनकी इच्छा पर चलने तथा साधु-संतों का सत्संग करने से यह अमृत मिलता है:

मन मेरे सतगुर कै भाणै चल॥
निज घर वसह अंम्रित पीवह ता सुख लहहे महल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

गुर के भाणे विच अंम्रित है सहजे पावै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

संता संग निधान अंम्रित चाखीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 91

हर अंम्रित बूंद सुहावणी मिल साधू पीवणहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

नानक नाम जपै सो जीवै॥ साधसंग हर अंम्रित पीवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 200

यह अमृत सतगुरु में भरपूर है। उसकी अमृतभरी दृष्टि जीव को संत बना सकती है:

सतगुर विच अंम्रित है हर उतम हर पद सोए॥
नानक किरपा ते हर धिआईऐ गुरमुख पावै कोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

सतगुरु अमृतसर है, श्रेष्ठ भाग्य द्वारा जीव उसमें स्नान करके पवित्र हो सकता है:

सतगुर पुरख अंम्रित सर वडभागी नावह आए॥
उन जनम जनम की मैल उतरै निरमल नाम द्रिड़ाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

मनुष्य का संसार में आने का ध्येय अमृत को प्राप्त करना है, जो केवल गुरु से ही मिल सकता है। भाँति-भाँति के वेश, भेष और चतुराइयाँ दुविधा के कारण हैं, उनके द्वारा यह फल नहीं मिल सकता। नामरूपी अमृत के बिना ये सब दुविधा के कारण हैं, जो उनमें अटका वही गला:

जिस जल निध कारण तुम जग आए सो अंम्रित गुर पाही जीउ॥
छोडहो वेस भेख चतुराई दुबिधा इह फल नाही जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

अमृत किसे मिलता है?

करोड़ों में से किसी बिरले गुरुमुख को यह अमृत का भोजन मिलता है:

अंम्रित नाम भोजन हर दे॥ कोट मधे कोई विरला ले॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1335

अंम्रित बाणी गुर की मीठी॥
गुरमुख विरलै किनै चख डीठी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 113

अंम्रित सचा वरसदा गुरमुखा मुख पाए॥
मन सदा हरीआवला सहजे हर गुण गाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 428

गुरमुख धिआवह से अंम्रित पावह सेई सूचे होही॥
अहिनिस नाम जपहो रे प्राणी मैले हछे होही॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1254

झिम झिमे झिम झिम वरसै अंम्रित धारा राम॥
गुरमुखे गुरमुख नदरी राम पिआरा राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442–43

हर अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी॥
तह भइआ प्रगास मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैण किराखी॥
अदिसट अगोचर अलख निरंजन सो देखिआ गुरमुख आखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 87

यह घर (शरीर) के अंदर ही भरपूर है, मनमुख और साकत (निगुरे) लोग इससे कोरे रह जाते हैं:

घर ही मह अंम्रित भरपूर है मनमुखा साद न पाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

हउ बलिहारी गुर आपणे जिन सची बूझ दिती बुझाए॥
जगत मुसै अंम्रित लुटीऐ मनमुख बूझ न पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1282

अमृत के फल

अमृत के अनेक फलों का गुरवाणी में वर्णन किया गया है। अमृत रस का पान करके जीव संपूर्ण रसों की ओर से हटकर सच्चा वैरागी बन जाता है:

ना तिस भूख पिआस मन मानिआ॥
सरब निरंजन घट घट जानिआ॥
अंम्रित रस राता केवल बैरागी गुरमत भाए सुभाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

अमृत सबके अंदर भरपूर है। जो इसको चखता है वह इसके महारस को जान लेता है। इसके स्वाद को चखकर जीव हरि रस में ओत-प्रोत होकर निर्भय

हो जाते हैं, उनको काल नहीं सताता। वे स्वयं छूट जाते हैं और परिवार तथा सब जगत का उनके आसरे छूटने का साधन बन जाता है:

अंदर अंम्रित भरपूर है चाखिआ साद जापै॥
जिन चाखिआ से निरभउ भए से हर रस ध्रापै॥
हर किरपा धार पीआइआ फिर काल न विआपै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1092

दस चार हट तुध साजिआ वापार करीवे॥
इकना नो हर लाभ दे जो गुरमुख थीवे॥
तिन जमकाल न विआपई जिन सच अंम्रित पीवे॥
ओए आप छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभ जगत छुटीवे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 83

अमृत नौ निधियों और ऋद्धि-सिद्धि का देनेवाला है। इससे सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति और शांति मिलती है। भय, भ्रम, विकार और पापों का नाश होता है। अहंकार नहीं रहता और माया और तृष्णा मिट जाती है, मन स्थिर और निर्मल हो जाता है और मुक्ति और सहज की प्राप्ति होती है। अमृतपान करके जीव मालिक की दरगाह में स्वीकार होता है।

इन प्रमाणों से ज्ञात होता है कि गुरु साहिबान ने जिस अमृत की इतनी महिमा की है तथा जिसके पीने के लिए उपदेश दिया है, वह नाम यानी शब्दरूपी अमृत है जो सब घटों में भरपूर है। किसी समर्थ साधु-संत की अमृतभरी दृष्टि हमारे अंदर अमृत का जामन लगाकर हमें अमृत को पीने के योग्य बना देती है।

सिक्खों में खड़ग के अमृत का प्रचार है। मान्यता है कि यह अमृत भी वाणी यानी नाम जपकर तैयार किया जाता है और नाम जपते समय जिस वस्तु की ओर दृष्टि हो, उसमें नाम का असर आ जाता है। नाम के रसिक, संतजन, जिनके अंदर पूर्ण ज्योति का प्रकाश हो – पूरन जोत जगै घट मै तब खालस ताहि नखालस जानै॥ (श्री दसम ग्रंथ, दूसरी सैंची, पृ. 675) – अपनी अमृतभरी दृष्टि द्वारा तैयार किए गए ऐसे ऊँचे प्रसाद का पान कराकर, मुर्दा रूहों को जाग्रत कर देते हैं और नाम से रहित हृदयों में नाम की दात बख़्श देते हैं, संतों की दृष्टि में यही अमृत है। उनकी दृष्टिमात्र से ही जीव संत बन सकते हैं:

अंम्रित द्रिसटि पेखै होए संत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 287

इन विषयों के बारे में अनेक प्रमाण आदि ग्रन्थ की वाणी में से दिए गए हैं, पाठकजन ध्यानपूर्वक विचार करें।

सतगुरु की कृपा द्वारा अमृत पिया जा सकता है। वे सज्जन भाग्यशाली हैं जो अमृत पीकर अमर हो जाते हैं तथा मालिक के चरण कमलों के भँवरे बनकर उसका आनंद लेते हैं:

अंम्रित पीवहो सदा चिर जीवहो हर सिमरत अनद अनंता॥
रंग तमासा पूरन आसा कबह न बिआपै चिंता॥
भवर तुम्हारा इह मन होवउ हर चरणा होहो कउला॥
नानक दास उन संग लपटाइओ जिउ बूंदह चात्रिक मउला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 496

गुरवाणी

1. अमृत क्या है?

1.1. नाम है

जिनी इक मन नाम धिआइआ गुरमती वीचार॥
तिन के मुख सद उजले तित सचै दरबार॥
ओए अंम्रित पीवह सदा सदा सचै नाम पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

अंम्रित साचा नाम है कहणा कछू न जाए॥
पीवत हू परवाण भइआ पूरै सबद समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

अंम्रित हर का नाम है जित पीतै तिख जाए॥
नानक गुरमुख जिन्ह पीआ तिन्ह बहुड़ न लागी आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1283

एको एक वसै मन सुआमी दूजा अवर न कोई॥
एको नाम अंम्रित है मीठा जग निरमल सच सोई॥
नानक नाम प्रभू ते पाईऐ जिन कउ धुर लिखिआ होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1259

रस अंम्रित नाम रस अत भला कित विधि मिलै रस खाए॥
जाए पुछहो सोहागणी तुसा किउ कर मिलिआ प्रभ आए॥
ओए वेपरवाह न बोलनी हउ मल मल धोवा तिन पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

रतन जवेहर माणिका अंम्रित हर का नाउ॥
सूख सहज आनंद रस जन नानक हर गुण गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 48

गुर अंम्रित नाम पीआलिआ जनम मरन का पथ॥
गुर परमेसर सेविआ भै भंजन दुख लथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49-50

जीअ प्राण प्रभ मनह अधारा॥ भगत जीवह गुण गाए अपारा॥
गुण निधान अंम्रित हर नामा हर धिआए धिआए सुख पाइआ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 103

सचा अंम्रित नाम भोजन आइआ॥ गुरमती खाधा रज तिन सुख पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 150

नाम रिदै अंम्रित मुख नाम॥ नरहर नाम नरहर निहकाम॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 152

किस ही नाल न चले नानक झड़ झड़ पए गवारा॥
कूजा मेवा मै सभ किछ चाखिआ इक अंम्रित नाम तुमारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 155

नाम रतन को को बिउहारी॥ अंम्रित भोजन करे आहारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 181

अंम्रित नाम पीवहो मेरे भाई॥ सिमर सिमर सभ तपत बुझाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 191

सतगुर सेवे चूकै जंजाला॥ अंम्रित नाम सदा सुख नाला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 222

अंम्रित नाम रसना नित गावै॥ जिस नो क्रिपा करे सो हर रस पावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

खिमा गही सच संचिओ खाइओ अंम्रित नाम॥
खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

अंम्रित नाम निधान है मिल पीवहो भाई॥
जिस सिमरत सुख पाईऐ सभ तिखा बुझाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 318

अंम्रित नाम जपउ जप रसना॥ अमोल दास कर लीनो अपना॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 331

अंम्रित नाम तुम्हारा ठाकुर एह महा रस जनह पीओ॥
जनम जनम चूके भै भारे दुरत बिनासिओ भरम बीओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 382

एक बगीचा पेड घन करिआ॥ अंम्रित नाम तहा मह फलिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 385

वाह वाह साहिब सच है अंम्रित जा का नाउ॥
जिन सेविआ तिन फल पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 515

अंम्रित साचा नाउ ओथै जापीऐ॥ मन कउ होए संतोख भुखा ध्रापीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 519

अंम्रित हर हर नाम है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रित गुरमत पाए राम॥
हउमै माइआ बिख है मेरी जिंदुड़ीए हर अंम्रित बिख लह जाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 538

साहिब सफलिओ रुखड़ा अंम्रित जा का नाउ॥
जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 557

अंम्रित नाम सद मीठा लागा गुर सबदी साद आइआ॥
सची बाणी सहज समाणी हर जीउ मन वसाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 559

ता मै कहिआ कहण जा तुझै कहाइआ॥
अंम्रित हर का नाम मेरै मन भाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

अंम्रित नाम परमेसर तेरा जो सिमरै सो जीवै॥
जिस नो करम परापत होवै सो जन निरमल थीवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 616

हर का नाम अंम्रित जल निरमल इह अउखध जग सारा॥
गुर परसाद कहै जन भीखन पावउ मोख दुआरा॥

भीखन साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 659

अंम्रित नाम निरमोलक हीरा गुर दीनो मंतानी॥
डिगै न डोलै द्रिड़ कर रहिओ पूरन होए त्रिपतानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 671

हर हर नाम अपार अमोला अंम्रित एक निधाना॥
सूख सहज आनंद संतन कै नानक गुर ते जाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 672

गुर रसना अंम्रित बोलदी हर नाम सुहावी॥
जिन सुण सिखा गुर मंनिआ तिना भुख सभ जावी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 726

इह मन ईटी हाथ करहो फुन नेत्रउ नीद न आवै॥
रसना नाम जपहो तब मथीऐ इन बिधि अंम्रित पावहो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 728

अंम्रित हर का नाउ आप वरताइसी॥
चलिआ पत सिउ जनम सवार वाजा वाइसी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.730

सुण सुण अंम्रित नाम धिआवा॥ आठ पहर तेरे गुण गावा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.740

अंम्रित नाम रसन नित जापै॥ रोग रूप माइआ न बिआपै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.760

जिन्ह कउ भए दइआल तिन्ह साधू संग भइआ॥
अंम्रित हर का नाम तिन्ही जनी जप लइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.762

रज रज भोजन खावहो मेरे भाई॥ अंम्रित नाम रिद माहे धिआई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.807

हर का नाम अंम्रित कल माहे॥ एह निधाना साधू पाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.888

जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ कतहु न धाई॥
नाम रसाइण इह मन राता अंम्रित पी त्रिपताई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.915

अंम्रित नाम निधान सच गुरमुख पाइआ जाए॥
वडभागी ते संत जन जिन मन वुठा आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.961

साच रते सच अंम्रित जिहवा मिथिआ मैल न राई॥
निरमल नाम अंम्रित रस चाखिआ सबद रते पत पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1127

पारब्रहम प्रभ सूख निधान॥ तत गिआन हर अंम्रित नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1146

हरख सोग ते रहहे निरासा॥ अंम्रित चाख हर नाम निवासा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1189

हर हर अंम्रित नाम देहो पिआरे॥
जिन ऊपर गुरमुख मन मानिआ तिन के काज सवारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

अब पूछे किआ कहा॥
लैनो नाम अंम्रित रस नीको बावर बिख सिउ गह रहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1203

बिसम भई पेख बिसमादी पूर रहे किरपावत॥
पीओ अंम्रित नाम अमोलक जिउ चाख गूंगा मुसकावत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1205

अंम्रित नाम सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास॥
जनम जनम के किलबिख नासह आगै दरगह होए खलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208

अंम्रित नाम प्रिअ प्रीत मनोहर इहै अघावन पांन कउ॥
अकाल मूरत है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208

अंम्रित नाम पीआ मन त्रिपतिआ आघाए रसन चखा॥
कहो नानक सुख सहज मै पाइआ गुर लाही सगल तिखा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212

पारब्रहम आजोनी संभउ सरब थान घट बीठा॥
भइओ परापत अंम्रित नामा बल बल प्रभ चरणीठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212

हर हर संत जना की जीवन॥
बिखै रस भोग अंम्रित सुख सागर राम नाम रस पीवन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1222

जल थल महीअल पूर रहिओ सरब नाथ अपार॥
हर नाम अंम्रित पीउ नानक आन रस सभ खार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1227

जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहे॥
नानक अंम्रित एक है दूजा अंम्रित नाहे॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1238

गुरमुख अंम्रित नाम है जित खाधै सभ भुख जाए॥
त्रिसना मूल न होवई नाम वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1250

लाहा नाम संसार अंम्रित पीजई॥ हर भगती असनेह गुरमुख घीजई

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1285

रसक रसक गुन गावह गुरमत लिव उनमन नाम लगान॥
अंम्रित रस पीआ गुर सबदी हम नाम विटहो कुरबान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1335

छल नागन सिउ मेरी टूटन होई॥ गुर कहिआ इह झूठी धोही॥
मुख मीठी खाई कउराए॥ अंम्रित नाम मन रहिआ अघाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1347

रमणं केवलं कीरतनं सुधरमं देह धारणह॥
अंम्रित नाम नाराइण नानक पीवतं संत न त्रिप्यते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1356

अंम्रित नाम निधान दिता तुस हर॥ नानक सदा अराध कदे न जांहे मर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1363

जगत उधारण नव निधान भगतह भव तारण॥
अंम्रित बूंद हर नाम बिस की बिखै निवारण॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1397

तार्यउ संसार माया मद मोहित अंम्रित नाम दीअउ समरथ॥
फुन कीरितवंत सदा सुख संपत रिध अर सिध न छोडई सथ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1405

जग अउर न याहे महा तम मै अवतार उजागर आन कीअउ॥
तिन के दुख कोटिक दूर गए मथुरा जिन्ह अंम्रित नाम पीअउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1409

अजै चवर सिर ढुलै नाम अंम्रित मुख लीअउ॥
गुर अरजुन सिर छत्र आप परमेसर दीअउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1409

अंम्रित सबद अंम्रित हर बाणी॥ सतगुर सेविऐ रिदै समाणी॥
नानक अंम्रित नाम सदा सुखदाता पी अंम्रित सभ भुख लह जावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

1.2. शब्द है

जत पाहारा धीरज सुनिआर॥ अहरण मत वेद हथीआर॥
भउ खला अगन तप ताउ॥ भांडा भाउ अंम्रित तित ढाल॥
घड़ीऐ सबद सची टकसाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 8

अंम्रित सबद अंम्रित हर बाणी॥ सतगुर सेविऐ रिदै समाणी॥
नानक अंम्रित नाम सदा सुखदाता पी अंम्रित सभ भुख लह जावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

गुर का सबद अंम्रित है जित पीतै तिख जाए॥
इह मन साचा सच रता सचे रहिआ समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

अंम्रित एको सबद है नानक गुरमुख पाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

सुर नर मुनि जन अंम्रित खोजदे सो अंम्रित गुर ते पाइआ॥
पाइआ अंम्रित गुर क्रिपा कीनी सचा मन वसाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 918

तिस की टेक मनै मह राख॥ गुर का सबद अंम्रित रस चाख॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177-78

डूगर वास तिखा घणी जब देखा नही दूर॥
तिखा निवारी सबद मंन अंम्रित पीआ भरपूर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 933

गुर का सबद अंम्रित है सभ त्रिसना भुख गवाए॥
हर रस पी संतोख होआ सच वसिआ मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 850

1.3. सच है

अंम्रित फल जिनी चाखिआ सच रहे अघाई॥
तिंना भरम न भेद है हर रसन रसाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 421

अंम्रित नाम निधान सच गुरमुख पाइआ जाए॥
वडभागी ते संत जन जिन मन वुठा आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

1.4. अनहद वाणी है

अंम्रित सबद अंम्रित हर बाणी॥ सतगुर सेविऐ रिदै समाणी॥
नानक अंम्रित नाम सदा सुखदाता पी अंम्रित सभ भुख लह जावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

अंम्रित वरखै अनहद बाणी॥ मन तन अंतर सांत समाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 105

हउ वारी जीउ वारी अंम्रित बाणी मंन वसावणिआ॥
अंम्रित बाणी मंन वसाए अंम्रित नाम धिआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 118

अजब कंम करते हर केरे॥ इह मन भूला जांदा फेरे॥
अंम्रित बाणी सिउ चित लाए अंम्रित सबद वजावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 118

गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाण भइआ॥
दर दरसन का प्रीतम होवै मुकत बैकुंठै करै किआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 360

गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रित बुरके राम राजे॥
जिना गुरबाणी मन भाईआ अंम्रित छक छके॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.449

गुरमत मन अंम्रित वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुख अंम्रित बैण अलाए राम॥
अंम्रित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मन सुणीऐ हर लिव लाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.538

अंम्रित बाणी सतगुर पूरे की जिस किरपाल होवै तिस रिदै वसेहा॥
आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुख होहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.961

बाणी गुरू गुरू है बाणी विच बाणी अंम्रित सारे॥
गुर बाणी कहै सेवक जन मानै परतख गुरू निसतारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.982

जउ गुरदेउ त अंम्रित बानी॥ जउ गुरदेउ त अकथ कहानी॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ.1166

सतगुर बचन बचन है नीको गुर बचनी अंम्रित पावैगो॥
जिउ अबंरीक अमरा पद पाए सतगुर मुख बचन धिआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1311

जिह अंम्रित बचन बाणी साधू जन जपह कर बिचित चाओ॥
आनंद नित मंगल गुर दरसन सफल संसार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1401

1.5. हरि और हरि कीर्तन है

साखा तीन निवारीआ एक सबद लिव लाए॥
अंम्रित फल हर एक है आपे दे खवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.66

मन पिआरिआ जीउ मित्रा हर जल मिल जीवे मीना॥
हर पी आघाने अंम्रित बाने सब सुखा मन वुठे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.80

हर का नाम अंम्रित हर हर हरे सो पीऐ जिस राम पिआसी॥
हर आप दइआल दइआ कर मेलै जिस सतगुरू सो जन
हर हर अंम्रित नाम चखासी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1202

बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसन सभे छार॥
हर अंम्रित बूंद सुहावणी मिल साधू पीवणहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

नानक नाम जपै सो जीवै॥ साधसंग हर अंम्रित पीवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 200

अंम्रित रस हर कीरतनो को विरला पीवै॥
वजहो नानक मिलै एक नाम रिद जप जप जीवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

1.6. हरि रस और हरिनाम है

राम नाम सभ है राम नामा रस गुरमत रस रसके॥
हर अंम्रित हर जल पाइआ सभ लाथी तिस तिस के॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 731

फीके हर के नाम बिन साद॥
अंम्रित रस कीरतन हर गाईऐ अहिनिस पूरन नाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1219

हर हर अंम्रित नाम रस हर अंम्रित हर उर धार॥
विच संगत हर प्रभ वरतदा बुझहो सबद वीचार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1314

हर हर नाम अंम्रित है हर जपीऐ सतगुर भाए॥
हर हर नाम पवित है हर जपत सुनत दुख जाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1316

सुख मंगल आनंद हर हर प्रभ चरन अंम्रित सार॥
नानक दास सरनागती तेरे संतना की छार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1121

1.7. अकथ कथा है

अकथ कथा अंम्रित प्रभ बानी॥ कहो नानक जप जीवे गिआनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.806

1.8. तत्त्वज्ञान है

पारब्रहम प्रभ सूख निधान॥ तत गिआन हर अंम्रित नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1146

1.9. अमृत भक्ति का भंडार है

हर अंम्रित भगति भंडार है गुर सतगुर पासे राम राजे॥
गुर सतगुर सचा साहु है सिख दे हर रासे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.449

1.10. अमृत अनंत भंडार है

अंम्रित प्रवाह सर अतुल भंडार भर परै ही ते परै अपर अपार पर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1385

1.11. अमृत महारस मीठा है

जितने रस अन रस हम देखे सभ तितने फीक फीकाने॥
हर का नाम अंम्रित रस चाखिआ मिल सतगुर मीठ रस गाने॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.169-70

गुरमुख सालाहन से साद पाइन मीठा अंम्रित सार॥
सदा मीठा कदे न फीका गुर सबदी वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1333

हउ वारी जीउ वारी अंम्रित नाम मंन वसावणिआ॥
अंम्रित नाम महा रस मीठा गुरमती अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.124

नितप्रति नावण राम सर कीजै॥ झोल महा रस हर अंम्रित पीजै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.198

1.12. अमृत केवल एक ही है

जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहे॥
नानक अंम्रित एक है दूजा अंम्रित नाहे॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1238

1.13. अमृत में धुन है, अनहद है, जो सारे जगत का आधार है

धावत थंम्हिआ सतगुर मिलिऐ दसवा दुआर पाइआ॥
तिथै अंम्रित भोजन सहज धुन उपजै जित सबद जगत थंम्ह रहाइआ॥
तह अनेक वाजे सदा अनद है सचे रहिआ समाए॥
इउ कहै नानक सतगुर मिलिऐ धावत थंम्हिआ निज घर वसिआ आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 441

साध मिलै साधू जनै संतोख वसै गुर भाए॥
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतगुर माहे समाए॥
पी अंम्रित संतोखिआ दरगह पैधा जाए॥
घट घट वाजै किंगुरी अनदिन सबद सुभाए॥
विरले कउ सोझी पई गुरमुख मन समझाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62

1.14. अमृत में प्रकाश है

हर अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी॥
तह भइआ प्रगास मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैण किराखी॥
अदिसट अगोचर अलख निरंजन सो देखिआ गुरमुख आखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 87

अंम्रित बाणी गुर की मीठी॥ गुरमुख विरलै किनै चख डीठी॥
अंतर परगास महा रस पीवै दर सचै सबद वजावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 113

निरमल जोत अंम्रित हर नाम॥ पीवत अमर भए निहकाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886-87

2. अमृत कहाँ है ?

2.1. नौ द्वारों से ऊपर गगन तथा दसवें द्वार में है

उलटिओ कमल ब्रहम बीचार॥ अंम्रित धार गगन दस दुआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 153

ऊपर कूप गगन पनिहारी अंम्रित पीवणहारा॥
जिस की रचना सो बिधि जाणै गुरमुख गिआन वीचारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1331-32

अंम्रित रस सतगुरू चुआइआ॥ दसवै दुआर प्रगट होए आइआ॥
तह अनहद सबद वजह धुन बाणी सहजे सहज समाई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069

नउ दरवाज नवे दर फीके रस अंम्रित दसवे चुईजै॥
क्रिपा क्रिपा किरपा कर पिआरे गुर सबदी हर रस पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

जा की द्रिसटि अंम्रित धार कालुख खनि उतार
तिमर अग्यान जाहे दरस दुआर॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1391

बाहर ढूढन ते छूट परे गुर घर ही माहे दिखाइआ था॥...
अनहद सबद दसम दुआर वजिओ तह अंम्रित नाम चुआइआ था॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1002

2.2. मन के अंदर है और मन का आधार है

मेरा बिरही नाम मिलै ता जीवा जीउ॥
मन अंदर अंम्रित गुरमत हर लीवा जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 175

तिस की टेक मनै मह राख॥ गुर का सबद अंम्रित रस चाख॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

री कलवार गवार मूढ मत उलटो पवन फिरावउ॥
मन मतवार मेर सर भाठी अंम्रित धार चुआवउ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1123

हरामखोर निरगुण कउ तूठा॥
मन तन सीतल मन अंम्रित वूठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1142

जा की द्रिसटि दुख डेरा ढहै॥ अंम्रित नाम सीतल मन गहै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1142

अगम रूप का मन मह थाना॥ गुर प्रसाद किनै विरलै जाना॥
सहज कथा के अंम्रित कुंटा॥ जिसह परापत तिस लै भुंचा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 186

कर हरिहट माल टिंड परोवहो तिस भीतर मन जोवहो॥
अंम्रित सिंचहो भरहो किआरे तउ माली के होवहो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

नानक अंम्रित मनै माहे पाईऐ गुर परसाद॥
तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आद॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1238-39

गुरमती मन निरमल होआ अंम्रित तत वखानै॥
हर का नाम सदा मन वसिआ विच मन ही मन मानै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

अंम्रित नाम मनह आधारो॥
जिन दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1215

2.3. अमृत घट के अंदर प्रकट होता है

नउ निध अंम्रित प्रभ का नाम॥ देही मह इस का बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

भै बिच भाउ भाए कोऊ बूझह हर रस पावै भाई॥
जेते घट अंम्रित सभ ही मह भावै तिसह पीआई॥
नगरी एकै नउ दरवाजे धावत बरज रहाई॥
त्रिकुटी छूटै दसवा दर खूल्है ता मन खीवा भाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1123

गुर पूरै सभ पूरा कीआ॥ अंम्रित नाम रिद मह दीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1184

बरस घना मेरा मन भीना॥
अंम्रित बूंद सुहानी हीअरै गुर मोही मन हर रस लीना॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1254

गुण रमंत दूख नासह रिद भइअंत सांत॥
अंम्रिता रस पीउ रसना नानक हर रंग रात॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1301

घर ही मह अंम्रित भरपूर है मनमुखा साद न पाइआ॥
जिउ कसतूरी मिरग न जाणै भ्रमदा भरम भुलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

रसना हर रस पीजै अंतर भीजै साच सबद बीचारी॥
अंतर खूहटा अंम्रित भरिआ सबदे काढ पीऐ पनिहारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 570

3. अमृत वह चखता है जो मर कर जीए

मन नाम जपाना हर हर मन भाना हर भगत जना मन चाउ जीउ॥
जो जन मर जीवे तिन्ह अंम्रित पीवे मन लागा गुरमत भाउ जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

गुर दीआ सच अंम्रित पीवउ॥ सहज मरउ जीवत ही जीवउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1189

4. अमृत किस प्रकार मिलता है?

4.1. मालिक की कृपा द्वारा

हर हर हर रस आप है आपे हर रस होए॥
आप दइआ कर देवसी गुरमुख अंम्रित चोए॥
सभ तन मन हरिआ होइआ नानक हर वसिआ मन सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

हर का नाम अंम्रित हर हर हरे सो पीऐ जिस राम पिआसी॥
हर आप दइआल दइआ कर मेलै जिस सतगुरू
सो जन हर हर अंम्रित नाम चखासी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1202

साखा तीन निवारीआ एक सबद लिव लाए॥
अंम्रित फल हर एक है आपे दे खवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

अंम्रित नाम रसना नित गावै॥ जिस नो क्रिपा करे सो हर रस पावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

खिमा गही सच संचिओ खाइओ अंम्रित नाम॥
खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अंम्रित रिदै सिंचाई॥
नव निध रिध सिध हर लाग रही जन पाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

नानक जिस नो नदर करे॥ अंम्रित नाम आपे दे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1172

हर हर नाम अंम्रित है नदरी पाइआ जाए॥
अनदिन हर हर उचरै गुर कै सहज सुभाए॥
नानक नाम निधान है नामे ही चित लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

नानक माइआ करम बिरख फल अंम्रित फल विस॥
सभ कारण करता करे जिस खवाले तिस॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1290

अंम्रित नाम तेरा सोई गावै॥ जो साहिब तेरै मन भावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 100

सभ को बीजे आपणे भले नो हर भावै सो खेत जमाइआ॥
गुरसिखी हर अंम्रित बीजिआ हर अंम्रित नाम फल अंम्रित पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.304

हर तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करह जे तुध भावीस॥
जन नानक अंम्रित पीआ गुरमती धन धंन धन धंन धंन गुरू साबीस॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1297

आए पइआ तेरी सरणाई॥ जिउ भावै तिउ लैह मिलाई॥
कर किरपा प्रभ भगती लावहो सच नानक अंम्रित पीए जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.104-05

4.2. अमृत हुक्म से मिलता है और हुक्म द्वारा ही पिया जा सकता है

सो किछ करै जो चित न होई॥ तिस दा हुकम मेट न सकै कोई॥
हुकमे वरतै अंम्रित बाणी हुकमे अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.118

4.3. बड़े भाग्य से और धुर लेख द्वारा

जिस धुर भाग होवै मुख मसतक तिन जन लै हिरदै राखी॥
हर अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.87

आपे ही प्रभ देह मत हर नाम धिआईऐ॥
वडभागी सतगुर मिलै मुख अंम्रित पाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.163

पी अंम्रित संतन परसाद॥
वडे भाग होवह तउ पाईऐ बिन जिहवा किआ जाणै सुआद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.892

गुर राखे वडभागी तारे॥ जन नानक उर हर अंम्रित धारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1172

सुण वडभागीआ हर अंम्रित बाणी राम॥
जिन कउ करम लिखी तिस रिदै समाणी राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.545

अंम्रित नाम परमेसर तेरा जो सिमरै सो जीवै॥
जिस नो करम परापत होवै सो जन निरमल थीवै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.616

अउखध नाम निरमल जल अंम्रित पाईऐ गुरू दुआरी॥
कहो नानक जिस मसतक लिखिआ तिस गुर मिल रोग बिदारी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.616

दसन संत पिआरिआ सुणहो लाए चिता॥
जिस लिखिआ नानक दास तिस नाउ अंम्रित सतगुर दिता॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.965

कबीर दीई संसार कउ लीनी जिस मसतक भाग॥
अंम्रित रस जिन पाइआ थिर ता का सोहाग॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.970

नानक अंम्रित मनै माहे पाईऐ गुर परसाद॥
तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आद॥
गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1238

4.4. सतगुरु से

सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल॥
अंदर लगा राम नाम अंम्रित नदर निहाल॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.48

मेरे सतगुरा हउ तुध विटहो कुरबाण॥
तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुस दिता अंम्रित नाम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.52

अंम्रित रस सतगुरू चुआइआ॥ दसवै दुआर प्रगट होए आइआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1069

मिल सतसंग बोली हर बाणी॥ हर हर कथा मेरै मन भाणी॥
हर हर अंम्रित हर मन भावै मिल सतगुर अंम्रित पीजै जीउ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.95

सतगुर देउ परतख हर मूरत जो अंम्रित वचन सुणावै॥
नानक भाग भले तिस जन के जो हर चरणी चित लावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1264

प्रगटी जोत चूका अभिमान॥ सतगुर दीआ अंम्रित नाम॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1328

कहो नानक बेअंत बेअंत धिआइआ॥
दुतर इह संसार सतगुरू तराइआ॥
मिटिआ आवा गउण जां पूरा पाइआ॥
हरिहां अंम्रित हर का नाम सतगुर ते पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1362

सतगुर विच अंम्रित नाम है अंम्रित कहै कहाए॥
गुरमती नाम निरमलो निरमल नाम धिआए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

आपे ही प्रभ देह मत हर नाम धिआईऐ॥
वडभागी सतगुर मिलै मुख अंम्रित पाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

सतगुर विच अंम्रित है हर उतम हर पद सोए॥
नानक किरपा ते हर धिआईऐ गुरमुख पावै कोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

जो तिन कीआ सो सच थीआ॥ अंम्रित नाम सतगुर दीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 352

सतगुर मेरा सदा दइआला मोहे दीन कउ राख लीआ॥
काटिआ रोग महा सुख पाइआ हर अंम्रित मुख नाम दीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 383

दसन संत पिआरिआ सुणहो लाए चिता॥
जिस लिखिआ नानक दास तिस नाउ अंम्रित सतगुर दिता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 965

अंम्रित पीआ सतगुर दीआ॥ अवर न जाणा दूआ तीआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

अंम्रित का रस विरली पाइआ सतगुर मेल मिलाए॥
जब लग सबद भेद नही आइआ तब लग काल संताए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126

अंम्रित रस सच अंम्रित बोली गुर पूरै अंम्रित लीचै जीउ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

अंम्रित रस हर गुर ते पीआ॥ हर पैनण नाम भोजन थीआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 99

निरमल अंम्रित गुर ते पाइआ॥ विचहो आप मुआ तिथै मोह न माइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 121

पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र॥ अंम्रित द्रिसटि पेखै होए संत॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 287

अंम्रित फल नाम जिन गुर ते पाइआ॥ नानक दास तरी तिन माइआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 385

सुर नर मुनि जन अंम्रित खोजदे सो अंम्रित गुर ते पाइआ॥
पाइआ अंम्रित गुर क्रिपा कीनी सचा मन वसाइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 918

गुर राखे वडभागी तारे॥ जन नानक उर हर अंम्रित धारे॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1172

गुर पूरै सभ पूरा कीआ॥ अंम्रित नाम रिद मह दीआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1184

अंगीकार कीओ प्रभ अपुनै काढ लीआ बिख घेरै॥
अंम्रित नाम अउखध मुख दीनो जाए पइआ गुर पैरै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1214

अंम्रित नाम मनह आधारो॥ जिन दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1215

हउ बलिहारी गुर आपणे जिन सची बूझ दिती बुझाए॥
जगत मुसै अंम्रित लुटीऐ मनमुख बूझ न पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1282

अंम्रित नाम सदा सुखदाता अंते होए सखाई॥
बाझ गुरू जगत बउराना नावै सार न पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1287

जन कउ प्रीत लगी गुर सेती जिउ चकवी देख सूरीजै॥
निरखत निरखत रैन सभ निरखी मुख काढै अंम्रित पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

अउखध नाम निरमल जल अंम्रित पाईऐ गुरू दुआरी॥
कहो नानक जिस मसतक लिखिआ तिस गुर मिल रोग बिदारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 616

तिन्हा मिलिआ गुर आए जिन कउ लीखिआ॥
अंम्रित हर का नाउ देवै दीखिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

रामा रम रामो सुन मन भीजै॥
हर हर नाम अंम्रित रस मीठा गुरमत सहजे पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

हर तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करह जे तुध भावीस॥
जन नानक अंम्रित पीआ गुरमती धन धंन धन धंन धंन गुरू साबीस॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1297

सचा अंम्रित नाम भोजन आइआ॥ गुरमती खाधा रज तिन सुख पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 150

मनमुख बुध काची मनूआ डोलै अकथ न कथै कहानी॥
गुरमत निहचल हर मन वसिआ अंम्रित साची बानी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

गुरमत मन अंम्रित वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुख अंम्रित बैण अलाए राम॥
अंम्रित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मन सुणीऐ हर लिव लाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 538

हउ वारी जीउ वारी अंम्रित नाम मंन वसावणिआ॥
अंम्रित नाम महा रस मीठा गुरमती अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

गुर कै बचन नरक न पवै॥ गुर कै बचन रसना अंम्रित रवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

अंम्रित नीर गिआन मन मजन अठसठ तीरथ संग गहे॥
गुर उपदेस जवाहर माणक सेवे सिख सो खोज लहै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1328

गुर परसादी विदिआ वीचारै पड़ पड़ पावै मान॥
आपा मधे आप परगासिआ पाइआ अंम्रित नाम॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1329

हर का नाम अंम्रित जल निरमल इह अउखध जग सारा॥
गुर परसाद कहै जन भीखन पावउ मोख दुआरा॥

भीखन साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 659

अंम्रित रंग रता लिव लाए॥ अंम्रित गुर परसादी पाए॥
अंम्रित रसना बोलै दिन राती मन तन अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 118

हिरदै नाम अंम्रित रस रसना रस गावह रस बीचारे॥
गुर परसाद अंम्रित रस चीन्हिआ ओए पावह मोख दुआरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

4.5. सतगुरु की सेवा से

सतगुर सेविऐ वडी वडिआई॥ हर जी अचिंत वसै मन आई॥
हर जीउ सफलिओ बिरख है अंम्रित जिन पीता तिस तिखा लहावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 114

अंम्रित सबद अंम्रित हर बाणी॥ सतगुर सेविऐ रिदै समाणी॥
नानक अंम्रित नाम सदा सुखदाता पी अंम्रित सभ भुख लह जावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

सतगुर सेवै सो जन सोहै॥ अंम्रित नाम अंतर मन मोहै॥
अंम्रित मन तन बाणी रता अंम्रित सहज सुणावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

सतगुर सेवे चूकै जंजाला॥ अंम्रित नाम सदा सुख नाला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 222

से जन बाचे जो प्रभ राखे॥ सतगुर सेव अंम्रित रस चाखे॥
चलतउ मन राखै अंम्रित चाखै॥ सतगुर सेव अंम्रित सबद भाखै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 352

4.6. भाणा मानने और मालिक या सतगुरु की रज़ा पर चलने से

मन मेरे सतगुर कै भाणै चल॥
निज घर वसह अंम्रित पीवह ता सुख लहहे महल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

गुर के भाणे विच अंम्रित है सहजे पावै कोए॥
जिना परापत तिन पीआ हउमै विचहो खोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

किउ कर वेखा किउ सालाही॥ गुर परसादी सबद सलाही॥
तेरे भाणे विच अंम्रित वसै तूं भाणै अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

4.7. साधु-संतों का सत्संग करने से

संता संग निधान अंम्रित चाखीऐ॥ भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 91

बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसन सभे छार॥
हर अंम्रित बूंद सुहावणी मिल साधू पीवणहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

वण त्रिण त्रिभवण मउलिआ अंम्रित फल पाई॥
मिल साधू सुख ऊपजै लथी सभ छाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1193

हर का नाम अंम्रित कल माहे॥ एह निधाना साधू पाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 888

अंम्रित नाम तुमारा पिआरे साधसंग रस पाइआ॥
त्रिपत अघाए सेई जन पूरे सुख निधान हर गाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 380

नानक नाम जपै सो जीवै॥ साधसंग हर अंम्रित पीवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 200

हर अंम्रित पान करहो साधसंग॥ मन त्रिपतासै कीरतन प्रभ रंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299

साधसंग जनम मरण निवारी॥ अंम्रित कथा सुण करन अधारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 740

सूख सहज आनंद घने॥ साधसंग मिटे भै भरमा अंम्रित हर हर रसन भने॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1149

बैकुंठ गोबिंद चरन नित धिआउ॥
मुकत पदारथ साधू संगत अंम्रित हर का नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1220

रमण कउ राम के गुण बाद॥
साधसंग धिआईऐ परमेसर अंम्रित जा के सुआद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1224

जिन्ह कउ भए दइआल तिन्ह साधू संग भइआ॥
अंम्रित हर का नाम तिन्ही जनी जप लइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 762

अंम्रित नाम पदारथ संगे तिल मरम न लहे॥
कर किरपा राखे सतसंगे नानक सरण आहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 406

हर हर नाम अपार अमोला अंम्रित एक निधाना॥
सूख सहज आनंद संतन कै नानक गुर ते जाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 672

5. अमृत किसे मिलता है?

5.1. गुरुमुखों को

हर हर हर रस आप है आपे हर रस होए॥
आप दइआ कर देवसी गुरमुख अंम्रित चोए॥
सभ तन मन हरिआ होइआ नानक हर वसिआ मन सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

अंम्रित बाणी गुर की मीठी॥ गुरमुख विरलै किनै चख डीठी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 113

डोलै नाही तुमरा चीत॥ अंम्रित नाम जप गुरमुख मीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 179

सतगुर विच अंम्रित है हर उतम हर पद सोए॥
नानक किरपा ते हर धिआईऐ गुरमुख पावै कोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

अंम्रित सचा वरसदा गुरमुखा मुख पाए॥
मन सदा हरीआवला सहजे हर गुण गाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 428

मन रे हर कीरत तर तारी॥
गुरमुख नाम अंम्रित जल पाईऐ जिन कउ क्रिपा तुमारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 506-07

गुरमुख सबद अंम्रित है सार॥ नानक गुरमुख पावै पार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 932

अंम्रित नाम निधान सच गुरमुख पाइआ जाए॥
वडभागी ते संत जन जिन मन वुठा आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

अंम्रित बाणी तत वखाणी गिआन धिआन विच आई॥
गुरमुख आखी गुरमुख जाती सुरतीं करम धिआई॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1243

गुरमुख धिआवह से अंम्रित पावह सेई सूचे होही॥
अहिनिस नाम जपहो रे प्राणी मैले हछे होही॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1254

गुर परसादी पाईऐ विरला बूझै कोए॥
बहदिआ उठदिआ नित धिआईऐ सदा सदा सुख होए॥
नानक अंम्रित सद ही वरसदा गुरमुख देवै हर सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1281

अंम्रित सदा वरसदा बूझन बूझणहार॥
गुरमुख जिन्ही बुझिआ हर अंम्रित रखिआ उर धार॥
हर अंम्रित पीवह सदा रंग राते हउमै त्रिसना मार॥
अंम्रित हर का नाम है वरसै किरपा धार॥
नानक गुरमुख नदरी आइआ हर आतम राम मुरार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1281

अंम्रित बाणी तत है गुरमुख वसै मन आए॥
हिरदै कमल परगासिआ जोती जोत मिलाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

हर हर अंम्रित नाम देह पिआरे॥
जिन ऊपर गुरमुख मन मानिआ तिन के काज सवारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

लाहा नाम संसार अंम्रित पीजई॥ हर भगती असनेह गुरमुख घीजई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1285

5.2. करोड़ों में से किसी बिरले शिष्य को अमृत मिलता है

अंम्रित नाम भोजन हर दे॥ कोट मधे कोई विरला ले॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1335

अंम्रित का रस विरली पाइआ सतगुर मेल मिलाए॥
जब लग सबद भेद नही आइआ तब लग काल संताए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126

गुर परसादी पाईऐ विरला बूझै कोए॥
बहदिआ उठदिआ नित धिआईऐ सदा सदा सुख होए॥
नानक अंम्रित सद ही वरसदा गुरमुख देवै हर सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1281

6. अमृतवाणी शिष्यों को प्रिय लगती है

जन नानक बोलै अंम्रित बाणी॥ गुरसिखां कै मन पिआरी भाणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

7. अमृत भक्तों के हृदय में समाता है

अंम्रित तेरी बाणीआ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

सुण वडभागीआ हर अंम्रित बाणी राम॥
जिन कउ करम लिखी तिस रिदै समाणी राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 545

नाम रिदै अंम्रित मुख नाम॥ नरहर नाम नरहर निहकाम॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 152

8. बावरे, मूढ़ और अहंकारी मनमुख अमृत से वंचित रह जाते हैं

जो हलाहल सो पीवै बउरा॥ अंम्रित नाम जानै कर कउरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 180

रे मूढ़े आन काहे कत जाई॥
संग मनोहर अंम्रित है रे भूल भूल बिख खाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1213

काइआ अंम्रित रही भरपूरे पाईऐ सबद वीचारी॥
जो प्रभ खोजह सेई पावह होर फूट मूए अहंकारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 911

मनमुख बुध काची मनूआ डोलै अकथ न कथै कहानी॥
गुरमत निहचल हर मन वसिआ अंम्रित साची बानी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

गुर परसादी अंम्रित नही पीआ त्रिसना भूख न जाई॥
मनमुख मूढ़ जलत अहंकारी हउमै विच दुख पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1265

हउ बलिहारी गुर आपणे जिन सची बूझ दिती बुझाए॥
जगत मुसै अंम्रित लुटीऐ मनमुख बूझ न पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1282

चात्रिक तू न जाणही किआ तुध विच तिखा है कित पीतै तिख जाए॥
दूजै भाए भरंमिआ अंम्रित जल पलै न पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1284

घर ही मह अंम्रित भरपूर है मनमुखा साद न पाइआ॥
जिउ कसतूरी मिरग न जाणै भ्रमदा भरम भुलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

अंम्रित कउरा बिखिआ मीठी॥ साकत की बिधि नैनहो डीठी॥
कूड़ कपट अहंकार रीझाना॥ नाम सुनत जन बिछूअ डसाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 892-93

9. अंदर ही अंदर काल, माया, काम-क्रोध आदि चोर अमृत को चुरा लेते हैं

घर मह अंम्रित तसकर लेई॥ नंनाकार न कोए करेई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

10. अमृत के फल

10.1. नौ निधि और ऋद्धि-सिद्धि चरणों में आ जाती हैं

भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अंम्रित रिदै सिंचाई॥
नव निध रिध सिध हर लाग रही जन पाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

तार्यउ संसार माया मद मोहित अंम्रित नाम दीअउ समरथ॥
फुन कीरतिवंत सदा सुख संपत रिध अर सिध न छोडई सथ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1405

10.2. सुखों की प्राप्ति होती है

अंम्रित नाम सदा निरमलीआ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 100

रैण सुहावड़ी दिनस सुहेला॥ जप अंम्रित नाम संतसंग मेला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107

हउ वारी जीउ वारी सबद सुहावणिआ॥
अंम्रित नाम सदा सुखदाता गुरमती मंन वसावणिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 109

अंम्रित सबद अंम्रित हर बाणी॥ सतगुर सेविऐ रिदै समाणी॥
नानक अंम्रित नाम सदा सुखदाता पी अंम्रित सभ भुख लह जावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

जागस जीवण जागणहारा॥ सुख सागर अंम्रित भंडारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1330

बिखया भयंत अंम्रितं द्रुसटां सखा स्वजनह॥
दुखं भयंत सुख्यं भै भीतं त निरभयह॥
थान बिहून बिस्राम नामं नानक क्रिपाल हर हर गुरह॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1357

रतन जवेहर माणिका अंम्रित हर का नाउ॥
सूख सहज आनंद रस जन नानक हर गुण गाउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 48

सचा अंम्रित नाम भोजन आइआ॥ गुरमती खाधा रज तिन सुख पाइआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 150

खिमा गही सच संचिओ खाइओ अंम्रित नाम॥
खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

हर हर संत जना की जीवन॥
बिखै रस भोग अंम्रित सुख सागर राम नाम रस पीवन॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1222

10.3. तृप्ति हो जाती है

अंम्रित रसना पीउ पिआरी॥ इह रस राती होए त्रिपतारी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 180

हर हर सफलिओ बिरख प्रभ सुआमी जन जपिओ से त्रिपतानी॥
हर हर अंम्रित पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 667

सदा अनंद राम रस राते॥
हिरदै नाम दुबिधा मन भागी हर हर अंम्रित पी त्रिपताते॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1131

अंम्रित हर को नाम लैत मन सभ सुख पाए॥
जेह रसन चाखिओ तेह जन त्रिपत अघाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1386

आप पछाणह प्रीतम मिलै वुठा छहबर लाए॥
झिम झिम अंम्रित वरसदा तिसना भुख सभ जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1420

अंम्रित साचा नाउ ओथै जापीऐ॥
मन कउ होए संतोख भुखा ध्रापीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 519

10.4. अमृत शांतिदायक है

अंम्रित वरखै अनहद बाणी॥ मन तन अंतर सांत समाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 105

10.5. पापों और भय का नाश होता है

गुर साधू अंम्रित गिआन सर नाइण॥ सभ किलविख पाप गए गावाइण॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1134

अंम्रित नाम सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास॥
जनम जनम के किलबिख नासह आगै दरगह होए खलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208

अंम्रित नाम तुम्हारा ठाकुर एह महा रस जनह पीओ॥
जनम जनम चूके भै भारे दुरत बिनासिओ भरम बीओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 382

10.6. हौमैं (अहं) का नाश

अंम्रित नाम मंन वसाए॥ हउमै मेरा सभ दुख गवाए॥
अंम्रित बाणी सदा सलाहे अंम्रित अंम्रित पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 118

निरमल अंम्रित गुर ते पाइआ॥ विचहो आप मुआ तिथै मोह न माइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 121

हउमै मार निवारिआ सीता है चोला॥
गुर बचनी फल पाइआ सह के अंम्रित बोला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

हर अंम्रित पीवह सदा रंग राते हउमै त्रिसना मार॥
अंम्रित हर का नाम है वरसै किरपा धार॥
नानक गुरमुख नदरी आइआ हर आतम राम मुरार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1281

गुर के भाणे विच अंम्रित है सहजे पावै कोए॥
जिना परापत तिन पीआ हउमै विचहो खोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

10.7. माया और तृष्णा का नाश

गुर का सबद अंम्रित है जित पीतै तिख जाए॥
इह मन साचा सच रता सचे रहिआ समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

राम नाम सभ है राम नामा रस गुरमत रस रसके॥
हर अंम्रित हर जल पाइआ सभ लाथी तिस तिस के॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 731

डूगर वास तिखा घणी जब देखा नही दूर॥
तिखा निवारी सबद मंन अंम्रित पीआ भरपूर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 933

अंम्रित नाम पीआ मन त्रिपतिआ आघाए रसन चखा॥
कहो नानक सुख सहज मै पाइआ गुर लाही सगल तिखा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212

अंम्रित नाम रसन नित जापै॥ रोग रूप माइआ न बिआपै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 760

अंम्रित हर हर नाम है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रित गुरमत पाए राम॥
हउमै माइआ बिख है मेरी जिंदुड़ीए हर अंम्रित बिख लह जाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 538

10.8. हृदय कमल उलटकर अमृत से भर जाता है मन स्थिर तथा निर्मल हो जाता है :

उलट कमल अंम्रित भरिआ इह मन कतहु न जाए॥
अजपा जाप न वीसरै आद जुगाद समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

गुरमती मन निरमल होआ अंम्रित तत वखानै॥
हर का नाम सदा मन वसिआ विच मन ही मन मानै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

10.9. जीव अपने आप को और परमात्मा को पहचानता है

जिनी आतम चीनिआ परमातम सोई॥
एको अंम्रित बिरख है फल अंम्रित होई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 421

10.10. अमृत मुक्ति का दाता है

गहिर गंभीर अंम्रित नाम तेरा॥ मुकत भइआ जिस रिदै वसेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 101

अंम्रित बाणी हर हर तेरी॥ सुण सुण होवै परम गति मेरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 103

अंम्रित बचन साध की बाणी॥
जो जो जपै तिस की गति होवै हर हर नाम नित रसन बखानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 744

10.11. अमृत से सहज गति की प्राप्ति होती है

रतन जवेहर माणिका अंम्रित हर का नाउ॥
सूख सहज आनंद रस जन नानक हर गुण गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 48

अंम्रित नाम पीआ मन त्रिपतिआ आघाए रसन चखा॥
कहो नानक सुख सहज मै पाइआ गुर लाही सगल तिखा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212

10.12. अमृत से दरगाह में मान मिलता है

तिन के मुख सद उजले तित सचै दरबार॥
ओए अंम्रित पीवह सदा सदा सचै नाम पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाण भइआ॥
दर दरसन का प्रीतम होवै मुकत बैकुंठै करै किआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 360

अंम्रित हर का नाउ आप वरताइसी॥
चलिआ पत सिउ जनम सवार वाजा वाइसी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 730

अंम्रित नाम सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास॥
जनम जनम के किलबिख नासह आगै दरगह होए खलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208

कीर्तन

आम लोग संतों की वाणी को रागों आदि में गाने को कीर्तन समझते हैं। बाहर की आवाज़ के कीर्तन में भी आकर्षण शक्ति है और इसके द्वारा एकाग्रता और सूक्ष्म वृत्ति पैदा होती है। जीव-जंतुओं को खींचनेवाली दो शक्तियाँ हैं – एक रूप और दूसरी ध्वनि। इन दोनों में से ध्वनि में आकर्षण की प्रबल शक्ति है, जिसका जीवों पर विशेष प्रभाव पड़ता है। हिरन जैसा तेज़ रफ़्तार जानवर, जिसे घोड़ा भी नहीं पकड़ सकता, इस आवाज़ के आकर्षण से पकड़ा जाता है। शिकारी जंगल में एक तरह का बाजा बजाते हैं, जिसकी ध्वनि से मोहित होकर हिरन अपना सिर बाजे पर जा रखता है और इस प्रकार पकड़ा जाता है। ध्वनि का प्रभाव साँप और पक्षी आदि पर भी देखा गया है। मदारी लोग जब साँप को पकड़ते हैं तो बीन बजाते हैं, उसकी आवाज़ पर मोहित होकर साँप अपने आप को भूलकर बाहर आ जाता है। ध्वनि का प्रभाव मनुष्य पर और भी अधिक है। बाहर की ध्वनि का कीर्तन मन को मस्त करता है, पर वह हमें तत्त्वों की सीमा के परे नहीं ले जा सकता।

गुरवाणी द्वारा पता लगता है कि शब्द धुन (देखें: 'शब्द' का प्रकरण) मनुष्यमात्र (क्या हिंदू क्या मुसलमान) सबके अंतर में निरंतर हो रही है, इसका स्पर्श प्राप्त हो जाने पर जीव का कल्याण हो जाता है। इस धुन को आदि ग्रन्थ में विशेष रूप से अखंड कीर्तन कहा गया है:

कल कीरत सबद पछान॥ एहा भगति चूकै अभिमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

हर कीरत उतम नाम है विच कलिजुग करणी सार॥
मत गुरमत कीरत पाईऐ हर नामा हर उर हार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1314

गुरवाणी में नाम यानी शब्द के कीर्तन को परमार्थ की प्राप्ति का साधन माना गया है। यह 'नाम' का कीर्तन हृदय के अंदर प्रकट होता है। यह सब जगह व्याप्त है। इसमें धुन है जो मस्तक में प्रकट होती है:

तेरे दुआरै धुन सहज की माथै मेरे दगाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 970

कलियुग में और कोई साधन मान्य नहीं हैं। सब साधनों में फलदायक साधन कीरत यानी नाम कीर्तन ही है, इस युग में हरि कीरत की ही ऋतु है और कोई कर्म-धर्म इस काल में प्रामाणिक नहीं हैं। यह हरि कीरत ही सारे कर्मों का शिरोमणि कर्म है:

चहु जुगा का हुण निबेड़ा नर मनुखा नो एक निधाना॥
जत संजम तीरथ ओना जुगा का धरम है कल मह कीरत हर नामा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 797

हर कीरत रुत आई हर नाम वडाई हर हर नाम खेत जमाइआ॥
कलिजुग बीज बीजे बिन नावै सभ लाहा मूल गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

यह नाम का कीर्तन साधु-संतों से ही प्राप्त होता है और उनकी कृपा से ही जीव इस (कीर्तन) को सुन सकते हैं:

राम नाम कीरतन रतन वथ हर साधू पास रखीजै॥
जो बचन गुर सत सत कर मानै तिस आगै काढ धरीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

गुरवाणी बताती है कि जिन्हें सतगुरु मिलते हैं, वे ही इस हरि कीर्तन की सदा कमाई करते हैं, गुरुमुख बनकर ही इस कीर्तन की प्राप्ति हो सकती है:

जिन कंउ सतगुर भेटिआ से हर कीरत सदा कमाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 592

जब तक शिष्य को पूरा सतगुरु नहीं मिलता और वह स्वयं जीवित मरकर नौ द्वारों के पार नहीं जाता, मुक्ति देनेवाला कीर्तन प्रकट नहीं होता।

गुरु साहिबान ऊपर लिखे शब्द के कीर्तन को ही कीर्तन कहते हैं, बाहर के बाजों (देखें: 'बाहर के बाजे' का प्रकरण) को नहीं:

> निरत करे बहु वाजे वजाए॥ इह मन अंधा बोला है किस आख सुणाए॥
> अंतर लोभ भरम अनल वाउ॥ दीवा बलै न सोझी पाए॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

> गावह गीते चीत अनीते॥ राग सुणाए कहावह बीते॥
> बिन नावै मन झूठ अनीते॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

जिस प्रकार चुंबक लोहे को खींचता है, उसी प्रकार मालिक से उत्पन्न होनेवाली नाम की ध्वनि आत्मा को खींचकर, परमात्मा के चरणों में पहुँचा देती है। मन लज़्ज़त का आशिक़ है, पर दुनिया की कोई भी लज़्ज़त इसको स्थिर नहीं कर सकती, यह सारी सृष्टि को नचा रहा है। मन को वश में करने की एक ही दवा है, वह है नाम का कीर्तन। जिस महात्मा ने भी मन को वश में किया है, इस नाम के कीर्तन द्वारा ही किया है। नाम के कीर्तन के अनेक फल गुरबाणी में लिखे हैं। इससे इंद्रियों के सब विकार दूर हो जाते हैं, वैर-विरोध मिट जाते हैं, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार दूर हो जाते हैं, जन्म-जन्म से मोह-माया में सोई हुई आत्मा जाग उठती है, जीव यम और काल से बच जाता है, जन्म-मरण से रहित हो जाता है, संसार में रहते हुए भी अंतर में संसार की ओर से निर्लेप हो जाता है और जो मन किसी भी उपाय द्वारा वश में नहीं आता, वह घट-घट में हो रहे इस नाम के कीर्तन द्वारा वश में आ जाता है और स्थिर हो जाता है। ये फल बाहर के कीर्तन से प्राप्त नहीं हो सकते। (देखें: 'अनहद शब्द' और 'पंच शब्द' के प्रकरण)।

यह अनमोल भंडार सबके अंदर है। पाठकजन आदि ग्रन्थ से गुरबाणी का ध्यानपूर्वक विचार करें और साधु-संतों की संगति में नाम के कीर्तन की खोज करें।

ੴ

गुरवाणी

1. कीर्तन क्या है? नाम और शब्द की धुन है

दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह॥
दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 709-10

हउ अनदिन हर नाम कीरतन करउ॥
सतगुर मो कउ हर नाम बताइआ हउ हर बिन खिन पल रह न सकउ॥
हमरै स्रवण सिमरन हर कीरतन हउ हर बिन रह न सकउ हउ इक खिन॥
जैसे हंस सरवर बिन रह न सकै तैसे हर जन किउ रहै हर सेवा बिन॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 369

वरतण जा कै केवल नाम॥ अनद रूप कीरतन बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 392

करणी कीरत नाम वसाई॥ आपे देवै ढिल न पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 363

मन रे हर कीरत तर तारी॥
गुरमुख नाम अंम्रित जल पाईऐ जिन कउ क्रिपा तुमारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 506-07

जिनी सच वणंजिआ हर जीउ से पूरे साहा राम॥
बहुत खजाना तिंन पह हर जीउ हर कीरतन लाहा राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 543

मन मह सिंचहो हर हर नाम॥ अनदिन कीरतन हर गुण गाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 807

चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतास॥
कीरतन नाम सिमरत रहउ जब लग घट सास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 818

गुर उपदेस कहिओ इह सार॥ हर कीरत मन नाम अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1142

चीत आवै सद कीरतन करता॥ मन मानिआ नानक भगवंता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1141

साची कीरत सच सुख होई॥ गुरमुख नाम वखाणै कोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 880

जग सुक्रित कीरत नाम है मेरी जिंदुड़ीए हर कीरत हर मन धारे राम॥
हर हर नाम पवित है मेरी जिंदुड़ीए जप हर हर नाम उधारे राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 539

हर कीरत उतम नाम है विच कलिजुग करणी सार॥
मत गुरमत कीरत पाईऐ हर नामा हर उर हार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1314

कल कीरत सबद पछान॥ एहा भगति चूकै अभिमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

हम घर नाम खजाना सदा है भगति भरे भंडारा॥
सतगुर दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा॥
अनदिन कीरतन सदा करह गुर कै सबद अपारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 593

से भगत सचे तेरै मन भाए॥ दर कीरतन करह गुर सबद सुहाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1056

माखी राम की तू माखी॥
जह दुरगंध तहा तू बैसह महा बिखिआ मद चाखी॥
कितह असथान तू टिकन न पावह इह बिधि देखी आखी॥
संता बिन तै कोए न छाडिआ संत परे गोबिद की पाखी॥
जीअ जंत सगले तै मोहे बिन संता किनै न लाखी॥
नानक दास हर कीरतन राता सबद सुरत सच साखी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1227

पारब्रहम होआ सहाई कथा कीरतन सुखदाई॥
गुर पूरे की बाणी जप अनद करहो नित प्राणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 616

तह सदा अनंद अनहत आखारे॥ भगत वसह कीरतन आधारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 237

कल कीरत परगट चानण संसार॥ गुरमुख कोई उतरै पार॥
जिस नो नदर करे तिस देवै। नानक गुरमुख रतन सो लेवै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 145

संतन कै सुनीअत प्रभ की बात॥
कथा कीरतन आनंद मंगल धुन पूर रही दिनस अर रात॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 820

ग्रिह ता के बसंत गनी॥ जा कै कीरतन हर धुनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1180

बीज मंत्र हर कीरतन गाउ॥ आगै मिली निथावे थाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 891

हर कीरतन मह ऊतम धुना॥ नानक गुर मिल गाए गुना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1182

2. कीर्तन निर्वाण है

करम धरम पाखंड जो दीसह तिन जम जागाती लूटै॥
निरबाण कीरतन गावहो करते का निमख सिमरत जित छूटै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747

अंते सतगुर बोलिआ मै पिछै कीरतन करिअहो निरबाण जीउ॥

सुन्दर, आदि ग्रन्थ, पृ. 923

3. कीर्तन कहाँ होता है? इस शरीर के अंदर

राम संत मह भेद किछ नाही एक जन कई मह लाख करोरी॥
जा कै हीऐ प्रगट प्रभ होआ अनदिन कीरतन रसन रमोरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 208

उसतत निंदा दोऊ परहर हर कीरत उर आनो॥
जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1186

पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई॥
तेरे दुआरै धुन सहज की माथै मेरे दगाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 970

नैणी बिरहो देखा प्रभ सुआमी रसना नाम वखानी॥
स्रवणी कीरतन सुनउ दिन राती हिरदै हर हर भानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199-1200

कर कर ताल पखावज नैनहो माथै वजह रबाबा॥
करनहो मधु बासुरी बाजै जिहवा धुन आगाजा॥
निरत करे कर मनूआ नाचै आणे घूघर साजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884

कहो नानक कीरत हर साची॥ बहुर बहुर तिस संग मन राची॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1157

4. कलियुग में 'हरि कीरत' की ऋतु है

चहु जुगा का हुण निबेड़ा नर मनुखा नो एक निधाना॥
जत संजम तीरथ ओना जुगा का धरम है कल मह कीरत हर नामा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 797

हर कीरत कलजुग विच ऊतम मत गुरमत कथा भजंती॥
जिन जन सुणी मनी है जिन जन तिस जन कै हउ कुरबानंती॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 977

हर कीरत रुत आई हर नाम वडाई हर हर नाम खेत जमाइआ॥
कलिजुग बीज बीजे बिन नावै सभ लाहा मूल गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

5. यह कीर्तन साधु और सतगुरु से मिलता है

जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओए आए॥
महा अनंद सदा कर कीरतन पुरख बिधाता पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 671

हर कीरत कलजुग पद ऊतम हर पाईऐ सतगुर माझा॥
हउ बलिहारी सतगुर अपुने जिन गुपत नाम परगाझा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 697

साधसंग नानक बुध पाई हर कीरतन आधारो॥
नामदेउ त्रिलोचन कबीर दासरो मुकत भइओ चंमिआरो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 498

अखंड कीरतन तिन भोजन चूरा॥ कहो नानक जिस सतगुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 236

साध सेवा वडभागी पाईऐ॥ साधसंग हर कीरतन गाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 283

संत प्रसाद जपै हर नाउ॥ संत प्रसाद हर कीरतन गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

साधसंग हर कीरतन गाईऐ॥ कहो नानक वडभागी पाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 179

सुण कीरतन साध पह जाए॥ जनम मरण की त्रास मिटाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 190

साधसंग कीरतन फल पाइआ॥ जम का मरग द्रिसटि न आइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 197

चरन कमल गोबिंद रंग लागा॥
संत प्रसाद भए मन निरमल हर कीरतन मह अनदिन जागा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 343

वडै भाग प्रभ कीरतन गाइआ॥ संतसंग नानक प्रभ पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 805

साधू संग परापत जा कउ तिन ही पाइआ एह निधान॥
गावउ गुण कीरतन नित सुआमी कर किरपा नानक दीजै दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 827

साधसंगत की जावउ टेक॥ कहो नानक तिस कीरतन एक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 885

नाम रसाइण इह मन राता अंम्रित पी त्रिपताई॥
संतसंग मिल कीरतन गाइआ निहचल वसिआ जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

राम नाम कीरतन रतन वथ हर साधू पास रखीजै॥
जो बचन गुर सत सत कर मानै तिस आगै काढ धरीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

संता की रेण साध जन संगत हर कीरत तर तारी॥
कहा करै बपुरा जम डरपै गुरमुख रिदै मुरारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

गुर पूरै हर नाम दिड़ाइआ तिन विचहो भरम चुकाइआ॥
राम नाम हर कीरत गाई कर चानण मग दिखाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 86

साधसंग कल कीरतन गाइआ॥ नानक ते ते बहुर न आइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 253

गुन गोबिद कीरतन जन गावै॥ गुर प्रसाद नानक फल पावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 285

सतगुर की वडिआई नित चड़ै सवाई हर कीरत भगति नित आप कराए॥
अनदिन नाम जपहो गुरसिखहो हर करता सतगुर घरी वसाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 308

सतगुर तुम्ह कउ होए दइआला संतसंग तेरी प्रीत॥
कापड़ पत परमेसर राखी भोजन कीरतन नीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 496

जिन कंउ सतगुर भेटिआ से हर कीरत सदा कमाहे॥
अचिंत हर नाम तिन कै मन वसिआ सचै सबद समाहे॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 592

हर कीरत साधसंगत है सिर करमन कै करमा॥
कहो नानक तिस भइओ परापत जिस पुरब लिखे का लहना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 642

करम धरम जुगता निमख न हेत करता गरब गरब पड़ै कही न लेखै॥
जिस भेटीऐ सफल मूरत करै सदा कीरत गुर परसाद कोऊ नेत्रहो पेखै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 687

6. यह कीर्तन ऊँचे भाग्य से मिलता है

वडभागी गुर पाइआ हर अहिनिस लगा भाउ॥
जन नानक ब्रहम पछाणिआ हर कीरत करम कमाउ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

हर कीरत मन भाई परम गति पाई हर मन तन मीठ लगान जीउ॥
हर हर रस पाइआ गुरमत हर धिआइआ धुर मसतक भाग पुरान जीउ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

चहु जुगी कल काली कांढी इक उतम पदवी इस जुग माहे॥
गुरमुख हर कीरत फल पाईऐ जिन कउ हर लिख पाहे॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 651

हर कीरत साधसंगत है सिर करमन कै करमा॥
कहो नानक तिस भइओ परापत जिस पुरब लिखे का लहना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 642

सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतन जप नाम॥
जिस कै करम लिखिआ धुर करतै नानक जन के पूरन काम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683

खुलिआ करम क्रिपा भई ठाकुर कीरतन हर हर गाई॥
स्रम थाका पाए बिस्रामा मिट गई सगली धाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1000

7. कीर्तन के फल

7.1. कीर्तन दोनों लोकों में काम आता है

ऐसा कीरतन कर मन मेरे॥ ईहा ऊहा जो काम तेरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.236

7.2. कीर्तन वैर-विरोध मिटा देता है

वैर विरोध मिटे तिह मन ते॥ हर कीरतन गुरमुख जो सुनते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.259

7.3. कीर्तन सब रोग, शोक तथा कलि-क्लेश दूर करता है

गुर किरपाल क्रिपा प्रभ धारी बिनसे सरब अंदेसा॥
नानक सुख पाइआ हर कीरतन मिटिओ सगल कलेसा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.213

रोग सोग दूख तिस नाही॥ साधसंग हर कीरतन गाही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1085

हर कीरतन सुणै हर कीरतन गावै॥ तिस जन दूख निकट नही आवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.190

कर कीरत गोविंद गुणीऐ सगल प्राछत दुख हरे॥
कहो नानक छंत गोविंद हर के मन हर सिउ नेह करेहो ऐसी मन प्रीत हरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.454

7.4. कीर्तन से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार मिट जाते हैं

सुखदाता दुख भंजनहारा गाउ कीरतन पूरन गिआन॥
काम क्रोध लोभ खंड खंड कीन्हे बिनसिओ मूड़ अभिमान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.979

7.5. कीर्तन द्वारा जन्म-जन्म का सोया हुआ जीव जागता है

भाए भगति प्रभ कीरतन लागै॥ जनम जनम का सोइआ जागै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.869

पर धन पर तन पर की निंदा इन सिउ प्रीत न लागै॥
संतह संग संत संभाखन हर कीरतन मन जागै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.674

सो किछ कर जित मैल न लागै॥ हर कीरतन मह एह मन जागै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 199

7.6. त्रिकुटी फूट जाती है और कपाट खुल जाते हैं

हर कीरत गुरमत जस गाइओ मन उघरे कपट कपाट॥
त्रिकुटी फोर भरम भउ भागा लज भानी मटुकी माट॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 986

7.7. कीर्तन द्वारा प्राणी यम-काल से बच जाता है

जह साधू गोबिद भजन कीरतन नानक नीत॥
णा हउ णा तूं णह छुटह निकट न जाईअहो दूत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 256

नरक निवारै दुख हरै तूटह अनिक कलेस॥
मीच हुटै जम ते छुटै हर कीरतन परवेस॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 297

जो जन करै कीरतन गोपाल॥ तिस कउ पोह न सकै जमकाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 867

जमदूत तिस निकट न आवै॥ साधसंग हर कीतरन गावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

7.8. कीर्तन द्वारा मनुष्य अतुल सुख पाता है और मन शीतल होता है

कर कीरतन मन सीतल भए॥ जनम जनम के किलविख गए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 178

पुंन दान पूजा परमेसुर हर कीरत तत बीचारे॥
गुन गावत अतुल सुख पाइआ ठाकुर अगम अपारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 718

जोती जोत मिली प्रभ पाइआ मिल सतगुर मनूआ मान जीउ॥
हर कीरत मन भाई परम गति पाई हर मन तन मीठ लगान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

तेरो सेवक इह रंग माता॥
भइओ क्रिपाल दीन दुख भंजन हर हर कीरतन इह मन राता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 642

नानक दास कीए प्रभ अपुने हर कीरतन रंग माणे जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 106

सतसंगत साई हर तेरी जित हर कीरत हर सुनणे॥
जिन हर नाम सुणिआ मन भीना तिन हम स्रेवह नित चरणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1135

7.9. कीर्तन से प्रभु प्रसन्न होता है और मनुष्य मनोवांछित फल पाता है

कथा कीरतन राग नाद धुन इह बनिओ सुआउ॥
नानक प्रभ सुप्रसंन भए बांछत फल पाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 818

जंमण मरण न तिन्ह कउ जो हर लड़ लागे॥
जीवत से परवाण होए हर कीरतन जागे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 322

7.10. कीर्तन सब धर्मों में श्रेष्ठ है

सभ मह पूर रहे पारब्रहम॥
नानक हर कीरतन कर अटल एह धरम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299

निहचल कीरतन गुण गोबिंद गुरमुख गावाधा॥
सच धरम तप निहचलो दिन रैन अराधा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1101

भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई॥
सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरत गाई॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 902

7.11. कीर्तन द्वारा मनुष्य घर में रहकर भी त्यागी के समान होता है

ग्रिह बन समसर सहज सुभाए॥ दुरमत गति भई कीरत ठाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 351

7.12. कीर्तन वास्तविक योग साधन है

राज लीला तेरै नाम बनाई॥ जोग बनिआ तेरा कीरतन गाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 385

7.13. कीर्तन सबका उद्धार करता है

मन हर कीरत कर सदहूं॥
गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 529

जैसो गुर उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकार॥
नानक कहै सुन रे मना कर कीरतन होए उधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 214

7.14. कीर्तन द्वारा मन स्थिर होता है

कउण सो अखर जित धावत रहता॥
कउण उपदेस जित दुख सुख सम सहता॥
कउण सो चाल जित पारब्रहम धिआए किन बिधि कीरतन गाए जीउ॥...
गुरमुख चाल जित पारब्रहम धिआए गुरमुख कीरतन गाए जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 131

इक जाचिक मंगै दान दुआरै॥ जा प्रभ भावै ता किरपा धारै॥
देह दरस जित मन त्रिपतासै हर कीरतन मन ठहराइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1076

8. कोई गुरुमुख यह कीर्तन गाता है

कल कीरत परगट चानण संसार॥ गुरमुख कोई उतरै पार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 145

पत वीचार गिआन मत डंडा वरतमान बिभूतं॥
हर कीरत रहरास हमारी गुरमुख पंथ अतीतं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 360

चहु जुगी कल काली कांढी इक उतम पदवी इस जुग माहे॥
गुरमुख हर कीरत फल पाईऐ जिन कउ हर लिख पाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 651

हर हर नाम धिआईऐ हर कीरत गुरमुख चाख॥
तन धरती हर बीजीऐ विच संगत हर प्रभ राख॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰997

भगत तेरै मन भावदे दर सोहन कीरत गावदे॥
नानक करमा बाहरे दर ढोअ न लहन्ही धावदे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰468

काहू पवन धार जात बिहाए॥ संत बिहावै कीरतन गाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰914

वाणी

वाणी एक गूढ़ और गंभीर विषय है। आम लोग तो वाणी उन वचनों या शब्दों को कहते हैं, जो पढ़ने, लिखने और बोलने में आते हैं, लेकिन आदि ग्रन्थ में वाणी पद का इससे कहीं गूढ़ अर्थों में प्रयोग किया गया है। साधारणतया वाणी, शब्द और नाम में कोई ख़ास भेद नहीं, ये अकसर इकट्ठे ही, एक-से अर्थों में प्रयोग किए जाते हैं, जैसा कि आगे दिए हुए उदाहरणों से दिखाई देगा। इसलिए पाठकों को चाहिए कि जब वाणी का प्रकरण देखें तब साथ ही शब्द और नाम के प्रकरणों को भी देख लें। यद्यपि, अनुभव तो सतगुरु की शरण लिए और करनी किए बिना असंभव है, फिर भी पढ़ने और लिखने से कुछ समझ बूझ तो आ ही जाती है।

नाम या वाणी, चाहे वह किसी भी देश की भाषा में क्यों न हो, दो प्रकार की है: वर्णात्मक और धुनात्मक। वर्णात्मक (जो बोलने और लिखने में आ सके) चार प्रकार की है – बैखरी, मध्यमा, पश्यंती और परा। पहली, जो मुख द्वारा बोली जाए, दूसरी, जो कंठ द्वारा बोली जाए, तीसरी हृदय द्वारा और चौथी वह है जो योगीजन नाभि से हिलोर उठाते हैं। ये चारों, छः चक्रों के अंदर हैं, इसलिए नाम से ख़ाली हैं और मुक्तिदायक नहीं। तीसरी पातशाही गुरु अमरदास जी का वचन है:

तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी॥ बिन नावै सभ भरम भुलाणी॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 116

इस वर्णात्मक अर्थात् तत्त्वों की वाणी द्वारा जिसको गुरवाणी में पउण की बाणी (पवन की वाणी) कहा गया है, मनुष्य मन और माया में अधिक लीन हो जाता है। 'पउण की' इसलिए कहा है कि हवा के माध्यम से ही यह आवाज़ सुनाई देती है:

आखण सुनणा पउण की बाणी इह मन रता माइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 24

धुनात्मक वाणी (शब्द) लिखने और बोलने में नहीं आ सकती। वह पवन, तत्त्वों और छः चक्रों की सीमा से परे है। इसे आदि ग्रन्थ में नाम कहकर पुकारा है। पर वास्तव में छः चक्रों के पार भी जहाँ तक तीन गुणों की रचना है यानी त्रिकुटी की सीमा तक, बल्कि दसवें द्वार तक भी जो तीन गुणों वाली वाणी है उसको गुरवाणी में 'त्रैगुण बाणी ब्रहम जंजाला' – ब्रह्म का जाल कहा है।

यह तीन गुणों वाली वाणी काल की सीमा के बाहर नहीं, इसलिए यह नाशवान है। कबीर साहिब कहते हैं:

जाप मरै अजपा मरै, अनहद हूँ मरि जाय।
सुरत समानी सबद में, ता को काल न खाय॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 96

गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं:

त्रै गुण बाणी ब्रहम जंजाला॥ पड़ वाद वखाणह सिर मारे जमकाला॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 230-31

इसलिए, केवल सार शब्द ही काल की सीमा से परे है। उसे सच बाणी, सच या सार शब्द भी कहा है जो अमर जीवन प्रदान करनेवाली और परमात्मा से मिलानेवाली वाणी है:

गुरमुख सबद अंम्रित है सार॥ नानक गुरमुख पावै पार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 932

त्रै गुण मेटे खाईऐ सार॥ नानक तारे तारणहार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 940

वाह वाह बाणी सच है सच मिलावा होए॥
नानक वाह वाह करितआ प्रभ पाइआ करम परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 514

से जन मिले धुर आप मिलाए॥ साची बाणी सबद सुहाए॥
नानक जन गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

आपै आप मिलाए बूझै ता निरमल होवै सोई॥
हर जीउ साचा साची बाणी सबद मिलावा होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

सचा सबद सची है बाणी॥ गुरमुख जुग जुग आख वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि गुरु साहिबान व संतों की बाहरी वाणी किसी काम की नहीं। कदापि नहीं। बाहरी वाणियों में वह वाणी अति उत्तम है जिसे मालिक स्वयं, परम गति प्राप्त परोपकारी संत-अवतार, कामिल फ़क़ीरों के मुखारविंद से कहलवाता है। वह उनके अनुभवी वचन हैं जो परमार्थी जीवों के लिए हीरे-जवाहरात से भी बहुमूल्य हैं। संत-महात्माओं के ये वचन 'अमूल्य लाल रतन' होते हैं। संत मन-बुद्धि के घाट पर बैठकर नहीं बोलते, बल्कि जो कुछ कहते हैं निजी अनुभव और प्रभु की प्रेरणा से कहते हैं:

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 722

जब वे अनुभव द्वारा बोलते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो अमृत का झरना बह रहा हो:

बाणी उचरह साध जन अमिउ चलह झरणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320

संतों की वाणी उनके आत्मिक मंडलों के अनुभवों का सच्चा प्रमाण है। वे इस राह पर चलनेवाले परमार्थी के लिए मार्ग की निशानियाँ व निर्देश हैं, जिनका वे संत परोपकार के भाव से उच्चारण करते हैं।

सतगुरु की वाणी के सिवाय और सब वाणियाँ कच्ची (अनुभवहीन और अपूर्ण) हैं। उन वाणियों को कहने, सुनने और वर्णन करनेवाले सब अपूर्ण ही होते हैं:

सतगुरू बिना होर कची है बाणी॥
बाणी त कची सतगुरू बाझहो होर कची बाणी॥
कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आख वखाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.920

संतों की वाणियाँ हमें एक और वाणी का पता देती हैं, जो सारे संसार का गुरु है, जिसके द्वारा जीव का कल्याण होता है। वह वाणी सच है, निरंकार है, सहज कथा या अकथ कथा है जिसे परमात्मा कहते हैं। जो परमात्मा का सच्चा गीत है, वही अमृत, नाम और शब्द है। यह धुनात्मक वाणी है जिसके विषय में उपरोक्त शीर्षकों में प्रमाण दिए गए हैं। इसे ईसाइयों की बाइबल में वर्ड या लॉगॉस और मुसलमानों ने कलमा या बाँगे इलाही कहा है। बाइबल में उपदेश के शुरू में ही जॉन (1:1) ने कहा है: "आदि में शब्द था, शब्द परमात्मा के साथ था, शब्द परमात्मा था।" इसी तरह मुसलमानों का कथन है कि कलमे से चौदह तबक़ों यानी चौदह भुवनों या ब्रह्मांडों की रचना हुई। यह वाणी वेद-शास्त्रों, तीनों लोकों की रचना करनेवाली है और सबसे निराली व अचरजभरी है:

सासत बेद सिंम्रिति सर तेरा सुरसरी चरण समाणी॥
साखा तीन मूल मत रावै तूं तां सरब विडाणी॥
ता के चरण जपै जन नानक बोले अंम्रित बाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.422

ऋग्वेद के वागम्भृणी सूक्त में इस वाणी की क्या सुंदर महिमा है, "मुझमें ही सब देवताओं का वास है, मैं सबका पालन-पोषण करती हूँ, मैं ही सब जगत को गति देती हूँ, मेरे ही आसरे सब कुछ चल रहा है; सब ज्ञान, सब क्रमों को मैं ही पूर्ण करती हूँ।" और जगह भी उल्लेख है: "मैं ही समस्त लोकों और द्वीपों का निर्माण करती हूँ, देहों में प्राण के समान और संसार में वायु के समान सब जगह विशेष रूप से उत्कृष्ट (पूर्ण) रूप से व्यापक होकर रहती हूँ, और मैं ही सूर्य आदि लोकों से परे, इस पृथ्वी से भी परे, अर्थात् इन विकृत पदार्थों से पूर्वकाल में विद्यमान रहकर अपनी महिमा यानी महत् शक्ति से इतने विशाल स्वरूप में जगत का रूप बनकर पूर्ण रीति से प्रकट हो रही हूँ।" (ऋग्वेद मंडल 10, सूक्त 125 और अथर्ववेद कांड 4, सूक्त 30)

इस वाणी के अंदर धुन है जो मालिक के दर पर हो रही है:

अनहत बाणी थान निराला॥ ता की धुन मोहे गोपाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 186

गुण गोबिंद नाम धुन बाणी॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

देव सथानै किआ नीसाणी॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

यह वाणी अनंतकाल से चली आई है और सदा रहेगी:

आखण वेखण बोलणा सबदे रहिआ समाए॥
बाणी वजी चहु जुगी सचो सच सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

यह वाणी मालिक से उत्पन्न हुई है, इसका रूप सच है, यह सदा सत्य है और अमर जीवन प्रदान करनेवाली है:

करतूत सत सत जा की बाणी॥ सत पुरख सभ माहे समाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284

सचा सबद सची है बाणी॥ गुरमुख जुग जुग आख वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

इसका गूढ़ा यानी गहरा रंग कभी नहीं उतरता:

रूड़ी वाणी जे रपै ना इह रंग लहै न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

यह चारों युगों में बजनेवाली वाणी है। पर यह है कहाँ? इसका उत्तर गुरु साहिब देते हैं कि यह वाणी हमारे अंतर में है और भक्तों के हृदय में प्रकट है:

घट अंतरे साची बाणी साचो आप पछाणे राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 769

अंम्रित तेरी बाणीआ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.72

वह वाणी अंदर-बाहर सब जगह है:

अंतर बाहर तेरी बाणी॥ तुध आप कथी तै आप वखाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.99

गुर की बाणी सभ माहे समाणी॥ आप सुणी तै आप वखाणी॥
जिन जिन जपी तेई सभ निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1075

आंतरिक ज्योति के अंदर से यह वाणी निकलती है। इसकी कमाई ही सच्ची भक्ति है और इससे ही सच्चे मालिक के चरणों में लिव लगती है:

मन बैराग रतउ बैरागी सबद मन बेधिआ मेरी माई॥
अंतर जोत निरंतर बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.634

पलटू साहिब भी इसी वाणी की ओर संकेत करते हैं:

उलटा कूवा गगन में तिस में जरै चिराग॥
तिस में जरै चिराग बिना रोगन बिन बाती।
छः रितु बारह मास रहत जरतै दिन राती॥
सतगुरु मिला जो होय ताहि की नजर में आवै।
बिन सतगुरु कोउ होय नहीं वा को दरसावै॥
निकसै एक अवाज चिराग की जोतिहिं माहीं।
ज्ञान समाधी सुनै और कोउ सुनता नाहीं॥
पलटू जो कोई सुनै ता के पूरे भाग।
उलटा कूवा गगन में तिस में जरै चिराग॥

पलटू साहिब की बानी, भाग 1, कुंडलिया-169

यह पूर्ण गुरुओं की सच्ची वाणी है जिसका वे उपदेश करते हैं, जो सुषुम्ना के भीतर हो रही है।

पूरे गुर की साची बाणी॥ सुख मन अंतर सहज समाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 663

इस वाणी की प्राप्ति पूर्ण गुरु से होती है:

वाह वाह पूरे गुर की बाणी॥ पूरे गुर ते उपजी साच समाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 754

दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 922

यह वाणी गुरु के ज्ञान और उनकी कृपा से ही जानी जा सकती है:

गुरमती नाम रिदै वसाए॥ साची बाणी हर गुण गाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 222

अंम्रित बाणी सतगुर पूरे की जिस किरपाल होवै तिस रिदै वसेहा॥
आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुख होहा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 961

यह केवल गुरु की दात है:

आपे आप मिलै ता बूझै॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै॥
गुर की दात सदा मन अंतर बाणी सबद वजाई हे॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 1044

वास्तव में गुरु ही वाणी है:

बाणी गुरू गुरू है बाणी विच बाणी अंम्रित सारे॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 982

गुरु अर्जुन देव जी ने भी सतगुरु को पत्र में लिखा था:

तेरा मुख सुहावा जीउ सहज धुन बाणी॥
आदि ग्रन्थ, पृ॰ 96

इस वाणी का आदि ग्रन्थ में अनहद बाणी, अघड़ बाणी और गुपती बाणी कहकर भी वर्णन किया गया है:

अनहद बाणी पूंजी॥ संतन हथ राखी कूंजी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.893

गुरमुख साचे का भउ पावै॥ गुरमुख बाणी अघड़ घड़ावै॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.941

गुपती बाणी परगट होए॥ नानक परख लए सच सोए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.944

वाणी के फल भी अति उत्तम बताए गए हैं।

1. वह परम गतिदायक है और भवसागर से पार करती है, 2. हौमैं का नाश करती है, 3. अपने आप को पहचानने और तीनों लोकों के पार जाने का ज्ञान देती है, 4. सब पापों की मैल धो देती है, 5. पाँचों वैरियों (काम, क्रोध आदि) को जीत लेती है और 6. सब कार्य पूर्ण करती है और सब कठिनाइयों को दूर करके मालिक से मिलाप करा देती है। इन बातों के प्रमाण आदि ग्रन्थ से आगे 'वाणी' में विस्तारपूर्वक दिए गए हैं। ये फल बाहर की वाणियों से प्राप्त नहीं हो सकते। ऐसी उत्तम फलदायक वाणी को कोई बिरला गुरुमुख ही सुन सकता है:

अंम्रित बाणी गुर की मीठी॥ गुरमुख विरलै किनै चख डीठी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.113

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुख होए॥
इह बाणी महा पुरख की निज घर वासा होए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.935

जब वाणी में सुख और आनंद है, तो जहाँ वाणी प्रकट नहीं वहाँ अवश्य दुःख ही दुःख हैं:

न सबद बूझै न जाणै बाणी॥ मनमुख अंधे दुख विहाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.665

आदि ग्रन्थ में वाणी का ज़ोरदार उपदेश है:

आवहो सिख सतगुरू के पिआरिहो गावहो सची बाणी॥
बाणी त गावहो गुरू केरी बाणीआ सिर बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 920

गुरवाणी

1. पवन की वाणी

1.1. पवन की वाणी से मन माया में रमा रहता है

आखण सुनणा पउण की बाणी इह मन रता माइआ॥
खसम की नदर दिलह पसिंदे जिनी कर एक धिआइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 24

1.2. वाणियाँ अनेक प्रकार की हैं, पर नाम के बिना सब भ्रम में भुलाए रखती हैं

केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंत न अंत॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 7

तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी॥ बिन नावै सभ भरम भुलाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 116

1.3. 'त्रैगुण बाणी ब्रहम जंजाला'

त्रैगुण बाणी ब्रहम जंजाला॥
पड़ वाद वखाणह सिर मारे जमकाला॥
तत न चीनह बंनह पंड पराला॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 230-31

ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा॥
महादेउ गिआनी वरतै घर आपणै तामस बहुत अहंकारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 559

2. सतगुरु की वाणी

2.1. सतगुरु की वाणी सत्य है, यह मिटाई नहीं जा सकती, सब वाणियों में वह वाणी उत्तम है जिसे मालिक गुरु के मुख से कहलवाता है, यह प्रत्यक्ष-दर्शी ज्ञान है

से वडभागी जे तुध धिआइदे जिन सतगुर मिलीऐ॥
सतगुर की बाणी सत सरूप है गुरबाणी बणीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

वेद पड़ह तै वाद वखाणह बिन हर पत गवाई॥
सचा सतगुर साची जिस बाणी भज छूटह गुर सरणाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

ब्रहम के बेते सबद पछाणह हउमै जात गवाई॥
सुर नर तिन की बाणी गावह कोए न मेटै भाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

अनदिन नाम जपहो गुरसिखहो हर करता सतगुर घरी वसाए॥
सतगुर की बाणी सत सत कर जाणहो
गुरसिखहो हर करता आप मुहहो कढाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 308

ना कदे होवै सोग अनदिन रस भोग सा धन महल समाणी॥
जिन प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अंम्रित बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 582

2.2. सतगुरु उस वाणी का उच्चारण करते हैं जो मालिक की ओर से आ रही है, वह प्राकृतिक है, उसमें मन-बुद्धि की घड़ंत नहीं है

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 722

जिस नो आइआ प्रेम रस तिसै ही जरणे॥
बाणी उचरह साध जन अमिउ चलह झरणे॥
पेख दरसन नानक जीविआ मन अंदर धरणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320

2.3. सतगुरु परोपकार के लिए बोलते हैं

हर जन ऊतम ऊतम बाणी मुख बोलह परउपकारे॥
जो जन सुणै सरधा भगति सेती कर किरपा हर निसतारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 493

2.4. सतगुरु का वचन (वाणी) जीव के साथ रहता है और वह नष्ट नहीं होता

गुर का बचन बसै जीअ नाले॥
जल नही डूबै तसकर नही लेवै भाहे न साकै जाले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

2.5. सतगुरु की वाणी अमृत है, निर्मल है और आधार देनेवाली है

धीरज धरम गुरमत हर पाइआ नित हर नामै हर सिउ चित लावै॥
अंम्रित बचन सतगुर की बाणी जो बोलै सो मुख अंम्रित पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 494

अंम्रित बचन साध की बाणी॥
जो जो जपै तिस की गति होवै हर हर नाम नित रसन बखानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 744

मीठा बोले अंम्रित बाणी अनदिन हर गुण गाउ॥
निज घर वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिआ सुख पाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 853

भगता मुख अंम्रित है बाणी॥ गुरमुख हर नाम आख वखाणी॥
हर हर करत सदा मन बिगसै हर चरणी मन लाई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1070

संतसंग होए निरमल बाणी॥ संत मंडल मह नाम वखाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1146

तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारीऐ जीउ॥
सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहो बिसारीऐ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 80

सगल बानी मह अंम्रित बानी॥ हर को जस सुन रसन बखानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.266

2.6. सतगुरु की वाणी सदा नवीन है

भगत जना की ऊतम बाणी गावह अकथ कथा नित निआरी॥
सफल जनम भइआ तिन केरा आप तरे कुल तारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.507

2.7. सतगुरु की वाणी के सिवाय और सब वाणियाँ कच्ची या अपूर्ण हैं

सतगुरू बिना होर कची है बाणी॥
बाणी त कची सतगुरू बाझहो होर कची बाणी॥
कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आख वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.920

2.8. सतगुरु की वाणी को सदा सत्य मानो

प्रभ बेअंत गुरमत को पावह॥ गुर कै सबद मन कउ समझावह॥
सतगुर की बाणी सत सत कर मानहो इउ आतम रामै लीना हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1028

अनदिन नाम जपहो गुरसिखहो हर करता सतगुर घरी वसाए॥
सतगुर की बाणी सत सत कर जाणहो गुरसिखहो
हर करता आप मुहहो कढाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.308

2.9. जिन्हें सतगुरु के वचन नहीं सुहाते उनका शृंगार व्यर्थ है

नित नित काइआ मजन कीआ नित मल मल देह सवारे॥
मेरे सतगुर के मन बचन न भाए सभ फोकट चार सीगारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.982-83

2.10. गुरवाणी के उच्चारण का समय प्रात:काल है

उपदेस गुरू हर हर जप जापै सभ किलविख पाप दोख लह जावै॥
फिर चड़ै दिवस गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हर नाम धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.305

3. गुरवाणी एक और वाणी की ओर संकेत करती है

3.1. वह वाणी वेद-शास्त्र और तीनों लोकों को बनानेवाली है और अचरज भरी है

आखण सुनणा तेरी बाणी॥ तू आपे जाणह सरब विडाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1125

सासत बेद सिंम्रिति सर तेरा सुरसरी चरण समाणी॥
साखा तीन मूल मत रावै तूं तां सरब विडाणी॥
ता के चरण जपै जन नानक बोले अंम्रित बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 422

3.2. वह वाणी सच है

वाह वाह बाणी सच है सच मिलावा होए॥
नानक वाह वाह करतिआ प्रभ पाइआ करम परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 514

सच बाणी सच सबद है भाई गुर किरपा ते होए॥
नानक नाम हर मन वसै भाई तिस बिघन न लागै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638-39

गुण गावै गुण उचरै गुण माहे समाइआ॥
सची बाणी सच है सच मेल मिलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

मेरा प्रभ साचा अत सुआलिउ गुर सेविआ चित लागा॥
साचा सबद सची सच बाणी सो जन अनदिन जागा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 600

हर गुण गावह हर नित पड़ह हर गुण गाए समाए॥
नानक तिन की बाणी सदा सच है जे नाम रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

आपै आप मिलाए बूझै ता निरमल होवै सोई॥
हर जीउ साचा साची बाणी सबद मिलावा होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

वाह वाह बाणी सच है गुरमुख लधी भाल॥
वाह वाह सबदे उचरै वाह वाह हिरदै नाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 514

सचा भोजन भाउ सच सच नाम अधारा॥
सची बाणी संतोखिआ सचा सबद वीचारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

से जन मिले धुर आप मिलाए॥ साची बाणी सबद सुहाए॥
नानक जन गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

3.3. वह वाणी निरंकार है

वाह वाह बाणी निरंकार है तिस जेवड अवर न कोए॥
वाह वाह अगम अथाह है वाह वाह सचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 515

3.4. वह वाणी सहज कथा व अकथ कथा है

हर गुण गाए परम पद पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी॥
सहज कथा प्रभ की अत मीठी कथी अकथ कहाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 781

अकथ कथा अंम्रित प्रभ बानी॥ कहो नानक जप जीवे गिआनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 806

गुर पूरे की बाणी॥ पारब्रहम मन भाणी॥
नानक दास वखाणी॥ निरमल अकथ कहाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 629

एको गिआन धिआन धुन बाणी॥ एक निरालम अकथ कहाणी॥
एको सबद सचा नीसाण॥ पूरे गुर ते जाणै जाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

जिस की बाणी तिस माहे समाणी॥ तेरी अकथ कथा गुर सबद वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 160

4. वाणी क्या है?

4.1. वाणी अमृत है

गुर का सबद अंम्रित है बाणी॥ अनदिन हर का नाम वखाणी॥
हर हर सचा वसै घट अंतर सो घट निरमल ताहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

अकथ कथा अंम्रित प्रभ बानी॥ कहो नानक जप जीवे गिआनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 806

प्रभ की अकथ कहाणी॥ जन बोलह अंम्रित बाणी॥
नानक दास वखाणी॥ गुर पूरे ते जाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 626

4.2. वाणी ब्रह्म है

गुरमुख बाणी ब्रहम है सबद मिलावा होए॥
नानक नाम समाल तू जित सेविऐ सुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

4.3. वाणी मधुर और उत्तम है

तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी॥ कुहकन कोकिला तरल जुआणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 567

हर गुण गाए परम पद पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी॥
सहज कथा प्रभ की अत मीठी कथी अकथ कहाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 781

4.4. वाणी नाम और शब्द है

सच बाणी सच सबद है जा सच धरे पिआर॥
हर का नाम मन वसै हउमै क्रोध निवार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

सच करणी सबद है सार॥ पूरै गुर पाईऐ मोख दुआर॥
अनदिन बाणी सबद सुणाए सच राते रंग रंगावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 114

अंम्रित सबद अंम्रित हर बाणी॥ सतगुर सेविऐ रिदै समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 119

इह मन आरसी कोई गुरमुख वेखै॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै॥
अनहत बाणी निरमल सबद वजाए गुर सबदी सच समावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

गावण गावह जिन नाम पिआर॥ साची बाणी सबद बीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 158

गुण गोबिंद नाम धुन बाणी॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

अंतर हर नाम बासना समाणी॥ हर दर सोभा महा उतम बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 317

सची बाणी सच धुन सच सबद वीचारा॥
अनदिन सच सलाहणा धन धन वडभाग हमारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 564

मेरा प्रभ साचा अत सुआलिउ गुर सेविआ चित लागा॥
साचा सबद सची सच बाणी सो जन अनदिन जागा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 600

बाणी राम नाम सुणी सिध कारज सभ सुहाए राम॥
रोमे रोम रोम रोमे मै गुरमुख राम धिआए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

सभ सुख मुकत नाम धुन बाणी सच नाम उर धारी॥
नाम बिना नही छूटस नानक साची तर तू तारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1013

अनहद बाणी सबद सुणाइआ॥ मनमुख भूले गुरमुख बुझाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1154

सच बाणी सच सबद है भाई गुर किरपा ते होए॥
नानक नाम हर मन वसै भाई तिस बिघन न लागै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638-39

4.5. सच्ची वाणी सच्चा उद्गीथ है

साची भगति करह दर जापह घर दर सचा सोई॥
नानक सचा सोहिला सची सच बाणी सबदे ही सुख होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 771

4.6. वाणी बजती है, उसमें धुन (आवाज़) है

निरमल वाजै अनहद धुन बाणी दर सचै सोभा पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 121

अनहत बाणी थान निराला॥ ता की धुन मोहे गोपाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 186

गुण गोबिंद नाम धुन बाणी॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

बाणी राम नाम सुणी सिध कारज सभ सुहाए राम॥
रोमे रोम रोम रोमे मै गुरमुख राम धिआए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

सची बाणी सच धुन सच सबद वीचारा॥
अनदिन सच सलाहणा धन धन वडभाग हमारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 564

एको गिआन धिआन धुन बाणी॥ एक निरालम अकथ कहाणी॥
एको सबद सचा नीसाण॥ पूरे गुर ते जाणै जाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

अनहद धुन वाजह नित वाजे गाई सतगुर बाणी॥
नानक दात करी प्रभ दातै जोती जोत समाणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

तन मन राता सहज सुभाए॥
बाणी वजै सबद वजाए गुरमुख भगति थाए पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 122

आखण वेखण बोलणा सबदे रहिआ समाए॥
बाणी वजी चहु जुगी सचो सच सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

सतगुरू सेवे सो फल पाए॥ हिरदै नाम विचहो आप गवाए॥
अनहद बाणी सबद वजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231

नैनी देख दरस मन त्रिपतै स्रवन बाणी गुर सबद सुणईआ॥
सुन सुन आतम देव है भीने रस रस राम गोपाल रवईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 833

अंम्रित रस सतगुरू चुआइआ॥ दसवै दुआर प्रगट होए आइआ॥
तह अनहद सबद वजह धुन बाणी सहजे सहज समाई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069

जो दीसै सो एको तूहै॥ बाणी तेरी स्रवण सुणीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1076

संत सभा जह बैसह प्रभ पासे॥ अनंद मंगल हर चलत तमासे॥
गुण गावह अनहद धुन बाणी तह नानक दास चितारणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077

गुर का सबद वसै मन जा कै॥ दूख दरद भ्रम ता का भागै॥
सूख सहज आनंद नाम रस अनहद बाणी सहज धुना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

सभ सुख मुकत नाम धुन बाणी सच नाम उर धारी॥
नाम बिना नही छूटस नानक साची तर तू तारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1013

पंच सखी मिल मंगल गाइआ॥ अनहद बाणी नाद वजाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 375

जल मल जानी नावालिआ कपड़ पट अंबारे॥
वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुए मन मारे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 580

इह मन आरसी कोई गुरमुख वेखै॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै॥
अनहत बाणी निरमल सबद वजाए गुर सबदी सच समावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

हिरदै नाम विचहो आप गवाए॥ अनहद बाणी सबद वजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231

अनहद बाणी सबद सुणाइआ॥ मनमुख भूले गुरमुख बुझाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1154

4.7. वाणी द्वारा ही सच्ची भक्ति होती है, जो मालिक के दर पर शोभा पाती है

हउमै सबद जलाइआ मेरे हर भाइआ जिस दी साची बाणी॥
सची भगति करह दिन राती गुरमुख आख वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 768

धुर भगता मेले आप मिलाए॥ सची भगती आपे लाए॥
साची बाणी सदा गुण गावै इस जनमै का लाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1053

सभ को तेरा भगत कहाए॥ सेई भगत तेरै मन भाए॥
सच बाणी तुधै सालाहन रंग राते भगति करावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 122

अंतर हर नाम बासना समाणी॥ हर दर सोभा महा उतम बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 317

4.8. वाणी जीवन देनेवाली है

कर किरपा अपुना दास कीनो बंधन तोर निरारे॥
जप जप नाम जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 531

अकथ कथा अंम्रित प्रभ बानी॥ कहो नानक जप जीवे गिआनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 806

4.9. वाणी मालिक में समा रही है

जिस की बाणी तिस माहे समाणी॥ तेरी अकथ कथा गुर सबद वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 160

पूरे गुर की पूरी बाणी॥ पूरै लागा पूरे माहे समाणी॥
चड़ै सवाइआ नित नित रंगा घटै नाही तोलीजा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

कमल प्रगास सदा रंग राता अनहद सबद वजाइआ॥
तन मन निरमल निरमल बाणी सचे सच समाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 602

वाह वाह पूरे गुर की बाणी॥ पूरे गुर ते उपजी साच समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

4.10. वाणी सच है और अडोल है

करतूत सत सत जा की बाणी॥ सत पुरख सभ माहे समाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284

बाणी प्रभ की सभ को बोलै॥ आप अडोल न कबहू डोलै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 294

सचा सबद सची है बाणी॥ गुरमुख जुग जुग आख वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

आपे आप आप सालाहे॥ तेरे गुण प्रभ तुझ ही माहे॥
तू आप सचा तेरी बाणी सची आपे अलख अथाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

4.11. वाणी अमृत है, अमर करनेवाली है

निरमल सोभा अंम्रित ता की बानी॥ एक नाम मन माहे समानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

सुण वडभागीआ हर अंम्रित बाणी राम॥
जिन कउ करम लिखी तिस रिदै समाणी राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 545

हर सरण पाई तज न जाई प्रभ प्रीत मन तन भाणी॥
बिनवंत नानक सदा गाईऐ पवित्र अंम्रित बाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 545

सच मंत्र तुमारा अंम्रित बाणी॥ सीतल पुरख द्रिसटि सुजाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 562

तेरा वखत सुहावा अंम्रित तेरी बाणी॥
सेवक सेवह भाउ कर लागा साउ पराणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 566

4.12. वाणी का रंग कभी नहीं उतरता

ए मन रूढ़े रंगुले तूं सचा रंग चड़ाए॥
रूड़ी बाणी जे रपै ना इह रंग लहै न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

4.13. हरि की प्रेमभरी वाणी अणिआला तीर है (वह तीर है जो लगने के बाद निकल नहीं सकता)

हर प्रेम बाणी मन मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे॥
जिस लागी पीर पिंरम की सो जाणै जरीआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 449

गुर सुंदर मोहन पाए करे हर प्रेम बाणी मन मारिआ॥
मेरै हिरदै सुध बुध विसर गई मन आसा चिंत विसारिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 776

5. वाणी कहाँ है ?

5.1. वाणी भक्तों के हृदय में है

अंम्रित तेरी बाणीआ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

5.2. वाणी घट-घट के अंदर है

निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी॥ घट घट सुनी स्रवन बख्याणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 279

सचे भगत सोहहे दरवारे सचो सच वखाणे राम॥
घट अंतरे साची बाणी साचो आप पछाणे राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 769

पाछै बहुर न आवन पावउ॥
अंम्रित बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 693

आपे आप मिलै ता बूझै॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै॥
गुर की दात सदा मन अंतर बाणी सबद वजाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1044

भरम चुकाइआ सदा सुख पाइआ॥ गुर परसाद परम पद पाइआ॥
अंतर निरमल निरमल बाणी हर गुण सहजे गावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 114

5.3. वाणी सबके अंदर-बाहर समा रही है

अंतर बाहर तेरी बाणी॥ तुध आप कथी तै आप वखाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 99

पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी॥
लोचन स्रमह बुध बल नाठी ता काम पवस माधाणी॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 93

निरमल सबद निरमल है बाणी॥ निरमल जोत सभ माहे समाणी॥
निरमल बाणी हर सालाही जप हर निरमल मैल गवावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 121

गुर की बाणी सभ माहे समाणी॥ आप सुणी तै आप वखाणी॥
जिन जिन जपी तेई सभ निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

5.4. अंदर की ज्योति में निरंतर वाणी है

मन बैराग रतउ बैरागी सबद मन बेधिआ मेरी माई॥
अंतर जोत निरंतर बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 634

5.5. वाणी सुषुम्ना के अंदर है

पूरे गुर की साची बाणी॥ सुख मन अंतर सहज समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 663

वाह वाह पूरे गुर की बाणी॥ पूरे गुर ते उपजी साच समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

5.6. वाणी दसवें द्वार में है

अंम्रित रस सतगुरू चुआइआ॥ दसवै दुआर प्रगट होए आइआ॥
तह अनहद सबद वजह धुन बाणी सहजे सहज समाई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ,पृ. 1069

वाह वाह पूरे गुर की बाणी॥ पूरे गुर ते उपजी साच समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

5.7. वाणी सहज में समा रही है

अंम्रित नाम सद मीठा लागा गुर सबदी साद आइआ॥
सची बाणी सहज समाणी हर जीउ मन वसाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 559

6. वाणी चारों युगों में है

आखण वेखण बोलणा सबदे रहिआ समाए॥
बाणी वजी चहु जुगी सचो सच सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

सची बाणी जुग चारे जापै॥ सभ किछ साचा आपे आपै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 158

चहु जुग मह अंम्रित साची बाणी॥ पूरै भाग हर नाम समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.665

बाबा मै वर देह मै हर वर भावै तिस की बल राम जीउ॥
रव रहिआ जुग चार त्रिभवण बाणी जिस की बल राम जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.763

माइआ मोह भवजल है अवधू सबद तरै कुल तारी॥
सबद सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.908

भगत जना की ऊतम बाणी जुग जुग रही समाई॥
बाणी लागै सो गति पाए सबदे सच समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.909-10

सचा सबद सची है बाणी॥ गुरमुख जुग जुग आख वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.424

सदा हजूर रविआ सभ ठाई हिरदै नाम अपारा॥
जुग जुग बाणी सबद पछाणी नाउ मीठा मनह पिआरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.602

7. वाणी किस प्रकार प्राप्त होती है?

7.1. गुरु के मिलाप द्वारा

भाउ भोजन सतगुर तुठै पाए॥ अन रस चूकै हर रस मंन वसाए॥
सच संतोख सहज सुख बाणी पूरे गुर ते पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.115

वाह वाह पूरे गुर की बाणी॥ पूरे गुर ते उपजी साच समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.754

सतगुर मेली ता पिर रावी बिगसी अंम्रित बाणी॥
नानक सा धन ता पिर रावे जा तिस कै मन भाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.243

प्रभ की अकथ कहाणी॥ जन बोलह अंम्रित बाणी॥
नानक दास वखाणी॥ गुर पूरे ते जाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.626

गुर ते सात सहज सुख बाणी॥ सेवा साची नाम समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.664

दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.922

विण गुर पूरे कोए न जाणी॥ माइआ मोह दूजै लोभाणी॥
गुरमुख नाम मिलै हर बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.423

साधसंग जउ तुमह मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी॥
अनद भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.614

हर अंम्रित बाणी गावै॥ साधा की धूरी नावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.623

7.2. गुरु की सेवा से

सतगुर सेवह ता गति मित पावह हर जीउ मंन वसाए॥
सची बाणी सिउ चित लागै आवण जाण रहाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.67

अंम्रित सबद अंम्रित हर बाणी॥ सतगुर सेविऐ रिदै समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.119

सतगुर सेवह तिन की सची बाणी॥ जुग जुग भगती आख वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.161

सची भगति सतगुर ते होवै सची हिरदै बाणी॥
सतगुर सेवे सदा सुख पाए हउमै सबद समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.602

सतगुरू सेवे सो फल पाए॥ हिरदै नाम विचहो आप गवाए॥
अनहद बाणी सबद वजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231

7.3. गुरु के उपदेश पर चलने से

गुरमती नाम रिदै वसाए॥ साची बाणी हर गुण गाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 222

मनमुख अंतर भगति न होई॥ गुरमुख भगति सांत सुख होई॥
पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमत अंतर भीजै हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1049

7.4. गुरु की आज्ञा को सच समझकर मानने से

सेवक सिख पूजण सभ आवह सभ गावह हर हर ऊत्तम बानी॥
गाविआ सुणिआ तिन का हर थाए पावै
जिन सतगुर की आगिआ सत सत कर मानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 669

7.5. गुरु की कृपा द्वारा

सफल सो बाणी जित नाम वखाणी॥ गुर परसाद किनै विरलै जाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 103

गुरमुख बाणी मीठी लागी॥ अंतर बिगसै अनदिन लिव लागी॥
सहजे सच मिलिआ परसादी॥ सतगुर पाइआ पूरै वडभागी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

बंधन काट सेवक कर राखे॥ अंम्रित बानी रसना चाखे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 395

अंम्रित बाणी सतगुर पूरे की जिस किरपाल होवै तिस रिदै वसेहा॥
आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुख होहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

7.6. यह गुरु का दान है

आपे आप मिलै ता बूझै॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै॥
गुर की दात सदा मन अंतर बाणी सबद वजाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1044

7.7. यह गूढ़ कथा (वाणी) गुरु से प्राप्त होती है

गुहज कथा इह गुर ते जाणी॥ नानक बोलै हर हर बाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 739

8. गुरु वाणी रूप है

तेरा मुख सुहावा जीउ सहज धुन बाणी॥ चिर होआ देखे सारिंगपाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

बाणी गुरू गुरू है बाणी विच बाणी अंम्रित सारे॥
गुर बाणी कहै सेवक जन मानै परतख गुरू निसतारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 982

9. वाणी हुक्म में व्याप्त है, मालिक की मेहर से उसका ध्यान किया जा सकता है

सो किछ करै जो चित न होई॥ तिस दा हुकम मेट न सकै कोई॥
हुकमे वरतै अंम्रित बाणी हुकमे अंम्रित पीआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 118

तुध भावै ता गावा बाणी॥ तुध भावै ता सच वखाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 180

अंम्रित बाणी तत वखाणी गिआन धिआन विच आई॥
गुरमुख आखी गुरमुख जाती सुरतीं करम धिआई॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1243

10. गुरुमुख वाणी

संतहो ऐसी कथहो कहाणी॥
सुर पवित्र नर देव पवित्रा खिन बोलहो गुरमुख बाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 883

11. अनहत या अनहद वाणी

11.1. अनहद वाणी गुरु का शब्द (नाम) है

अनहत बाणी गुर सबद जाणी हर नाम हर रस भोगो॥
कहै नानक प्रभ आप मिलिआ करण कारण जोगो॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 921-22

हिरदै नाम विचहो आप गवाए॥ अनहद बाणी सबद वजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231

अनहद बाणी सबद सुणाइआ॥ मनमुख भूले गुरमुख बुझाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1154

11.2. अनहद वाणी में धुन है

संत सभा जह बैसह प्रभ पासे॥ अनंद मंगल हर चलत तमासे॥
गुण गावह अनहद धुन बाणी तह नानक दास चितारणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077

अनहद धुन वाजह नित वाजे गाई सतगुर बाणी॥
नानक दात करी प्रभ दातै जोती जोत समाणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

सूख़ सहज आनंद नाम रस अनहद बाणी सहज धुना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1079

इह मन आरसी कोई गुरमुख वेखै॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै॥
अनहत बाणी निरमल सबद वजाए गुर सबदी सच समावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

अनहत बाणी थान निराला॥ ता की धुन मोहे गोपाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 186

पंच सखी मिल मंगल गाइआ॥ अनहद बाणी नाद वजाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 375

जह भउ नाही तहा आसन बाधिओ सिंगी अनहत बानी॥
तत बीचार डंडा कर राखिओ जुगत नाम मन भानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 208

11.3. अनहद वाणी की कुंजी संत यानी गुरु के पास है

अनहद बाणी पूंजी॥ संतन हथ राखी कूंजी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 893

11.4. अनहद वाणी को गुरुमुख ही समझता है

अनहद बाणी सबद सुणाइआ॥ मनमुख भूले गुरमुख बुझाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1154

अनहद बाणी गुरमुख जाणी बिरलो को अरथावै॥
नानक आखै सच सुभाखै सच रपै रंग कबहू न जावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 945

11.5. अनहद वाणी मालिक के दर पर होती है

देव सथानै किआ नीसाणी॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

11.6. मालिक स्वयं सच्ची वाणी के द्वारा सच को दृढ़ाता है

आपे करता करे कराए॥ सची बाणी सच द्रिड़ाए॥
नानक नाम मिलै वडिआई जुग जुग एको जाता हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1053

मन तन सीतल गुर चरणी लागा॥ अंतर भरम गइआ भउ भागा॥
सदा अनंद सचे गुण गावह सच बाणी बोलाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1061

12. रूड़ी वाणी

रूड़ी बाणी हर पाइआ गुर सबदी बीचार॥
आप गइआ दुख कटिआ हर वर पाइआ नार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 936-37

ए मन रूढ़े रंगुले तूं सचा रंग चड़ाए॥
रूड़ी बाणी जे रपै ना इह रंग लहै न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰427

13. अघड़ वाणी

गुरमुख साचे का भउ पावै॥ गुरमुख बाणी अघड़ घड़ावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰941

14. गुपती वाणी

गुपती बाणी परगट होए॥ नानक परख लए सच सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰944

15. वाणी का फल

15.1. हरि की वाणी को सुनने से करोड़ों पुण्य और करोड़ों फल मिलते हैं

कोट पुंन सुण हर की बाणी॥ कोट फला गुर ते बिधि जाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰238

15.2. वाणी पवित्र पावन है

मनमुख अंतर भगति न होई॥ गुरमुख भगति सांत सुख होई॥
पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमत अंतर भीजै हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰1049

15.3. परम गति होती है, शांति प्राप्त होती है, भय और भ्रम का नाश होता है

अंम्रित बाणी हर हर तेरी॥ सुण सुण होवै परम गति मेरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰103

अंम्रित वरखै अनहद बाणी॥ मन तन अंतर सांत समाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰105

मन तन सीतल गुर चरणी लागा॥ अंतर भरम गइआ भउ भागा॥
सदा अनंद सचे गुण गावह सच बाणी बोलाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰1061

इक सुख मानिआ सहज मिलाइआ॥
निरमल बाणी भरम चुकाइआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

निरमल बाणी को मंन वसाए॥ गुर परसादी सहसा जाए॥
गुर कै भाणै चलै दिन राती नाम चेत सुख पाइदा॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1062

15.4. सब चिंताएँ दूर होती हैं और हृदय कमल खिलता है

धुर की बाणी आई॥ तिन सगली चिंत मिटाई॥
दइआल पुरख मिहरवाना॥ हर नानक साच वखाना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

अंम्रित बाणी तत है गुरमुख वसै मन आए॥
हिरदै कमल परगासिआ जोती जोत मिलाए॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

15.5. जीव जाग उठता है, सदा जाग्रत रहता है और हमेशा उसकी लगन लगी रहती है

गुर किरपा ते से जन जागे जिना हर मन वसिआ बोलह अंम्रित बाणी॥
कहै नानक सो तत पाए जिस नो अनदिन हर लिव लागै जागत रैण विहाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 920

15.6. हौमैं (अहंभाव) का नाश होता है

अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होए बिनास॥
सतगुर सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तास॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

इह मन आरसी कोई गुरमुख वेखै॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै॥
अनहत बाणी निरमल सबद वजाए गुर सबदी सच समावणिआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

अंम्रित नाम मंन वसाए॥ हउमै मेरा सभ दुख गवाए॥
अंम्रित बाणी सदा सलाहे अंम्रित अंम्रित पावणिआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 118

निरमल बाणी निज घर वासा॥ नानक हउमै मारे सदा उदासा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.362

15.7. सब मैल और पाप दूर होते हैं और जीव पवित्र हो जाता है

निरमल सबद निरमल है बाणी॥ निरमल जोत सभ माहे समाणी॥
निरमल बाणी हर सालाही जप हर निरमल मैल गवावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.121

गोविंद ऊजल ऊजल हंसा॥ मन बाणी निरमल मेरी मनसा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.121

साची बाणी सूचा होए॥ गुण ते नाम परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.361

हर कै भाणै हर गुण गाए॥ सभ किलबिख काटे दूख सबाए॥
हर निरमल निरमल है बाणी हर सेती मन राता हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1052

अंम्रित बाणी सुणत निहाल॥ बिनस गए बिखिआ जंजाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1340

15.8. हरि की प्रेमभरी वाणी द्वारा मन मरता है

हर प्रेम बाणी मन मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे॥
जिस लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.449

गुर सुंदर मोहन पाए करे हर प्रेम बाणी मन मारिआ॥
मेरै हिरदै सुध बुध विसर गई मन आसा चिंत विसारिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.776

सतगुर सबदी इह मन भेदिआ हिरदै साची बाणी॥
मेरा प्रभ अलख न जाई लखिआ गुरमुख अकथ कहाणी॥
आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंगपाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1259

15.9. वाणी द्वारा जीव पाँचों (काम, क्रोध आदि) को जीत लेता है

जीत लए ओए महा बिखादी सहज सुहेली बाणी॥
कहो नानक मन भइआ परगासा पाइआ पद निरबाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 206

कोमल बाणी सभ कउ संतोखै॥ पंच भू आतमा हर नाम रस पोखै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299

15.10. सब कार्य पूर्ण हो जाते हैं, मन-तन हरा हो जाता है

बाणी राम नाम सुणी सिध कारज सभ सुहाए राम॥
रोमे रोम रोम रोमे मै गुरमुख राम धिआए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

अनहद बाणी गुरमुख वखाणी जस सुण सुण मन तन हरिआ॥
सरब सुखा तिस ही बण आए जो प्रभ अपना करिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 781

15.11. तीनों लोकों का बोध होता है

त्रिभवण सूझै आप गवावै॥ बाणी बूझै सच समावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 412

15.12. वाणी द्वारा कठिन मार्ग पार हो जाता है

सुण स्रवण बाणी गुर वखाणी हर रंग तुरी चड़ाइआ॥
महा मारग पंथ बिखड़ा जन नानक पार लंघाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 575

15.13. जीव अपने आप को पहचानता है

सबदै साद जाणह ता आप पछाणह॥ निरमल बाणी सबद वखाणह॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होए॥ आप पछाण हर पावै सोए॥
साची बाणी महल परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 423

जिन मन विच वथ पाई सोई जाणै॥ गुर कै सबदे आप पछाणै॥
आप पछाणै सोई जन निरमल बाणी सबद सुणाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1066

15.14. हरि के दर पर जीव स्वीकार होता है, अपने घर सचखंड पहुँचता है, हरि को पाता है और मुक्त हो जाता है

गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाण भइआ॥
दर दरसन का प्रीतम होवै मुकत बैकुंठै करै किआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 360

गुरमुख गावै आप गवावै दर साचै सोभा पाई॥
साची बाणी सच वखाणै सच नाम लिव लाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 910

जिन बाणी सिउ चित लाइआ से जन निरमल परवाण॥
नानक नाम तिन्हा कदे न वीसरै से दर सचे जाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 429

गुरमुख भगत सोहहे दरबारे॥ सची बाणी सबद सवारे॥
अनदिन गुण गावै दिन राती सहज सेती घर जाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1055

गुरमुख होवै सो नाम धिआवै सदा हर नाम समाल॥
सची बाणी हर गुण गावै नदरी नदर निहाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 600

रूड़ी बाणी हर पाइआ गुर सबदी बीचार॥
आप गइआ दुख कटिआ हर वर पाइआ नार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 936-37

गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होए॥ आप पछाण हर पावै सोए॥
साची बाणी महल परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 423

जिस नो मेले सो मिलै हउ तिस बलिहारै जाउ॥
ए मन भगती रतिआ सच बाणी निज थाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुख होए॥
इह बाणी महा पुरख की निज घर वासा होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 935

मन रे सदा अनंद गुण गाए॥ सची बाणी हर पाईऐ हर सिउ रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36

मनमुख बुध काची मनूआ डोलै अकथ न कथै कहानी॥
गुरमत निहचल हर मन वसिआ अंम्रित साची बानी॥...
आपे मेल लए अकथ कथीऐ सच सबद सच बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1233

हर का संत सतगुर सत पुरखा जो बोलै हर हर बानी॥
जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 667

15.15. जीव भवसागर से पार हो जाता है, आवागमन छूट जाता है

कहत कबीर छोड बिखिआ रस इत संगत निहचउ मरणा॥
रमईआ जपहो प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागर तरणा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 92

अंम्रित बाणी सतगुर पूरे की जिस किरपाल होवै तिस रिदै वसेहा॥
आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुख होहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

राम नाम पिआरे सभ कुल उधारे राम नाम मुख बाणी॥
आवण जाण रहे सुख पाइआ घर अनहद सुरत समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 772

16. सच्ची वाणी भाग्य से ही मिलती है

निरभउ दाता सदा मन होए॥ सची बाणी पाए भाग कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.361

जिन्ह कै पोतै पुंन तिन्हा गुरू मिलाए॥ सच बाणी गुर सबद सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.364

17. गुरु की वाणी का स्वाद कोई गुरुमुख ही लेता है, यह वाणी गुरु के शिष्यों को ही भाती है

अंम्रित बाणी गुर की मीठी॥ गुरमुख विरलै किनै चख डीठी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.113

अनहद बाणी गुरमुख वखाणी जस सुण सुण मन तन हरिआ॥
सरब सुखा तिस ही बण आए जो प्रभ अपना करिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.781

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुख होए॥
इह बाणी महा पुरख की निज घर वासा होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.935

गुरमुख साचे का भउ पावै॥ गुरमुख बाणी अघड़ घड़ावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.941

अनहद बाणी गुरमुख जाणी बिरलो को अरथावै॥
नानक आखै सच सुभाखै सच रपै रंग कबहू न जावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.945

सचा सबद सची है बाणी॥ गुरमुख विरलै किनै पछाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1044

गुर की दात सदा मन अंतर बाणी सबद वजाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1044

गुरमुख मनूआ उलट परावै॥ गुरमुख बाणी नाद वजावै॥
गुरमुख सच रते बैरागी निज घर वासा पाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1058

अनहद बाणी सबद सुणाइआ॥ मनमुख भूले गुरमुख बुझाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1154

ऊची बाणी ऊचा होए॥ गुरमुख सबद वखाणै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

गुण गावा गुण बोली बाणी॥ गुरमुख हर गुण आख वखाणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 367

सची बाणी गुरमुख आखै हउमै विचहो जाए॥
आपे दाता करम है साचा साचा सबद सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

गुरमुख होवै सो गिआन तत बीचारै हउमै सबद जलाए॥
तन मन निरमल निरमल बाणी साचै रहै समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

सदा हदूर गुरमुख जापै॥ सबदे सेवै सो जन ध्रापै॥
अनदिन सेवह सची बाणी सबद सचै ओमाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1055

अंम्रित बाणी तत वखाणी गिआन धिआन विच आई॥
गुरमुख आखी गुरमुख जाती सुरतीं करम धिआई॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1243

गुरमुखा हर धन खटिआ गुर कै सबद वीचार॥
नाम पदारथ पाइआ अतुट भरे भंडार॥
हर गुण बाणी उचरह अंत न पारावार॥
नानक सभ कारण करता करै वेखै सिरजनहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1414

सचा सबद सची है बाणी॥ गुरमुख जुग जुग आख वखाणी॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.424

मिल सतसंग बोली हर बाणी॥ हर हर कथा मेरै मन भाणी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.95

जन नानक बोलै अंम्रित बाणी॥ गुरसिखां कै मन पिआरी भाणी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.96

18. सच्चा सौदा वाणी और शब्द है

इका बाणी इक गुर इको सबद वीचार॥
सचा सउदा हट सच रतनी भरे भंडार॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.646

गुरवाणी

वाणी के प्रकरण में एक छोटे शीर्षक में गुरवाणी का वर्णन आ चुका है। वाणी का विस्तारपूर्वक वर्णन ऊपर हो चुका है। गुरवाणी और वाणी पदों का एक ही अर्थ में प्रयोग किया गया है, इसलिए वाणी का प्रकरण पाठकजन पढ़ लें।

गुरवाणी संसार के लिए सच्चा प्रकाश है और मालिक की कृपा हो तभी वह मन में निवास करती है:

गुरबाणी इस जग मह चानण करम वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.67

इसका फल भी यही है कि इससे सब विकार और मैल दूर होकर शिष्य की ज्योति (आत्मा) परम ज्योति (परमात्मा) में मिल जाती है।

भक्ति के भंडार में आदि ग्रन्थ की गुरवाणी एक अनमोल रत्न है, इसके आगे प्रमाण देखें। जो इसकी कमाई करते हैं उनका उद्धार हो जाता है:

भगति भंडार गुरबाणी लाल॥ गावत सुनत कमावत निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.376

गुरवाणी

1. गुरवाणी क्या है?

1.1. प्रकाश है

मनमुख करम करह नही बूझह बिरथा जनम गवाए॥
गुरबाणी इस जग मह चानण करम वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.67

संसार रोगी नाम दारू मैल लागै सच बिना॥
गुर वाक निरमल सदा चानण नित साच तीरथ मजना॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.687

1.2. सत्य स्वरूप है

तू वेपरवाह अथाह है अतुल किउ तुलीऐ॥
से वडभागी जे तुध धिआइदे जिन सतगुर मिलीऐ॥
सतगुर की बाणी सत सरूप है गुरबाणी बणीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

हर जीउ सचा सच है सची गुरबाणी॥
सतगुर ते सच पछाणीऐ सच सहज समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 515

1.3. नाम की प्राप्ति का साधन है

जिना अंदर नाम निधान है गुरबाणी वीचार॥
तिन के मुख सद उजले तित सचै दरबार॥
तिन बहदिआ उठदिआ कदे न विसरै जे आप बखसे करतार॥
नानक गुरमुख मिले न विछुड़ह जे मेले सिरजणहार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1422

हर के गुण गावा जे हर प्रभ भावा॥ अंतर हर नाम सबद सुहावा॥
गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नाम समाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1065

गुर सेवा ते करणी सार॥ राम नाम राखहो उर धार॥
गुरबाणी वरती जग अंतर इस बाणी ते हर नाम पाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1066

1.4. शब्द है

गुर की बाणी नाम वजाए॥ नानक महल सबद घर पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 362

गुर की कार कमाए लाहा घर आणिआ॥
गुरबाणी निरबाण सबद पछाणिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 752

गुर की बाणी गुर ते जाती जे सबद रते रंग लाए॥
पवित पावन से जन निरमल हर कै नाम समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

1.5. गुरवाणी नाद और अनहद धुन है

सभ नाद बेद गुरबाणी॥ मन राता सारिगपाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 879

गुरबाणी सुनत मेरा मन द्रविआ मन भीना निज घर आवैगो॥
तह अनहत धुनी बाजह नित बाजे नीझर धार चुआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1308

गुर की बाणी नाम वजाए॥ नानक महल सबद घर पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 362

हर के गुण गावा जे हर प्रभ भावा॥ अंतर हर नाम सबद सुहावा॥
गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नाम समाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1065

1.6. गुरवाणी आधार है

गुर की बाणी सिउ लाए पिआर॥
ऐथै ओथै एह अधार॥ आपे देवै सिरजनहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1335

मै सतगुर सेती पिरहड़ी किउ गुर बिन जीवा माउ॥
मै गुरबाणी आधार है गुरबाणी लाग रहाउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

1.7. गुरवाणी अकथ कथा है

सरवर मह हंस हंस मह सागर॥ अकथ कथा गुर बचनी आदर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 685

जाग सलोनड़ीए बोलै गुरबाणी राम॥
जिन सुण मंनिअड़ी अकथ कहाणी राम॥
अकथ कहाणी पद निरबाणी को विरला गुरमुख बूझए॥
ओह सबद समाए आप गवाए त्रिभवण सोझी सूझए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.844

1.8. गुरवाणी हरि गुण है

मिल संगत सरधा ऊपजै गुर सबदी हर रस चाख॥
सभ मन तन हरिआ होइआ गुरबाणी हर गुण भाख॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.997

2. गुरवाणी कैसी है?

2.1. निर्मल है

संसार रोगी नाम दारू मैल लागै सच बिना॥
गुर वाक निरमल सदा चानण नित साच तीरथ मजना॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.687

किरपा कर कै आपणी गुर सबद मिलाइआ॥
गुर की बाणी निरमली हर रस पीआइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1088

2.2. निरबाण है अर्थात् तृष्णा की आग बुझानेवाली है

गुर की कार कमाए लाहा घर आणिआ॥
गुरबाणी निरबाण सबद पछाणिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.752

2.3. रूड़ी यानी सुंदर है

रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी॥
वडै भाग सतगुर मिलै पाईऐ पद निरबाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.421

2.4. मीठी है

गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ॥
हउमै रोग गइआ भउ भागा सहजे सहज मिलाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.773

3. भक्ति के भंडार में गुरवाणी अमूल्य रत्न है

भगति भंडार गुरबाणी लाल॥ गावत सुनत कमावत निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 376

रतना रतन पदारथ बहु सागर भरिआ राम॥
बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथ चड़िआ राम॥
गुरबाणी लागे तिन्ह हथ चड़िआ निरमोलक रतन अपारा॥
हर हर नाम अतोलक पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

4. गुरवाणी कहाँ है ?

4.1. इसका वास हृदय के अंदर है

जिना अंदर नाम निधान है गुरबाणी वीचार॥
तिन के मुख सद उजले तित सचै दरबार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1422

हिरदै सुण सुण मन अंम्रित भाइआ॥
गुरबाणी हर अलख लखाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 366

बूझहो हर जन सतगुर बाणी॥ एह जोबन सास है देह पुराणी॥
आज काल मर जाईऐ प्राणी हर जप जप रिदै धिआई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1025

गुरवाणी सुण मैल गवाए॥ सहजे हर नाम मंन वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 665

गुरवाणी ते हर मंन वसाए॥
नानक साच रते प्रभ आप मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

4.2. गुरवाणी सब जगह व्यापक है

हर के गुण गावा जे हर प्रभ भावा॥
अंतर हर नाम सबद सुहावा॥
गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नाम समाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1065

गुर सेवा ते करणी सार॥ राम नाम राखहो उर धार॥
गुरबाणी वरती जग अंतर इस बाणी ते हर नाम पाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1066

गुर की बाणी सभ माहे समाणी॥ आप सुणी तै आप वखाणी॥
जिन जिन जपी तेई सभ निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

5. गुरवाणी की प्राप्ति किस प्रकार होती है?

5.1. मालिक की दया से

मनमुख करम करह नही बूझह बिरथा जनम गवाए॥
गुरबाणी इस जग मह चानण करम वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

जिना अंदर नाम निधान है गुरबाणी वीचार॥
तिन के मुख सद उजले तित सचै दरबार॥
तिन बहदिआ उठदिआ कदे न विसरै जे आप बखसे करतार॥
नानक गुरमुख मिले न विछुड़ह जे मेले सिरजणहार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1422

किरपा कर कै आपणी गुर सबद मिलाइआ॥
गुर की बाणी निरमली हर रस पीआइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1088

उपदेस सुण साध संतन का सभ चूकी काण जमाणी॥
जिन कउ क्रिपाल होआ प्रभ मेरा से लागे गुर की बाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 608

5.2. गुरु के द्वारा

तू वेपरवाह अथाह है अतुल किउ तुलीऐ॥
से वडभागी जे तुध धिआइदे जिन सतगुर मिलीऐ॥
सतगुर की बाणी सत सरूप है गुरबाणी बणीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी॥
वडै भाग सतगुर मिलै पाईऐ पद निरबाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 421

हर जीउ सचा सच है सची गुरबाणी॥
सतगुर ते सच पछाणीऐ सच सहज समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 515

गुर की बाणी गुर ते जाती जे सबद रते रंग लाए॥
पवित पावन से जन निरमल हर कै नाम समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

सत संतोख कर भाउ कुड़म कुड़माई आइआ बल राम जीउ॥
संत जना कर मेल गुरबाणी गावाईआ बल राम जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 773

5.3. गुरबाणी की अकथ कथा की प्राप्ति किसी गुरुमुख को ही होती है

जाग सलोनड़ीए बोलै गुरबाणी राम॥
जिन सुण मंनिअड़ी अकथ कहाणी राम॥
अकथ कहाणी पद निरबाणी को विरला गुरमुख बूझए॥
ओह सबद समाए आप गवाए त्रिभवण सोझी सूझए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 844

5.4. गुरबाणी बड़े भाग्य से ही प्राप्त होती है

गुरबाणी गावह भाई॥ ओह सफल सदा सुखदाई॥
नानक नाम धिआइआ॥ पूरब लिखिआ पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

नानक मसतक जिस वडभाग॥ गुर की बाणी सहज बैराग॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 560

नानक से पूरे वडभागी सतगुर सेवा लाए॥
जो इछह सोई फल पावह गुरबाणी सुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

6. गुरवाणी के लाभ

6.1. गुरवाणी सुख और संतोष देनेवाली है

नानक से पूरे वडभागी सतगुर सेवा लाए॥
जो इछिह सोई फल पावह गुरबाणी सुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

गुरबाणी गावह भाई॥ ओह सफल सदा सुखदाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

भगति भंडार गुरबाणी लाल॥ गावत सुनत कमावत निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 376

त्रिसना बुझै हर कै नाम॥
महा संतोख होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682-83

6.2. गुरवाणी से हौमैं रोग (अहंभाव), भय, ममता, क्रोध और भ्रम का नाश होता है

गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ॥
हउमै रोग गइआ भउ भागा सहजे सहज मिलाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 773

बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइआ॥
गइआ करोध ममता तन नाठी पाखंड भरम गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 773

6.3. गुरवाणी द्वारा शिष्य हरि रस को पाता है और उसका मन-तन हरा हो जाता है

किरपा कर कै आपणी गुर सबद मिलाइआ॥
गुर की बाणी निरमली हर रस पीआइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1088

मिल संगत सरधा ऊपजै गुर सबदी हर रस चाख॥
सभ मन तन हरिआ होइआ गुरबाणी हर गुण भाख॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 997

6.4. गुरवाणी द्वारा मन स्थिर हो जाता है

गुरबाणी सुनत मेरा मन द्रविआ मन भीना निज घर आवैगो॥
तह अनहत धुनी बाजह नित बाजे नीझर धार चुआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1308

6.5. गुरवाणी द्वारा मालिक से मिलाप, ज्योति में जोत का समाना, नाम की प्राप्ति और मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं

गुरबाणी ते हर मंन वसाए॥ नानक साच रते प्रभ आप मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

हिरदै सुण सुण मन अंम्रित भाइआ॥ गुरबाणी हर अलख लखाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 366

जीउ पिंड सभ है तिस केरा॥ सचा साहिब ठाकुर मेरा॥
नानक गुरबाणी हर पाइआ हर जप जाप समाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1058

हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंन वसावणिआ॥
अंजन माहे निरंजन पाइआ जोती जोत मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 112

गुर सेवा ते करणी सार॥ राम नाम राखहो उर धार॥
गुरबाणी वरती जग अंतर इस बाणी ते हर नाम पाइदा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1066

गुर की बाणी नाम वजाए॥ नानक महल सबद घर पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 362

नानक से पूरे वडभागी सतगुर सेवा लाए॥
जो इछह सोई फल पावह गुरबाणी सुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

6.6. गुरवाणी द्वारा मैल दूर होते हैं, सहज यानी परम गति की प्राप्ति होती है, मालिक के दरबार में मुख उज्ज्वल होता है और अपने घर में सदा के लिए निवास हो जाता है

गुरबाणी सुण मैल गवाए॥ सहजे हर नाम मंन वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 665

गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ॥
हउमै रोग गइआ भउ भागा सहजे सहज मिलाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 773

बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइआ॥
गइआ करोध ममता तन नाठी पाखंड भरम गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 773

जिना अंदर नाम निधान है गुरबाणी वीचार॥
तिन के मुख सद उजले तित सचै दरबार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1422

गुरबाणी सुनत मेरा मन द्रविआ मन भीना निज घर आवैगो॥
तह अनहत धुनी बाजह नित बाजे नीझर धार चुआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1308

7. उपदेश

बूझहो हर जन सतगुर बाणी॥ एह जोबन सास है देह पुराणी॥
आज काल मर जाईऐ प्राणी हर जप जप रिदै धिआई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1025

गुरुमंत्र

आदि ग्रन्थ में गुरवाणी, वाणी, शब्द, नाम, ये सब पद एक ही अर्थ में आए हैं, इन सबमें कोई अंतर या भेद नहीं (देखें: इनके प्रकरण)। गुरुमंत्र वह मूल शिक्षा है जो गुरु अपने शिष्य को धुरधाम पहुँचने के लिए देते हैं। जो उच्चकोटि के शब्द-पारखी संत-महात्मा होते हैं, उनका गुरुमंत्र, नाम या शब्द ही होता है। इसलिए गुरवाणी में गुरुमंत्र का शब्द यानी नाम के लिए प्रयोग किया गया है:

सुण सजण जी मैडड़े मीता राम॥ गुर मंत्र सबद सच दीता राम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 576

और ऐसे गुरु-मंत्र में प्रकाश है:

अंधकार मह गुर मंत्र उजारा॥ गुर कै संग सगल निसतारा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

इसका स्थान हृदय के अंदर है:

हर ऊतम रिद अंतर भाइओ गुर मंत दीओ हर कान॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1335

जैसा कि वाणी के प्रसंग में कहा गया है, यह गुरुमंत्र जब भी मिलेगा गुरु से ही मिलेगा:

आठ पहर गावत भगवंत॥ सतगुर दीनो पूरा मंत॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1150

गुरुमंत्र के फल की महिमा का वर्णन नहीं हो सकता। इससे जीव के सारे बंधन छूट जाते हैं, हरि के भजन में प्रीति और प्रतीति दृढ़ होती है, जीव माया और काल से मुक्त हो जाता है, उसके सब कार्य पूर्ण हो जाते हैं, वह अपने आप

को पहचान लेता है और जन्म-मरण से सदा के लिए छुटकारा पा जाता है। ऐसे मनुष्य को दु:ख-क्लेश फिर कभी नहीं सताते।

यह गुरुमंत्र बड़े ऊँचे भाग्य से मिलता है:

गुर दीखिआ जिह मन बसै नानक मसतक भाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 260

अब यह जान लेना कठिन नहीं कि गुरु-मंत्रहीन प्राणी की क्या दशा होगी। गुरु अर्जुन साहिब जी के वचन हैं:

गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह॥
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुल खलह॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1356

आगे आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण दिए जा रहे हैं।

गुरबाणी

1. गुरुमंत्र क्या है?

1.1. गुरुमंत्र नाम है, शब्द है

सच बिन सत संतोख न पावै॥ बिन गुर मुकत न आवै जावै॥
मूल मंत्र हर नाम रसाइण कहो नानक पूरा पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1040-41

सुण सजण जी मैडड़े मीता राम॥ गुर मंत्र सबद सच दीता राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 576

मन मह सतगुर धिआन धरा॥
द्रिढ़िओ गिआन मंत्र हर नामा प्रभ जीउ मइआ करा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 701

सतगुर मंत्र दीओ हर नाम॥ इह आसर पूरन भए काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 196

सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मंत्र सतगुरू द्रिड़ाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1300

सरब कला सोई परबीन॥ नाम मंत्र जा कउ गुर दीन॥

गुरु अर्जुन देव,, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

साधसंग जपिओ भगवंत॥ केवल नाम दीओ गुर मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

नंनाकार न होता ता कहो॥ नाम मंत्र गुर दीनो जा कहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 257

1.2. गुरुमंत्र में प्रकाश है

गुर बोहिथ तारे भव पार॥ गुर सेवा जम ते छुटकार॥
अंधकार मह गुर मंत्र उजारा॥ गुर कै संग सगल निसतारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

2. गुरुमंत्र कहाँ है?

हमरे जगजीवन हर प्रान॥
हर ऊतम रिद अंतर भाइओ गुर मंत दीओ हर कान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1335

3. गुरुमंत्र कहाँ मिलता है? गुरु के पास

साधसंग जपिओ भगवंत॥ केवल नाम दीओ गुर मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

सतगुर मंत्र दीओ हर नाम॥ इह आसर पूरन भए काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 196

सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मंत्र सतगुरू द्रिड़ाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1300

आठ पहर गावत भगवंत॥ सतगुर दीनो पूरा मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1150

गुरदेव दाता हर नाम उपदेसै गुरदेव मंत निरोधरा॥
गुरदेव सांत सत बुध मूरत गुरदेव पारस परस परा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 262

किलविख सभ बिनास होन सिमरत गोविंद॥
हर मारग साधू दसिआ जपीऐ गुर मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 321

नंनाकार न होता ता कहो॥ नाम मंत्र गुर दीनो जा कहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 257

हर जप मंत गुर उपदेस लै जापहो तिन्ह अंत छडाए जिन्ह हर प्रीत चितासा॥
जन नानक अनदिन नाम जपहो हर संतहो इह छूटण का साचा भरवासा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 860

सरब कला सोई परबीन॥ नाम मंत्र जा कउ गुर दीन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

4. गुरुमंत्र के फल

4.1. अंत समय छुटकारा, दु:ख, क्लेश, भय और माया का नाश और अटल पद की प्राप्ति होती है

हर जप मंत गुर उपदेस लै जापहो तिन्ह अंत छडाए जिन्ह हर प्रीत चितासा॥
जन नानक अनदिन नाम जपहो हर संतहो इह छूटण का साचा भरवासा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 860

नंनाकार न होता ता कहो॥ नाम मंत्र गुर दीनो जा कहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 257

संत जना हर मंत्र द्रिड़ाइआ हर साजन वसगति कीने राम॥
आपनड़ा मन आगै धरिआ सरबस ठाकुर दीने राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 782

दुख कलेस न भउ बिआपै गुर मंत्र हिरदै होए॥
कोट जतना कर रहे गुर बिन तरिओ न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

सरब कला सोई परबीन॥ नाम मंत्र जा कउ गुर दीन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1298

जा कउ गुर हर मंत्र दे॥ सो उबरिआ माइआ अगन ते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 211

घर सुख वसिआ बाहर सुख पाइआ॥ कहो नानक गुर मंत्र द्रिड़ाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1136

पापड़िआ पछाड़ बाण सचावा संन्ह कै॥
गुर मंत्रड़ा चितार नानक दुख न थीवई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 521

नाम रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुर गोबिंद॥
कहो नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंत॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1429

5. गुरुमंत्र से रहित प्राणियों की दशा

गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह॥
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुल खलह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ., 1356

दीक्षा

दीक्षा शब्द का गुरवाणी में कई स्थानों पर प्रयोग किया गया हैं। दीक्षा की प्राप्ति या दीक्षित होना एक ही बात है। इसको मुसलमान फ़क़ीर बैअत होना कहते हैं। मुर्शिद (सतगुरु) मुरीद (शिष्य) को अपनी आत्मिक जीवन-ज्योति प्रदान करता है और उसको आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाता है। इसको गुरवाणी में जीअ दान (जीवन-दान) देना कहा है:

जीअ दान दे भगती लाइन हर सिउ लैन मिलाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

दीक्षा केवल सतगुरु से ही मिल सकती है, यह क्रिया कान-फूँक गुरुओं के द्वारा नहीं हो सकती। जीवन-दान या जीवन कणी जीवित गुरु के मिलाप से ही प्राप्त हो सकती है। जीवन देनेवाली गति किसी जीवित व्यक्ति से ही प्राप्त हो सकती है। ग्रंथ-पोथियों से इसका मिलना असंभव है:

सतगुर देखिआ दीखिआ लीनी॥ मन तन अरिपओ अंतरगति कीनी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

दीक्षा (इनीशिएशन) देते समय गुरु शिष्य को इल्मे-सीना (आंतरिक विद्या) का उपदेश देते हैं, जिसकी कमाई (अभ्यास) करने से रूहानी चढ़ाई संभव हो जाती है। उन सब बातों का निर्णय करके उपदेश दिया जाता है जो सिमरन, ध्यान और अंतर में शब्द के प्रकट होने में सहायक हैं और जिनसे अंतर में चढ़ाई होती है। दीक्षा के समय सतगुरु शिष्य को आत्मिक जीवन कणी प्रदान करते हैं और उसे शब्द धुन के साथ जोड़ते हैं। फिर वे शिष्य के अंग-संग हो जाते हैं और दर्जे-ब-दर्जे उन्नति करवाते हुए उसे निजघर पहुँचा देते हैं। मनुष्य चाहे कितना भी आलिम-फ़ाज़िल और गुणी-ज्ञानी क्यों न हो, धर्मपरायण, संयमी और संसार

में माननीय और प्रतिष्ठित क्यों न हो, वह मन-माया (जड़ पदार्थ) के फंदे में फँसा हुआ है। ऐसी हालत में केवल सतगुरु ही उसे अंतर्मुख शब्द के साथ जोड़ सकते हैं। कोई भी मनुष्य कितना ही गुणी क्यों न हो, वह स्वयं शब्द धुन को नहीं पकड़ सकता। जब तक सतगुरु जीअ-दान देकर दीक्षित न करें, उसे शब्द की प्राप्ति नहीं हो सकती।

सतगुरु से दीक्षा प्राप्त करते समय आत्मा शब्द धुन के साथ जुड़ने के योग्य होती है, इसे सतगुरु के घर में जन्म लेने का समय समझा जाता है। जब सतगुरु शिष्य को नाम से जोड़ देता है, तब वह आत्मिक मार्ग में उन्नति करने लगता है और अपनी कमज़ोरियों पर विजय पा लेता है। जब अभ्यासी इस मार्ग में गुरु के प्रसाद से कमाई करके उन्नति करता है तो वह शारीरिकता में लिप्त नहीं होता, बल्कि उसकी आत्मा रूहानी मंडलों पर चढ़ाई करती है। वह ज़मीनी (भौतिक) नहीं रहती, आसमानी (आध्यात्मिक) बन जाती है। यह नाम का दान चेतन पुरुष को दिया जाता है और यह उसको जीवन-ज्योति प्रदान करके जाग्रत करने का उपाय है। इस जीअ-दान में दीक्षित होने पर इसका शीघ्र या देर से फलीभूत होना दीक्षा लेनेवाली आत्मा और उसकी आंतरिक अवस्था पर निर्भर है। हर एक की आंतरिक स्थिति अलग-अलग है, कोई ज़मीन बिलकुल तैयार है और कोई अभी उतनी तैयार नहीं। सतगुरु दीक्षा के समय अपनी चेतनता और ज्योति का शिष्य की आत्मा में संचार करता है, जिससे आत्मिक चेतनता और ज्योति प्रकट होने का ख़मीर लग जाता है जो कमाई द्वारा अपने आप उभर आता है। सतगुरु की आत्मिक ज्योति शिष्य की आत्मा को जीवित करके उसको उभारती है जिसके फलस्वरूप शिष्य की आंतरिक उन्नति शुरू होने लगती है और शिष्य अपने अंतर में रहमत का अनुभव करने लगता है। सतगुरु का यह प्रसाद कभी मिट नहीं सकता। काल और माया इस जीवन कणी के बीज को नष्ट नहीं कर सकते। जो शिष्य दीक्षित हो गया उसकी रूहानियत जल्दी या भले ही देर से, पर उभरेगी ज़रूर और एक दिन वह अवश्य अपने निजघर (सचखंड) पहुँचेगा।

जब तक दीक्षा न मिले तब तक ज्ञान प्राप्त नहीं होता और सच की परख नहीं हो सकती। गुरवाणी कहती है:

बिन गुर दीखिआ कैसे गिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1140

यह दीक्षा क्या है? यह नाम की कणी है जो गुरु के पास से ही मिलती है:

तिन्हा मिलिआ गुर आए जिन कउ लीखिआ॥
अंम्रित हर का नाउ देवै दीखिआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.729

धुर से भाग्य में हो तब यह दीक्षा मिलती है। जब यह मिल जाती है तो मन मग्न होता है और मर जाता है, हम अपने आप को पहचानते हैं और जन्म-मरण से रहित हो जाते हैं।

बाहरमुखी गुरुओं की गुरु दीक्षा से क़ाम नहीं बनता:

सती पाप कर सत कमाहे॥ गुर दीखिआ घर देवण जाहे॥
इसतरी पुरखै खटिऐ भाउ॥ भावै आवउ भावै जाउ॥
सासत बेद न मानै कोए॥ आपो आपै पूजा होए॥
काजी होए कै बहै निआए॥ फेरे तसबी करे खुदाए॥
वढी लै कै हक गवाए॥ जे को पुछै ता पड़ सुणाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.951

मोह-माया का समुद्र बड़ा भयानक है, इसमें सब जीव बहे जा रहे हैं। कोई गुरुमुख (देखें: 'गुरुमुख' का प्रकरण) ही इस भवसागर से पार होता है। अगर शिष्य गुरु दीक्षा लेकर भी जप-तप आदि साधनों में लगा रहे तो उसका मोह नहीं टूटता और न ही जन्म-मरण से छुटकारा मिलता है, उसको अपने निजघर जाने में देरी हो जाती है:

एत मोह डूबा संसार॥ गुरमुख कोई उतरै पार॥
एत मोह फिर जूनी पाहे॥ मोहे लागा जम पुर जाहे॥
गुर दीखिआ ले जप तप कमाहे॥ ना मोह तूटै ना थाए पाहे॥
नदर करे ता एह मोह जाए॥ नानक हर सिउ रहै समाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.356

गुरवाणी

1. दीक्षा क्या है ?

1.1. दीक्षा नाम है, जिसके अंदर धुन है जो सुनी जा सकती है

तिन्हा मिलिआ गुर आए जिन कउ लीखिआ॥
अंम्रित हर का नाउ देवै दीखिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

सिख सभा दीखिआ का भाउ॥ गुरमुख सुणणा साचा नाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 350

नउ खंड प्रिथमी इस तन मह रविआ निमख निमख नमसकारा॥
दीखिआ गुर की मुंद्रा कानी द्रिड़ओ एक निरंकारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 208

2. दीक्षा के बिना ज्ञान व सच की प्राप्ति नहीं हो सकती

बिन गुर दीखिआ कैसे गिआन॥ बिन पेखे कहो कैसो धिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1140

दीखिआ आख बुझाइआ सिफती सच समेउ॥
तिन कउ किआ उपदेसीऐ जिन गुर नानक देउ॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 150

पूरे गुर की पूरी दीखिआ॥ जिस मन बसै तिस साच परीखिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

3. दीक्षा सतगुरु से ही मिलती है

कउण तराजी कवण तुला तेरा कवण सराफ बुलावा॥
कउण गुरू कै पह दीखिआ लेवा कै पह मुल करावा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 730

सतगुर देखिआ दीखिआ लीनी॥ मन तन अरपिओ अंतरगति कीनी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

4. किसी भाग्यशाली के मन में ही गुरु दीक्षा बसती है

साधू की मन ओट गहु उकत सिआनप तिआग॥
गुर दीखिआ जिह मन बसै नानक मसतक भाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 260

5. दीक्षा द्वारा मन मग्न होता है, मन मर जाता है, जीव अपने आप को पहचानता है और जन्म-मरण से रहित हो जाता है

उपदेस जे दिता सतगुरू सो सुणिआ सिखी कंने॥
जिन सतगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगण वंने॥
इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुण मन भिंने॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 314

बाघ मरै मन मारीऐ जिस सतगुर दीखिआ होए॥
आप पछाणै हर मिलै बहुड़ न मरणा होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1410-11

वखर (सौदा)

गुरवाणी में कहा गया है कि जीव का संसार में आने का उद्देश्य केवल वखर (व्यापारिक सामग्री) इकट्ठा करना है जिसके द्वारा वह मालिक के दर पर स्वीकृत हो। यह वखर क्या पदार्थ है? गुरवाणी में बताया गया है कि यह नाम (शब्द) की कमाई है:

नाम वखर धन संचिआ नानक सची रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 710

सच सउदा लै गुर वीचारी॥
सचा वखर जिस धन पलै सबद सचै ओमाहा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1032

यह वखर नाम है जिसका भंडार संतों के पास है और जो उन्हीं से प्राप्त होता है:

जिस वखर कउ लैन तू आइआ॥ राम नाम संतन घर पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 283

जिस प्रकार माल यानी सौदा मंडी और बाज़ारों में बिकता है उसी प्रकार इस वखर का व्यापार हमारे शरीर के अंदर ही होता है। यह वखर इस तनरूपी दुकान में है और गुरु की शरण लेकर उसकी प्राप्ति हो सकती है:

इह तन हाट सराफ को भाई वखर नाम अपार॥
इह वखर वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबद करे वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 636

आगे आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण दिए जा रहे हैं।

ੴ

गुरवाणी

1. वखर नाम है

हिक सेवी हिक संमला हर इकस पह अरदास॥
नाम वखर धन संचिआ नानक सची रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.710

साच वखर के हम वणजारे॥ नानक गुरमुख उतरस पारे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.939

रतना केरी गुथली रतनी खोली आए॥ वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाए॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ.954

पूंजी साचउ नाम तू अखुटउ दरब अपार॥
नानक वखर निरमलउ धंन साहु वापार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1090

2. वखर काया में है

छतड़े बाजार सोहन विच वपारीए॥ वखर हिक अपार नानक खटे सो धणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.965

इह तन हाट सराफ को भाई वखर नाम अपार॥
इह वखर वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबद करे वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.636

3. वखर संतों से मिलता है

जिस वखर कउ लैन तू आइआ॥ राम नाम संतन घर पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.283

नीके साचे के वापारी॥ सच सउदा लै गुर वीचारी॥
सचा वखर जिस धन पलै सबद सचै ओमाहा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1032

धन अंधी पिर चपल सिआना॥ पंच तत का रचन रचाना॥
जिस वखर कउ तुम आए हहो सो पाइओ सतगुर पासा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1073

इह तन हाट सराफ को भाई वखर नाम अपार॥
इह वखर वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबद करे वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 636

मन परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संग॥
जिस वखर कउ चाहता सो पाइओ नामह रंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 431

ज्ञान

ज्ञान 'ज्ञा' धातु से निकला है जिसका अर्थ है जानना। अंग्रेज़ी में 'know' भी 'ज्ञा' का ही एक रूप है। आम लोगों ने केवल वाचक ज्ञान को ही काफ़ी समझ लिया है और इसी पर ज़ोर देते नज़र आते हैं। वास्तव में ज्ञान-ध्यान केवल बुद्धि के फैलाव का नाम नहीं है। गीता में ज्ञान और विज्ञान का उल्लेख आया है। सृष्टि के सारे नाशवान पदार्थों में एक ही अविनाशी परमपिता परमात्मा व्याप्त हो रहा है, इस अनुभव को ज्ञान माना है। उस नित्य परमेश्वर से इन सभी नाशवान पदार्थों की उत्पत्ति के ज्ञान को विज्ञान कहा है। गीता (6:8) में बताया गया है कि ज्ञान और विज्ञान से तृप्त, योगयुक्त मनुष्य समस्त जीवों में परमेश्वर को और परमेश्वर में संपूर्ण प्राणियों को देखता है।

वाचक ज्ञान, ध्यान यानी विचार आदि (जो मन-बुद्धि का फैलाव है) की भी आवश्यकता है ताकि हम आदर्श को समझ सकें, पर समझकर उस आदर्श को पाने के लिए यत्न करना पड़ता है, जो मन-बुद्धि को स्थिर करने पर ही हो सकता है।

गुरवाणी में लिखने और पढ़ने को या बुद्धि के विचार को ज्ञान नहीं माना गया बल्कि शब्द और नाम, सच और कीर्तन को ज्ञान कहा है। अंदर सहज की उस ध्वनि (वाणी) को, जो सदा घट-घट में हो रही है और सब जगह व्याप्त है, ज्ञान कहा है:

गिआन धिआन गुर सबद है मीठा॥ गुर किरपा ते किनै विरलै चख डीठा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162

गुर गिआन पदारथ नाम है हर नामो दे द्रिड़ाए॥
जिस परापत सो लहै गुर चरणी लागै आए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

गिआन धिआन सच गहिर गंभीरा॥ कोए न जाणै तेरा चीरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

एको गिआन धिआन धुन बाणी॥ एक निरालम अकथ कहाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

गिआन धिआन धुन जाणीऐ अकथ कहावै सोए॥
सफलिओ बिरख हरीआवला छाव घणेरी होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

वाणी कहती है कि इस ज्ञान में प्रकाश है। गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं कि सतगुरु का 'ज्ञान' क्या है, यह 'सदा घट चानण' है, जो अमर है, जिसके द्वारा दिन-रात निरंतर भक्ति होती है और जो पूर्ण नाम (देखें: 'नाम' का प्रकरण) का सच्चा लाभ है:

सतगुर गिआन सदा घट चानण अमर सिर बादिसाहा॥
अनदिन भगति करह दिन राती राम नाम सच लाहा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 600

गुरु अर्जुन साहिब इसके बारे में कहते हैं कि जब गुरु का ज्ञान मन के अंदर प्रकट हुआ तो प्रकाश और उजाला हो गया, नामरूपी अमृत को पीकर मन तृप्त हो गया और हम भय से रहित हो गए:

भइओ प्रगास सरब उजीआरा गुर गिआन मनह प्रगटाइओ॥
अंम्रित नाम पीओ मन त्रिपतिआ अनभै ठहराइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

रूहानी चढ़ाई में चंद्र और सूर्य के प्रकाश को पाना ज्ञान का मार्ग है:

भीतर अगन बनासपति मउली सागर पंडै पाइआ॥
चंद सूरज दुए घर ही भीतर ऐसा गिआन न पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

वह ज्ञान अंदर-बाहर सब स्थानों में है, वह सदा सहायक है, वह मन के परदे के अंदर है और उसकी प्राप्ति अंतर्मुख सुषुम्ना नाड़ी में होती है, जोकि घट-घट में है:

अंतर बाहर संग सहाई गिआन जोग॥ तिसह अराध मना बिनासै सगल रोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 398

अंतर गुर गिआन हर रतन है मुकत करावणहारा॥
नानक जिस नो नदर करे सो पाए सो होवै दर सचिआरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.593

गिआन रतन मन परगट भइआ॥ नाम पदारथ सहजे लइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1069

गुड़ कर गिआन धिआन कर महूआ भउ भाठी मन धारा॥
सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.969

गुरु ज्ञान का साक्षात रूप है। उससे ही ज्ञान की प्राप्ति होती है, जो गुरुमुख बनने पर मिल सकती है। गुरवाणी में स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है कि सतगुरु से ज्ञान पैदा होता है। यह ज्ञान 'निरबान' है और बिना सतगुरु के किसी को इसका बोध नहीं होता। यह आज तक बिना गुरु न किसी को मिला है और न मिल सकता है क्योंकि यह कमाई का भेद है और कमाई वालों के द्वारा ही मिल सकता है:

भाई रे गुर बिन गिआन न होए॥ पूछहो ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.59

कुंभे बधा जल रहै जल बिन कुंभ न होए॥
गिआन का बधा मन रहै गुर बिन गिआन न होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.469

माई गुर बिन गिआन न पाईऐ॥
अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.532

बिन गुर किनै न पाइओ हर नाम हर सते॥
तत गिआन वीचारिआ हर जप हर गते॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1093

यह महादान है जो सतगुरु बख़्शते हैं। सिमरन और ध्यान के द्वारा मन के स्थिर होने पर यह ज्ञान प्रकट होता है। ऐसे ज्ञानी संसार में विरले ही हैं। कामी, क्रोधी और

अहंकारी इस ज्ञान से ख़ाली रहते हैं। ज्ञान की प्राप्ति होने पर सब भूख, तृष्णाएँ मिट जाती हैं, जीव गुप्त और प्रकट सबका जाननेवाला हो जाता है, उसे तीनों भुवनों की जानकारी हो जाती है, सब दुःखों व पापों का नाश हो जाता है, जीव मुक्त होकर यम को जीत लेता है और वह काम, क्रोध आदि विकारों के प्रहार से बच जाता है। यह सब कुछ बाहर के ज्ञान-ध्यान द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता।

ज्ञान आत्मा या सुरतरूपी स्त्री का शृंगार है, इसके द्वारा ही वह मालिक के दर पर परवान हो सकती है। मन हाथी है, जबकि गुरु महावत है जिसके पास ऐसा ज्ञानरूपी अंकुश है, जिससे मनरूपी हाथी कुमार्ग पर नहीं जाता और वश में रहता है। यह (गुरु ज्ञान) जो शब्द, नाम, धुन और वाणी है, आत्म तत्त्व को परम तत्त्व में मिला देता है। इसको पाकर जीव का आवागमन मिट जाता है। जब वह ज्ञान हृदय में प्रकट हो जाता है तब सब ज्ञान-ध्यान और जप-तप आ जाते हैं:

गिआन धिआन सगले सभ जप तप जिस हर हिरदै अलख अभेवा॥
नानक राम नाम मन राता गुरमत पाए सहज सेवा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 356

इसकी पुष्टि में आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के अनेक प्रमाण आगे दिए गए हैं। पाठकजन ध्यानपूर्वक पढ़ें और विचार करें।

गुरवाणी

1. ज्ञान क्या है?

1.1. ज्ञान परमेश्वर है, ज्ञान शब्द, नाम, वाणी, धुन, हरि कथा, कीर्तन और सच है

गिआन धिआन पूरन परमेसुर हर हर कथा नित सुणीऐ राम॥
अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीऐ राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 783

गिआन धिआन नरहरि निरबाणी॥ बिन सतगुर भेटे कोए न जाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

सो निहकरमी जो सबद बीचारे॥ अंतर तत गिआन हउमै मारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 128

गिआन धिआन गुर सबद है मीठा॥ गुर किरपा ते किनै विरलै चख डीठा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162

चीनै गिआन धिआन धन साचौ एक सबद लिव लावै॥
निरालंब निरहार निहकेवल निरभउ ताड़ी लावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1332

निध सिध निरमल नाम बीचार॥ पूरन पूर रहिआ बिख मार॥
त्रिकुटी छूटी बिमल मझार॥ गुर की मत जीइ आई कार॥
इन बिधि राम रमत मन मानिआ॥ गिआन अंजन गुर सबद पछानिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 220-21

तीरथ नावण जाउ तीरथ नाम है॥ तीरथ सबद बीचार अंतर गिआन है॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 687

अंतर सबद मिटिआ अगिआन अंधेरा॥
सतगुर गिआन मिलिआ प्रीतम मेरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 798

दल मल दैतहो गुरमुख गिआन॥ बेणी जाचै तेरा नाम॥

बेणी साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 974

गिआन धिआन सच गहिर गंभीरा॥ कोए न जाणै तेरा चीरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1034

गुर गिआन अंजन सच नेत्री पाइआ॥
अंतर चानण अगिआन अंधेर गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

हर जस कीरतन संग धन ताहा॥
गिआन खड़ग कर किरपा दीना दूत मारे कर धाई हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1072

अंम्रित बाणी तत वखाणी गिआन धिआन विच आई॥
गुरमुख आखी गुरमुख जाती सुरतीं करम धिआई॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1243

मुह मंगां सोई देवदा हर पिता सुखदाइक॥
गिआन रास नाम धन सउपिओन इस सउदे लाइक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1101-02

बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत मह जोगं॥
अंम्रित नाम निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 360

गुर गिआन पदारथ नाम है हर नामो दे द्रिड़ाए॥
जिस परापत सो लहै गुर चरणी लागै आए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

गुरमुख सबद पछाणीऐ हर अंम्रित नाम समाए॥
गुर गिआन प्रचंड बलाइआ अगिआन अंधेरा जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

एको गिआन धिआन धुन बाणी॥ एक निरालम अकथ कहाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

गिआन धिआन धुन जाणीऐ अकथ कहावै सोए॥
सफलिओ बिरख हरीआवला छाव घणेरी होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

1.2. ज्ञान में प्रकाश है

सतसंगत मिलीऐ हर साधू मिल संगत हर गुण गाए॥
गिआन रतन बलिआ घट चानण अगिआन अंधेरा जाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 368

हर हर नाम जपिआ दुख बिनसिआ हर नाम परम सुख पाइआ॥
सतगुर गिआन बलिआ घट चानण अगिआन अंधेर गवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 444

जिन मसतक धुर हर लिखिआ तिना सतगुर मिलिआ राम राजे॥
अगिआन अंधेरा कटिआ गुर गिआन घट बलिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 450

सतगुर गिआन सदा घट चानण अमर सिर बादिसाहा॥
अनदिन भगति करह दिन राती राम नाम सच लाहा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.600

वीआह होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हर पाइआ॥
अगिआन अंधेरा कटिआ गुर गिआन प्रचंड बलाइआ॥
बलिआ गुर गिआन अंधेरा बिनसिआ हर रतन पदारथ लाधा॥
हउमै रोग गइआ दुख लाथा आप आपै गुरमत खाधा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.78

भइओ प्रगास सरब उजीआरा गुर गिआन मनह प्रगटाइओ॥
अंम्रित नाम पीओ मन त्रिपतिआ अनभै ठहराइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.209

उपजिओ गिआन हूआ परगास॥ कर किरपा लीने कीट दास॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ.875

1.3. चंद्र-सूर्य को घट में पाना ज्ञान है

भीतर अगन बनासपति मउली सागर पंडै पाइआ॥
चंद सूरज दुए घर ही भीतर ऐसा गिआन न पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1171

रवि ससि एको ग्रिह उदिआनै॥ करणी कीरत करम समानै॥
एक सबद इक भिखिआ मागै॥ गिआन धिआन जुगत सच जागै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.223

1.4. गुरु का ज्ञान तीर्थ है, अपार है और मन को क़ाबू करनेवाला है

गुरदेव सांत सत बुध मूरत गुरदेव पारस परस परा॥
गुरदेव तीरथ अंम्रित सरोवर गुर गिआन मजन अपरंपरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.262

गुर गिआन साचा थान तीरथ दस पुरब सदा दसाहरा॥
हउ नाम हर का सदा जाचउ देह प्रभ धरणीधरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.687

गुर गिआन अपारा सिरजणहारा जिन सिरजी तिन गोई॥
परवाणा आइआ हुकम पठाइआ फेर न सकै कोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 688

मन कुंचर पीलक गुरू गिआन कुंडा जह खिंचे तह जाए॥
नानक हसती कुंडे बाहरा फिर फिर उझड़ पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

1.5. ज्ञान सुरत या आत्मारूपी स्त्री का शृंगार है

गिआन अपार सीगार है सोभावंती नार॥ सा सभराई सुंदरी पिर कै हेत पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

2. ज्ञान कहाँ है?

2.1. ज्ञान खंड में ज्ञान प्रचंड है

गिआन खंड मह गिआन परचंड॥ तिथै नाद बिनोद कोड अनंद॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 7

2.2. अंदर-बाहर सब जगह है

अंतर बाहर संग सहाई गिआन जोग॥
तिसह अराध मना बिनासै सगल रोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 398

2.3. अंतर में है

गुर गिआन अंजन सच नेत्री पाइआ॥ अंतर चानण अगिआन अंधेर गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

अंतर गुर गिआन हर रतन है मुकत करावणहारा॥
नानक जिस नो नदर करे सो पाए सो होवै दर सचिआरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 593

अंतर गिआन महा रस सारा॥ तीरथ मजन गुर वीचारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 411

रतन राम घट ही के भीतर ता को गिआन न पाइओ॥
जन नानक भगवंत भजन बिन बिरथा जनम गवाइओ॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 703

2.4. मन में है

गिआन अंजन गुर दीआ अगिआन अंधेर बिनास॥
हर किरपा ते संत भेटिआ नानक मन परगास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

गुरमुख गिआन धिआन मन मान॥ गुरमुख महली महल पछान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

गिआन रतन मन परगट भइआ॥ नाम पदारथ सहजे लइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069

2.5. सुषुम्ना में जाने पर यह प्रकट होता है

गुड़ कर गिआन धिआन कर महूआ भउ भाठी मन धारा॥
सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 969

3. ज्ञान किस प्रकार प्रकट होता है?

3.1. वाहिगुरु की कृपा द्वारा

जां तुध भावै ता दुरमत जाए॥ गिआन रतन मन वसै आए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 354

गिआन न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सार॥
करम मिलै ता पाईऐ होर हिकमत हुकम खुआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

मुह मंगां सोई देवदा हर पिता सुखदाइक॥
गिआन रास नाम धन सउपिओन इस सउदे लाइक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1101-02

अंतर गुर गिआन हर रतन है मुकत करावणहारा॥
नानक जिस नो नदर करे सो पाए सो होवै दर सचिआरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 593

जिना सतगुर सिउ चित लाइआ से पूरे परधान॥
जिन कउ आप दइआल होए तिन उपजै मन गिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 45

4. ज्ञान कहाँ से मिलता है?

4.1. गुरु से

भाई रे गुर बिन गिआन न होए॥ पूछहो ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

गुर ते गिआन पाइआ अत खड़ग करारा॥
दूजा भ्रम गड़ कटिआ मोह लोभ अहंकारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1087

गुर बिन को न दिखावई अंधी आवै जाए॥
गिआन पदारथ खोइआ ठगिआ मुठा जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 60

सतगुर ते गिआन पाइआ हर तत बीचारा॥
मत मलीण परगट भई जप नाम मुरारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

सतगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभ मेलै सोए॥
सहजे नाम धिआईऐ गिआन परगट होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 428-29

कुंभे बधा जल रहै जल बिन कुंभ न होए॥
गिआन का बधा मन रहै गुर बिन गिआन न होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 469

गुर बिन गिआन न होवई ना सुख वसै मन आए॥
नानक नाम विहूणे मनमुखी जासन जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 650

मन मह सतगुर धिआन धरा॥
द्रिढ़िओ गिआन मंत्र हर नामा प्रभ जीउ मइआ करा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 701

करम धरम तत गिआन संता संग होए॥
जपीऐ अंम्रित नाम बिघन न लगै कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 521

माई गुर बिन गिआन न पाईऐ॥
अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 532

हर सतगुर हर सतगुर मेल हर सतगुर चरण हम भाइआ राम॥
तिमर अगिआन गवाइआ गुर गिआन अंजन गुर पाइआ राम॥
गुर गिआन अंजन सतगुरू पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे॥
सतगुर सेव परम पद पाइआ हर जपिआ सास गिरासे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिन गिआन न भाल जीउ॥
खिंचोताण विगुचीऐ बुरा भला दुए नाल जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 751

हम मूरख अगिआन गिआन किछ नाही॥ सतगुर ते समझ पड़ी मन माही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1070

गुर ते गिआन पाए जन कोए॥ गुर ते बूझै सीझै सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 158

बिन गुर किनै न पाइओ हर नाम हर सते॥
तत गिआन वीचारिआ हर जप हर गते॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1093

सतगुर ते गिआन ऊपजै तां इह संसा जाए॥
सतगुर ते हर बुझीऐ गरभ जोनी नह पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

गिआन धिआन नरहरि निरबाणी॥ बिन सतगुर भेटे कोए न जाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1342

हर प्रभ रते लोइणा गिआन अंजन गुर दे॥
मै प्रभ सजण पाइआ जन नानक सहज मिले॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1317

4.2. गुरुमत या गुरु का उपदेश ग्रहण करने से

रामा रम रामो पूज करीजै॥
मन तन अरप धरउ सभ आगै रस गुरमत गिआन द्रिड़ीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1325

अंम्रित नीर गिआन मन मजन अठसठ तीरथ संग गहे॥
गुर उपदेस जवाहर माणक सेवे सिख सो खोज लहै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1328

गुरमती गिआन रतन मन वसै सभ देखिआ ब्रहम सुभाए॥
नानक सतगुर बोहिथै वडभागी चड़ै ते भउजल पार लंघाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1417

4.3. गुरु ज्ञान का सुरमा बख़्शता है

सतगुर विटहो वारिआ जित मिलिऐ खसम समालिआ॥
जिन कर उपदेस गिआन अंजन दीआ इन्ही नेत्री जगत निहालिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

गिआन अंजन सतगुर ते होए॥ राम नाम रव रहिआ तिहु लोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

गुर गिआन अंजन सच नेत्री पाइआ॥ अंतर चानण अगिआन अंधेर गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

गिआन अंजन गुर दीआ अगिआन अंधेर बिनास॥
हर किरपा ते संत भेटिआ नानक मन परगास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

जनम जनम के किलविख दुख भागे गुर गिआन अंजन नेत्र दीत॥
साधसंग इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.673

4.4. ज्ञान सतगुरु का महादान है

महा दान सतगुर गिआन मन चाउ न हुटै॥
सतिवंत हर नाम मंत्र नव निध न निखुटै॥

भट्ट कल्य, आदि ग्रन्थ, पृ.1407

4.5. सिमरन, ध्यान और मन को स्थिर करने से

प्रभ कै सिमरन रिध सिध नउ निध॥
प्रभ कै सिमरन गिआन धिआन तत बुध॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.262

नानक गुर संतोख रुख धरम फुल फल गिआन॥
रस रसिआ हरिआ सदा पकै करम धिआन॥
पत के साद खादा लहै दाना कै सिर दान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.147

गिआन अंजन भै भंजना देख निरंजन भाए॥
गुपत प्रगट सभ जाणीऐ जे मन राखै ठाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ., 57

मन मंदर जे दीपक जाले काइआ सेज करेई॥
गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोग करेई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.359

5. ज्ञान किसी बिरले को मिलता है

जग खोटौ सच निरमलौ गुर सबदीं वीचार॥
ते नर विरले जाणीअह जिन अंतर गिआन मुरार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1331

6. ज्ञान किस प्रकार गुम हो जाता है?

काम क्रोध अहंकार मूठा खोए गिआन पछुतापिआ॥
बिनवंत नानक संजोग भूला हर जाप रसन न जापिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.546

7. ज्ञान के फल

7.1. भूख यानी तृष्णा नहीं रहती

मन बैरागी घर वसै सच भै राता होए॥
गिआन महा रस भोगवै बाहुड़ भूख न होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.21

7.2. जीव पवित्र हो जाता है

जिनी सचा मंनिआ तिन मन सच धिआन॥
मन मुख सूचे जाणीअह गुरमुख जिना गिआन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.55

पावन पतित पुनीत नाम निरंजना॥
भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.456

जल मल काइआ माजीऐ भाई भी मैला तन होए॥
गिआन महा रस नाईऐ भाई मन तन निरमल होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.637

7.3. दिव्य-दृष्टि खुल जाती है

गिआन अंजन भै भंजना देख निरंजन भाए॥
गुपत प्रगट प्रभ जाणीऐ जे मन राखै ठाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.57

सचा नेह न तुटई जे सतगुर भेटै सोए॥
गिआन पदारथ पाईऐ त्रिभवण सोझी होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.60

7.4. ज्ञान द्वारा मन मग्न हो जाता है

ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहो कबीर रंग राता॥
अउर दुनी सभ भरम भुलानी मन राम रसाइन माता॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 92

7.5. सब कर्मों का नाश होता है

फल कारन फूली बनराए॥ फल लागा तब फूल बिलाए॥
गिआनै कारन करम अभिआस॥ गिआन भइआ तह करमह नास॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1167

7.6. जहाँ ज्ञान है, वहाँ धर्म है

कबीरा जहा गिआन तह धरम है जहा झूठ तह पाप॥
जहा लोभ तह काल है जहा खिमा तह आप॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1372

7.7. ज्ञान द्वारा ही मन वश में आता है

इह मनूआ किउ कर वस आवै॥
गुर परसादी ठाकीऐ गिआन मती घर आवै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 426

7.8. मन शीतल होता है

कबीर मन सीतल भइआ पाइआ ब्रहम गिआन॥
जिन जुआला जग जारिआ सो जन के उदक समान॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1373

7.9. ज्ञान द्वारा हौमैं का नाश होता है

जलत अनिक तरंग माइआ गुर गिआन हर रिद मंत॥
छेद अहंबुध करुणा मै चिंत मेट पुरख अनंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 508

करम पेड साखा हरी धरम फुल फल गिआन॥
पत परापत छाव घणी चूका मन अभिमान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1168

पंच तसकर धावत राखे चूका मन अभिमान॥
दिसटि बिकारी दुरमत भागी ऐसा ब्रहम गिआन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1329

7.10. सब दु:खों और पापों का नाश होता है

अंतर बाहर संग सहाई गिआन जोग॥
तिसह अराध मना बिनासै सगल रोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 398

जनम जनम के किलविख दुख भागे गुर गिआन अंजन नेत्र दीत॥
साधसंग इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 673

गुरमुख वेखण बोलणा नाम जपत सुख पाइआ॥
नानक गुरमुख गिआन प्रगासिआ तिमर अगिआन अंधेर चुकाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 852

कर किरपा किलविख कटे गिआन अंजन सारिआ॥
अंदरहो जिन का मोह तुटा तिन का सबद सचै सवारिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

दाना तू बीना तुही दाना कै सिर दान॥
दालद भंजन दुख दलण गुरमुख गिआन धिआन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 934

गारुड़ गुर गिआन धिआन गुर बचनी बिखिआ गुरमत जारी॥
मन तन हेंव भए सच पाइआ हर की भगति निरारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1274

गिआन धिआन मान दान मन रसिक रसन नाम जपत तह पाप खंडली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1322

7.11. ज्ञानी महारस भोगता है

अंतर गिआन महा रस सारा॥ तीरथ मजन गुर वीचारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 411

अंम्रित गिआन महा रस भोग॥ पंच समाई सुखी सभ लोग॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.414

चंदन वास भुइअंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदन लीजै॥
काढ खड़ग गुर गिआन करारा बिख छेद छेद रस पीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1324

7.12. घर में ही उदास रहता है

जागत रहे तिनी प्रभ पाइआ सबदे हउमै मारी॥
गिरही मह सदा हर जन उदासी गिआन तत बीचारी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 599

7.13. ज्ञान पाकर मनुष्य मुक्त और निर्भय होता है

बंधन तोरे सहज धिआन॥ छूटै गुरमुख हर गुर गिआन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.416

गिआन प्रवेस गुरह धन दीआ धिआन मान मन एक मए॥
प्रेम भगति मानी सुख जानिआ त्रिपत अघाने मुकत भए॥

भक्त धंना, आदि ग्रन्थ, पृ. 487

जत कता तत पेखीऐ हर पुरख पत परधान॥
साधसंग भ्रम भै मिटे कथे नानक ब्रहम गिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1322

7.14. यम को जीत लेता है

संसार सफल गंगा गुर दरसन परसन परम पवित्र गते॥
जीतह जम लोक पतित जे प्राणी हर जन सिव गुर ग्यान रते॥

भट्ट गयंद, आदि ग्रन्थ, पृ. 1401

7.15. ज्योति प्रकट होती है

मत प्रगास भई हर धिआइआ गिआन तत लिव लाए॥
अंतर जोत प्रगटी मन मानिआ हर सहज समाध लगाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

7.16. जन्म-जन्म का सोया हुआ जीव जाग उठता है

कहत नानक जन जागै सोए॥ गिआन अंजन जा की नेत्री होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1128

7.17. ज्ञान द्वारा मालिक मिलता है और सहज अवस्था प्राप्त होती है

बिख माइआ चित मोहिआ भाई चतुराई पत खोए॥
चित मह ठाकुर सच वसै भाई जे गुर गिआन समोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 637

कटीऐ जम फासी सिमर अबिनासी सगल मंगल सुगिआना॥
हर हर जप जपीऐ दिन राती लागै सहज धिआना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 781

अगिआन का भ्रम कटीऐ गिआन परापत होए॥
नानक एको नदरी आइआ जह देखा तह सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 947

गुर गिआन अर धिआन तत सिउ तत मिलावै॥
सच सच जाणीऐ इक चितह लिव लावै॥

भट्ट भिक्खा, आदि ग्रन्थ, पृ. 1395

8. ज्ञानहीन की दशा

जिन कउ अंदर गिआन नही भै की नाही बिंद॥
नानक मुइआ का किआ मारणा जे आप मारे गोविंद॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1093

आपे आप मिलै ता बूझै॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1044

अंतर गिआन न आइओ जित किछ सोझी पाए॥
विण डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंध कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 646

हउ विच माइआ हउ विच छाइआ॥ हउमै कर कर जंत उपाइआ॥
हउमै बूझै ता दर सूझै॥ गिआन विहूणा कथ कथ लूझै॥
नानक हुकमी लिखीऐ लेख॥ जेहा वेखह तेहा वेख॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 466

9. फुटकर

प्रेम पलीता सुरत हवाई गोला गिआन चलाइआ॥
ब्रहम अगन सहजे परजाली एकह चोट सिझाइआ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1161

अक्षर

गुरवाणी में अक्षर की बड़ी महिमा की गई है।

इस अक्षर को 'एक अक्षर' और 'दो अक्षर' कहकर भी वर्णन किया गया है, यह संपूर्ण जगत का बनानेवाला है। महात्मा मदन साहिब (देखें: नाम प्रकाश) दो अक्षर के बारे में फ़रमाते हैं:

सोई गुरु पूरा कहलावै। दुइ अक्षर का भेद लखावै॥
एक छुड़ावै एक मिलावै। तब निःशंक निज घर पहुँचावे॥

नाम प्रकाश, पृ. 18

वेद, पुराण और सब पुस्तकें बावन (52)* अक्षरों का पसारा हैं और वे सब एक अक्षर के अंदर हैं। उनके पढ़ने से जीव की मुक्ति नहीं। इस एक अक्षर – सच्चे अक्षर या सुधाक्षर को जाने बिना जीव संसार चक्र में ही रहता है। इस अक्षर को जो जान लेता है वह मालिक के चरणों में पहुँचने के क़ाबिल हो जाता है। यह अक्षर पुरुष अनहद शब्द द्वारा त्रिलोकी को बनानेवाला है जो प्रलय में नष्ट हो जाती है। वेद और शास्त्र अक्षर पुरुष तक का वर्णन करते हैं। अक्षर तक का उल्लेख गीता में भी मिलता है:

---

* संस्कृत के 52 अक्षर हैं जो छः चक्रों के कमलों से निकले हैं, इसलिए इनको देववाणी कहा गया है। इनका विवरण इस प्रकार है:

चक्रों के नाम	कमल दल की संख्या	धनी, स्वामी
(1) मूलाधार	4 दल	गणेश
(2) स्वाधिष्ठान या इन्द्रिय चक्र	6 दल	ब्रह्मा
(3) मणिपूरक या नाभि चक्र	8 दल	विष्णु
(4) अनाहत या हृदय चक्र	12 दल	शिव
(5) विशुद्ध या कण्ठ चक्र	16 दल	शक्ति
(6) आज्ञा चक्र	2 दल	मन और आत्मा
(7) अंतःकरण	4 दल	—

इस रचना में 'क्षर' और 'अक्षर' दो पुरुष हैं, नाशवान् क्षर और कूटस्थ अव्यक्त तत्त्व 'अक्षर' है", यानी इनमें जो नाशवान् है उसे क्षर कहते हैं, पर जो कूटस्थ है (सबका मूल है) और प्रकृति का अव्यक्त तत्त्व है, वह अक्षर कहलाता है। परंतु 'पुरुषोत्तम' इन दोनों से भिन्न है और परमात्मा उसी को कहते हैं और वही अव्यय (अविनाशी) त्रिलोकी में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है।

गीता, 15:16-17

जो जन अनिर्देश्य (जो वर्णन से परे है), अदृश्य (प्रत्यक्ष नहीं दिखनेवाले), अव्यक्त, सर्वव्यापी, अचिंत्य (चिंतन की गम्यता से परे), कूटस्थ (अपरिवर्तनशील), अचल और नित्य (सनातन) अक्षर-पुरुष का सब इंद्रियों को रोककर समबुद्धि द्वारा, ध्यान करते हैं, ऐसे सबका हित चाहनेवाले प्राणी मुझे प्राप्त कर लेते हैं।

गीता, 12:3-4

सार शब्द, सतलोक से त्रिलोकी के बीच के देशों का बनानेवाला है, जो महाप्रलय में नष्ट हो जाते हैं और जिनका धनी (स्वामी) नि:अक्षर पुरुष है। वास्तविक सत मुक़ाम इनसे परे है, वह संतों का निजघर है। यह अक्षर पुरुष मालिक तक पहुँचने का साधन है।

कई संतों ने इस ताक़त का इस प्रकार वर्णन किया है:

क्षर–स्थूल संसार

अक्षर–त्रिलोकी का बनानेवाला

नि:अक्षर–ऊपर के चेतन देश जो महाप्रलय के दायरे में हैं और उनसे परे जो सतलोक है।

सारबचन में भी इसके संबंध में उल्लेख किया गया है:

क्षर अक्षर नि:अक्षर पारा। बिनती करे जहाँ दास तुम्हारा॥

सारबचन संग्रह, 7:1:10

इन गूढ़ भेदों की चर्चा संतों की वाणियों में आती है, जिसकी समझ शब्द की कमाईवाले पुरुषों की संगति से प्राप्त होती है।

आगे आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण दिए जा रहे हैं।

ੴ

गुरवाणी

1. अक्षर उस मालिक से प्रकट हुआ है

अखर नानक अखिओ आप॥ लहै भरात होवै जिस दात॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 150

2. अक्षर से सब जगत बना है

अखर मह त्रिभवन प्रभ धारे॥ अखर कर कर बेद बीचारे॥
अखर सासत्र सिंम्रिति पुराना॥ अखर नाद कथन वख्याना॥
अखर मुकत जुगत भै भरमा॥ अखर करम किरत सुच धरमा॥
द्रिसटिमान अखर है जेता॥ नानक पारब्रहम निरलेपा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

अखर बिरख बाग भुए चोखी सिंचित भाउ करेही॥
सभना फल लागै नाम एको बिन करमा कैसे लेही॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 354

3. अक्षर सदा अटल है

बावन अछर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहे॥
ए अखर खिर जाहिगे ओए अखर इन मह नाहे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 340

बावन अक्षरों में उलझा हुआ जीव एक अक्षर को नहीं पहचानता:

बावन अखर जोरे आन॥ सकिआ न अखर एक पछान॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 343

4. वेद, पुराण आदि सब अक्षर के अंदर हैं, इस 'इक अक्षर' के जाने बिना जीव की मुक्ति नहीं

नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर* मांही॥
बिआस बिचार कहिओ परमारथ राम नाम सर नाही॥

गुरु रविदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 658

* चउतीस अखर=चौंतीस अक्षरी हिंदी भाषा के 34 व्यंजन हैं, 16 स्वर हैं और 2 गुण हैं। इस प्रकार कुल बावन अक्षर हैं।

बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर॥ कीने राम नाम इक आख्यर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 262

बेद कतेब सिम्रिति सभ सासत इन्ह पड़िआ मुकत न होई॥
एक अखर जो गुरमुख जापै तिस की निरमल सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747

होवा पंडित जोतकी वेद पड़ा मुख चार॥
नव खंड मधे पूजीआ अपणै चज वीचार॥
मत सचा अखर भुल जाए चउकै भिटै न कोए॥
झूठे चउके नानका सचा एको सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1090

5. मालिक की प्राप्ति का साधन अक्षर है

सिध साधिक जोगी अर जंगम एक सिध जिनी धिआइआ॥
परसत पैर सिझत ते सुआमी अखर जिन कउ आइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 878

चतुर बेद मुख बचनी उचरै आगै महल न पाईऐ॥
बूझै नाही एकु सुधाखर ओह सगली झाख झखाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 216

6. अक्षर का विवरण

किउ मरै मंदा किउ जीवै जुगत॥ कंन पड़ाए किआ खाजै भुगत॥
आसत नासत एको नाउ॥ कउण सो अखर जित रहै हिआउ॥
धूप छाव जे सम कर सहै॥ ता नानक आखै गुर को कहै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 953

मेरे साहिबा हउ आपे भरम भुलाणी॥
अखर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

साजन मीत सखा कर एक॥ हर हर अखर मन मह लेख॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 192

6.1. एक अक्षर*

अवर सभ भूले भ्रमत न जानिआ॥
एक सुधाखर जा कै हिरदै वसिआ तिन बेदह तत पछानिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1205

बूझै नाही एक सुधाखर ओह सगली झाख झखाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 216

आए प्रभ सरनागती किरपा निध दइआल॥
एक अखर हर मन बसत नानक होत निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर॥ कीने राम नाम इक आख्यर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 262

बेद कतेब सिम्रिति सभ सासत इन्ह पड़िआ मुकत न होई॥
एक अखर जो गुरमुख जापै तिस की निरमल सोई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 747

6.2. दो अक्षर

कबीर परभाते तारे खिसह तिउ इह खिसै सरीर॥
ए दुए अखर ना खिसह सो गह रहिओ कबीर॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1373

जे तूं पड़िआ पंडित बीना दुए अखर दुए नावा॥
प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच समावां॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

कहो कबीर अखर दुए भाख॥ होइगा खसम त लेइगा राख॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 329

---

* इसका ज़िक्र भाई गुरुदास जी ने किया है:
लक्ख लक्ख ब्रहमें वेद पढ़ इक्कस अक्खर भेद न जाता। (वारां भाई गुरदास, 18:13)

हर हर अखर दुए एह माला॥ जपत जपत भए दीन दइआला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 388

6.3. बावन अक्षर

कबीर संसा दूर कर कागद देह बिहाए॥
बावन अखर सोध कै हर चरनी चित लाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1373

चरण कमल

गुरवाणी में इस विषय पर कई प्रकार के शब्द मिलते हैं:

चरन पखार करउ गुर सेवा मनह चरावउ भोग॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 713

सुण मन भूले बावरे गुर की चरणी लाग॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 57

गुर के चरण धोए धोए पीवा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

गुर के चरन हिरदै वसाए॥ मन चिंतत सगले फल पाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 395

इन सब कथनों का क्या भाव है? हम लोग इन पदों से क्या समझ सकते हैं? वे चरण कौन-से हैं जिनसे हमें जुड़ना है, जिनको धो-धोकर पीना है और उन चरणों से क्या भाव है, जिनको हृदय में धारण करने से मनोवांछित फल मिल सकता है? कई सज्जन इसका यह उत्तर देंगे कि दूसरी पातशाही ने गुरु नानक साहिब के लिए और तीसरी पातशाही ने दूसरी के लिए और चौथी ने तीसरी के लिए और पाँचवीं ने चौथी के लिए इस पद का प्रयोग किया है। पर गुरु नानक साहिब ने भी अपनी वाणी में इस पद का प्रयोग किया है। उन्होंने किसके लिए इसका प्रयोग किया? इसलिए आदि ग्रन्थ का पाठ केवल इसी खोज के लिए किया गया और इस बारे में सारे शब्द नोट कर लिए गए, जिनका पूर्ण विचार पाठकों के सामने रखा जा रहा है, यह ध्यानपूर्वक विचार करने योग्य है।

गुरवाणी में चरण कमल के लिए इस प्रकार के शब्द मिलते हैं:

1. प्रत्यक्ष गुरु के चरणों में लगने का उपदेश

परमार्थ में प्रत्यक्ष गुरु की आवश्यकता है: (देखें: 'गुरु' का प्रकरण)

बिन गुर दाते कोए न पाए॥ लख कोटी जे करम कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं कि जीव को चतुराइयाँ छोड़कर गुरु के चरणों में आना चाहिए:

सभ सिआणपा छड कै गुर की चरणी पाहो॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 44

गुरु साहिब साफ़-साफ़ कहते हैं कि गुरु के चरणों में लगने से और दर्शन व दीदार से उनका तात्पर्य केवल प्रत्यक्ष गुरु के चरणों में लगने और उनके दर्शन व दीदार से ही है और किसी से नहीं:

साधू की होह रेणुका अपणा आप तिआग॥
उपाव सिआणप सगल छड गुर की चरणी लाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 45

उकत सिआणप सगली तिआग॥ संत जना की चरणी लाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

गुरु के चरणों में लगने या उनको पाने का स्पष्ट अर्थ उनसे मिलने और उनकी शरण में आने का है। इसी प्रकार बार-बार हरि के दास, साध या गुरु के चरणों को नमस्कार करने, उनकी संगति करते हुए उनके चरणों में चित्त लगाने और उन पर बलिहारी जाने का उपदेश मिलता है:

हर के दास के चरण नमसकारहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 191

कर संगत नित साध की गुर चरणी चित लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 47

धन सो वेला जित दरसन करणा॥ हउ बलिहारी सतगुर चरणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 562

पेख पेख जीवा दरस तुम्हारा॥ चरण कमल जाई बलिहारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 743

प्रत्यक्ष गुरु के चरणों को हरि के नाम का तीर्थ कहकर भी वर्णन किया गया है, जिनकी सेवा द्वारा जीव आगे प्रभु के द्वार पर स्वीकृत होता है और शरण विहीनों को शरण मिलती है:

संत जनहो सुण भाईहो छूटन साचै नाए॥
गुर के चरण सरेवणे तीरथ हर का नाउ॥
आगै दरगह मंनीअह मिलै निथावे थाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52–53

फिर गुरु चरणों के रस का वर्णन करते हैं कि वह अति मीठा है, बड़े भाग्य से किसी को परमेश्वर यह रस प्रदान करता है। गुरु के दर्शनों से करोड़ों ही फल मिलते हैं:

माई चरन गुर मीठे॥
वडै भाग देवै परमेसर कोट फला दरसन गुर डीठे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

प्रत्यक्ष गुरु के द्वार पर आने का और उनके चरणों को धोकर पीने का भी गुरु साहिबान वर्णन करते हैं:

गुर के चरण धोए धोए पीवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

सिमर सिमर सिमर नाम जीवा तन मन होए निहाला॥
चरण कमल तेरे धोए धोए पीवा मेरे सतगुर दीन दइआला॥
कुरबाण जाई उस वेला सुहावी जित तुमरै दुआरै आइआ॥
नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतगुर पूरा पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

प्रत्यक्ष गुरु चरणों तक पहुँच और उनकी प्राप्ति किसी बड़े ही भाग्यशाली को होती है:

कहो नानक ता के पूर करंमा जा का गुर चरनी मन लागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 614

कहो नानक जे होवी भाग॥ मान छोड गुर चरणी लाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 372

कहो नानक भला मेरा करम॥ जित भेटे साधू के चरन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 191

गुरु चरणों तक रसाई और उनकी सेवा में लगने का सौभाग्यपूर्ण अवसर मालिक की कृपा द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। मालिक की दया से ही उनके चरणों की प्रीति मन में बस सकती है:

प्रभ बांह पकराई ऊतम मत पाई गुर चरणी जन लागा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446-47

जिस क्रिपा करे प्रभ आपणी तिस सतगुर के चरण धोइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

कीनी दइआ गोपाल गुसाई॥ गुर के चरण वसे मन माही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107

वह दिन शुभ है जब जीव गुरु के चरण कमलों में लगता है, वह मस्तक धन्य है और वह दाढ़ी सच्ची है, जो गुरु के चरण कमलों का स्पर्श करती है:

नेत्र पुनीत पेखत ही दरस॥ धन मसतक चरन कमल ही परस॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 201

चचा चरन कमल गुर लागा॥ धन धन उआ दिन संजोग सभागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 254

से दाड़ीआं सचीआ जे गुर चरनी लगंन्ह॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1419

भाई गुरदास जी* भी गुरु चरण-शरण में आने के बारे में इस प्रकार फ़रमाते हैं:

चिरंकाल मानस जनम निरमोल पाए, सफल जनम गुरु चरन सरन कै॥
लोचन अमोल गुर दरस अमोल देखे, स्रवन अमोल गुरु बचन धरन कै॥
नासिका अमोल चरनारबिंद बासना कै, रसना अमोल गुरु मंत्र सिमरन कै॥
हसत अमोल गुरुदेव सेव कै सफल, चरन अमोल परदच्छना करन कै॥

कबित्त-सवैये, 17

चरन सरन गुरु तीरथ पुरब कोटि, देवी देव सेव गुरु चरन सरन है।
चरन सरन गुरु कामना सफल फल, ऋद्धि सिद्धि निधि अवतार अमरन है॥
चरन सरन गुरु नाम निहकाम धाम, भगति जुगति कर तारन तरन है।
चरन सरन गुरु महिमा अगाध बोध, हरन भरन गति कारन करन है॥

कबित्त-सवैये, 38, 72

जब ते परम गुरु चरन सरनि आए, चरण सरनि लिव सकल संसार है।
चरन कमल मकरंद चरणामृत कै, चाहत चरन रेनु सकल आकार है॥
चरन कमल सुख संपट सहज घरि, निहचल मति परमारथ बीचार है।
चरन कमल गुरु महिमा अगाध बोध, नेति नेति नमो नमो कै नमसकार है॥

कबित्त-सवैये, 217

प्रत्यक्ष गुरु की चरण शरण में आने के अनेक फलों का गुरवाणी में वर्णन किया गया है। दु:ख, दर्द और संकट दूर होते हैं, काम, क्रोध, लोभ आदि विकार छूट जाते हैं, मन-तन निर्मल होता है, जीव सुख प्राप्त करता है, सब धंधे बिसर जाते हैं, जम का भय दूर हो जाता है, जीव भवसागर से पार हो जाता है, निरंतर भक्ति और नाम की प्राप्ति होती है, हृदय कमल विकसित हो जाता है, जीव जाग उठता है, हरि मन में बस जाता है और सब जगह वही नज़र आता है, जीव को सुख, आनंद, सहज गति और परम पद की प्राप्ति होती है। गुरवाणी में इतने

* पुस्तक में भाई गुरदास के कबित्त-सवैये, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर द्वारा प्रकाशित हिंदी पुस्तक के अनुसार हैं।

अनमोल फल हासिल करने के लिए गुरु चरणों की प्राप्ति के लिए प्रार्थना के अनेक शब्द मिलते हैं, जिसके प्रमाण आगे दिए गए हैं।

2. अंतर्मुख गुरु चरणों को धारण करने का उपदेश

प्रत्यक्ष गुरु तन के पिंजरे के अंदर क़ैद नहीं, उसकी रसाई ऊपर के मंडलों में भी है (देखें 'गुरु' का प्रकरण), उसके स्वरूप का ध्यान (देखें: 'ध्यान' का प्रकरण) परमार्थ में दूसरी सीढ़ी है। जब सिमरन द्वारा रूह सिमटकर ऊपर के मंडलों में जाती है तब वह स्वरूप के ध्यान के आसरे ही वहाँ ठहर सकती है। इसलिए गुरवाणी गुरु चरणों को अंतर्मुख धारण करने का दृढ़ उपदेश देती है:

गुर के चरन हिरदै वसाए॥ मन चिंतत सगले फल पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 395

गुर के चरण हिरदै वसाए॥ दुख दुसमन तेरी हतै बलाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 190

गुर के चरण रिदै उर धार॥ अगन सागर जप उतरह पार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 192

क्या चरण गुरु के स्वरूप से भिन्न हैं? कदापि नहीं। गुरु स्वरूप के ध्यान में चरणों का ध्यान भी आ जाता है। जब चरण अंतर में प्रकट होते हैं तब पूरी मूरत स्वाभाविक ही हृदय के अंदर प्रकट हो जाती है। शिष्य गुरु चरणों का अंतर्मुख ध्यान करते रहे हैं। कहा जाता है कि काबुल में बैठे हुए शिष्य (भाई गोंदा जी*) ने गुरु हरि राय साहिब जी (सातवीं पातशाही) के चरण कमलों का ध्यान करके चार पहर सुबह से लेकर शाम तक उन्हें नहीं हिलने दिया और गुरु साहिब अडोल अपने सिंहासन पर कीरतपुर में विराजमान रहे। हम गुरु के ऐसे शिष्यों की चरण धूलि के याचक हैं जिनके अंतर में गुरु के चरण कमल प्रकट हैं और जो उस रस का आनंद ले रहे हैं। हम गुरु के चरण कमलों के भँवरे हैं और उस देह पर बलिहारी जाते हैं जिसके अंदर वे प्रकट हैं।

आंतरिक मंडलों पर गुरु का स्वरूप और उनके चरण अति प्रकाशमान हैं. गुरु चरणों के नख के प्रकाश के बारे में गोस्वामी तुलसीदास जी इस प्रकार वर्णन करते हैं:

---

* सूरज प्रकाश, भाई सन्तोख सिंह कृत (1935, पृ. 3561)।

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥

श्रीरामचरितमानस, 1:0:3

जब उनका दर्शन अंतर में प्रकट होता है, तब दिव्य-दृष्टि खुल जाती है, हज़रत मुल्लां हुसैन काशिफ़ी भी फ़रमाते हैं:

पीरे किह् चूँ दर दिलत नशीनद, हाले-अज़लो-अबद ब बीनद।

किताब-उल-बैअत, पृ.5

अर्थात् जब गुरु तुम्हारे हृदय में प्रकट होता है तो तुम्हें आदि, मध्य और अंत का सारा ज्ञान हो जाता है। ऐसे शिष्य अपने अंदर स्वरूप में लवलीन होकर फ़ना-फ़ि-शैख़ (अपनी हस्ती को मिटाकर मुर्शिद में लीन हो जाना) की पदवी पा लेते हैं। भाई गुरदास जी इस प्रकार फ़रमाते हैं:

दरस धिआन दिब्ब दृसटि प्रगास भई, करुणा कटाच्छ दिब्ब देहि परवान है॥
सबद सुरति लिव बज्जर कपाट खुले, प्रेम रस रसन कै अमृत निधान है॥
चरन कमल मकरंद बासना सुबासु, हसत पूजा प्रनाम सफल सुज्ञान है॥
अंग अंग बिसम सबंर्ग में समाइ भए, मन मनसा थकित ब्रह्म धिआन है॥

कबित्त-सवैये, 18

चरन कमल गुरु जब ते रिदै बसाए, तब ते सथिर चित्त अनत न धावई।
चरन कमल मकरंद चरणामृत कै, प्रापति अमरपद सहज समावई॥
चरन कमल गुरु जब ते ध्यान धारे, आन ज्ञान ध्यान सरबंग बिसरावई।
चरन कमल गुरु मधुप कमल गति, मन मनसा थकित निज गृह आवई॥

कबित्त-सवैये, 218

गुरु का यह नूरी (ज्योतिर्मय) स्वरूप मस्तक पर प्रकट होता है। जब रूह सिमरन द्वारा सिमटकर आँखों के पीछे, इकट्ठी हो जाती है, जिसे संतजन हृदय कहते हैं, तब इस स्वरूप के दर्शन होते हैं। जब तक यह स्वरूप घट में प्रकट नहीं होता, तब तक परमात्मा का मिलाप असंभव है। सबसे पहले गुरु का स्वरूप आता है और बाद में मालिक आता है। यह स्वरूप सदा शिष्य के अंग-संग रहता है और शिष्य को ऊपरी आत्मिक मंडलों में ले जाता है और तीनों गुणों के पार चौथे लोक में पहुँचाकर मालिक की गोद में बिठा देता है:

गुर के चरण ऊपर मेरे माथे॥ ता ते दुख मेरे सगले लाथे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.187

सफल मूरत गुर मेरै माथै॥ जत कत पेखउ तत तत साथै॥
चरन कमल मेरे प्रान अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.535

जिस हृदय के अंदर हरिभक्त के चरण बसे हुए हैं वह हृदय पवित्र है:

जन के चरन वसह मेरै हीअरै संग पुनीता देही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.680

जिन पर प्रभु कृपा करे उन्हें ही इस अनुपम गुरुदेव के चरण कमलों का रंग चढ़ जाता है:

चरन कमल सिउ रंग लगा अचरज गुरदेव॥
जा कउ किरपा करहो प्रभ ता कउ लावहो सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.814

संतजन हरि से प्रीति करके गुरुदेव के चरण कमलों को पूजते हैं:

चरन कमल गुरदेव पिआरे॥ पूजह संत हर प्रीत पिआरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.394

जो हरि के रूप हैं उनका दर्शन सुंदर है, उनके चरण अनुपम हैं, उनकी हम बार-बार वंदना करते हैं और मन ही मन उनके सम्मुख धूप जलाते हैं:

चरन कमल जा के अनूप॥ सफल दरसन सुंदर हर रूप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.293

सफल दरसन तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप॥
अनिक बार करउ तिह बंदन मनह चर्हावउ धूप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.701

चरन कमल हिरदै उर धारे॥ तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.563

३. प्रभु या हरि के चरण कमलों और नाम की प्राप्ति का उपदेश

गुरवाणी में हरि के चरणों में लगने (उनकी शरण में आने) और मन में उनका ध्यान करने के बारे में कई पद मिलते हैं:

हर चरणी तूं लाग रहो गुर सबद सोझी होई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 492

हर चरन कमल सरनाए मना॥
राम नाम जप संग सहाई गुरमुख पावह साच धना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 899

हर के चरन कमल मन धिआउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 714

गुरवाणी में 'हरि के चरण कमल' और केवल 'चरण कमल' के पदों का लगभग एक ही अर्थ में प्रयोग किया गया है। चरण कमल क्या हैं? गुरवाणी बड़े स्पष्ट रूप में कहती है कि 'यह राम की धुन है', यही स्वामी के अनुपम चरण कमल हैं, जिसके जाप से मनुष्य साधु बन जाता है, अर्थात् वह तीनों गुणों के पार हो जाता है:

नीकी राम की धुन सोए॥ चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1228

यह उस सहज की धुन का दूसरा नाम है, जो साधु की संगति से उपजती है:

सांत सूख सहज धुन उपजी साधू संग निवासा जीउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 105

चरण कमलों का प्रकट होना 'नाम' यानी 'शब्द' का प्रकट होना है:

राम रसाइण जो जन गीधे॥ चरन कमल प्रेम भगती बीधे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

बंधन तोड़ चरन कमल द्रिड़ाए एक सबद लिव लाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

हिरदै चरण सबद सतगुर को नानक बांधिओ पाल॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 680

गुरुमत के अनुसार नाम की आराधना मालिक के चरण कमलों की आराधना है और जो नाम के रंग में मस्त रहते हैं वे चरण कमलों के रस में ही मग्न हैं:

चरण कमल नानक रंग राते हर दासह पैज रखाईऐ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 500

जब अभ्यास द्वारा हृदय के अंदर ज्योति प्रकट होती है तब उसे भी चरण कमल का प्रकट होना माना गया है:

चरण कमल रिद अंतर धारे॥ प्रगटी जोत मिले राम पिआरे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 375

यह नाम की ज्योति का प्रकाश करनेवाला स्रोत है। गुरवाणी यह स्पष्ट कहती है कि नाम का सिमरन और जप ही चरण कमल का सिमरन और जप है:

चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्र रिदै चितार॥
चरण सरण भज संग साधू भव सागर उतरह पार॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1006-07

चरण कमलों की मौज अंत और आदि है:

चरन कमल की मउज मह रहउ अंत अर आद॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1370

चरण कमलों का अनुमान नहीं हो सकता है। चरण कमलों की मौज अकथनीय है, यह केवल अनुभव से संबंध रखती है:

कबीर चरन कमल की मउज को कहे कैसे उनमान॥
कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवान॥
कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1370

चरण कमलों को इस प्रकार हृदय के अंदर सदा बसाए रखना हमारे जीवन का आसरा और आधार बन जाता है, यह हमेशा हमारी सहायता करता है:

चरण कमल जन का आधारो॥ आठ पहर राम नाम वापारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107

चरन कमल अधार जन का रास पूंजी एक॥
ताण माण दीबाण साचा नानक की प्रभ टेक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 675-76

मीत सखा सहाए संगी ऊच अगम अपार॥
चरण कमल बसाए हिरदै जीअ को आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतास॥
कीरतन नाम सिमरत रहउ जब लग घट सास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 818

चरण कमल संसार सागर को पार करने के लिए जहाज़ हैं

तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहो अपुनी भाते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पार लघाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 577

बोहिथड़ा हर चरण मन चड़ लंघीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 398

ये चरण कमल हृदय में हैं और मन-तन में इनका निवास है:

स्रवणी कीरतन सिमरन सुआमी इह साध को आचार॥
चरन कमल असथित रिद अंतर पूजा प्रान को आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1222

चरन कमल बसिआ रिद भीतर सास गिरास उचारिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 534

चरण कमलों के संग वह लगता है जिसे मालिक आप लगाए:

सभ परोई इकत धागै॥ जिस लाए लए सो चरणी लागै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 108

कर किरपा प्रभ नदर अवलोकन अपुनै चरण लगाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 384

चरण कमलों की संपदा सतगुरु स्वयं प्रदान करते हैं और उन्हें वे आप ही प्रकट करते हैं:

चरण कमल सिउ लागो मान॥ सतगुर तूठै कीनो दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 376

हउ वल वल वल वल चरन कमल कउ वल वल गुर दरसाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212

चरण कमल गुर धन दीआ मिलिआ निथावें थाउ।

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 48

साध-संगत के द्वारा चरण कमल मन में निवास करते हैं:

साधसंग होआ परगास॥ चरन कमल मन माहे निवास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

ये चरण कमल अंतर में किस प्रकार बसते हैं? हरि का सिमरन करने से चरण कमल मन में प्रवेश करते हैं:

हर सिमरत सभ मिटह कलेस॥ चरण कमल मन मह परवेस॥
उचरहो राम नाम लख बारी॥ अंम्रित रस पीवहो प्रभ पिआरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 194

साधसंगम गुण गावह हर के रतन जनम नही हारिओ॥
प्रभ गुन गाए बिखै बन तरिआ कुलह समूह उधारिओ॥
चरन कमल बसिआ रिद भीतर सास गिरास उचारिओ॥
नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 534

सिमरन करते-करते जब मन-इंद्रियाँ स्थिर हो जाती हैं तब रूह शरीर को छोड़कर ऊपर आ जाती है और ये चरण कमल (जो नाम है) हृदय में प्रकट हो जाते हैं। अंतर्मुख नाम की धुन के रस में सुरत के लवलीन हो जाने पर वह परमात्मा एक पल के लिए भी नहीं भूलता, उसके साथ एक तरह की गाँठ बँध जाती है और अभ्यासी की वृत्ति उस धुन में मस्त होकर इतनी अडोल हो जाती है कि वह अन्य सब रस भूल जाता है:

महा नाद कुरंक मोहिओ बेध तीखन सरी॥
प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठ बाध धरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1121

ये चरण कमल अनुपम हैं, कोई बिरला साधु ही भाग्य से इनसे जुड़ता है। ये भक्तों के मन में प्रकट होते हैं:

चरन कमल आनूप हर संत मंत॥ कोऊ लागै साधू॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 380

चरन कमल भगतां मन वुठे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 109

इन चरणों की प्राप्ति में सब जप-तप, तीर्थ और कर्म-धर्म आ जाते हैं:

चरण भजे पारब्रहम के सभ जप तप तिन ही कीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 48

✓ *प्रभ के चरन मन माहे धिआन॥ सगल तीरथ मजन इसनान॥*

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 195

हर नाम लीजै अमिउ पीजै रैण दिनस अराधीऐ॥
जोग दान अनेक किरिआ लग चरण कमलह साधीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

भाई गुरदास जी चरण कमलों की महिमा और उनकी प्राप्ति के फल का अनुपम ढंग से वर्णन करते हैं:

चरन कमल को महातम अगाध बोध, अति असचरज मय नमो नमो नम है।
कोमल कोमलता औ सीतल सीतलता कै,
बासना सुबास तास दुतिया न सम है॥
सहज समाधि निज आसन सिंहासन मै, स्वाद विसमाद रस गंम्यता अगम है।
रूप कै अनूप रूप मन मनसा थकित, अकथ कथा विनोद विसमै विसम है॥

कवित्त-सवैये, 46, 80

चरन कमल भज कमल प्रगास भए, दरस दरस सम-दरस दिखाए हैं।
सबद सुरति अनहद लिवलीन भए, उन मन मगन गगन पुर छाए हैं॥
प्रेम रस बस होइ बिसम बिदेह भए, अति असचरज मय हेरत हिराए हैं।
गुरमुखि सुखफल महिमा अगाध बोध, अकथ कथा बिनोद कहत न आए हैं॥

कवित्त-सवैये, 33

चरन कमल मकरंद रस लुभित है, सहज समाधि सुख संपट समाने हैं।
भयजल भयानक लहर न ब्याप सकै, दुबिधा निवार एक टेक ठहराने हैं॥
दृसटि सबद सुरति बरज बिसर्जित, प्रेम नेम बिसम बिस्वास उर आने हैं।
जीवन मुक्त जग जीवन जीवन मूल, आपा खोय होय अपरंपर पराने हैं॥

कवित्त सवैये, 58, 92

गुरवाणी में हरि के चरण कमलों की प्राप्ति के अनेक फलों का उल्लेख है, जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के प्रमाणों सहित आगे किया गया है। पाठकजन ध्यानपूर्वक विचार करें और चरण कमलों को, जिनके इतने गुण हैं, प्राप्त करके जन्म सफल करें।

ੴ

गुरवाणी

1. प्रत्यक्ष गुरु चरण

1.1. प्रत्यक्ष गुरु चरणों में लगने का उपदेश

सुण मन भूले बावरे गुर की चरणी लाग॥
हर जप नाम धिआए तू जम डरपै दुख भाग॥
दूख घणो दोहागणी किउ थिर रहै सुहाग॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.57-58

नाम निधान धिआईऐ मसतक होवै भाग॥
कारज सभ सवारीअह गुर की चरणी लाग॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.47

सोई धिआईऐ जीअड़े सिर साहां पातसाह॥
तिस ही की कर आस मन जिस का सभस वेसाह॥
सभ सिआणपा छड कै गुर की चरणी पाह॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.44

साधू की होह रेणुका अपणा आप तिआग॥
उपाव सिआणप सगल छड गुर की चरणी लाग॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.45

उकत सिआणप सगली तिआग॥ संत जना की चरणी लाग॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

सगल उकत उपावा॥ तिआगी सरन पावा॥ नानक गुर चरण पराता॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.71

मेरे मन हर हर नाम धिआए॥
कर संगत नित साध की गुर चरणी चित लाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.47

✓ सरन आवै पारब्रहम की ता फिर काहे झूरे॥
चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 132-33

तज अभिमान जनम मरण निवारहो॥ हर के दास के चरण नमसकारहो॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 191

मन रे राम जपहो सुख होई॥
अहिनिस गुर के चरन सरेवहो हर दाता भुगता सोई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.598-99

1.2. गुरु चरण हरि के नाम का तीर्थ हैं,
जिनसे मालिक की दरगाह में स्थान मिलता है

संत जनहो सुण भाईहो छूटन साचै नाए॥
गुर के चरण सरेवणे तीरथ हर का नाउ॥
आगै दरगह मंनीअह मिलै निथावे थाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52-53

1.3. गुरु चरण मीठे हैं

माई चरन गुर मीठे॥ वडै भाग देवै परमेसर कोट फला दरसन गुर डीठे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

1.4. प्रत्यक्ष गुरु चरण धोकर पीने का उपदेश

गुर का दरसन देख देख जीवा॥ गुर के चरण धोए धोए पीवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

सिमर सिमर सिमर नाम जीवा तन मन होए निहाला॥
चरण कमल तेरे धोए धोए पीवा मेरे सतगुर दीन दइआला॥
कुरबाण जाई उस वेला सुहावी जित तुमरै दुआरै आइआ॥
नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतगुर पूरा पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

1.5. सतगुरु के दर्शन और उसके चरणों पर शिष्य बलिहारी जाता है

धन सो वेला जित दरसन करणा॥ हउ बलिहारी सतगुर चरणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 562

साचे सतगुरू दातारा॥
दरसन देख सगल दुख नासह चरन कमल बलिहारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1221

हउ बलिहारी सतगुर चरणा॥ गुर बोहिथ सबद भै तरणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

1.6. पूरे भाग्य हों तब जीव गुरु चरणों में लगता है

लख खुसीआ पातसाहीआ जे सतगुर नदर करे॥
निमख एक हर नाम दे मेरा मन तन सीतल होए॥
जिस कउ पूरब लिखिआ तिन सतगुर चरन गहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

ऊठत बैठत हर गुण गावै दूख दरद भ्रम भागा॥
कहो नानक ता के पूर करंमा जा का गुर चरनी मन लागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 614

माई चरन गुर मीठे॥ वडै भाग देवै परमेसर कोट फला दरसन गुर डीठे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

सगल पदारथ तिस मिले जिन गुर डिठा जाए॥
गुर चरणी जिन मन लगा से वडभागी माए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

कहो नानक जे होवी भाग॥ मान छोड गुर चरणी लाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 372

सतगुर राखे से वडभागे॥ नानक गुर की चरणी लागे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

हर हर नाम जिनी आराधिआ तिन का दुख भरम भउ भागा॥
सेवक भाए मिले वडभागी जिन गुर चरनी मन लागा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 572

कहो नानक भला मेरा करम॥ जित भेटे साधू के चरन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 191

1.7. मालिक दया करे तो जीव गुरु चरणों में लगता है और उनके चरण मन में बसते हैं

करम मिलै ता पाईऐ आप न लइआ जाए॥
गुर की चरणी लग रहो विचहो आप गवाए॥
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 61

नानक करम होवै मुख मसतक लिखिआ होवै लेख॥
अठिसठ तीरथ गुर की चरणी पूजै सदा विसेख॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 147

प्रभ बांह पकराई ऊतम मत पाई गुर चरणी जन लागा॥
हर हर नाम जपिआ आराधिआ मुख मसतक भाग सभागा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446-47

जैसा बीजे सो लुणै जेहा पुरब किनै बोइआ॥
जिस क्रिपा करे प्रभ आपणी तिस सतगुर के चरण धोइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

कीनी दइआ गोपाल गुसाई॥ गुर के चरण वसे मन माही॥
अंगीकार कीआ तिन करतै दुख का डेरा ढाहिआ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107

मिलिओ तिस सरब निधाना प्रभ क्रिपाल जिस दीवना॥
सुख नानक संतन की सेवा चरण संत धोए पीवना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1019

1.8. वह मस्तक जो गुरु चरणों में लगता है धन्य है और जब लगता है वह दिन भी धन्य है

नेत्र पुनीत पेखत ही दरस॥ धन मसतक चरन कमल ही परस॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 201

चचा चरन कमल गुर लागा॥ धन धन उआ दिन संजोग सभागा।

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 254

2. गुरु के बाहर के चरणों की प्राप्ति के फल

2.1. दु:ख-दर्द और संकट का नाश

काम क्रोध अहंकार माते विआपिआ संसार॥
पउ संत सरणी लाग चरणी मिटै दूख अंधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

चरन कमल गुर के मन वूठे॥ दूख दरद भ्रम बिनसे झूठे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

गुर के चरण कमल मन धिआए॥ दूख दरद इस तन ते जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 741

बिघन बिनासन सभ दुख नासन गुर चरणी मन लागा॥
गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिन हर रंग जागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 616

2.2. काम, क्रोध, लोभ और विकारों का नाश

गुर के चरन कमल नमसकार॥ काम क्रोध इस तन ते मार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 866

सुख सीगार बिखिआ के फीके तज छोडे मेरी माए॥
काम क्रोध लोभ तज गए पिआरे सतगुर चरनी पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 431

2.3. मन-तन निर्मल होता है

हउमै मार मंन वसाइआ॥ गुर चरणी सदा चित लाइआ॥
गुर किरपा ते मन तन निरमल निरमल नाम धिआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 110

हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चित लावणिआ॥
सतगुर है अंम्रित सर साचा मन नावै मैल चुकावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 113

2.4. प्रसन्न होते हैं और सब धंधे भूल जाते हैं

किउ मारग पाए बिन सतगुर भाए मनमुख आप गणाए॥
हर के चाकर सदा सुहेले गुर चरणी चित लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 247

कर किरपा दीओ मोहे नामा बंधन ते छुटकाए॥
मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 671

2.5. यम के भय का नाश होता है

गुर चरनी मन लागा॥ ता जम का मारग भागा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 599

2.6. जीव भवसागर से पार हो जाता है

जिउ पाखाण नाव चड़ तरै। प्राणी गुर चरण लगत निसतरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.282

रे मन लेखै चालह लेखै बैसह लेखै लैदा साहा॥
सदा कीरत कर नानक हर की उबरे सतगुर चरण ओटाहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.402

2.7. नित्य भक्ति होती है

गुरमुख भगति जुग चारे होई॥ होरत भगति न पाए कोई॥
नानक नाम गुर भगती पाईऐ गुर चरणी चित लावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 122

2.8. नाम की प्राप्ति होती है

मेरे मन गुर चरणी चित लाए॥ गुरमुख नाम निधान लै दरगह लए छडाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 162

अंतरजामी करणैहारा सोई खसम हमारा॥
निरभउ भए गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.609

2.9. हृदय कमल विकसित होता है

माई गुर चरणी चित लाईऐ॥
प्रभ होए क्रिपाल कमल परगासे सदा सदा हर धिआईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.528

2.10. जीव जाग्रत होता है

चरन कमल गुर के जपत हर जप हउ जीवा॥
पारब्रहम आराधते मुख अंम्रित पीवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.815

2.11. हरि मन के अंदर बसता है

गुर के पग सिमरउ दिन राती मन हर हर हर बसिआ॥
हर हर हर कीरत जग सारी घस चंदन जस घसिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1319

2.12. सब जगह वही नज़र आता है

जत कत पेखउ तेरी सरणा॥ बल बल जाई सतगुर चरणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1149

2.13. गुरु के चरणों में मन लगाने से सुख, आनंद और सहज की प्राप्ति होती है

सभे सुख भए प्रभ तुठे॥ गुर पूरे के चरण मन वुठे॥
सहज समाध लगी लिव अंतर सो रस सोई जाणै जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 106

तिस घर सहजा सोई सुहेला॥ अनद बिनोद करे सद केला॥
सो धनवंता सो वड साहा जो गुर चरणी मन लावणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 130

2.14. परम पद मिलता है

रहै निरालम एका सच करणी॥ परम पद पाइआ सेवा गुर चरणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 227

3. अंतर्मुख गुरु चरणों को धारण करने का उपदेश

गुर के चरन मन मह धिआए॥
छोड सगल सिआणपा साच सबद लिव लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

गुर के चरन हिरदै वसाए॥ मन चिंतत सगले फल पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 395

गुर के चरण हिरदै वसाए॥ दुख दुसमन तेरी हतै बलाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 190

गुर के चरन कवल रिद धारे॥
बिघन न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 624

गुर के चरन रिदै उर धारे॥ अगन सागर ते उतरे पारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 865

गुर के चरन रिदै लै धारउ॥ गुर पारब्रहम सदा नमसकारउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.864

गुर के चरन बसे रिद भीतर सुभ लखण प्रभ कीने॥
भए क्रिपाल पूरन परमेसर नाम निधान मन चीने॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.618

चरन कमल हिरदै वसह संकट सभ खोवै॥
गुर पूरा जिस भेटीऐ मर जनम न रोवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.322

गुर के चरन कमल मन वसे॥ महा बिकार तन ते सभ नसे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.897

3.1. गुरु चरण मस्तक पर प्रकट होते हैं और सदा अंग-संग रहते हैं

गुर के चरण ऊपर मेरे माथे॥ ता ते दुख मेरे सगले लाथे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.187

सफल मूरत गुर मेरै माथै॥ जत कत पेखउ तत तत साथै॥
चरन कमल मेरे प्रान अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.535

3.2. जिस हृदय के अंदर हरि-जन के चरण बसते हैं, वह शरीर पवित्र है

जन के चरन वसह मेरै हीअरै संग पुनीता देही॥
जन की धूर देह किरपा निध नानक कै सुख एही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.680

3.3. जिस पर मालिक कृपा करे उसी को गुरुदेव के अनुपम चरणों का रंग लगता है, संतजन भी गुरुदेव के चरणों से प्रेम करते हैं

चरन कमल सिउ रंग लगा अचरज गुरदेव॥
जा कउ किरपा करहो प्रभ ता कउ लावहो सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.814

चरन कमल गुरदेव पिआरे॥ पूजह संत हर प्रीत पिआरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.394

3.4. प्रीतम के चरण कमल अनुपम हैं और उनके सुंदर दर्शन हरि के दर्शन के समान हैं

सफल दरसन तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप॥
अनिक बार करउ तिह बंदन मनह चर्हावउ धूंप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 701

चरन कमल जा के अनूप॥ सफल दरसन सुंदर हर रूप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

4. चरण कमल क्या हैं?

4.1. चरण कमल धुन, नाम और शब्द हैं

नीकी राम की धुन सोए॥ चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1228

चरण ठाकुर के रिदै समाणे॥ कल कलेस सभ दूर पइआणे॥
सांत सूख सहज धुन उपजी साधू संग निवासा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 105

सावण सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआर॥
मन तन रता सच रंग इको नाम अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

राम रसाइण जो जन गीधे॥ चरन कमल प्रेम भगती बीधे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

बंधन तोड़ चरन कमल द्रिड़ाए एक सबद लिव लाई॥
अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबद बण आई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

हिरदै चरण सबद सतगुर को नानक बांधिओ पाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 680

4.2. चरण कमल की मौज आदि और अंत है,
उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, वह अनुभव से संबंध रखती है

कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतगुर के परसाद॥
चरन कमल की मउज मह रहउ अंत अर आद॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1370

कबीर चरन कमल की मउज को कहे कैसे उनमान॥
कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवान॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1370

प्रीत प्रेम तन खच रहिआ बीच न राई होत॥
चरन कमल मन बेधिओ बूझन सुरत संजोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1363

4.3. चरण कमल जीव का सदा आधार, आसरा और सहायक हैं

चरण कमल जन का आधारो॥ आठ पहर राम नाम वापारो॥
सहज अनंद गावह गुण गोविंद प्रभ नानक सरब समाहिआ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 107

मीत सखा सहाए संगी ऊच अगम अपार॥
चरण कमल बसाए हिरदै जीअ को आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

चरन कमल अधार जन का रास पूंजी एक॥
ताण माण दीबाण साचा नानक की प्रभ टेक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 675-76

चरन कमल जन का आधार॥ गुण गोविंद रउं सच वापार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 869

सफल मूरत दरसन बलिहारी॥ चरण कमल मन प्राण अधारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 740

स्रवणी कीरतन सिमरन सुआमी इह साध को आचार॥
चरन कमल असथित रिद अंतर पूजा प्रान को आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1222

हर के चरन कमल आधार॥
संत प्रसाद पाइओ सच बोहिथ चड़ लंघउ बिख संसार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 618

चरन कमल हर जन की थाती कोट सूख बिस्राम॥
गोबिंद दमोदर सिमरउ दिन रैन नानक सद कुरबान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682

संत जना का सदा सहाई॥ चरन कमल नानक सरणाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 898

प्रभ बिना नाही होर॥ चितवउ चरनारबिंद सासन निस भोर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1307

चरन कमल आधार जन का आसरा॥ माल मिलख भंडार नाम अनंत धरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

किलविख हरणा नाम पुनहचरणा नाम जम की त्रास हरा॥
बिनवंत नानक रास जन की चरन कमलह आसरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतास॥
कीरतन नाम सिमरत रहउ जब लग घट सास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 818

मै खोजत खोजत जी हर निहचल सो घर पाइआ॥
सभ अध्रुव डिठे जीउ ता चरन कमल चित लाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 785

4.4. चरण कमल संसार सागर को पार करने के लिए जहाज़ हैं

तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहो अपुनी भाते॥
कर किरपा जिस राखहो संगे ते ते पार पराते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 209

से सहज सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए॥
भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पार लघाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 577

चरन कमल जप बोहिथ चरीऐ॥ संतसंग मिल सागर तरीऐ।

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1080

बोहिथड़ा हर चरण मन चड़ लंघीऐ॥ आठ पहर गुण गाए साधू संगीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 398

चरन कमल बोहिथ भए लग सागर तरिओ तेह॥
भेटिओ पूरा सतगुरू साचा प्रभ सिउ नेह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 431

चरन कमल जप सागर तरिआ भवजल उतरे पारा॥
नानक सरण पूरन परमेसुर तेरा अंत न पारावारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 784

5. हरि चरण

5.1. हरि चरण शरण की महिमा

पोख तुखार न विआपई कंठ मिलिआ हर नाहु॥
मन बेधिआ चरनारबिंद दरसन लगड़ा साहु॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 135

अकथ कथा नह बूझीऐ सिमरहो हर के चरन॥
पतित उधारन अनाथ नाथ नानक प्रभ की सरन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

हर चरणी तूं लाग रहो गुर सबद सोझी होई॥
हर रस रसना चाख तूं तां मन निरमल होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 492

हर के चरन कमल मन धिआउ॥
काढ कुठार पित बात हंता अउखध हर को नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 714

हर चरन कमल सरनाए मना॥
राम नाम जप संग सहाई गुरमुख पावह साच धना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 899

हर चरन कमल मन लीना॥ प्रभ जल जन तेरे मीना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1278

चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ॥
मै धर तेरी पारब्रहम तेरै ताण रहाउ॥
निमाणिआ प्रभ माण तूं तेरै संग समाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

5.2. प्रभु के चरण मीठे हैं

महा नाद कुरंक मोहिओ बेध तीखन सरी॥
प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठ बाध धरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1121

5.3. चरण कमल अंदर हैं और मन-तन में बसते हैं

तू बेअंत पारब्रहम सुआमी गति तेरी जाए न लाखी॥
चरन कमल प्रीत मन बेधिआ कर सरबस अंतर राखी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1227

मीत सखा सहाए संगी ऊच अगम अपार॥
चरण कमल बसाए हिरदै जीअ को आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

स्रवणी कीरतन सिमरन सुआमी इह साध को आचार॥
चरन कमल असथित रिद अंतर पूजा प्रान को आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1222

चरन कमल बसिआ रिद भीतर सास गिरास उचारिओ॥
नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 534

चरन कमल हिरदै उर धारी॥ मन तन धन गुर प्रान अधारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 193

बैकुंठ नगर जहा संत वासा॥ प्रभ चरण कमल रिद माहे निवासा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 742

तोट न आवै कदे मूल पूरन भंडार॥
चरन कमल मन तन बसे प्रभ अगम अपार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 817

5.4. चरण कमलों में कोई बिरला नेह लगाता है

चरण कमल संग नेह किनै विरलै लाइआ॥
धंन सुहावा मुख जिन हर धिआइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 399

5.5. हरि के चरण कमलों में कोई बिरला साधु लगता है

चरन कमल आनूप हर संत मंत॥ कोऊ लागै साधू॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 380

5.6. पूर्ण भाग्य हों तो ही हरि के चरणों में मन लगता है

कहो नानक जा के पूरन भाग॥ हर चरणी ता का मन लाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

5.7. जिसको मालिक लगाए वही उसके चरणों में लग सकता है

सभ परोई इकत धागै॥ जिस लाए लए सो चरणी लागै॥
ऊंध कवल जिस होए प्रगासा तिन सरब निरंजन डीठा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 108

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेत॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

कर किरपा चरन संग मेली॥ सूख सहज आनंद सुहेली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 379

कर किरपा प्रभ नदर अवलोकन अपुनै चरण लगाई॥
प्रेम भगति नानक सुख पाइआ साधू संग समाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 384

चरण कमल का आसरा दीनो प्रभ आप॥
प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परताप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 817

तुम ही कारन करन॥ चरन कमल हर सरन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 896

कोई विरला आपन कीत॥ संग चरन कमल मन सीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 980

5.8. प्रभु की कृपा से ही चरण कमलों में मन लगता है

मोहे निरगुण प्रीतम सुख सागर संतसंग मन जागा॥
कहो नानक प्रभ किरपा कीन्ही चरण कमल मन लागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 781

चरन कमल सिउ लगो धिआन॥ कर किरपा प्रभ कीनो दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1183

5.9. चरण कमल सतगुरु द्वारा मिलते हैं

चरण कमल सिउ लागो मान॥ सतगुर तूठै कीनो दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 376

पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीत निवार॥
चरन कमल सेवी रिद अंतर गुर पूरे कै आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 379

हर चरण कमल की टेक सतगुर दिती तुस कै बल राम जीउ॥
हर अंम्रित भरे भंडार सभ किछ है घर तिस कै बल राम जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.777-78

दुख सुख करत जनम फुन मूआ॥ चरन कमल गुर आस्रम दीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.804

गुर परसाद बसंत बना॥ चरन कमल हिरदै उर धारे सदा सदा हर जस सुना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1182

हउ बल बल बल बल चरन कमल कउ बल बल गुर दरसाइआ॥
कहो नानक काहू परवाहा जउ सुख सागर मै पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1212

हरन भरन संपूरना चरन कमल रंग रितनो॥
नानक उधरे साधसंग किरपा निध मै दितनो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.212

चरन कमल सिउ लागी प्रीत॥ गुर पूरे की निरमल रीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.893

सिमर सिमर सिमर सुख पाइआ॥ चरन कमल गुर रिदै बसाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.202

चरन कमल हिरदै नित धारी॥ गुर पूरा खिन खिन नमसकारी॥
तन मन अरप धरी सभ आगै जग मह नाम सुहावणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1085

गुर प्रीत पिआरे चरन कमल रिद अंतर धारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1272

सोई सासत सउण सोए जित जपीऐ हर नाउ॥
चरण कमल गुर धन दीआ मिलिआ निथावे थाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.48

5.10. साध-संगति से हरि चरणों में निवास होता है

साधसंग होआ परगास॥ चरन कमल मन माहे निवास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

सदा सदा आतम परगास॥ साधसंगत हर चरण निवास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 378

चरण कमल सरणाई आइआ॥ साधसंग है हर जस गाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1084

चरण कमल सरणं रमणं गोपाल कीरतनह॥
साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1358

5.11. हरि के सिमरन द्वारा और उसके गुण गाने से चरण कमल मन में प्रवेश करते हैं

हर सिमरत सभ मिटह कलेस॥ चरण कमल मन मह परवेस॥
उचरहो राम नाम लख बारी॥ अंम्रित रस पीवहो प्रभ पिआरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 194

गुण गावत होवत परगास॥ चरन कमल मह होए निवास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 901

5.12. भक्तों के मन में चरण बसते हैं

चरन कमल भगतां मन वुठे॥ विण परमेसर सगले मुठे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 109

चरन कमल सिउ प्रीत रीत संतन मन आवए जीउ॥
दुतीआ भाउ बिपरीत अनीत दासा नह भावए जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 80

5.13. हरिरूपी सतगुरु के चरण कमल हमें भाते हैं, हम उन पर बलिहारी जाते हैं

जिन कंउ हर प्रभ किरपा धारी ते सतगुर सेवा लाइआ॥
हर सतगुर हर सतगुर मेल हर सतगुर चरण हम भाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

चरन कमल हिरदै उर धारे॥ तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.563

पेख पेख जीवा दरस तुम्हारा॥ चरण कमल जाई बलिहारा॥
तुझ बिन ठाकुर कवन हमारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.743

सफल मूरत दरसन बलिहारी॥ चरण कमल मन प्राण अधारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.740

दरसन कउ जाईऐ कुरबान॥ चरन कमल हिरदै धर धिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.897

5.14. हम हरि के चरण और जिनको हरि चरण प्राप्त हैं उन दोनों पर बलिहारी जाते हैं

हउ बिसम भई जी हर दरसन देख अपारा॥
मेरा सुंदर सुआमी जी हउ चरन कमल पग छारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.784

जिसह परापत हर चरण निधान॥ नानक दास तिसह कुरबान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.199

5.15. जब तक भ्रम व तृष्णा है और बैकुंठ की आस है तब तक चरण कमल हृदय में निवास नहीं करते

भ्रम की कूई त्रिसना रस पंकज अत तीख्यण मोह की फास॥
काटनहार जगत गुर गोबिद चरन कमल ता के करहो निवास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.204

जब लग मन बैकुंठ की आस॥ तब लग होए नही चरन निवास॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.325

5.16. चरण कमलों की प्राप्ति में सब जप, तप, तीर्थ और कर्म-धर्म आ जाते हैं

मन तन निरमल होइआ लागी साच परीत॥
चरण भजे पारब्रहम के सभ जप तप तिन ही कीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.48

प्रभ के चरन मन माहे धिआन॥ सगल तीरथ मजन इसनान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 195

अनिक भगत बंदन नित करह॥ चरन कमल हिरदै सिमरह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 287

हर नाम लीजै अमिउ पीजै रैण दिनस अराधीऐ॥
जोग दान अनेक किरिआ लग चरण कमलह साधीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

जप तप संजम करम सुख साधन तुल न कछूऐ लाहे॥
चरन कमल नानक मन बेधिओ चरनह संग समाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1222

धन उह प्रीत चरन संग लागी॥
कोट जाप ताप सुख पाए आए मिले पूरन बडभागी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1301

5.17. अंतर में चरणों को बसानेवाली देह का पालन करो

घट वसह चरणारबिंद रसना जपै गुपाल॥
नानक सो प्रभ सिमरीऐ तिस देही कउ पाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 554

5.18. संत और भक्तजन चरण कमलों में रमे हुए हैं

बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह॥
चरन कमल रचंत संतह नानक आन न रुचते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 708

चरण कमल सरणाए नराइण॥ दीना नाथ भगत पराइण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 760

6. हरि के चरण कमल की प्राप्ति के फल

6.1. चिंता का नाश

चरन कमल अराध भगवंता॥ हर सिमरन ते मिटी मेरी चिंता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 189

6.2. सब रोगों का नाश

चरन कमल संग प्रीत मन लागी सुर जन मिले पिआरे॥
नानक अनद करे हर जप जप सगले रोग निवारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.715

चरन कमल प्रभ हिरदै धिआए॥ रोग गए सगले सुख पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.806

6.3. दु:ख और संशय का नाश

चरण कमल कर बोहिथ करते सहसा दूख न बिआपै॥
गुर पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभ जापै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.79

हर चरणी जा का मन लागा॥ दूख दरद भ्रम ता का भागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.194

चरन कमल रिदै धार॥ उतरिआ दुख मंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1304

पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाए॥
डाकी को चित कछू न लागै चरन कमल सरनाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.378

6.4. भ्रम और भय का नाश

भरम गइआ भउ भागिआ हर चरणी चित लाए॥
गुरमुख सबद कमाईऐ हर वसै मन आए॥
घर महल सच समाईऐ जमकाल न सकै खाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.67

जो जन भजन करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही॥
सतगुर चरन लगे भउ मिटिआ हर गुन गाए मन माही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.630

निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै॥
गुर कै बचन जपिओ नाउ नानक प्रगट भइओ संसारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1217

निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख बिदारै॥
आन उपाव तिआग जन सगले चरन कमल रिद धारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1218

6.5. शोक, कपट और झूठ दूर होते हैं

चरण कमल जा का मन रापै॥ सोग अगन तिस जन न बिआपै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 684

चरन कमल मन बेधिआ जिउ रंग मजीठा॥
जीउ प्राण तन मन प्रभू बिनसे सभ झूठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 708

चरन कमल बिरहं खोजंत बैरागी दह दिसह॥
तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंद रूप साध संगमह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 707

6.6. भूख (तृष्णाएँ) मिटती है

पीवत राम रस अंम्रित गुण जास॥ जप हर चरण मिटी खुधि तास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 195

6.7. कलि के क्लेश सब दूर होते हैं

चरण ठाकुर के रिदै समाणे॥ कल कलेस सभ दूर पइआणे॥
सांत सूख सहज धुन उपजी साधू संग निवासा जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 105

हर सिमरत सभ मिटह कलेस॥ चरण कमल मन मह परवेस॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 194

6.8. दुर्मति का नाश

चरन कमल संग लागी प्रीत॥ बिसर गई सभ दुरमत रीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 802

6.9. पापों का नाश

हर के चरण रिदे मह बसे॥ जनम जनम के किलविख नसे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 197

चरन कमल राखहो मन माहे॥ जनम जनम के किलबिख जाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 288-89

हर चरण रिदै वसाए तू किलविख होवह नास॥
पंच भू आतमा वस करह ता तीरथ करह निवास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491

संत का मारग धरम की पउड़ी को वडभागी पाए॥
कोट जनम के किलबिख नासे हर चरणी चित लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 622

गुर पूरे के चरण गहे॥ कोट जनम के पाप लहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 387

दिन रैण सुहावड़ी आई सिमरत नाम हरे॥
चरण कमल संग प्रीत कलमल पाप टरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 458-59

6.10. लोभ, मोह, मान और काम-क्रोध का नाश

कर पटंब गली मन लावस संसा मूल न जावसिता॥
एकस चरणी जे चित लावह लब लोभ की धावसिता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 155-56

मोह मान भ्रम बिनसिओ पाई सरन दइआल॥
चरन कमल मन तन बसे दरसन देख निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 298

चरन कमल सिउ लागो पिआर॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1339

6.11. मन-तन निर्मल होता है

चरण कमल सिउ लागी प्रीत॥ साची पूरन निरमल रीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 741

चरन कमल सिउ लागी प्रीत॥ गुर पूरे की निरमल रीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 893

6.12. मन-तन शीतल होता है

पउ सरणाई जिन हर जाते॥ मन तन सीतल चरण हर राते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 197

जिन तू बंध कर छोडिआ फुन सुख मह पाइआ॥
सदा सिमर चरणारबिंद सीतल होताइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 816

6.13. मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं

सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंग लाइआ॥
जप एक अलख प्रभ निरंजन मन चिंदिआ फल पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

संग सहाई हर नाम धिआई बिरथा कोए न जाए॥
मन चिंदे सेई फल पावह चरण कमल चित लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 79

सगल मनोरथ पाईअह मीता॥ चरन कमल सिउ लाईऐ चीता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 804

तोट न आवै कदे मूल पूरन भंडार॥
चरन कमल मन तन बसे प्रभ अगम अपार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 817

चरन कमल बसे मेरे मन के॥ कारज सवारे सगले तन के॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 900

चरन कमल निमख रिदै धारे॥ गोबिंद जपत सभ कारज सारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1349

हर के चरन सदा सुखदाई॥
जो इछह सोई फल पावह बिरथी आस न जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

6.14. सुख और आनंद की प्राप्ति होती है

दीना नाथ सरब सुखदाता॥ नानक हर चरणी मन राता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 154

चरन कमल सिउ लागी प्रीत॥ आन सुखा नही आवह चीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 196

चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे॥
साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहन कत बारो॥
जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेख दरस सुआमी सुख सारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 829

बिछुरत किउ जीवे ओए जीवन॥
चितह उलास आस मिलबे की चरन कमल रस पीवन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1268

घर नाह निहचल अनद सखीए चरन कमल प्रफुलिआ॥
सुंदर सुघड़ सुजाण बेता गुण गोविंद अमुलिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 927-28

लोभी अनद करै पेख धना॥ जन चरन कमल सिउ लागो मना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

सिमर सिमर सिमर सुख पाइआ चरन कमल रख मन माही॥
ता की सरन परिओ नानक दास जा ते ऊपर को नाही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 824

सुत कलत्र भ्रात मीत उरझ परिओ भरम मोहिओ इह बिरख छामनी॥
चरन कमल सरन नानक सुख संत भावनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 901

चरन कमल सरणागती अनद मंगल गुण गाम॥
नानक प्रभ आराधीऐ बिपत निवारण राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 926

सरब सुखा निध चरण हर भउजल बिखम तरे॥
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहे जरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 136

चरन कमल जा कै रिदै बसह सो जन किउ डोलै देव॥
मानौ सभ सुख नउ निध ता कै सहज सहज जस बोलै देव॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 857

तज गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खाम॥
चरन कमल हिरदै गहो नानक सुख समूह बिसराम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 702

6.15. यम का भय नष्ट हो जाता है

दुखहरण दीन सरण स्रीधर चरन कमल अराधीऐ॥
जम पंथ बिखड़ा अगन सागर निमख सिमरत साधीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 248

चरन कमल की आस पिआरे॥ जमकंकर नस गए विचारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 389

चरन कमल सिउ लागो हेत॥
खिन मह बिनसिओ महा परेत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1149

गरभ कुंड नरक ते राखै भवजल पार उतारे॥
चरन कमल आराधत मन मह जम की त्रास बिदारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 210

चरन कमल धिआन भीतर घट घटह सुआमी सुझै॥
सरन देव अपार नानक बहुर जम नही लुझै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1122

6.16. जन्म-मरण के बंधन से छूट जाते हैं

कर किरपा प्रभ बंधन छोट॥ चरण कमल की दीनी ओट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 194

हर के चरण हिरदै कर ओट॥ जनम मरण ते होवत छोट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

साधसंगम भज सुआमी पाप होवत खार॥
चरनारबिंद बसाए हिरदै बहुर जनम न मार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1228

चरन कमल बसाए हिरदै एक सिउ लिव लाउ॥
साधसंगत होहे निरमल बहुड़ जोनि न आउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1220

6.17. जीव भवसागर से पार हो जाता है और देह का निस्तार हो जाता है

चरण कमल ठाकुर उर धार॥ दुलभ देह नानक निसतार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 190

चरन कवल रिद अंतर धारे॥ अगन सागर गुर पार उतारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 191

हर के चरण हिरदै उर धार॥ भव सागर चड़ उतरह पार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 196

दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता महतरीआ॥
चरन कवल हिरदै गह नानक भै सागर संत पार उतरीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 203

तिंना भुख न का रही जिस दा प्रभ है सोए॥
नानक चरणी लगिआ उधरै सभो कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 323

चरन कमल सरणाए नानक आइआ॥ दुतर भै संसार प्रभ आप तराइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 705

चरन कमल की ओट उधरे सगल जन॥
सुण परताप गोविंद निरभउ भए मन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 709

सिमर सिमर सुआमी प्रभ अपना अनद सेती बिखिआ बन गाही॥
चरन प्रभू के बोहिथ पाए भव सागर पार पराही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 824

6.18. प्रभु की दरगाह में मान प्राप्त होता है

ओट लैहो नाराइणै दीन दुनीआ झलै॥
नानक पकड़े चरण हर तिस दरगह मलै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320

मोहे सरन दीन दुख भंजन तूं देह सोई प्रभ पाईऐ॥
चरण कमल नानक रंग राते हर दासह पैज रखाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 500

6.19. नित्य भक्ति होती है और जीव गोबिंद के रंग में रँग जाता है

राम रसाइण जो जन गीधे॥ चरन कमल प्रेम भगती बीधे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 198

चरन कमल सिउ लागै प्रीत॥ भगति करउ प्रभ की नित नीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 289

चरन कमल सिउ लागी प्रीत॥ गोबिंद बसै निता नित चीत॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 331

चरन कमल गोबिंद रंग लागा॥
संत प्रसाद भए मन निरमल हर कीरतन मह अनदिन जागा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 343

प्रिउ सहज सुभाई छोड न जाई मन लागा रंग मजीठा॥
हर नानक बेधे चरन कमल किछ आन न मीठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 454

रसना राम रसाइन माती॥ रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निध थाती॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 681

चरन कमल प्रभ राखे चीत॥ हर गुण गावह नीता नीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1001

सतगुर चरण कवल रिद धारं॥ गुर अरजुन गुण सहज बिचारं॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1406-07

6.20. उर्ध्व-कमल विकसित होता है

चित चितवउ चरणारबिंद ऊध कवल बिगसांत॥
प्रगट भए आपह गोबिंद नानक संत मतांत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 254

6.21. अंतर में ज्योति प्रकट होती है

चरण कमल रिद अंतर धारे॥ प्रगटी जोत मिले राम पिआरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 375

सरण परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान॥
सहज सुभाए नानक मिले जोती जोत समान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 817

6.22. जीव चेतन हो जाता है और जाग्रत होता है

चरन कमल उर धारे चीत॥ चिर जीवन चेतन नित नीत॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 932

चरन कमल गुर के जपत हर जप हउ जीवा॥
पारब्रहम आराधते मुख अंम्रित पीवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 815

पेख पेख जीवा दरस तुम्हारा॥ चरण कमल जाई बलिहारा॥
तुझ बिन ठाकुर कवन हमारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 743

6.23. सहज गति होती है

परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ॥
कहो नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 533

6.24. अमृत और हरि रस मिलता है

ता कउ बिघन न कोऊ लागै जो सतगुर अपुनै राखे॥
चरन कमल बसे रिद अंतर अंम्रित हर रस चाखे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 616

जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहो अभागा॥
चरन कमल जा का मन रागिओ अमिअ सरोवर पागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682

6.25. रामनाम का रंग चढ़ता है

सावण सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआर॥
मन तन रता सच रंग इको नाम अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहो अभागा॥
चरन कमल जा का मन रागिओ अमिअ सरोवर पागा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682

चितवंत चरन कमलं सास सास अराधनह॥
नह बिसरंत नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 708

पारब्रहम परमेसुर सतगुर वस कीन्हे जिन सगले जंत॥
चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जप निरमल मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 825

उदम अगम अगोचरो चरन कमल नमसकार॥
कथनी सा तुध भावसी नानक नाम अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 927

हर बिन जो रहणा नरक सो सहणा चरन कमल मन बेधिआ॥
हर रसिक बैरागी नाम लिव लागी कतहु न जाए निखेधिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1122

मन अनिक सोच पवित्र करत॥ नाही रे नाम तुल मन चरन कमल लागे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1229

6.26. मालिक (की प्राप्ति) का मार्ग मिलता है

कर कर टहल रसना गुण गावउ॥ चरन ठाकुर कै मारग धावउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 189-90

6.27. एक ही नज़र आता है और वह कभी नहीं बिसरता

चरण कमल आतम आधार॥ एक निहारह आगिआकार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 181

राम पिआरे सदा जागह नाम सिमरह अनदिनो॥
चरण कमल धिआन हिरदै प्रभ बिसर नाही इक खिनो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 459

6.28. मालिक हाज़िर-हुज़ूर (सर्वव्यापी) दिखाई देता है

चरन कमल धिआन भीतर घट घटह सुआमी सुझै॥
सरन देव अपार नानक बहुर जम नही लुझै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1122

हर चरन कमल मन बेधिआ किछ आन न मीठा राम राजे॥
मिल संतसंगत आराधिआ हर घट घटे डीठा राम राजे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

जल थल महीअल रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा॥
बिनवंत नानक टेक जन की चरण कमल अधारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 461

6.29. मालिक से मेल होता है

पोख तुखार न विआपई कंठ मिलिआ हर नाहु॥
मन बेधिआ चरनारबिंद दरसन लगड़ा साहु॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 135

हर के चरन हिरदै बसावै॥ नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 274

खोजत खोजत लाल इक पाइआ हर कीमत कहण न जाई संतहो॥
चरन कमल सिउ लागो धिआना साचै दरस समाई संतहो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 916

निरमल भए ऊजल जस गावत बहुर न होवत कारो॥
चरन कमल सिउ डोरी राची भेटिओ पुरख अपारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1225

मन तन नाम निरंजन रातउ चरन कमल लिव लाइआ॥
अंगीकार कीओ प्रभ अपनै नानक दास सरणाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1268

6.30. जीवन गुणी गंभीर हो जाता है

बुनना तनना तिआग कै प्रीत चरन कबीरा॥
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 487

7. चरण कमल विहीन के दोष

चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सत पुरख मनाइओ॥
धावत कउ धावह बहु भाती जिउ तेली बलद भ्रमाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 712

गरबंत नारी मदोन मतं॥ बलवंत बलात कारणह॥
चरन कमल नह भजंत त्रिण समान ध्रिग जनमनह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1359

चरण कमल की रज या चरण धूलि

गुरवाणी में चरण कमलों के साथ-साथ चरण धूलि के विषय पर भी वचन मिलते हैं, जिनमें चरण धूलि की बड़ी महिमा की गई है। इन वचनों के विचार से ज्ञात होता है कि चरण कमल की भाँति चरण धूलि का भी कई प्रकार से प्रयोग किया गया है।

1. प्रत्यक्ष साधु और संतों की संगति से धूलि की प्राप्ति

गुरवाणी में साधु-संतों की महिमा अनेक तरह से की गई है जिसका वर्णन और कहीं किया गया है। परमार्थ में उनकी बड़ी आवश्यकता बताई गई है। गुरवाणी कहती है कि उनकी धूलि की सारी सृष्टि को लालसा है। मालिक उनकी धूलि देकर सबको भवसागर से पार करता है:

जितनी स्रिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूर साधू की ताई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

सुर, नर और सभी देवता उनकी धूलि की कामना करते हैं:

सरब कलिआण चरण प्रभ सेवा॥ धूर बाछह सभ सुर नर देवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1138

ऋषि-मुनि, शंकर, नारद आदि भी उनकी धूलि की लालसा करते रहे। वह धरती पवित्र है जहाँ साधुजन विचरते हों:

संकर नारद सेखनाग मुनि धूर साधू की लोचीजै॥
भवन भवन पवित होहे सभ जह साधू चरन धरीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

चरण कमल रज मज्जन प्रताप अति, पूर्व तीर्थ कोट चरण शरण है।
चरण कमल रज मज्जन प्रताप अति, देवी देव सेवक है पूजत चरण है।

चरण कमल रज मज्जन प्रताप अति, कारण अधीन कीन कारण करण है।
चरण कमल रज मज्जन प्रताप अति, पतित पुनीत भये तारण तरण है।

कबित्त-सवैये, 339

शम्स तब्रेज़ कहते हैं कि तू संतों की धूलि से अपनी आँखों को रोशन कर ताकि तू आदि से अंत तक सब कुछ देख सके, तू इन मंज़ूरे-नज़र हस्तियों (परमात्मा के स्वीकृत पुरुषों) की धूलि का सुरमा लगा ले ताकि तेरी आँखें उस मालिक को देख सकें:

चश्म रौशन कुन ज़ि ख़ा-औलिया, ता बिबीनी ज़ि इब्तदाता इन्तहा।
सुरमा कुन तू ख़ाके-ईबगुज़ीदा रा, हम बसूज़द हम बसाजद दीदा रा।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 321

जिन-जिन स्थानों पर संत रहे, जहाँ-जहाँ वे मालिक का भजन करते रहे, जीवों को चेताते रहे, वे स्थान तीर्थ बन गए। इस प्रकार, साधु-संतों और भक्तों के प्रताप के फलस्वरूप ही तीर्थों की स्थापना की गई। सिक्खों में गुरु नानक साहिब की वजह से ननकाना साहिब, पंजा साहिब, करतारपुर आदि बने, गुरु अंगद साहिब की याद में खडूर साहिब, गुरु रामदास जी और गुरु अर्जुन साहिब के कारण अमृतसर, तरनतारन आदि स्थान पवित्र माने गए। इसी प्रकार मुसलमानों में मक्का और मदीना आदि, हिंदुओं में गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, काशी आदि और ईसाइयों में ज़ेरुसलम आदि बने। गुरवाणी का इसके बारे में यह कथन है:

जितने तीरथ देवी थापे सभ तितने लोचह धूर साधू की ताई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करह उदम धूर साधू की ताई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

तीर्थों की महिमा साधु-संतों और ऋषि-मुनियों के कारण है। लेकिन वे तीर्थों से नहीं बँधे होते, जहाँ वे जा बैठें वही स्थान तीर्थ है। वे जंगम तीर्थ यानी चलते-फिरते तीर्थ हैं। भाई गुरदास जी फ़रमाते हैं:

सुरसरी, सुरसती, जमना, गोदावरी, गया, प्राग, सेतु, कुरुखेत, मानसर है।
कांशी कांती द्वारावती माया मथुरा अयुध्या, गोमती आवन्तका केदार हिमधर है॥

नर्बदा बिविध बन देवस्थल कवलास, नील मन्द्राचल सुमेर गिरिवर है।
तीर्थ अर्थ सत्य धर्म दया सन्तोष, श्री गुरु चरण रज तुल्य न वार है॥

कबित्त-सवैये, 416

कोटिन कोटान मणि को चमत्कार वारौं,
    ससियर सूर कोटि कोटिन प्रगास जी।
कोटिन कोटान भाग्य पूर्ण प्रताप छबि,
    जग-मग जोति है सुजसु निवास जी॥
सिव सनकादि ब्रह्मादिक मनोरथ कै,
    तीरथ कोटानि कोटि बाछत है तास जी।
(मस्तक) दर्शन सोभा को महातम अगाध बोध,
    श्री गुरु चरण रज मात्र लागै जास जी॥

कबित्त-सवैये, 421

संतों की धूलि में सारे जप-तप और अड़सठ तीर्थ आ जाते हैं:

संत क्रिपा ते मिटे मोह भरम॥ साध रेण मजन सभ धरम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

त्रिपत अघावन साचै नाए॥ अठसठ मजन संत धूराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 377

दरसन देख भई मत पूरी॥ अठसठ मजन चरनह धूरी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 224

संतों की धूलि पाकर ही मनुष्य सच्चे अर्थ में जी उठता है:

प्रभ दइआल किरपाल हजूर॥ नानक जीवै संता धूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 676

संतों की धूलि उसको मिलती है जिसको मालिक स्वयं प्रदान करे। उसकी कृपा द्वारा ही इसकी प्राप्ति हो सकती है:

नानक मंगै दान हर संता रेनार॥ होर दातार न सुझई तू देवणहार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 556

जो प्रभु को प्रिय हैं उनकी धूलि किसी बिरले भाग्यशाली को ही मिलती है:

कहो नानक जो जन प्रभ भाए॥ ता की रेन बिरला को पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

संत धूर पाईऐ वडभागी॥ नानक गुर भेटत हर सिउ लिव लागी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 193-94

2. संतों की अंतर्मुख धूलि यानी उनके नूरी स्वरूप की किरणों की प्राप्ति

सतगुरु के नूरी स्वरूप के चरण कमलों से जो प्रकाशवान किरणें निकलती हैं उनका संतों की चरण धूलि कहकर ही वर्णन किया गया:

अंम्रित नाम निधान भोजन खाइआ॥ संत जना की धूर मसतक लाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 652-53

गोस्वामी तुलसीदास जी भी लिखते हैं कि गुरु के पदनख मणियों से भी अधिक प्रकाशवान हैं:

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती ॥ सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती ॥

श्रीरामचरितमानस, 1:0:3

तुलसी साहिब फ़रमाते हैं कि यदि तुझे संतों की चरण धूलि देखनी हो तो तन-मन के दर्पण को साफ़ करके क्षण-प्रतिक्षण सुरत को आँखों के पीछे लाकर एकत्रित कर। इस प्रकार लिव लगाने से आंतरिक रहस्य मिलेगा और संतों के चरणों की धूलि का नूर दिखाई देगा:

छछ्छा छिन छिन सुरति सँवार लार दृग के रहौ।
तन मन दर्पन माँज साज स्त्रुति से गहौ॥
लगन लगै लख पार सार तब पाइया।
अरे हाँ रे तुलसी संत चरन की धूर नूर दर्साइया॥

तुलसी साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 25

3. यह चरण धूलि क्या है? गुरबाणी इसका अमृत और अमूल्य नाम कहकर वर्णन करती है

बिनवंत नानक धूर साधू नाम प्रभू अमोलई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 691

यह संतजनों की धूलि घट-घट में है और सबका आधार है, यह हरि की अमृत वाणी है:

घट घट अंतर सगल अधार॥ नानक जाचै संत रेणार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.677

हर अंम्रित बाणी गावै॥ साधा की धूरी नावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.623

4. गोबिंद के चरणों (देखें: 'चरण कमल' का प्रकरण) की धूलि मस्तक पर लगती है। यह अमूल्य धूलि देवी, देवता, मुनियों आदि की पहुँच से दूर है

मेरै माथै लागी ले धूर गोबिंद चरनन की॥
सुर नर मुनि जन तिनहू ते दूर॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ.694

यदि साधु की धूलि मिल जाए तो उसमें लाखों तीर्थ, व्रत, संयम आ जाते हैं:

तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.48

चरण धूलि की प्राप्ति से दु:ख-दर्द, शोक-वियोग दूर हो जाते हैं; हौमैं, काम, क्रोध और पापों का नाश होता है; सब मैल दूर होकर मन निर्मल होता है; आशा, मनसा और मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। जीव सुखी और जन्म-मरण से रहित हो जाता है, यम का भय दूर हो जाता है और माया मिट जाती है। करोड़ों जीवों का उद्धार होता है और मुक्ति पद मिलता है, प्रभु सदा हाज़िर-नाज़िर (सर्वव्यापक) दिखता है और इस लोक और परलोक में शोभा और दरगाह में मान मिलता है, सहज सुख और सच्चे पदार्थ की प्राप्ति होती है। इस बारे में गुरवाणी में अनेक प्रमाण मिलते हैं जो आगे दिए जाते हैं। वे पाठकों के विचार के योग्य हैं।

भाई गुरदास जी क्या सुंदर ढंग से गुरु 'चरण धूलि' के अनेक फल बताते हैं:

चरन कमल मकरंद रस लुभित है, मन मधुकर सुख संपट समाने हैं।
परम सुगंधि अति कोमल सीतलता कै, बिमल सथल निहचल न डुलाने हैं॥

सहज समाधि अति अगम अगाध लिव, अनहद रुनझुन धुनि उर गाने हैं।
पूरन परम जोति परम निधान दान, आन ज्ञान ध्यान सिमरन बिसराने हैं॥
कबित्त–सवैये, 271

चरन सरन रज मज्जन मलीन मन, दर्पण गति गुरुमति निहचल है।
ज्ञान गुरु अञ्जन दै चपल खञ्जन दृग, अकुल निरञ्जन ध्यान जल थल है॥
भञ्जन भय भ्रम अरु गञ्जन कर्म काल, पाँच प्रपञ्च बलञ्चव निर्दल है।
सेवा करञ्जन सर्वात्म निरञ्जन भए, माया में उदास कलिमल निर्मल है॥
कबित्त–सवैये, 295

चरण कमल रज मस्तकि लेपण कै, भरम करम लेख स्यामता मिटाई है।
चरण कमल चरणामृत मलीन मन, कर निर्मल दूत दुबिधा मिटाई है।
चरण कमल सुख सम्पट सहज घर, निःचल मति एक टेक ठहराई है।
चरण कमल गुरु महिमा अगाध बोध, सर्व निधान औ सकल फलदाई है॥
कबित्त–सवैये, 337

चरण कमल रज मज्जन कै दिव्य देहि,
महा मल मूत्र धारी निरङ्कारी कीने है।
चरण कमल चरणामृत निधान पान, त्रिगुण अतीत चीत आपा आप चीने है।
चरण कमल निज आसन सिंहासन कै, त्रिभुवण औ त्रिकाल गम्यता प्रबीने है।
चरण कमल रस गन्ध रूप शीतलता, दुतिया नासति एक टेक लिवलीने है॥
कबित्त–सवैये, 338

जहाँ संतों की चरण धूलि का वर्णन आया है वहाँ गुरु के शिष्य की (देखें: 'शिष्य' का प्रकरण) चरण धूलि के बारे में भी लिखा है:

जन नानक धूड़ मंगै तिस गुरसिख की जो आप जपै अवरह नाम जपावै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 306

भाई गुरदास जी ने भी इस प्रकार वर्णन किया है:

चरन कमल रज गुरु सिख माथै लागी, बांछित सकल गुरु सिख पग रेनु है।
कोटिन कोटान कोटि कमला कलपतरु, पारस अमृत चिंतामणि कामधेनु है॥

सुर, नर, नाथ, मुनि त्रिभुवन औ त्रिकाल, लोग वेद ज्ञान उनमान जन केन है।
कोटिन कोटानि सिख संगत असंख्य जाकै,
नमो नमो गुरुसिख सुख फल देन है॥

कबित्त-सवैये, 193

चरण धूलि की प्राप्ति के लिए आदि ग्रन्थ की गुरवाणी में स्थान-स्थान पर प्रार्थना आई है जो हर एक सच्चे जिज्ञासु की हार्दिक याचना है। इसे आगे देखें।

गुरवाणी

1. संतों की धूलि की सब सृष्टि, देवी-देवताओं व तीर्थों को लालसा है, संत-संगति की धूलि में सब तीर्थों के स्नान का फल आ जाता है

जितनी स्रिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूर साधू की ताई॥
नानक लिलाट होवै जिस लिखिआ तिस साधू धूर दे हर पार लंघाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

1.1. साधु-संतों की चरण धूलि की महिमा

सरब कलिआण चरण प्रभ सेवा॥ धूर बाछह सभ सुर नर देवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1138

संकर नारद सेखनाग मुनि धूर साधू की लोचीजै॥
भवन भवन पवित होहे सभ जह साधू चरन धरीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

जितने तीरथ देवी थापे सभ तितने लोचह धूर साधू की ताई॥
हर का संत मिलै गुर साधू लै तिस की धूर मुख लाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करह उदम धूर साधू की ताई॥
किलविख मैल भरे परे हमरै विच हमरी मैल साधू की धूर गवाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

सतसंगत की रेण मुख लागी कीए सगल तीरथ मजनीठा॥
कहो नानक रंग चलूल भए है हर रंग न लहै मजीठा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212

1.2. सब धर्म, जप, तप और अड़सठ तीर्थों का फल साधु-रेणु में आ जाता है

संत क्रिपा ते मिटे मोह भरम॥ साध रेण मजन सभ धरम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

दरसन देख भई मत पूरी॥ अठसठ मजन चरनह धूरी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 224

त्रिपत अघावन साचै नाए॥ अठसठ मजन संत धूराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 377

बैठत हर हर सोवत हर हर हर रस भोजन खाता॥
अठसठ तीरथ मजन कीनो साधू धूरी नाता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 532

संत मारग चलत प्रानी पतित उधरे मुचै॥
रेन जन की लगी मसतक अनिक तीरथ सुचै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1122

तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूर॥
लूक कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूर॥
थान थनंतर रव रहिआ प्रभ मेरा भरपूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 48

1.3. संत की धूलि से ही जीव जाग्रत होता है

प्रभ दइआल किरपाल हजूर॥ नानक जीवै संता धूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 676

हर रंग राता सद बैरागी हर निकट तिना घर आवैगो॥
तिन की पंक मिलै तां जीवा कर किरपा आप दिवावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

2. यह चरण धूलि किस प्रकार मिलती है?

2.1. मालिक की दया से

इह मन दे कीए संत मीता क्रिपाल भए बडभागीं॥
महा सुख पाइआ बरन न साकउ रेन नानक जन पागी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1267

जितनी स्रिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूर साधू की ताई॥
नानक लिलाट होवै जिस लिखिआ तिस साधू धूर दे हर पार लंघाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

आद जुगाद भगत जन सेवक ता की बिखै अधारा॥
तिन जन की धूर बाछै नित नानक परमेसर देवनहारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 532

नानक मंगै दान हर संता रेनार॥ होर दातार न सुझई तू देवणहार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 556

अंतरजामी सो प्रभ पूरा॥ दान दे साधू की धूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 563

धार अनुग्रह आप प्रभ स्वामी पत मत कीनी पूरी॥
सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 625

पारब्रहम जब भए दइआल॥ इह मन होआ साध रवाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 899

जतन जतन अनिक उपाव रे तउ मिलिओ जउ किरपाई॥
प्रभू दइआर क्रिपार क्रिपा निध जन नानक संत रेनाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1307

कहो नानक जो जन प्रभ भाए॥ ता की रेन बिरला को पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

2.2. पूर्व कर्मों और बड़े भाग्य से

जन की धूर मन मीठ खटानी॥ पूरब करम लिखिआ धुर प्रानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 199

संत धूर पाईऐ वडभागी॥ नानक गुर भेटत हर सिउ लिव लागी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 193-94

सतगुर की रेण वडभागी पावै॥ नानक गुर कउ सद बल जावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 741

जिन्ह के भाग बडे है भाई तिन्ह साधू संग मुख जुरे॥
तिन्ह की धूर बांछै नित नानक प्रभ मेरा किरपा करे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208

तिन की रेण मिलै तां मसतक लाई जिन सतगुर पूरा धिआइआ॥
नानक तिन की रेण पूरै भाग पाईऐ जिनी राम नाम चित लाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1131

बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम॥
तेरे चरणा तेरे चरण धूड़ वडभागी पावा राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

जितनी स्रिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूर साधू की ताई॥
नानक लिलाट होवै जिस लिखिआ तिस साधू धूर दे हर पार लंघाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

3. साधु यानी संतजन की धूलि क्या है? अमृत है, अमूल्य नाम है और वह मस्तक पर प्रकट होती है

सद सदा सिंम्रतब्य सुआमी सास सास गुण बोलई॥
बिनवंत नानक धूर साधू नाम प्रभू अमोलई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 691

अंम्रित नाम निधान भोजन खाइआ॥ संत जना की धूर मसतक लाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 652–53

केसा का कर बीजना संत चउर ढुलावउ॥
सीस निहारउ चरण तल धूर मुख लावउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 745

चरन कमल भगतां मन वुठे॥ विण परमेसर सगले मुठे॥
संत जनां की धूड़ नित बांछह नाम सचे का गहणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 109

अंम्रित नाम चलै जप नाला॥ नानक जाचै संत रवाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 744

कीमत कउण करे तेरी करते प्रभ अंत न पारावारी॥
नाम दान नानक वडिआई तेरिआ संत जना रेणारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 916

4. गोविंद की चरण धूलि

मेरै माथै लागी ले धूर गोबिंद चरनन की॥ सुर नर मुनि जन तिनहू ते दूर॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 694

5. संतों की संगति द्वारा यह दान मिलता है

अटल अखइओ देवा मोहन अलख अपारा॥
दान पावउ संता संग नानक रेन दासारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1006

6. चरण धूलि की प्राप्ति के फल

6.1. दु:ख-दर्द, शोक, वियोग दूर हो जाते हैं

किलबिख बिनासे दुख दरद दूर॥ भए पुनीत संतन की धूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 387

से धंन वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमत नाम धिआइआ॥
जन नानक रेण मंगै पग साधू मन चूका सोग विजोग जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 445

सगल दूख का डेरा भंना संत धूर मुख लाई॥
पतित पुनीत कीए खिन भीतर अगिआन अंधेर वंञाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

संतह धूर ले मुख मली॥ गुणा अचुत सदा पूरन नह दोख बिआपह कली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1121

6.2. हौमैं (अहंभाव) और काम-क्रोध का नाश

चरण रेण गुर की मुख लागी॥ अहंबुध तिन सगल तिआगी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

अहंबुध मन पूर थिधाई॥ साध धूर कर सुध मंजाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 200

गुर की रेण नित मजन करउ॥ जनम जनम की हउमै मल हरउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

साधू धूर लाई मुख मसतक काम क्रोध बिख जारउ॥
सभ ते नीच आतम कर मानउ मन मह इह सुख धारउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 532

6.3. पापों का नाश होता है, सब मैल दूर होता है और मन निर्मल होता है

तेरी सरण सतगुर मेरे पूरे॥ मन निरमल होए संता धूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 563

नेत्र पुनीत भए दरस पेखे हसत पुनीत टहलावा॥
रिदा पुनीत रिदै हर बसिओ मसत पुनीत संत धूरावा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212

गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करह उदम धूर साधू की ताई॥
किलविख मैल भरे परे हमरै विच हमरी मैल साधू की धूर गवाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

संत की धूर मिटे अघ कोट॥ संत प्रसाद जनम मरण ते छोट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 188-89

किलबिख बिनासे दुख दरद दूर॥ भए पुनीत संतन की धूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 387

जनम जनम के किलविख काटै मजन हर जन धूर॥
भाए भगति भरम भउ नासै हर नानक सदा हजूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 406

संत रेन नित मजन करै॥ जनम जनम के किलबिख हरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1300

साधू धूर करउ नित मजन सभ किलबिख पाप गवाइण॥
पूरन पूर रहे किरपा निध घट घट दिसटि समाइण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 979

धूर संतन की मसतक लाए॥ जनम जनम की दुरमत मल जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.897

गुर का नाम जपिओ दिन राती गुर के चरन मन धारिआ॥
गुर की धूर करउ नित मजन किलविख मैल उतारिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1218

संत की धूर लागी मेरै माथे॥ किलविख दुख सगले मेरे लाथे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.898

पाप बिनासन सेविआ पवित्र संतन की धूरे॥
सभ छडाई खसम आप हर जप भई ठरूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 133

जो नर उस की सरणी परै तिस कंबह पापै॥
जनम जनम की मल उतरै गुर धूड़ी नापै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1097

6.4. आशा-मनसा और मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं

जन की टहल संभाखन जन सिउ ऊठन बैठन जन कै संगा॥
जन चर रज मुख माथै लागी आसा पूरन अनंत तरंगा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.828

प्रभ करहो साधू धूर॥ नानक मनसा पूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.837

गुर चरण लागी सहज जागी सगल इछा पुंनीआ॥
मेरी आस पूरी संत धूरी हर मिले कंत विछुंनिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.846

कर किरपा हर मेलिआ मेरा सतगुर पूरा॥
इछ पुंनी जन केरीआ ले सतगुर धूरा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

धूड़ी मजन साध खे साई थीए क्रिपाल॥
लधे हभे थोकड़े नानक हर धन माल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 80

6.5. सुख की प्राप्ति

फिरत फिरत तुम्हरै दुआर आइआ भै भंजन हर राइआ॥
साध के चरन धूर जन बाछै सुख नानक इह पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 497

ओए हमारे साजना हम उन की रेन॥
जिन भेटत होवत सुखी जीअ दान देन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 813

चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे॥
साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

सुख मंगल आनंद हर हर प्रभ चरन अंम्रित सार॥
नानक दास सरनागती तेरे संतना की छार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1121

नमसकार रखनहार मन अराध प्रभू मेक॥
संत रेन करउ मजन नानक पावै सुख अनेक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1341

6.6. जीव जन्म-मरण से रहित हो जाता है

हर का नाम जपहो मेरे मीता इहै सार सुख पूरा॥
साधसंगत जनम मरण निवारै नानक जन की धूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 215

जन पारब्रहम जा की निरमल महिमा जन के चरन तीरथ कोट गंगा॥
जन की धूर कीओ मजन नानक जनम जनम के हरे कलंगा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 828

मन तन बाछीऐ जन धूर॥
कोट जनम के लहहे पातिक गोबिंद लोचा पूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 502

हर धूड़ी न्हाईऐ मैल गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे॥
अंतर बाहर सदा हदूरे परमेसर प्रभ साथे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

6.7. यम का भय और माया दूर हो जाती है

दरसन पेखत होए निहाल॥ जा की धूर काटै जम जाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 900

कहो नानक जिन धूर संत पाई॥ ता कै निकट न आवै माई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 182

6.8. सब जीवों का उद्धार होता है और मुक्ति पद मिलता है

नाए विसरिऐ ध्रिग जीवणा तूटे कच धागे॥
नानक धूड़ पुनीत साध लख कोट पिरागे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 322

पाप बिनासन सेविआ पवित्र संतन की धूरे॥
सभ छडाई खसम आप हर जप भई ठरूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 133

साधू धूर मुख मसतक लाई॥ नानक उधरे हर गुर सरणाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 744

तेरी सरण प्रभ दीन दइआला॥
महा बिखम सागर अत भारी उधरहो साधू संग रवाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 806

गुर सेवन सतगुर दाता हर हर नाम समाइआ राम॥
हर धूड़ देवहो मै पूरे गुर की हम पापी मुकत कराइआ राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 772

हर रंग राता मन राम गुन गावै॥ मुकतो साधू धूरी नावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

जन नानक कउ प्रभ किरपा करीऐ॥ साधू धूर मिलै निसतरीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 804

6.9. प्रभु सदा हाज़िर-नाज़िर दिखता है

होए पवित्र सरीर चरना धूरीऐ॥ पारब्रहम गुरदेव सदा हजूरीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 709

तेरिआ संत जना की बाछउ धूर॥ जप नानक सुआमी सद हजूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1183

इह मन होआ साध धूर॥ नित देखै सुआमी हजूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1184

6.10. इस लोक और परलोक में शोभा और दरगाह में मान मिलता है

जिन हर अरथ सरीर लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाए मुख धूड़ा॥
हलत पलत हर सोभा पावह हर रंग लगा मन गूड़ा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 698

सतगुर पग धूर जिना मुख लाई॥
तिन कूड़ तिआगे हर लिव लाई॥ ते हर दरगह मुख ऊजल भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 165

हर दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई॥
जन नानक मंगै धूड़ तिन जो गुर के सिख मेरे भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 310

6.11. सहज-सुख की प्राप्ति

सूख सहज आनंद घनेरे पतित पावन साधू धूरा॥
हर मिले नराइण नानका मानोरथो पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 454

हर हर नाम जपत सुख सहजे मजन होवत साधू धूरे॥
आवण जाण रहे थित पाई जनम मरण के मिटे बिसूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.825

जिना लगी प्रीत प्रभ नाम सहज सुख सार॥ नानक इक आराधे संतन रेणार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.962

सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा॥
कारज सगले सिध भए भेटिआ गुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.399

6.12. सच्चे पदार्थ की प्राप्ति

कर संग साधू चरन पखारै संत धूर तन लावै॥
मन तन अरप धरे गुर आगै सत पदारथ पावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.381

7. चरण धूलि विहीन के दोष

महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूर न पीजै॥
तिना तिसना जलत जलत नही बूझह डंड धरम राए का दीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1325

सुरत-शब्द योग

तवज्जुह, होश, ध्यान, रूह और आत्मा को सुरत कहते हैं। 'शब्द' धुनात्मक नाम है; 'योग' सुरत का शब्द के साथ मिलकर एक होना है। सुरत का स्रोत शब्द है। धुन को सुनकर सुरत बेइख़्तियार (विवश हो) उसकी ओर खिंची जाती है। धुन हर जगह गूँज रही है। जब तक सुरत या ध्यान न हो वह सुनाई नहीं देती। यह शब्द ऋषि-मुनियों की श्रुति (ध्वनि) है, उद्‌गीथ है (ऊपर का राग है)। यह शारीरिक या भौतिक राग नहीं, यह आत्मिक राग है। इसको सूफ़ी समाअ कहते हैं। यह सुरत द्वारा सुना जा सकता है। मुसलमान फ़क़ीर इसका सुलतान-उल-अज़कार (ज़िक्रों का बादशाह), सौते-सरमद, कलामे-हक़ और सौते-नसीरा (विजय दिलानेवाली आवाज़) कहकर भी वर्णन करते हैं।

पंजाबी में सुरत होश को कहते हैं। होश किसको होता है? चेतन पुरुष, जीव यानी आत्मा को। इस प्रकार सुरत, रूह या आत्मा का नाम पड़ गया है। शब्द का निर्णय कई प्रकरणों में आ चुका है (देखें: 'नाम', 'शब्द', 'वाणी', 'गुरुमंत्र' आदि के प्रकरण)। जोड़ या मेल को योग कहते हैं। इसलिए जिस विधि द्वारा सुरत शब्द में भीग सके और इस प्रकार जुड़े कि फिर न बिछुड़े तो ऐसे योग को सुरत-शब्द योग कहते हैं।

सुरत-शब्द योग सनातन है, परंपरा से चला आ रहा है और स्वाभाविक है। इसमें कोई कमी-बेशी नहीं की जा सकती। शब्द रचना के आदि में था, उससे ही यह रचना हुई। सुरत का उसके साथ स्वाभाविक संबंध है और शब्द में उसके लिए कशिश (आकर्षण) है, इसलिए उसकी साधना में कोई सख़्ती या कठिनाई नहीं। यह अनादि और अनंत है। योग अनेक प्रकार के हैं, इन योगों का उद्‌देश्य कुंडलिनी को जाग्रत करना है। ये सब पिंड के चक्रों से संबंधित हैं। संतों ने इनको स्वीकार नहीं किया है। हठयोग द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है, प्राणयोग (प्राणायाम आदि) द्वारा प्राणों पर नियंत्रण होता है और स्वास्थ्य और दीर्घायु प्राप्त होती है। मानसिक योग द्वारा मन को क़ाबू करके मनुष्य विचारवान हो जाता है और ज्ञानयोग बुद्धि को सूक्ष्म करके जीव और ब्रह्म की एकता को

समझाता है। ब्रह्मांड के छ: चक्रों का प्रतिबिंब अंड में है। अंड के छ: चक्रों का प्रतिबिंब पिंड में है। संतों ने निचले चक्रों को (जो प्रतिबिंब के भी प्रतिबिंब हैं) छोड़ दिया है और आज्ञा चक्र से शब्द का अभ्यास कराया है। उन्होंने सुरत-शब्द योग को ही मुख्य माना है। इसका काम सुरत को शब्द में जोड़ना और अशब्द, अकह और निराला में, जहाँ से यह शब्द प्रकट हुआ है, वहीं समाना है। जब तक सुरत साथ न हो तब तक कोई योग और संसार का कोई व्यवहार नहीं हो सकता। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं:

> जेही सुरत तेहा तिन राह॥
>
> आदि ग्रन्थ, पृ. 25

> सुरत होवै पत ऊगवै गुर बचनी भउ खाए॥
>
> आदि ग्रन्थ, पृ. 18

कबीर साहिब आदि सब संतों और गुरु नानक देव जी के घराने की दसों पातशाहियों ने सुरत-शब्द की ही शिक्षा दी है। सुरत-शब्द क्या है? यह नाम की कमाई का ही दूसरा नाम है:

> नानक नाम निरंजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई॥
> ता ते अंगद अंग संग भयो साइर तिन सबद सुरत की नीव रखाई॥
>
> भट्ट कीरति, आदि ग्रन्थ, पृ. 1406

और यही मालिक से मिलने का साधन है:

> पार साजन अपार प्रीतम गुर सबद सुरत लंघावए॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1113

सुरत-शब्द योग सरल है, इसमें और योगों की भाँति कष्ट नहीं उठाने पड़ते। इसलिए इसे सहजयोग भी कहा है। इसमें किसी प्रकार का बाहरमुखी परिश्रम नहीं करना पड़ता, केवल तवज्जुह यानी ध्यान द्वारा शब्द की धुन को सुनना है। बालक, वृद्ध, युवक, हर क़ौम, हर धर्म और हर देश का मनुष्य, स्त्री हो या पुरुष, इसका अभ्यास कर सकता है। इसके अभ्यास में हठयोग आदि के कष्ट नहीं सहने पड़ते। मनुष्य घर में रहकर, संसार के कामकाज करते हुए इसकी कमाई (अभ्यास) कर सकता है। इसको करने के लिए धर्म बदलने की ज़रूरत नहीं। हर एक मनुष्य, चाहे वह किसी क़ौम, देश, धर्म या संप्रदाय का हो, इसकी कमाई कर सकता है।

सुरत-शब्द योग का साधन

सुरत-शब्द योग के तीन अंग हैं– सिमरन, ध्यान और धुन (विस्तार के लिए इनके प्रकरण देखें)। किसी ख़याल (विचार) को बार-बार याद करने का नाम सिमरन है। इसके अभ्यास की पूर्ण युक्ति सतगुरु से प्राप्त होती है। सिमरन पहले वर्णात्मक होता है, फिर यह सुरत की जिह्वा द्वारा किया जाता है। जब यह पक (दृढ़ हो) जाता है यानी धारणा शक्ति जाग उठती है तो प्रकाश हो जाता है और सतगुरु की जमाली (ज्योतिर्मयी) और मनमोहिनी छवि प्रकट हो जाती है। यह स्वरूप हमें अपनी ओर खींचता है। इस प्रकार ध्यान या तसव्वुर बन जाता है। ध्येय, ध्यान और ध्याता एकरूप हो जाते हैं। जब शिष्य बार-बार सिमरन करता हुआ ख़याल को स्थिर करके अंदर ध्यान उस पर जमा लेगा, तब निरत उसके रूप को धारण करते हुए उसके असर को अपने अंदर जज़्ब करती जाएगी। इस प्रकार सुरत और निरत स्थिर हो जाएँगी और ध्यान के द्वारा धुन सुनाई देने लगेगी। अभ्यासी को चाहिए कि सुरत को गुरु की बताई हुई ख़ास आवाज़ पर ठहराए, बोलने की शक्ति सिमरन में समा जाए, देखने की शक्ति ध्यान में मग्न हो जाए और सुनने की शक्ति धुनात्मक नाम में लवलीन हो जाए। जिह्वा, आँखों और कानों, तीनों पर सिमरन, ध्यान और धुन के बंद लगा लें। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

सुमिरन सुरति लगाइ के, मुख तें कछु न बोल।
बाहर के पट देइ के, अंतर के पट खोल॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 88

तीनों बंद लगाय कर, नाम निरंजन लेय।
अंतर के पट सब खुलैं, जब बाहर के पट देय॥

प्राप्त नहीं

ये तीनों साधन नुक़्ता-ए-सुवैदा, अष्टदल कमल, दिव्य-चक्षु या शिवनेत्र पर किए जाते हैं जो दोनों भृकुटियों के बीच में है और जहाँ पिंड की अंतिम सीमा है। सुरत-शब्द योग की कमाई के लिए सबसे पहले किसी सतगुरु से दीक्षा लेना आवश्यक है। इस योग की कमाई, सत्संग में प्रफुल्लित होती है (देखें: 'सतगुरु' और 'सत्संग' के प्रकरण)। धुरधाम से मालिक की कृपा हो तब सतगुरु का मिलाप और सत्संग का लाभ प्राप्त होता है। सतगुरु के मिल जाने पर शिष्य को किसी शरीअत या कर्मकांड के रीति-रिवाजों को धारण नहीं करना पड़ता।

सतगुरु अपनी मेहर द्वारा शिष्य को अमली (क्रियात्मक) तौर पर सुरत-शब्द की सेवा में लगाते हैं:

करम होवै सतगुरू मिलाए॥ सेवा सुरत सबद चित लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 109-10

इस योग के लिए एकांत होना ज़रूरी है, जहाँ पर शोर-गुल न हो। एकांत होने के लिए सतगुरु एक पूर्ण युक्ति भी बख़्शते हैं, जिससे शिष्य शरीररूपी घर के बाहर के दरवाज़ों* को बंद करके एकांत में बैठता है और इस अभ्यास के लिए सुबह-शाम नियमित रूप से समय देना पड़ता है। इस समय में ख़याल को रूह (आत्मा) की बैठक पर इकट्ठा करना पड़ता है, जो सिर के अंदर आँखों के पीछे दोनों भृकुटियों के बीच की जगह की सीध में है, जिसे हिंदू तीसरा नेत्र और मुसलमान फ़क़ीर नुक़्ता-ए-सुवैदा कहते हैं। इसमें सिर की किसी स्नायु या रग (नस) पर दबाव या खिंचाव डालने की ज़रूरत नहीं। केवल इतना ही काफ़ी है कि तुम इस शरीर के अंदर उस स्थान पर बैठे रहो। यह वह ठिकाना है जिसका गीता (6:13 व 8:10) में भगवान ने नासिका के अग्रभाग का मध्य बताकर वर्णन किया है। यह अभ्यास करते हुए तुम सतगुरु द्वारा बख़्शे हुए सिमरन और उनके स्वरूप का ध्यान (देखें: 'सिमरन' और 'ध्यान' के प्रकरण) करो, इसके अलावा और कोई ख़याल (विचार) अंदर न आने दो, इस प्रकार सुरत को, जो शरीर के रोम-रोम में रची हुई है, समेटकर उस केंद्र पर एकत्रित करके उसी स्थान पर देखना है कि वहाँ क्या दृश्य हैं। यह किस प्रकार किया जाता है, इसकी पूरी युक्ति सतगुरु दीक्षा देने के समय शिष्य को बता देते हैं और उन ख़तरों और रुकावटों का, जो अभ्यास करते समय आती हैं, खोलकर वर्णन कर देते हैं ताकि शिष्य उनसे बच जाए और साथ ही ऐसे ख़तरों और रुकावटों के समय गुरु शिष्य को अपनी शक्ति द्वारा भी बचा लेते हैं:

बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतगुर सुख सहज सेती घर जाते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

इसलिए यह अभ्यास सतगुरु के मिलाप के बिना और दीक्षा प्राप्त किए बग़ैर केवल पुस्तकें पढ़कर या सुनकर करना ख़तरनाक है, (देखें: 'सतगुरु'

---

* नौ द्वार ये हैं– दो आँखें, दो कान, दो नाक के सूराख़, मुँह और नीचे के दो द्वार जिनके द्वारा रूह बाहर भटकती है।

का प्रकरण)। मौलाना रूम भी यही आदेश देते हैं कि तू पीर (गुरु) को ढूँढ़, क्योंकि बिना पीर के यह मार्ग आफ़तों, ख़ौफ़ों और ख़तरों से भरा हुआ है:

पीर रा बगुज़ीं किह् बे पीर ईं सफ़र, हस्त बस पुर आफ़तो-ख़ौफ़ो-ख़तर।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 308-309

इस अभ्यास के पूरा होने का चिन्ह क्या है? वह यह है कि शरीर की सुध नहीं रहेगी, सबसे पहले तो हाथ-पैर सुन्न हो जाएँगे, फिर शरीर के शेष अंग, यहाँ तक कि सुरत की नीचे की ओर की धाराएँ, जो सारे शरीर को जीवन दे रही हैं, सुरत के स्थान पर सिमटकर एकत्रित हो जाएँगी, सारा शरीर बेसुध हो जाएगा। जब तक मनुष्य नौ द्वारों से पूरी तरह ऊपर नहीं आता, वह ग़ैब (अदृश्य लोक) के नज़ारों (दृश्यों) से अनजान रहता है:

चूँ ज़ि हिस्स बेरूँ नयामद आदमी, बाशद अज़ तस्वीरे-ग़ैबी आअजमी।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 3, पृ. 106

कबीर साहिब भी फ़रमाते हैं कि जो रूह शरीर के नौ द्वारों में भटक रही है वह उस अनुपम वस्तु को नहीं पा सकती:

नउ घर देख जो कामन भूली बसत अनूप न पाई॥
कहत कबीर नवै घर मूसे दसवैं तत समाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 339

जो-जो शक्तियाँ नौ द्वारों में काम करती हैं, उनके दसवें द्वार पर आकर एकत्रित हो जाने पर रूहानी धुनें सुनाई देने लगती हैं और प्रकाश दिखाई देना शुरू हो जाता है, स्थूल इंद्रियों से संबंध टूटता है और सूक्ष्म देश के दृश्य देखने में आते हैं और सुरत, मन और बुद्धि की घड़त होती है:

तिथै घड़ीऐ सुरत मत मन बुध॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 8

मनुष्य की हर प्रकार की शक्ति बढ़ जाती है, उसकी सुरत और मन की शक्तियाँ भी बढ़ जाती हैं, बुद्धि तीक्ष्ण हो जाती है और शब्द की धुनें सुनकर सारे भुवनों के रहस्य प्रकट हो जाते हैं।

जब सिमरन द्वारा रूह सिमटकर तारा-मंडल, सूर्य, चंद्र, शिशुमार चक्र (जिसको वेद देवयान और पितृयान का मार्ग कहते हैं) को पार कर लेती है

तो गुरुदेव (गुरु का नूरी स्वरूप) मिलते हैं (देखें: 'गुरु' का प्रकरण) जो शिष्य के साथ हो जाते हैं और धुरधाम तक उसके अंग-संग रहते हैं। अब शिष्य का ध्यान स्थिर हो जाता है और सिमरन द्वारा यहाँ तक रसाई (पहुँच) हो जाती है तो इसके आगे सिमरन की अधिक आवश्यकता नहीं रहती। जब शिष्य गुरुदेव की आराधना और ध्यान करता हुआ दो से एकरूप होता चला जाता है, फ़ना-फ़ि-शैख़ होता जाता है। गुरवाणी में: *नानक आप छोड गुर माहे समावै॥* (गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 509) के वाक्य का इसी ओर संकेत है। इस प्रकार शिष्य की उच्च रूहानी मंज़िलों पर स्वयं ही रसाई होती चली जाती है।

जब बाहर सतगुरु की संगति प्राप्त होती है तो शिष्य सतगुरु के स्वरूप और उनके कमल-नयनों में अपनी आँखों द्वारा एकटक देखकर उनके अलौकिक जमाल और मिक़नातीसी (चुंबकीय) आकर्षण द्वारा ऊँचे दरजे की एकाग्रता को प्राप्त करता है, जिससे उसकी आत्मा सहज में ही शरीर को छोड़कर आंतरिक मंज़िलों पर चढ़ती है और वहाँ के दृश्य देखती है। इसके सिवाय आसानी से एकाग्र होने और आंतरिक रूहानी देशों की सैर करने के लिए और कोई साधन नहीं है। अब सिमरन और ध्यान पक्का हो जाता है और शब्द, जो पहले भी कुछ-कुछ सुनाई देता था, अब साफ़-साफ़ सुनाई देने लग जाता है। वह मन को मोहित और सुरत को मग्न करनेवाला होता है। सिमरन का काम रूह को आँखों के पीछे इकट्ठा करना है ताकि स्थूल देह का कूज़ा छूट जाए। ध्यान का काम रूह को ऊपर के मंडलों में स्थिर करना है, यह तवज्जुह को गुरु के नूरी स्वरूप में लगाने से होता है। धुन का काम रूह को ऊपरी मंडलों में ले जाने का है। जब शिष्य की रसाई नूरी स्वरूप तक हो जाए तो समझो कि उसकी आधी भक्ति हो गई। इसके बाद शिष्य के लिए ऊपरी मंडलों की चढ़ाई सरल और रसदायक हो जाती है। गुरुदेव अपनी नूरी किरणों और अलौकिक रसीली धुनों द्वारा शिष्य को साथ ले जाते हैं और सहस्रदल कमल (हज़ार बत्ती की रोशनी वाला कमल) के मुक़ाम में, जो सूक्ष्म मंडल का केंद्र और ज्योतिर्मय देश है, प्रवेश करते हैं। यहाँ पर अनगिनत ऋषि-मुनि और महात्मा मिलते हैं जो यहाँ की ज्योति पर मग्न हो रहे हैं। इस स्थान को ऋषि-मुनियों ने सहस्रार कहकर वर्णन किया है। इस मंडल में विरोधी शक्तियाँ (ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ) रुकावटें पैदा करती हैं, जिनको हटाकर गुरु सुरत को पार ले जाते हैं। इनका वर्णन संत-महात्माओं की वाणियों में मिलता है। तुलसीदास जी ने रामायण के उत्तर कांड (देखें: 'ज्ञान' और 'भक्ति' का प्रकरण) में किया है। इसके अलावा और कई रूहानी मंडलों को पार कराते हुए गुरुदेव शिष्य को सचखंड में पहुँचा देते हैं जो प्रलय और

महाप्रलय से परे है। यह सुरत-शब्द योग का संक्षिप्त वर्णन है। सुरत-शब्द योग की युक्ति, गुरु द्वारा किसी गुरुमुख को प्राप्त होती है और इसके द्वारा वह अपने निजघर, सचखंड पहुँच जाता है:

गुरमुख महली महल पछान॥ गुरमुख सुरत सबद नीसान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

सुरत-शब्द की कमाई का फल अति उत्तम है। इसकी कमाई द्वारा धुन और ज्योति प्रकट हो जाती है और तत्त्वज्ञान हो जाता है:

सुरत सबद साखी मेरी सिंङी बाजै लोक सुणे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 877

जोग जुगत गिआन भुगत सुरत सबद तत बेते जप तप अखंडली॥
ओत पोत मिल जोत नानक कछू दुख न डंडली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1322

सारे विकारों, भ्रमों और अहंभाव का नाश होता है:

करह बिकार विथार घनेरे सुरत सबद बिन भरम पइआ॥
हउमै रोग महा दुख लागा गुरमत लेवहो रोग गइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 906

परम सुख की प्राप्ति होती है:

राम नाम मन बेधिआ अवर कि करी वीचार॥
सबद सुरत सुख ऊपजै प्रभ रातउ सुख सार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62

जो सुरत-शब्द की कमाई करते हैं, उनको शब्द की ध्वनि संसार में लिप्त नहीं होने देती, इस प्रकार वे संसार सागर से पार चले जाते हैं:

जैसे जल मह कमल निरालम मुरगाई नै साणे॥
सुरत सबद भव सागर तरीऐ नानक नाम वखाणे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 938

जहाँ सुरत-शब्द का अभाव है वहाँ इसका उलटा समझ लो यानी दु:खों की अग्नि में जीव जलता है और मनुष्य जन्म अकारथ चला जाता है:

जनम पदारथ जूऐ हारिआ सबदै सुरत न पाई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1155

और फिर यम के जाल की फाँसी और चौरासी का भयानक चक्कर हर एक के सिर पर है।

इसलिए सुरत-शब्द के आसान अभ्यास द्वारा मनुष्य जीवन को, जो बड़े भाग्य से मिला है, सफल करना चाहिए।

गुरवाणी

1. सुरत क्या है?

यह चेतनता या होश है। सब जीव सुरत ही हैं। सच, शब्द या नाम की कमाई द्वारा सुरत जाग उठती है। जैसी सुरत हो, वैसा ही उसे गुरु मिलता है। गुरु और प्रभु से सुरत को शोभा मिलती है। यदि सुरती को सुरत (परम चेतनता) से जोड़ दिया जाए तो जीव भवसागर से पार हो जाता है। आगे आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण देखें।

एका सुरत जेते है जीअ॥ सुरत विहूणा कोए न कीअ॥
जेही सुरत तेहा तिन राह॥ लेखा इको आवहो जाह॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 24-25

सच मिलै सच ऊपजै सच मह साच समाए॥
सुरत होवै पत ऊगवै गुर बचनी भउ खाए॥
नानक सचा पातसाह आपे लए मिलाए॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

हर जीउ दाता भगति वछल है कर किरपा मंन वसाई॥
नानक सोभा सुरत दे प्रभ आपे गुरमुख दे वडिआई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

सुरती सुरत रलाईऐ एत॥ तन कर तुलहा लंघह जेत॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 878

2. सुरत-शब्द या सहजयोग नाम की कमाई है

नानक नाम निरंजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई॥
ता ते अंगद अंग संग भयो साइर तिन सबद सुरत की नीव रखाई॥

भट्ट कीरति, आदि ग्रन्थ, पृ. 1406

गुर का सबद मनै मह मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ॥
जो किछ करै भला कर मानउ सहज जोग निध पावउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 359

3. सतगुरु सुरत-शब्द की सेवा लेता है

करम होवै सतगुरू मिलाए॥ सेवा सुरत सबद चित लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 109–10

हर जन संत कर किरपा पग लाइण॥ गुर सबदी हर भज सुरत समाइण॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1133–34

जीअ जंत सगले तै मोहे बिन संता किनै न लाखी॥
नानक दास हर कीरतन राता सबद सुरत सच साखी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1227

मुकत भई बंधन गुर खोल्हे सबद सुरत पत पाई॥
नानक राम नाम रिद अंतर गुरमुख मेल मिलाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1255

4. सुरत-शब्द की कमाई के फल

4.1. शब्द की ध्वनि सुनाई देती है

सुरत सबद साखी मेरी सिंङी बाजै लोक सुणे॥
पत झोली मंगण कै ताई भीखिआ नाम पड़े॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 877

4.2. हौमैं रोग और भ्रमों का नाश होता है

करह बिकार विथार घनेरे सुरत सबद बिन भरम पइआ॥
हउमै रोग महा दुख लागा गुरमत लेवहो रोग गइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 906

4.3. दु:खों का नाश और सुख की प्राप्ति होती है

जोग जुगत गिआन भुगत सुरत सबद तत बेते जप तप अखंडली॥
ओत पोत मिल जोत नानक कछू दुख न डंडली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1322

गुर संत सभा दुख मिटै रोग॥ जन नानक हर वर सहज जोग॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1170

राम नाम मन बेधिआ अवर कि करी वीचार॥
सबद सुरत सुख ऊपजै प्रभ रातउ सुख सार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62

4.4. जीव भवसागर से पार हो जाता है

जैसे जल मह कमल निरालम मुरगाई नै साणे॥
सुरत सबद भव सागर तरीऐ नानक नाम वखाणे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 938

4.5. सुरत-शब्द मालिक से मिलने का साधन है

पार साजन अपार प्रीतम गुर सबद सुरत लंघावए॥
मिल साधसंगत करह रलीआ फिर न पछोतावए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1113

गुरमुख महली महल पछान॥ गुरमुख सुरत सबद नीसान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

4.6. जीव माया से बच जाता है

माखी राम की तू माखी॥
जह दुरगंध तहा तू बैसह महा बिखिआ मद चाखी॥
कितह असथान तू टिकन न पावह इह बिधि देखी आखी॥
संता बिन तै कोए न छाडिआ संत परे गोबिद की पाखी॥
जीअ जंत सगले तै मोहे बिन संता किनै न लाखी॥
नानक दास हर कीरतन राता सबद सुरत सच साखी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1227

5. सुरत-शब्द की कमाई न करने का फल

मनमुख बोले अंधुले तिस मह अगनी का वास॥
बाणी सुरत न बुझनी सबद न करह प्रगास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1415

डगरी चाल नेत्र फुन अंधुले सबद सुरत नही भाई॥
सासत्र बेद त्रै गुण है माइआ अंधुलउ धंध कमाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1126

सिंम्रिति सासत्र पड़ह मुनि केते बिन सबदै सुरत न पाई॥
त्रै गुण सभे रोग विआपे ममता सुरत गवाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

जगत उपाए तुध धंधै लाइआ भूंडी कार कमाई॥
जनम पदारथ जूऐ हारिआ सबदै सुरत न पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1155

गंधण वैण रता हितकारी सबदै सुरत न आई॥
रंग न राता रस नही बेधिआ मनमुख पत गवाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 596

दुंदर दूत भूत भीहाले॥ खिंचोताण करह बेताले॥
सबद सुरत बिन आवै जावै पत खोई आवत जाता हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1031

साकत नर सबद सुरत किउ पाईऐ॥ सबद सुरत बिन आईऐ जाईऐ॥
नानक गुरमुख मुकत पराइण हर पूरै भाग मिलाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042

गुरु या सतगुरु

गुरु क्या है और कौन है?

गुरु को जानना और उसकी हस्ती यानी असली सत्ता को समझना बहुत मुश्किल है। उसको समझने के लिए उसके जैसी ही आँखों की ज़रूरत है। किसी वली (संत) को कोई वली ही जान सकता है। तन-मन के पिंजरे में क़ैद जीव उसकी शान को क्या समझ सकते हैं। जब तक कि हम उतने ही ऊँचे न हों जितना कि वह है, हम उसको नहीं जान सकते:

एवड ऊचा होवै कोए॥ तिस ऊचे कउ जाणै सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.5

कूँजों की सार उनके साथ उड़नेवाली कूँजें ही जान सकती हैं, घुग्गियों और कौओं को क्या ख़बर कि कूँजें कौन-से देश से आती हैं और किस ओर उड़ानें भरती हैं। गुरु अलल पक्षी की भाँति आकाश में ही रहता है, धरती पर अपना काम पूरा करता है और फिर आकाश की ओर उड़ान भर लेता है।

वह तीन शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म और कारण), तीन गुणों, पाँच तत्त्वों, पच्चीस प्रकृतियों, मन और माया की मार से परे होता है। शम्स तब्रेज़ संत-सतगुरुओं के बारे में फ़रमाते हैं:

ईनक आँ मुगार्ं किह् ईशां बैज़ाहा ज़रीर्ं कुनन्द,
कुर्रा-ए-तंदे-फ़लक रा हर सहर गह ज़ीन कुनन्द।
चूं ब-ताज़न्द आसमाने-हफ़तमीं मैदां शवद,
चूं ब-ख़ुसपन्द आफ़ताबो-माह रा बालीं कुनन्द।
शम्स तब्रेज़ी हज़ाराँ कोरे-मादिर ज़ाद रा,
यक नज़र अज़ रहमते-ख़ुद जुमला रा रह बीं कुनन्द।

कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ.267

अर्थ: ये ऐसे मुर्ग़ (पक्षी) होते हैं, जो सोने का अंडा देते हैं। प्रतिदिन सुबह आकाश पर ज़ीन (काठी) डालकर सवार होते हैं। जब दौड़ दौड़ते हैं, सात आसमान उनके लिए मैदान बन जाता है। जब सोते हैं, सूर्य और चंद्र को सिरहाना बना लेते हैं अर्थात् तीनों लोकों के पार चौथे लोक में चले जाते हैं। वे हज़ारों जन्मों के (रूहानी) अंधों को एक मेहर-भरी नज़र से रूहानी रास्ते को देखने के क़ाबिल बना देते हैं।

वे ऐसी हस्तियाँ हैं जो पूर्ण मालिक के साथ अभेद हो चुकी हैं। वे मालिक के हुक्म से मनुष्य चोला धारण करती हैं ताकि जीवों का उद्धार करके उन्हें मालिक से मिला सकें। वे उन जीवों को, जो उनके उपदेश पर अमल करते हैं, मालिक से जोड़ देती हैं और अपने जैसा ही बना लेती हैं। ये हस्तियाँ सारे संसार पर दृष्टि रखती हैं। जिस प्रकार पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ इनसान दूर या पास, जहाँ भी आग जलती हो, देख सकता है, उसी प्रकार दूर या पास, जहाँ कहीं भी, निष्काम सेवा में लगे हुए और अंदर मालिक की सच्ची तड़प रखनेवाले जीवों को ये देख लेती हैं, उनकी सहायता करके उनको मालिक से जोड़ने का माध्यम (ज़रिया) बन जाती हैं। उनसे विशेष रहमतें प्राप्त करने के लिए ख़ास पात्र की ज़रूरत है। ज्यों-ज्यों पात्र तैयार होता जाता है, रूहानियत से भरता जाता है। वे आत्मिक शक्तियों के भंडार को खुले दिल से बाँटनेवाले ऐसे शाह होते हैं, जिनकी कृपा से जीव तरक़्क़ी करके जल्दी मालिक तक पहुँच जाते हैं।

भले ही वे हमारी तरह शरीरधारी होते हैं और हमारे बीच रहते हैं, पर उनकी आत्मा सारे खंडों-ब्रह्मांडों के मालिक के साथ रहती है। वे शरीर से पृथ्वी से बँधे नज़र आते हैं, पर उनकी आत्मा सात आसमानों के पार रहती है:

तन मयाने-ख़ल्क़ ओ जां नज़्दे-ख़ुदावँदे-जहाँ,
तन गरिफ़्तारे-ज़मीन ओ रूह बर हफ़्त आसमां।

दीवाने-ग़रीब नवाज़, पृ. 175

बाहर से उन्होंने इनसानी जामा पहना होता है पर अंतर में वे कुछ और ही होते हैं। मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

औलिया रा बर क़यासे-ख़ुद मगीर। गरचिह् मानद दर नविश्तन शेर ओ शीर।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 58

अर्थात्, वलियों (संतों) को तू अपनी बुद्धि के अनुसार न समझ, क्योंकि जैसे शेर और शीर लफ़्ज़ एक ही प्रकार लिखने में आते हैं सिर्फ़ ज़ेर का फ़र्क़ है, एक शेर है जो चीरकर खा जानेवाला जानवर है और दूसरा शीर दूध है, जो आधार देनेवाली चीज़ है।

इस प्रकार सभी मनुष्य देखने में एक से नज़र आते हैं पर उनमें जो फ़र्क़ है वह उनके अंदर की आत्मिक रसाई है, जिसके द्वारा मनुष्य का जन्म सफल हो जाता है, मोह का ताप मिट जाता है, सब भ्रमों का नाश हो जाता है और जीवन का सच्चा आधार मिल जाता है।

हम गुरु की क्या महिमा कर सकते हैं! वह तो सच और विवेक का समुद्र है। वह आदि, युगादि, युग-युग में पूर्ण परमेश्वर है:

गुर की महिमा किआ कहा गुर बिबेक सत सर॥
ओह आद जुगादी जुगह जुग पूरा परमेसर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 397

कुलमालिक की स्तुति कर सकना असंभव है। गुरु उसी का ज़ुहूर (प्रकाश) है, इसलिए उसकी महिमा कर सकना भी असंभव है। वह मालिक की भाँति ही अनुमान, कल्पना और ख़यालों की पहुँच से परे है। वह देखने, सुनने और कहने की क़ैद से बाहर है। ग्रंथों पर ग्रंथ लिखे जाएँ और लिख-लिखकर आयु समाप्त हो जाए, पर हम उसकी ज़ात का एक अक्षर भी बयान नहीं कर सकते:

ऐ बरतर अज़ क़यास ओ ख़्यालओ गुमानओ वहम,
वज़ हरचिह् दीदा एम शुनीदेमओ ख़्वान्दा एम।
दफ़्तर तमाम गश्त ब-पायाँ रसीद उमर,
मा हमचुनाँ दर अव्वले-हर्फ़े तूमान्दा एम।

नुक़ाते-दीवाने-शम्स तब्रेज़ी, पृ. 30

कबीर साहिब कहते हैं कि यदि सारी धरती को काग़ज़ बना लिया जाए, सारे वृक्षों की क़लमें और सारे समुद्र की स्याही हो और लिखने लगें, फिर भी हम गुरु की महिमा नहीं लिख सकेंगे। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

सब धरती कागद करूँ, लेखनि सब बनराय।
सात समुँद की मसि करूँ, गुरु गुन लिखा न जाय॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 2

सहजो बाई ने भी कुछ इसी प्रकार लिखा है:

सब परबत स्याही करूँ, घोलूँ सुमुँदर जाय।
धरती का कागद करूँ, गुरु अस्तुति न समाय॥
सहजो बाई की बानी, पृ.3

वे तो रूहानी बादशाह होते हैं। हम माया के दर-दर के भिखारी उनकी शान को क्या जान सकते हैं! मौलाना रूम लिखते हैं कि यदि मैं क़यामत तक उनकी स्तुति करता रहूँ तो भी उनकी महिमा पूरी नहीं हो सकती:

गर बिगोयम ता क़यामत नअते-ऊ, हेच आँ रा ग़ायतो-मक़्तअ मजू।
मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 311

यदि हम कुछ कहें भी तो अपनी बुद्धि के अनुसार ही (उसका वर्णन करेंगे) कहेंगे। एक भैंस यदि उसका अनुमान करे भी तो वह उसका एक बड़ी भैंस के रूप में ही वर्णन करेगी। शाह और भैंस की क्या तुलना। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं, "तू तो सुल्तान है, शाहों का शाह है, हम तुझे मियाँ कहकर पुकारते हैं, इसमें तेरी क्या बड़ाई है, यह तो एक प्रकार से तेरा निरादर ही है।"

तू सुलतान कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 795

यदि एक छोटा बच्चा अपनी प्रिय माता के सामने खड़ा होकर बोले, 'माता, मैं तुझे जानता हूँ' वह अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार तोतली बोली में उसकी महिमा गाता है, तो वह कितनी अधूरी और तुच्छ होगी। इसी प्रकार हम जीव गुरु की क्या महिमा गा सकते हैं। यदि कुछ कहेंगे भी तो वह कितनी तुच्छ होगी।

सौभाग्य की बात है कि ऐसी हस्तियाँ जब-जब संसार में प्रकट होती हैं, वे स्वयं अपने बारे में संकेत देती जाती हैं। सत्य है, जब तक वे स्वयं अपनी ख़बर न दें, मोह-माया में सोए हुए जीव उनको क्या जान सकते हैं! आओ, हम उनसे ही पूछते हैं कि गुरु क्या है और कौन है? वे कहते हैं:

1. शब्द गुरु है

शब्द कुलमालिक के साथ अभेद है; यह उसी महाभंडार की एक चेतनधारा है जिसने सारी सृष्टि की रचना की है और जो उसके अंदर पूर्ण रूप से मौजूद है। इसी शब्द से सारी सृष्टि प्रकट हुई:

तेरा कवण गुरू जिस का तू चेला॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 942

सबद गुरू सुरत धुन चेला॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 943

सबद गुर पीरा गहिर गंभीरा बिन सबदै जग बउरानं॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 635

बाणी गुरू गुरू है बाणी विच बाणी अंम्रित सारे॥
गुर बाणी कहै सेवक जन मानै परतख गुरू निसतारे॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ पृ. 982

तुलसी साहिब फ़रमाते हैं:

सुरति सिष्य सब्दै गुरू, मिलि मारग जाना हो॥
लखि अकास औंधा कूआँ ता में सुरति समाना हो।
घट रामायण, भाग 2, पृ. 176

भाई गुरदास जी कहते हैं:

सबदु गुरू गुर जाणीऐ गुरमुखि होइ सुरति धुन चेला।
वारां भाई गुरदास, 7:20

कबीर साहिब ने भी इसके बारे में फ़रमाया है:

गुरू तुम्हारा कहाँ है, चेला कहाँ रहाय।
क्यों करिके मिलना भया, क्यों बिछुड़े आवे जाय॥
गुरू हमारा गगन में, चेला है चित माहिं।
सुरत सबद मेला भया, बिछुड़त कबहूँ नाहिं॥
कबीर साखी-संग्रह, पृ. 5

सबद गुरू को कीजिये, बहुतक गुरू लबार।
अपने अपने लोभ को, ठौर ठौर बटमार॥
कबीर साखी-संग्रह, पृ. 93

यह शब्द सारे संसार का गुरु है (विस्तार के लिए 'शब्द' और 'वाणी' के प्रकरण देखें।)

2. जिस पवित्र हस्ती के अंदर शब्द गुरु का ज़ुहूर है; वह शब्द से अभिन्न है। वही संत है जो गुरु दीक्षा का काम कर सकता हो। शब्द कुलमालिक का ज़ुहूर (प्रकाश) है और वह संतों के अंदर प्रकट है इसलिए संत भी मालिक से अभिन्न हैं।

समुंद विरोल सरीर हम देखिआ इक वसत अनूप दिखाई॥
गुर गोविंद गोविंद गुरू है नानक भेद न भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

शब्द की कमाई करनेवाले का नाम गुरु है, इसकी असलियत का पता गुरु पद से ही लगता है। गुरु संस्कृत का पद (शब्द) है। गुरु 'गृ' धातु से बना है, जिसका एक अर्थ है उपदेश देना या बोलना, शब्द का उच्चारण करना। शब्द देनेवाले, शब्द अभ्यास करनेवाले, शब्द के साथ संबंध रखनेवाले का नाम गुरु है।

गुरवाणी में गुरु की यही परिभाषा दी गई है और ऐसे गुरु की शरण में जाने का बार-बार उपदेश है:

- सो गुर करउ जे साच द्रिड़ावै॥ अकथ कथावै सबद मिलावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 686

अर्थ: ऐसा गुरु करो जो सच को दृढ़ करवा सके:

नानक साचे कउ सच जाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 15

जो है तो अकथ, पर हमको अनुभव करा दे यानी शब्द के साथ मिला दे। कबीर साहिब फ़रमाते हैं कि जो अलख को लखा दे वह संत-सतगुरु है:

भाई कोई सतगुर संत कहावै। नैनन अलख लखावै॥

कबीर साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 3

पूरा सतगुरु शब्द को सुनाता है:

> सतगुर पूरा सबद सुणाए॥ अनदिन भगति करहो लिव लाए॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1055

कबीर साहिब भी यही फ़रमाते हैं:

> साधु साधु सबही बड़े, अपनी अपनी ठौर।
> सबद बिबेकी पारखी, ते माथे के मौर॥
>
> कबीर साखी-संग्रह, पृ. 119

> गुरू गुरू में भेद है, गुरू गुरू में भाव।
> सोई गुरु नित बंदीऐ, (जो) सबद बतावै दाव॥
>
> कबीर साखी-संग्रह, पृ. 12

तुलसी साहिब ने भी गुरु की यही पहचान दी है:

> सबद भेद साखी लखै, सोइ साध सुज़ाना हो॥ टेक॥
> अगम निगम गम चीन्ह कै, बानी पहिचाना हो।
>
> घट रामायण, भाग 2, पृ. 176

स्वामी जी महाराज ने भी गुरु की पहचान इसी प्रकार दी है:

> गुरु सोई जो शब्द सनेही। शब्द बिना दूसर नहिं सेई॥
> शब्द कमावे सो गुरु पूरा। उन चरनन की हो जा धूरा॥
>
> सारबचन छन्द-बन्द, 13:1:1-2

सतगुरु सच्चा वैद्य है जिसके पास सच्चे नाम यानी शब्द की जीवन बूटी है। सतगुरु शब्द का दाता है और शब्द ही सुरत को अपने स्रोत में पहुँचाने का साधन है, जो थियोसॉफ़ी वालों का 'वॉयस ऑफ़ द साइलेंस' है और खंडों-ब्रह्मांडों में गूँज रहा है।

संतों की वाणी में शब्द के अभ्यास की शिक्षा देनेवाले को ही गुरु माना है। ऐसी हस्ती के बिना शब्द (नाम) प्राप्त नहीं हो सकता। जब यह शब्द मिल जाता है तो जीव कुलमालिक में, जिससे यह शब्द की धारा निकली है, समा जाता है और उसका सारा परिश्रम सफल हो जाता है:

सबद मिलह ता हर मिलै सेवा पवै सभ थाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

गुरु में मालिक स्वयं शब्द रूप होकर समाया हुआ है और शब्द का प्रसार कर रहा है:

गुर मह आप समोए सबद वरताइआ॥ सचे ही पतीआए सच समाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1279

गुरु शब्द के अंदर समाया हुआ है:

नानक आद अंगद अमर सतगुर सबद समाइअउ॥
धन धंन गुरू रामदास गुर जिन पारस परस मिलाइअउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1407

शब्द ने देह धारण की और हमारे बीच में रहा।

बाइबल, जॉन 1:14

सब मनुष्य गुरु से शब्द प्राप्त करते हैं, जो सच्ची ज़िंदगी है, पर वह स्वयं अपने आप में जीवन है। हौंमैं से रहित होने के कारण उसके द्वारा शब्द ही बोलता है। वह शारीरिक मौत की घाटी को पार कर चुका होता है (देखें: 'जीते-जी मरना' का प्रकरण) और उस मालिक की ज़िंदगी को प्राप्त कर चुका होता है जो शब्द के अंदर प्रसार कर रही है, वह स्वयं उस ज़िंदगी (आत्मिक जागृति) को देने में समर्थ है।

सुरत माया की जड़ता में ग्रसी हुई है। हमको जीवित यानी चेतन करने के लिए इसके अंदर शब्द के प्राण फूँके जाने की आवश्यकता है, ताकि वह शब्द जो हर जीव में गुप्त रूप में है, प्रकट हो जाए। यह कार्य गुरु के अलावा और किसी से नहीं हो सकता। गुरवाणी कहती है कि गुरु द्वारा ही शब्द अंदर ठहरता है:

पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुख होए॥
गुर का सबद गुर थै टिकै होर थै परगट न होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

शब्द की प्राप्ति गुरु की पवित्र दात है। यह मेहनत का फल नहीं। हद यानी सीमाओं के अंदर किए हुए कर्मों का फल, शब्द किस प्रकार हो सकता है? वह तो इन सीमाओं से परे है। मानरहित, मासूम बालक जब माता की ओर जाने की कोशिश करता है तो माता प्रेमपूर्ण भाव से बालक को उठा लेती है:

घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आए अचिंता॥
जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुर तिन गुरह कमानो मंता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 672

इसका यह अर्थ नहीं कि शिष्य परिश्रम करना छोड़ दे। गुरु की आज्ञानुसार परिश्रम अवश्य करे पर प्राप्ति उसकी दया और मेहर से होती है:

जिन कंउ सतगुर भेटिआ से हर कीरत सदा कमाहे॥
अचिंत हर नाम तिन कै मन वसिआ सचै सबद समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 592

अनहद वाणी यानी नाम है तो हमारे अंदर, पर हम स्वयं उसे नहीं ले सकते, क्योंकि मालिक ने उसकी कुंजी संतों के हाथ में दी हुई है:

अनहद बाणी पूंजी॥ संतन हथ राखी कूंजी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 893

बिन गुर नाम न पाइआ जाए॥ सिध साधिक रहे बिललाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

गुरु के जीवन का आधार शब्द है जो प्राणों का भी आधार है। वे रूहानी ज़िंदगी के पानी में तैरते हैं और जीवों को उसमें स्नान करवाकर जीवन-दान देते हैं। उनके अंदर प्रकाश हो चुका है और वे मालिक के बालक होने का अनुभव कर चुके हैं। ईसा मसीह फ़रमाते हैं, "मैं प्रभु का पुत्र हूँ।" गुरवाणी कहती है कि मालिक वही करता है जो संत उससे करवाना चाहते हैं:

हर सो किछ करे जे हर किआ संता भावै॥
कीता लोड़न सोई कराइन दर फेर न कोई पाइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1076

मौलाना रूम फ़रमाते हैं कि संतों को मालिक द्वारा इतनी शक्ति प्राप्त है कि वे चले हुए तीर को मार्ग में से लौटा दें:

औलिया रा हस्त क़ुदरत अज़ इलाह, तीर जस्ता बाज़ आरंदश ज़ि राह।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 189

क्या संत मालिक के शरीक या प्रतिद्वंद्वी होते हैं? नहीं, नहीं! मालिक संतों के वश में होता है क्योंकि उन्होंने उसे प्रेम द्वारा बाँध लिया है। जो कुछ मालिक करना चाहता है वह संतों की मार्फ़त करता है। इस संसार में संत उसके एजेंट या अफ़सर हैं, जो उसका काम करते हैं। पलटू साहिब फ़रमाते हैं कि मालिक के घर और कोई कारकुन (प्रबंधकर्ता) नहीं है, संत नाम के स्नेही हैं, जो कुछ वे करना चाहें वही होता है:

पलटू घर में राम के और न करता कोय।
राम समीपी संत हैं वे जो करैं सो होय॥

पलटू साहिब की बानी, भाग 1, कुं. 25

गुरवाणी में संतों को 'बाल सुभाव अतीत उदासी' कहा है। मौलाना रूम भी फ़रमाते हैं कि सभी संत-महात्मा हक़ के बालक होते हैं, वे मालिक से अपने इस संबंध को जानते हैं और बालक होने के हक़ (अधिकार) को जानते हैं। उनमें मालिक के सब गुण समाए हुए होते हैं।

औलिया अतफ़ाले-हक़्क़ अंद ऐ पिसर, गायबी ओ हाज़िरी बस बा ख़बर।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 3, पृ. 167

अर्थ: संत मालिक के बच्चे हैं, जो कुछ प्रकट है और जो कुछ गुप्त है सबका ज्ञान उनको होता है। जो कुछ वे बोलते हैं, मालिक ही उनके अंदर बोलता है:

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 722

इस संसार में, वे संतों के रूप में जीवों के उद्धार का कारण बनते हैं। जीवित गुरु, सृष्टि की आशा, संसार का प्रकाश और जीवों को तन-मन की क़ैद से मुक्त करानेवाला सच्चा तारनहार होता है। वह शब्द के प्रताप से इन सारी सीमाओं और बंधनों से मुक्त होता है और जीवों को जन्म-मरण के तूफ़ानी समुद्र में से निकालकर अंतर्मुख, अमर पद के किनारे पर पहुँचा देता है। शब्द और गुरु में

अभिन्नता है। गुरु बाहर से देहधारी है। वह देहस्वरूप धारण करके उपदेश देता है और जीवों को समझाता बुझाता है। यदि तुम सूक्ष्म देश में जाओ तो गुरु में यह सामर्थ्य है कि वह वहाँ पर सूक्ष्म देह धारण करके तुम्हारे साथ रहे। कारण देश में पहुँचो तो वह कारण देह धारण करके वहाँ तुम्हारी सहायता करता है। वह सब अवस्थाओं को पार कर चुका है, इसलिए उन देशों में भी तुम्हारी सहायता कर सकता है। वह तब तक विश्राम नहीं लेता जब तक वह तुम्हें शब्द में लीन नहीं कर देता, जो उसका असली स्वरूप है।

जिस हस्ती ने सत्पुरुष को जान लिया, वह गुरु है। वह प्रलय, महाप्रलय के पार पहुँच गया है तथा औरों को भी वहाँ ले जाने में समर्थ है। केवल ऐसी हस्तियों की संगति से ही जीव का उद्धार हो सकता है:

सत पुरख जिन जानिआ सतगुर तिस का नाउ॥
तिस कै संग सिख उधरै नानक हर गुन गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

गुरुओं के दर्जे

गुरु चार प्रकार के होते हैं–माता, पिता, आचार्य और सतगुरु। इन सब में से सतगुरु ही सच्चा गुरु है जिसका संबंध केवल पारमार्थिक है। सांसारिक और धार्मिक गुरु को आचार्य कहते हैं, जो कुछ सामाजिक और कुछ आत्मिक धर्म की शिक्षा देते हैं। इसमें विद्या देनेवाले गुरु भी शामिल हैं।

सतगुरु, संत-सतगुरु को कहते हैं, उनका शिष्य के साथ केवल आत्मिक संबंध है। वे केवल परमार्थ की शिक्षा देते हैं।

आत्मिक मंडलों की चढ़ाई के अनुसार गुरु तीन श्रेणियों में बाँटे जा सकते हैं: 1. साध-गुरु 2. सतगुरु और 3. परम संत-सतगुरु। साध-गुरु उस महात्मा का नाम है जो ओंकार (त्रिकुटी) या सूफ़ियों के लाहूत पद के परे चला गया है या मुसलमानी परिभाषा के अनुसार मुक़ामे हू को पार कर चुका है, जिसने रूह को सब मैलों से शुद्ध कर लिया है। जिसने तीन गुण, पाँच तत्त्व, पच्चीस प्रकृति, मन और माया के परदे, जिनके द्वारा यह रूह ढकी हुई है, उतार दिए हों:

साध की उपमा तिहु गुण ते दूर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 272

उसने अपने आप को पहचान लिया है कि वह कुलमालिक का अंश है और उसमें समा जाने का यत्न करता है।

संत वह हस्ती है, जिसने प्रलय, महाप्रलय अर्थात् ब्रह्म, पारब्रह्म के प्रभाव से परे सचखंड या मुक़ामे हक़ में निवास कर लिया हो।

परम संत वे हैं जो कबीर साहिब के अनामी, गुरु साहिब के निराले, महादयाल यानी स्वामी पद में समाकर उस सबसे ऊँची हस्ती से एक हो गए हों।

संत और परम संत में कोई बड़ा भेद नहीं है। जो सचखंड में पहुँच गया है वह नीचे के सब मंडलों को पार कर चुका है। केवल कहने-सुनने के लिए यह भेद है। इनमें से जिसको आत्मिक शिक्षा देने का अधिकार हो और जिसको मालिक इस कार्य के लिए नियत करे, केवल वही गुरु पद का अधिकारी हो सकता है। साध-गति, संत-गति या परम संत-गति वाले को यदि मालिक गुरु पद का अधिकार बख़्शें तो उनको साध-गुरु, संत-सतगुरु या परम संत-सतगुरु कहा जाता है। साध, संत या परम संत तो कई हो सकते हैं, पर इनमें से गुरु पद का अधिकार मालिक की ओर से किसी-किसी को ही प्रदान किया जाता है। सब पूर्ण गुरु संत होते हैं, पर सारे संत गुरु नहीं होते। जिस प्रकार बी.ए., एम.ए. पास कई होते हैं पर मास्टर या प्रोफ़ेसर कोई-कोई ही होता है। इसी प्रकार परमार्थ की कमाई करनेवाले सारे ही गुरु नहीं बनते, उनमें से कोई-कोई ही गुरु होता है।

गुरु संसार में मालिक के प्रबंधकर्ता या वाइसरॉय (प्रतिनिधि) होते हैं। गुरु दो प्रकार के हैं–एक तो स्वतः संत-सतगुरु जो जन्म से ही वली (संत) होते हैं; वे सीधे दयाल देश से ही आते हैं, जैसे कबीर साहिब, गुरु नानक साहिब आदि। ये हस्तियाँ जब आती हैं, परमार्थ का प्रवाह आरंभ कर जाती हैं। उनकी परंपरा में कई गुरुमुख गुरु होते हैं जो उस परंपरा को जारी रखते हैं। कुछ पीढ़ियों के बाद यह कार्य घटता-घटता बिलकुल ख़त्म हो जाता है। फिर कोई और ऐसी हस्ती कहीं और आकर परमार्थ का अथाह प्रवाह चला जाती है। ऐसे संत-सतगुरु प्रायः हर एक क़ौम में आते रहे हैं। दूसरे वे हैं जिन्होंने इस मृत्युलोक में कमाई करके अनामी पद तक रसाई की है, जिनके अंदर इस काम की योग्यता है और गुरु पद की नियुक्ति मालिक से प्राप्त हो गई है। ये लोग बनाने से नहीं बनते, बने हुए आते हैं। केवल नाममात्र के लिए ही इस जन्म में पूर्ण होते दिखाई देते हैं। गुरमुख लोग वे होते हैं जो कई जन्मों से पूर्ण हो रहे हैं:

> कहु कबीर हम धुर के भेदी लाए हुकम हजूरी॥
>
> प्राप्त नहीं

> पहिला बाबे पाया बखस दरि, पिछो दे फिरि घाल कमाई।
>
> वारां भाई गुरदास, 1:24

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 722

तात्पर्य यह है कि पहले वाले संत-सतगुरु तो गुरु पद का आदेश लेकर आते हैं और दूसरों को गुरु पद का आदेश यहाँ दिया जाता है। पर दोनों के दर्जे, ज्ञान और काम में कोई भेद नहीं होता। वे पूरी शक्ति के मालिक होते हैं और ज़रूरत के समय आवश्यकतानुसार उन शक्तियों का प्रयोग भी करते हैं।

इनको छोड़कर जो बाक़ी लोग गुरवाई (गुर पद) का काम कर रहे हैं, वे इनके नक़लची होते हैं। इस श्रेणी में कई स्वार्थी, माया और प्रशंसा के पुजारी और दुनिया के ग़ुलाम आ जाते हैं, जो परमार्थ के खोजियों को अपनी विद्या के ज़ोर या अन्य अनेक आडंबरों द्वारा अपने स्वार्थ का बोझा ढोनेवाले जानवर बना रखते हैं। तंगदिली और धार्मिक पक्षपात केवल ऐसे ही लोगों की शिक्षा का परिणाम है। ऐसे लोग बड़े ख़तरनाक हैं। वे गुरु पद को, जो ऊँचे से ऊँचा काम है, अपनी मनमानी करतूतों द्वारा बदनाम करते हैं, जिसे आज गुरुडम कहा और सुना जाता है। (देखें: डिंभी गुरु' का प्रकरण)।

गुरु एक है या अनेक?

शब्द सारे संसार का गुरु है और सुरत चेला है, जो उससे अभेद होकर गुरु से एक हो रहता है। आलमे-वहदत यानी अद्वैत की हालत में तो वह एक स्वयं ही शब्द रूप में सारे संसार का गुरु है, पर आलमे-कसरत यानी अनेकता की इस रचना में जिस पवित्र हस्ती में वह प्रकट है और जिसको गुरु पद का अधिकार मालिक ने प्रदान किया है, वही गुरु का काम करती है। कबीर साहिब फ़रमाते हैं: कह कबीर हम धुर के भेदी लाए हुकम हजूरी। (प्राप्त नहीं) गुरु नानक साहिब कहते हैं:

ढाढी सचै महल खसम बुलाइआ॥
सची सिफत सालाह कपड़ा पाइआ॥
सचा अंम्रित नाम भोजन आइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 150

ये दोनों (कबीर साहिब और गुरु नानक साहिब) परम संत-सतगुरु थे। इतिहास बताता है कि कबीर साहिब का जन्म संवत् 1455 वि. (सन 1398 ई.) जेठ की पूर्णमासी को सोमवार के दिन बनारस में हुआ और संवत 1575 वि. (1518 ई.)

में आप ज्योति-जोत समा गए। गुरु नानक साहिब ने वैशाख सुदी तीज संवत् 1526 वि. (अप्रैल 15, 1469 ई.) को तलवंडी में अवतार लिया और आसोज सुदी 10, संवत् 1595 वि. (सितंबर 18, 1538 ई.) को करतारपुर में ज्योति-जोत समा गए। इससे पता लगता है कि कबीर साहिब गुरु नानक साहिब से 71 वर्ष पहले प्रकट हुए और 1469 ई. से 1518 ई. तक समकालीन रहे और सुरत-शब्द का प्रचार करते रहे। इसी प्रकार शम्स तब्रेज़ और मौलाना रूम साहिब 604 हिजरी (1207 ई.) से हिजरी 645 (1247 ई.) तक एक साथ रहे। गुरु अंगद साहिब और दादू साहिब संवत् 1561 वि. से 1609 वि. (1504 ई. से 1552 ई.) तक समकालीन थे और गुरु अर्जुन साहिब और धर्मदास जी (1561 ई. से 1606 ई. तक) समकालीन थे। इस प्रकार एक समय में कई गुरु हो सकते हैं, पर एक मनुष्य के गुरुमुख होने के लिए केवल एक ही गुरु होना आवश्यक है, जिस प्रकार सौभाग्यवती स्त्री का एक ही पति होता है और वह उसी का ध्यान करती है। अनेक पतियों वाली स्त्री व्यभिचारिणी कहलाती है:

यके दां ओ यके बीन ओ यके गोए, यके ख्वां ओ यके चीं ओ यके जूए।

अर्थ: एक को ही जान, एक को ही देख, एक ही के गुण गा, एक ही को मान और एक ही को चुन और एक ही को ढूँढ़।

एक शिष्य या मुरीद के लिए एक ही गुरु या पीर होना चाहिए। मान लो कि दीक्षा लेने के बाद गुरु चोला छोड़ जाए, तब भी उसी गुरु का ध्यान करने से शिष्य का काम पूरा होता जाएगा। गुरु जिस समय नाम बख़्शता है, उसी समय वह शिष्य के साथ हो जाता है। वह शिष्य के घट में बसता है। वही शिष्य का आदर्श रहेगा, उसी से शिष्य का काम बनता जाएगा, आंतरिक अनुभव प्राप्त होगा, कभी किसी बात की कमी नहीं रहेगी। गुरु मरता नहीं वह केवल शरीर का चोला छोड़ता है। गुरु के चोला त्याग देने पर शिष्य अपने गुरु के उत्तराधिकारी के सत्संग और उसकी सेवा से लाभ उठा सकता है, पर अंतर्मुख संबंध अपने गुरु के साथ, जिससे कि वह दीक्षित हुआ है, रखना चाहिए और अभ्यास के समय उसी का ध्यान करना चाहिए। गुरु, जो घट-घट में व्याप्त है, स्वयं उसकी सँभाल करेगा।

वक़्त का गुरु

वक़्त का गुरु वह है जो अभी जीवित है और शिष्य का उससे संबंध बना हुआ है और पुरातन गुरु वह है जो पिछले समय में गुरु था पर अब मौजूद नहीं है।

दोनों ही की अपनी-अपनी जगह आवश्यकता है। पिछले गुरुओं के इतिहास और उनकी अनमोल वाणियों को पढ़कर हमें वक़्त के गुरु की आवश्यकता और उसके मिशन (जीवन-ध्येय) की परख होती है, लेकिन परमार्थ का जो वास्तविक लाभ है, वह वक़्त के गुरु यानी जीवित गुरु से ही प्राप्त हो सकता है। ज़िस किसी को जिस गुरु से दीक्षा मिले वह उस शिष्य का वक़्त का गुरु है। यदि एक समय में ऐसे अनेक गुरु हों तो भी शिष्य का वक़्त का गुरु एक ही रहेगा। स्त्री के लिए केवल एक ही पति होता है। समय का गुरु या समकालीन गुरु जीव को अपनी महान चेतनता का टीका लगाते हैं। (देखें: 'दीक्षा' का प्रकरण)। उसके बिना जीव का कल्याण नहीं हो सकता। गुरवाणी में बार-बार इसकी आवश्यकता बताई गई है। मौलाना रूम आदेश करते हैं कि 'तू अपनी अक़्ल (बुद्धि), तदबीर और क़दम (कोशिश) पर भरोसा न कर, अपने वक़्त के पैग़ंबर (गुरु) से रिश्ता न तोड़।'

मगिसल अज़ पैगम्बरे-अय्यामे-ख़्वेश,
तकिया कम कुन बर फ़नो ओ बर गामे-ख़्वेश।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 63

रसूल अल्लाह (पैग़ंबर) साहिब भी वक़्त के गुरु को ढूँढ़ने का अनुरोध करते हैं:

> जिसने सोच समझ के साथ अपने ज़माने के इमाम को नहीं खोजा, मतलब कि जो अपने वक़्त के इमाम (गुरु) से, जो ख़ुदा का खलीफ़ा और रहबरे-कामिल (प्रभु का प्रतिनिधि और पूर्ण मार्गदर्शक) है, पूरे तौर पर बैअत (दीक्षा) नहीं हुआ, वह महरूम (वंचित) रहेगा।

यदि हमें जीवित गुरु नहीं मिलेगा तो हम सच्चे परमार्थ से ख़ाली रहेंगे। इसलिए मौलाना रूम हिदायत करते हैं कि तू ख़ुदा और मूसा (गुरु) की तरफ़ दौड़, अपने अहंभाव में अपनी रूह को न खो:

दर ख़ुदाए मूसा ओ मूसा गरेज़, आबे-ईमां रा ज़ फ़िरऔनी मरेज़।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 107

बिना वक़्त के गुरु के भक्ति नहीं हो सकती। जिसको हमने कभी देखा नहीं, जिसकी कभी संगति नहीं की, उसकी भक्ति कैसे हो सकती है और भक्ति के बिना हम सतलोक में किस तरह पहुँच सकते हैं?

कई लोगों का विचार है कि गुरवाणी में जो जीवित गुरु के पास जाने का उपदेश है वह केवल गुरु साहिबान तक ही था। यह विषय ध्यानपूर्वक विचार करने योग्य है। पहले तो यह कि गुरु साहिब का उपदेश सारे संसार के लिए, सदा के लिए था, किसी विशेष वक़्त या समय के लिए नहीं था:

परथाए साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै।

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 647

और दूसरे, शहंशाह का फ़रमान भी शहंशाह ही के तुल्य है। यह फ़रमान (आदेश) प्रत्यक्ष गुरु की आवश्यकता बतलाता है:

बाणी गुरू गुरू है बाणी विच बाणी अंम्रित सारे॥
गुर बाणी कहै सेवक जन मानै परतख गुरू निसतारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 982

अर्थात्, वाणी (देखें: 'वाणी' का प्रकरण) सारे संसार की गुरु है और गुरु वाणी है। दोनों अभेद हैं। वाणी में अमृत है। गुरवाणी कहती है, सेवकजन इस पर विश्वास करें कि प्रत्यक्ष गुरु से ही निस्तार है। भाई गुरदास जी भी अपनी वाणी में इसका निर्णय करते हुए फ़रमाते हैं:

बेद गिरंथ गुर हटि है, जिसु लगि भवजल पारि उतारा।
सतिगुर बाझु न बुझीऐ जिचरु धरे न प्रभु अवतारा।

वारां भाई गुरुदास, 1:17

अर्थ: सतगुरु की दुकान ही वेद व ग्रंथ है जिसके द्वारा भवजल से पार उतरना है। बग़ैर सतगुरु के हक़ीक़त (वास्तविकता) समझी नहीं जा सकती, जब तक गुरु अवतार धारण करके न समझाए, वह समझ में नहीं आती।

जो आंतरिक भेद है वह लिखने-पढ़ने में नहीं आ सकता। वह हमें वक़्त के गुरु ही समझा सकते हैं और वे ही रूहानी मंज़िलों पर शिष्य के साथ होकर कठिन घाटियाँ पार करवा सकते हैं:

बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतगुर...॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

यह काम पुरातन गुरु नहीं कर सकते। निरंकार शब्द आकार धारण करता है। अवतार आकारधारी होते हैं। गुरु सतपुरुष यानी अकाल के अवतार होते हैं

इसलिए गुरु-अवतार कहा जाता है। गुरु-अवतार, मनुष्य रूप, देहधारी होते हैं। भाई गुरदास जी कहते हैं, जब तक गुरु अवतार धारण न करे मालिक को नहीं जाना जा सकता।

प्रत्यक्ष सतगुरु के उपदेश के बिना सुरत-शब्द मार्ग का आंतरिक भेद नहीं खुल सकता। इस मार्ग का बोध वेदों, शास्त्रों, ग्रंथों के होते हुए भी गुरु दीक्षा पर निर्भर है।

सिक्ख इतिहास से पता लगता है कि गुरु ग्रन्थ साहिब का संकलन गुरु अर्जुन साहिब के समय किया गया। 'बाणी-गुरु' और 'बाणी बीड़ गुरु', सिद्धांत की शिक्षा के साथ-साथ मनुष्य रूप, देहधारी गुरु होते रहे जो गुरु दीक्षा देते रहे और अभी तक ख़ालसा जी को, जिनको पूर्ण ज्योति का प्रकाश नसीब है; पूरन जोत जगै घट मै तब खालस ताहि नखालस जानै॥ (श्री दसम ग्रंथ, दूसरी सैंची, पृ.675), यह अधिकार प्राप्त है।

गुरु की शिक्षा से नाम पहचान करें।

गुरु की ज़रूरत

वह निराकार मालिक सब जगह व्याप्त है पर उसके सर्वव्यापक होने पर भी, जब तक उससे हमारा संबंध न हो जाए, हमें उसका कोई लाभ नहीं होता। बिजली सब जगह है पर उससे कोई लाभ नहीं हो सकता जब तक हमारा उस स्विच से, जहाँ कि वह प्रकट है, संबंध नहीं हो जाता। बिजली से संबंध होने पर भी जब तक बल्ब न लगा हो बिजली प्रकाश नहीं देती। जब उसके साथ संबंध हो जाए तब बिजली हमारे काम करती है, हमारे अँधेरे मकानों में रोशनी करती है, हवा देकर हमारी गर्मी दूर करती है, रसोई का काम करती है, हमारे कारख़ाने चलाती है आदि। इसी प्रकार हमारा उस मालिक से संबंध हो जाए तब हमारा काम बन सकता है? सतगुरु उस मालिक का स्वरूप है, वह देहधारी शब्द है। जब तक हम प्रत्यक्ष देहस्वरूप सतगुरु से जान-पहचान नहीं करते, हम उनके सूक्ष्म यानी शब्द रूप को किस प्रकार जान सकते हैं? सुरत को अपने निजघर पहुँचाने के लिए शब्द और सतगुरु, ये दो साधन हैं। सतगुरु के बिना हक़ीक़त का भेद नहीं खुल सकता, न कोई मन-माया के बंधनों से छूट सकता है और बिना शब्द के न कोई मालिक से मिल सकता है। केवल सतगुरु ही सुरत को शब्द के साथ जोड़ता है। उनके इस मृत्युलोक में प्रकट होने का केवल यही उद्देश्य है। वह शब्द देहधारी यानी साकार होकर हमारे बीच में रहता है, "शब्द ने देह धारण की और हमारे बीच में रहा" (बाइबल, जॉन 1:14)। सतगुरु की दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण होती है, वह जान लेती है कि कौन-सा जीव इस ओर आने के लिए

तैयार है, ऐसे लोगों को वह स्वीकार कर लेता है और मेहरभरी दृष्टि से छाँटकर सच का संगी बना लेता है।

जब रूहें मालिक की खोज में व्याकुल होती हैं, अपने निजघर जाने के लिए बिलखती हैं और हमारी आँखें उसको (मालिक को) देखने के लिए तरसती हैं और भूखी होती हैं, तब हमारी तीव्र इच्छा पूर्ण करने के लिए सतगुरु अवतार धारण करते हैं। उनको बंधनों से छुड़ाने के लिए स्वयं उद्धारक बनकर आ जाते हैं और ऐसी व्याकुल रूहों को उनके अधिकार के अनुसार उपदेश देकर मालिक के साथ जोड़ देते हैं।

परमार्थ के भेदों और मालिक से मिलने की अमली (व्यावहारिक) युक्ति को केवल जीवित सतगुरु ही प्रकट कर सकते हैं। वह शिक्षा बेज़बानी की ज़बान (मूक भाषा) में है, इसलिए कोई भाषा उसका वर्णन करने के योग्य नहीं। धर्म पुस्तकें आत्मिक मंडलों पर चढ़ाई के दृश्यों का केवल संकेत ही करती हैं, सतगुरु की सहायता द्वारा सुरत को सूक्ष्म देशों पर जो लीला नज़र आती है उसका वे पूर्ण वर्णन नहीं कर सकतीं। जीवित यानी चेतन न होने के कारण वे हमारी रूह की चढ़ाई में सहायता नहीं कर सकतीं। संतों की वाणियों में आंतरिक आत्मिक अनुभवों का वर्णन है। उनका आनंद केवल अंतर्मुख रसाई (गति) द्वारा ही हो सकता है, जो केवल सतगुरु से प्राप्त होती है, बाहरमुखी सोच विचार से कदापि नहीं। ग्रंथ-पोथियाँ उनका थोड़ा-सा वर्णन ही करती हैं, पर उनका अनुभव बग़ैर जीवित गुरु के नहीं हो सकता।

गुज़रे हुए गुरु

एक बीमार मनुष्य प्राचीन काल के किसी हकीम से दवाई नहीं ले सकता। कोई मनुष्य पुराने ज़माने के हाकिमों से अपने मुक़द्दमे का फ़ैसला नहीं करवा सकता। कोई स्त्री पुराने समय के किसी पुरुष से विवाह करके संतान उत्पन्न नहीं कर सकती। इसी प्रकार पूर्ण महात्मा संसार में अपने-अपने समय में आए और जिन जीवों का उनसे संबंध हुआ, उनका उद्धार करते रहे। अपना समय पूरा हो जाने पर अपनी देह को मालिक की रज़ा (आज्ञा) के अनुसार छोड़कर मालिक में समा गए और जाते समय अपना काम दूसरे महात्मा को सौंप गए। मनुष्य को मनुष्य ही समझा सकता है, यह प्रकृति का नियम है। मालिक इस स्थूल संसार में जीवित पुरुषों के द्वारा ही काम करता है।

अनेक सज्जनों का विचार है कि प्राचीन महात्मा आत्मिक मंडलों में आज भी उपस्थित हैं और हमारी सहायता कर सकते हैं। यह ठंडे दिल से विचार करने

योग्य विषय है। वे पूर्ण महात्मा अपना मिशन यानी उद्देश्य पूरा करके मालिक में जा समाए और अपने बाद का काम दूसरे महात्मा को सौंप गए यानी एक महात्मा अपना काम पूरा करके चला गया और दूसरे को उसी गुरु पद का कार्य मालिक की ओर से सौंप गया, ताकि जीवों को मालिक से जोड़ने और उनके सँभालने का काम चलता रहे। यदि प्राचीन महात्मा को सँभालने का काम करना भी हो तो वह प्रकृति के नियम का पालन करते हुए, जिसके अनुसार मनुष्य ही मनुष्य को समझा सकता है, यह कार्य किसी जीवित महात्मा के द्वारा ही करेगा या हम उन मंडलों पर, जिन पर वे हैं, पहुँचकर उनकी मदद ले सकते हैं, परंतु हम तो स्थूल देश में हैं और वे रूहानी देशों में। यदि यह ख़याल हो कि पिछले महात्मा उन आत्मिक मंडलों में हमारी सहायता कर सकते हैं तो हमें आंतरिक भावों, काल्पनिक विचारों और अनुमान पर चलना होगा और जब तक हमारी आंतरिक आँख नहीं खुलती हम अच्छी तरह पहचान नहीं सकते कि अंदर जो विचार हो रहे हैं वे मालिक की ओर से हैं या पुरातन महात्मा की ओर से हैं या किसी और परलोक गई अधूरी (अपूर्ण) रूह की ओर से है या वे हमारे अपने ही अवचेतन मन की तरंगें हैं। मन की उन तरंगों पर आचरण करना ग़लती है, क्योंकि उनसे गुमराह होने का डर है। साथ ही जिस महात्मा को हमने अपनी आँखों से पहले देखा नहीं, यदि काल हमें धोखा दे या कोई और रूह प्रकट होकर कहे कि वह अमुक महात्मा है तो हम उसे न पहचानने के कारण धोखे में फँस सकते हैं।

यदि यह ठीक मान भी लिया जाए कि पुराने समय में आए महात्मा हमारे गुरु होने का कार्य कर सकते हैं और हमें किसी सामयिक महात्मा की आवश्यकता नहीं, तो किसी भी ज़माने में किसी भी महात्मा की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, क्योंकि तब मालिक स्वयं जीवों को उपदेश दे सकता था। यदि पुराने समय के महात्मा (जिन्होंने इस लोक को छोड़ दिया है) उपदेश देने का काम कर सकते हैं तो मालिक भी यह काम बिना किसी महात्मा के करने में समर्थ था।

यदि महात्मा के आने की आवश्यकता किसी भी समय में हुई, तो यह इस बात का पक्का प्रमाण है कि आज भी हमें उसकी उसी प्रकार आवश्यकता है जिस प्रकार पहले थी।

यदि मालिक भी जीवों को समझाना चाहे तो उसे भी मनुष्य जीवन का आधार लेना पड़ेगा। यह प्रकृति का नियम है, उसको साध या संत का तन धारण करना ही होगा:

साध रूप अपना तन धारिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1005

हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संत कहावै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 476

इसका यह तात्पर्य नहीं कि प्राचीन पूर्ण महात्मा मर चुके हैं। नहीं, वे तो अमर हैं, पर वे स्थूल, सूक्ष्म और कारण मंडलों को छोड़ गए हैं और मालिक से मिलकर उससे अभेद हो चुके हैं। यदि उन्हें इन्हीं मंडलों पर भटकते रहना था तो उनको भक्ति करने की क्या आवश्यकता थी?

ख़याली उलझनों में फँसने की आवश्यकता नहीं। किसी पूर्ण महात्मा की शरण लो, जो तुम्हें मालिक से मिलने की आसान और स्वाभाविक विधि प्रदान करे। तुमको मरने के बाद तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं, प्रयास करो तो इसी जन्म में सब कुछ अंतर में देख सकते हो।

पूर्ण और लाफ़ानी (अविनाशी) लाभ केवल जीवित गुरु से ही मिल सकता है, क्योंकि उसके अंदर महान चेतनता की चुंबकीय शक्ति या गतिशील चेतन सत्ता है, जिसका स्पर्श हमारे अंदर शक्ति पैदा करता है और हमारी सुरत को शब्द की धारा के साथ जोड़ता है और जो रूहानी मंज़िलों पर हमारे अंग-संग रहकर हमारी सहायता करता है। वह रूह बड़ी भाग्यशाली है जो ऐसे महात्मा की शरण लेती है।

साधारणतया देखा जाता है कि यदि लंदन जाना हो तो पहले हम डायरेक्ट्री देखते हैं कि लंदन किस ओर है और किस मार्ग से हमें जाना है, मार्ग में कहाँ-कहाँ उतरना पड़ेगा, किस बंदरगाह से जहाज़ पर चढ़ना पड़ेगा और कौन-सी कंपनी के जहाज़ पर जाएँगे। उन देशों में जाने के लिए सबसे पहले हमें पासपोर्ट (Passport) अधिकारियों से पासपोर्ट लेना पड़ता है, यदि वह न मिले तो हम नहीं जा सकते। इसी प्रकार मालिक के देश में जाने के लिए भी मालिक के प्रतिनिधि यानी संत-सतगुरु से पासपोर्ट लेना पड़ता है। वह पासपोर्ट जीवों को चेताना या दीक्षित (देखें: 'दीक्षा' का प्रकरण) करना है। सतगुरु से नाम की मोहर (छाप) लगवानी पड़ती है, जिसका वर्णन कई संतों ने अपनी वाणियों में किया है। उनका हुक्म खंडों-ब्रह्मांडों में चलता है, क्योंकि वे मालिक के कारकुन (प्रबंधकर्ता) हैं जो यहाँ आकर काम करते हैं। जिन जीवों को यह पासपोर्ट मिल जाए उनको खंडों-ब्रह्मांडों पर कोई शक्ति नहीं रोक सकती। संत फ़रमाते हैं कि जिस हृदयरूपी भूमि में संत नाम का बीज बो दें, वह बीज फलेगा और अवश्य फलेगा और वह जीव अपने निजघर जाएगा और अवश्य जाएगा।

फिर दूसरी आवश्यकता इस बात की है कि उस ओर जाने के लिए हम ठीक मार्ग पकड़ें, जो कि उस ओर जाता हो। अगर मार्ग तो पूरब में है और राही पश्चिम की ओर की सड़क पकड़ ले और उस पर भले ही वह कितने भी शौक़ और शीघ्रता से चले, वह अपनी मंज़िल पर नहीं पहुँच सकता बल्कि उससे और दूर हो जाता है। इसी लिए ठीक मार्ग पकड़ने की आवश्यकता है।

जाने की तैयारी करने के लिए हम अलग-अलग डायरेक्ट्री को देख रहे हों कि इतने में कोई हमें यह समाचार दे कि फ़लाँ मनुष्य, जहाँ हम जाना चाहते हैं उसी जगह से आया है, हम डायरेक्ट्री छोड़कर उसके पास पहुँचने की तैयारी करेंगे क्योंकि जिस मार्ग का हाल डायरेक्ट्री बताती है उसे वह स्वयं देखकर और उस देश में रहकर आया है। यदि उसके पास जाकर हमें यह पता लगे कि वह फिर वहीं जा रहा है और वह हमें भी अपने साथ ले जाना चाहे तो हम ख़ुशी-ख़ुशी उसके साथ चल पड़ेंगे। उसके कहे हुए देश और रास्ते के हाल को हम किसी हद तक डायरेक्ट्री से परख सकते हैं और यदि वे बयान भिन्न-भिन्न डायरेक्ट्री से मिल जाएँ तो और तसल्ली हो जाती है। संतों की रूह खंडों-ब्रह्मांडों में सफ़र करती है:

गुरमुख आवै जाए निसंग॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 932

धर्म पुस्तकें डायरेक्ट्री के समान हैं, जो केवल उस राह के इशारे देती हैं। संत नाम के जहाज़ को भरकर जीवों को पार ले जानेवाली हस्तियाँ हैं, जिनके पास से टिकट यानी पासपोर्ट लेकर (दीक्षित होकर) उनके नाम यानी शब्दरूपी जहाज़ पर सवार होकर, जिसके वे स्वयं ही कप्तान हैं, मालिक के देश पहुँचा जा सकता है।

धर्म पुस्तकों का विचार निस्संदेह अच्छा है, पर ले जानेवाली शक्ति केवल गुरु और शब्द (नाम) ही है। जब तक ये न मिलें, मालिक के देश में पहुँचना असंभव है। यदि हम केवल पूछते ही रहें, उस मार्ग पर एक क़दम भी न रखें तो केवल बातों द्वारा प्रीतम के देश में किस प्रकार पहुँच सकते हैं? भाई गुरदास जी कहते हैं:

पूछत पथिक तिंह मारग न धारै पग, प्रीतम कै देस कैसे बातन से जाईऐ।

कबित्त-सवैये, 439

उस मार्ग पर अपने आप जाने की कोशिश करना गुमराही का कारण बनता है, जिसके लिए मनुष्य को पछताना पड़ता है। यदि गुरु का संग प्राप्त हो जाए

तो जीव मालिक के देश में आसानी से पहुँच सकता है और उसके रस में मग्न हो सकता है। यदि हमारे अपने वश में होता तो अभी तक हम बिछुड़े न रहते:

आपण लीआ जे मिलै विछुड़ किउ रोवंन॥
साधू संग परापते नानक रंग माणंन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

जिस चीज़ को हमें ढूँढ़ना हो वह हो तो कहीं परंतु हम उसकी तलाश किसी और जगह करें तो वह किस प्रकार मिल सकती है? जब किसी भेदी को साथ ले लें तो हम उस वस्तु को अवश्य पा लेते हैं, करोड़ों जन्मों का रास्ता पल भर में पूरा हो जाता है। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

बस्तु कहीं ढूँढ़ै कहीं, केहि बिधि आवै हाथ।
कहै कबीर तब पाइये, जब भेदी लीजे साथ॥
भेदी लीन्हा साथ कर, दीन्ही बस्तु लखाय।
कोटि जनम का पंथ था, पल मे पहुँचा जाय॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 5

मनुष्य को रसोई बनाने के लिए किसी कुशल रसोइये के नीचे काम सीखना पड़ता है। डॉक्टरी और इंजीनीयरिंग की पढ़ाई के साथ-साथ हमें अमली तौर पर (क्रियात्मक रूप में) भी काम करना पड़ता है। केवल पढ़ने से ही हम डॉक्टर या इंजीनियर नहीं बन सकते। जब बाहरमुखी काम सीखने के लिए हमें उस्ताद की आवश्यकता होती है तब परमार्थ जो अंतर्मुख कठिन विषय है और जिसकी खोज में आँखें बंद करो तो अँधेरा ही अँधेरा दिखता है, उसमें किसी गुरु की आवश्यकता क्यों नहीं होगी? गुरु की हर विषय में आवश्यकता है। जो लोग कहते हैं कि हमें गुरु की ज़रूरत नहीं, हम स्वयं ही ज्ञान प्राप्त करेंगे, उनका यह कथन इस प्रकार लगता है जैसे कि कुआँ बना हुआ हो और उस पर पानी पिलानेवाला भी पानी पिलाने के लिए तैयार हो, पर पानी पीने वाला कहे कि मैं इस कुएँ से पानी नहीं पीना चाहता, मैं स्वयं अपना कुआँ खोदकर पानी पीऊँगा। इससे यह साफ़ पता लगता है कि अभी उसे प्यास नहीं है। इसलिए जिनको परमार्थ की आवश्यकता नहीं, उन्हें गुरु की भी ज़रूरत नहीं है। भाई नन्दलाल जी संकेत करते हैं कि लाल की क़द्र लाल के आशिक़ (प्रेमी) के सिवाय और किसी को नहीं। यह उसी प्रेमी की आँख है जो याक़ूत (लाल) की क़ीमत को जानती है:

क़दरे लाले ऊ बजुज़ आशिक़ न दानद हेच कस,
कीमते-याक़ूत दानद चश्मे-गौहर बारे-मा।

दीवाने-गोया, ग़ज़ल 2, पृ. 11

गुरु की आवश्यकता को हम एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं। एक मनुष्य हवाई जहाज़ पर सवार होकर आसमान की सैर करना चाहता है। पहले तो जहाज़ को उसके पायलट (चालक) ने ताला लगा रखा है ताकि अनजान मनुष्य उससे नुक़सान न उठाएँ। वह तो जहाज़ पर चढ़ना भी नहीं जानता। यदि चढ़ भी जाए तो ताला लगा होने के कारण वायुयान नहीं चलेगा, यदि चल भी पड़े तो वह उसे चढ़ाना और उतारना नहीं जानता। यदि चढ़ा भी ले तो उसे ऊपर के हवाई हालात और मंज़िलों का ज्ञान नहीं, इसलिए उसे सिवाय बरबादी के और क्या मिल सकता है? यह इनसानी मशीन अद्‌भुत मशीन है। पहले तो रूह शरीर से सिमटकर ऊपर आ नहीं सकती और यदि भूले-भटके सिमट भी जाए तो शब्द के जहाज़ पर नहीं चढ़ सकती। यदि शब्द के साथ संबंध हो भी जाए तो ऊपर आत्मिक मंडलों का ज्ञान न होने के कारण यह पता नहीं कि किस ओर जाना है, किस प्रकार वापस आना है। यदि जहाज़ का पायलट (सतगुरु) नए आदमी को अपने साथ लेकर जहाज़ में बैठाकर जहाज़ को कुंजी लगाकर खोल दे और उसके साथ ही दो-चार बार सफ़र करे, फिर वह आदमी हवाई जहाज़ को चला सकेगा। आत्मिक मंडलों में सफ़र करने के लिए ऐसे चालक की बड़ी आवश्यकता है, जो उन मंडलों का ज्ञाता हो और रोज़ सफ़र करता हो। वह साथ हो तो सफ़र आसान हो जाता है। यदि कोई ऐसा महात्मा कहे कि आ, मैं तुझे साथ ले चलूँ, और यदि हम बोलें, 'जी मेहरबानी! मैं अपना जहाज़ स्वयं ही उड़ाऊँगा' तो हमारे मंदभाग्य! मौलाना रूम फ़रमाते हैं कि बिना पीर के इस रास्ते पर सफ़र करना ख़तरनाक है:

पीर रा बगुज़ीं किह् बे पीर ईं सफ़र, हस्त बस पुर आफ़तो-खौफ़ो-ख़तर।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 308-309

नाम यानी धुनात्मक शब्द (देखें:'शब्द' का प्रकरण) बेज़बानी की ज़बान (मूक भाषा) में है। इसलिए यह ग्रंथ-पोथियों से नहीं मिल सकता। यह दौलत हम किसी नाम प्रदान करनेवाले गुरु से ही पा सकते हैं, वह स्वयं देहधारी शब्द है, उसका शब्द उसके द्वारा ही स्थिर हो सकता है:

बिन सतगुर को नाउ न पाए प्रभ ऐसी बणत बणाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1046

गुर का सबद गुर थै टिकै होर थै परगट न होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

सतगुरु परमार्थ के सारे आंतरिक भेदों का ज्ञाता है, वह अपने अनुभव के आधार पर बोलता है, इसलिए उसकी गवाही बड़ी पक्की समझी जाती है:

संतन की सुण साची साखी॥ सो बोलह जो पेखह आखी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 894

गुरवाणी गुरु की आवश्यकता को बहुत महत्त्व देती है। आसा की वार में गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि जीव जन्मों-जन्मों का सोया हुआ है। यह बात पल्ले बाँध लो कि बिना सतगुरु के किसी ने सच को न पाया है और न पा सकता है:

बिन सतगुर किनै न पाइओ बिन सतगुर किनै न पाइआ॥
सतगुर विच आप रखिओन कर परगट आख सुणाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 466

नदर करह जे आपणी ता नदरी सतगुर पाइआ॥
एह जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतगुर सबद सुणाइआ॥
सतगुर जेवड दाता को नही सभ सुणिअहो लोक सबाइआ॥
सतगुर मिलिऐ सच पाइआ जिन्ही विचहो आप गवाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

सब संत-महात्मा यह कहते हैं कि बिना गुरु के कोई मालिक से नहीं मिल सकता। परमात्मा ने स्वयं यह अटल नियम बनाया है:

धुर खसमै का हुकम पइआ विण सतगुर चेतिआ न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 556

फिर फ़रमाते हैं कि परमात्मा ने मुझे यह ज्ञान दिया है कि बिना गुरु के कोई मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता:

कहो नानक प्रभ इहै जनाई॥ बिन गुर मुकत न पाईऐ भाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.864

सतगुरु आँखें देनेवाला डॉक्टर है। वह मालिक अंदर है, सब जगत अंधा है और अंधे कर्म ही करता है। सतगुरु मिल जाएँ तो यह अपनी आँखों द्वारा मालिक को अपने अंदर ही देख लेता है:

इह जग अंधा सभ अंध कमावै बिन गुर मग न पाए॥
नानक सतगुर मिलै त अखी वेखै घरै अंदर सच पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.603

असली अंधे कौन हैं? वे नहीं जिनकी बाहर की आँखें नहीं है, बल्कि वे हैं जो मालिक से दूर हैं:

अंधे एह न आखीअन जिन मुख लोइण नाहे॥
अंधे सेई नानका खसमहो घुथे जाहे॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ.954

गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं कि नयनों से देखते हुए भी जीव अंधा है, क्योंकि वह निकट से निकट बसनेवाले परमात्मा को नहीं देख सकता, उलटा उसकी उपस्थिति में भी पाप कर्म करता है:

पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीऐ नाही॥
निकट वसत कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही॥

आदि ग्रन्थ, पृ.741

स्थूल नेत्रों द्वारा हम स्थूल संसार को देखते हैं, पर शिवनेत्र यानी तीसरी आँख सबकी बंद हैं, जिसके खुलने से हम सूक्ष्म, कारण और उसके पार उन चेतन देशों को देख सकते हैं, जो मन और बुद्धि की हद से पार हैं:

अंधा सोए जे अंध कमावै तिस रिदै से लोचन* नाही॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1289

* लोचन=तीसरा नेत्र।

सब माया में लिपटे हुए अंधे बने हुए हैं, इस स्थूल संसार से परे कुछ दिखता ही नहीं है:

माइआ मोह हर चेतै नाही॥ जम पुर बधा दुख सहाही॥
अंना बोला किछ नदर न आवै मनमुख पाप पचावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 111

अपने आप इन सूक्ष्म मंडलों में प्रवेश करना असंभव है। हमें उन देशों में सफ़र करनेवालों को साथ लेने की आवश्यकता है। मौलाना रूम कहते हैं कि यदि तुझे हज करने की इच्छा है तो किसी हाजी को साथ ले ले। सफ़र की चिंता और मुश्किलें आसान हो जाएँगी, इस बात की परवाह न कर कि वह हिंदू है, तुर्क है या अरबी है:

मर्दे-हज़्जी हमरही हाजी तलब, ख़्वाह हिन्दू ख़्वाह तुर्क ओ या अरब।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 304

सतगुरु रूहानी आँखों के डॉक्टर होते हैं और हमारी अंतर में देखनेवाली आँख खोल देते हैं। शम्स तब्रेज़ कहते हैं कि यदि तू रब को ज़ाहिरा-जुहूर (प्रत्यक्ष) देखना चाहता है तो ऐसे लोगों की चरण धूलि (देखें: 'चरण धूलि' का प्रकरण) का सुरमा आँखों में डाल, क्योंकि वे जन्म के अंधों को भी आँखें बख़्श देते हैं:

गर अयां ख़्वाही ज़ि ख़ाके-पाए-ईशां सुरमा साज़,
किह् ज़-आं ईशां कोरे-मादर ज़ाद रा रह बीं कुनंद।

कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 262

वह सुरमा नाम यानी शब्द का है, जिसको डालकर जीव रूहानी देशों को देखनेवाला बन जाता है। जब तक जीव यह सुरमा नहीं डालता, वह अंधा ही रहता है और उसका संसार में आना किसी अर्थ का नहीं:

सबद न जाणह से अंने बोले से कित आए संसारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 601

गुरु नानक साहिब बताते हैं कि अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए गुण या शब्द की आवश्यकता है, जिसके द्वारा देखने की शक्ति प्राप्त हो जाती है और हम मालिक को पहचान लेते हैं:

गुण नानक बोलै भली बाण॥ तुम होहो सुजाखे लेहो पछाण॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1190

मालिक घट-घट के अंदर है, पर जीव को मोतियाबिंद हो रहा है:

है नेरे सूझे नहीं, लानत ऐसी जिंद।
तुलसी इस संसार को, भयो मोतिया बिंद॥

उपदेश रत्नाकर, पृ. 36

आँखें बड़ी नियामत हैं, बाहर की आँखों के बिना मनुष्य कितना देखने के लिए बिलखता है, पर वह देख नहीं सकता, भटकता फिरता है, कुछ सूझता नहीं। यदि उसको डॉक्टर के पास जाकर ऑपरेशन करवाकर भी देखना नसीब हो जाए तो वह डॉक्टर का कितना आभारी होता है! अंतर की आँख तो बाहर की आँखों से लाखों-करोड़ों गुना अधिक गुणकारी है, जिसके खुले बिना जीव को इस संसार से परे कुछ सूझता नहीं, मालिक नहीं दिखता, जिसके बिना वह जन्म-जन्म से भटकता आ रहा है। सतगुरु अंदर की आँख यानी ज्ञाननेत्र को खोलनेवाला है, उसकी कितनी ज़बरदस्त आवश्यकता है, पर कितने खेद की बात है कि माया में लिप्त जीव इस बात का महत्त्व नहीं समझते।

मनुष्य तो क्या देवता भी इस आँख के मोहताज हैं। इस आँख के बिना उनका भी काम नहीं सरता। मालिक को देखना तो एक ओर रहा, वे अपनी माता 'शक्ति' को भी नहीं देख सकते:

एका माई जुगत विआई तिन चेले परवाण॥
इक संसारी इक भंडारी इक लाए दीबाण॥...
ओह वेखै ओना नदर न आवै बहुता एह विडाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 7

गोसाईं तुलसीदास जी फ़रमाते हैं कि बिना गुरु के कोई भवसागर से नहीं तर सकता:

गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई॥

श्रीरामचरितमानस, 7:92(ख):3

जब इतनी बड़ी-बड़ी हस्तियों को भी गुरु की सहायता की आवश्यकता है तो साधारण मनुष्य का क्या हाल! वह बेचारा अपने आप चाहे करोड़ों कर्म भी करे, क्या बन सकता है! इसलिए गुरु साहिब फ़रमाते हैं:

बिन गुर दाते कोए न पाए॥ लख कोटी जे करम कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

फिर तुलसी साहिब कहते हैं कि बिना गुरु की मेहर के मुक्ति असंभव है:

तुलसी बिना करम किसी मुरशिद रसीदा के।
राहे निजात दूर है उस पार देखना॥

संत बानी, पृ. 45

गुरवाणी में बड़े ज़ोरदार शब्दों में संत या गुरु की आवश्यकता के बारे में कहा गया है कि कोई संसार में भ्रम में न रहे, बिना गुरु के कोई संसार सागर से पार नहीं उतर सकता:

मत को भरम भुलै संसार॥ गुर बिन कोए न उतरस पार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

यह संसार भवसागर है, इसमें गुरु जहाज़ है और गुरु ही उसका कप्तान है। गुरु के बिना कोई भवसागर नहीं तर सकता। उसकी कृपा द्वारा ही हम मालिक से मिल सकते हैं, उसके बिना किसी की मुक्ति नहीं हो सकती:

गुर जहाज खेवट गुरू गुर बिन तरिआ न कोए॥
गुर प्रसाद प्रभ पाईऐ गुर बिन मुकत न होए॥

भट्ट नल, आदि ग्रन्थ, पृ. 1401

हिंदुओं की धर्म पुस्तकों में भी गुरु की आवश्यकता बड़े ज़ोरदार शब्दों में कही गई है। कठ उपनिषद् में कहा है – अनेक लोगों के भाग्य में तो परमात्मा के बारे में सुनना भी नहीं है। उनके बारे में सुनकर भी बहुत-से लोग उसको नहीं जान सकते। वह महात्मा जो उसके बारे में कुछ कहता है, अद्‌भुत हस्ती है। वही मनुष्य योग्य और बुद्धिमान है, जो उस तक रसाई कर लेता है, पर बहुत कम लोग गुरु की सहायता द्वारा परमात्मा को पाने में सफल होते हैं:

श्रवणायापि वहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वन्तोऽपि वहवो यं न विद्युः।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः॥

कठ उपनिषद्, 1:2:7

फिर कठ उपनिषद् में आया है – बिना दीक्षा के परमात्मा नहीं जाना जा सकता, चाहे उसका कोई कितना ही विचार करे। जब तक किसी गुरु के पास से तू उपदेश न ले, उसको नहीं पा सकेगा, क्योंकि वह इतना सूक्ष्म है कि विचार की सीमा में नहीं आ सकता:

न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः।
अनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्त्यणीयान्ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात्॥

कठ उपनिषद्, 1:2:8

छान्दोग्य उपनिषद् में भी कहा है – भद्र पुरुषों से, जो गुरु समान हैं, सुना है कि बिना गुरु की दीक्षा के हम अपनी वास्तविकता का अनुभव नहीं कर सकते:

श्रुतम् ह्येव मे भगवद्दृशेभ्य आचार्याद्धैव विद्या विदिता साधिष्ठं प्रापतीति॥

छान्दोग्य उपनिषद्, 4:9:3

मुण्डक उपनिषद् में कहा है:

परीक्ष्य लोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्॥

मुण्डक उपनिषद्, 1:2:12

"ब्राह्मण को चाहिए कि उन (कर्मों) की इच्छा से वैराग्य को प्राप्त करे क्योंकि वह अकृत (क़ायम बिलज़ात) है, वह कृत (कर्म) से प्राप्त नहीं किया जाता, उसको जानने के लिए ब्राह्मण को हाथों में समिधा (लकड़ियाँ जो शागिर्दी की निशानी है) लेकर एक ऐसे गुरु के पास जाना चाहिए, जो श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ (ब्रह्म को जाननेवाला)* और ब्रह्म में एकाग्रचित अर्थात् ब्रह्म से अभेद हो।"

गुरु के बग़ैर धर्म पुस्तकों के उपदेश समझ में नहीं आते। श्वेताश्वतर उपनिषद् में आया है:

---

* संतमत में गुरु, शब्द-श्रोत्रिय और शब्दनिष्ठ है।

जिसकी परमात्मा में परम भक्ति हो और जैसी परम भक्ति परमात्मा से हो वैसी गुरु से हो, ऐसे महात्मा को ही इस उपनिषद् के उपदेश समझ में आएँगे।

श्वेताश्वतर उपनिषद्, 6:23

मनुस्मृति में उपदेश है:

शिष्य प्रतिदिन पाठ के प्रारंभ और अंत में दोनों हाथों से गुरु के चरणों को छुए और गुरु की आज्ञा का पालन करे।

मनुस्मृति, 2:71

जो लोग बिना गुरु के वेद को सुन-सुनाकर सीखते हैं, वे वेद के चोर हैं, क्योंकि वेद का ठीक अर्थ गुरु के बिना समझ में नहीं आ सकता और वेद के ग़लत अर्थ लगानेवाला नरकों में जाता है।
जिससे लौकिक ज्ञान या ब्रह्म ज्ञान सीखो, उसको पहले प्रणाम करो।

मनुस्मृति, 2:117

शरीर, जिह्वा, बुद्धि, कामनाओं और हृदय को वश में रखकर, हाथ जोड़कर गुरु को देखता हुआ सम्मुख खड़ा रहे।

मनुस्मृति, 2:192

गीता में भी उपदेश है कि तू पूर्ण गुरु के चरणों में गिरकर यह अभ्यास और सेवा कर। जो गुरु तत्त्व के भेद को जानता है, केवल वही तुझे उसके ज्ञान का उपदेश दे सकता है:

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

श्रीमद्भगवद्गीता, 4:34

गुरु के बिना हमें परमार्थ के मार्ग का ज्ञान नहीं हो सकता। इसलिए सबसे पहले गुरु को जानने की आवश्यकता है।

बाइबल में फ़रमाते हैं:

जो कोई परमपिता के पास जाता है, मेरे द्वारा जाता है। जो कोई पुत्र को नहीं जानता, वह पिता को भी नहीं जानता।

बाइबल, जॉन 14:6

फिर फ़रमाते हैं कि जो मेरा स्वागत करता है, वह उसका स्वागत करता है, जिसने कि मुझे भेजा है। (बाइबल, जॉन 13:20)

संसार की सब धर्म पुस्तकों को खोजकर देखने से पता लगता है कि वे सब एक ही बात पुकार-पुकारकर कहती हैं कि बिना गुरु के किसी की मुक्ति नहीं होती:

सासत बेद सिम्रिति सभ सोधे सभ एका बात पुकारी॥
बिन गुर मुकत न कोऊ पावै मन वेखहो कर बीचारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 495

मालिक को पाने के लिए सब बंदगियों के बजाय गुरु की शरण में आनेवाले का तरीक़ा सबसे ऊँचा है। हज़रत मुहम्मद साहिब हज़रत अली को उपदेश देते हैं, "ऐ अली! तू हक़ का शेर, पहलवान और बहादुर है, परंतु फिर भी तू अपनी ताक़त पर भरोसा न कर। उस फल देनेवाले वृक्ष की छाया में आ। मालिक से मिलने के जितने भी रास्ते हैं, उनमें से तू अल्लाह के ख़ास-ख़ास बंदों को चुन। वह हमारा हाथ पकड़नेवाला और मालिक का ख़ास बंदा है, वह तालिबों (जिज्ञासुओं) को मालिक की दरगाह में ले जाता है।"

गुफ़्त पैग़म्बर अली रा क-ऐ अली, शेरे-हक़्क़ी पहलवाने-पुर दिली,
लेक बर शेरी मकुन हम इअतिमीद, अन्दर आ दर साया-ए-नख़ले-उम्मीद।
या अली अज़ जुमला-ए ताआते, राह-बर गुज़ीं तू साया-ए-ख़ासे-इलाह।
दस्तगीरद बन्दा-ए-ख़ासे-इलाह, तालिबाँ रा मी बरद ता पेशगाह।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 310-11

मौलाना रूम फ़रमाते हैं कि मुर्शिद (गुरु) की छत्रछाया के बिना यह मन कभी वश में नहीं आता। इसलिए उस मुर्शिद के पल्ले को कसकर पकड़ ले जिसने अपने मन को क़ाबू किया है। तू जा और मुर्शिद की शरण में शयन कर, जिसकी ख़ुशबू तुझे इन बंधनों से आज़ाद कर देगी। दिन-रात कू-कू-कू कर (गुरु के गुण गा)। इस गुप्त ख़ज़ाने को तू फ़क़ीरों के पास ढूँढ़। तू दर-ब-दर फिर और गली-गली, बाज़ार-बाज़ार और शहर-ब-शहर घूमकर उनकी तलाश कर और बार-बार तलाश कर। जहाँ तक हो सके तू फ़क़ीरों से मुँह न मोड़। पुरुषार्थ कर ताकि तू उनको जान सके कि वे कैसे हैं:

हेच नकुशद नफ़्स रा जुज़ ज़िल्ले-पीर,
दामने-आँ नफ़्स कुश रा सख़्त गीर।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ.242

रौ बखुस्प अन्दर पनाहे-मक़बिले,
बू-किह आज़ादत कुनद साहिब दिले।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ.214

फ़ाख़्ता साँ रोज़ो-शब कुन कू व कू-गंजे-पिनहाँ रा ज़ दरवेशे बजू।

मसनवी मौलवी मसनवी, दफ़्तर 2, पृ.54

ता तवानी ज़ औलिया रू बर मताब,
जहद कुन अल्लाहु आअलम बस्सवाब।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ.214

परमार्थ विकट मार्ग है, बिना गुरु के इस पर नहीं चला जा सकता

आत्मा पर तीन शरीरों के ग़िलाफ़ (आवरण) हैं–स्थूल, सूक्ष्म और कारण। इनके द्वारा यह स्थूल, सूक्ष्म और कारण मंडलों में जा सकता है। परंतु इसका निजघर तीनों मंडलों के पार, चौथे लोक में है। पहले तो स्थूल देश में जीव को फँसाने के लिए बड़े फंदे और रुकावटें हैं। जब सूक्ष्म देश में जाएँ तो वहाँ इतने पेचीदा (उलझानेवाले) मन को हरने और गिरा देनेवाले सामान हैं जिनसे जीव का बचना अति कठिन है। फिर उसके पार शुद्ध चेतन देशों में अपने आप जाना असंभव है। इस मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलना है। पग-पग पर ख़तरे हैं। इसलिए, जिसको हक़ीक़त के भेद यानी सच्चे ज्ञान को पाना हो और परमात्मा से मिलना हो, उसको ऐसे पूर्ण गुरु की खोज करनी चाहिए जो इस मार्ग का ज्ञाता हो। कठ उपनिषद् (1:3:14) में लिखा है, "उठो, जागो, उत्तम ज्ञान शीघ्र सीख लो।" ऐसे गुरु की खोज करो जिसको इसके परे का ज्ञान हो, क्योंकि महात्मा कहते हैं कि वह मार्ग तलवार की धार से भी अधिक तेज़ है और उस पर चलना भी अति कठिन है:

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

कठ उपनिषद्, 1:3:14

गुरु के बिना परमात्मा का ज्ञान होना असंभव है। शिष्य को गुरु की सहायता की पग-पग पर आवश्यकता है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं, "तू पीर को ढूँढ़,

क्योंकि बिना पीर के इस मार्ग पर चलना विपत्तियों और भय से पूर्ण है। यदि कोई बिना मुर्शिद के इस मार्ग पर जाता है, तो शैतान यानी काल उसको गुमराह करके कुएँ में गिरा देता है। यदि तेरे सिर पर पीर का सहायता करनेवाला हाथ नहीं है, तो शैतान की आवाज़ तुझे हैरान और परेशान रखेगी। इस मार्ग में बड़े-बड़े अक़्लमंद चले, पर शैतान ने सबको गुमराह कर दिया। अंदर काल के शब्द भी हैं, जो दयाल के शब्द की तरह ही हैं, जो तुम्हें नाश की ओर ले जाते हैं:

पीर रा बगुज़ीं किह् बे पीर ईं सफ़र, हस्त बस पुर आफ़तो-खौफ़ो-ख़तर।
हर किह् ऊ बे मुर्शिदे दर राह शुद, ऊ ज़ि-गूलाँ गुमरहो दर चाह शुद।
गर न बाशद साया-ए पीर ऐ फ़ुजूल, पस तुरा सरगशता दारद बांगे-ग़ूल।
ग़ूलत अज़ रह अफ़गनद अन्दर गज़ंद, अज़ तू दाही तर दरीं रह बस बुदंद।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 308-09

बांगे गूलां हस्त बाँगे आशना, आशनाए कू कशद सुए फ़ना।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 81

गुरु की दयामयी सहायता द्वारा ही हम इस स्थूल अंधकार से निकल सकते हैं। जब आत्मा स्थूल देश को छोड़ती है तो सतगुरु उसके साथ चलता है और उसको कठिनाइयों और नीचे गिरानेवाली शक्तियों से बचाता है:

बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतगुर सुख सहज सेती घर जाते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

सूक्ष्म और कारण मंडल हमारे लिए एक उजाड़ के समान हैं। मौलाना रूम कहते हैं कि तू इस रास्ते अकेले न जा। अपने साथ अवश्य एक साथी को लेकर चल। अपने आप पर भरोसा करके इस बियाबान में न जा:

यार बायद राह रा तनहा मरौ, अज़ सरे-ख़ुद अंदरीं सहरा मशौ।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 312

हाफ़िज़ साहिब भी दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि इस रास्ते में बिना मुर्शिद के मत जाओ, इस रास्ते में अँधेरा है और गुमराह होने का डर है:

क़तअ ईं मरहला बे हमरही-ए-ख़िज़र मकुन,
ज़ुल्मात अस्त ब-तर्स अज़ ख़तरे-गुमराही।
दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 408

गुरु के बिना घोर अंधकार है

गुरु के बिना घोर अंधकार है, हक़ीक़त की साफ़-साफ़ समझ नहीं आ सकती, क्योंकि वह मन और बुद्धि से परे है, वह बेज़बानी की ज़बान में है, गुरु तवज्जुह (सुरत) की भाषा द्वारा शिष्य को समझाता है। गुरु के बिना जीव अज्ञानता में फँसा रहता है, असत्य भी सत्य जैसा प्रतीत होता है और वह उसी में फँसा रहता है। गुरु की मेहर के बिना जीव चेतन नहीं होता, न सिद्धि की प्राप्ति होती है और न ही जीव मोह-माया और तीनों गुणों के बंधनों से मुक्त हो सकता है:

सतगुर बाझहो घोर अंधारा डूब मुए बिन पाणी॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

गुरु के बिना जीव का कल्याण नहीं और न ही उसको परमार्थ के भेद का बोध हो सकता है। गुरु से जो भेद समझा जाता है वह इल्मे-सीना (परा विद्या) है, व्यावहारिक शिक्षा है:

गुर बिन घोर अंधार गुरू बिन समझ न आवै॥
गुर बिन सुरत न सिध गुरू बिन मुकत न पावै॥
गुर कर सच बीचार गुरू कर रे मन मेरे॥
गुर कर सबद सपुंन अघन कटह सभ तेरे॥
गुर नयण बयण गुर गुर करहो गुरू सत कवि नल्य कह॥
जिन गुरू न देखिअउ नह कीअउ ते अकयथ संसार मह॥
भट्ट नल, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

जीव घोर अंधकार में है। आँखें बंद करें तो अँधेरा है। इसके अलावा अज्ञानरूपी अंधकार सब ओर छाया हुआ है। इस अंधकार को दूर करनेवाली हस्ती का नाम गुरु है, जिसके अर्थ हैं 'गु'=अंधकार और 'रु'=प्रकाश। जो अंधकार में प्रकाश कर दे, घोर अंधकार में से हमको निकालकर सत्य वस्तु की प्राप्ति करा दे। कवि कालिदास कहते हैं कि गुरु वह है जो घोर अंधकार में प्रकाश कर दे और बाँह पकड़कर परमात्मा दिखा दे:

गुरू सो जो घोर में करे चानण बाहों पकड़ के रब दिखा देवे।

अज्ञानता के अंधकार में रहने के कारण जीव कोई भी कर्म करता है तो वह उसके बंधन का कारण बना रहता है। इसलिए संतजन फ़रमाते हैं कि बिना गुरु के धर्म पुस्तकों के पढ़ने-पढ़ाने, शरीअत (कर्मकांड) के रीति-रिवाजों, प्रार्थना, पूजा, सिमरन, ध्यान और गुणगान से बहुत थोड़ा लाभ होता है, पर जीव का छुटकारा नहीं हो सकता। कबीर साहिब फ़रमाते हैं कि गुरु के बिना माला फेरना और दान देना व्यर्थ है, वेदों और पुराणों से पूछ लो:

गुरु बिन माला फेरता, गुरु बिनु करता दान।
गुरु बिनु सब निस्फल गया, बूझौ बेद पुरान॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 15

गुरु के बिना सब कर्म-धर्म निष्फल हैं: बिन मुरशिद कामिल बुल्लया तेरी ऐवें गई इबादत कीती। (साईं बुल्लेशाह, पृ. 369) जब तक जीव की अंतर की आँख नहीं खुलती और हक़ीक़त से वास्ता नहीं पड़ता, उसका कल्याण नहीं हो सकता। इस कार्य के लिए हमें किसी गुरु की शरण लेनी पड़ती है, जो हमें बाहरमुखी साधनों से हटाकर, अंतर्मुख साधना यानी नाम के साथ जोड़कर, हमारी रूह को खंडों-ब्रह्मांडों के पार अपने निजघर पहुँचा दे।

सतगुरु के मिलने से सब अँधेरा दूर हो जाता है, सब ओर वही दिखाई देता है:

सतगुर मिलै अंधेरा जाए॥ जह देखा तह रहिआ समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 876-77

यदि सैकड़ों चंद्र और हज़ारों सूर्य भी हों, किंतु हमारी आँखों में देखने की शक्ति नहीं, तो इतने प्रकाश के होते हुए भी घोर अंधकार ही रहेगा। इसी प्रकार चाहे हमारे अंतर में करोड़ों प्रकाश हैं, परंतु जब तक हमारी तीसरी आँख नहीं खुलती, हमारे लिए अंधकार ही अंधकार है। गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि गुरु के बिना ये प्रकाश गुप्त ही रहते हैं और हमारे लिए अंधकार बना रहता है। गुरु हमारे आंतरिक नेत्र को खोलता है, जिसके द्वारा रूहानी प्रकाश दिखाई देने लगते हैं:

जे सउ चंदा उगवह सूरज चड़ह हजार॥
एते चानण होदिआं गुर बिन घोर अंधार॥

गुरु अंगद देव आदि ग्रन्थ, पृ. 463

ऐतिहासिक प्रमाण

आत्मिक मंडलों में गुरु के बिना किसी की पहुँच (रसाई) नहीं है, इस बात का प्रमाण इतिहास में मिलता है। शास्त्रों के अनुसार, नारद जी जब विष्णुपुरी में गए, वहाँ उन्हें अंदर जाने की आज्ञा नहीं मिली, क्योंकि उनका कोई गुरु नहीं था; फिर उन्हें गुरु धारण करना पड़ा।

वेदव्यास जी के पुत्र शुकदेव को गर्भ में ही ज्ञान था, पर जब वे विष्णुपुरी गये वहाँ उन्हें निगुरा होने के कारण धक्के मिले और वापस आना पड़ा। वे आत्मिक मंडलों पर नहीं जा सके और फिर उन्होंने राजा जनक को अपना गुरु धारण किया।

कोई ऐसा इतिहास नहीं मिलता जिसमें गुरु के बिना किसी को आंतरिक चढ़ाई प्राप्त हुई हो। स्वत: सिद्ध संतों को जन्म से ही ज्ञान होता है, ऐसी हस्तियाँ गिनती की होती हैं पर वे भी मर्यादा भंग न करते हुए, गुरु अवश्य धारण करती हैं। जिस प्रकार कबीर साहिब जी ने गोसाईं रामानन्द जी को गुरु धारण किया। इतिहास से पता लगता है कि ऐसी हस्तियों को चाहे जन्म से ही ज्ञान था, पर वे साधु-संतों की संगति में रहे और उससे लाभ उठाते रहे। गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं कि ख़सम (मालिक) का धुर से हुक्म यही है कि जीव बिना सतगुरु के चेताया नहीं जा सकता:

धुर खसमै का हुकम पइआ विण सतगुर चेतिआ न जाए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 556

बाक़ी सबके लिए भी गुरु अत्यंत आवश्यक है। इतिहास बतलाता है कि विष्णु के अवतार राम और कृष्ण ने भी वसिष्ठ और गर्ग मुनि को गुरु धारण किया। हमारे लिए इस प्रकार के उदाहरण उपस्थित किए गए हैं, वे (राम और कृष्ण) तो तीनों लोकों के धनी थे, उनसे बड़े और कौन होंगे? इसकी पुष्टि में गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं कि गुरु के बिना किसी को ज्ञान नहीं हुआ। इसकी सच्चाई तुम ब्रह्मा, नारद और वेदव्यास से पूछो:

भाई रे गुर बिन गिआन न होए॥ पूछहो ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 59

कबीर साहिब भी फ़रमाते हैं:

राम कृष्ण सों को बड़ा, तिनहू तो गुरु कीन।
तीन लोक के वे धनी, सो गुरु आगे अधीन॥

कबीर सागर, सुमिरन बोध, पृ. 55

जिस किसी ने परमार्थ में उन्नति की है, उसके जीवन को पलटा देनेवाला कोई न कोई महात्मा था। राजा जनक को आत्मज्ञान देनेवाले अष्टावक्र जी थे, गोरखनाथ ने भर्तृहरि जी से, अर्जुन ने भगवान कृष्ण जी से और विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस जी से आत्मिक जीवन प्राप्त किया।

दूसरी पातशाही गुरु अंगद देव जी को बनानेवाले गुरु नानक साहिब थे, गुरु अमरदास जी को गुरु अंगद साहिब, गुरु रामदास को गुरु अमरदास, गुरु अर्जुन साहिब को गुरु रामदास और इसी प्रकार दसवें गुरु साहिब तक गुरु परंपरा चलती रही।

मौलाना रूम अपने बारे में कहते हैं कि उनकी ज़िंदगी को पलटा देनेवाले शम्स तब्रेज़ साहिब थे:

मौलवी हरगिज़ न शुद मौलाए-रूम,
ता ग़ुलामे-शम्स तब्रेज़ी न शुद।

किताबुल-बैअत, पृ.४

अर्थात्, मौलवी कदाचित मौलाना रूम न बन पाता अगर वह शम्स तब्रेज़ का ग़ुलाम न बना होता।

फिर फ़रमाते हैं, ऐ मुर्शिद! तू मौलाना रूम पर मेहर की नज़र कर, मैं कलंदर (ग़ुलाम) की तरह कहता हूँ कि मैं शम्स तब्रेज़ का ग़ुलाम हूँ:

बया साक़ी इनायत कुन तू मौलानाए-रूम रा,
गुलामे-शम्स तब्रेज़म क़लन्दर वार मी गरदम।

नुक़ाते-दीवाने-शम्स तब्रेज़ी, पृ.४

कई महात्माओं ने तो अपनी वाणियों में अपने-अपने गुरु का वर्णन किया है। पर कइयों की वाणियों में उनका वर्णन नहीं आया। पर उसूल उसूल ही है कि दीप से दीप जलता है, जीवन से जीवन आता है। माया में लिप्त हमारी रूहों के लिए दीक्षित होने (देखें: 'दीक्षा' का प्रकरण) की आवश्यकता है।

गुरु नानक साहिब से पहले और बाद में

भूखे के लिए रोटी और प्यासे के लिए पानी है, एक बालक जो पाँच सौ साल पहले जन्मा उसके लिए प्रकृति ने उस समय दूध का प्रबंध किया, जो हज़ार साल पहले हुआ उसके लिए उस समय सामान मौजूद था और जो बच्चे आज पैदा हो रहे हैं उनके लिए प्रकृति आज व्यवस्था कर रही है, यह प्रकृति का

अटल नियम है। इसी प्रकार जिनको परमार्थ का शौक़ गुरु नानक देव जी के आने से पहले कभी हुआ था या आज या आगे होगा उनके लिए सामान न हो, यह प्रकृति के नियम के विपरीत है। यह कहना कि गुरु किसी ख़ास सौ-दो सौ साल के अंदर ही आए, हज़ारों वर्ष पहले, जब से संसार बना, और उस सौ-दो सौ साल के बाद, दुनिया इस लाभ से ख़ाली रही और उन समयों में प्रकृति की माँग (ज़रूरत) और पूर्ति (प्राप्ति) का नियम नहीं था, यह सौभाग्य केवल सौ-दो सौ वर्षों के लिए ही था, ठीक नहीं है।

संतों का उपदेश सारी दुनिया के लिए, सदा के लिए, होता है, सौ-दो सौ साल के लिए ही नहीं। *परथाए साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै॥* (गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 647)। मूल मंत्र में और अन्य अनेक स्थानों पर गुरवाणी में '੧ओ सतिगुर प्रसाद' लिखा है। यह सूचना है कि वाहिगुरु, जिसका वर्णन मूल मंत्र में और गुरु ग्रन्थ साहिब में (जिसमें मूल मंत्र का विस्तारपूर्वक वर्णन है) है, वह सतिगुर प्रसाद यानी सतगुरु की कृपा द्वारा प्राप्त होता है, इस बात का अटल नियम के रूप में वर्णन किया गया है। यह सच्चे सिद्धांत और प्रत्यक्ष सत्य का वर्णन और उपदेश है।

अनुराग सागर नामक पुस्तक में कबीर साहिब ने कहा है कि वे चारों युगों में आए और नाम का उपदेश दिया (देखें: 'नाम' का प्रकरण)।

भगत वाणी आदि वाणियाँ, गुरवाणी से पहले के संप्रदायों के गुरुओं की वाणियाँ हैं। गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी और भाई गुरदास जी की वारों से पता लगता है कि युगों-युगों से पूर्ण गुरुओं, महापुरुषों और सच्चे शब्द और वाणी से जीवों का कल्याण होता रहा है:

क्रिसन बलभद्र गुर पग लग धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 165

नामा छीबा कबीर जुलाहा पूरे गुर ते गति पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

बाणी वजी चहु जुगी सचो सच सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 35

सचा सबद सची है बाणी॥
गुरमुख जुग जुग आख वखाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

सुखु राजे हरी चंद घरि नारि सु तारा लोचन राणी।
साध संगति मिलि गावदे राती जाइ सुणै गुरबाणी।

वारां भाई गुरदास, 10:6

महां पुरखु आचाणचक गनिका वाड़े आइ खलोता।

वारां भाई गुरदास, 10:21

जन्म-साखी भाई बाले वाली में आया है कि गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं कि कलियुग में संतों को बहुत सारे अवतार धारण करके जीवों का उद्धार करना है:

चौहत्तर जामें भगत जन दस हैं सतिगुर राए॥...
भर बेड़े लै जाहिंगे संत जनां के पूर॥
बेमुख तुट्टे तुट्ट मूए मनमुख न भए कबूल॥

जन्म साखी, भाई बाले वाली, पृ. 545

ऊपर दी हुई गुरवाणी आदि से यह सिद्ध होता है कि गुरु और गुरवाणी सदा से ही हैं। गुरु संसार में सदा ही रहते हैं, ताकि मालिक के खोजी उनके द्वारा उस तक रसाई कर सकें:

जुग जुग संत भले प्रभ तेरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1025

हर जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी॥
जुग जुग पीड़ी चलै सतगुर की जिनी गुरमुख नाम धिआइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 79

गुरु का स्थान ग्रंथ-पोथियाँ और विद्वान नहीं ले सकते

गुरु महापवित्र आत्मिक हस्ती का नाम है, वह सचखंड तक की गति रखता है और उसको अंड, ब्रह्मांड और उसके पार सचखंड तक का पूरा अनुभव है। उसमें आत्मिक अनुभव के गुण प्रकट हैं और वह मन इंद्रियों की गुलामी से आज़ाद है। जब तक हमारा ऐसी हस्ती के साथ संबंध नहीं होता, आत्मज्ञान के संस्कार नहीं उभरते। गुरु वास्तव में एक उज्ज्वल दीपक है जिसके द्वारा बहुत-से बुझे हुए दीप प्रकाशमान हो जाते हैं, बुझे हुए दीपकों से यह काम नहीं हो सकता। कई लोग कहते हैं कि केवल धर्म पुस्तकें पढ़कर ही हम आत्मज्ञान

का दीपक जला सकते हैं, हमें किसी और गुरु की आवश्यकता नहीं, धर्म पुस्तकें ही गुरु का काम दे सकती हैं। आइए, विचार करें कि धर्म पुस्तकें क्या हैं? उनके अंदर ऋषि-मुनियों, संत-महात्माओं के अनमोल आत्मिक अनुभवों का वर्णन है। धर्म पुस्तकों को प्रेम सहित पढ़ना अच्छा है, हमारे दिल में उनके लिए इज़्ज़त और प्यार है। पर ऐसे लोगों ने जड़ और चेतन की असलियत को अभी तक समझा नहीं।

ग्रंथ-पोथियों का विचार करने से और महात्माओं के जीवन-वृत्तांत पढ़ने से परमार्थ का शौक़ पैदा हो सकता है और उनके सिद्धांतों की समझ आ सकती है, जो हमारे लिए बहुत लाभदायक है, पर ये हमारे अंदर आत्मिक जीवन नहीं उभार सकतीं। यह आध्यात्मिक जीवन-दान हमें केवल किसी आत्मिक जीवन प्राप्त हस्ती से ही मिल सकता है। दीपक से ही दीपक जल सकता है, जड़ से जीवन-दान की प्राप्ति असंभव है। करोड़ों वर्षों तक भी धर्म पुस्तकों को पढ़ने, विचार करने और उनकी पूजा करने से हमें आत्मज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। क्योंकि आत्मज्ञान पढ़ाया या सिखाया नहीं जा सकता, यह तो एक स्पर्श है, जो किसी आत्मदर्शी पुरुष से प्राप्त हो सकता है। "Spirituality cannot be taught but caught", संतों की शिक्षा प्राप्त नहीं होती परंतु अंतर में प्रकट होती है। उसको केवल जानना ही नहीं; उसको देखना है, उसका अनुभव करना है। गुरवाणी ने इस सिद्धांत पर काफ़ी प्रकाश डाला है:

हर की सेवा सतगुर पूजहो कर किरपा आप तरावै॥...
निरजीउ पूजह मड़ा सरेवह सभ बिरथी घाल गवावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1264

धर्म पुस्तकें और पिछले महात्मा हमें जीवित महात्मा के पास जाने का और उनकी भावपूर्वक भक्ति करने का उपदेश देते हैं:

चरन साध के धोए धोए पीउ॥ अरप साध कउ अपना जीउ॥
साध की धूर करहो इसनान॥ साध ऊपर जाईऐ कुरबान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 283

संता की होए दासरी एह आचारा सिख री॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 400

भाई गुरदास जी भी फ़रमाते हैं:

> *बेद गिरंथ गुर हटि है जिसु लगि भवजल पारि उतारा।*
> *सतिगुर बाझु न बुझीऐ जिचरु धरे न प्रभु अवतारा।*
>
> वारां भाई गुरदास, 1:17

लोग पूरी आयु ग्रंथ-पोथियों का नियम सहित पाठ करते हैं, वे अक़्ली पहलवान, बौद्धिक मल्ल या ज्ञानी तो बन जाते हैं। उनसे लंबे-चौड़े भाषण सुन लो, पर क्या उनमें नाममात्र भी आत्मज्ञान होता है? वे आत्मिक जीवन से बिलकुल कोरे होते हैं, क्योंकि उनका किसी जीवित हस्ती (गुरु) के साथ संबंध नहीं हुआ होता। आसा की वार में आया है:

> *पड़ पड़ गडी लदीअह पड़ पड़ भरीअह साथ॥*
> *पड़ पड़ बेड़ी पाईऐ पड़ पड़ गडीअह खात॥*
> *पड़ीअह जेते बरस बरस पड़ीअह जेते मास॥*
> *पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअह जेते सास॥*
> *नानक लेखै इक गल होर हउमै झखणा झाख॥*
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 467

> *नानक कागद लख मणा पड़ पड़ कीचै भाउ॥*
> *मसू तोट न आवई लेखण पउण चलाउ॥*
> *भी तेरी कीमत ना पवै हउ केवड आखा नाउ॥*
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 15

पुस्तकों में मालिक के ज्ञान का वर्णन है:

> *गिआन धिआन धुन जाणीऐ अकथ कहावै सोए॥*
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

वह ज्ञान तुम्हारे अंदर है। जब तक अंदर जाने या जड़-चेतन की ग्रंथि खोलने के तरीक़े का पता नहीं मिलेगा, तुम इससे वंचित रहोगे। यदि आत्मज्ञान पुस्तकों में होता तो ये आलिम-फ़ाज़िल (विद्वान, पंडित) सब आत्मज्ञानी हो जाते। चाहे वे स्वयं किताबों की लाइब्रेरी ही क्यों न बन जाएँ, पर ईंट और पत्थर के मकान की तरह जड़ ही रहेंगे। दिमाग़ में किताबें लदी हुई हैं, गधों की तरह पीठ पर चंदन का भार लदा हुआ है, पर वे उसकी सुगंधि से बेख़बर हैं। करछी दिन-रात

हलवे की कड़ाही में रहती है पर वह उसके स्वाद से बेख़बर है। इस किताबी और इल्मी ज़माने में तुम्हें कितने ज्ञानी नज़र आ रहे हैं। यदि किताबों को पढ़ने से लोग परमार्थी बन सकते तो जिस प्रकार आजकल संसार में किताबों की बाढ़ आई हुई है, उसी प्रकार परमार्थ की भी बाढ़ आ जाती।

जब कभी संसार में संत-सतगुरु आते हैं, परमार्थ का प्रवाह आ जाता है। अनगिनत लोग रँगे जाते हैं, उनका जीवन परमार्थिक बन जाता है। आत्मा को आत्मिक जागृति केवल आत्मा से ही नसीब होती है। इल्मी गुरु यह काम नहीं कर सकते। मनुष्य चाहे कितना ही आलिम (विद्वान) और बुद्धिवाला हो, पर जब तक स्वयं उसके अंदर आत्मिक योग्यता नहीं, वह दूसरे के अंदर आत्मज्ञान को नहीं उभार सकेगा। बातें करना, आत्मज्ञान के विषय पर भाषण देना, बहुत सरल है पर आत्मिक जीवन व्यतीत करना और बात है। केवल बाहरी विद्या पढ़कर कोई परमार्थी नहीं बन सकता, वह तो भाँड के समान नक़ल करनेवाला है, उससे परमार्थ की आशा करना व्यर्थ है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

अन्दर आ दर साया-ए-आँ आक़िले, किश नदानद बुर्द अज़ रह नाक़िले।

निकलसन, मसनवी रूमी, दफ़्तर 1:2961, पृ. 182

अर्थ: गुरु की शरण ले, भाँड या नक़ल करनेवाले की मदद से तू कभी राह पर नहीं चल सकेगा।

जिसकी संगति और सेवा से शिष्य के अंदर परमार्थ का भाव जाग्रत हो, वह गुरु है। ऐसे महापुरुष दया के पुंज होते हैं। जो उनके चरणों में आता है, उसको वे भवसागर से बचा लेते हैं। हमें तन-मन से उनकी सेवा और भक्ति करनी चाहिए। गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि हमारा तन, मन और धन तीनों ही संतों के हैं। उनकी दया से ही हमने नाम का सिमरन किया है और शांति प्राप्त की है। संतों को छोड़कर और कोई सच्चा दाता नहीं है। जो-जो उनकी शरण में आते हैं उनको वे उच्च आत्मिक मंडलों में ले जाते हैं:

तन संतन का धन संतन का मन संतन का कीआ॥
संत प्रसाद हर नाम धिआइआ सरब कुसल तब थीआ॥
संतन बिन अवर न दाता बीआ॥
जो जो सरण परै साधू की सो पारगरामी कीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 610

गुरु का आदर्श आत्मिक है, यह कोई मनुष्य पूजा की शिक्षा नहीं। मनुष्य की देह को ही गुरु नहीं कहते, वह तो शब्द है, देह तो एक कपड़ा है, जो शिष्य और गुरु दोनों ने छोड़ देना है। पर जिस समय देह के अंदर बैठकर वह काम करता है, उस समय वह देह धन्य है, उसका हम आदर करते हैं, वह पूजा के योग्य है, उसको भी गुरु कहा जाता है। हम देहधारी हैं, इसलिए हमें देहधारी ही ज्ञान दे सकता है। जो इसे मरदुमपरस्ती (मनुष्य की पूजा) कहते हैं, वे वास्तविकता के ज्ञाता नहीं। यदि उनकी बात को मान भी लिया जाए तो भी वह किताबपरस्ती और बुतपरस्ती से कहीं उत्तम है, क्योंकि मनुष्य फिर भी चेतन है और चेतन को चेतन द्वारा ही ज्ञान मिल सकता है। ख़ुसरो साहिब भी फ़रमाते हैं:

ख़ल्क मी गोयद किह् खुसरो बुत परस्ती मी कुनद,
आरे आरे मी कुनम बा ख़ल्को-आलम कार नीस्त।

अर्थ: *ख़िलकत (जनसमूह) कहती है कि ख़ुसरो बुतपरस्ती करता है। हाँ, हाँ, मैं करता हूँ। मुझे संसार और संसार के लोगों से कोई वास्ता नहीं है।*

भक्तों और संसारियों का कभी भी मेल नहीं हुआ। गुरु भक्ति की झलक से हीन पुरुष क्या जान सकते हैं कि गुरु क्या होता है! वह मालिक के रूप (जमाल) का लहराता हुआ सागर है, जिससे परमार्थी लोग रँगे जाते हैं। इस भेद को समझने के लिए देखनेवाली आँख की आवश्यकता है।

सच्ची बात तो यह है कि गुरु मनुष्य का नाम नहीं, वह तो कोई और शक्ति है जो इस विरक्तिमयी देह में प्रकट है और हमारा सच्चा आदर्श है, जिसके आधार पर परमार्थ की सच्ची कमाई होती है। वह बिजली के बल्ब के समान प्रकाश से प्रज्वलित है, जिसके प्रकाश में शीशे के बल्ब की बनावट का ख़याल तक नहीं आता है। परमार्थ के अभिलाषी, पतंगों की भाँति, उस नूरी प्रकाश पर क़ुर्बान हैं। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

गुरु मानुष जानते, ते नर मूढ़ गँवार।
भव सागर के भंवर महि, डूबे बारंबार॥
गुरु को मानुष कर जानते, तन मन अधिक बिकार।
गुरु कीया है देह का, कैसे होय उधार॥
गुरु को मानस जानते, भगति भाव क्या होय।
तरे न तारे आपको, मूढ़ कहावै सोय॥

गुरु मानुष करि जानते, चरनामृत को पानि।
ते नर नरकै जाइँगे, जन्म जन्म ह्वै स्वान॥
कबीर साखी-संग्रह, पृ.3

गुरु पूर्ण पुरुष यानी आदर्श मनुष्य है और उससे भी कहीं बढ़कर है

गुरु मनुष्यों में पूर्ण मनुष्य है। पूर्ण मनुष्य आध्यात्मिक मनुष्यत्व का कमाल (परिपूर्णता) है, उसकी प्रशंसा करना असंभव है। वह संपूर्ण गुणों से भरपूर है, वह रूहानियत का स्रोत है। प्रकृति में जो कुछ भी है वह सब उसके अंदर है, सतलोक से लेकर मृत्युलोक तक के सारे गुण उसके अंदर विद्यमान हैं, उसके व्यक्तित्व में वे सब प्रकट दिखाई देते हैं। कहीं और से इन गुणों का पता लगाना कठिन है। सारे समुद्र को तैर लेना कठिन है। मनुष्य समूचे समुद्र में नहीं नहाता, नहाने का काम सदा किसी घाट पर हुआ करता है। यह पूर्ण पुरुष (सतगुरु) मालिक का इसी प्रकार का घाट है।

यदि पूछो कि उस पूर्ण मनुष्य में क्या है? वह कहाँ से और किन-किन मंज़िलों को पार करके आया है? वह कहाँ आकर ठहरा है और यहाँ आकर वह क्या कर रहा है? तो इसका उत्तर यह है कि वह सतलोक से आया है, सारे लोकों (तपोलोक, जनलोक, महर्लोक, स्वर्लोक और भुवर्लोक आदि) की मंज़िलों को पार करके भूलोक में आया है और यहाँ ठहरा है। वह परम सत्य की शान को प्रकट कर रहा है। लोक-लोकांतरों के प्रभाव और गुण उसमें मौजूद हैं।

उसके हृदय में मालिक विराजमान है। उसके स्वरूप से मालिक का व्यक्तित्व और गुण प्रकट हो रहे हैं। इस पूर्ण पुरुष में व्यक्तित्व की परिपूर्णता और गुणों की निपुणता एक स्थान पर इकट्ठी हो गई हैं। ईश्वरीय गुणों और व्यक्तित्व की पूर्ण शोभा उसके अंदर प्रकट है। यदि तुम ख़ुदा को देखना चाहते हो तो इस पूर्ण मनुष्य को ही देख लो। यहूदियों का कथन है कि परमात्मा ने मनुष्य को अपनी शक्ल का बनाया है:

दर बशर रूपोश कर्द अस्त आफ़ताब।
मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ.311

जब आंतरिक नेत्र खुलता है तो पता लगता है कि वह (सतगुरु) सारे संसार के लिए सिजदा या दंडवत करने का स्थान है, वह सारी दुनिया की जान है। वह हक़ मुजस्सम, शरीरधारी परम तत्त्व है, वह हक़ का अंश है और हक़ की झलक दे रहा है। वह सारी ख़िलकत (सृष्टि) का सरदार है, इस संसार में उससे

उत्तम कोई नहीं, उससे श्रेष्ठ दोनों लोकों में कोई नहीं, वह दोनों लोकों के लिए पूजनीय है। जो-जो विशेषताएँ ब्रह्मांड और उसके पार के चेतन देशों की हैं, वे सब उसके व्यक्तित्व में प्रकट हो रही हैं। वह सारे गुणों का केंद्र है। जिसने उसको देख लिया उसने परमात्मा को देख लिया। जितने भी गुण ख़ुदा के हैं वे सब उसमें मौजूद है। वह इस संसार में मालिक का प्रकट रूप है, वह उसका प्रतिनिधि है और संसार में उसका काम करता है। वह पूर्ण ज्ञान और विवेक की साक्षात मूर्ति है। उसने चाहे किसी स्कूल और कालेज में शिक्षा भी न पाई हो, पर वह सारी विद्याओं का स्रोत है। वह उनके तात्पर्य को समझता है। यदि तुम उसको मनुष्य की दृष्टि से भी देखो तो वह सबसे श्रेष्ठ मनुष्य है। वह सर्वगुण-निधान है, वह पूर्ण मनुष्य है। वह किसी ख़ास मुल्क या क़ौम का नहीं है, वह सारी क़ौमों और देशों का है। वह सबकी सेवा करता है और मनुष्यमात्र का शिक्षक है। उसके अंदर सबके लिए प्रेम है। उसका उपदेश संपूर्ण संसार के लिए है। वह सारे विश्व का नागरिक है। वह इस संसार में प्रेमपूर्वक भ्रमण करनेवाला है और मालिक का एलची (दूत) बनकर उसकी रोशनी फैलाने के लिए आया है।

वह साधारण मनुष्यों की भाँति जीवन-यापन (गुज़र) करता है। वह चाहे संसार में रहता है, पर वह दुनिया से निर्लेप है। वह सबके साथ प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करता है। उसका प्रेम और सँभाल एक माता के प्रेम और सँभाल से भी हज़ारों गुना बढ़कर है। वह श्रेष्ठ पुरुष है जिसमें कोई त्रुटि नहीं है। वह हमारी कमज़ोरियों पर रहम करता है।

देखने में तो वह मनुष्य दिखाई देता है, पर वह साधारण मनुष्य नहीं, वह पूर्ण पुरुष है, अर्थात् वह नेकी-बदी से परे सबसे उच्च मनुष्य है। वह मनुष्य के रूप में स्वयं मालिक है। उसके अंदर नीति और रूहानियत की पूर्ण औषधि (मिली हुई दवा, मिश्रण) है। वह पूर्ण समर्थ होते हुए भी असमर्थ और सर्वमान्य होते हुए निमाना है। शक्ति के साथ विनय और नम्रता के साथ प्रेम का मेल सतगुरु के अंदर ही मिलता है, जिसका आदर्श अफ़लातून, प्लेटो और नीटज़े आदि महापुरुषों ने संसार के सम्मुख रखा है।

यही नहीं, वह पूर्ण पुरुष से भी बढ़कर है, क्योंकि सतगुरु, मनुष्य की सीमाओं से परे भी गति रखता है। उसका कार्यक्षेत्र उन मंडलों पर भी है, जिनको ये आँखें और कान देख व सुन नहीं सकते। उसकी रसाई सूक्ष्म और कारण देशों और उनसे भी आगे तक है, जिनको हम इन इंद्रियों और बाहरी यंत्रों (ख़ुर्दबीन आदि) के द्वारा नहीं देख सकते। वैज्ञानिक उन मंडलो को देखने में अभी तक असमर्थ हैं, क्योंकि उनके लिए इस स्थूल शारीरिक

देश से पार जाना असंभव है और न ही उन तक रसाई करने की उनके पास कोई युक्ति है। वे तो मन-बुद्धि की सीमा में ही दौड़ लगाते रहते हैं। उन्होंने बहुत-सी खोज की हैं और दिन-प्रतिदिन और भी करते रहते हैं। मन की पहुँच से परे सूक्ष्म खंड और ब्रह्मांड और इनके पार निर्मल चेतन देश भी हैं, जिनमें सतगुरु प्रतिदिन सफ़र करता है:

गुरमुख आवै जाए निसंग॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 932

जो गुरु की शिक्षा धारण करते हैं, वे उन लोकों को देख सकते हैं। पर ऐसे महापुरुष का पता किस प्रकार लग सकता है? संत-महात्मा कहते हैं कि समस्त खंड, ब्रह्मांड, रूहानियत के भंडार, प्रसाद, सब ज्ञान, सब आनंद मनुष्य के अंदर हैं:

घरै अंदर सभ वथ है बाहर किछ नाही॥...
बाहर भाले सो किआ लहै वथ घरै अंदर भाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 425

बाहर टोलै सो भरम भुलाही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 102

इस काया के अंदर सब कुछ है, जो इसके अंदर जाने की युक्ति जानते हैं वे उसको प्राप्त कर लेते हैं:

काइआ अंदर सभ किछ वसै खंड मंडल पाताला॥
काइआ अंदर जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला॥...
काइआ अंदर रतन पदारथ भगति भरे भंडारा॥
इस काइआ अंदर नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा॥
इस काइआ अंदर नाम नउ निध पाईऐ गुर कै सबद वीचारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

हकीम सनाई साहिब फ़रमाते हैं कि शरीररूपी देश के अंदर कई आकाश (लोक) और उनको चलानेवाले हैं। आत्मा के मार्ग में कई ऊँचाइयाँ और गहराइयाँ हैं, कई ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और नदियाँ हैं। अंदर समुद्र, मरुस्थल और

पहाड़ हैं जिनके बारे में बुद्धि और कल्पना काम नहीं करते। यह दुनिया उसके सम्मुख इस प्रकार है जैसे समुद्र में एक बाल:

आसमाँ हास्त दर विलायते-जाँ, कार फ़रमाए आसमाने-जहाँ।
दर रहे-रूह पस्त-ओ-बाला हास्त, कोहहाए बलंद ओ दरया हास्त।

सनाई साहिब

अंदर आँ बहिरो-बीयबानो-जिबाल,
मुनकत मी गरदद ओहामो-ख़्याल।
ईं बीयाबाँ दर बीयाबाँ हाए ऊ,
हमचू अंदर बहरे-पुर-यक-तारे-मू।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 113

मनुष्य का शरीर रचना का संक्षिप्त प्रतिरूप है। यह ब्रह्मांड का नमूना है, जो इसकी खोज करता है वह ब्रह्मांड को जान लेता है:

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै॥

पीपा साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 695

मनुष्य पिंड (Microcosm या आलमे-सग़ीर) है, जो ब्रह्मांड (Macrocosm या आलमे-कबीर) का नमूना है। यदि हम पिंड को जान लें तो ब्रह्मांड को भी जान सकते हैं। हम प्रकृति के बाहरी रूप को देख रहे हैं, उसके आंतरिक रूप को नहीं देखते। एक तरह से हम वृक्ष के पत्तों को पानी देते हैं, उसकी जड़ को नहीं देते। सृष्टि के वृक्ष की ज़ड़ें सूक्ष्म मंडलों में हैं, जहाँ की रसाई हम केवल अपने अंदर देखने पर ही कर सकते हैं। पर हमने कभी अपने अंदर झाँका ही नहीं। एमर्सन कहते हैं, 'अपने अंदर छेद करो'। सब महात्मा इसी पर ज़ोर देते रहे हैं। हम अंदर किस प्रकार जा सकते हैं, इसका स्पष्ट विवरण सतगुरु प्रदान करते हैं। इसका वर्णन इसी पुस्तक में अन्य स्थान पर किया गया है।

संत-महात्मा उन आत्मिक मंडलों के वैज्ञानिक हैं, जो मन की सीमा से परे हैं और जिनका केवल आत्मा ही अनुभव कर सकती है। वे बताते हैं कि स्थूल मंडल दुःख का घर है। इसके पार अनगिनत सूक्ष्म और कारण संसार आबाद हैं, जो नूर ही नूर हैं। इन मंडलों में सतगुरु अपनी इच्छा से प्रतिदिन यात्रा करते हैं और इन जहानों के होने की गवाही देते हैं। जो जीव संतों की प्रयोगशाला में जाते हैं, वे यह सब कुछ उसी प्रकार देखते हैं जिस प्रकार हम स्थूल संसार को

देख रहे हैं और सब कुछ हमारे अनुभव में उसी प्रकार आता है जिस प्रकार दो और दो हमेशा चार होते हैं।

गुरु, मालिक का हुक्म पाकर जीवों को वापस बुलाने के लिए सचखंड से आते हैं, वे तन-मन के बंधनों में नहीं होते

हमारी आत्मा परमात्मा का अंश है, यह उस भंडार से आकर तन और मन के पिंजरे में क़ैद हो गई है। संतजन निजघर से आते हैं जो रूह का सच्चा घर है, ताकि रूहों को वापस ले जाकर मालिक से मिला दें। मालिक, जिसके हुक्म से जीव संसार में आए, स्वयं ही जीवों को वापस बुलाने के लिए संत-सतगुरु का स्वरूप धारण करके आता है और कहता है, "तू तीनों गुणों के पार सहज के घर में वापस आ जा।"

जिन तुम भेजे तिनह बुलाए सुख सहज सेती घर आउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 678

वे मालिक के साथ एक होते हैं, संसार में केवल जीवों के उद्धार के लिए आते हैं। सब महात्माओं की वाणियाँ कहती हैं कि वे (सतगुरु) मालिक के हुक्म के अंदर जीवों के उद्धार के मिशन (उद्देश्य) को पूरा करने के लिए इस संसार यात्रा को स्वीकार करते हैं।

तू चिह् दानी किह् मा चिह् मूर्ग़ानेम, हर नफ़स ज़ेरे लब चिह मेख़्वानेम।
गर बसूरत गदाए ईं कुएम, बसिफ़त बीं किह् मा चिह सुलतानेम।
गरचिह मा मुफ़लिसेम दर ज़ाहिर, तू ब-बातिन निगर किह् मा कानेम।
चूंकिह् मा ख़ुद शहीम दर हमा मिसर, चिह् ग़म इमरोज़ गर बज़िंदानेम।
कै बमानीम अन्दरीं खाना, चूँ दरीं ख़ाना जुमला मिहमानेम।
क़ौल-हा करदा एम बा शह ख़्वेश, हेच ज़-आं क़ौल रू न गरदानेम।
ता दरीं खिरक़ा एम अज़ कस मा, हम नरंजेम ओ हम नरंजानेम।
हमचू फ़िरदौस पुर ज़ नूर ओ नईम, खुरम ओ ख़ुशदिलेम ओ ख़ंदानेम।

कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 876

मौलाना रूम फ़रमाते हैं, तुम क्या जानो हम कैसे मुर्ग़ हैं (कैसी हस्ती हैं)! हम हरदम अंदर ही अंदर विरद (जप) करते रहते हैं। चाहे देखने में इस दुनिया में फ़क़ीर मालूम होते हैं, हमारी सिफ़त (विशेषता, गुण) अंदर देखो कि हम

कैसे बादशाह हैं, बाहर भले ही हम कंगाल दिखाई देते हैं। तुम हमारे अंतर में देखो कि हम कैसी खान (भंडार) हैं। हम सारी दुनिया के बादशाह हैं, हमें क्या ग़म है! यदि हम आज इस क़ैदख़ाने (शरीर और दुनिया) में क़ैद हैं, इसमें हम कब तक रहेंगे, क्योंकि हम सभी इसमें मेहमान हैं। हमारे यहाँ आने का कारण यह है कि हम अपने बादशाह से इक़रार करके आए हैं, हम इक़रार से मुँह नहीं मोड़ सकते। जब तक हम इस गुदड़ी में हैं, हम किसी से नाराज़ नहीं होते और न किसी को नाराज़ करते हैं। सचखंड की तरह हम पुरनूर (ज्योतिर्मय) और नेअमत से भरपूर हैं, हम प्रसन्न, हँसमुख और ख़ुशदिल हैं।

गुरु गोबिन्द सिंह जी भी ठीक इसी प्रकार वर्णन करते हैं, "हम द्वैत (दो) से मालिक में एकरूप हो गए थे, हमारा चित्त दुनिया में आने को नहीं करता था, पर मालिक ने हमें दुनिया में ज्यों-त्यों करके भेजा।"

> *द्वै ते एक रूप ह्वै गयो।...*
> *चित न भयो हमरो आवन कहि।...*
> जिउ तिउ प्रभ हम को समझायो। इम कहि कै इह लोक पठायो॥
>
> श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 119-120

कबीर साहिब भी यही फ़रमाते हैं:

> कहे कबीर हम धुर के भेदी लाए हुकम हजूरी॥
>
> प्राप्त नहीं

गुरु का संसार में आने का प्रयोजन

ये हस्तियाँ परोपकार के लिए, हमारी भलाई के लिए दुनिया में आती हैं। वे अपने अलौकिक आनंद को छोड़कर मृत्युलोक में आती हैं ताकि माया और काल के महा अंधकारमय जाल से जीवों को निकालकर ले जाएँ। वे हमारी तरह मल-मूत्र वाली देह धारण करती हैं और इस मृत्युलोक में हमारे समान विचरती हैं।

वे जन्म-मरण की क़ैद से आज़ाद, अजर-अमर हस्तियाँ होती हैं। उनके जीवन का ध्येय हमें आत्मिक जीवन का दान देकर आत्मिक मंडलों के पार, मालिक से मिलाने का होता है:

> जनम मरण दुहहू मह नाही जन परउपकारी आए॥
> जीअ दान दे भगती लाइन हर सिउ लैन मिलाए॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

दुनिया में हमारे आने और उनके आने में ज़मीन आसमान का अंतर है। जिस प्रकार क़ैदख़ाने में क़ैदी भी जाते हैं और डॉक्टर भी क़ैदियों के स्वास्थ्य को देखने के लिए जाते हैं। एक तो अपने किए हुए कर्मों की सज़ा भुगतने के लिए जाता है और दूसरा उनके इलाज के लिए। हमारा प्रारब्ध कर्मों के फल को भोगने के लिए यहाँ आना होता है, किंतु वे हस्तियाँ केवल जीवों के उद्धार के लिए आती हैं।

संसार में परोपकार कई प्रकार के हैं। किंतु गुरु का परोपकार सबसे ऊँचे दरजे का है। वे हमें काल के क़ैदख़ाने और माया के धोखे से बाहर निकालकर मालिक के साथ जोड़ते हैं। दुनिया के परोपकारों को हम एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं। एक जेलख़ाना है, जिसमें भिन्न-भिन्न श्रेणियों के क़ैदियों के रहने के लिए चौरासी लाख कोठरियाँ हैं। उससे निकलने का एक दरवाज़ा है। एक गंजा मनुष्य जो आँखों से अंधा भी है, उस क़ैदख़ाने में से निकलने के लिए चक्कर लगा रहा है। जब निकलने का दरवाज़ा आता है तो वह गंज को खुजलाने लग जाता है और दरवाज़ा निकल जाता है और पुन: चौरासी लाख कोठरियों के चक्कर लगाने लगता है। एक दूसरा उदाहरण है, एक परोपकारी मनुष्य को उन क़ैदियों की दशा पर तरस आता है वह सबको ठंडा शर्बत पिलाता है, यह उसका परोपकार है, क़ैदी थोड़ी देर के लिए ख़ुश हो जाते हैं। दूसरा परोपकारी आता है, वह क़ैदियों को स्वादिष्ट खाने और मिठाइयाँ खिलाता है, क़ैदी थोड़ी देर के लिए तृप्त होकर प्रसन्न होते हैं। तीसरा परोपकारी आता है, वह सब क़ैदियों को सुंदर वस्त्र सिलाकर दे जाता है, क़ैदियों का शरीर कुछ दिनों के लिए ढक जाता है। इन सब परोपकारों के बावजूद क़ैदी क़ैद में ही रहते हैं, स्वतंत्र नहीं हो सकते। एक और परोपकारी आता है। उसके पास जेलख़ाने की कुंजी है, वह जेलख़ाने के दरवाज़े खोल देता है और सबको आज़ाद कर देता है और उन्हें उनके घर पहुँचा देता है। इन सबने परोपकार किया, पर सच्चा परोपकार आख़िरी हस्ती का है। इसी प्रकार संसार में कई प्रकार के परोपकार हैं, पर उन सबके होते हुए भी हमारी तन-मन के पिंजरे की क़ैद नहीं छूटती। गुरु इस दुनिया में आता है और इस दुनिया से, जोकि चौरासी का क़ैदख़ाना है, छुड़ाकर हमें अपने निजघर पहुँचा देता है। गुरु का परोपकार सबसे अधिक है। वे जन सच्चे परोपकारी होते हैं। उनका ध्येय केवल यह है कि जीवों को जीवन-दान देकर, चौरासी के कालचक्र में से निकालकर, मालिक से मिला दें।

गुरु का कार्य

गुरु दाता है मँगता नहीं, उसका उपकार क्या अमीर, क्या ग़रीब सबके लिए एक-सा है। उसे इसी बात में ख़ुशी है कि वह जीवों को शारीरिक-जीवन

(जन्म-मरण) के बंधनों से मुक्त करे। संत-सतगुरु बाहर से चाहे किसी भी भेष में क्यों न हों, उनकी दृष्टि केवल आत्मा और आत्मिकता की ओर होती है। वे न कोई नया मज़हब या शरीअत बनाते हैं और न किसी धर्म के रीति-रिवाजों में बाधा डालते हैं। वे न किसी अंधविश्वास को मानते हैं और न किसी को अंधविश्वासों का क़ैदी बनाते हैं। वे तो नक़द धर्म के व्यापारी होते हैं, उधार धर्म या मरने के बाद मुक्ति का भरोसा नहीं दिलाते। उनका दायरा (क्षेत्र) बड़ा खुला है। तुलसी साहिब कहते हैं:

जब देखैं हम अपने नैना। तब मानैं सतगुर के बैना॥

घट रामायण, भाग 1, पृ. 103

सच है, हमें गुरु के कहने पर अपना अनुभव करने के लिए ही विश्वास करना पड़ता है, पर जब हम उनके वचनों की सच्चाई अपने अनुभव द्वारा अमली तौर पर (व्यावहारिक रूप में) देख लेते हैं, फिर हमारा दृढ़ विश्वास बन जाता है, जो सारी दुनिया के विरोध करने पर भी टूट नहीं सकता। एक मनुष्य ने सूर्य को चढ़ा हुआ देख लिया है, अब चाहे करोड़ों चमगादड़ क़समें खाएँ कि सूर्य है ही नहीं, उसका विश्वास नहीं टूटता क्योंकि उसने स्वयं देखा है। जिनकी आंतरिक आँख खुली ही नहीं, वे बेचारे इस सच्चाई से ख़ाली रह जाते हैं।

जब-जब ऐसी हस्ती संसार में प्रकट होती है, सत्य के खोजी पतंगों की भाँति उसकी जाग्रत ज्योति की ओर खिंचे चले जाते हैं और भ्रमरों की भाँति उस आत्मिकता के चेतन फूल के आस-पास मँडराते हैं और उसका रस लेते हैं। वे चकोर के समान उस चंद्रमा की ओर खिंचे रहते हैं और एक क्षण के लिए भी उसका वियोग नहीं सह सकते। सतगुरु की अलौकिक शक्ति द्वारा जीव उसकी ओर खिंचे चले आते हैं और उनके अंदर सच्ची प्रेम भक्ति की ज्वाला जाग उठती है। यह प्रेम और भक्ति ही जीव को सतगुरु की दया का पात्र बनाने और निजघर पहुँचाने का उपाय है।

गुरु शिष्यों की आंतरिक दशा देख़ता है, वह उनकी बाहरी शक्ल, सूरत, धर्म या देश की ओर नहीं जाता। जिनको योग्य समझता है उन्हें आंतरिक मार्ग का उपदेश दे देता है और जिन्हें इस ओर जाने के लिए तैयार नहीं देखता, उनको इनकार कर देता है। इस निरख-परख के काम के लिए वह कौन-सी कसौटी का उपयोग करता है, यह वही जानता है। उसके सम्मुख आए हुए जीव के सभी संस्कार उसको इस प्रकार दिखाई देते हैं जिस प्रकार काँच की बोतल में भरी हुई कोई चीज़ (अचार या मुरब्बा) नज़र आ जाती है। उन संस्कारों को आम लोग नहीं देख सकते।

जब आवश्यकता हो तो सतगुरु अपनी आंतरिक अलौकिक शक्ति द्वारा परमार्थ के खोजियों को चाहे वे दूर हों या पास, प्रतीति प्रदान करते रहते हैं और उनको बिना कहे या लिखे उपदेश देते रहते हैं। जिस किसी को संत अपनी शरण में ले लें उस पर वे धुर की मोहर (छाप) लगा देते हैं, उसको काल और उसके लेखे (लेन-देन) से बचा लेते हैं:

जेजीआ डंन को लए न जगात॥ सतगुर कर दीनी धुर की छाप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 430

नानक जिन्ह कउ सतगुर मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 435

जिन कउ सतगुर भेटिआ तिना विटहो बल जाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1347

संतजन जब संसार में प्रकट होते हैं, संसार के सम्मुख अपना जीवित दृष्टांत उपस्थित करते हैं और आत्मज्ञान का प्रवाह चला देते हैं। जो खोजी उनकी शिक्षा पर अमल करते हैं वे लाभ उठा जाते हैं। जो उनसे मिलते हैं उनको वे उच्च और पवित्र बना देते हैं। एक़ विशेष प्रकार की बरकत की धारा उनमें से निकलती रहती है।

गुरु का कर्तव्य

गुरु के कर्तव्य अनगिनत हैं। उनका सबसे बड़ा फ़र्ज़ यह है कि वे टूटे हुए को जोड़ देते हैं, अर्थात् बिछुड़ी हुई रूहों को मालिक के साथ मिला देते हैं। यह काम वे नाम (शब्द) के द्वारा करते हैं, जिस पर रूह को सवार करके अपने निज मुक़ाम में पहुँचा देते हैं। यह शब्द रेडियो की बिजली भरी चुंबकीय तरंगों की भाँति अंदर-बाहर सब जगह परिपूर्ण है, व्याप्त है, जिसको हम माया के प्रभाव के कारण नहीं जान सकते। शब्द के द्वारा वे जीवों को मोह-माया के बंधनों से मुक्त करते हैं और जीवों के सच्चे मुक्तिदाता बनते हैं। चाहे जीव संतों की पूरी-पूरी शिक्षा का ज्ञाता भी हो जाए, पर बिना गुरु की सहायता के केवल बुद्धि का विचार उसको इन बंधनों से मुक्त नहीं कर सकता।

उनका पहला कर्तव्य तो शिष्य को तैयार करना है और फिर मालिक की दरगाह में पहुँचाना है। जो जीव सतगुरु की शरण में एक बार आ जाते हैं, उनको वे धुरधाम पहुँचाने के ज़िम्मेदार हो जाते हैं। उनकी सँभाल के लिए वे बार-बार संसार में आते हैं और उनको आध्यात्मिक मार्ग पर चलाते हैं:

सतगुर सरन पए से थापे तिन राखन कउ प्रभ आवैगो॥
जे को सर संधै जन ऊपर फिर उलटो तिसै लगावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

उनके अतिरिक्त, वे दूसरे परमार्थियों की भी सँभाल करते हैं क्योंकि, "उन्हें कई भेड़ों की सँभाल करनी पड़ती है" (बाइबल)। वे सारे संसार को प्रकाश देनेवाले होते हैं। वे सब लोग संसार सागर से पार होने के अधिकारी हो जाते हैं जो उनके साथ संबंध रखते हैं।

गुरु मालिक का विशेष प्रकट रूप है

मालिक अगम और अगोचर है। वह गुरु के अंदर प्रत्यक्ष प्रकट हो रहा है। गुरु मालिक की शान को प्रकट कर रहा है। मालिक स्वयं अंतर के वज्र-कपाट बंद करके गुप्त बैठा है और स्वयं ही मनुष्य का चोला पहनकर, स्वयं ही दरवाज़े की कुंजी लेकर खोलने के लिए आ जाता है। जिस स्वरूप को धारण करके वह हमारे बीच में आता है, वह स्वरूप हमें विशेष रूप से प्रिय लगता है, वास्तव में वह हमारे लिए पूज़नीय है। उससे मालिक के जमाल (सौंदर्य) की शान बरस रही है। वह बाहर से मनुष्य देह धारण करके हमारे बीच में रहता है। हमारे समान ही देहधारी होकर हमारे सुख-दुःख बँटाता है। इसलिए मालिक का जो स्वरूप स्पष्ट रूप में हम तक पहुँचता है, वह हमारे लिए मालिक के निज स्वरूप से बढ़कर है। गुरु मालिक से भिन्न नहीं। वह उसके (मालिक के) साथ एकरूप है, फिर बड़े और छोटे का विचार कैसा! असल में संत और मालिक एक ही रूप हैं, दो नहीं। पर इस संसार के लिए संत-सतगुरु एक बरकत हैं। मौलाना रूम फ़रमाते हैं कि यदि तुम मुर्शिद की ज़ात को क़बूल (स्वीकार) कर लो तो उसके अंदर ख़ुदा और रसूल दोनों ही आ जाते हैं। तू उनको दो न समझ और दो न देख और दो करके कभी बयान न कर। तू मुर्शिद को मालिक के अंदर लीन हुआ समझ। यदि तू टेढ़ी आँख करके मुर्शिद को मालिक से अलग देखेगा तो तू अपने आप को और परमार्थ के मूल तत्त्व को खो देगा। जिसने मुर्शिद को मालिक से अलग, दो करके देखा वह असल में मरीद (मरा हुआ) है, मुरीद (शिष्य) नहीं:

चूँ किह् करदी ज़ाते-मुर्शिद रा क़बूल, हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल।

क़िताबुल-बैअत, पृ. ८

दो मगो ओ दो मख़्वाँ ओ दो मदाँ, बन्दा रा दर ख़्वाजाए ख़ुद महव दाँ।
गर जुदा बीनी ज़ हक़ ईं ख़्वाजा रा, गुम कुनी हम मतन ओ हम दीबाजा रा।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ.309

पीर ओ हक़ रा दो ज़ अहवली हर किह दीद,
ऊ मरीद अस्त दर हक़ीक़त नै मुरीद।

क़िताबुल-बैअत, पृ.8

गुरु मालिक का वह स्वरूप है जिसको हम देख सकते हैं और जिसके साथ हमारा प्रत्येक मंडल (स्थूल, सूक्ष्म और कारण और उसके पार के देश) में मेल जोल होता है। पर मालिक का अपना निज रूप इन सबसे परे, स्थिर और अटल है। अब यह विचार करने योग्य है कि मालिक का यह स्वरूप (गुरु) जो इस संसार में और ऊपर के रूहानी मंडलों में शिष्य के साथ रहता है, वह मालिक के अकथ, अगाध, अगोचर और जिस तक शिष्य की अभी रसाई नहीं, उस निज स्वरूप से बढ़कर है या नहीं? गुरु God-in-man=God-Man+Man-in-God है। उसके अंदर सतलोक से लेकर भूलोक तक की सब विशेषताएँ हैं, वह शिष्य का हर मंडल पर सहायक होता है, उसकी हर मंडल पर निराली शान और आधिपत्य (हुकूमत) है, वह शिष्य की भक्ति का आधार है और मालिक का निज स्वरूप इन मंडलों से ऊपर है। संसार में गुरु (God-in-man) अकालपुरुष का अवतार है, वह सबसे उत्तम है। चाहे मालिक बिजली की भाँति गुप्त होकर सब जगह व्यापक है, पर गुरु उस मालिक के प्रकट होने का स्रोत है।

मालिक गुरु का रूप धारण करके हमारे पास आता है, वह हमें स्पर्श कर सकता है, हमारे साथ बातचीत कर सकता है। वह हमारे दुःखों को महसूस करता है और हमारे साथ प्यार करता है। परमात्मा कहाँ है? उसको हम गुरु की जलाली (तेजयुक्त) और जमाली (परम रूपवान) सूरत में ही देख सकते हैं और कहीं नहीं। जब तक हम मन, इंद्रियों और बुद्धि के परे शुद्ध चेतन देशों में नहीं पहुँचते, हम मालिक को नहीं देख सकते। इस संसार में तो मालिक हमारे लिए केवल ख़याल यानी कल्पना ही है। हम मालिक के देहधारी स्वरूप गुरु को छोड़कर मालिक के केवल ख़याल को ही पकड़े बैठे हैं। गुरु के अंदर परमात्मा प्रकट है, और गुरु हमारे बीच में रहता है और उसको हम देख सकते हैं:

शब्द ने देह धारण की और हमारे बीच में रहा।

बाइबल, जॉन 1:14

जब तक मालिक का देहस्वरूप अर्थात् गुरु नहीं मिलता, हम अंधकार में रहते हैं, हम मालिक को नहीं जान सकते। हम स्थूल संसार में विचर रहे हैं, हमें वह ख़ुदा चाहिए जो "ख़ुद आ" जाए। मनुष्य को मनुष्य समझाता है। एक ही प्रकार की चीज़ों का मेल क़ुदरती (स्वाभाविक) विशेषता है। हमको उसके चेतन देहस्वरूप की आवश्यकता है, जिसके द्वारा हमें मालिक का बोध हो सके। शब्द देह धारण करता है और हम जैसे देहधारियों को अपने साथ जोड़कर मालिक के साथ मिलाता है। वह हमारे और मालिक के बीच जोड़ने का माध्यम (कड़ी) है। वह उधर तो मालिक में एकमेक हो रहा है और इधर उसकी प्रजा के साथ एक समान हो गया है। वह एक होते हुए भी दो स्वरूप रखता है, एक इनसानी (मानवी) दूसरा ख़ुदाई (ईश्वरीय), उसकी शान निराली है:

उधर अल्लाह से वासिल इधर मख़लूक़ से शामिल,
ख़्वास इस बरज़ख़े किबरा में है तशद्दुद का।

मौलाना रूम फ़रमाते हैं कि हमें किसी ऐसी हस्ती के चरणों में बैठना चाहिए जिसको हमारे दिल की ख़बर हो, जो हमारे दुःखों और कठिनाइयों को महसूस कर सके, दर्द को बँटाए और दूर करे। हमें सचमुच ऐसे वृक्ष की छाया में बैठना चाहिए, जिस पर ताज़े फूल और फल हों, जहाँ हमारे दिल और दिमाग़ में तरावट पहुँचे और हमें आत्मिक जीवन के फल खाने को मिलें। इस दुनिया के बाज़ार में तू बेकारों की तरह न भटक, किसी ऐसे की दुकान पर बैठ जहाँ मालिकरूपी शहद का भंडार हो। वे (सतगुरु) सचमुच मालिक के ख़ज़ाने के कुंजी-बरदार (रखनेवाले) ख़ज़ांची होते हैं। जब चाहें किसी को ख़ज़ाने की दौलत में से कुछ हिस्सा दे दें। वे मालिक के एजेंट होते हैं, जिनके द्वारा मालिक अपनी दौलत स्वयं लुटाता है:

दिला नज़्दे-कसे ब नशीं किह् ऊ अज़ दिल ख़बर दारद,
बज़ेरे-आँ दरख़्ते रौ किह् अज़ गुलहाय तर दारद।
दरीं बाज़ारे-अत्तारां मरौ हर सू चू बेकारां,
ब-दुकाने कसे ब-नशीं किह् दर दुकान शकर दारद।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 128

फिर फ़रमाते हैं कि किसी ऐसे का पल्ला पकड़ो जो इस स्थूल संसार और ऊपर के आत्मिक मंडलों (सूक्ष्म, कारण और शुद्ध चेतन मंडल) का जानकार हो। जब तुम इस संसार में रहो, जंगलों, पहाड़ों, उजाड़ों और सुख-दुःख में वह

तुम्हारे साथ रहे और जब तुम देह छोड़कर, चाहे जीवित मरकर (देखें: 'जीते-जी मरना' का प्रकरण) और चाहे देह छोड़ने के बाद, सूक्ष्म, कारण और उनसे पार निर्मल चेतन देशों में पहुँचो तो वहाँ भी वह तुम्हारे साथ रहे:

दामने-ऊ गीर ऐ यारे-दलेर, कू मुनज़्ज़ा बाशद अज़ बाला ओ ज़ेर।
बा तू बाशद दर मकानो-ला-मकान, चूँ बिमानी अज़ सरा ओ अज़ दुकान।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 3, पृ.45

मालिक के निज (अपने आप में स्थित) स्वरूप से उसका सतगुरु यानी मुर्शिद (God-in-man) वाला स्वरूप सब जीवों के लिए कहीं बढ़कर है जो हमें काल और माया के बंधनों और अंधकार में से निकालकर सब मंडलों में हमारी सहायता करता है। गुरु सच्चे मालिक का अवतार होता है (देखें: 'गुरु, गुरुदेव, सतगुरु' का प्रकरण)। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ईश्वर (निरंजन), परमेश्वर (ब्रह्म और उसके अवतार) पारब्रह्म, सोहं और सतनाम और अनामी, सबको हम नमस्कार करते हैं। हमने उन सब के बारे में धर्म पुस्तकों में पढ़ा है, ये सब हमारे ख़याली इष्ट हैं और कहानियों के मज़मून (विषय) हैं, पर जब हम मालिक के सतगुरु स्वरूप को पकड़ते हैं तो वे हमें इन सबकी पदवी दरसा देते हैं। जब तक गुरु नहीं मिलता, उनकी पदवी को हम नहीं जान सकते। वे सब पहले भी थे, पर प्रकट होने के लिए वे सतगुरु के स्वरूप के मोहताज (निर्भर) हैं। मालिक अपने निज स्वरूप की ख़बर इनसानी जामा धारण करके जीवों को प्रदान करता है। इसलिए गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं कि मालिक का धुर हुक्म है कि जीव बिना सतगुरु के उसका विचार नहीं कर सकता:

धुर खसमै का हुकम पइआ विण सतगुर चेतिआ न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.556

कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

गुरु हैं बड़ गोबिन्द तें, मन में देखु बिचार।
हरि सुमिरै सो वार है, गुरु सुमिरै सो पार॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ.3

अर्थात् तुम मन में देखकर विचार करो, हरि का सिमरन करके तुम इस पार रहते हो, पर गुरु का सिमरन करने से तुम संसार सागर से पार हो जाते हो। मालिक तो पहले भी हमारे अंदर था, उसके हमारे अंदर होते हुए भी हम

सैकड़ों जन्म पाते रहे, पर ज़ब गुरु मिला तो उसने नाम के साथ जोड़कर हमारा जन्म-मरण से छुटकारा कर दिया। जब तक गुरु (God-in-man) और शब्द (God-in-action) के साथ संबंध नहीं होता, हम परमात्मा के केवल ख़याली सिमरन द्वारा (देखें: 'सिमरन' का प्रकरण) किस प्रकार भवसागर से पार जा सकते हैं? पार होने का साधन तो केवल शब्द है:

बिनु सबदे पारु न पाए कोई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1068

शब्द गुरु में प्रकट है और केवल उसी की कृपा द्वारा हमारे अंदर भी स्थिर हो सकता है:

हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर॥
कबीर साखी-संग्रह, पृ. 3

यदि हरि रूठें तो कोई ठिकाना है, वह ठिकाना गुरु का है, जिसके द्वारा हरि को मनाया जा सकता है, पर यदि गुरु रूठ जाए तो फिर शिष्य के लिए और कौन-सा ठिकाना है! मालिक तो दिखाई नहीं देता और जिसके अंदर वह प्रकट है, उसके साथ हमारी बने नहीं, फिर शिष्य का कौन-सा ठिकाना है। शास्त्रों का भी यही विचार है:

शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता, गुरौरुष्टे न कश्चन।

अर्थ: यदि शिव (रब) रूठ जाए तो गुरु हमें बचा सकता है, पर यदि गुरु रूठ जाए तो हमें बचानेवाला कोई नहीं।

सहजो बाई कहती हैं कि यदि हरि की कृपा हो तो अच्छी बात है, पर गुरु की कृपा के बिना हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उसके बिना मालिक की प्राप्ति का और कोई उपाय नहीं सूझ सकता। इसके कई कारण हैं– 1. परमेश्वर ने संसार बनाया और हमें इसमें जन्म दिया, पर गुरु ने हमें जन्म-मरण के चक्कर से निकाल लिया 2. परमेश्वर ने पाँच चोर हमारे साथ लगा दिए, पर गुरु ने मुझे अनाथ समझकर उनसे बचा लिया 3. परमेश्वर ने मुझे कुटुंब के मोह-जाल में फँसाया, पर गुरु ने मेरी ममता की बेड़ियों को काट दिया 4. परमेश्वर ने मुझे रोग-शोक में फँसा दिया, पर गुरु ने मुझे योगी बनाकर इनसे अतीत कर दिया (छुड़ा दिया) 5. परमेश्वर ने मुझे कर्म-धर्म में भरमाया पर गुरु ने मेरा आत्म रूप

मुझे दिखा दिया 6. परमेश्वर ने अपने आप को मुझसे छिपाया, पर गुरु ने ज्ञान का दीपक देकर उसे हमें दिखा दिया 7. परमेश्वर ने मुक्ति और बंधन दुनिया में रखे, पर गुरु ने मुक्ति और बंधनों के सारे भ्रमों को मिटा दिया। मैं अपने गुरु चरनदास पर तन और मन वारती हूँ, मैं सबको तज दूँगी, पर गुरु को नहीं बिसारूँगी:

हरि किरपा जे होय तो, नाहीं होय तो नाहिं।
पै गुर किरपा दया बिनु, सकल बुद्धि बहि जाहिं॥

चौपाई
राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ। गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ॥
हरि ने जनम दियो जग माहीं। गुरु ने आवागवन छुटाही॥
हरि ने पाँच चोर दिए साथा। गुरु ने लई छुटाय अनाथा॥
हरि ने कुटँब जाल में गेरी। गुरु ने काटी ममता बेरी॥
हरि ने रोग भोग उरझायौ। गुरु जोगी कर सबै छुटायौ॥
हरि ने कर्म भर्म भरमायो। गुरु ने आतम रूप लखायौ॥
हरि ने मो सूँ आप छिपायो। गुरु दीपक दै ताहि दिखायौ॥
फिर हरि बंधमुक्ति गति लाए। गुर ने सभ ही भर्म मिटाये॥
चरनदास पर तन मन वारुँ। गुरु न तजूँ हरि कूँ तजि डारुँ॥

सहजो बाई की बानी, पृ. 3

गुरु के लक्षण

1. गुरु एकदेशी और सर्वदेशी है

देह धारण करने के कारण वे एकदेशी हैं, पर वे देह की क़ैद से मुक्त हैं, वे जब चाहें ऊपर के मंडलों पर सफ़र कर सकते हैं। वे गुरुदेव हैं (देखें: 'गुरुदेव' का प्रकरण) और शब्द रूप हैं, इसलिए वे सर्वदेशी हैं। वे मालिक के साथ एक हैं, उसकी तरह ही सर्वव्यापक हैं। वे शिष्य के अंग-संग रहकर उसकी सहायता करते हैं और शिष्य के मस्तक पर प्रकट होते हैं:

गुर परमेसर एक है सभ मह रहिआ समाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

सो सतगुर पिआरा मेरै नाल है जिथै किथै मैनो लए छडाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 588

सफल मूरत गुर मेरै माथै॥ जत कत पेखउ तत तत साथै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.535

2. गुरु सदा अटल है, अनाथों का नाथ और निराधारों का आधार है

थिर नाराइण थिर गुरू थिर साचा बीचार॥
सुर नर नाथह नाथ तू निधारा आधार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.934

3. करतार की गति वह स्वयं जानता है या गुरु जानता है

धन धरणीधर आप अजोनी तोल बोल सच पूरा॥
करते की मित करता जाणै कै जाणै गुर सूरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.930

4. गुरु अभूल है (कोई भूल नहीं करता)

सब मुनष्य भूल में भटकते हैं, यह मनुष्य का स्वभाव है। गुरु ज़ाहिरी (प्रकट) मनुष्य की सूरत रखता है, पर अंदर मालिक के साथ एक है, इसलिए वह भी मालिक की तरह अभूल (त्रुटिहीन है):

भुलण अंदर सभ को अभुल गुरू करतार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.61

5. गुरु निस्संदेह सब कुछ प्राप्त करवानेवाला है, वह लोक-लोकांतर और आत्मिक मंडल आदि से लेकर धुरधाम तक हमारे साथ होकर सब कुछ दर्शानेवाला है

मरत पइआल अकास दिखाइओ गुर सतगुर किरपा धारी जीउ॥
सो ब्रहम अजोनी है भी होनी घट भीतर देख मुरारी जीउ॥

गुरु नानक देव,, आदि ग्रन्थ, पृ.597-98

6. गुरु सबसे बड़ा है, उससे बड़ा और कोई नहीं, वह जो चाहे कर सकता है

मेरे मन गुर जेवड अवर न कोए॥ दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सच सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.49

गुर करता गुर करणहार गुरमुख सची सोए॥
गुर ते बाहर किछ नही गुर कीता लोड़े सो होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.52

7. सतगुरु के पीछे मालिक सबका उद्धार करता है

सतगुरू का खड़ग संजोउ हर भगति है जित काल कंटक मार विडारिआ॥
सतगुरू का रखणहारा हर आप है सतगुरू कै पिछै हर सभ उबारिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 312

8. सच्चा शाह है, अमृत और भक्ति का मालिक है

हर अंम्रित भगति भंडार है गुर सतगुर पासे राम राजे॥
गुर सतगुर सचा साहु है सिख दे हर रासे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 449

9. गुरु सराफ़ है

गुरु हरि के नामरूपी लाल का सराफ़ है, जिसे वह हथेली पर प्रकट करके दिखा देता है और अपनी एक दृष्टि द्वारा शिष्य को तार देता है:

रतन जवेहर लाल हर नामा गुर काढ तली दिखलाइआ॥
भागहीण मनमुख नही लीआ त्रिण ओलै लाख छपाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 880

आप वीचारै सो परखे हीरा॥
एक द्रिसटि तारे गुर पूरा॥ गुर मानै मन ते मन धीरा॥
ऐसा साहु सराफी करै॥ साची नदर एक लिव तरै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

10. गुरु के हाथ में इस हरि मंदिर की कुंजी है

सोहंदड़ो हभ ठाए कोए न दिसै डूजड़ो॥
खुल्हड़े कपाट नानक सतगुर भेटते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 80

बिन सबदै अंतर आनेरा॥ न वसत लहै न चूकै फेरा॥
सतगुर हथ कुंजी होरत दर खुलै नाही गुर पूरै भाग मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

गुर कुंजी पाहू निवल मन कोठा तन छत॥
नानक गुर बिन मन का ताक न उघड़ै अवर न कुंजी हथ॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1237

11. गुरु तीर्थ है

तीरथ पूरा सतगुरू जो अनदिन हर हर नाम धिआए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 140

नानक गुर समान तीरथ नही कोई साचे गुर गोपाला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 437

गुर दरीआउ सदा जल निरमल मिलिआ दुरमत मैल हरै॥
सतगुर पाइऐ पूरा नावण पसू परेतहो देव करै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1329

12. सतगुरु अमृतसर और मानसरोवर है

अंम्रित सर सतगुर सतिवादी जित नातै कऊआ हंस होहै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 493

गुर सरवर मान सरोवर है वडभागी पुरख लहंन्ह॥
सेवक गुरमुख खोजिआ से हंसुले नाम लहंन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 757

गुरदेव तीरथ अंम्रित सरोवर गुर गिआन मजन अपरंपरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

13. गुरु पारस है

हम नीच मैले अत अभिमानी दूजै भाए विकार॥
गुर पारस मिलिऐ कंचन होए निरमल जोत अपार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

मनूरै ते कंचन भए भाई गुर पारस मेल मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

लोहा हिरन* होवै संग पारस गुन पारस को होए आवैगो॥
सतगुर महा पुरख है पारस जो लागै सो फल पावैगो॥
जिउ गुर उपदेस तरे प्रहिलादा गुर सेवक पैज रखावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

---

* हिरन=सोना।

14. गुरु ने काम-क्रोध आदि पाँचों को वश में कर लिया है

सतगुरु पूर्ण मालिक से अभेद होने के कारण मानसिक दोषों से रहित हो जाता है:

सो सतगुर जे सच धिआइदा सच सचा सतगुर इके॥
सोई सतगुर पुरख है जिन पंजे दूत कीते वस छिके॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

15. गुरु निर्वैर है, सुख-दु:ख, नेकी-बदी, सबसे परे है

सतगुरु मालिक की तरह निर्वैर है और वह अपने-पराये सबका भला मनाता है:

सतगुर अंदरहो निरवैर है सभ देखै ब्रहम इक सोए॥...
सतगुर सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

सतगुर निरवैर पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुध देहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 960

वह दु:ख में दु:खी और सुख में फूलता नहीं, वह एकरस है, नेकी-बदी दोनों से परे नाम के रंग में रँगा (नाम अरंग में) रहता है। अमृत या ज़हर जो कुछ भी उसके पास आए सब उसकी मिठास से भर जाता है, उनका उस पर कोई असर नहीं होता।

16. सतगुरु सदा दयाल है

सतगुर दाता दइआल है जिस नो दइआ सदा होए॥
सतगुर अंदरहो निरवैर है सभ देखै ब्रहम इक सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

सतगुरू सदा दइआल है भाई विण भागा किआ पाईऐ॥
एक नदर कर वेखै सभ ऊपर जेहा भाउ तेहा फल पाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 602

सतगुर सिख की करै प्रतिपाल॥ सेवक कउ गुर सदा दइआल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

17. गुरु अवगुणियों और निंदकों को बख़्शनेवाला है

सतगुर बाझहो मुकत किनेही॥ ओह आद जुगादी राम सनेही॥
दरगह मुकत करे कर किरपा बखसे अवगुण कीना हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1027–28

जिनी डिठा मेरा सतगुर भाउ कर तिन के सभ पाप गवाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 310

जे कोई निंद करे हर जन की अपुना गुन न गवावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 719

कोई निंदक होवै सतगुरू का फिर सरण गुर आवै॥
पिछले गुनह सतगुर बखस लए सतसंगत नाल रलावै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 855

18. वह विचोला है, बिछुड़ी हुई रूहों का मालिक से मिलाप करा देता है

घोल घुमाई तिस मित्र विचोले जै मिल कंत पछाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 964

जैसा सतगुर सुणीदा तैसो ही मै डीठ॥
विछुड़िआ मेले प्रभू हर दरगह का बसीठ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

19. गुरु शिष्य के मनरूपी हाथी का महावत है

मन कुंचर पीलक गुरू गिआन कुंडा जह खिंचे तह जाए॥
नानक हसती कुंडे बाहरा फिर फिर उझड़ पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

कबीर काइआ कजली बन भइआ मन कुंचर मय मंत॥
अंकस ग्यान रतन है खेवट बिरला संत॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1376

20. गुरु बोहिथा (मल्लाह) है

सतगुरू है बोहिथा सबद लंघावणहार॥
तिथै पवण न पावको ना जल ना आकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

सतगुर है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ॥ कर किरपा पार उतारिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

21. सतगुरु नाम में रँगा हुआ है, नाम का सागर है और नाम का दाता है।

नाम रता सतगुरू है कलिजुग बोहिथ होए॥
गुरमुख होवै मु पार पवै जिना अंदर सचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 552

सतगुर सागर गुण नाम का मै तिस देखण का चाउ॥
हउ तिस बिन घड़ी न जीवऊ बिन देखे मर जाउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

सतगुर दाता हर नाम का प्रभ आप मिलावै सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

22. सतगुरु शिष्य को जीवन-दान देकर भक्ति में लगाता है

जनम मरण दुहहू मह नाही जन परउपकारी आए॥
जीअ दान दे भगती लाइन हर सिउ लैन मिलाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

23. गुरु का शिष्य के साथ अटूट प्यार है, वह उसको जी-जान से सँभालता है; माता की भाँति उसका हर प्रकार से पालन करता है और उसका हलत-पलत (लोक-परलोक) सँवारता है

जिउ जननी सुत जण पालती राखै नदर मझार॥
अंतर बाहर मुख दे गिरास, खिन खिन पोचार॥
तिउ सतगुर गुरसिख राखता हर प्रीत पिआर॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

माता प्रीत करे पुत खाए॥ मीने प्रीत भई जल नाए॥
सतगुर प्रीत गुरसिख मुख पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 164

सतगुर सिख का हलत पलत सवारै॥
नानक सतगुर सिख कउ जीअ नाल समारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

24. सतगुरु की आज्ञा में जो शिष्य कमाई करता है, अंत समय आकर सतगुरु उसकी सँभाल करते हैं

सचा सतगुर सेव सच सम्हालिआ॥
अंत खलोआ आए जे सतगुर अगै घालिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1284

गुरु की प्राप्ति किस प्रकार होती है?

गुरु की प्राप्ति मालिक की मेहर द्वारा होती है। अंधा आँखों वाले को किस प्रकार पकड़ सकता है, जब तक कि वह अपने आप को न पकड़ाए। जिस पर वह दया करे, उसके लिए वह स्वयं मिलने की व्यवस्था कर देता है। मनुष्य के हाथ में सिवाय सच्ची प्रीतिभरी प्रार्थना के और कुछ नहीं है:

नानक करम होवै जपीऐ कर गुर पीर॥ सच समावै एह सरीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1257

नदर करह जे आपणी ता नदरी सतगुर पाइआ॥
एह जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतगुर सबद सुणाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.465

बड़े श्रेष्ठ पूर्वभाग्य द्वारा गुरु से मिलाप होता है:

जिन कउ पूरब लिखिआ से आए मिले गुर पास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.82

गुरु की प्राप्ति के फल

गुरु की प्राप्ति के अनेक फलों और गुणों का गुरवाणी वर्णन करती है। हौमैं (अहंभाव), गर्व और अज्ञान का नाश होता है। तृष्णा-भूख मिट जाती है। दुःख, भ्रम दूर हो जाते हैं। दुविधा मिट जाती है। पाँच चोरों–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार और माया की अग्नि से जीव बच जाता है। मूर्ख से चतुर बन जाता है, तीनों भुवनों का ज्ञान और अपने आप की पहचान हो जाती है। तन-मन निहाल, मन निर्मल और प्रसन्न हो जाता है। मोह-माया में सोया मन जाग उठता है। मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। ऋद्धि-सिद्धि, विश्वास, श्रद्धा और सुख-शांति की प्राप्ति होती है और जीव सदा प्रसन्न रहता है। हरि हृदय में समाता है। भक्ति भाव, आत्म-रंग, नाम और शब्द का रंग चढ़ता है। नरकों, यमों और जन्म-मरण

से छुटकारा होता है। शिवघर में वास और परलोक में स्थान मिलता है। यमराज सेवा करता है। संसार सागर से पार होकर मुक्ति मिलती है। जीव इस मायामय संसार से विपरीत मार्ग पर चलनेवाला हो जाता है। हृदय कमल विकसित होता है और जीवित-मृतक की गति मिल जाती है। त्रिकुटी के ऊपर चढ़ाई, सहज-योग, सुन्न समाधि, सहज गति, निश्चल पद, परम पद और निजघर की प्राप्ति होती है। मालिक के दर पर मुख उज्ज्वल होता है और सच्चे मालिक से मिलाप होता है।

इन विषयों के बारे में गुरवाणी के अनेक प्रमाण आदि ग्रन्थ से 'गुरु' और 'सतगुरु' के शीर्षकों में आगे दिए गए हैं, जो पाठकों के ग़ौर से विचार करने योग्य हैं।

ੴ

गुरवाणी

गुरु

1. गुरु कौन है?

1.1. गुरु सतगुरु है

हर हर क्रिपा करहो जगजीवन मै सरधा नाम लगावैगो॥
नानक गुरू गुरू है सतगुर मै सतगुर सरन मिलावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

गुर सतगुर सुआमी भेद न जाणहो जित मिल हर भगति सुखांदी॥
कहो नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओ रैण भगता दी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 77

1.2. गुरु और परमेश्वर में भेद नहीं

बडे भाग गुर सेवह अपुना भेद नाही गुरदेव मुरार॥
ता कउ काल नाही जम जोहै बूझह अंतर सबद बीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 504

2. गुरु कैसा है?

2.1. तीर्थ है

गुर तीरथ गुर पारजात गुर मनसा पूरणहार॥
गुर दाता हर नाम दे उधरै सभ संसार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

2.2. दाता है और तीनों लोकों का प्रकाशक है

गुर दाता गुर हिवै घर गुर दीपक तिह लोए॥
अमर पदारथ नानका मन मानिऐ सुख होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 137

गुर बिन दूजा नाही थाउ॥ गुर दाता गुर देवै नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 387

गुर दाता समरथ गुर गुर सभ मह रहिआ समाए॥
गुर परमेसर पारब्रहम गुर डुबदा लए तराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

2.3. रत्नों का सागर है

गुर सागरो रतनागर तित रतन घणेरे राम॥
कर मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 436–37

2.4. पारब्रह्म का रूप है

पारब्रहम परमेसुर अनूप॥ सफल मूरत गुर तिस का रूप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1152

2.5. नारायण की भाँति स्थिर है

थिर नाराइण थिर गुरू थिर साचा बीचार॥
सुर नर नाथह नाथ तू निधारा आधार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 934

2.6. करतार की गति वह स्वयं या गुरु ही जानता है

धन धरणीधर आप अजोनी तोल बोल सच पूरा॥
करते की मित करता जाणै कै जाणै गुर सूरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 930

2.7. अभूल (त्रुटिहीन) है

भुलण अंदर सभ को अभुल गुरू करतार॥
गुरमत मन समझाइआ लागा तिसै पिआर॥
नानक साच न वीसरै मेले सबद अपार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 61

2.8. गुरु से बड़ा कोई नहीं, वह जो चाहे सो करे, उसके बिना और कोई ठिकाना नहीं

मेरे मन गुर जेवड अवर न कोए॥
दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सच सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

गुर समरथ अपार गुर वडभागी दरसन होए॥
गुर अगोचर निरमला गुर जेवड अवर न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

सास गिरास न विसरै सफल मूरत गुर आप॥
गुर जेवड अवर न दिसई आठ पहर तिस जाप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

गुर जैसा नाही को देव॥ जिस मसतक भाग सो लागा सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1142

नाम का दाता

गुर बिन दूजा नाही थाउ॥ गुर दाता गुर देवै नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 387

गुर करता गुर करणहार गुरमुख सची सोए॥
गुर ते बाहर किछ नही गुर कीता लोड़े सो होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

2.9. गुरु की नित चढ़ती कला है, उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता

गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ को न सकोई॥
जन नानक हर करतै आप बह टिकिआ आपे पैज रखै प्रभ सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

2.10. गुरु ने सारे लोक दिखला दिए और निस्संदेह सब कुछ मिला दिया

मरत पइआल अकास दिखाइओ गुर सतगुर किरपा धारी जीउ॥
सो ब्रहम अजोनी है भी होनी घट भीतर देख मुरारी जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 597-98

सभ रहिओ अंदेसरो माइओ॥
जो चाहत सो गुरू मिलाइओ॥ सरब गुना निध राइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 624

2.11. गुरु का दर्शन अगम और अपार है

खट दरसन वरतै वरतारा॥ गुर का दरसन अगम अपारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 360-61

2.12. गुरु के बिना हमारा कोई ठिकाना नहीं और न उसके सिवाय हमारा और कोई सज्जन है

गुर बिन अवर नाही मै थाउ॥ अनदिन जपउ गुरू गुर नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

गुर की सरण रहउ कर जोर॥ गुरू बिना मै नाही होर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

3. गुरु की पूजा

3.1. असली पूजा है

गुर मेरी पूजा गुर गोबिंद॥ गुर मेरा पारब्रहम गुर भगवंत॥
गुर मेरा देउ अलख अभेउ॥ सरब पूज चरण गुर सेउ॥...
गुर मेरा गिआन गुर रिदै धिआन॥ गुर गोपाल पुरख भगवान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

गुर गोबिंद गुरू गोपाल॥ अपने दास कउ राखनहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 869

3.2. गुरु की पूजा करने और शरण में आने का फल

गुर परमेसर एक है सभ मह रहिआ समाए॥
जिन कउ पूरब लिखिआ सेई नाम धिआए॥
नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

गुर परमेसुर पूजीऐ मन तन लाए पिआर॥
सतगुर दाता जीअ का सभसै दे अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

4. गुरु कहाँ है ?

4.1. सर्वव्यापक है

गुर दाता समरथ गुर गुर सभ मह रहिआ समाए॥
गुर परमेसर पारब्रहम गुर डुबदा लए तराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

गुर परमेसर एक है सभ मह रहिआ समाए॥
जिन कउ पूरब लिखिआ सेई नाम धिआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

4.2. गुरु की मूर्ति मस्तक पर प्रकट होती है और वह शिष्य के अंग-संग रहती है

सफल मूरत गुर मेरै माथै॥ जत कत पेखउ तत तत साथै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 535

तिस गुर कउ हउ वारिआ जिन हर की हर कथा सुणाई॥
तिस गुर कउ सद बलिहारणै जिन हर सेवा बणत बणाई॥
सो सतगुर पिआरा मेरै नाल है जिथै किथै मैनो लए छडाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 587-88

5. गुरु की प्राप्ति किस प्रकार होती है ?

5.1. मालिक की मेहर से

किरपा करे गुर पाईऐ हर नामो दे द्रिड़ाए॥
बिन गुर किनै न पाइओ बिरथा जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

गुर मिलिऐ हर मेला होई॥ आपे मेल मिलावै सोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 157

अनेक जनम विछुड़े मेरे प्रीतम कर किरपा गुरू मिलावैगो॥
सतगुर मिलत महा सुख पाइआ मत मलीन बिगसावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

नानक करम होवै जपीऐ कर गुर पीर॥ सच समावै एह सरीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1257

जिस होए दइआल तिस आप मिलावै॥ सरब निधान गुरू ते पावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

5.2. बड़े भाग्य और पूर्वलेख से

सगल पदारथ तिस मिले जिन गुर डिठा जाए॥
गुर चरणी जिन मन लगा से वडभागी माए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

गुर समरथ अपार गुर वडभागी दरसन होए॥
गुर अगोचर निरमला गुर जेवड अवर न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

जिन कउ पूरब लिखिआ से आए मिले गुर पास॥
सेवक भाए वणजारिआ मित्रा गुर हर हर नाम प्रगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

गुर जैसा नाही को देव॥ जिस मसतक भाग सो लागा सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1142

6. गुरु के चरणों में लगनेवाला शरीर पवित्र है

सो सीस भला पवित्र पावन है मेरी जिंदुड़ीए जो जाए लगै गुर पैरे राम॥
गुर विटहो नानक वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिन हर हर नाम चितेरे राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 540

7. गुरु को कौन समझता है?

7.1. कोई बिरला गुरुमुख उनको समझता है

भाउ पिआरा लाए विरला कोए॥ गुर कै दरसन सदा सुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

गुर समझावै सोझी होई॥ गुरमुख विरला बूझै कोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 224

7.2. गुरु से गुरुमुख को बड़ाई मिलती है

आपणै मन चित कहै कहाए बिन गुर आप न जाई॥
हर जीउ भगति वछल सुखदाता कर किरपा मंन वसाई॥
नानक सोभा सुरत दे प्रभ आपे गुरमुख दे वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 65

8. गुरु की सेवा

8.1. गुरु की सेवा ही गुरुभक्ति है

भाई रे दासन दासा होए॥
गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 66

8.2. मालिक दयाल हो तो गुरु की सेवा हो सकती है

सतगुर पूरा जे मिलै पिआरे सो जन होत निहाला॥
गुर की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होए दइआला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 802

9. गुरु की प्राप्ति के फल

9.1. हौमें व गर्व का नाश

गुर परसादी मन वसै मल हउमै जाए समाए॥
जिउ अंधेरै दीपक बालीऐ तिउ गुर गिआन अगिआन तजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

आपणै मन चित कहै कहाए बिन गुर आप न जाई॥
हर जीउ भगति वछल सुखदाता कर किरपा मंन वसाई॥
नानक सोभा सुरत दे प्रभ आपे गुरमुख दे वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 65

गुर मिलिऐ मिल अंक समाइआ॥
कर किरपा घर महल दिखाइआ॥ नानक हउमै मार मिलाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 153

चरण रेण गुर की मुख लागी॥ अहंबुध तिन सगल तिआगी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

ऐसा गरब बुरा संसारै॥ जिस गुर मिलै तिस गरब निवारै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 224

बिन गुर रोग न तुटई हउमै पीड़ न जाए॥
गुर परसादी मन वसै नामे रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36

9.2. पाँचों चोरों का नाश

पंच चोर मिल लागे नगरीआ राम नाम धन हिरिआ॥
गुरमत खोज परे तब पकरे धन साबत रास उबरिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1178

अब मेरो पंचा ते संग तूटा॥ दरसन देख भए मन आनद गुर किरपा ते छूटा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1210

9.3. जीव माया से बच जाता है

जा कउ गुर हर मंत्र दे॥ सो उबरिआ माइआ अगन ते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 211

टूटे माइआ के बंधन फाहे हर राम नाम लिव लागे॥
हमरा मन मोहिओ गुर मोहन हम बिसम भई मुख लागे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 527

जुगत न जाना गुन नही कोई महा दुतर माए आछै॥
आए पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 534

9.4. अज्ञानता का नाश

गुर परसादी मन वसै मल हउमै जाए समाए॥
जिउ अंधेरै दीपक बालीऐ तिउ गुर गिआन अगिआन तजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

गिआन अंजन गुर दीआ अगिआन अंधेर बिनास॥
हर किरपा ते संत भेटिआ नानक मन परगास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 293

9.5. गुरु के बिना अंधकार है और कोई सिद्धि नहीं होती

बिन गुर सबद न छूटीऐ देखहो वीचारा॥
जे लख करम कमावही बिन गुर अंधिआरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

जे सउ चंदा उगवह सूरज चड़ह हज़ार॥
एते चानण होदिआं गुर बिन घोर अंधार॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 463

गुर बिन घोर अंधार गुरू बिन समझ न आवै॥
गुर बिन सुरत न सिध गुरू बिन मुकत न पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

9.6. गुरु की शरण में आने से और उनके प्रसाद से अँधेरा दूर होता है और चाँद उदय होता है

करन करावन सरन परिआ॥
गुर परसाद सहज घर पाइआ मिटिआ अंधेरा चंद चड़िआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

9.7. तीनों भुवनों का बोध होता है और जीव मूर्ख से चतुर और पंगु से पहाड़ पर चढ़नेवाला हो जाता है

पिंगुल परबत पार परे खल चतुर बकीता॥
अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेट पुनीता॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 809

9.8. अपने आप की पहचान होती है

सभ सालाहै आप कउ वडहो वडेरी होए॥
गुर बिन आप न चीनीऐ कहे सुणे किआ होए॥
नानक सबद पछाणीऐ हउमै करै न कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

9.9. लोहे से कंचन हो जाता है

हम नीच मैले अत अभिमानी दूजै भाए विकार॥
गुर पारस मिलिऐ कंचन होए निरमल जोत अपार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

मनूरै ते कंचन भए भाई गुर पारस मेल मिलाए॥
आप छोड नाउ मन वसिआ भाई जोती जोत मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

9.10. तन-मन निहाल होता है

अंदर सचा नेह लाइआ प्रीतम आपणै॥
तन मन होए निहाल जा गुर देखा साम्हणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

9.11. मन निर्मल होता है

बिन गुर मैल न उतरै बिन हर किउ घर वास॥
एको सबद वीचारीऐ अवर तिआगै आस॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

मन मेरे गुर सरण आवै ता निरमल होए॥
मनमुख हर हर कर थके मैल न सकी धोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

गुर ते निरमल जाणीऐ निरमल देह सरीर॥
निरमल साचो मन वसै सो जाणै अभ पीर॥
सहजै ते सुख अगलो ना लागै जम तीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 57

गुर सागरो रतनागर तित रतन घणेरे राम॥
कर मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 436-37

गुर दरीआउ सदा जल निरमल मिलिआ दुरमत मैल हरै॥
सतगुर पाइऐ पूरा नावण पसू परेतहो देव करै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1329

9.12. मन प्रसन्न होता है

गुर मिलिऐ मन रहसीऐ जिउ वुठै धरण सीगार॥
सभ दिसै हरीआवली सर भरे सुभर ताल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1278

9.13. मन मोहित होता है

राम गुर मोहन मोह मन लईआ॥
हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ लोट पोट होए पईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 836

टूटे माइआ के बंधन फाहे हर राम नाम लिव लागे॥
हमरा मन मोहिओ गुर मोहन हम बिसम भई मुख लागे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 527

9.14. मोह-माया में सोता हुआ मन जाग उठता है

सिमर सिमर सिमर गुर अपुना सोइआ मन जागाई॥
इक दान मंगै नानक वेचारा हर दासन दास कराई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

9.15. जन्म सफल हो जाता है

मेरे मन गुर गुर गुर सद करीऐ॥
रतन जनम सफल गुर कीआ दरसन कउ बलिहरीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 213

9.16. ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है

हर हार कंठ जिनी पहिरिआ गुर चरणी चित लाए॥
तिना पिछै रिध सिध फिरै ओना तिल न तमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

9.17. मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं

सुख पाइआ सतगुरू मनाए॥ सभ फल पाए गुरू धिआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1141

सगल पदारथ तिस मिले जिन गुर डिठा जाए॥
गुर चरणी जिन मन लगा से वडभागी माए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

गुर तीरथ गुर पारजात गुर मनसा पूरणहार॥
गुर दाता हर नाम दे उधरै सभ संसार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

9.18. सुख की प्राप्ति होती है

गुर बिन किउ तरीऐ सुख होए॥
जिउ भावै तिउ राख तू मै अवर न दूजा कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

अनेक जनम विछुड़े मेरे प्रीतम कर किरपा गुरू मिलावैगो॥
सतगुर मिलत महा सुख पाइआ मत मलीन बिगसावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1310

संतहो सुनहो सुनहो जन भाई गुर काढी बाह कुकीजै॥
जे आतम कउ सुख सुख नित लोड़हो तां सतगुर सरन पवीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

साचा साहु गुरू सुखदाता हर मेले भुख गवाए॥
कर किरपा हर भगति द्रिड़ाए अनदिन हर गुण गाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

किउ दरगह पत पाईऐ जा हर न वसै मन माहे॥
गुर मिलिऐ सुख पाईऐ अगन मरै गुण माहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

भाई रे जग दुखीआ दूजै भाए॥
गुर सरणाई सुख लहहे अनदिन नाम धिआए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

माइआ जेवड दुख नही सभ भव थके संसार॥
गुरमती सुख पाईऐ सच नाम उर धार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

गुर सालाही सदा सुखदाता प्रभ नाराइण सोई॥
गुर परसाद परम पद पाइआ वडी वडिआई होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

गुर पूरा जिस भेटिआ ता कै सुख परवेस॥
मन की मत तिआगीऐ सुणीऐ उपदेस॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 814

गुर सुखदाता गुर करतार॥ जीअ प्राण नानक गुर आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

दुख कलेस न भउ बिआपै गुर मंत्र हिरदै होए॥
कोट जतना कर रहे गुर बिन तरिओ न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

9.19. शांति की प्राप्ति होती है

गुर ते सांत ऊपजै जिन त्रिसना अगन बुझाई॥
गुर ते नाम पाईऐ वडी वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

गुर मिलिऐ त्रिसना अगन बुझाए॥ गुर ते सांत वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 158

दूखन गावउ सुख भी गावउ मारग पंथ सम्हारी॥
नाम द्रिड़ गुर मन मह दीआ मोरी तिसा बुझारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 401

9.20. मनुष्य सदा प्रसन्न रहता है

सगली रूती हरिआ होए॥ सद बसंत गुर मिले देव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1180

9.21. विश्वास और श्रद्धा उत्पन्न होती है, हरि-प्रभु चित में बसता है

सत नाम प्रभ का सुखदाई॥ बिस्वास सत नानक गुर ते पाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 284

जा कै मन गुर की परतीत॥ तिस जन आवै हर प्रभ चीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 283

9.22. भक्ति प्राप्त होकर दृढ़ होती है

साचा साहु गुरू सुखदाता हर मेले भुख गवाए॥
कर किरपा हर भगति द्रिड़ाए अनदिन हर गुण गाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

गुर बिन किनै न पाइओ केती कहै कहाए॥
आप दिखावै वाटड़ीं सची भगति द्रिड़ाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 420

गुर सेवी गुर लागउ पाए॥ भगति करी राचउ हर नाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

धन धन गुर सत पुरख है जिन भगति हर दीनी॥
जिस गुर ते हर पाइआ सो गुर हम कीनी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

9.23. आत्म-रंग चढ़ता है

बिन गुर कोए न रंगीऐ गुर मिलिऐ रंग चड़ाउ॥
गुर कै भै भाए जो रते सिफती सच समाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

9.24. नाम की प्राप्ति होती है

हर सजण गुर सेवदा गुर करणी परधान॥
नानक नाम न वीसरै करम़ सचै नीसाणु॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

किरपा करे गुर पाईऐ हर नामो दे द्रिड़ाए॥
बिन गुर किनै न पाइओ बिरथा जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

बिन गुर रोग न तुटई हउमै पीड़ न जाए॥
गुर परसादी मन वसै नामे रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36

माइआ जेवड दुख नही सभ भव थके संसार॥
गुरमती सुख पाईऐ सच नाम उर धार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

गुर अंम्रित नाम पीआलिआ जनम मरन का पथ॥
गुर परमेसर सेविआ भै भंजन दुख लथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49-50

भाई रे जग दुखीआ दूजै भाए॥
गुर सरणाई सुख लहहे अनदिन नाम धिआए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआर॥
साचो वखर संचीऐ पूरै करम अपार॥
सुखदाता दुख मेटणो सतगुर असुर संघार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

जिन कउ पूरब लिखिआ से आए मिले गुर पास॥
सेवक भाए वणजारिआ मित्रा गुर हर हर नाम प्रगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

गुर सेवी गुर लागउ पाए॥ भगति करी राचउ हर नाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 221

फल नाम परापत गुर तुस दे॥ कहो नानक पावह विरले के॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1170

गुर सतगुर नाम द्रिड़ाइआ मन अनत न काहू डोले॥
जन नानक हर का दास है गुर सतगुर के गुल गोले॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

गुर बिन दूजा नाही थाउ॥ गुर दाता गुर देवै नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 387

दूखन गावउ सुख भी गावउ मारग पंथ सम्हारी॥
नाम द्रिड़ गुर मन मह दीआ मोरी तिसा बुझारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 401

गुर ते सांत ऊपजै जिन त्रिसना अगन बुझाई॥
गुर ते नाम पाईऐ वडी वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

टूटे माइआ के बंधन फाहे हर राम नाम लिव लागे॥
हमरा मन मोहिओ गुर मोहन हम बिसम भई मुख लागे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 527

सो सतगुर पिआरा मेरै नाल है जिथै किथै मैनो लए छडाई॥
तिस गुर कउ साबास है जिन हर सोझी पाई॥
नानक गुर विटहो वारिआ जिन हर नाम दीआ मेरे मन की आस पुराई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 588

मन रे राम नाम जस ले॥ बिन गुर इह रस किउ लहउ गुर मेलै हर दे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 597

मनूरै ते कंचन भए भाई गुर पारस मेल मिलाए॥
आप छोड नाउ मन वसिआ भाई जोती जोत मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

आप वीचार न रोवै कोई॥ सतगुर मिलै त सोझी होई॥
बिन गुर बजर कपाट न खूलह सबद मिलै निसतारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1027

गुर तीरथ गुर पारजात गुर मनसा पूरणहार॥
गुर दाता हर नाम दे उधरै सभ संसार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

गिआन धिआन धुन जाणीऐ अकथ कहावै सोए॥
सफलिओ बिरख हरीआवला छाव घणेरी होए॥
लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

गुर परसादी बूझ ले तउ होए निबेरा॥ घर घर नाम निरंजना सो ठाकुर मेरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

गुर मेल मिलावै करे दात॥ गुरसिख पिआरे दिनस रात॥
फल नाम परापत गुर तुस दे॥ कहो नानक पावह विरले के॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1170

9.25. गुरु का डर नाम और मालिक से मिला देता है

डरप मुई घर आपणै डीठी कंत सुजाण॥
डर राखिआ गुर आपणै निरभउ नाम वखाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 933

9.26. गुरु पूरे का प्रसाद शब्द है

अनहद सबद अचरज बिसमाद॥ गुर पूरा पूरा परसाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

9.27. पूरे गुरु की पूरी कला शब्द है जो अटल है

गुर पूरा पूरी ता की कला॥ गुर का सबद सदा सद अटला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1339-40

9.28. अंदर की गति का पता लगता है अनहद शब्द प्रकट होता है

अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतार॥
मुइआ जित घर जाईऐ तित जीवदिआ मर मार॥
अनहद सबद सुहावणे पाईऐ गुर वीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

9.29. सच की प्राप्ति होती है

बिन गुर महल न पाईऐ नाम न परापत होए॥
ऐसा सतगुर लोड़ लहो जिदू पाईऐ सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

मुंधे तू चल गुर कै भाए॥ अनदिन रावह पिर आपणा सहजे सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

मेरे मन गुर जेवड अवर न कोए॥
दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सच सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

बाझ गुरू गुबार है बिन सबदै बूझ न पाए॥
गुरमती परगास होए सच रहै लिव लाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

नानक करम होवै जपीऐ कर गुर पीर॥ सच समावै एह सरीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1257

बिन गुर कोए न रंगीऐ गुर मिलिऐ रंग चड़ाउ॥
गुर कै भै भाए जो रते सिफती सच समाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

इह जग अंधा सभ अंध कमावै बिन गुर मग न पाए॥
नानक सतगुर मिलै त अखी वेखै घरै अंदर सच पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 603

भुलण अंदर सभ को अभुल गुरू करतार॥
गुरमत मन समझाइआ लागा तिसै पिआर॥
नानक साच न वीसरै मेले सबद अपार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.61

सो गुर करउ जे साच द्रिड़ावै॥ अकथ कथावै सबद मिलावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.686

9.30. नरकों से छुटकारा

गुर का सेवक नरक न जाए॥ गुर का सेवक पारब्रहम धिआए॥
गुर का सेवक साधसंग पाए गुर करदा नित जीअ दाना हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

9.31. यम से छुटकारा

माइआ मोह विसारिआ जगत पिता प्रतिपाल॥
बाझहो गुरू अचेत है सभ बधी जमकाल॥
नानक गुरमत उबरे सचा नाम समाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

9.32. जीव जन्म-मरण से रहित हो जाता है

साधू संगत निरमला आप करे प्रतिपाल॥
जनम मरण की मल कटीऐ गुर दरसन देख निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.45

गुर प्रसाद मै डगरो पाइआ॥ जीवन मरन दोऊ मिटवाइआ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ.871

देखिओ अचरज महा मंगल रूप किछ आन नही दिसटावै॥
कहो नानक मोरचा गुर लाहिओ तह गरभ जोनि कह आवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.978

9.33. संसार सागर से पार हो जाता है

भनत नामदेउ इक नाम निसतारै॥ जिह गुर मिलै तिह पार उतारै॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ.1164

एह भउजल जगत संसार है गुर बोहिथ नाम तराए॥
गुरसिखी भाणा मंनिआ गुर पूरा पार लंघाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

माइआ मोह विसारिआ जगत पिता प्रतिपाल॥
बाझहो गुरू अचेत है सभ बधी जमकाल॥
नानक गुरमत उबरे सचा नाम समाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

गुर दरसन उधरै संसारा॥ जे को लाए भाउ पिआरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

9.34. मुक्ति हो जाती है

गुर कै दरसन मुकत गति होए॥ साचा आप वसै मन सोए॥...
गुर कै दरसन मोख दुआर॥ सतगुर सेवै परवार साधार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

सासत बेद सिम्रिति सभ सोधे सभ एका बात पुकारी॥
बिन गुर मुकत न कोऊ पावै मन वेखहो कर बीचारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 495

9.35. त्रिकुटी के ऊपर सुरत की चढ़ाई होती है

त्रिबिधि करम कमाईअह आस अंदेसा होए॥
किउ गुर बिन त्रिकुटी छुटसी सहज मिलिऐ सुख होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

त्रिकुटी छूटी बिमल मझार॥ गुर की मत जीइ आई कार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 220-21

9.36. सहज गति की प्राप्ति

त्रिबिधि करम कमाईअह आस अंदेसा होए॥
किउ गुर बिन त्रिकुटी छुटसी सहज मिलिऐ सुख होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

मुंधे तू चल गुर कै भाए॥ अनदिन रावह पिर आपणा सहजे सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

गुर ते निरमल जाणीऐ निरमल देह सरीर॥
निरमल साचो मन वसै सो जाणै अभ पीर॥
सहजै ते सुख अगलो ना लागै जम तीर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 57

जउ लउ हउ किछ सोचउ चितवउ तउ लउ दुखन भरे॥
जउ क्रिपाल गुर पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 214

9.37. मुख उज्ज्वल होता है, आगे कोई रोक नहीं होती और परम पद की प्राप्ति होती है

गुरू गुरू जप मीत हमारे॥ मुख ऊजल होवह दरबारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 190

राम नाम धन निरमलो जे देवै देवणहार॥
आगै पूछ न होवई जिस बेली गुर करतार॥
आप छडाए छुटीऐ आपे बखसणहार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62-63

गुर सालाही सदा सुखदाता प्रभ नाराइण सोई॥
गुर परसाद परम पद पाइआ वडी वडिआई होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

9.38. निज महल की प्राप्ति

बिन गुर महल न पाईऐ नाम न परापत होए॥
ऐसा सतगुर लोड़ लहो जिदू पाईऐ सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

गुर मिलिऐ मिल अंक समाइआ॥
कर किरपा घर महल दिखाइआ॥ नानक हउमै मार मिलाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 153

९.३९. गुरु मिले तब हरि मिलता है, गुरु की दया से ही हरि मिलता है

मै मन तन खोज खोजेदिआ सो प्रभ लधा लोड़॥
विसट गुर मै पाइआ जिन हर प्रभ दिता जोड़॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

गुर तुठै हर पाइआ चूके धक धके॥
हर जन हर हर होइआ नानक हर इके॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 449

गुर मिलिऐ हर मेला होई॥ आपे मेल मिलावै सोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 157

धन धन गुर सत पुरख है जिन भगति हर दीनी॥
जिस गुर ते हर पाइआ सो गुर हम कीनी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

कहो नानक मै सो गुर पाइआ॥ पारब्रहम पूरन देखाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 188

खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुर परदा खोल दिखाइओ॥
नउ निध नाम निधान इक ठाई तउ बाहर कैठै जाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

अचरज एक सुनहो रे भाई गुर ऐसी बूझ बुझाई॥
लाह परदा ठाकुर जउ भेटिओ तउ बिसरी तात पराई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 215

घट घट अंतर एको हर सोए॥ गुर मिलिऐ इक प्रगट होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1177

कहे कबीर हीरा अस देखिओ जग मह रहा समाई॥
गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 483

लालच अटिआ नित फिरै सुआरथ करे न कोए॥
जिस गुर भेटै नानका तिस मन वसिआ सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 321

साचा साहु गुरू सुखदाता हर मेले भुख गवाए॥
कर किरपा हर भगति द्रिड़ाए अनदिन हर गुण गाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

ढाह उसारे हुकम समावै॥
हुकमो वरतै जो तिस भावै॥ गुर बिन पूरा कोए न पावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 414

मुठड़े सेई साथ जिनी सच न लदिआ॥
नानक से साबास जिनी गुर मिल इक पछाणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 319

गुर मिलिऐ मिल अंक समाइआ॥
कर किरपा घर महल दिखाइआ॥ नानक हउमै मार मिलाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 153

तिस गुर कउ हउ वारिआ जिन हर की हर कथा सुणाई॥
तिस गुर कउ सद बलिहारणै जिन हर सेवा बणत बणाई॥
सो सतगुर पिआरा मेरै नाल है जिथै किथै मैनो लए छडाई॥
तिस गुर कउ साबास है जिन हर सोझी पाई॥
नानक गुर विटहो वारिआ जिन हर नाम दीआ मेरे मन की आस पुराई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 587-88

सतगुरु

1. सतगुरु कौन है?

सत पुरख जिन जानिआ सतगुर तिस का नाउ॥
तिस कै संग सिख उधरै नानक हर गुन गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

2. सतगुरु कैसा है और क्या-क्या करता है?

2.1. एकरस है, अविनाशी है, सर्वव्यापक है

सतगुर मेरा सदा सदा ना आवै ना जाए॥
ओह अबिनासी पुरख है सभ मह रहिआ समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

2.2. नाम में लीन है और नाम का विरही है

नाम रता सतगुरू है कलिजुग बोहिथ होए॥
गुरमुख होवै मु पार पवै जिना अंदर सचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 552

सतगुर बिरही नाम का जे मिलै त तन मन देउ॥
जे पूरब होवै लिखिआ ता अंम्रित सहज पीएउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

सो सतगुर जिस रिदै हर नाउ॥ अनिक बार गुर कउ बल जाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 287

सतगुर विच वडी वडिआई जो अनदिन हर हर नाम धिआवै॥
हर हर नाम रमत सुच संजम हर नामे ही त्रिपतावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 303

2.3. नाम का सागर है

सतगुर सागर गुण नाम का मै तिस देखण का चाउ॥
हउ तिस बिन घड़ी न जीवऊ बिन देखे मर जाउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

2.4. नाम का जहाज़ है, उसकी रज़ा में रहकर उस जहाज़ पर बैठा जा सकता है

सतगुर बोहिथ हर नाव है कित बिधि चड़िआ जाए॥
सतगुर कै भाणै जो चलै विच बोहिथ बैठा आए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

2.5. बोहिथा (मल्लाह) है

सतगुरू है बोहिथा सबद लंघावणहार॥
तिथै पवण न पावको ना जल ना आकार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

मसतक भार कलर सिर भारा॥ किउ कर भवजल लंघस पारा॥
सतगुर बोहिथ आद जुगादी राम नाम निसतारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1029

सतगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ॥ कर किरपा पार उतारिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

2.6. नाम का दाता है

सतगुर दाता हर नाम का प्रभ आप मिलावै सोए॥
सतगुर हर प्रभ बुझिआ गुर जेवड अवर न कोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

तिस आगै अरदास कर जो मेले करतार॥
सतगुर दाता नाम का पूरा जिस भंडार॥
सदा सदा सालाहीऐ अंत न पारावार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

गुर नाल तुल न लगई खोज डिठा ब्रहमंड॥
नाम निधान सतगुर दीआ सुख नानक मन मह मंड॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 50

जप मन मेरे तू एको नाम॥ सतगुर दीआ मो कउ एह निधान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 558

सतगुर नाम निधान द्रिड़ाइआ चिंता सगल बिनासी॥
कर किरपा अपुनो कर लीना मन वसिआ अबिनासी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 615-16

सतगुर मिलिऐ मन संतोखीऐ ता फिर त्रिसना भूख न होए॥
नाम निधान पाइआ पर घर जाए न कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 492

नाम निधान अखुट गुर दे दारूओ॥
महा रोग बिकराल तिनै बिदारूओ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

सतगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभ मेलै सोए॥
सहजे नाम धिआईऐ गिआन परगट होए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 428–29

2.7. बड़ा दातार है, उसकी दात कभी मिटनेवाली नहीं

सतगुर जेवड दाता को नही सभ सुणिअहो लोक सबाइआ॥
सतगुर मिलिऐ सच पाइआ जिन्ही विचहो आप गवाइआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

सतगुर पुरख दाता वड दाणा॥ जिस अंतर साच सो सबद समाणा॥
जिस कउ सतगुर मेल मिलाए तिस चूका जम भै भारा हे॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1030

सतगुर दाता आखीऐ तुस करे पसाओ॥
हउ गुर विटहो सद वारिआ जिन दितड़ा नाओ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 726

सतगुर दातै नाम दिड़ाइआ॥ वडभागी गुर दरसन पाइआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

मिटह कलेस सुखी होए रहीऐ॥ ऐसा दाता सतगुर कहीऐ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

सतगुर कीनी दात मूल न निखुटई॥ खावहो भुंचहो सभ गुरमुख छुटई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1363

गुर की दात न मेटै कोई॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1030

2.8. दीन-दयाल और राखनहार (रक्षा करनेवाला) है

ऐथै ओथै रखवाला॥ प्रभ सतगुर दीन दइआला॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

तिन्ह भउ संसा किआ करे जिन सतगुर सिर करतार॥
धुर तिन की पैज रखदा आपे रखणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 549

2.9. गुनाहों का बख़्शने वाला है, जो भावसहित उसको देखता है, वह उसके भी पाप मिटा देता है

सतगुर बाझहो मुकत किनेही॥ ओह आद जुगादी राम सनेही॥
दरगह मुकत करे कर किरपा बखसे अवगुण कीना हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1027

गुर सतगुर कै मन पारब्रहम है पारब्रहम छडाई॥
गुर सतगुर ताण दीबाण हर तिन सभ आण निवाई॥
जिनी डिठा मेरा सतगुर भाउ कर तिन के सभ पाप गवाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 310

2.10. सतगुरु बख़्शिंद (बख़्शने वाला) है, निंदकों को, जो शरण में आते हैं, गले लगाता है और पवित्र कर लेता है

कोई निंदक होवै सतगुरू का फिर सरण गुर आवै॥
पिछले गुनह सतगुर बखस लए सतसंगत नाल रलावै॥
जिउ मीह वुठै गलीआ नालिआ टोभिआ का जल
जाए पवै विच सुरसरी सुरसरी मिलत पवित्र पावन होए जावै॥
एह वडिआई सतगुर निरवैर विच जित मिलिऐ
तिसना भुख उतरै हर सांत तड़ आवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 855

2.11. सतगुरु सच्चा अमृतसर है, जहाँ नहाने से सब मैल दूर हो जाते हैं

सतगुर पुरख अंम्रित सर वडभागी नावह आए॥
उन जनम जनम की मैल उतरै निरमल नाम द्रिड़ाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चित लावणिआ॥
सतगुर है अंम्रित सर साचा मन नावै मैल चुकावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 113

2.12. सच्चा शाह है, अमृत और भक्ति के भंडार का मालिक है, सब उसके याचक हैं

हर अंम्रित भगति भंडार है गुर सतगुर पासे राम राजे॥
गुर सतगुर सचा साहु है सिख दे हर रासे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 449

गुर पह सिफत भंडार करमी पाईऐ॥ सतगुर नदर निहाल बहुड़ न धाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 519

सगले जाचह गुर भंडारी॥ आप निरंजन अलख अपारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1024

वण त्रिण ढूढत फिर रही मन मह करउ बीचार॥
लाल रतंन बहु माणकी सतगुर हाथ भंडार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 936

2.13. उसका ताण दीबाण (शक्ति का स्रोत) हरि है

गुर सतगुर कै मन पारब्रहम है पारब्रहम छडाई॥
गुर सतगुर ताण दीबाण हर तिन सभ आण निवाई॥
जिनी डिठा मेरा सतगुर भाउ कर तिन के सभ पाप गवाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 310

2.14. सदा दयाल है

पिरहो विछुंनीआ भी मिलह जे सतगुर लागह साचे पाए॥
सतगुर सदा दइआल है अवगुण सबद जलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 583

सतगुरू सदा दइआल है भाई विण भागा किआ पाईऐ॥
एक नदर कर वेखै सभ ऊपर जेहा भाउ तेहा फल पाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 602

सतगुर सिख की करै प्रतिपाल॥ सेवक कउ गुर सदा दइआल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

सतगुरु दाता दइआल है जिस नो दइआ सदा होए॥
सतगुर अंदरहो निरवैर है सभ देखै ब्रहम इक सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

2.15. निर्वैर है

सतगुर पुरख निरवैर है नित हिरदै हर लिव लाए॥
निरवैरै नाल वैर रचाइदा अपणै घर लूकी लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1415

सतगुर दाता दइआल है जिस नो दइआ सदा होए॥
सतगुर अंदरहो निरवैर है सभ देखै ब्रहम इक सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

2.16. उसने काम, क्रोध आदि पाँचों को वश में किया हुआ है

सोई सतगुर पुरख है जिन पंजे दूत कीते वस छिके॥
जे बिन सतगुर सेवे आप गणाइदे तिन अंदर कूड़ फिट फिट मुह फिके॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

सच सचा सतगुर अमर है जिस अंदर हर उर धारिआ॥
सच सचा सतगुर पुरख है जिन काम क्रोध बिख मारिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 310

2.17. संपूर्ण संसार मोह-माया में सोया पड़ा है, केवल सतगुरु जाग रहा है

इको सतगुर जागता होर जग सूता मोह पिआस॥
सतगुर सेवन जागंन से जो रते सच नाम गुणतास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 592-93

भूली मालनी है एउ॥ सतगुर जागता है देउ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 479

2.18. बिछुड़ों को मिलाता है

पिरहो विछुंनीआ भी मिलह जे सतगुर लागह साचे पाए॥
सतगुर सदा दइआल है अवगुण सबद जलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 583

पिर निरमाइल सदा सुखदाता नानक सबद मिलाए॥
पिरहो विछुंनीआ भी मिलह जे सतगुर लागह साचे पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 583

जैसा सतगुर सुणीदा तैसो ही मै डीठ॥
विछुड़िआ मेले प्रभू हर दरगह का बसीठ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

कहो नानक गुर बंधन काटे बिछुरत आन मिलाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1218

2.19. आदि पुरुष जो अलख है, उसको दिखा देता है

अनदिन राता मन बैरागी सुंन मंडल घर पाइआ॥
आद पुरख अपरंपर पिआरा सतगुर अलख लखाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 436

2.20. मालिक से मिलानेवाला है

तिस आगै अरदास कर जो मेले करतार॥
सतगुर दाता नाम क़ा पूरा ज़िस भंडार॥
सदा सदा सालाहीऐ अंत न पारावार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

सतगुर पुरख मिलाइआ इको सजण सोए॥
हर जन का राखा एक है किआ माणस हउमै रोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 42

2.21. सतगुरु में बहुत बड़ाइयाँ हैं, जो मिलने पर दिखाई देती हैं

सतगुर वडा कर सालाहीऐ जिस विच वडीआ वडिआईआ॥
सह मेले ता नदरी आईआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 473

2.22. सतगुरु की सेवा बड़ी दुर्लभ है, सिर गँवाकर मिलती है

सतगुर की सेवा गाखड़ी सिर दीजै आप गवाए॥
सबद मिलह ता हर मिलै सेवा पवै सभ थाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

2.23. जिस भावना के साथ उसकी सेवा करो उसी के अनुसार फल मिलता है, वह सब कुछ जानता है

सतगुर नो जेहा को इछदा तेहा फल पाए कोए॥
नानक करता सभ किछ जाणदा जिदू किछ गुझा न होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

सतगुर धरती धरम है तिस विच जेहा को बीजे तेहा फल पाए॥
गुरसिखी अंम्रित बीजिआ तिन अंम्रित फल हर पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

जेहा सतगुर कर जाणिआ तेहो जेहा सुख होए॥
एह सहसा मूले नाही भाउ लाए जन कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

2.24. सतगुरु को केवल देखने से ही मुक्ति नहीं होती, शब्द की कमाई द्वारा मुक्ति है

सतगुर नो सभ को वेखदा जेता जगत संसार॥
डिठै मुकत न होवई जिचर सबद न करे वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 594

2.25. अंत समय सतगुरु शिष्य को सँभालता है

सचा सतगुर सेव सच सम्हालिआ॥
अंत खलोआ आए जे सतगुर अगै घालिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1284

2.26. सतगुरु दोनों जहानों में रक्षक है

ऐथै ओथै रखवाला॥ प्रभ सतगुर दीन दइआला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

2.27. सतगुरु के पीछे हरि सबका उद्धार करता है

सतगुरू का खड़ग संजोउ हर भगति है जित काल कंटक मार विडारिआ॥
सतगुरू का रखणहारा हर आप है सतगुरू कै पिछै हर सभ उबारिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 312

सभ छुटी सतगुरू पिछै जिन हर हर नाम धिआइआ॥
गुर बचन मारग जो पंथ चाले तिन जम जागाती नेड़ न आइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1116

2.28. सतगुरु धुर की छाप लगा देता है

जेजीआ डंन को लए न जगात॥ सतगुर कर दीनी धुर की छाप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 430

2.29. जो सतगुरु करे वह मालिक को मंज़ूर है

सतगुर पुरख मिलाइआ इको सजण सोए॥
हर जन का राखा एक है किआ माणस हउमै रोए॥
जो हर जन भावै सो करे दर फेर न पावै कोए॥
नानक रता रंग हर सभ जग मह चानण होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 42

गुर करता गुर करणहार गुरमुख सची सोए॥
गुर ते बाहर किछ नही गुर कीता लोड़े सो होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

गुर परमेसर एको जाण॥ जो तिस भावै सो परवाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

जो बोले पूरा सतगुरू सो परमेसर सुणिआ॥
सोई वरतिआ जगत मह घट घट मुख भणिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 854

2.30. सतगुरु जीवन-दान देकर शिष्य को भक्ति में लगा लेता है

सतगुर दाता राम नाम का होर दाता कोई नाही॥
जीअ दान दे त्रिपतासे सचै नाम समाही॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258-59

जनम मरण दुहहू मह नाही जन परउपकारी आए॥
जीअ दान दे भगती लाइन हर सिउ लैन मिलाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

2.31. मालिक के घर का मार्ग बतलाता है

सतगुर मिले त मारग दिखाइआ॥ जगत पिता मेरै मन भाइआ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 476

2.32. जो सतगुरु की शरण में आ जाएँ, उनकी सँभाल के लिए प्रभु फिर आएगा और उनको मार्ग पर लगाएगा

सतगुर सरन पए से थापे तिन राखन कउ प्रभ आवैगो॥
जे को सर संधै जन ऊपर फिर उलटो तिसै लगावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

जिन तुम भेजे तिनह बुलाए सुख सहज सेती घर आउ॥
अनद मंगल गुन गाउ सहज धुन निहचल राज कमाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 678

2.33. सतगुरु शिष्य को प्राणों के समान सँभालता है और उसका हलत-पलत (लोक-परलोक) सुधार देता है

सतगुर सिख का हलत पलत सवारै॥
नानक सतगुर सिख कउ जीअ नाल समारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

3. सतगुरु का मिलाप किस प्रकार होता है?

3.1. मालिक की दया द्वारा

नदर करह जे आपणी ता नदरी सतगुर पाइआ॥
एह जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतगुर सबद सुणाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

आपे बखसे सतगुर मेलै॥ काल कंटक मारे सच पेलै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 415

नाम सम्हाले नाम संग्रहै नामे ही पत होए॥
नानक सतगुर पाइआ करम परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 552

आपे दइआ करे प्रभ दाता सतगुर पुरख मिलाए॥
जनम जनम के विछुड़े जन मेले नानक सहज सुभाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 773

सतगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभ मेलै सोए॥
सहजे नाम धिआईऐ गिआन परगट होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 428–29

सतगुर दाता हर नाम का प्रभ आप मिलावै सोए॥
सतगुर हर प्रभ बुझिआ गुर जेवड अवर न कोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

जउ होए क्रिपाल त सतगुर मेलै सभ सुख हर के नाए॥
मुकत भइआ बंधन गुर खोले जन नानक हर गुण गाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 213

सतगुर का महल विरला जाणै सदा रहै कर जोड़॥
आपणी क्रिपा करे हर मेरा नानक लए बहोड़॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 314

अलख अभेउ हर रहिआ समाए॥ उपाए न किती पाइआ जाए॥
किरपा करे ता सतगुर भेटै नदरी मेल मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 127

करमी सतगुर पाईऐ अनदिन लगै धिआन॥
तिन की संगत मिल रहा दरगह पाई मान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

बिन सतगुर सेवे सात न आवई दूजी नाही जाए॥
जे बहुतेरा लोचीऐ विण करमै न पाइआ जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

करम होवै सतगुर मिलै बूझै बीचारा॥
नाम वखाणै सुणे नाम नामे बिउहारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 418

3.2. धुर भाग्य द्वारा

साई कार कमावणी धुर की फुरमाई॥
जे मन सतगुर दे मिलै किन कीमत पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 420

हर नामो मंत्र द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोग॥
नानक सतगुर तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

सतगुर नो सभ को लोचदा जेता जगत सभ कोए॥
बिन भागा दरसन ना थीऐ भागहीण बह रोए॥
जो हर प्रभ भाणा सो थीआ धुर लिखिआ न मेटै कोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

पारस परसिऐ पारस होए जोती जोत समाए॥
जिन कउ पूरब लिखिआ तिन सतगुर मिलिआ आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 27

लख खुसीआ पातसाहीआ जे सतगुर नदर करे॥
निमख एक हर नाम दे मेरा मन तन सीतल होए॥
जिस कउ पूरब लिखिआ तिन सतगुर चरन गहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

जिस भेटे पूरा सतगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हर धन निध पाए राम॥
वडभागी संगत मिलै मेरी जिंदड़ीए नानक हर गुण गाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 541

सतगुर बोहिथ हर नाव है कित बिधि चड़िआ जाए॥
सतगुर कै भाणै जो चलै विच बोहिथ बैठा आए॥
धंन धंन वडभागी नानका जिना सतगुर लए मिलाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

सतगुर दातै नाम दिड़ाइआ॥ वडभागी गुर दरसन पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

सतगुर पुरख अंम्रित सर वडभागी नावह आए॥
उन जनम जनम की मैल उतरै निरमल नाम द्रिड़ाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी॥
वडै भाग सतगुर मिलै पाईऐ पद निरबाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 421

पूरै भाग सतगुर मिलै जा भागै का उदउ होए॥
अंतरहो दुख भ्रम कटीऐ सुख परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

आवहो मिलहो सहेलीहो मै पिर देहो मिलाए॥
पूरै भाग सतगुर मिलै पिर पाइआ सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

पूरै भाग सतगुर मिलै सुखदाता नाम वसै मन आए॥
सुख माणह सुख पैनणा सुखे सुख विहाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 85

बिन सबदै अंतर आनेरा॥ न वसत लहै न चूकै फेरा॥
सतगुर हथ कुंजी होरत दर खुलै नाही गुर पूरै भाग मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

बिन भागा सतगुर ना मिलै घर बैठिआ निकट नित पास॥
अंतर अगिआन दुख भरम है विच पड़दा दूर पईआस॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

सतगुरू सदा दइआल है भाई विण भागा किआ पाईऐ॥
एक नदर कर वेखै सभ ऊपर जेहा भाउ तेहा फल पाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 602

बिन भागा ऐसा सतगुर न पाईऐ जे लोचै सभ कोए॥
कूड़ै की पाल विचहो निकलै ता सदा सुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 490

3.3. सतगुरु भक्ति द्वारा और आपाभाव मिटाने से मिलता है

गुर का सबद समाल तू मूड़े गति मत सबदे पाए॥
नानक सतगुर तद ही पाए जां विचहो आप गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 550

बिन भगती नही सतगुर पाईऐ बिन भागा नही भगति हरी॥
बिन भागा सतसंग न पाईऐ करम मिलै हर नाम हरी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

3.4. सतगुरु के पास शिष्य उसके हुक्म द्वारा ही आता है

सतगुर सरवर रतनी भरपूरे जिस प्रापत सो पावै॥
सिख हंस सरवर इकठे होए सतगुर कै हुकमावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 960

4. सतगुरु की प्राप्ति के फल

4.1. मनोकामना पूर्ण होती है

मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगास॥
गुर बचनी सुख ऊपजै भाई सभ फल सतगुर पास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 639-40

जितड़े फल मन बाछीअह तितड़े सतगुर पास॥
पूरब लिखे पावणे साच नाम दे रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

सफलिओ सतगुरु सेविआ धंन जनम परवाण॥
जिना सतगुर जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 643

मन चिंदिआ सतगुरू दिवाइआ॥ भए अचिंत एक लिव लाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 396

सतगुर की सेवा अत सुखाली जो इछे सो फल पाए॥
जत सत तप पवित सरीरा हर हर मंन वसाए॥
सदा अनंद रहै दिन राती मिल प्रीतम सुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

सतगुर नो जेहा को इछदा तेहा फल पाए कोए॥
नानक करता सभ किछ जाणदा जिदू किछ गुझा न होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

मेरे मन अहिनिस पूर रही नित आसा॥
सतगुर सेव मोह परजलै घर ही माहे उदासा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

सतगुर पूरै सेविऐ दूखा का होए नास॥
नानक नाम अराधिऐ कारज आवै रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320

4.2. सुख की प्राप्ति

जिन्ही सतगुर पिआरा सेविआ तिन्हा सुख सद होई॥
जिन्हा नानक सतगुर भेटिआ तिन्हा मिलिआ हर सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 451

सतगुर भेटे सो सुख पाए॥ हर का नाम मंन वसाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 468

बिन भागा ऐसा सतगुर न पाईऐ जे लोचै सभ कोए॥
कूड़ै की पाल विचहो निकलै ता सदा सुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 490

धन जननी जिन जाइआ धंन पिता परधान॥
सतगुर सेव सुख पाइआ विचहो गइआ गुमान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

पूरै भाग सतगुर मिलै सुखदाता नाम वसै मन आए॥
सुख माणह सुख पैनणा सुखे सुख विहाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 85

मिटह कलेस सुखी होए रहीऐ॥ ऐसा दाता सतगुर कहीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

कहो नानक जा सतगुर पाइआ॥ घर सगला मै सुखी बसाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 392

मै सरब सुखा सुख पाइआ अंमाली पिर सरब रहिआ भरपूरे॥
जन नानक हर रंग माणिआ अंमाली गुर सतगुर कै लग पैरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 564

सरब सुखा का दाता सतगुर ता की सरनी पाईऐ॥
दरसन भेटत होत अनंदा दूख गइआ हर गाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 630

मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगास॥
गुर बचनी सुख ऊपजै भाई सभ फल सतगुर पास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 639-40

जिन सतगुर सिउ चित लाइआ तिन्ह सुख वसिआ मन आए॥
हर नाम धिआवह रंग सिउ हर नाम रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 510

4.3. काम, क्रोध, लोभ, मोह और हौमैं (अहंभाव) छोड़ जाते हैं

काम क्रोध अहंकार बिनसै मिलै सतगुर देव॥
नाम द्रिड़ कर भगति हर की भली प्रभ की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

काम क्रोध लोभ तज गए पिआरे सतगुर चरनी पाए॥
जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 431

सतगुर मिलिऐ सदा मुकत है जिन विचहो मोह चुकाइआ॥
उतम एह बीचार है जिन सचे सिउ चित लाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 466

हर नामो मंत्र द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोग॥
नानक सतगुर तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

बिन सतगुर मोह न तुटई सभ थके करम कमाइआ॥
गुरमती नाम धिआईऐ सुख रजा जा तुध भाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 138

सतगुर दरसन अगन निवारी॥ सतगुर भेटत हउमै मारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

सो बूझै जो सतगुर पाए॥ हउमै मारे गुर सबदे पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 228

सतगुर सेवन सो सोहणे हउमै मैल गवाए॥
सबद रते से निरमले चलह सतगुर भाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233–34

मन अंतर हउमै रोग भ्रम भूले हउमै साकत दुरजना॥
नानक रोग गवाए मिल सतगुर साधू सजणा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

सतगुर मिलिऐ मत ऊतम होए॥ मन निरमल हउमै कढै धोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

सो जागै जिस सतगुर मिलै॥ पंच दूत ओह वसगति करै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1128

4.4. तृष्णा और भूख मिट जाती है और मन में संतोष आ जाता है

बाबीहा सगली धरती जे फिरह ऊड चड़ह आकास॥
सतगुर मिलिऐ जल पाईऐ चूकै भूख पिआस॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1420

सतगुर मिलिऐ मन संतोखीऐ ता फिर त्रिसना भूख न होए॥
नाम निधान पाइआ पर घर जाए न कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 492

4.5. तृष्णा और भूख मिट जाती है, शांति आती है और दुर्मति का मैल उतर जाता है

बिन सतगुर सेवे सात न आवई दूजी नाही जाए॥
जे बहुतेरा लोचीऐ विण करमै न पाइआ जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

जिउ मीह वुठै गलीआ नालिआ टोभिआ का जल
जाए पवै विच सुरसरी सुरसरी मिलत पवित्र पावन होए जावै॥
एह वडिआई सतगुर निरवैर विच जित मिलिऐ
तिसना भुख उतरै हर सांत तड़ आवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 855

सतगुर मिलिऐ मल उतरी हर जपिआ पुरख सुजाण॥
जिना हर हर प्रभ सेविआ जन नानक सद कुरबाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1417

सिख की गुर दुरमत मल हिरै॥ गुर बचनी हर नाम उचरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

4.6. मन वश में आ जाता है, सतगुरु के सिवाय मन को वश में करने के लिए और कोई साधन नहीं

सतगुर मिलै त मनूआ टेकै॥ राम नाम दे सरण परेकै॥
हर धन नाम अमोलक देवै हर जस दरगह पिआरा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1029

सतगुर संग नाही मन डोलै॥ अंम्रित बाणी गुरमुख बोलै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 183

त्रिपत अघाए रहे रिद अंतर डोलन ते अब चूके॥
अखुट खजाना सतगुर दीआ तोट नही रे मूके॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 215

लख खुसीआ पातसाहीआ जे सतगुर नदर करे॥
निमख एक हर नाम दे मेरा मन तन सीतल होए॥
जिस कउ पूरब लिखिआ तिन सतगुर चरन गहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.44

इस मन कउ होर संजम को नाही विण सतगुर की सरणाए॥
सतगुर मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.558

4.7. दु:खों, भ्रमों और दुविधा का नाश

सतगुर मिलिऐ वडी वडिआई॥ दुख काटै हिरदै नाम वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.833

पूरै भाग सतगुर मिलै जा भागै का उदउ होए॥
अंतरहो दुख भ्रम कटीऐ सुख परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.31

दोवै सिरे सतगुरू निबेड़े सो बूझै जिस एक लिव लागी जीअहो रहै निभराती॥
सबद वसाए भरम चुकाए सदा सेवक दिन राती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.992

बिन भागा सतगुर ना मिलै घर बैठिआ निकट नित पास॥
अंतर अगिआन दुख भरम है विच पड़दा दूर पईआस॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.40

सतगुर मिलै त दुबिधा भागै॥
कमल बिगास मन हर प्रभ लागै॥ जीवत मरै महा रस आगै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.153

4.8. जीव माया की गुप्त आग से बच जाता है

अगन सागर महा विआपै माइआ॥ से सीतल जिन सतगुर पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.192

इह जग भरम भुलाइआ मोह ठगउली पाए॥
जिना सतगुर भेटिआ तिन नेड़ न भिटै माए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233

इन्ह सिउ प्रीत करी घनेरी॥ जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी॥
गल चमड़ी जउ छोडै नाही॥ लाग छुटो सतगुर की पाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 392

4.9. मोह-माया की नींद से जाग उठता है

इको सतगुर जागता होर जग सूता मोह पिआस॥
सतगुर सेवन जागंन से जो रते सच नाम गुणतास॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 592-93

4.10. गृहस्थ में ही उदास रहता है

मेरे मन अहिनिस पूर रही नित आसा॥
सतगुर सेव मोह परजलै घर ही माहे उदासा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

4.11. सतगुरु शिष्य को मनुष्य से देवता बना देते हैं

नर ते सुर होए जात निमख मै सतगुर बुध सिखलाई॥
नर ते उपज सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 873

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार॥
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 462-63

4.12. बंधनों का टूटना और मुक्ति की प्राप्ति

नानक राम नाम सरणाई॥ सतगुर राखे बंध न पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 416

सतगुर बंधन तोड़ निरारे बहुड़ न गरभ मझारी जीउ॥
नानक गिआन रतन परगासिआ हर मन वसिआ निरंकारी जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

सतगुर सिख के बंधन काटै॥ गुर का सिख बिकार ते हाटै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.286

जउ होए क्रिपाल त सतगुर मेलै सभ सुख हर के नाए॥
मुकत भइआ बंधन गुर खोले जन नानक हर गुण गाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.213

नानक सतगुर भेटिऐ पूरी होवै जुगत॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकत॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.522

सतगुर पूरा जे मिलै पाईऐ रतन बीचार॥
मन दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआर॥
मुकत पदारथ पाईऐ अवगण मेटणहार॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.59

कहत नानक इह जीउ करम बंध होई॥ बिन सतगुर भेटे मुकत न होई॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1128

सतगुर बाझहो मुकत किनेही॥ ओह आद जुगादी राम सनेही॥
दरगह मुकत करे कर किरपा बखसे अवगुण कीना हे॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1027–28

हर का संत सतगुर सत पुरखा जो बोलै हर हर बानी॥
जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.667

4.13. कोई बैरी नहीं रहता, सबके अंदर ब्रह्म दिखाई देता है

ना को मेरा दुसमन रहिआ ना हम किस के बैराई॥
ब्रहम पसार पसारिओ भीतर सतगुर ते सोझी पाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.671

4.14. जीव सतगुरु के मिलने से इंद्रियों के उल्टे मार्ग पर चलनेवाला हो जाता है (विमुख हो जाता है) और कमल विकसित होता है

इस मन कउ होर संजम को नाही विण सतगुर की सरणाए॥
सतगुर मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 558

मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगास॥
गुर बचनी सुख ऊपजै भाई सभ फल सतगुर पास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 639-40

सतगुर मिलै त दुबिधा भागै॥ कमल बिगास मन हर प्रभ लागै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 153

अंतर कमल प्रगासिआ अंम्रित भरिआ अघाए॥
नानक सतगुर मीत कर सच पावह दरगह जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 22

4.15. सतगुरु शिष्य को जीवित-मृतक करता है

सतगुर मिलै सो मरण दिखाए॥
मरण रहण रस अंतर भाए॥ गरब निवार गगन पुर पाए॥
मरण लिखाए आए नही रहणा॥ हर जप जाप रहण हर सरणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 153

सतगुर मिलै त दुबिधा भागै॥ कमल बिगास मन हर प्रभ लागै॥
जीवत मरै महा रस आगै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 153

4.16. देह के अंदर शब्द है जिसकी कुंजी सतगुरु के हाथ में है

बिन सबदै अंतर आनेरा॥ न वसत लहै न चूकै फेरा॥
सतगुर हथ कुंजी होरत दर खुलै नाही गुर पूरै भाग मिलावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

4.17. शिष्य को इस घर (देह) में निजघर जाने की राह दिखाता है

घर मह निज घर पाइआ सतगुर दे वडाई॥
नानक जो नाम रते सेई महल पाइन मत परवाण सच साई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 572

घर मह घर देखाए दे सो सतगुर पुरख सुजाण॥
पंच सबद धुनिकार धुन तह बाजै सबद नीसाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

इह जग अंधा सभ अंध कमावै बिन गुर मग न पाए॥
नानक सतगुर मिलै त अखी वेखै घरै अंदर सच पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 603

उठ इसनान करहो परभाते सोए हर आराधे॥
बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतगुर सुख सहज सेती घर जाते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

जा कउ आए सोई विहाझहो हर गुर ते मनह बसेरा॥
निज घर महल पावहो सुख सहजे बहुर न होइगो फेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

4.18. गगन और निश्चल शिवघर में वास होता है और परलोक में स्थान मिलता है

सतगुर मिलै सो मरण दिखाए॥ मरण रहण रस अंतर भाए॥
गरब निवार गगन पुर पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 153

राज कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रम सूआ॥
कहो नानक जिस सतगुर भेटिआ सो जन निहचल थीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 407

सतगुर सरणी आइआं बाहुड़ नही बिनास॥
हर नानक कदे न विसरउ एह जीउ पिंड तेरा सास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

गुर कै बाण बजर कल छेदी प्रगटिआ पद परगासा॥
सकति अधेर जेवड़ी भ्रम चूका निहचल सिव घर बासा॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 332

आसा सभे लाह कै इका आस कमाउ॥
जिनी सतगुर सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 43

4.19. जन्म-मरण से छुटकारा होता है

जित को लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै॥
कहो कबीर जिस सतगुर भेटै पुनरप जनम न आवै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 476

हर जल निरमल मन इसनानी मजन सतगुर भाई॥
पुनरप जनम नाही जन संगत जोती जोत मिलाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 505

इह जग मोह हेत बिआपितं दुख अधिक जनम मरणं॥
भज सरण सतगुर ऊबरह हर नाम रिद रमणं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 505

सतगुर मिलिऐ फेर न पवै जनम मरण दुख जाए॥
पूरै सबद सभ सोझी होई हर नामै रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 69

सतगुर सेविऐ सूतक जाए॥ मरै न जनमै काल न खाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाए॥
खेद मिटे साधू मिलत सतगुर बचन समाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

सतगुर ते गिआन ऊपजै तां इह संसा जाए॥
सतगुर ते हर बुझीऐ गरभ जोनी नह पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

मिटिआ आवा गउण जां पूरा पाइआ॥
हरिहां अंम्रित हर का नाम सतगुर ते पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1362

4.20. यम का भय दूर होता है

जिन्हा सतगुर सिउ चित लाइआ सो खाली कोई नाहे॥
तिन जम की तलब न होवई ना ओए दुख सहाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी॥
कहो नानक जिन जम ते काढे तिस गुर कै कुरबाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 671

तेरा अंत न जाई लखिआ अकथ न जाई हर कथिआ॥
नानक जिन्ह कउ सतगुर मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 435

सतगुर अगै अरदास कर साजन दे मिलाए॥
साजन मिलिऐ सुख पाइआ जमदूत मुए बिख खाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

4.21. जीव संसार सागर से तर जाता है

मसतक भार कलर सिर भारा॥ किउ कर भवजल लंघस पारा॥
सतगुर बोहिथ आद जुगादी राम नाम निसतारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1029

सतगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ॥ कर किरपा पार उतारिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

चेता ई तां चेत साहिब सचा सो धणी॥
नानक सतगुर सेव चड़ बोहिथ भउजल पार पउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 318

कहो नानक बेअंत बेअंत धिआइआ॥ दुतर इह संसार सतगुरू तराइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1362

हर हर नाम जपत जन तारिओ॥ अगन सागर गुर पार उतारिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 178

सतगुर महा पुरख है पारस जो लागै सो फल पावैगो॥
जिउ गुर उपदेस तरे प्रहिलादा गुर सेवक पैज रखावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

4.22. यमदूत सेवा करता है

भली सरी जे उबरी हउमै मुई घराहो॥
दूत लगे फिर चाकरी सतगुर का वेसाहो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

4.23. अपना और कुल का उद्धार होता है

तिन का जनम सफल है जो चलह सतगुर भाए॥
कुल उधारह आपणा धंन जणेदी माए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

सतगुर सेवह से महापुरख संसारे॥ आप उधरे कुल सगल निसतारे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 161

4.24. हरि का रंग और हरि-भक्ति के धन की प्राप्ति

नानक सतगुर सो धन सउपिआ जे जीअ मह रहिआ समाए॥
रंग तिसै कउ अगला वंनी चड़ै चड़ाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 510

धुर खसमै का हुकम पइआ विण सतगुर चेतिआ न जाए॥
सतगुर मिलिऐ अंतर रव रहिआ सदा रहिआ लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 556

मै सरब सुखा सुख पाइआ अंमाली पिर सरब रहिआ भरपूरे॥
जन नानक हर रंग माणिआ अंमाली गुर सतगुर कै लग पैरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 564

सतगुर मिलहो चीनहो बिधि साई॥ जित प्रभ पावहो गणत न काई॥
हउमै मार करहो गुर सेवा जन नानक हर रंग भीना हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1028

रतन पदारथ वणजीअह सतगुर दीआ बुझाई राम॥
लाहा लाभ हर भगति है गुण मह गुणी समाई राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 569

धन धन सत पुरख सतगुरू हमारा जित मिलिऐ हम कउ सांत आई॥
धन धन सत पुरख सतगुरू हमारा जित मिलिऐ हम हर भगति पाई॥
धन धन हर भगत सतगुरू हमारा जिस की सेवा ते हम हर नाम लिव लाई॥
धन धन हर गिआनी सतगुरू हमारा
जिन वैरी मित्र हम कउ सभ सम द्रिसटि दिखाई॥
धन धन सतगुरू मित्र हमारा जिन हर नाम सिउ हमारी प्रीत बणाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 594

सतगुर पग धूर जिना मुख लाई॥ तिन कूड़ तिआगे हर लिव लाई॥
ते हर दरगह मुख ऊजल भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 165

4.25. नाम, शब्द यानी हरि-धन की प्राप्ति

करम होवै सतगुर मिलै बूझै बीचारा॥ नाम वखाणै सुणे नाम नामे बिउहारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 418

जिन सतगुर सिउ चित लाइआ तिन्ह सुख वसिआ मन आए॥
हर नाम धिआवह रंग सिउ हर नाम रहे लिव लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 510

सभना नदर एक है आपे फरक करे॥
नानक सतगुर मिलिऐ फल पाइआ नाम वडाई दे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 558-59

वखर नाम सदा लाभ है जिस नो एत वापार लाए॥
रतन पदारथ वणजीअह जां सतगुर दे बुझाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 570

हर गुण गावा जीवा मेरी माई॥ सतगुर दइआल गुण नाम द्रिड़ाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 732

सतगुर मिलिऐ वडी वडिआई॥ दुख काटै हिरदै नाम वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 833

जिन कउ सतगुर थापिआ तिन मेट न सकै कोए॥
ओना अंदर नाम निधान है नामो परगट होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 17

सतगुर पुरख अंम्रित सर वडभागी नावह आए॥
उन जनम जनम की मैल उतरै निरमल नाम द्रिड़ाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

पूरा सतगुर जे मिलै पाईऐ सबद निधान॥
कर किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

सतगुर दातै नाम दिड़ाइआ॥ वडभागी गुर दरसन पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

आपन नही का कउ लपटाइओ॥ आपन नाम सतगुर ते पाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

सतगुर सिख कउ नाम धन दे॥ गुर का सिख वडभागी हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

राम नाम रतन कोठड़ी गड़ मंदर एक लुकानी॥
सतगुर मिलै त खोजीऐ मिल जोती जोत समानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1178

✓ सतगुर दाता राम नाम का होर दाता कोई नाही॥
जीअ दान दे त्रिपतासे सचै नाम समाही॥
अनदिन हर रविआ रिद अंतर सहज समाध लगाही॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258-59

मिटिआ आवा गउण जा पूरा पाइआ॥
हरिहां अंम्रित हर का नाम सतगुर ते पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1362

सतगुर पुरख अचल अचला मत जिस द्रिड़ता नाम अधारे॥
तिस आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतगुर कै बलिहारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

सतगुर भेटे सो सुख पाए॥ हर का नाम मंन वसाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 468

इह जग मोह हेत बिआपितं दुख अधिक जनम मरणं॥
भज सरण सतगुर ऊबरह हर नाम रिद रमणं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 505

सतगुर नाम निधान द्रिड़ाइआ॥ राज माल झूठी सभ माइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1155

नाम मिलिऐ पत पाईऐ नाम मंनिऐ सुख होए॥
सतगुर ते नाम पाईऐ करम मिलै प्रभ सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233

नानक सतगुर मिलिऐ नाउ पाईऐ मिल नाम धिआइआ॥
जिन्ह कै पोतै पुंन है तिन्ही दरसन पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1245

दुहा सिरिआ का खसम आप अवर न दूजा थाउ॥
सतगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 71

सतगुर मो कउ कीनो दान॥ अमोल रतन हर दीनो नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1157

बिन सतगुर भेटे नाम पाइआ न जाए॥ बिन सतगुर भेटे महा दुख पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

दुरमत घणी विगूती भाई दूजै भाए खुआई॥
बिन सतगुर नाम न पाईऐ भाई बिन नामै भरम न जाई॥
सतगुर सेवे ता सुख पाए भाई आवण जाण रहाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 635

सचै सबद सची पत होई॥ बिन नावै मुकत न पावै कोई॥
बिन सतगुर को नाउ न पाए प्रभ ऐसी बणत बणाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1046

सिध साधिक नावै नो सभ खोजदे थक रहे लिव लाए॥
बिन सतगुर किनै न पाइओ गुरमुख मिलै मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 650

मन रंगहो वडभागीहो गुर तुठा करे पसाउ॥
गुर नाम द्रिड़ाए रंग सिउ हउ सतगुर कै बल जाउ॥
बिन सतगुर हर नाम न लभई लख कोटी करम कमाउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

सतगुर मिलिऐ वडी वडिआई॥ दुख काटै हिरदै नाम वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 833

हर नामो मंत्र द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोग॥
नानक सतगुर तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

सिख की गुर दुरमत मल हिरै॥ गुर बचनी हर नाम उचरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

सतगुर पूरै सेविऐ दूखा का होए नास॥
नानक नाम अराधिऐ कारज आवै रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320

हउ बलिहारी सतगुर चरणा॥ गुर बोहिथ सबद भै तरणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

दोवै सिरे सतगुरू निबेड़े सो बूझै जिस एक लिव लागी
जीअहो रहै निभराती॥
सबद वसाए भरम चुकाए सदा सेवक दिन राती॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 992

सतगुर पुरख दाता वड दाणा॥ जिस अंतर साच सो सबद समाणा॥
जिस कउ सतगुर मेल मिलाए तिस चूका जम भै भारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1030

नदर करह जे आपणी ता नदरी सतगुर पाइआ॥
एह जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतगुर सबद सुणाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

सिध समाध करह नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै॥
अंतर जोत सबद धुन जागै सतगुर झगर निबेरै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 489

जिस भेटे पूरा सतगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हर धन निध पाए राम॥
वडभागी संगत मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हर गुण गाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 541

सतगुर मिलै त मनूआ टेकै॥ राम नाम दे सरण परेकै॥
हर धन नाम अमोलक देवै हर जस दरगह पिआरा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1029

4.26. ज्ञान और बोध प्राप्त होता है

सतगुर विटहो वारिआ जित मिलिऐ खसम समालिआ॥
जिन कर उपदेस गिआन अंजन दीआ इन्ही नेत्री जगत निहालिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

प्रगट प्रगास गिआन गुर गंमित सतगुर ते सुध पाई॥
दास कबीर तास मद माता उचक न कबहू जाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 969

सतगुर है गिआन सतगुर है पूजा॥ सतगुर सेवी अवर न दूजा॥
सतगुर ते नाम रतन धन पाइआ सतगुर की सेवा भाई हे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069

सचा नेह न तुटई जे सतगुर भेटै सोए॥
गिआन पदारथ पाईऐ त्रिभवण सोझी होए॥
निरमल नाम न वीसरै जे गुण का गाहक होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 60

सतगुर ते गिआन पाइआ हर तत बीचारा॥
मत मलीण परगट भई जप नाम मुरारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

सतगुर ते गिआन ऊपजै तां इह संसा जाए॥
सतगुर ते हर बुझीऐ गरभ जोनी नह पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगास॥
गुर बचनी सुख ऊपजै भाई सभ फल सतगुर पास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 639-40

सतगुर बंधन तोड़ निरारे बहुड़ न गरभ मझारी जीउ॥
नानक गिआन रतन परगासिआ हर मन वसिआ निरंकारी जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

ना कासी मत ऊपजै ना कासी मत जाए॥
सतगुर मिलिऐ मत ऊपजै ता इह सोझी पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491

सतगुर मिलिऐ फेर न पवै जनम मरण दुखे जाए॥
पूरै सबद सभ सोझी होई हर नामै रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 69

कर किरपा जउ सतगुर मिलिओ॥ मन मंदर मह दीपक जलिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 235

4.27. योग की प्राप्ति

जोग न भगवी कपड़ी जोग न मैले वेस॥
नानक घर बैठिआ जोग पाईऐ सतगुर कै उपदेस॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1421

4.28. सच की प्राप्ति

सतगुर मिलिऐ सच पाइआ जिन्ही विचहो आप गवाइआ॥
जिन सचो सच बुझाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

सतगुर भेटे ता पारस होवै पारस होए त पूज कराए॥
जो उस पूजे सो फल पाए दीखिआ देवै साच बुझाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491

मेरी मेरी करदे घट गए तिना हथ किहु न आइआ॥
सतगुर मिलिऐ सच मिले सच नाम समाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 559

अंतर कमल प्रगासिआ अंम्रित भरिआ अघाए॥
नानक सतगुर मीत कर सच पावह दरगह जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 22

सतगुर विटहो वारिआ जिन दिता सच नाउ॥
अनदिन सच सलाहणा सचे के गुण गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

4.29. सुन्न समाधि की प्राप्ति

सतगुर ते पाए वीचारा॥ सुंन समाध सचे घर बारा॥
नानक निरमल नाद सबद धुन सच रामै नाम समाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1038

अनदिन राता मन बैरागी सुंन मंडल घर पाइआ॥
आद पुरख अपरंपर पिआरा सतगुर अलख लखाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 436

4.30. सहज गति की प्राप्ति

हउ वारी हउ वारणै भाई सतगुर कउ सद बलिहारै जाउ॥
नाम निधान जिन दिता भाई गुरमत सहज समाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

सतगुर बिरही नाम का जे मिलै त तन मन देउ॥
जे पूरब होवै लिखिआ ता अंम्रित सहज पीएउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

सतगुर सहजै दा खेत है जिस नो लाए भाउ॥
नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 947

बिन सतगुर किहु न देखिआ जाए॥ गुर किरपा कर आप दिता दिखाए॥
आपे आप आप मिल रहिआ सहजे सहज समावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 115

जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बल जाउ॥
दर सचै सची वडिआई सहजे सच समाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

सतगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभ मेलै सोए॥
सहजे नाम धिआईऐ गिआन परगट होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 428-29

हीरै हीरा बेध पवन मन सहजे रहिआ समाई॥
सगल जोत इन हीरै बेधी सतगुर बचनी मै पाई॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 483

4.31. निश्चल पद की प्राप्ति

राज कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रम सूआ॥
कहो नानक जिस सतगुर भेटिआ सो जन निहचल थीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 407

4.32. दरगाह में स्थान मिलता है

लिखिआ आइआ पकड़ चलाइआ मनमुख सदा दुहेले॥
जिनी पूरा सतगुर सेविआ से दरगह सदा सुहेले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 78

जिन कउ होआ क्रिपाल हर से सतगुर पैरी पाही॥
तिन ऐथै ओथै मुख उजले हर दरगह पैधे जाही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 89

रैण विहाणी पछुताणी उठ चली गई निरास॥
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होए खलास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 134

इक दर सेवह दरद वञाए॥ ओए दरगह पैधे सतगुरू छडाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1028

गुर के चरण सरेवणे तीरथ हर का नाउ॥
आगै दरगह मंनीअह मिलै निथावे थाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52–53

जिन जिन नाम धिआइआ तिन के काज सरे॥
हर गुर पूरा आराधिआ दरगह सच खरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 136

4.33. दरगाह में मान मिलता है

करमी सतगुर पाईऐ अनदिन लगै धिआन॥
तिन की संगत मिल रहा दरगह पाई मान॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

सतगुर पूजउ सदा सदा मनावउ॥ ऐसी सेव दरगह सुख पावउ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1158

सतगुर पग धूर जिना मुख लाई॥ तिन कूड़ तिआगे हर लिव लाई॥
ते हर दरगह मुख ऊजल भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 165

हर दरगह गुरसिख पैनाईअह जिन्हा मेरा सतगुर तुठा॥
जन नानक हर हर होइआ हर हर मन वुठा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 451

जिंना सतगुर रस मिलै से पूरे पुरख सुजाण॥
गुर मिल भउजल लंघीऐ दरगह पत परवाण॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 22

गुर दुआरै हर कीरतन सुणीऐ॥ सतगुर भेट हर जस मुख भणीऐ॥
कल कलेस मिटाए सतगुर हर दरगह देवै मानां हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

4.34. सच्चे मालिक से मेल होता है

सालाही सच सलाह सच सच कीमत किनै न पाईआ॥
जा मिलिआ पूरां सतगुरू ता हाजर नदरी आईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

हर बिन जीअरा रह न सकै जिउ बालक खीर अधारी॥
अगम अगोचर प्रभ गुरमुख पाईऐ अपुने सतगुर कै बलिहारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 506

घर रतन लाल बहु माणक लादे मन भ्रमिआ लह न सकाईऐ॥
जिउ ओडा कूप गुहज खिन काढै तिउ सतगुर वसत लहाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1179

अनदिन राता मन बैरागी सुंन मंडल घर पाइआ॥
आद पुरख अपरंपर पिआरा सतगुर अलख लखाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 436

गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हर इक है हर बिन अवर न कोई॥
कहै नानक एह नेत्र अंध से सतगुर मिलिऐ दिब द्रिसटि होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 922

कर बीचार आचार पराता॥
सतगुर बचनी एको जाता॥ नानक राम नाम मन राता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 415

ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाए॥
जह देखा तह एक तूं सतगुर दीआ दिखाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 55

सतगुर पुरख मिलाइआ इको सजण सोए॥
हर जन का राखा एक है किआ माणस हउमै रोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 42

भाई रे हर हीरा गुर माहे॥ सतसंगत सतगुर पाईऐ अहिनिस सबद सलाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 22

सतगुर ते हर पाईऐ भाई॥ अंतर नाम निधान है पूरै सतगुर दीआ दिखाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 425

जिन्ही सतगुर पिआरा सेविआ तिन्हा सुख सद होई॥
जिन्हा नानक सतगुर भेटिआ तिन्हा मिलिआ हर सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 451

सो सतगुर धन धंन जिन भरम गड़ तोड़िआ॥
सो सतगुर वाह वाह जिन हर सिउ जोड़िआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

सतगुर ते गिआन ऊपजै तां इह संसा जाए॥
सतगुर ते हर बुझीऐ गरभ जोनी नह पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

तू घट घट इक वरतदा सच साहिब चलतै॥
सतगुर नो मिले सो हर मिले नाही किसै परतै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 314

मन मिल संत जना जस गाइओ॥
हर हर रतन रतन हर नीको गुर सतगुर दान दिवाइओ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 719

त्रिभवण खोज ढंढोलिआ गुरमुख खोज निहाल॥
सतगुर मेल मिलाइआ नानक सो प्रभ नाल॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

जोती जोत मिली प्रभ पाइआ मिल सतगुर मनूआ मान जीउ॥
हर कीरत मन भाई परम गति पाई हर मन तन मीठ लगान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

जिना सतगुर जिन सतगुर पाइआ तिन हर प्रभ मेल मिलाए राम॥
तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

गुरसिख मेल मेरी सरधा पूरी अनदिन राम गुण गाए॥
जिन सतगुर जिन सतगुर पाइआ तिन हर प्रभ मेल मिलाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 573

मेरे भाई जना कोई मो कउ हर प्रभ मेल मिलाए॥
हउ सतगुर विटहो वारिआ जिन हर प्रभ दीआ दिखाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

आवहो मिलहो सहेलीहो मै पिर देहो मिलाए॥
पूरै भाग सतगुर मिलै पिर पाइआ सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

इक पिर रावह आपणा हउ कै दर पूछउ जाए॥
सतगुर सेवी भाउ कर मै पिर देहो मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 38

प्रिउ प्रिउ करती सभ जग फिरी मेरी पिआस न जाए॥
नानक सतगुर मिलिऐ मेरी पिआस गई पिर पाइआ घर आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 553

सबद न भीजै साकता दुरमत आवन जान॥
साधू सतगुर जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

सतगुर बंधन तोड़ निरारे बहुड़ न गरभ मझारी जीउ॥
नानक गिआन रतन परगासिआ हर मन वसिआ निरंकारी जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ॥
नामा प्रणवै परम तत है सतगुर होए लखाइआ॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 973

सतगुर विटहो वारिआ जित मिलिऐ खसम समालिआ॥
जिन कर उपदेस गिआन अंजन दीआ इन्ही नेत्री जगत निहालिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

4.35. ज्योति जोत में मिलती है

आवण जाणै परज विगोई॥ बिन सतगुर थिर कोए न होई॥
अंतर जोत सबद सुख वसिआ जोती जोत मिलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1068

हर जल निरमल मन इसनानी मजन सतगुर भाई॥
पुनरप जनम नाही जन संगत जोती जोत मिलाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 505

गुरुदेव

देव 'दिव्' धातु से निकला है जिसका अर्थ है–प्रकाश। इसलिए, गुरुदेव (गुरु+प्रकाशवान) गुरु के प्रकाशवान स्वरूप को कहते हैं। थियोसॉफ़ी वाले भी कहते हैं कि सूक्ष्म और कारण मंडलों पर 'मास्टर सोल्ज़' यानी गुरुमुख आत्माओं का स्वरूप बहुत प्रकाशवान होता है और उनका प्रकाश दूर तक जाता है। गोस्वामी तुलसीदास फ़रमाते हैं कि गुरु के चरण कमल का नाख़ून मणि की तरह प्रकाशवान है, जिसका सिमरन करने से हृदय में दिव्य दृष्टि पैदा हो जाती है:

श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥

श्रीरामचरितमानस, 1:0:3

हज़रत मुल्लां हुसैन काशिफ़ी फ़रमाते हैं कि जब पीर (गुरु) तुम्हारे दिल के अंदर बैठ जाए तो आदि और अंत का हाल दिखाई देने लगता है:

पीरे किह् चूं दर दिलत नशीनद, हाले-अज़लो-अबद बबीनद।

क़िताबुल-बैअत, पृ. 5

गुरवाणी के गहन विचार से पता लगता है कि गुरु पद का प्रयोग मालिक के प्रत्यक्ष अवतार के लिए किया गया है और इसकी आवश्यकता का बखान किया गया है। गुरु वास्तव में सतगुरु होता है, जो संसार में सत्य का ज़ुहूर (प्रकाश) होता है:

नानक गुरू गुरू है सतगुर मै सतगुर सरन मिलावैगो॥

गुरु रामदास, *आदि ग्रन्थ,* पृ. 1310

गुरुदेव पद का सतगुरु के आंतरिक नूरी (ज्योतिर्मय) स्वरूप के लिए प्रयोग किया गया है, जो शरीर के बंधनों से मुक्त और स्वतंत्र है, जिसका दर्शन या अनुभव केवल आंतरिक सूक्ष्म नेत्रों द्वारा निरत करती है। जब यह प्रकट हो जाता है तब सब भ्रम नष्ट हो जाते हैं और सब सेवा सफल हो जाती है:

नेत्र प्रगास कीआ गुरदेव॥ भरम गए पूरन भई सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 200

गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं कि गुरु की यह फलदायक छवि मस्तक में प्रकट होती है:

सफल मूरत गुर मेरै माथै॥ जत कत पेखउ तत तत साथै॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 535

यह प्रकाशवान स्वरूप खंडों-ब्रह्मांडों में शिष्य के साथ रहता है और शिष्य को सत्पुरुष के साथ जा मिलाता है। (देखें: 'सुरत-शब्द योग' का प्रकरण)। गुरु, गुरुदेव, सतगुरु और मालिक में भेद नहीं। (देखें: 'गुरु' और 'मालिक की एकता' का प्रकरण)। सब उसी मालिक की दयालुता की धार (जो खंडों-ब्रह्मांडों में जीवों को मालिक से जोड़ने का काम कर रही है) के अलग-अलग रूपों के नाम हैं। एक ही प्रकार के (स्वजातीय) होने के प्राकृतिक नियम के अनुसार जब मालिक अधिकारी रूहों को तारने के लिए शरीर धारण करता है तब उसको गुरु कहा जाता है। जो उसका अपना वास्तविक निज स्वरूप 'आदि-जुगादि' से अत्यंत प्रकाशवान है, उसको गुरुदेव कहते हैं। इसलिए इस स्वरूप की महिमा सबसे ऊँची है। सतगुरु सत+गुरु है, इस पद का प्रयोग गुरु के अंतर में प्रकट सत्पुरुष के लिए किया गया है। गुरबाणी कहती है कि गुरुदेव का ऊपर का निज स्वरूप सतगुरु और हरि होता है जो अलख और अभिन्न है:

गुरदेव सतगुर पारब्रहम परमेसर गुरदेव नानक हर नमसकरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 262

और वह नीचे के स्वरूप (स्थूल देहस्वरूप) में गुरु के साथ एकमेक हो रहा है:

सफल मूरत गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 802

महिमा कही न जाए गुर समरथ देव॥
गुर पारब्रहम परमेसुर अपरंपर अलख अभेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

गुर देवा गुर अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा॥
आपे दात करी गुर दातै पाइआ अलख अभेवा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1125

वह स्थूल देह में गुरु कहलाता है और स्थूल देहधारी रूहों को उपदेश देकर सूक्ष्म, कारण और उसके परे के मंडलों में गुरुदेव रूप होकर सतगुरु, सत्पुरुष गुरु के साथ अभिन्न हो जाता है। यह (गुरुदेव) गुरु और सतगुरु को आपस में जोड़नेवाली कड़ी है। जब सिमरन द्वारा रूह सिमटकर तारा-मंडल, सूर्य और चंद्र, शिशुमार चक्र, जिसे वेदों ने देवयान और पितृयान मार्ग कहा है, को पार कर जाए तो यहाँ गुरु का नूरी स्वरूप मौजूद है। यह स्वरूप सतगुरु के बाहरी शारीरिक स्वरूप के समान होता है पर बहुत अधिक सुंदर, प्रकाशवान और हृदय को आकर्षित करनेवाला होता है। इस स्वरूप का संकेत मौलाना रूम देते हैं कि यदि तुझे उस स्वरूप को देखना हो तो तू अपने असल घर की ओर चल, जहाँ कि हज़रत इब्राहीम गए थे। तू आकाश के बड़े तारे से गुज़र जा और पुरुषार्थ द्वारा आंतरिक रूहानी मंज़िल के सूर्य और चंद्र को भी पार कर जा। तब तू अपना सिर उसकी दरगाह की दहलीज़ पर रखेगा:

रौ बसूए असले-ख़ुद हमचूँ ख़लील, ब-गुज़र अज़ इस्तारा ओ चर्ख़े-नबील।
पाय हिम्मत बर खुर ओ बर माह निह, सर बर आँ ईवानओं आँ दरगाह निह।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 476

इसी रूहानी मार्ग का गुरु नानक साहिब भी संकेत करते हैं:

पूरब चढ़ै पच्छम को आवै। रवि ससि दोइ इकत्र मिलावै।

स्री प्रान संगली, पृ. 185

प्रथमै पूरब कउ द्रिसटि धरै॥ दुतीआ दखण कउ गवाणु करै।...
पच्छम ते जो चढ़ै सुमेर॥ आवे परदखणा कै फेर।
पुरीआ सपत ऊपर कउलासन। तिथै पारब्रहम का आसन।
जिन हीरै रतनी माल परोई। नानक कहै उदासी सोई॥

स्री प्रान संगली, पृ. 184

अर्थ: पहले तू बाहर से आत्मा को दोनों आँखों के पीछे ले जा और सूर्य और चंद्र दोनों को पार कर ले, फिर वहाँ से ऊपर को चल, प्रदक्षिणा करके

यानी घूमकर सातवीं पुरी (सहस्रदल कमल) के ऊपर (चार दल कमल) ब्रह्म से गुज़र, वहाँ पारब्रह्म का आसन और नामरूपी हीरे और रत्न हैं। जो वहाँ पहुँचे वह उदासीन है। गुरुदेव का प्रकाशवान रूप आनंद देनेवाला है। गुरु नानक साहिब ने कहा है:

आनंद रूप अनूप सरूपा गुर पूरै देखाइआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

उस स्वरूप को देखकर शिष्य कहता है, वाहिगुरु! वाहिगुरु! वाहिगुरु!

यह स्वरूप खंडों-ब्रह्मांडों में सुरत के साथ रहता है। यह ब्रह्म में पहुँचकर पूर्ण शब्द रूप धारण कर लेता है। यह सुरत को धुरधाम, सचखंड तक साथ ले चलता है। जब यह स्वरूप नेत्र में प्रकट हो जाता है तब भ्रमों का नाश हो जाता है, सेवक की सेवा पूर्ण हो जाती है और उसकी भक्ति का आधा कार्य पूर्ण हो जाता है। फिर शिष्य को आगे कुछ करना-धरना नहीं पड़ता। यह नूरी स्वरूप शिष्य को धुरधाम तक पहुँचाने का ज़िम्मेदार है। इस स्वरूप की संतजन भी आराधना करते हैं और उसको जपकर आनंदित होते हैं:

चरन कमल गुरदेव पिआरे॥ पूजह संत हर प्रीत पिआरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.394

संतन कै मन महा अनंद॥ संत जपह गुरदेउ भगवंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.869

ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भी मुर्शिद (सतगुरु) के नूरी स्वरूप का वर्णन करते हैं कि ऐ मुर्शिद! तेरे चाँद जैसे (नूरी) मुख को देखकर सूर्य शर्म के पानी में ग़र्क़ है और तेरे रुख़सार (कपोल) की नूरी रश्मियों को देखकर चाँद ने अपना मुँह छिपा लिया है। तेरे रास्ते की ख़ाक (धूलि) को पाकर सूर्य नूर ही नूर (कांतिमान) हो गया और आसमान में जाकर उसने वहाँ अपना ज़रीन (सुनहरी) डेरा जा लगाया। यदि तेरे नूरी चेहरे की एक किरण आकाश में चमके तो सूर्य शर्म से छिप जाए। नबी (ईश्वर का दूत) की ज़ात (व्यक्तित्व) में वह सूर्य, नूरे-हक़ (स्वत्व) साक्षात प्रकट हो गया, जिस प्रकार सूर्य से चंद्र रोशनी लेता है:

ज़ शरमे-रूये माहत दर अर्क़ ग़र्के-आफ़ताब,
व अज़ फ़ुरोग़े-माहे-रुख़सारे-तू मह अन्दर नक़ाब।

ऐ आफ़्ताब अज़ खाके-राहत याफ़्त चश्मत लाजरम,
दर फ़ज़ाए आसमां ज़द ख़ैमा-ए-ज़रीं तनाब।
ग़र ज़ अनवारे-रुख़त यक शुअला ताबद बर फ़लक,
अज़ हया मस्तूर गरदद आफ़्ताब अन्दर नक़ाब।
नूरे-हक़ अस्त आं मुजस्सम गश्ता दर ज़ाते-नबी,
हम चू नूरे-माह कज़ खुर्शीद करदस्त इक्तिसाब।

दीवाने-ग़रीब नवाज़, पृ. 25

मौलाना रूम भी मुर्शिद के इस स्वरूप के बारे में संकेत करते हैं कि तुम क्या जानते हो कि मेरे घट के अंदर कौन शहंशाह मेरे साथ बैठा है। मेरे अंतर में देखो, मेरी बाहरी सूरत पर न जाओ:

चिह् दानी तू किह् दर बातिन चिह् शाहे हमनशीं दारम,
रुख़े-ज़रींने-मन मनिगर किह् पाये आहनीं दारम।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 232

सेंट जॉन ने भी अपने अंदर नूरी स्वरूप के देखने का वर्णन बाइबल में इस प्रकार किया है:

मैं सुरत रूप था और (मैंने) अपने पीछे एक बड़ी आवाज़ सुनी जिस प्रकार की तुरही की आवाज़ होती है।

बाइबल, रैवेलेशन 1:10

मैंने यह देखने के लिए मुँह फेरा कि यह किसकी आवाज़ है जो मेरे साथ बोलता है, तो पता लगा कि वह मनुष्य के बेटे के समान है। वह सिर से लेकर पाँव तक चोला पहने हुए है, कमर में सोने का कमरबंद है। उसका सिर और उसके बाल ऊन की भाँति सफ़ेद थे, जितनी सफ़ेद बर्फ़ होती है और उसकी आँखें मानो अग्नि की लपटें थीं और उसके पैर चमकते हुए श्रेष्ठ पीतल के समान थे, जो मानो भट्ठी में से निकला ही हो और उसकी आवाज़ बहते हुए पानी की आवाज़ जैसी थी।

बाइबल, रैवेलेशन 1:12-15

फिर मैंने देखा कि आकाश में एक दरवाज़ा खुला और पहली आवाज़ जो मैंने सुनी वह इस प्रकार थी जैसे तुरही की आवाज़ हो, वह मुझसे

बोल रही थी और उसने कहा कि इधर आ, मैं तुझे ऐसी बातें बताऊँगी जो आगे अवश्य होंगी।

बाइबल, रैवेलेशन 4:1

इसी स्वरूप के बारे में सारबचन में संकेत है कि गुरु ने अनोखी मूर्ति दिखाई है, जिसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता:

गुरु मूरत अजब दिखाई। शोभा कुछ कही न जाई॥

सारबचन संग्रह, 19:7:12

उस स्वरूप को देखने के लिए पवित्र हृदय चाहिए। उसको पवित्र नेत्रों के द्वारा ही देखा जा सकता है, प्रत्येक आँख उसके जल्वे यानी रूप की शोभा के प्रकट होने का स्थान नहीं:

रूयश बचश्मे-पाक तवां दीद चूं हिलाल,
हर दीदा जाय जल्वा-ए-आं माह पारा नीस्त।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 59

गुरु का यह रूप निश्चल, अनादि और 'आदि-जुगादि' है, जो युगों-युगों में अटल है और जो जिज्ञासु को ले जाकर सत्पुरुष में लीन कर देता है:

धंन गुपाल धंन गुरदेव॥ धंन अनाद भूखे कवल टहकेव॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 873

गुरदेव आद जुगाद जुग जुग गुरदेव मंत हर जप उधरा॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 250

इसी विचार को लेकर गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

आद गुरए नमह॥ जुगाद गुरए नमह॥ सतगुरए नमह॥ स्री गुरदेवए नमह॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 262

अर्थ: हमारा नमस्कार है उस आदि गुरु को, जो आदि में थे (जिसको हरि राए या स्वामी कहते हैं), युगादि गुरु को, जो युगों के शुरू में थे (जिसको सत्पुरुष कहते हैं), सतगुरु को, जो सत्पुरुष का ज़ुहूर (प्रकाश) है, श्री गुरुदेव को,

जो नूरी गुरु है, जो सदा खंडों-ब्रह्मांडों में जीव के अंग-संग रहता है और जो सतगुरु, सत्पुरुष और हरि के साथ अभेद है।

गुरुदेव सबसे बड़ा है, सर्वकला समर्थ है, उसकी सेवा से सब सुख मिलते हैं, उसकी कृपा द्वारा अहंभाव का नाश होकर जीव मुक्ति प्राप्त कर लेता है:

सभ ते वड समरथ गुरदेव॥ सभ सुख पाई तिस की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1152

तुम्हरी क्रिपा ते छूटीऐ बिनसै अहंमेव॥ सरब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 811

गुरुदेव सत्य है, इसलिए गुरुदेव की सेवा भी सत्य है, उसको छोड़कर सब सेवा झूठी है:

सत सत सत सत सत गुरदेव॥ झूठ झूठ झूठ झूठ आन सभ सेव॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1166

गुरु अर्जुन साहिब ने गुरुदेव की क्या अनुपम महिमा बताई है। आप फ़रमाते हैं कि गुरुदेव माता है, गुरुदेव ही पिता है, गुरुदेव स्वामी और परमेश्वर है, गुरुदेव सुख देनेवाला और सच्चा सखा है, जो कभी साथ नहीं छोड़ता। वह अज्ञान का नाश करनेवाला है। गुरुदेव हरिनाम की दात प्रदान करनेवाला, शांत और सत्यबुद्धि की प्रत्यक्ष मूर्ति है। वह पारस है। गुरुदेव सब पापों का नाश करनेवाला, पतित-पावन है। वह एक तीर्थ है, जहाँ गुरु के ज्ञान यानी अमृत का सरोवर है, जिसमें स्नान करके जीव पवित्र हो जाता है। गुरुदेव 'आदि-जुगादि' और युग-युग में अटल है। गुरुदेव के मंत्र का – जो हरि का मंत्र है – जाप करने से जीव का उद्धार हो जाता है। हे मालिक! कृपा करके गुरुदेव का मिलाप प्रदान करके हम मूर्ख पापियों को पार कर लो। गुरु सतगुरु पारब्रह्म परमेश्वर है, ऐसे गुरुदेव को हम नमस्कार करते हैं:

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा॥
गुरदेव सखा अगिआन भंजन गुरदेव बंधिप सहोदरा॥
गुरदेव दाता हर नाम उपदेसै गुरदेव मंत निरोधरा॥
गुरदेव सांत सत बुध मूरत गुरदेव पारस परस परा॥
गुरदेव तीरथ अंम्रित सरोवर गुर गिआन मजन अपरंपरा॥

गुरदेव करता सभ पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा॥
गुरदेव आद जुगाद जुग जुग गुरदेव मंत हर जप उधरा॥
गुरदेव संगत प्रभ मेल कर किरपा हम मूड़ पापी जित लग तरा॥
गुरदेव सतगुर पारब्रहम परमेसर गुरदेव नानक हर नमसकरा॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 250

गुरुदेव की प्राप्ति के अनेक फलों का गुरवाणी वर्णन करती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार छूट जाते हैं और करोड़ों पाप और कष्ट दूर हो जाते हैं। वह जीव के अवगुण दूर करके उसको नीच से ऊँचा बना देता है और उस माया का निवारण कर देता है जिसकी अग्नि में सब जीव जल रहे हैं। मनोकामना पूर्ण होती है, सब कार्यों की सिद्धि और जगत में जय-जयकार होती है। वह कलियुग में जीवों का उद्धार करता है। उसकी कृपा से मूर्ख और नासमझ जीव हरि की भक्ति में लग जाते हैं। उसके द्वारा सुख, शांति और सहज की प्राप्ति होती है। जीव स्वयं मुक्त हो जाता है और अपने कुल का भी उद्धार कर लेता है।

गुरुदेव की प्राप्ति मालिक की दया और उच्च भाग्य द्वारा ही हो सकती है। इसके बारे में आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के अनेक प्रमाण आगे दिए गए हैं, जो अध्ययन करने योग्य हैं।

गुरवाणी

1. गुरुदेव कौन है?

1.1. वह सतगुरु और हरि है

गुरदेव सतगुर पारब्रहम परमेसर गुरदेव नानक हर नमसकरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

1.2. वह गुरु है, सच, अलख, अभिन्न, अमृतसरोवर, अपरंपार व कर्ता है

गुर देवा गुर अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा॥
आपे दात करी गुर दातै पाइआ अलख अभेवा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1125

सफल सेवा गुरदेवा॥ कीमत किछ कहण न जाई साचे सच अलख अभेवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 896

गुरदेव तीरथ अंम्रित सरोवर गुर गिआन मजन अपरंपरा॥
गुरदेव करता सभ पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

2. गुरुदेव कैसा है?

2.1. अनादि है

धंन गुपाल धंन गुरदेव॥ धंन अनाद भूखे कवल टहकेव॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 873

2.2. आदि-जुगादि और युग-युग में है

गुरदेव आद जुगाद जुग जुग गुरदेव मंत हर जप उधरा॥
गुरदेव संगत प्रभ मेल कर किरपा हम मूड़ पापी जित लग तरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

2.3. सबसे बड़ा, सर्वकला समर्थ है, उसकी सेवा में सब सुख मिलता है

सभ ते वड समरथ गुरदेव॥ सभ सुख पाई तिस की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1152

तुम्हरी क्रिपा ते छूटीऐ बिनसै अहंमेव॥ सरब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 811

2.4. अंतर्यामी और दयाल है

मेरे राम जी तूं प्रभ अंतरजामी॥
कर किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 750

2.5. पापहर्ता और पतित-पावन है

गुरदेव तीरथ अंम्रित सरोवर गुर गिआन मजन अपरंपरा॥
गुरदेव करता सभ पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

2.6. सर्वनिधान है

सब निधान पूरन गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 806

कहो कबीर हम ऐसे लखन॥ धंन गुरदेव अत रूप बिचखन॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 872-73

3. गुरुदेव कहाँ है?

3.1. वह नेत्रों में प्रकाश करता है, उससे सब भ्रम दूर हो जाते हैं और सेवा पूर्ण हो जाती है

नेत्र प्रगास कीआ गुरदेव॥ भरम गए पूरन भई सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 200

4. गुरुदेव की सेवा सत्य है और सब सेवा झूठी है

सत सत सत सत सत गुरदेव॥ झूठ झूठ झूठ झूठ आन सभ सेव॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1166

5. गुरुदेव की सेवा निर्मल है

राखनहार अपार प्रभ ता की निरमल सेव॥
राम राज रामदास पुर कीन्हे गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 817

हउ बलिहार जाउ गुरदेव॥ सफल दरसन जा की निरमल सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1144

पूरन काम मिले गुरदेव॥ सभ फलदाता निरमल सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1149

सिर ऊपर मात पिता गुरदेव॥ सफल मूरत जा की निरमल सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 677

6. सब संत गुरुदेव को जपते और पूजते हैं

चरन कमल गुरदेव पिआरे॥ पूजह संत हर प्रीत पिआरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 394

संतन कै मन महा अनंद॥ संत जपह गुरदेउ भगवंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 869

7. गुरुदेव की प्राप्ति किस प्रकार होती है?

7.1. मालिक की दया से

हम तिस का बहु जानिआ भेउ॥ जब हूए क्रिपाल मिले गुरदेउ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 871

चरन कमल सिउ रंग लगा अचरज गुरदेव॥
जा कउ किरपा करहो प्रभ ता कउ लावहो सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 814

7.2. बड़े भाग्य से

वडै भाग भेटे गुरदेवा॥ कोट पराध मिटे हर सेवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683-84

8. गुरुदेव की प्राप्ति के फल

8.1. काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का नाश

काम क्रोध अर लोभ मोह बिनस जाए अहंमेव॥
नानक प्रभ सरणागती कर प्रसाद गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 269

काम क्रोध अहंकार बिनसै मिलै सतगुर देव॥
नाम द्रिड़ कर भगति हर की भली प्रभ की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 405

काम क्रोध अहंकार फिरह देवानिआ॥
सिर लगा जम डंड ता पछुतानिआ॥
बिन पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 708

8.2. करोड़ों पाप और कष्ट दूर हो जाते हैं

वडै भाग भेटे गुरदेवा॥ कोट पराध मिटे हर सेवा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 683-84

काटे कसट पूरे गुरदेव॥ सेवक कउ दीनी अपुनी सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 191

गुरदेव तीरथ अंम्रित सरोवर गुर गिआन मजन अपरंपरा॥
गुरदेव करता सभ पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.250

8.3. वह अवगुण दूर करके नीचे से ऊँचा कर देता है

धंन धंन गुरदेव जिस संग हर जपे॥
गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभ छपे॥
पारब्रहम गुरदेव नीचहो उच थपे॥
काट सिलक दुख माइआ कर लीने अप दसे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.710

8.4. वह माया की अग्नि का निवारण करता है

अगन निवारी सतगुर देव॥ सेवक अपनी लाइओ सेव॥

गुरु. अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.898

8.5. मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, सब कार्य सिद्ध होते हैं और संसार में जय-जयकार होती है

सगल मनोरथ प्रभ कीए भेटे गुरदेव॥
जै जै कार जगत मह सफल जा की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.818-19

पूरे गुर की पूरी सेव॥ आपे आप वरतै सुआमी कारज रास कीआ गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.825

8.6. कलियुग में जीवों का उद्धार हो जाता है और मूढ़ और मुग्ध जीव हरि की सेवा में लग जाते हैं

कलिजुग उधारिआ गुरदेव॥ मल मूत मूड़ जे मुघद होते सभ लगे तेरी सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.406

8.7. सेवक की सेवा पूर्ण हो जाती है

सुप्रसंन भए गुरदेव॥ पूरन होई सेवक की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.295

सरन परे साचे गुरदेव॥ पूरन होई सेवक सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.396

कर नमसकार पूरे गुरदेव॥ सफल मूरत सफल जा की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.869

8.8. भक्ति का लाभ होता है

काम क्रोध अहंकार बिनसै मिलै सतगुर देव॥
नाम द्रिड़ कर भगति हर की भली प्रभ की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.405

धंन धंन गुरदेव जिस संग हर जपे॥
गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभ छपे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.710

बलिहारी गुरदेव चरन॥
जा कै संग पारब्रहम धिआईऐ उपदेस हमारी गति करन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1206

8.9. नाम की प्राप्ति होती है और अंदर अनहद शब्द गूँजते हैं

मोहे निरगुण अनाथ सरणी आइआ॥
बल बल बल गुरदेव जिन नाम द्रिड़ाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.925

बाजे अनहद बाजा॥
रसक रसक गुण गावह हर जन अपनै गुरदेव निवाजा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.892

8.10. काल, यम और आवागमन मिट जाते हैं

बडे भाग गुर सेवह अपुना भेद नाही गुरदेव मुरार॥
ता कउ काल नाही जम जोहै बूझह अंतर सबद बीचार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.504

आवा गवन मिटै प्रभ सेव॥ आप तिआग सरन गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.288

8.11. सुख, शांति और सहज की प्राप्ति

अपणे बालक आप रखिअन पारब्रहम गुरदेव॥
सुख सांत सहज आनद भए पूरन भई सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 819-20

कर किरपा सुख अनद करे॥ बालक राख लीए गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 866

सभ ते वड समरथ गुरदेव॥ सभ सुख पाई तिस की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1152

गुरदेव दाता हर नाम उपदेसै गुरदेव मंत निरोधरा॥
गुरदेव सांत सत बुध मूरत गुरदेव पारस परस परा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 250

अमावस आतम सुखी भए संतोख दीआ गुरदेव॥
मन तन सीतल सांत सहज लागा प्रभ की सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299-300

सरब कलिआण कीए गुरदेव॥ सेवक अपनी लाइओ सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 801

8.12. अपनी मुक्ति और अपने कुल का भी उद्धार हो जाता है

आप मुकत संगी तरे कुल कुटंब उधारे॥
सफल सेवा गुरदेव की निरमल दरबारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 814

9. प्रार्थना

नानक दीन जाचै तेरी सेव॥ कर किरपा दीजै गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 867

मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नाम परगास॥
गुरमत नाम मेरा प्रान सखाई हर कीरत हमरी रहरास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 10

पूर्ण गुरु

परमार्थ में पूर्ण लाभ की प्राप्ति के लिए संत-महात्माओं की वाणियों में गुरु की आवश्यकता बताई गई है। गुरु कैसा हो? पूर्ण हो, पूर्ण द्वारा ही हम पूर्ण हो सकते हैं। इसलिए सब महात्माओं ने पूरे गुरु यानी मुर्शिदे-कामिल के ही गुण गाए हैं।

आत्मिक उन्नति के भी दरजे हैं, जब तक पूरी गति वाला महात्मा न मिले, पूरी रसाई (पहुँच) नहीं हो सकती। यदि एम.ए. पास करना हो तो पाँचवीं, दसवीं या बी.ए. पास शिक्षक से पढ़कर यह काम नहीं हो सकेगा। उनसे तो हम पाँचवीं, दसवीं या बी.ए. तक की योग्यता ही प्राप्त कर सकते हैं। एम.ए. करने के लिए हमें एम.ए. पास की ही आवश्यकता होगी। स्कूल में अलग-अलग कक्षाओं के लिए अपने-अपने शिक्षक हैं। एक लड़का जो बी.ए. पास करके एम.ए. हो जाए, वह पहली से एम.ए. तक के सब शिक्षकों का आदर करता है। इसी प्रकार परमार्थ में भी डिग्रियाँ हैं, जिनका साधु-गति, संत-गति और परम संत-गति कहकर वर्णन किया जाता है। इसका विवरण इसी पुस्तक में अन्यत्र दिया गया है।

परमार्थ का पूर्ण लाभ उठाने के लिए हमें कम से कम ऐसे शिक्षक की आवश्यकता होगी जिसे संत-गति प्राप्त हो। साधु-गति वाले ऐसे शिक्षक द्वारा भी काम चल सकता है जो तन-मन के पिंजरे से मुक्त और तीनों गुणों (सिफ़्ते सिलासा) से पार हो गया हो। पर यदि साधु-गति वाला गुरु मिल जाए तो वह शिष्य के सम्मुख संत-गति के गुरु का आदर्श रखता है। इससे कम गति के शिक्षक द्वारा परमार्थ में पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकेगी। जितनी गति का शिक्षक होगा, वह उतनी ही गति की ख़बर दे सकेगा और रसाई करवा सकेगा, उससे बढ़कर नहीं। अधूरे या कच्चे गुरु से पूर्ण लाभ की आशा रखना बेसमझी है, उससे मुक्ति का फल प्राप्त नहीं हो सकेगा। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं:

केते गुर चेले फुन हूआ॥ काचे गुर ते मुकत न हूआ॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 932

पूर्ण गुरु के सिर पर एम.ए. पास की तरह कोई विशेष चिन्ह नहीं लगा होता, उनकी संगति करने पर अपनी योग्यता से वे स्वयं ही प्रकट हो जाते हैं। जब शिष्य को ऐसा गुरु मिलता है तो वह पहले दिन ही सारी योग्यता उसके लिए प्रकट नहीं कर देता। जैसे-जैसे जिज्ञासु की योग्यता बढ़ती जाती है, वह उस पर अपनी अधिक योग्यता प्रकट करता जाता है। पहले तो वह एक बुज़ुर्ग (पूजनीय) के रूप में प्रकट होता है और फिर सचमुच मुर्शिद के रूप में प्रकट हो जाता है। वह यहीं नहीं रुकता, वह मुर्शिद से फ़ना-फ़िल्लाह (ख़ुदी को मिटाकर ख़ुदा में लीन हो जाना) दिखाई देता है और उसमें और परमात्मा में कोई फ़र्क़ प्रतीत नहीं होता।

पूरे गुरु की पहचान

पूर्ण गुरु यानी मुर्शिदे-कामिल की पहचान करना कोई सरल कार्य नहीं। हम उसके प्रकट चिन्ह चक्र, रहन-सहन और उससे प्राप्त परमार्थ के लाभ से उसे कुछ-कुछ जान सकते हैं, इसका संक्षेप में विवरण नीचे दिया जाता है।

वह सदा दयालु होता है और सबको समान दृष्टि से देखता है, वह समदर्शी और निर्वैर होता है, उसके लिए निंदा और स्तुति एक समान हैं:

> सतगुरू सदा दइआल है भाई विण भागा किआ पाईऐ॥
> एक नदर कर वेखै सभ ऊपर जेहा भाउ तेहा फल पाईऐ॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.602

> वाह वाह सतगुर सत पुरख है जिस नो समत सभ कोए॥
> वाह वाह सतगुर निरवैर है जिस निंदा उसतत तुल होए॥
>
> गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1421

रहन-सहन

उनका रहन-सहन विशेष प्रकार का होता है, जो उनको और मनुष्यों से अलग करता है:

1. वह दाता है, याचक (मँगता) नहीं, शिष्यों की किसी वस्तु की उसे चाह नहीं और न मोहताजी है, वह अपने निर्वाह के लिए स्वयं कमाई करता है। किसी पर अपना बोझ नहीं डालता, अपना निर्वाह करके दीन-दुखियों की सहायता करता है:

गुर पीर सदाए मंगण जाए॥ ता कै मूल न लगीऐ पाए॥
घाल खाए किछ हथहो दे॥ नानक राह पछाणह से॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1245

2. वह अपनी शिक्षा का कोई पारिश्रमिक या दक्षिणा नहीं लेता, सबको मुफ़्त देता है। जिस प्रकार प्रकृति की अन्य वस्तुएँ–हवा, पानी और सूर्य का प्रकाश सबके लिए मुफ़्त है, उसी प्रकार उसकी शिक्षा भी मुफ़्त है।

3. उसका शृंगार विनय और नम्रता होता है। सर्वसामर्थ्य के होते हुए भी वह अपने बारे में डींग नहीं मारता कि मैं यह या वह कर सकता हूँ। वह जब भी कुछ कहेगा तो यही कहेगा कि मालिक करनेवाला है, मेरा मुर्शिद (गुरु) ही सब कुछ कर रहा है। सच है, जब वृक्ष की शाखा फलों से लद जाती है तो वह झुक जाती है। जो स्वयं को तुच्छ समझता है, वास्तव में वही बड़ा है:

आपस कउ जो जाणै नीचा॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 266

4. उसका किसी के साथ विरोध नहीं और उसे किसी के व्यवहार के विषय में शिकायत नहीं। यदि कोई उससे वैर भी करे तो वह क्षमा कर देता है, किसी की नुक़्ताचीनी (टीका-टिप्पणी) नहीं करता और न निंदा करता है। उसका सबके साथ प्यार है, शत्रुता करनेवालों के साथ भी वह प्यार करता है। 'अपने वैरियों से भी प्यार करो' का सिद्धांत उसके जीवन में प्रकट दिखाई देता है।

5. वह पवित्रता, परम ज्ञान, परम सत्य और रूहानियत का उज्ज्वल सूर्य होता है। उसका जीवन पारमार्थिक होता है, परमार्थ के इच्छुक, पतंगों की भाँति उसको चारों ओर से आ घेरते हैं और उससे आत्मिक लाभ प्राप्त करके अपना जन्म सफल कर लेते हैं।

6. वह कोई विशेष भेष धारण नहीं करता और न ही मन को क़ाबू करने के लिए शरीर को कष्ट देनेवाले साधन करता है। उसकी युक्ति भिन्न है, जो बिलकुल स्वाभाविक और सरल है।

7. वह लोगों को दिखाने के लिए करामातें करके मदारियों जैसा खेल कभी नहीं करता। वह सब शक्तियों का मालिक होते हुए भी उनको गुप्त रखता है।

मौज हो तो कभी आवश्यकतानुसार उनका उपयोग भी कर लेता है। उसके शिष्यों को तो सदा ही उसकी रहमत पहुँचती रहती है।

पूरे गुरु का आचरण और उनकी संगति का प्रभाव

1. उसके पास उसकी ओर ध्यान देकर बैठने से मन का दौड़ना रुक जाता है और कुछ स्थिरता प्राप्त होती है:

जिन डिठिआ मन रहसीऐ किउ पाईऐ तिन्ह संग जीउ॥
संत सजन मन मित्र से लाइन प्रभ सिउ रंग जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 760

उससे पवित्रता की रश्मियाँ निकलती हैं जो अपूर्व तेज और सौंदर्य से भरपूर होती हैं, जिनके रंग का जीव पर कुछ ऐसा असर होता है कि उसका ये अक्षर वर्णन नहीं कर सकते। उसके अंदर मिक़नातीसी (चुंबकीय) आकर्षण (कशिश) है। वह अध्यात्म के भेदभरे वचनों द्वारा आत्मा को अंतर में ऊपर की ओर खींचता है और एक अकथनीय सरूर (आनंद) का अनुभव प्रदान करता है:

गर कशायद ऊ सरे-अंबाने-राज़, जाँ ब सूये अर्श साज़द तर्को ताज़।

मौलाना रूम

2. उसके नेत्रों और मस्तक पर एकटक देखने से एक विशेष प्रकार की झलक दिखाई देगी जो एक कशिश जैसी प्रतीत होगी, जिसके द्वारा शिष्य को अपनी सुरत एकत्रित होकर, स्थूल से सूक्ष्म मंडलों में चढ़ती मालूम होगी और उसकी चेतनता बढ़ेगी।

3. उसके (गुरु के) अंदर शांति और समता होती है, उसकी संगति हमारे अंदर आनंद की धारा बहा देती है। उससे मिलकर आनंद प्राप्त होता है, सब दुविधाएँ दूर हो जाती हैं और परम पद की प्राप्ति होती है:

जिस मिलिऐ मन होए अनंद सो सतगुर कहीऐ॥
मन की दुबिधा बिनस जाए हर परम पद लहीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

4. वह ओज (ओजस्*) से भरपूर होता है, जिसके कारण उसका मुख जगमगाता है। उसकी आवाज़ दिल को खींचनेवाली होती है और नेत्रों का एक विशेष प्रकार का प्रकाश मन को मोहने और बेधनेवाला होता है। संतों से ओज की रश्मियाँ (प्रताप की किरणें) निकलकर आकाश-मंडल पर प्रभाव डालती हैं। उनके वचनों में एक विशेष प्रकार का निराला प्रभाव होता है; वे सुननेवालों के हृदय में प्रवेश करते चले जाते हैं। उनकी उपस्थिति जीवों को जाग्रत और उन्नत करनेवाली होती है।

5. उसकी नज़र हमारी आंतरिक अवस्था को देखनेवाली होती है और वह उस अवस्था के अनुसार ही शिक्षा देता है। जब उसके पास कोई जाता है तो वह उसकी आंतरिक स्थिति को इस प्रकार देख लेता है जिस प्रकार शीशे की बोतल में रखी हुई वस्तु दिखाई देती है, पर वह परदापोश होता है (जीवों के दोषों को प्रकट नहीं करता)। किसी भी भाव सहित कोई जाए, भ्रमर जाए या भिड़ (ततैया), फूल की भाँति वह दोनों को सुगंध देता है। कोई उसके दर से ख़ाली नहीं जाता। जो उसके पास जाते हैं, वे ऐसे संस्कार ले आते हैं जो देर-सवेर उभर आते हैं। जब ऐसी हस्तियों के दर्शन हो जाएँ तब से भले दिन आने शुरू हो जाते हैं:

जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओए आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 671

6. संत-सतगुरु कुलमालिक का सच्चा पुत्र होता है, उसके लिए सब जातियाँ, धर्म, पंथ, संप्रदाय एक हैं, वह सब देहधारियों में एक परमात्मा को देखता है: *'हिंदू कहूँ तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहिं। पाँच तत्त्व का पुतला, गैबी खेलै माहिं॥'* (कबीर साखी-संग्रह, पृ. 75)

धर्म और जाति के पक्षपात के बग़ैर, वह सारे संसार को निडर होकर समान उपदेश देता है। उसके लिए सारी ख़िलक़त मालिक के बच्चे हैं और वह सबको समदृष्टि से देखता है:

सतगुर पुरख दइआल है जिस नो समत सभ कोए॥
एक द्रिसटि कर देखदा मन भावनी ते सिध होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

---

* **ओजस्**=ओजस् की ताक़त ब्रह्मचर्य धारण करने से बनती है, जो मणि की भाँति मस्तक पर प्रकाश करती है और शब्द की धुन की आभा के द्वारा चमक उठती है। जो आँखों, वचनों और मस्तक में से किरणों के रूप में निकलती है।

और सबको गले लगाता है:

नानक सतगुर ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाए जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 72

वह किसी को अपने धर्म को छोड़ने और किसी नए धर्म को स्वीकार करने का उपदेश नहीं देता। उसका संबंध केवल आत्मा से है। तुम किसी भी धर्म के हो उसे चिंता नहीं, केवल तुम्हारे अंदर परमार्थ की चाह होना आवश्यक है। उसके लिए धर्म और जाति का कोई प्रश्न नहीं उठता:

हिल मिल खेलूँ शब्द महि, अंतर रही न रेख।
समझे का मत एक है, क्या पंडत क्या शेख॥

कबीर साहिब

वह निडर होकर केवल आत्मिक मार्ग का उपदेश देता है जो प्रत्येक मनुष्य के अंदर मौजूद है शास्त्रों और कर्मकांड के नियमों से मुक्त है। वह सच्चा हाजी (मालिक की दरगाह तक पहुँचा हुआ) है। जहाँ कहीं भी पूरा गुरु मिले, उससे रूहानी लाभ उठा लो। मौलाना रूम फ़रमाते हैं, 'यदि तुझे हज करने की इच्छा है तो किसी हाजी को साथ ले ले, वह हिंदू हो या तुर्क या अरबी, कोई भी हो, परवाह नहीं, तू उसकी ज़ाहिरी (प्रकट) शक्ल पर न जा, उसके अंदरूनी ध्येय और रसाई की ओर देख। हमें उससे कोई बाहरी रिश्ता नहीं जोड़ना होता। उससे केवल रूहानी विज्ञान की शिक्षा लेकर दूसरे विज्ञानों की तरह, उसकी कमाई करनी पड़ती है:

मर्दे-हज़्जी हमरही हाजी तलब, ख़्वाह हिन्दू ख़्वाह तुर्क ओ या अरब।
मनिगर अंदर नक़्श ओ अंदर रंगे-ऊ, बनिगर अंदर अज़्म ओ दर आहंगे-ऊ।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 304

7. वह मालिक का अवतार होता है। जिस प्रकार कुलमालिक बिना ज़बान के, संत-महात्माओं को उपदेश देता है, वह भी अपने शिष्यों को अपनी अंदरूनी अनुभव की शक्ति से, बिना ज़बान के उपदेश देता है:

शैख़े-फ़उआल अस्त बे आलत चू हक्क़, बा मुरीदां दाद बे गुफ़्ते सबक़।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 134

अर्थ: मुर्शिद मालिक की तरह निराकार, इंद्रियों से परे, होता है, वह अपने मुरीदों (शिष्यों) को बिना ज़बान खोले उपदेश देता है।

संतों की शिक्षा बेज़बानी की ज़बान (मूक भाषा) में है, जो लिखने-पढ़ने का विषय नहीं। वह रूह की ज़बान द्वारा दी जाती है और रूह ही उसका अनुभव करती है। रूह रब का अंश और उसका भेद है। रूह बिना तालु और ज़बान के बोलती है:

अम्रे-रब्बी अस्त रूह व सर्रे ख़ुदास्त, ज़िक्रे-बेकामो-बेज़बाँ ऊ रास्त।

दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 40

वहाँ ये इंद्रियाँ काम नहीं करतीं, बिना इंद्रियों के सब कार्य होते हैं:

अखी बाझहो वेखणा विण कंना सुनणा॥
पैरा बाझहो चलणा विण हथा करणा॥
जीभै बाझहो बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकम पछाण कै तउ खसमै मिलणा॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 139

मौलाना रूम भी फ़रमाते हैं कि न उन मंडलों में चलने के लिए ये पैर चाहिएँ और न ही खाने के लिए ज़बान और न उड़ने के लिए पंख, वहाँ सुनने के लिए इन कानों और देखने के लिए इन आँखों की आवश्यकता नहीं:

बे परो बे पा सफ़र मी करदमे, बे लबो-दंदाँ शकर मी ख़रदमे,
चश्म बस्ता आलमे मी दीदमे।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 228-229

अर्थ: वहाँ हम बिना परों के और बिना पैरों के सफ़र करते हैं, बिना होठों और दाँतों के शक्कर खाते हैं और आँखें बंद करके उस आलम (संसार) को देखते हैं।

8. कई बार परमार्थ के खोजियों को उनके सत्संग में कोई प्रश्न करने की ज़रूरत नहीं होती। वे अपनी दया द्वारा ही हृदय में उठते प्रश्नों के या फिर जो प्रश्न वे (खोजी) दिल में लेकर आते हैं, उनके उत्तर बिना पूछे दे देते हैं।

9. जब-जब संत प्रकट होते हैं, वे केवल नाम यानी सुरत-शब्द योग (देखें: इनके प्रकरण) की शिक्षा देते हैं और साफ़-साफ़ बता देते हैं कि मालिक बाहरी साधनों द्वारा न किसी को मिला है न मिलेगा। वह घट के अंदर है, उसे वहीं खोजो, तुम्हारा घट ही सच्चा हरि मंदिर है, उसके अंदर प्रवेश करने से ही मालिक के दर्शन होंगे:

हर मंदर एह सरीर है गिआन रतन परगट होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

मनुष्य का शरीर एक अद्‌भुत वस्तु है, यदि आंतरिक आँखें खुल जाएँ तो सचमुच यह परमात्मा का घर है, 'यह शरीर प्रभु का मंदिर है।' यह सच्ची मसजिद है जिसके अंदर रब मिलता है:

मसजिद अस्त आं दिल किह् जिस्मश साजिद अस्त।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 139

यह हृदय मसजिद है और शरीर सिजदा करने का स्थान है। "उसने मनुष्य को अपने स्वरूप पर बनाया" (बाइबल, जॉन 1:27)। क़ुदरती मसजिदों और मंदिरों (इन शरीरों) में रहनेवाले लोग बाहर क्यों भटक रहे हैं? यह उचित नहीं। जो काया को छोड़कर मालिक को दूसरे स्थानों पर ढूँढ़ते हैं, वे उसे नहीं पा सकते:

यार दर तू पस चिरा ऐ बे-ख़बर, यार दर ख़ुद तू चिह् गर्दी दर ब-दर।

मसनवी बू अली शाह क़लंदर, पृ. 25

अर्थ: प्रीतम तो तेरी बग़ल में है, तू क्यों बेख़बर है, वह तो तेरे अंदर है, तू दर-ब-दर क्यों फिर रहा है?

दर दिमाग़े-तू गुलशनो-मजलिस। सैर कुन तेज़ रौ ज़ि मुर्शिद पुर्स॥

सारबचन संग्रह, 21:2:5

अर्थ: तेरे दिमाग़ (मस्तक) में गुलशन (वाटिका) और ख़ास मजलिसें (मालिक की विशेष सभा) हैं, तू उनकी सैर कर, जल्दी जाकर किसी मुर्शिद से इनके बारे में पूछ:

विण काइआ जे होर थै धन खोजदे से मूड़ बेताले॥
से उझड़ भरम भवाईअह जिउ झाड़ मिरग भाले॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

जो अपने शरीर के सिवाय उसको और कहीं ढूँढ़ते हैं, वे मूर्ख हैं, वे हिरणों की भाँति कस्तूरी को झाड़ियों में ढूँढ़ते हैं और भ्रमवश उजाड़ों में भटकते फिरते हैं। जो कुछ ब्रह्मांड के अंदर है वह पिंड के अंदर भी है। उसकी खोज अपने अंदर करो। हम ग़लती करके बाहर किताबों, नदियों, पहाड़ों और मनुष्य के हाथों से बने हुए मंदिरों और अन्य धार्मिक स्थानों में उसकी तलाश करते हैं, पर उसकी प्राप्ति नहीं होती। यदि हमको घट के मार्ग का भेद मिल जाता तो उसे पा लेते, पर सच्चे गुरु के बिना हम काया के अंदर प्रवेश नहीं कर सकते:

गुर परसादी वेख तू हर मंदर तेरै नाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1346

10. पूर्ण गुरु की शिक्षा यथार्थ, सत्य और अमली साइंस यानी क्रियात्मक और व्यावहारिक है, केवल काल्पनिक या बौद्धिक विचार नहीं। वे जब भी उपदेश देते हैं, बड़ी प्रतीति और दृढ़ विश्वास के साथ देते हैं। उनका उपदेश सुना-सुनाया या पढ़ा-पढ़ाया नहीं होता। वह उनका निजी अनुभव होता है, जो सारे संत-महात्माओं का समान विषय है। उनके आत्मिक अनुभव अन्य महात्माओं के अनुभवों से मिलते हैं। वे लोगों को अंधविश्वास में नहीं फँसाते, उन्होंने स्वयं मालिक को देखा है:

नानक का पातसाह दिसै जाहरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 397

सुइन कटोरी अंम्रित भरी॥ लै नामै हर आगै धरी॥
एक भगत मेरे हिरदे बसै॥ नामे देख नराइन हसै॥
दूध पीआए भगत घर गइआ॥ नामे हर का दरसन भइआ॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1163-64

वे सच्चे हाजी हैं, वे कहते हैं, अभ्यास करो और अपनी आँखों से देखो:

ब-ख्वाहद चश्मे-सिर्र मअशूक़ दीदन, कलामश रा बिगोशे-ख़ुद शुनीदन।
निहां अंदर निहां बीनद जमालश, बिगोशे हिस्से फ़हम बकुनद कमालश।

शम्स तब्रेज़ फ़रमाते हैं कि अपनी आँखों से प्यारे को देखना चाहिए, उसके कलाम को ख़ुद सुनना चाहिए। आँखें बंद करो आगे अँधेरा है, उसके पार उसके जमाल (शोभा) को देखना चाहिए, उसके कमाल (अद्भुत दया) को निजी अनुभव द्वारा समझ सकोगे।

महात्मा ग्रंथ-पोथियों पर निर्भर नहीं होते। सब धर्म पुस्तकों में महापुरुषों के अनुभवों का ही वर्णन किया गया है। संतजन स्वयं शरीरधारी और चलते-फिरते वेद और ग्रंथ हैं। ग्रंथ-शास्त्र उनसे ही निकले हैं। वे ये सब कुछ हैं और इससे बढ़कर और भी बहुत कुछ हैं। संतों की शिक्षा सच्ची मुक्ति की शिक्षा है, जिसके द्वारा सब बंधन टूट जाते हैं और जीवों को अमर पद प्राप्त होता है।

मलार की वार में गुरु नानक साहिब सतगुरु की पहचान इस प्रकार बताते हैं: सुजान सतगुरु वह है जो हमें इसी घर (शरीर) के अंदर हमारा सच्चा घर दिखा दे। हमारे अंतर में जो पाँच धुनें (जो शब्द की निशानी हैं) हो रही हैं, उनको सुना दे। सब द्वीप, लोक, पाताल और खंड-ब्रह्मांड आश्चर्यजनक हैं, क्योंकि इनके अंदर शब्द की रसीली धुनें हो रही हैं जो सच्चे मालिक के तख़्त से आ रही हैं। गुरु साहिब उपदेश देते हैं कि तुम सुखमन (सुषुम्ना) के अंदर उस शब्द को सुनकर सुन्न मंडल में लिव लगाओ। वह अकथ कथा है, उसके साथ मन को जोड़ो, सब आशा-मनसा ख़त्म हो जाएगी। जब हृदय कमल उलटेगा, वह अमृत से भर जाएगा, उस अमृत रस को पीकर तुम्हारा मन कहीं नहीं दौड़ेगा। वह अजपा जाप है, जो बिना जपे अपने आप हो रहा है, कभी नहीं बिसरेगा। शब्दरूपी वह अजपा जाप उस 'आदि जुगादि' प्रभु में समा रहा है। सब सखियाँ (परमार्थ के खोजी) जो पाँच शब्दों को प्राप्त करती (कमाई करती) हैं, वे गुरुमुख हैं और अपने निजघर को पा लेती हैं। गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि जो कोई शब्द को खोजकर इस घर को प्राप्त कर ले, मैं उसका दास हूँ:

घर मह घर देखाए दे सो सतगुर पुरख सुजाण॥
पंच सबद धुनिकार धुन तह बाजै सबद नीसाण॥
दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरान॥
तार घोर बाजिंत्र तह साच तखत सुलतान॥
सुखमन कै घर राग सुन सुंन मंडल लिव लाए॥
अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनह समाए॥
उलट कमल अम्रित भरिआ इह मन कतहु न जाए॥
अजपा जाप न वीसरै आद जुगाद समाए॥
सभ सखीआ पंचे मिले गुरमुख निज घर वास॥
सबद खोज इह घर लहै नानक ता का दास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

सब महात्माओं की वाणियाँ यही कहती हैं कि जो सुरत को शब्द के साथ जोड़ सके, वही सच्चा गुरु है:

सबद बुझाए सतगुर पूरा॥ सरब कला साचे भरपूरा॥
अफरिओ वेपरवाह सदा तू ना तिस तिल न तमाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1021

वह शिष्यों को किसी बाहरमुखी साधन के भ्रमजाल में नहीं डालता। उसकी पवित्र शिक्षा केवल यही होती है कि अपने अंदर प्रवेश करके शब्द की कमाई करो। पूरे गुरु के मिलने की यही निशानी है कि शिष्य के अंदर अनहद शब्द बजने लगे:

कहो नानक जिस सतगुर पूरा॥ वाजे ता कै अनहद तूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

जो नाम में रमा हुआ है, वही सतगुरु है। वह कलियुग में जीवों को पार ले जाने के लिए जहाज़ है। जो गुरुमुख होता है वह इस जहाज़ पर चढ़कर भवसागर से पार हो जाता है और अपने अंदर सच को पा लेता है:

नाम रता सतगुरू है कलिजुग बोहिथ होए॥
गुरमुख होवै मु पार पवै जिना अंदर सचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 552

11. जब कभी संत-महात्मा प्रकट होते हैं, वे कभी-कभी अपने आसपास कुछ ऐसे सामान बना रखते हैं, जो संसारियों को ठीक नहीं लगते। इसका प्रयोजन केवल इतना ही है कि उनकी शोभा और महत्ता सुनकर जो दुनियादार और माया के गुलाम उनके पास इकट्ठे हो जाते हैं, वे मक्खी की भाँति उड़ जाएँ परंतु सच्चे परमार्थियों को नुक़सान न हो। यह निंदा का सामान वे आप जुटा लेते हैं, ताकि केवल अधिकारी लोग ही उनके पास आ सकें:

दरे-दरवेश रा दरबाँ न बायद, बबायद ता सगे-दुनिया न आयद।

अर्थ: (प्रश्न) क्या फ़क़ीरों के दर पर द्वारपाल नहीं चाहिए? (उत्तर) अवश्य चाहिए ताकि दुनिया के कुत्ते न आ सकें।

उनके दर पर निंदा चौकीदार का काम करती है, ताकि कोई अनाधिकारी जीव उनके पास न पहुँच सके।

भाई बाले जी की जन्म साखी में चर्चा है* कि गुरु नानक साहिब ने फ़रमाया, "कलियुग में संतों ने बहुत-से अवतार धारण करके जीवों का उद्धार करना है।" तब भाई अजित्ते ने विनती की, "महाराज जी! पूर्ण संतों की क्या परख होगी, कौन-से शब्द का प्रयोग होगा और गुरुमुख शिष्य, पूर्ण संतों को किस प्रकार पहचानेंगे?" गुरु जी ने उत्तर दिया कि जब-जब संत मनुष्य-चोला धारण करके प्रकट होंगे, तब-तब नक़ली शरीअत (कर्मकांड) वाले मज़हबों के पाबंद लोग संतों की बहुत निंदा करेंगे और संतों का संग कोई बिरला शिष्य ही करेगा। जो कोई एक-आध बिरला शिष्य आएगा, उस शिष्य का नक़ली शिष्य बहुत निरादर करेंगे यानी संतों का संग करनेवाले को बुरा समझेंगे। उस समय सुरत-शब्द के अभ्यास को भूलकर सब जीव बाहरमुखी वाणियाँ पढ़ेंगे और नमाज़ पढ़ने में लग जाएँगे और अनहद शब्द का मार्ग गुप्त हो जाएगा यानी जीव अन्य मंत्रों के जाप में लग जाएँगे और अंतर्मुख भक्ति से वंचित रह जाएँगे। जब सुरत-शब्द का मार्ग बंद हो जाएगा तब मैं संतों का स्वरूप धारण करके आऊँगा और उस समय अनहद शब्द का मार्ग प्रचलित होगा। जहाँ शब्द हो यह समझना कि मैं ही वहाँ हूँ।

12. संतों के प्रकट होने पर परमार्थ का सैलाब आ जाता है, इसलिए सच्चे खोजी चारों ओर से आकर उनके पास इकट्ठे हो जाते हैं। उनके उपदेश द्वारा सबको लाभ पहुँचता है। चाहे धर्मात्मा हो या पापी, जो भी उनके पास सच्चे दिल से आते हैं, उनकी आत्मिक तृप्ति की व्यवस्था हो जाती है। इसलिए यह देखने में आता है कि कई पापी, चोर और डाकू भी वहाँ इकट्ठे हो जाते हैं जो उनसे आत्मिक लाभ पाकर धर्मात्मा बन जाते हैं। सतगुरु सच्चे धोबी होते हैं जो हमारे पापों की मैल को धो देते हैं।

वे निस्स्वार्थता और क़ुर्बानी का सजीव उदाहरण होते हैं। उनका सिक्का सबके दिलों पर जम जाता है। परमार्थ का प्रचार बड़ी धूमधाम से होता है। लोग हज़ारों की गिनती में एकत्रित हो जाते हैं। यह व्यवस्था देखकर दुनिया चकित रह जाती है।

---

* यह वर्णन भाई भगत सिंह माणक-पुरीआ द्वारा लिखित पुस्तक सार अमृत धार में आया है। (पृष्ठ, 12-13)

13. वे समर्थ पुरुष होते हैं। वे अपने शिष्यों की, दूर या पास कहीं भी हों, सँभाल करते रहते हैं, जिसको देखकर उन पर भरोसा बँधता है। उनका रहमत भरा हाथ कुलमालिक के हाथ से कम नहीं होता, यूँ समझो कि वह मालिक का ही हाथ होता है। उनका हाथ लंबा होता है जो सात आसमानों को भी पार कर सकता है। जैसे-जैसे शिष्य उनसे संपर्क बढ़ाता जाता है, उसे नित्य उनमें नए गुण और नई करामातें दिखाई देती हैं और शिष्य को उनसे दया-मेहर प्राप्त होती है:

दस्ते पीर अज़ ग़ायबाँ कोताह नीस्त, दस्ते-ऊ जुज़ कब्ज़ा-ए-अल्लाह नीस्त।
मर्द रा दस्ते दराज़ आमद यक़ीं, बर गुज़श्त अज़ आस्माने-हफ़्तमीन।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 312

ये कुछ मोटी-मोटी निशानियाँ हैं जो परमार्थी के विचार के योग्य हैं। इनको छोड़कर और अनेक निशानियाँ हैं जिनका अनुभव परमार्थी उनकी संगति में करता है।

मौलाना रूम कहते हैं कि वलियों (संतों) में और बहुत-सी निशानियाँ हैं, वे उन पर प्रकट होती हैं जो परिचित हैं:

बस निशानी-हा किह् अंदर औलियास्त, ख़ासे-आँ जाँ बुवद किह् आश्नास्त।

जब जीव अभ्यास करके अपने अंदर जाता है तो उस महात्मा के नूरी स्वरूप के दर्शन करता है। वह स्वरूप उसके साथ वार्तालाप करता है, उसके प्रश्नों के उत्तर देता है और हर समय उसके साथ रहता है। उस समय उसकी पहचान पक्की हो जाती है:

गुर मेरै संग सदा है नाले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 394

संसार गुरुओं से भरा पड़ा है। इनमें से आम लोग मान-प्रतिष्ठा और धन के भूखे होते हैं, वे गुरु नहीं हो सकते, उनसे बचना चाहिए, (देखें: 'डिंभी गुरु' का प्रकरण)। सोच-समझकर गुरु धारण करना चाहिए। जहाँ ऊपर लिखी बातें दिखाई दें वहीं सच्चाई की झलक होगी, पर भूलकर भी महात्मा की परीक्षा लेने का विचार न करो। जब ऐसे गुरु मिल जाएँ तो उनके चुंबकीय प्रभाव द्वारा मन वश में आ जाता है। उनकी शक्ति के बिना यह काम नहीं बन सकता:

हेच नकुशद नफ़्स रा जुज़ ज़िल्ले-पीर, दामने-आँ नफ़्स कुश रा सख़्त गीर।
चूँ बगीरी सख़्त आँ तौफ़ीक़े-हूस्त, दर तू हर क़ुव्वत किह् आयद जज़्बे-ऊस्त।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 242

अर्थ: पीर की छत्रछाया के बिना मन को कोई क़ाबू नहीं कर सकता। दृढ़तापूर्वक उसका पल्ला पकड़ ले, जिसने कि मन को मार लिया है। यदि तू पल्ला पकड़ लेता है तो यह भी उसकी ही बख़्शिश है। फिर जो शक्ति तेरे अंदर आएगी वह उसी की होगी।

वह विषय-वासनाओं से रहित, पवित्र हस्ती है। उसको तन-मन और अपना आप समर्पण कर दो ताकि वह तुम्हें अपने जैसा बना ले। यह तन-मन किस प्रकार देना चाहिए, इस बारे में कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

मन दीया तिन सब दिया, मन की लार सरीर।
अब देवे को कछु नहीं, यों कह दास कबीर॥
तन मन दिया तो भल किया, सिर का जासी भार।
कबहूँ कहै कि मैं दिया, घनी सहैगा मार॥
तन मन ता को दीजिये, जा के बिषया नाहिं।
आपा सबही डारि कै, राखै साहिब माहिं॥
तन मन दिया तो क्या हुआ, निज मन दिया न जाय।
कहै कबीर ता दास से, कैसे मन पतियाय॥
तन मन दिया आपना, निज मन ता के संग।
कहै कबीर निरभय भया, सुन सतगुरु परसंग॥
निज मन तो नीचा किया, चरन कँवल की ठौर।
कहै कबीर गुरुदेव बिन, नजर न आवै और॥

कबीर साखी-संग्रह, पृ. 2-3

गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 618

पूरे गुर की देख वडाई॥ ता की कीमत कहण न जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 614

पूर्ण गुरु आनंद स्वरूप होता है। उसमें द्वैत भाव नहीं है, उसके मिलने से जीव का उद्धार होता है:

जिस कउ रिदै विगास है भाउ दूजा नाही॥
नानक तिस गुर मिल उधरै हर गुण गावाही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

वह मानहीनों का मान है और गुनहगारों को क्षमा करनेवाला है:

होए निमाणी ढह पवा पूरे सतगुर पास॥
निमाणिआ गुर माण है गुर सतगुर करे साबास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

हुकम भइआ रहणा नही धुर फाटे चीरै॥
एह मन अवगण बाधिआ सहु देह सरीरै॥
पूरै गुर बखसाईअह सभ गुनह फकीरै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1012

उसकी दया-मेहर द्वारा जीवों का उद्धार होता है:

आप वीचारै सो परखे हीरा॥ एक द्रिसटि तारे गुर पूरा॥
गुर मानै मन ते मन धीरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

भाई नन्दलाल जी फ़रमाते हैं कि आत्मिक जीवन को देनेवाली गुरु की एक दृष्टि ही हमारे लिए काफ़ी है:

यक निगाहे-जांफ़िज़ाइश बस बुवद दरकारे-मा।

दीवाने-गोया, ग़ज़ल 2, पृ. 10

सतगुरु की रज़ा ही मालिक की रज़ा है और वही संसार में व्याप्त है:

जो बोले पूरा सतगुरू सो परमेसर सुणिआ॥
सोई वरतिआ जगत मह घट घट मुख भणिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 854

पूरे गुरु की पूर्ण कला शब्द है, जो हमेशा अटल है:

गुर पूरा पूरी ता की कला॥ गुर का सबद सदा सद अटला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1339-40

पूर्ण गुरु की प्राप्ति किस प्रकार हो सकती है?

पूर्ण गुरु की प्राप्ति मालिक की अपनी दया से ही हो सकती है, जिस पर वह कृपा करे उसको पूरा गुरु मिल जाता है:

जिस नो कीतो करम आप पिआरे तिस पूरा गुरू मिलाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 640

नानक हर होए दइआल तां गुर पूरा मेलावए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1422

पूरे गुरु की कामना तो सभी करते हैं, पर जिसके मस्तक पर धुर लेख हो, केवल उसी को पूरा सतगुरु मिलता है:

सो पाए पूरा सतगुरू जिस लिखिआ लिखत लिलारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 307

उसकी प्राप्ति के लिए हालात किस प्रकार तैयार होते हैं? जिसके अंतर में मालिक से मिलने की सच्ची तड़प हो, मालिक उसका पूर्ण गुरु से मिलाप करवा देता है:

अंतर प्रीत भगति साची होए॥ पूरै गुर मेलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

पूरे गुरु से मिलने की पहचान

पूरे गुरु के मिलने की अनेक निशानियाँ हैं। उसकी सबसे बड़ी निशानी यह है कि गुरु की रज़ा शिष्य की मरज़ी बन जाती है। गुरु मालिक में अभेद है इसलिए उसकी रज़ा मालिक की रज़ा है। इस तरह शिष्य गुरु की रज़ा को मालिक की रज़ा मानकर उस पर चलना शुरू कर देता है:

तेरा हुकम अपार है कोई अंत न पाए॥
जिस गुर पूरा भेटसी सो चलै रजाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 396

पूरे गुरु के मिलने से अनेक फल प्राप्त होते हैं, जिनका वर्णन आदि ग्रन्थ की गुरबाणी स्पष्ट रूप में करती है। संबंधित विवरण पाठकों के विचार के लिए आगे दिए जा रहे हैं।

ੴ

गुरबाणी

1. पूरे सतगुरु के क्या-क्या गुण हैं?

1.1. वह दयाल है और सबको समान दृष्टि से देखता है

सतगुरू सदा दइआल है भाई विण भागा किआ पाईऐ॥
एक नदर कर वेखै सभ ऊपर जेहा भाउ तेहा फल पाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 602

1.2. वह समदर्शी और निर्वैर है और उसके लिए स्तुति या निंदा समान है

वाह वाह सतगुर सत पुरख है जिस नो समत सभ कोए॥
वाह वाह सतगुर निरवैर है जिस निंदा उसतत तुल होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1421

सतगुर निरवैर पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुध देहा॥
नानक जिस धुर मसतक होवै लिखिआ तिस सतगुर नाल सनेहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 960–61

1.3. वह पूर्ण विकास प्राप्त कर चुका है और उसमें द्वैत भाव नहीं है

जिस कउ रिदै विगास है भाउ दूजा नाही॥
नानक तिस गुर मिल उधरै हर गुण गावाही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

1.4. वह निमानियों का मान है, वह गुनाहों को क्षमा करनेवाला है, वह अपनी एक दृष्टि के द्वारा तार देता है

होए निमाणी ढह पवा पूरे सतगुर पास॥
निमाणिआ गुर माण है गुर सतगुर करे साबास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 41

हुकम भइआ रहणा नही धुर फाटे चीरै॥
एह मन अवगण बाधिआ सहु देह सरीरै॥
पूरै गुर बखसाईअह सभ गुनह फकीरै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1012

सहजे ही सोझी पई सचै सबद अपार॥
आपे बखस मिलाइअन पूरे गुर करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 68

इक धुर बखस लए गुर पूरै सची बणत बणाई॥
हर रंग राते सदा रंग साचा दुख बिसरे पत पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1345

आप वीचारै सो परखे हीरा॥ एक द्रिसटि तारे गुर पूरा॥
गुर मानै मन ते मन धीरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 413

1.5. उसने पाँचों वैरियों और विकारों को वश में कर लिया है

सो सतगुर जे सच धिआइदा सच सचा सतगुर इके॥
सोई सतगुर पुरख है जिन पंजे दूत कीते वस छिके॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

1.6. ज्ञानदाता, भयभंजन और गुप्त व प्रकट दोनों का बोध देनेवाला है

गिआन अंजन भै भंजना देख निरंजन भाए॥
गुपत प्रगट सभ जाणीऐ जे मन राखै ठाए॥
ऐसा सतगुर जे मिलै ता सहजे लए मिलाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 57

1.7. वह 'एकांती' है, एक ही उसके अंदर बसता है, आशाओं में रहते हुए उनसे निर्लिप्त है, अगम-अगोचर को देखने और दिखानेवाला है

रहहे इकांत एको मन वसिआ आसा माहे निरासो॥
अगम अगोचर देख दिखाए नानक ता का दासो॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 938

1.8. उसने सत्पुरुष को जान लिया है और वह स्वयं सत्पुरुष का स्वरूप है

सत पुरख जिन जानिआ सतगुर तिस का नाउ॥
तिस कै संग सिख उधरै नानक हर गुन गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

वाह वाह सतगुर सत पुरख है जिस नो समत सभ कोए॥
वाह वाह सतगुर निरवैर है जिस निंदा उसतत तुल होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1421

सो सतगुर जे सच धिआइदा सच सचा सतगुर इके॥
सोई सतगुर पुरख है जिन पंजे दूत कीते वस छिके॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

1.9. वह नाम में रमा हुआ है

नाम रता सतगुरू है कलिजुग बोहिथ होए॥
गुरमुख होवै सो पार पवै जिना अंदर सचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 552

1.10. वह सच का साधक है और सच के साथ एक है

सो सतगुर जे सच धिआइदा सच सचा सतगुर इके॥
सोई सतगुर पुरख है जिन पंजे दूत कीते वस छिके॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 304

वाह वाह सतगुर पुरख है जिन सच जाता सोए॥
जित मिलिऐ तिख उतरै तन मन सीतल होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1421

1.11. पूरे सतगुरु का कथन परमेश्वर को भाता है और जगत में मान्य होता है

जो बोले पूरा सतगुरू सो परमेसर सुणिआ॥
सोई वरतिआ जगत मह घट घट मुख भणिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 854

1.12. वह वैद्य है जो रोग और उसकी दवा दोनों को जानता है, वह हौमैं रोग और अवगुणों को दूर करके ठीक करनेवाला है

नानक परखे आप कउ ता पारख जाण॥ रोग दारू दोवै बुझै ता वैद सुजाण॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 148

सतगुर निरवैर पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुध देहा॥
नानक जिस धुर मसतक होवै लिखिआ तिस सतगुर नाल सनेहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 960-61

हर नामो मंत्र द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोग॥
नानक सतगुर तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

1.13. पूरा गुरु इस घर (देह) में निजघर दिखलाता है; वह अनहद शब्द, पाँच शब्दों और उनके स्थानों का ज्ञान देता है

घर मह घर दिखाए दे सो सतगुर पुरख सुजाण॥
पंच सबद धुनिकार धुन तह बाजै सबद नीसाण॥
दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरान॥
तार घोर बाजिंत्र तह साच तखत सुलतान॥
सुखमन कै घर राग सुन सुंन मंडल लिव लाए॥
अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनह समाए॥
उलट कमल अंम्रित भरिआ इह मन कतहु न जाए॥
अजपा जाप न वीसरै आद जुगाद समाए॥
सभ सखीआ पंचे मिले गुरमुख निज घर वास॥
सबद खोज इह घर लहै नानक ता का दास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1291

पूरे गुर ते महल पाइआ पत परगट लोई॥
नानक अनहद धुनी दर वजदे मिलिआ हर सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248

1.14. सच यानी नाम की प्राप्ति कराता है

वाह वाह सतगुरू है जे सच द्रिड़ाए सोए॥
नानक सतगुर वाह वाह जिस ते नाम परापत होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1421

ऐसा सतगुर लोड़ लहो जिदू पाईऐ सच सोए॥
असुर संघारै सुख वसै जो तिस भावै सो होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

हर नामो मंत्र द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोग॥
नानक सतगुर तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

सबद बुझाए सतगुर पूरा॥ सरब कला साचे भरपूरा॥
अफरिओ वेपरवाह सदा तू ना तिस तिल न तमाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1021

पूरा सतगुर भगति द्रिड़ाए॥ गुर कै सबद हर नाम चित लाए॥
मन तन हर रविआ घट अंतर मन भीनै भगति सलाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1056

1.15. पूरे गुरु की पूर्ण कला शब्द है, जो अटल है

गुर पूरा पूरी ता की कला॥ गुर का सबद सदा सद अटला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1339-40

1.16. वह बिछुड़ी हुई रूहों को मालिक से मिलानेवाला है

जैसा सतगुर सुणीदा तैसो ही मै डीठ॥
विछुड़िआ मेले प्रभू हर दरगह का बसीठ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

मै मन तन खोज खोजेदिआ सो प्रभ लधा लोड़॥
विसट गुरू मै पाइआ जिन हर प्रभ दिता जोड़॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

1.17. दुनिया में रहते हुए जीव का अपनी पूर्ण युक्ति द्वारा उद्धार करता है

नानक सतगुर भेटिऐ पूरी होवै जुगत॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

1.18. परम पद की प्राप्ति कराता है

जिस मिलिऐ मन होए अनंद सो सतगुर कहीऐ॥
मन की दुबिधा बिनस जाए हर परम पद लहीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

1.19. उससे मिलने से मन को आनंद होता है और दुविधा का नाश होता है

जिस मिलिऐ मन होए अनंद सो सतगुर कहीऐ॥
मन की दुबिधा बिनस जाए हर परम पद लहीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

वाह वाह सतगुर पुरख है जिन सच जाता सोए॥
जित मिलिऐ तिख उतरै तन मन सीतल होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1421

1.20. पूरा गुरु अचरज है, उसका अंत और मूल्य नहीं आँका जा सकता

जीअ जंत प्रभ सगल उधारे दरसन देखणहारे॥
गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 618

गुर पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंत न पारावारा॥
कर गह काढ लीओ जन अपुना बिख सागर संसारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

— पूरे गुर की देख वडाई॥ ता की कीमत कहण न जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 614

2. पूरे गुरु के मिलने की निशानी क्या है? जीव उसका भाणा मानता है

तेरा हुकम अपार है कोई अंत न पाए॥ जिस गुर पूरा भेटसी सो चलै रजाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 396

3. पूरे गुरु की प्राप्ति किस प्रकार होती है?

3.1. मालिक की दया से

जिस नो कीतो करम आप पिआरे तिस पूरा गुरू मिलाइआ॥
सो आराधे सास सास पिआरे राम नाम लिव लाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 640

गुर पूरे की दात नित देवै चड़ै सवाईआ॥
तुस देवै आप दइआल न छपै छपाईआ॥...
नानक अपड़ कोए न सकई पूरे सतगुर की वडिआईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1250

हउ जीउ करी तिस विटउ चउ खंनीऐ जो मै पिरी दिखावए॥
नानक हर होए दइआल तां गुर पूरा मेलावए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1422

आपे बखसे मेल मिलाए॥ पूरे गुर ते नाम निध पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 116

पूरा सतगुर तां मिलै जां नदर करेई॥
किलविख पाप सभ कटीअह फिर दुख बिघन न होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424-25

हर जीउ आपे बखस मिलाए॥
गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतगुर लए रलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

कुरबाण जाई उस वेला सुहावी जित तुमरै दुआरै आइआ॥
नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतगुर पूरा पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

हर एक चितवै प्रभ एक गावै हर एक द्रिसटी आइआ॥
बिनवंत नानक प्रभ करी किरपा पूरा सतगुर पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925-26

सभ इछ पुंनी आस पूरी मिले सतगुर पूरिआ॥
बिनवंत नानक प्रभ आप मेले फिर नाही दूख विसूरिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 926

गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै दे दिखाई॥ नानक नदरी करम होए गुर मिलीऐ भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

जब प्रिअ आए बसे ग्रिह आसन तब हम मंगल गाइआ॥
मीत साजन मेरे भए सुहेले प्रभ पूरा गुरू मिलाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1267

तिसह परापत जिस प्रभ दे॥ पूरे गुर की पाए सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1148

वडभागी हर संत मिलाइआ॥ गुर पूरै हर रस मुख पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 95

भरम गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा॥
नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतगुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 748

कर गह लीने सरबस दीने आपह आप मिलाइआ॥
कहो नानक सरब थोक पूरन पूरा सतगुर पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

३.२. धुर से मस्तक के लेख द्वारा

सो पाए पूरा सतगुरू जिस लिखिआ लिखत लिलारे॥
जन नानक मागै धूड़ तिन जो गुरसिख मित पिआरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 307-08

सरब निधान नाम हर हर कै जिस करम लिखिआ तिन पावा॥
जन नानक कउ गुर पूरा भेटिओ सुख सहजे अनद बिहावा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212

संत सभा ओट गुर पूरे धुर मसतक लेख लिखाए॥
जन नानक कंत रंगीला पाइआ फिर दूख न लागै आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1266

३.३. बड़े भाग्य द्वारा

गुर पूरा पाईऐ वड भाग॥ काम क्रोध लोभ मन ते तिआग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1271

मन रे सतगुर सेव समाए॥ वडै भाग गुर पूरा पाइआ हर हर नाम धिआए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

हर हर नाम जपहो मन मीत॥
गुर पूरा पाईऐ वडभागी निरमल पूरन रीत॥

गुरु अर्जुन देव, पृ. 1339

पारब्रहम प्रभ सुघड़ सुजाण॥
गुर पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

जै जै कार जास जग अंदर मंदर भाग जुगत सिव रहता॥
गुर पूरा पायउ बड भागी लिव लागी मेदन भर सहता॥

भट्ट कल्य, आदि ग्रन्थ, पृ. 1407

हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीए परद्रोही ठग माइआ राम॥
वडभागी गुर पाइआ मेरी जिंदुड़ीए गुर पूरै गति मित पाइआ राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 539

जिस भेटे पूरा सतगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हर धन निध पाए राम॥
वडभागी संगत मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हर गुण गाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 541

गुर पूरा भेटिओ वडभागी मनह भइआ परगासा॥
कोए न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 609

गुर पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंत न पारावारा॥
कर गह काढ लीओ जन अपुना बिख सागर संसारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

वडै भाग गुर पूरा पाईऐ अनदिन नाम धिआए॥
सहजे सहज मिलिआ जगजीवन नानक सुंन समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 774

वडभागी गुर पूरा पाईऐ॥ गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 563

गुर पूरा वडभागी पाईऐ॥ मिल साधू हर नाम धिआईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 804

नाम निधान पाइआ वडभागी नानक नरक न जाई॥
घाल सिआणप उकत न मेरी पूरै गुरू कमाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

पूरै भाग गुर पूरा पाइआ॥ अंतर नाम निधान दिखाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 798

3.4. सच्ची प्रीति और भक्ति द्वारा

अंतर प्रीत भगति साची होए॥ पूरै गुर मेलावा होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

4. पूरे गुरु की दी हुई प्रतिष्ठा घटती नहीं

अंतर हर गुरू धिआइदा वडी वडिआई॥
तुस दिती पूरै सतगुरू घटै नाही इक तिल किसै दी घटाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 307

5. पूरे सतगुरु का ध्यान करनेवाले की धूलि मस्तक पर लगानी चाहिए

तिन की रेण मिलै तां मसतक लाई जिन सतगुर पूरा धिआइआ॥
नानक तिन की रेण पूरै भाग पाईऐ जिनी राम नाम चित लाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1131

6. जिसके मस्तक पर पूरा गुरु हाथ रखे उसको खंड-ब्रह्मांड नमस्कार करते हैं

तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकार करह जिस कै मसतक हथ धरिआ
गुर पूरै सो पूरा होई॥
गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ को न सकोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

7. पूरे गुरु की प्राप्ति के फल

7.1. मनुष्य मालिक के गुण गाता है

साधसंग हर के गुण गाइआ॥ नानक सतगुर पूरा पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

चरन कमल हिरदै नित धारी॥ गुर पूरा खिन खिन नमसकारी॥
तन मन अरप धरी सभ आगै जग मह नाम सुहावणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1085

संत जना मिल मंगल गाइआ दिन रैन आस तुम्हारी॥
सफल दरस भेटिआ गुर पूरा नानक सद बलिहारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 778

7.2. मन वश में आता है

मणी मिटाए जीवत मरै गुर पूरे उपदेस॥
मनूआ जीतै हर मिलै तिह सूरतण वेस॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 256

आवण जाण नही मन निहचल पूरे गुर की ओट गही॥
नानक राम नाम जप गुरमुख धन सोहागण सच सही॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1254

जा कउ हर रंग लागो इस जुग मह सो कहीअत है सूरा॥
आतम जिणै सगल वस ता कै जा का सतगुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679-80

7.3. सब जंजाल और झगड़े मिट जाते हैं

सचा साहिब मन वुठा होआ खसम दइआल॥
पूरा सतगुर भेटिआ बिनसिआ सभ जंजाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

हउ हउ कर मरणा किआ पावै॥ पूरा गुर भेटे सो झगर चुकावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 226

झगड़ चुकावै हर गुण गावै॥ पूरा सतगुर सहज समावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1344

7.4. विकारों का नाश और सच की प्राप्ति

रहत रहत रह जाहे बिकारा॥ गुर पूरे कै सबद अपारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 259

जिना मिलिआ प्रभ आपणा नानक तिन कुरबान॥
माघ सुचे से कांढीअह जिन पूरा गुर मिहरवान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 136

7.5. हौमैं का नाश

धन पिर का इक ही संग वासा विच हउमै भीत करारी॥
गुर पूरै हउमै भीत तोरी जन नानक मिले बनवारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

गुर पूरै हउमै मल धोई॥ कहो नानक मेरी परम गति होई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 736

गुर पूरे पूरी मत है अहिनिस नाम धिआए॥
हउमै मेरा वड रोग है विचहो ठाक रहाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 756

हउमै जलते जल मुए भ्रम आए दूजै भाए॥
पूरै सतगुर राख लीए आपणै पंनै पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 643

चउथी पदवी गुरमुख वरतह तिन निज घर वासा पाइआ॥
पूरै सतगुर किरपा कीनी विचहो आप गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

7.6. काम, क्रोध, लोभ आदि का नाश

गुर पूरा पाईऐ वड भाग॥ काम क्रोध लोभ मन ते तिआग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1271

काम करोध नगर मह सबला नित उठ उठ जूझ करीजै॥
अंगीकार करहो रख लेवहो गुर पूरा काढ कढीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1325

गुर कै सबद मरह पंच धातू॥ भै पारब्रहम होवह निरमला तू॥
पारस जब भेटै गुर पूरा ता पारस परस दिखाइणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1078

गुर पूरे की पउ सरणाई॥ मोह सोग सभ भरम मिटाई॥
एको मंत्र द्रिड़ाए अउखध सच नाम रिद गाइणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077-78

7.7. पापों का नाश

पूरा सतगुर तां मिलै जां नदर करेई॥
किलविख पाप सभ कटीअह फिर दुख बिघन न होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424-25

हर पड़ीऐ हर बुझीऐ गुरमती नाम उधारा॥
गुर पूरै पूरी मत है पूरै सबद बीचारा॥
अठसठ तीरथ हर नाम है किलविख काटणहारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

7.8. ताप का नाश

हर जन सिमरिआ नाम अधार॥
ताप उतारिआ सतगुर पूरै अपणी किरपा धार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 620

सतगुर पूरै ताप गवाइआ अपणी किरपा धारी॥
पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुख मिटिआ सभ परवारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 620

7.9. भ्रमों और रोगों का नाश

कपट खुलाने भ्रम नाठे दूरे॥ नानक कउ गुर भेटे पूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 890

पारब्रहम दइआल सागर तारिआ॥
गुर पूरै मिहरवान भरम भउ मारिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 854

हउमै जलते जल मुए भ्रम आए दूजै भाए॥
पूरै सतगुर राख लीए आपणै पंनै पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 643

संत सजन सुख माणह रलीआ दूख दरद भ्रम नासी॥
सबद सवारे सतगुर पूरै नानक सद बल जासी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 783

गुर पूरे की पउ सरणाई॥ मोह सोग सभ भरम मिटाई॥
एको मंत्र द्रिड़ाए अउखध सच नाम रिद गाइणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077-78

पूरै गुर मेटिओ भरम अंधेरा॥ भज प्रेम भगति प्रभ नेरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 615

भरम गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा॥
नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतगुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 748

गुर पूरा मेरा गुर पूरा॥
राम नाम जप सदा सुहेले सगल बिनासे रोग कूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 901

बखसिआ पारब्रहम परमेसर सगले रोग बिदारे॥
गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 620

7.10. तृष्णा, भूख और माया का नाश

गुहज गल जीअ की कीचै सतगुरू पास ता सरब सुख पाईऐ॥
गुर पूरा हर उपदेस दे सभ भुख लह जाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 850

गुर मिलिऐ सभ त्रिसन बुझाई॥ गुर मिलिऐ नह जोहै माई॥
सत संतोख दीआ गुर पूरै नाम अंम्रित पी पानां हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

त्रिसना बूझी अंतर ठंढा॥ गुर पूरै लै तूटा गंढा॥
सुरत सबद रिद अंतर जागी॥ अमिउ झोल झोल पीजा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

प्रभ सिउ मन लीना जिउ जल मीना चात्रिक जिवै तिसंतीआ॥
जन नानक गुर पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 703

7.11. (मालिक से) टूटे हुओं को (उससे) जोड़ता है

त्रिसना बूझी अंतर ठंढा॥ गुर पूरै लै तूटा गंढा॥
सुरत सबद रिद अंतर जागी अमिउ झोल झोल पीजा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

7.12. जन्म व्यर्थ नहीं जाता

मेरे मन गुर सबदी सुख होए॥
गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाए न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

यया जनम न हारीऐ गुर पूरे की टेक॥
नानक तिह सुख पाइआ जा कै हीअरै एक॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 253

7.13. परिश्रम पूर्ण होता है

गुर पूरे जब भए दइआल॥ दुख बिनसे पूरन भई घाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.743

7.14. सब कार्य पूर्ण होते हैं

सतगुर पूरै सेविऐ दूखा का होए नास॥
नानक नाम अराधिऐ कारज आवै रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.320

बखसिआ पारब्रहम परमेसर सगले रोग बिदारे॥
गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.620

सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा॥
कारज सगले सिध भए भेटिआ गुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.399

7.15. मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं

नित नित सेव करी हर जन की जो हर हर कथा सुणाए॥
धन धंन गुरू गुर सतगुर पूरा नानक मन आस पुजाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.561-62

जिचर दूजा भरम सा अंमाली तिचर मै जाणिआ प्रभ दूरे॥
जा मिलिआ पूरा सतगुरू अंमाली ता आसा मनसा सभ पूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.564

जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा॥
कहो नानक गुर पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.619

गुन गोबिंद नित गाईऐ॥ साधसंग मिल धिआईऐ॥
मन बांछत फल पाए॥ गुर पूरा रिदै धिआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.624

सभ इछ पुंनी आस पूरी मिले सतगुर पूरिआ॥
बिनवंत नानक प्रभ आप मेले फिर नाही दूख विसूरिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 926

गुर पूरे की करउ नित सेवा गुर अपना नमसकारिआ॥
सरब फला दीन्हे गुर पूरै नानक गुर निसतारिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1218

7.16. उत्तम मति होती है

पूरै गुर समझाइआ मत ऊतम होई॥
अंतर सीतल सांत होए नामे सुख होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 424

बाबा मै कुचील काचउ मतिहीन॥
नाम बिना को कछु नही गुर पूरै पूरी मत कीन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1010

7.17. अंदर प्रकाश और ज्ञान हो जाता है

ऐसी जानी संत जनी॥ परगास भइआ पूरे गुर बचनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 888

अब मोहे राम जसो मन गाइओ॥
भइओ प्रगास सदा सुख मन मह सतगुर पूरा पाइओ॥

गुरु अजुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 671

महा मुगध ते कीआ गिआनी॥ गुर पूरे की अकथ कहानी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1338

नाम बिहूणी दुख जलै सबाई॥ सतगुर पूरै बूझ बुझाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 362

ता का अंत न जाणै कोई॥ पूरे गुर ते सोझी होई॥
नानक साच रते बिसमादी बिसम भए गुण गाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1036

घर दर मंदर जाणै सोई॥ जिस पूरे गुर ते सोझी होई॥
काइआ गड़ महल महली प्रभ साचा सच साचा तखत रचाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

जह देखा तू सभनी थाई॥ पूरै गुर सभ सोझी पाई॥
नामो नाम धिआईऐ सदा सद इह मन नामे राता हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1052

पूरै सतगुर सोझी पाई॥ एको नाम मंन वसाई॥
नाम जपी तै नाम धिआई महल पाए गुण गाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1054

7.18. विचार-शक्ति की प्राप्ति

सतगुर पूरा जे मिलै पाईऐ रतन बीचार॥
मन दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

7.19. प्रेम की प्राप्ति

सचा प्रेम पिआर गुर पूरे ते पाईऐ॥
कबहू न होवै भंग नानक हर गुण गाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1422

सतगुर पूरा जे मिलै पाईऐ रतन बीचार॥
मन दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआर॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

7.20. सच्ची भक्ति और विश्वास का लाभ

जिस भेटे पूरा सतगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हर धन निध पाए राम॥
वडभागी संगत मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हर गुण गाए राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 541

हर के नाम की वडिआई॥ आठ पहर गुण गाई॥ गुर पूरे ते पाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 626

अब मेरो ठाकुर सिउ मन लीना॥
प्रान दान गुर पूरै दीआ उरझाइओ जिउ जल मीना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1210

मन मेरे सगल उपाव तिआग॥
गुर पूरा आराध नित इकस की लिव लाग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 45

बिन गुर पूरे भगति न होए॥ मनमुख रुंने अपनी पत खोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 363

पूरा गुर पूरी बणत बणाई॥ नानक भगत मिली वडिआई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 377

हम मूरख मुगध सरणागती मिल गोविंद रंगा राम राजे॥
गुर पूरै हर पाइआ हर भगति इक मंगा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 449

गुर पूरै संतोखिआ भाई अहिनिस लागा भाउ॥
रसना राम रवै सदा भाई साचा साद सुआउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 640

प्रभ सिउ मन लीना जिउ जल मीना चात्रिक जिवै तिसंतीआ॥
जन नानक गुर पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 703

हर हर भजन पूरे गुर संग॥ जप तरीऐ नानक नाम हर रंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 298

कुरबाण जाई गुर पूरे अपने॥ जिस प्रसाद हर हर जप जपने॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

मन माहे जाप भगवंत॥ गुर पूरै इह दीनो मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 896

ऐसा पूरा गुरदेउ सहाई॥ जा का सिमरन बिरथा न जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 900

पूरै सतगुर दीआ बिसास॥ नानक होए दासन दास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.888

7.21. सच की प्राप्ति

गुर पूरै सच समाइआ॥ गुर आद पुरख हर पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.879

पूरे गुर की पूरी दीखिआ॥ जिस मन बसै तिस साच परीखिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.293

तुस दिता पूरै सतगुरू हर धन सच अखुट॥
सभ अंदेसे मिट गए जम का भउ छुट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.315

अगम अगोचर साहिबो दूसर लवै न लावै॥
सच पूरै गुर उपदेसिआ नानक सुणावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1193

सच खाणा सच पैनणा सच नाम अधार॥
गुर पूरै मेलाइआ प्रभ देवणहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1251

सभो वरतै सच सचै सबद निहालिआ॥
नानक नाम निधान है पूरै गुर देखालिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1284

जिनी सच वणंजिआ गुर पूरे साबास॥
नानक वसत पछाणसी सच सउदा जिस पास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.18

साचा साहिब गुरमुख जापै॥ पूरे गुर कै सबद सिञापै॥
जिन पीआ सेई त्रिपतासे सचे सच अघावणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.130

पूरे गुर ते नाम पाइआ जाए॥ सचै सबद सच समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.560

सोई सच अराधणा भाई जिस ते सभ किछु होए॥
गुर पूरै जाणाइआ भाई तिस बिन अवर न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 608

वाह वाह पूरे गुर की बाणी॥ पूरे गुर ते उपजी साच समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

अमर अडोल अमोल अपारा गुर पूरै सच पाईऐ॥
नानक आपे जोग सजोगी नदर करे लिव लाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 765

हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई॥
पूरे गुर ते साच कमावै गति मित सबदे पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 940

पूरे गुर ते नाम पाइआ जाए॥ जोग जुगत सच रहै समाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 941

जिस मिलिआ पूरा गुरू सो सरपर तारणो॥
जिस नो लाए सच तिस सच सम्हालणो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 963

सचा सउदा विरला को पाए॥ पूरा सतगुर मिलै मिलाए॥
गुरमुख होए सो हुकम पछाणै मानै हुकम समाइदा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1036-37

हर नाम चेता अवर न पूजा॥ एको सेवी अवर न दूजा॥
पूरै गुर सभ सच दिखाइआ सचै नाम निवासी हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1048

सतगुर पूरा साच द्रिड़ाए॥ सचै सबद सदा गुण गाए॥
गुणदाता वरतै सभ अंतर सिर सिर लिखदा साहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1055

गुर पूरे की पउ सरणाई॥ मोह सोग सभ भरम मिटाई॥
एको मंत्र द्रिड़ाए अउखध सच नाम रिद गाइणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077-78

सालाही सच सलाह सच सच कीमत किनै न पाईआ॥
जा मिलिआ पूरा सतगुरू ता हाजर नदरी आईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

मन तन सच सलाहे साचे मन भाइआ॥
लाल रता मन मानिआ गुर पूरा पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 751-52

7.22. अमृत की प्राप्ति

अंम्रित रस सच अंम्रित बोली गुर पूरै अंम्रित लीचै जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 96

7.23. हरि रस की प्राप्ति

वडभागी हर संत मिलाइआ॥ गुर पूरै हर रस मुख पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 95

7.24. नाम की प्राप्ति

अवर न कोए हर अंम्रित सोए जिन पीआ सो बिधि जाणै॥
धन धंन गुरू पूरा प्रभ पाइआ लग संगत नाम पछाणै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

पारब्रहम प्रभ द्रिसटी आइआ पूरन अगम बिसमाद॥
नानक राम नाम धन कीता पूरे गुर परसाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320-21

राम नाम जन भालहे सोए॥ पूरे गुर ते प्रापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1129

रोम रोम रविआ हर नाम॥ सतगुर पूरै कीनो दान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1144

गुर पूरै द्रिड़िओ हर नाम॥ सभ ते ऊतम हर हर काम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1145

प्रभ की आगिआ मान सुख पाइआ॥ गुर पूरै हर नाम द्रिड़ाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1147

बिन नामै मुकत किनै न पाई॥ पूरे गुर ते नाम पलै पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1175

कल मह राम नाम वडिआई॥ गुर पूरे ते पाइआ जाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1175–76

गुर पूरै सभ पूरा कीआ॥ अंम्रित नाम रिद मह दीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1184

अंम्रित नाम मनह आधारो॥ जिन दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1215

अपुने गुर पूरे बलिहारै॥ प्रगट प्रताप कीओ नाम को राखे राखनहारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1218

नाए मंनिऐ सालाहीऐ पापां मत धोई॥
नानक पूरे गुर ते नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

गुर पूरे की चाकरी थिर कंध सबाइआ॥
नानक बखस मिलाइअन हर नाम समाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1250

सदा सदा मन नाम सम्हाल॥
गुर पूरे की सेवा पाइआ ऐथै ओथै निबहै नाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1271

मन मेरे गुर पूरा सालाहे॥
नाम निधान जपहो दिन राती मन चिंदे फल पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1271

मन रे सतगुर सेव समाए॥
वडै भाग गुर पूरा पाइआ हर हर नाम धिआए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1276

जो तू करह सो होवै करते अवर न करणा जाई॥
नानक नावै जेवड अवर न दाता पूरे गुर ते पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

मेरे मन भज राम नाम हर निमखफा॥
हर हर दान दीओ गुर पूरै हर नामा मन तन बसफा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1336

गुर सतगुर नाम द्रिड़ाइओ हर हर हम मुए जीवे हर जपिभा॥
धन धंन गुरू गुर सतगुर पूरा बिख डुबदे बाह दे कढिभा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1337

गुर पूरै अपुने कर राखे॥ हर नाम जपत किलबिख सभ लाथे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

सतगुर पूरै नाम दीआ॥
अनद मंगल कलिआण सदा सुख कारज सगला रास थीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

गुर पूरै हर नाम दिड़ाइआ जिन विचहो भरम चुकाइआ॥
राम नाम हर कीरत गाए कर चानण मग देखाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

हर नाम सलाहन सदा सदा वखर हर नाम अधार॥
गुर पूरै हर नाम द्रिड़ाइआ हर भगता अतुट भंडार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

नाम अमोलक रतन है पूरे सतगुर पास॥
सतगुर सेवै लगिआ कढ रतन देवै परगास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

मन हर हर लगा चाउ॥
गुर पूरै नाम द्रिड़ाइआ हर मिलिआ हर प्रभ नाउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

आपे बखसे मेल मिलाए॥ पूरे गुर ते नाम निध पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 116

मेरा प्रभ अंतर बैठा वेखै॥ गुर परसादी मिलै सोई जन लेखै॥
नानक नाम मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 123

अवर बिसारी बिसारी॥ नाम दान गुर पूरै दीओ मै एहो आधारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 401

हर का नाम निधान है पूरै गुर दीआ॥
नानक नाम न वीसरै मथ अंम्रित पीआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 419

तूं बेअंत दइआल है तेरी सरणाई॥ गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 427

जन नानक गुर पूरा पाइआ मन हिरदै नाम लखाए जीउ॥
कलजुग हर कीआ पग त्रै खिसकीआ पग चउथा टिकै टिकाए जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 446

अवर सभ मिथिआ लोभ लबी॥
गुर पूरै दीओ हर नामा जीअ कउ एहा वसत फबी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 497

हर के नाम की वडिआई॥ आठ पहर गुण गाई॥ गुर पूरे ते पाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 626

सतगुर पूरे भाणा॥ ता जपिआ नाम रमाणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

गुर पूरे ते पावै॥ जन नानक नाम धिआवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 629

जिन भेटै पूरा सतगुरू पिआरे से लागे साचै नाए॥
तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 640–41

सेई पुरख हर सेवदे जिन धुर मसतक लेख लिखाही॥
हर के गुण नित गावदे हर गुण गाए गुणी समझाही॥
वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हर नाम समाही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 649

मेरे मन भज राम नाम सभ अरथा॥
गुर पूरै हर नाम द्रिड़ाइआ बिन नावै जीवन बिरथा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 696

मै हर हर नाम विसाह॥ गुर पूरे ते पाइआ अंम्रित अगम अथाह॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

जो सच राते तिन बहुड़ न फेरा॥ नानक नाम द्रिड़ाए पूरा गुर मेरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 798

पूरे गुर ते वडिआई पाई॥ अचिंत नाम वसिआ मन आई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 798

से धनवंत हर नाम लिव लाए॥
गुर पूरै हर धन परगासिआ हर किरपा ते वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 663

आनंद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ॥
बिनवंत नानक नाम प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

नाम खजाना गुर ते पाइआ त्रिपत रहे आघाई॥
संतहो गुरमुख मुकत गति पाई॥
एक नाम वसिआ घट अंतर पूरे की वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 911–12

मन पिआरिआ मित्रा मै हर हर नाम धन रास॥
गुर पूरै नाम द्रिड़ाइआ हर धीरक हर साबास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 996

हर हर कथा सुणाए प्रभ गुरमत हर रिदै समाणी॥
जप हर हर कथा वडभागीआ हर उतम पद निरबाणी॥
गुरमुखा मन परतीत है गुर पूरै नाम समाणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 996-97

पूरै सतगुर सोझी पाई॥ एको नाम मंन वसाई॥
नाम जपी तै नाम धिआई महल पाए गुण गाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1054

जिस नामै कउ तरसह बहु देवा॥ सगल भगत जा की करदे सेवा॥
अनाथा नाथ दीन दुख भंजन सो गुर पूरे ते पाइणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1078

देखै सुणे न जाणई माइआ मोहिआ अंध जीउ॥
काची देहा विणसणी कूड़ कमावै धंध जीउ॥
नाम धिआवह से जिण चले गुर पूरे सनबंध जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 760

गुर पूरा वडभागी पाईऐ॥ मिल साधू हर नाम धिआईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 804

पूरै भाग गुर पूरा पाइआ॥ अंतर नाम निधान दिखाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 798

जिस नो कीतो करम आप पिआरे तिस पूरा गुरू मिलाइआ॥
सो आराधे सास सास पिआरे राम नाम लिव लाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 640

7.25. शब्द की प्राप्ति

एको सबद सचा नीसाणु॥ पूरे गुर ते जाणै जाणु॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1188

पूरा सतगुर सेव पूरा पाइआ॥ पूरै करम धिआए पूरा सबद मंन वसाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1286

एका जोत जोत है सरीरा॥ सबद दिखाए सतगुर पूरा॥
आपे फरक कीतोन घट अंतर आपे बणत बणावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 125

हर का नाम किनै विरलै जाता॥ पूरे गुर कै सबद पछाता॥
अनदिन भगति करे दिन राती सहजे ही सुख पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 127

रतन पदारथ घर ते पाइआ॥ पूरै सतगुर सबद सुणाइआ॥
गुर परसाद मिटिआ अंधिआरा घट चानण आप पछानणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 129

अगम अगोचर मित नही पाई॥ अपणी क्रिपा करह तूं लैह मिलाई॥
पूरे गुर कै सबद धिआईऐ सबद सेव सुख पावणिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 130

गुर पूरे ते पूरा पाए॥ हिरदै सबद सच नाम वसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 363

जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार॥
सतगुर पूरा भेटीऐ भाई सबद मिलावणहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 639

मन की परतीत मन ते पाई॥ पूरे गुर ते सबद बुझाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 798

सबद बुझाऐ सतगुर पूरा॥ सरब कला साचे भरपूरा॥
अफरिओ वेपरवाह सदा तू ना तिस तिल न तमाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1021

जिस कउ नदर करे गुर पूरा॥ सबद मिलाए गुरमत सूरा॥
नानक गुर के चरन सरेवहो जिन भूला मारग पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1043

त्रिसना बूझी अंतर ठंढा॥ गुर पूरै लै तूटा गंढा॥
सुरत सबद रिद अंतर जागी अमिउ झोल झोल पीजा हे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

सचा सबद साचा है निरमल ना मल लगै न लाए॥
सची सिफत सची सालाह पूरे गुर ते पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

संत सजन सुख माणह रलीआ दूख दरद भ्रम नासी॥
सबद सवारे सतगुर पूरै नानक सद बल जासी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 783

पूरा सतगुर जे मिलै पाईऐ सबद निधान॥
कर किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नाम॥
जनम मरण दुख काटीऐ लागै सहज धिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

7.26. वाणी की प्राप्ति, जो सुषुम्ना में समा रही है

प्रभ की अकथ कहाणी॥ जन बोलह अंम्रित बाणी॥
नानक दास वखाणी॥ गुर पूरे ते जाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 626

विण गुर पूरे कोए न जाणी॥ माइआ मोह दूजै लोभाणी॥
गुरमुख नाम मिलै हर बाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 423

पूरे गुर की साची बाणी॥ सुख मन अंतर सहज समाणी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 663

7.27. अखंड (अनहद) कीर्तन की प्राप्ति

अखंड कीरतन तिन भोजन चूरा॥ कहो नानक जिस सतगुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 236

अनहद सबद अचरज बिसमाद॥ गुर पूरा पूरा परसाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

ताप गवाइआ गुर पूरे॥ वाजे अनहद तूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰626

सतगुर पूरै कीनी दात॥ हर हर नाम दीओ कीरतन कउ भई हमारी गात॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰681

संतसंग मिल कीरतन गाइआ निहचल वसिआ जाई॥
पूरै गुर पूरी मत दीनी हर बिन आन न भाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰915

7.28. भाणा मानने का सामर्थ्य प्राप्त होता है

आपणे भाणे विच सदा रख सुआमी हर नामो देह वडिआई॥
पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिन सहज समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰1333

तेरा हुकम अपार है कोई अंत न पाए॥
जिस गुर पूरा भेटसी सो चलै रजाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰396

सत संतोखी सतगुर पूरा॥ गुर का सबद मने सो सूरा॥
साची दरगह साच निवासा मानै हुकम रजाई हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰1023

7.29. शिष्य पूर्ण हो जाता है

पारब्रहम प्रभ एक है दूजा नाही कोए॥
जीउ पिंड सभ तिस का जो तिस भावै सो होए॥
गुर पूरै पूरा भइआ जप नानक सचा सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰45

गुर पूरै सभ पूरा कीआ॥ अंम्रित नाम रिद मह दीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰1184

गुर पूरै कीती पूरी॥ प्रभ रव रहिआ भरपूरी॥
खेम कुसल भइआ इसनाना॥ पारब्रहम विटहो कुरबाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰624

7.30. सब दुश्मन दूर हो जाते हैं

निवरे दूत दुसट बैराई गुर पूरे का जपिआ जाप॥
कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परताप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.823-24

7.31. रोग, शोक और दु:खों का नाश

सतगुर पूरै सेविऐ दूखा का होए नास॥
नानक नाम अराधिऐ कारज आवै रास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.320

जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा॥
कहो नानक गुर पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.619

सभ इछ पुंनी आस पूरी मिले सतगुर पूरिआ॥
बिनवंत नानक प्रभ आप मेले फिर नाही दूख विसूरिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.926

गुर पूरा पाइआ सभ दुख मिटाइआ जीउ॥ आठ पहर गुण गाइआ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.217

गुर पूरै संजम कर दीआ॥ नानक तउ फिर दूख न थीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.259

गुर पूरा पाइओ मेरे भाई॥ रोग सोग सभ दूख बिनासे सतगुर की सरणाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.395

दइआ धारी समरथ चुके बिल बिलाप॥
नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रताप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.521

पूरै गुर पहिराइआ॥ बिनसे दुख सबाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.629

गुर पूरै तुस दीआ॥ फिर नानक दुख न थीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.629

7.32. सुख, आनंद, शांति और सहज की प्राप्ति

सांत सहज ग्रिह सद बसंत॥
गुर पूरे की सरणी आए कलिआण रूप जप हर हर मंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1184

जउ लउ हउ किछ सोचउ चितवउ तउ लउ दुखन भरे॥
जउ क्रिपाल गुर पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 214

अवगुण काट गुण रिदै समाए॥ पूरे गुर कै सहज सुभाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 663

सूख सहज कलिआण रस पूरै गुर कीन्ह॥
जीअ सगल दइआल भए हर हर नाम चीन्ह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 818

सूख सहज अर घनो अनंदा गुर ते पाइओ नाम हरी॥
ऐसो हर रस बरन न साकउ गुर पूरै मेरी उलट धरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 822-23

मन रे नाम जपहो सुख होए॥ गुर पूरा सालाहीऐ सहज मिलै प्रभ सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

आनंद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ॥
बिनवंत नानक नाम प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 925

सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा॥
कारज सगले सिध भए भेटिआ गुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 399

सांत पाई गुर सतगुर पूरे॥ सुख उपजे बाजे अनहद तूरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 806

आवत हरख न जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी॥
सदा अनंद गुर पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 883

गुर पूरा जिस भेटिआ ता कै सुख परवेस॥
मन की मत तिआगीऐ सुणीऐ उपदेस॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 814

गुर पूरा आराधिआ बिनसी मेरी पीर॥
तन मन सभ सीतल भइआ पाइआ सुख बीर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 814

हर की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नाम॥
गुर पूरे ते पाइआ नानक सुख बिस्राम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

7.33. निर्मलता की प्राप्ति

प्रभ काट मैल निरमल करे॥ गुर पूरे की सरणी परे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

धंधै धावत मन भइआ मनूरा॥ फिर होवै कंचन भेटै गुर पूरा॥
आपे बखस लए सुख पाए पूरै सबद मिलाई हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1047

हर हर नाम जपहो मन मीत॥ गुर पूरा पाईऐ वडभागी निरमल पूरन रीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1339

चरन कमल सिउ लागी प्रीत॥ गुर पूरे की निरमल रीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 893

7.34. आत्मिक जीवन-दान की प्राप्ति

जीअ दान गुर पूरै दीआ राम नाम चित लाए॥
आप क्रिपाल क्रिपा कर देवै नानक गुर सरणाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

अब मेरो ठाकुर सिउ मन लीना॥
प्रान दान गुर पूरै दीआ उरझाइओ जिउ जल मीना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1210

7.35. सब भय दूर हो जाते हैं

मन तन अंतर प्रभू धिआइआ॥ गुर पूरे डर सगल चुकाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1152

7.36. यम-किंकर दूर हो जाते हैं

गुर पूरा आराध बिखम दल फोड़ीऐ॥
हउ तिस अगै दिन रात रहा कर जोड़ीऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

गुर पूरा आराधिआ होए किरपाल॥
मारग संत बताइआ तूटे जम जाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 819

तुस दिता पूरै सतगुरू हर धन सच अखुट॥
सभ अंदेसे मिट गए जम का भउ छुट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 315

वाह वाह गुरसिख नित सभ करहो गुर पूरे वाह वाह भावै॥
नानक वाह वाह जो मन चित करे तिस जमकंकर नेड़ न आवै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 515

7.37. नरकों का दु:ख मिट जाता है

नानक नाम नाम जप जपिआ अंतर बाहर रंग॥
गुर पूरै उपदेसिआ नरक नाहे साधसंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 257

नाम निधान पाइआ वडभागी नानक नरक न जाई॥
घाल सिआणप उकत न मेरी पूरै गुरू कमाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

7.38. जन्म-मरण मिट जाता है

जनम मरण की चूकी काण॥ पूरे गुर ऊपर कुरबाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 899

जंमण मरणा ठाक रहाए॥ पूरे गुर ते इह मत पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 222

चरन कमल हिरदै वसह संकट सभ खोवै॥
गुर पूरा जिस भेटीऐ मर जनम न रोवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 322

मनसा मनह समाए लै गुर सबदी वीचार॥
गुर पूरे ते सोझी पवै फिर मरै न वारो वार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

घर घर निरत होवै दिन राती घट घट वाजै तूरा॥
एक नचावह एक भवावह इक आए जाए होए धूरा॥
कहो नानक सो बहुर न नाचै जिस गुर भेटै पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 884–85

7.39. जीव भवसागर से पार हो जाता है

सगल संसार इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ जिस गुर पूरा॥
कहो नानक भव सागर तरिओ भए पुनीत सरीरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 403

एह भउजल जगत संसार है गुर बोहिथ नाम तराए॥
गुरसिखी भाणा मंनिआ गुर पूरा पार लंघाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

गुर पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंत न पारावारा॥
कर गह काढ लीओ जन अपुना बिख सागर संसारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

गुर सतगुर नाम द्रिड़ाइओ हर हर हम मुए जीवे हर जपिभा॥
धन धंन गुरू गुर सतगुर पूरा बिख डुबदे बाह दे कढिभा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1337

पूरा गुर पूरी मत जा की पूरन प्रभ के कामा॥
गुर चरनी लाग तरिओ भव सागर जप नानक हर हर नामा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 630

जिस मिलिआ पूरा गुरू सो सरपर तारणो॥
जिस नो लाए सच तिस सच सम्हालणो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 963

7.40. तीनों गुणों से पार होकर चौथे पद और सुन्न-समाधि की प्राप्ति

चउथी पदवी गुरमुख वरतह तिन निज घर वासा पाइआ॥
पूरै सतगुर किरपा कीनी विचहो आप गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

वडै भाग गुर पूरा पाईऐ अनदिन नाम धिआए॥
सहजे सहज मिलिआ जगजीवन नानक सुंन समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 774

7.41. मुक्ति की प्राप्ति

नामा छीबा कबीर जुलाहा पूरे गुर ते गति पाई॥
ब्रहम के बेते सबद पछाणह हउमै जात गवाई॥
सुर नर तिन की बाणी गावह कोए न मेटै भाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

सच करणी सबद है सार॥ पूरै गुर पाईऐ मोख दुआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 114

वेकी वेकी जंत उपाए॥ दुए पंदी दुए राह चलाए॥
गुर पूरे विण मुकत न होई सच नाम जप लाहा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1032

सुण संतहो निरमल बीचार॥
राम नाम बिन गति नही काई गुर पूरा भेटत उधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 891

गुर पूरै मेले गुणतास॥ कहो नानक सुख सहज निवास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 863

सूख सहज आनंद घणे॥
गुर पूरा पूरी जा की बाणी अनिक गुणा जा के जाहे न गणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 805

सहज समाध अनंद सूख पूरे गुर दीन॥
सदा सहाई संग प्रभ अंम्रित गुण चीन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 807

वडै भाग गुर पूरा पाईऐ अनदिन नाम धिआए॥
सहजे सहज मिलिआ जगजीवन नानक सुंन समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 774

आपणे भाणे विच सदा रख सुआमी हर नामो देह वडिआई॥
पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिन सहज समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1333

मन तन जापीऐ भगवान॥ गुर पूरे सुप्रसंन भए सदा सूख कलिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1322

सतगुर पूरै नाम दीआ॥
अनद मंगल कलिआण सदा सुख कारज सगला रास थीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

7.42. दरगाह में मान मिलता है

राम नाम धन संचिआ साबत पूंजी रास॥
नानक दरगह मंनिआ गुर पूरे साबास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

7.43. उस सच्चे घर में वास होता है जहाँ जन्म-मरण नहीं है

कर किरपा सतगुर मेलिओन मुख गुरमुख नाम धिआइसी॥
सो करे जे सतगुर भावसी गुर पूरा घरी वसाइसी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 310

पूरे गुर ते महल पाइआ पत परगट लोई॥
नानक अनहद धुनी दर वजदे मिलिआ हर सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248

गुर पूरै किरपा धारी॥ प्रभ पूरी लोच हमारी॥
कर इसनान ग्रिह आए॥ अनद मंगल सुख पाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 621

साधसंग नानक रंग माणिआ॥ घर आइआ पूरै गुर आणिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 806

सही सलामत मिल घर आए निंदक के मुख होए काल॥
कहो नानक मेरा सतगुर पूरा गुर प्रसाद प्रभ भए निहाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 827

घर दर मंदर जाणै सोई॥ जिस पूरे गुर ते सोझी होई॥
काइआ गड़ महल महली प्रभ साचा सच साचा तखत रचाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

थान सुहावा पवित है जिथै संत सभा॥
ढोई तिस ही नो मिलै जिन पूरा गुरू लभा॥
नानक बधा घर तहां जिथै मिरत न जनम जरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 44

7.44. मालिक से मिलाप होता है

गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदर निहाल॥
करम परापत तिस होवै जिस नो होए दइआल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

मत पूरी परधान ते गुर पूरे मन मंत॥
जिह जानिओ प्रभ आपुना नानक ते भगवंत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 259

अंतर मन तन बस रहे ईत ऊत के मीत॥
गुर पूरै उपदेसिआ नानक जपीऐ नीत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 253

हर अउखध सभ घट है भाई॥ गुर पूरे बिन बिधि न बनाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 259

गुर पूरे ते एह निहचउ पाईऐ॥ नानक राम रमत फिर जोनि न आईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 299

गुर पूरे की वडी वडिआई हर वडा सेव अतुल सुख पाइआ॥
गुर पूरै दान दीआ हर निहचल नित बखसे चड़ै सवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 305

पारब्रहम प्रभ द्रिसटी आइआ पूरन अगम बिसमाद॥
नानक राम नाम धन कीता पूरे गुर परसाद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 320-21

मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे॥
अगम अगोचर न जाई हर लखिआ गुर पूरा मिलै लखावीऐ रे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1118

हम सुख पाइआ तां सभह सुहेले॥ गुर पूरै पिता संग मेले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1141

सभ मह एक रहिआ भरपूरा॥ सो जापै जिस सतगुर पूरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1143

खसम धिआई इक मन इक भाए॥
गुर पूरे की सदा सरणाई साचै साहिब रखिआ कंठ लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1183

साजन मीत सखा हर मेरै गुन गोपाल हर राइआ॥
बिसर न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1223

गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै दे दिखाई॥
नानक नदरी करम होए गुर मिलीऐ भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1242

हर प्रभ सजण लोड़ लहो भाग वसै वडभाग॥
गुर पूरै देखालिआ नानक हर लिव लाग॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1317

मेरा ठाकुर वडा वडा है सुआमी हम किउ कर मिलह मिलीजै॥
नानक मेल मिलाए गुर पूरा जन कउ पूरन दीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1324

जप मन राम नाम अरधांभा॥
उपजंप उपाए न पाईऐ कतहू गुर पूरै हर प्रभ लाभा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1337

संत साजन सिख भए सुहेले॥ गुर पूरै प्रभ सिउ लै मेले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

गुण गावह गुण उचरह गुण मह सवै समाए॥
नानक गुर पूरे ते पाइआ सहज मिलिआ प्रभ आए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1423

घट घट रमईआ मन वसै किउ पाईऐ कित भत॥
गुर पूरा सतगुर भेटीऐ हर आए वसै मन चित॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

पेईअड़ै पिर मंन वसाइआ॥ पूरै गुर हदूर दिखाइआ॥
कामण पिर राखिआ कंठ लाए सबदे पिर रावै सेज सुहावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 127

नानक जन गुर पूरा पाइआ॥ अंतर बाहर एक दिखाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 384-85

अंगीकार कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई॥
अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 500

अंतर राम राए प्रगटे आए॥ गुर पूरै दीओ रंग लाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1141

गुर पूरै मेलाइआ मेरी जिदुड़ीए हर सजण हर प्रभ पासे राम॥
धन धन गुरू हर दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नाम बिगासे राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 538

इस जग मह पुरख एक है होर सगली नार सबाई॥
सभ घट भोगवै अलिपत रहै अलख न लखणा जाई॥
पूरै गुर वेखालिआ सबदे सोझी पाई॥
पुरखै सेवह से पुरख होवह जिनी हउमै सबद जलाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 591–92

गुर पूरै चरनी लाइआ॥ हर संग सहाई पाइआ॥
जह जाईऐ तहा सुहेले॥ कर किरपा प्रभ मेले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 623

निरंकार निरंजन हर अगम किआ कह गुण गाईऐ॥
जिस आप बुझाए आप सो हर मारग पाईऐ॥
गुर पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 644

वडभागी गुर पूरा पाईऐ॥ गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 563

वडभागी घर खोजिआ पाइआ नाम निधान॥
गुर पूरै वेखालिआ प्रभ आतम राम पछान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 757

सतगुर पूरा भेटिआ जिन बणत बणाई॥
राम नाम अउखध दीआ एका लिव लाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 819

हर प्रभ हर मन भाइआ हर नाम वधाई राम॥
गुर पूरै प्रभ पाइआ हर हर लिव लाई राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 845

गुर पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोए॥
जन नानक सो प्रभ सेविआ तिस जेवड अवर न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 957

निहचल एक सदा सच सोई॥ पूरे गुर ते सोझी होई॥
हर रस भीने सदा धिआइन गुरमत सील संनाहा हे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1057

हर सेती सद रहहे लिव लाए॥ पूरै सतगुर दीआ बुझाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

निस दामन जिउ चमक चंदाइण देखै॥ अहिनिस जोत निरंतर पेखै॥
आनंद रूप अनूप सरूपा गुर पूरै देखाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

हम मूरख मुगध सरणागती मिल गोविंद रंगा राम राजे॥
गुर पूरै हर पाइआ हर भगति इक मंगा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 449

इह धन अखुट न निखुटै न जाए॥ पूरै सतगुर दीआ दिखाए॥
अपुने सतगुर कउ सद बल जाई॥ गुर किरपा ते हर मंन वसाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 663

गुरु, गुरुदेव, सतगुरु और मालिक की एकता

धर्म पुस्तकों में आया है कि अकालपुरुष निराकार है, वह बिना आँखों के देखता है, बिना हाथों, पैरों के कार्य करता, चलता-फिरता है और बिना कानों के सुनता है। वह सब जगह उपस्थित है, पर दिखाई नहीं देता, वह बुद्धि-विचार, कल्पना या अनुमान की सीमा से बाहर और ऊपर है, मनुष्य की तुच्छ बुद्धि की वहाँ पहुँच नहीं। उसका ध्यान किस प्रकार किया जाए और उसकी प्रीति और प्रतीति किस प्रकार हो? जीव का प्रेम-प्यार तो सदा स्वजातीय के साथ हुआ करता है:

कुनद हम जिन्स बा हम जिन्स परवाज़, कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़।

पक्षियों का स्नेह पक्षियों के साथ होता है, पशुओं का पशुओं के साथ और मनुष्य का मनुष्य के साथ। हमें चित्त को एकाग्र करना है पर जब तक कोई वस्तु या पदार्थ आँखों के सामने न हो, उसका ध्यान किस प्रकार हो सकता है? जिज्ञासु की इच्छा को पूरा करने के लिए सत्पुरुष के अवतार संत-सतगुरु के रूप में आते रहे हैं। एक फ़ारस के मस्त वली (फ़क़ीर) की क्या सुंदर उक्ति है:

अगर आ ख़ुदा अस्त ख़ुद मी आयद।

नग़मा-ए-सरमद, रूबाई 75, पृ.64

अर्थ: *यदि वह ख़ुदा (ख़ुद आनेवाला) है, तो वह ख़ुद ही हमारे पास आकर हमें अपना ज्ञान देगा।*

सच है, ख़ुदा वही है जो ख़ुद आ जाए। हम तो लाचार ठहरे, मालिक तक हमारी पहुँच असंभव है, पर वह सर्वशक्तिमान है, इसलिए निराकार होते हुए भी, शरीर में अपनी ज्योति प्रकट करके अपनी सूचना ख़ुद ही देता है और हमारे बीच में किसी न किसी पूर्ण महात्मा के रूप में प्रकट होकर मालिक से मिलाने का साधन प्रस्तुत करता है। सतगुरु वह हस्ती है जिसके द्वारा मालिक संसार के जीवों को अपनी पहचान देता है। इसी लिए गुरवाणी में सतगुरु की महिमा का

स्थान-स्थान पर निरूपण किया गया है। मालिक सतगुरु के अंदर प्रकट है और यदि वाहिगुरु (परमपिता) से मिलना है तो सतगुरु की शरण लो, इसके बिना काम नहीं बनेगा:

गुर परमेसर एको जाण॥ जो तिस भावै सो परवाण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

गुर नाराइण दयु गुर गुर सचा सिरजणहार॥
गुर तुठै सभ किछ पाइआ जन नानक सद बलिहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 218

एकता का क्या भाव है?

सतगुरु की मालिक से अभिन्नता या एकता का अर्थ यह है कि सतगुरु की शख़्सियत (व्यक्तित्व) मालिक की हस्ती में लीन है, सतगुरु और मालिक एकरूप हैं। मालिक असीम है, वह सब जगह व्याप्त है, सतगुरु उसके प्रकट होने का स्थान है जिससे संपूर्ण संसार को आत्मिक प्रकाश मिलता है। सतगुरु प्रभुरूपी शक्ति के प्रकट होने का स्थान है। मालिक ऐसे सतगुरु के द्वारा संसार के लोगों को प्रकाशमान करता है। वह शरीर नहीं होता। वह शरीर से परे है। शिष्य भी शरीर नहीं। जब शिष्य शरीर की क़ैद से निकलता है तो वह सतगुरु की शान यानी विभूति को देखता है। सतगुरु कुलमालिक रूपी सूर्य के उदय होने का स्थान है:

दर बशर रूपोश कर्द अस्त आफ़ताब।

निकलसन, मसनवी रूमी, 1:2964, पृ. 182

वह इनसानी सूरत के पीछे छिपा हुआ सूर्य है। वह मालिक के रूप की कांति फैलानेवाला है।

यह शरीर उसके जलाल (तेज) और जमाल (सौंदर्य) को प्रकट करने के लिए काफ़ी नहीं, उसकी हस्ती को जानने के लिए हमें इस शरीर से निकलकर ऊपर आना पड़ता है। उसके शरीर में उसकी आँखें 'धुरघर' की खिड़कियाँ हैं, जिनमें से मालिक का नूर चमक रहा है, जिसको हम इस संसार के किसी उदाहरण द्वारा नहीं समझ सकते। वह बिना नशे के मस्त होता है और बिना खाने के तृप्त रहता है:

मर्दे-ख़ुदा मस्त बुवद बे-शराब, मर्दे-ख़ुदा सेर बुवद बे-कबाब।

मौलाना रूम, कुल्लीयाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 116

उसकी आँख मालिक के स्वरूप में लीन रहती है, उसका हाथ मालिक का हाथ होता है:

दस्ते-ऊ दस्ते-ख़ुदा चश्मे-ऊ मस्ते-ख़ुदा।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 116

वह धरती का दास नहीं और न ही वह शरीर की क़ैद में होता है। वह जब चाहे खंडों-ब्रह्मांडों और मन-बुद्धि से परे आत्मिक मंडलों पर गमन करता है और जब चाहे अपनी दया द्वारा हज़ारों जीवों को आंतरिक दृश्यों को देखने के लिए आँखें और खंडों-ब्रह्मांडों के पार जाने का सामर्थ्य प्रदान कर देता है।

जीवित सतगुरु मालिक के साथ एकमेक हो रहा है, वह इस संसार में मालिक का सच्चा ज़ुहूर (प्रकाश) है, जिसके सुपुर्द जीवों के उद्धार यानी मुक्ति का काम है। सतगुरु आकार रखते हुए भी निराकार है। वह शब्द का ज़ुहूर (प्रकट रूप) है, प्रेम का स्रोत है, आनंद और शांति का अवतार है। मनुष्य को समझाने के लिए मनुष्य ही चाहिए, यह प्रकृति का नियम है। इस नियम के अनुसार वह मनुष्य-चोला धारण करता है, ताकि वह जीवों को समझा बुझाकर और अपनी सत्ता प्रदान करके मालिक से मिला दे। पर प्रतिदिन या जब भी चाहे वह अपने चेतन और महाप्रकाशवान देशों के आनंद में मग्न हो सकता है।

गुरवाणी और अन्य महात्माओं की वाणियों में खोलकर बताया गया है कि गुरु और मालिक में कोई अंतर नहीं, दोनों वास्तव में एक ही हैं:

अपरंपर पारब्रहम परमेसर नानक गुर मिलिआ सोई जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 599

सतगुर मेरा सदा सदा ना आवै ना जाए॥
ओह अबिनासी पुरख है सभ मह रहिआ समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

गुरु की महिमा क्या कही जाए, वह 'आदि जुगादि' सदा पूर्ण परमेश्वर है:

गुर की महिमा किआ कहा गुर बिबेक सत सर॥
ओह आद जुगादी जुगह जुग पूरा परमेसर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 397

गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि हमने शरीररूपी समुद्र को मथकर देखा है। उसमें एक निराली बात पाई है कि गुरु परमेश्वर है और परमेश्वर गुरु है, उनमें कोई भिन्नता या भेद नहीं:

समुंद विरोल सरीर हम देखिआ इक वसत अनूप दिखाई॥
गुर गोविंद गोविंद गुरू है नानक भेद न भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

मालिक अपने आप को गुरु के अंदर रखता है:

गुर मह आप रखिआ करतारे॥ गुरमुख कोट असंख उधारे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1024

बिन गुर प्रेम न लभई जन वेखहो मन निरजास॥
हर गुर विच आप रखिआ हर मेले गुर साबास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 996

सगल कलेस निंदक भइआ खेद॥ नामे नाराइन नाही भेद॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1166

कबीर साहिब फ़रमाते हैं कि हम मालिक से एक हो गए हैं, यह देखकर हमारे मन को विश्वास हो गया है:

अब हम तुम एक भए हहे एकै देखत मन पतीआही॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 339

फिर फ़रमाते हैं कि राम और कबीर दोनों ऐसे मिल-जुल गए हैं कि कोई भिन्न-भेद नहीं कर सकता:

अब तउ जाए चढे सिंघासन मिले है सारिंगपानी॥
राम कबीरा एक भए है कोए न सकै पछानी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 969

हरि और गुरु एकरूप हैं:

हर गुर मूरत एका वरतै नानक हर गुर भाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1043

गुर परमेसर एक है सभ मह रहिआ समाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

जिउ जल तरंग फेन जल होई है सेवक ठाकुर भए एका॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1209

नानक हर जन हर इके होए हर जप हर सेती रलिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 562

नानक संत संत हर एको जप हर हर नाम सोहंदी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 79

राम संत मह भेद किछ नाही एक जन कई मह लाख करोरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 208

हर जन प्रभ रल एको होए हर जन प्रभ एक समान जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

हरि और हरि के जन दोनों एकरूप हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है, जिस प्रकार जल में उठी लहर जल का ही उभार होती है, उससे भिन्न नहीं होती:

- हरि हरि जन दुइ एक हैं बिब बिचार कछु नाहि।
  जल ते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि॥

  गुरु गोबिन्द सिंह, श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 128

बूँद जब समुद्र में मिल जाती है, समुद्र ही हो जाती है। मालिक अनुपम है, गुरु उसके रूप को प्रकट करने का माध्यम है:

पारब्रहम परमेसर अनूप॥ सफल मूरत गुर तिस का रूप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1152

सब धर्म पुस्तकें इस बात की गवाही देती हैं कि गुरु और पारब्रह्म में कोई अंतर नहीं:

नानक सोधे सिंम्रिति बेद॥ पारब्रहम गुर नाही भेद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1142

मालिक शब्द है। वह स्वयं शब्द रूप होकर गुरु में समा रहा है और गुरु के द्वारा शब्द का प्रसाद बँटवा रहा है, वह शब्द का अवतार है:

गुर मह आप समोए सबद वरताइआ॥ सचे ही पतीआए सच समाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1279

सतगुरु मालिक के साथ एक होने के कारण शब्द स्वरूप है:

आपे सतगुर आप सबद जीउ जुग जुग भगत पिआरे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 246

बाइबल में लिखा है: शब्द ने देह धारण की और हमारे बीच में रहा। वह दया और सच से भरपूर था। (जॉन 1:14)

गुरु, सतगुरु और स्वामी में कोई भेद नहीं है:

गुर सतगुर सुआमी भेद न जाणहो जित मिल हर भगति सुखांदी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 77

वह सत्पुरुष है जो 'हर हर बानी' बोलता है जिसको सुनकर जीव मुक्त हो जाते हैं:

हर का संत सतगुर सत पुरखा जो बोलै हर हर बानी॥
जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 667

सतगुरु सदा क़ायम और दायम (स्थिर और स्थायी) है, आवागमन से रहित है, वह अचल पुरुष है। वह कभी नष्ट होनेवाला नहीं। उसका आधार नाम है:

सतगुर मेरा सदा सदा ना आवै ना जाए॥
ओह अबिनासी पुरख है सभ मह रहिआ समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

सतगुर पुरख अचल अचला मत जिस द्रिड़ता नाम अधारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

सतगुरु देव प्रत्यक्ष हरि मूर्ति हैं, जो अमृत वचन सुनाकर जीवों को अमर करते हैं:

सतगुर देउ परतख हर मूरत जो अंम्रित बचन सुणावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1264

गुरु मालिक के साथ एक होने के कारण 'कर्ता और करणहार' है। वह संपूर्ण सृष्टि को, जीवों व प्राणियों को आधार देनेवाला है:

गुर करता गुर करणहार गुरमुख सची सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

गुर परमेसर करणैहार॥ सगल स्रिसटि कउ दे आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 741

गुर सुखदाता गुर करतार॥ जीअ प्राण नानक गुर आधार॥

गुरु अजुर्न देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

तुलसीदास जी फ़रमाते हैं कि मैं गुरु के पवित्र चरणों को नमस्कार करता हूँ। वे दया और मेहर के समुद्र हैं, वे सचमुच मनुष्य के रूप में स्वयं हरि हैं, जिनके वचन सूर्य की किरणों की भाँति हमारे महामोह के अंधकार को दूर करनेवाले हैं:

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर॥

श्रीरामचरितमानस, 1:सोरठा 5

एक दिन हज़रत ईसा ने अपनी ओर संकेत करते हुए अपने शिष्यों से पूछा, "संसार के लोग इस मनुष्य-पुत्र को क्या समझते हैं?" (बाइबल, मैथ्यू 16:13)। साइमन ने उत्तर दिया, "तू मसीह है, जीवित ख़ुदा का पुत्र है।" ईसा ने पीटर से उत्तर में कहा, "तू धन्य है साइमन, क्योंकि जीव गति और मनुष्य की बुद्धि ने तुझ पर यह प्रकट नहीं किया, बल्कि मेरे पिता ने जो आकाश में है (प्रकट किया है) मैं तुझसे कहता हूँ कि तू पीटर है, इस चट्टान पर मैं अपना गिरजा खड़ा करूँगा, जिसके सामने नरकों के द्वार नहीं खुल सकेंगे।" (बाइबल, मैथ्यू 16:17-18)।

एक बार फिर महात्मा ईसा ने बड़ा साफ़-साफ़ कहा। जब फ़िलिप ने पूछा, "स्वामी! हमें हमारे पिता के दर्शन करा दो। हमारे लिए इतना ही काफ़ी है" (बाइबल, जॉन 14:8)। ईसा मसीह इस पर कुछ ग़ुस्सा हो गए और उससे कहने लगे, "मैं इतनी अवधि तुम्हारे बीच में रहा हूँ, पर तुमने मुझे नहीं पहचाना। हे फ़िलिप! जिसने मुझे देख लिया, उसने मेरे पिता को देख लिया। तुम कैसे कहते

हो कि 'पिता दिखाओ'। क्या तुम्हें विश्वास नहीं कि मैं पिता के अंदर हूँ और पिता मेरे अंदर है?" (बाइबल, जॉन 14:8-10)।

फिर फ़रमाया, "मैं और पिता एक हैं, जिसने मुझे देख लिया है उसने पिता को देख लिया, मैं जो कुछ कहता हूँ अपनी ओर से नहीं कहता; यह पिता मेरे अंदर बैठकर स्वयं अपने काम करता है, तुम विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें विराजमान है।" (बाइबल, जॉन 14:10)।

गुरु अर्जुन साहिब जी ने अपनी और मालिक की एकता के बारे में चर्चा करते हुए क्या स्पष्ट वर्णन किया है, "मेरे मंदिर सबसे ऊँचे हैं, हमारा देश बेअंत (अनंत) है, हमारा राज्य सदा निश्चल है, हमारा धन अखूट और अविचल है, मेरी शोभा युगों में है और प्रत्येक स्थान में हमारी प्रजा है, घर-घर में हमारी कीर्ति होती है, सारे लोकों में हमारी भक्ति होती है, हमारे पिता हमारे अंदर प्रकट हैं, पिता ने पुत्र के साथ मिलकर एकात्मकता स्थापित कर ली है। जब पिता प्रसन्न हो गए तो पिता और पुत्र ने एक ही रंग ले लिया।"

मंदर मेरे सभ ते ऊचे॥ देस मेरे बेअंत अपूछे॥
राज हमारा सद ही निहचल॥ माल हमारा अखूट अबेचल॥
सोभा मेरी सभ जुग अंतर॥ बाज हमारी थान थनंतर॥
कीरत हमरी घर घर होई॥ भगति हमारी सभनी लोई॥
पिता हमारे प्रगटे माझ॥ पिता पूत रल कीनी सांझ॥
कहो नानक जउ पिता पतीने॥ पिता पूत एकै रंग लीने॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1141

स्कन्द पुराण में कहा गया है:

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

श्री गुरू गीता, श्लोक 58

अर्थः गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु शिव है, गुरु साक्षात पारब्रह्म है। उस श्रीगुरु को नमस्कार है।

बूँद समुद्र में मिलकर समुद्र ही हो जाती है। मुण्डक उपनिषद् (3:2:8) में इस बारे में कथन है:

> जिस प्रकार बहती हुई नदियाँ समुद्र में समा जाती हैं और अपना नाम रूप गँवा देती हैं, इसी प्रकार ब्रह्म को जाननेवाला नाम और रूप से अलग होकर परे से परे जो दिव्य पुरुष है, उसको प्राप्त होता है, जो इस परम ब्रह्म को जानता है, वह ब्रह्म ही हो जाता है।

वह परम पुरुष इस देह में प्रकट होता है। वह सर्वदेशी होकर एकदेशी किस प्रकार हो सकता है, वह असीम किस प्रकार मनुष्यरूपी सीमा में आ सकता है? इसके बारे में गीता (7:24-25) में कृष्ण भगवान फ़रमाते हैं:

> बुद्धिहीन व्यक्ति मुझ अविगत (निराकार) को शरीर में सीमित समझते हैं, उनको मेरे परम भाव (परे के स्वरूप) की ख़बर नहीं है जो अमर और सबसे ऊँचा है, क्योंकि मैं अपनी योग-माया के परदे में छिपा हुआ हूँ। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता नहीं कि मुझे जान सके। यही कारण है कि भ्रमों में भूली हुई दुनिया मेरे व्यक्तित्व से, जो जन्म-मरण से रहित है, अनजान है।

फिर अध्याय 9 में कहते हैं:

> अपने गुप्त रूप से मैं इस संसार में व्याप्त हूँ और संपूर्ण सृष्टि मेरे आसरे स्थिर है, मैं उसके आसरे नहीं। मूढ़ लोग मेरे मनुष्य-चोला धारण कर लेने से मेरी ऊँची अवस्था से अनजान हैं और मेरी ओर से मुँह फेर लेते हैं।
>
> गीता, 9:10-11

मुसलमान फ़क़ीर भी यही कहते हैं कि मुर्शिद असल में स्वयं रब ही होता है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं कि मुर्शिद क़ा हाथ रब् के हाथ से क़म नहीं है, उसका हाथ मालिक की शक्ति से ख़ाली नहीं होता, उसका हाथ बड़ा लंबा है, जो सातों आसमानों के पार पहुँचता है, उसका हाथ मालिक से मिला हुआ है, उसकी पूर्णता बेमिसाल है, उस जैसा कोई दूसरा नहीं। वह मनुष्य की सूरत में छिपा हुआ सूर्य है, उसको, जैसा वह है, वैसा जानो:

दस्ते-पीर अज़ ग़ायबाँ कोताह नीस्त, दस्ते-ऊ जुज़ क़ब्ज़ा-ए-अल्लाह नीस्त।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ.312

पस मरा दस्ते-दराज़ आमद यक़ीं, बर गुज़श्त अज़ आस्माने-हफ़्तमीं।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 187

बा कफ़श दरियाए-कुल रा इत्तिसाल, हस्त बे चूंन ओ चगूना पुर कमाल।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 5, पृ. 96

दर बशर रूपोश कर्द अस्त आफ़्ताब, फ़हम कुन वल्लाहु आअलम वस्सवाब।

निकलसन, मसनवी रूमी, 1:2964, पृ. 182

फिर फ़रमाते हैं कि पीर (गुरु) में रब का नूर झलकता है। हम उसके प्रकट मनुष्य रूप को देखते हैं, इसलिए हम यह नहीं जान सकते कि वह अंदर से रब होता है। देखने में वह मनुष्य रूप धारण किए हुए है, पर वास्तव में वह रब है:

नूरे-हक़ ज़ाहिर बुवद अंदर वली, नेक बीं बाशी अगर अहले-दिली।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 39

मौलाना रूम कहते हैं कि मालिक ने फ़रमाया है कि मैं बहुत बड़ा हूँ, ऊँचाइयों, नीचाइयों, ज़मीनों, आसमानों और अर्शों (स्वर्गों) में समा नहीं सकता, पर यह अचरज की बात है कि मैं मोमिन यानी भगत के हृदय में समा जाता हूँ यदि तुम मुझे ढूँढ़ना चाहो तो वहाँ जाकर ढूँढ़ो:

गुफ़्त पैग़ंबर किह् हक़्क़ फ़रमूदा अस्त, मन नगुंजम हेच दर बाला ओ पस्त।
दर ज़मीनो-आसमानो-अर्श नीज़, मन नगुंजम ईं यक़ीं दाँ ऐ अज़ीज़।
दर दिले-मोमिन बगुंजम ऐ अजब, गर मरा जूई दरां दिलहा तलब।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 282

मुर्शिद प्रकट रूप में तो मनुष्य प्रतीत होता है पर उसकी आत्मा मालिक के साथ एक है:

सूरतश बर ख़ाक ओ जाँ दर ला-मकाँ। ला-मकाने फ़ौक़े-वहमे-सालिकाँ।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 182

अर्थ: उसका शरीर पृथ्वी पर है पर आत्मा मृत्युलोक से परे अधर (लामकान) में है, जो मज़हबी नेताओं की पहुँच यानी सीमा से परे है।

शम्स तब्रेज़ फ़रमाते हैं, "वह पातशाहों का पातशाह पक्की तरह दरवाज़े बंद करके (वज्र-कपाट लगाकर) उनके पीछे बैठा है और स्वयं ही मनुष्य-चोला धारण करके द्वार खोलने के लिए आ जाता है:

आँ पादशाहे-आअज़म दर बस्ता बूद मुहकम,
पोशीद दल्क़े-आदम यानी किह् बर दर आमद।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 136

साईं बुल्लेशाह फ़रमाते हैं, मौला (स्वामी) मनुष्य बनकर संसार को जगाने के लिए आ जाता है:

मौला* आदमी बण आइआ॥

कलाम बुल्लेशाह, पृ. 53

ओह आया जग जगाया॥

प्राप्त नहीं

गुरवाणी यह निर्णय करती है:

हर जीउ नाम परिओ रामदास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 612

हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संत कहावै॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 476

पीपा प्रणवै परम तत है सतगुर होए लखावै॥

भक्त पीपा, आदि ग्रन्थ, पृ. 695

सतगुर निरंजन सोए॥ मानुख का कर रूप न जान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 895

√ हर का सेवक सो हर जेहा॥ भेद न जाणहो माणस देहा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1076

---

* पाठांतर: मउला

भाई गुरदास जी भी फ़रमाते हैं:

एकंकार अकार करि गुर गोविंदु नाउ सदवाइआ।...
ओअंकार अकार करि इक कवाउ पसाउ पसाइआ।

वारां भाई गुरदास, 25:1

जो तुमको सच्चा ज्ञान (देखें: 'ज्ञान' का प्रकरण) प्रदान करे, उसको हरि ही जानो, वह सच्चा शब्द है, उसे प्रभु के साथ एक समझो:

जिन गिआन कीआ तिस हर तू जाण॥ साच सबद प्रभ एक सिञाण॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1174

जब मैना को मनुष्य की बोली सिखाई जाती है तब उसके सामने एक बड़ा शीशा रखा जाता है और उसके पीछे एक आदमी छिपकर बोलता है। मैना शीशे में अपनी शक्ल देखकर समझती है मेरा ही कोई भाई-बंधु सामने बैठा है जो बोल रहा है। इसी तरह संतों की देह के लिबास में मालिक छिपा हुआ है जो उनके द्वारा बोलता है। वह प्रभु तो अकथनीय और निराला है। परंतु उसे देहधारी जीवों पर प्रकट होने के लिए देह धारण करनी पड़ती है। वह बिना शरीर के जीवों के साथ किस प्रकार बातचीत कर सकता है! कबीर साहिब फ़रमाते हैं, 'ब्रहम बोले काया के ओले। काया बिन ब्रहम क्या बोले।' मालिक की ज़ात (अस्तित्व) को जो गुणों से रहित है, इस देह में कोई किस प्रकार देख सकता है, जब तक वह स्वयं हमारे अनुसार या हमारे जैसा रूप धारण न करे।

गुरु का शरीर इस धरती पर चलता-फिरता है, पर उसकी रूह सातों आसमानों पर भ्रमण करती है। ऊपर से तो वह मनुष्य है पर उसके अंतर में रब बोलता है, अपनी असलियत (वास्तविकता) में वह रब है। वह सचमुच (हरि-नर या नर-हरि) मानव-ईश्वर है। वह जीवों को मालिक से जोड़नेवाली डोरी है। सतगुरु देहधारी शब्द है, पर उसको मनुष्य चोला धारण करना पड़ता है ताकि वह मनुष्यों को समझा बुझा सके।

रूस का बादशाह पीटर हालैंड देश में जहाज़ चलाने का काम सीखने के लिए गया, उसने मज़दूरों का रूप धारण कर लिया। वहाँ पर रूस से निकाले हुए कई और आदमी भी काम कर रहे थे। उनसे वह रूस की बातें करता और उनको अपने देश वापस जाने की प्रेरणा देता जिससे उनके मन में भी अपने देश वापस जाने का शौक पैदा हो गया। किंतु वे कहने लगे कि हमें बादशाह ने निकाल दिया है, अब हम किस प्रकार जा सकते हैं? पीटर बोला कि बादशाह

मेरा मित्र है, मैं तुम्हारी सिफ़ारिश करूँगा और आशा है कि बादशाह मान जाएगा। पीटर जब काम सीखकर वापस अपने देश जाने लगा तो जिनको उसके वचन पर विश्वास आ गया वे उसके साथ चल पड़े। जब पीटर ने रूस देश में प्रवेश किया, तो सब उसका मान कर रहे थे, यह देखकर उन मज़दूरों का साहस बढ़ गया कि इसका अवश्य बादशाह से मेल होगा और ये हमें देश में वापस आकर रहने की आज्ञा दिला देगा। जब पीटर अपनी राजधानी में पहुँचा वह सिंहासन पर विराजमान हो गया। उसके साथी हैरान हो गए कि यह तो हमारी तरह मज़दूर नज़र आता था, हमें क्या मालूम था कि यह बादशाह है। वे हृदय में कृतज्ञ हुए कि बादशाह मज़दूरों का भेष धारण करके हमें अपने साथ ले आया है।

हमारे बीच रह रहे गुरु की भी यही अवस्था है। वह मनुष्य का भेष धारण करके जीवों को अपने निजदेश में ले जाने का काम करता है। हम तन-मन में क़ैदियों के बीच वह चाहे बाहर से देखने में एक क़ैदी ही नज़र आता है, पर वास्तव में वह खंडों-ब्रह्मांडों का बादशाह होता है, क़ैदी नहीं। वह क़ैदियों के रूप में अवश्य दिखाई देता है, पर वह 'बंदी छोड़' है, हमें बंधनों से मुक्त करने आया है।

गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं कि जिसने तुम्हें संसार में भेजा है, वह वापस बुला रहा है कि तुम अपने घर आ जाओ और अपने निश्चल राज्य का आनंद लो:

जिन तुम भेजे तिनह बुलाए सुख सहज सेती घर आउ॥
अनद मंगल गुन गाउ सहज धुन निहचल राज कमाउ॥
तुम घर आवहो मेरे मीत॥
तुमरे दोखी हर आप निवारे अपदा भई बितीत॥
प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके॥
घर मंगल वाजह नित वाजे अपुनै खसम निवाजे॥
असथिर रहहो डोलहो मत कबहू गुर कै बचन अधार॥
जै जै कार सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार॥
जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई॥
अचरज कीआ करनैहारै नानक सच वडिआई॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 678

रानी इन्दुमती जब अभ्यास करके सचखंड पहुँची तो देखा कि कबीर साहिब सत्पुरुष के स्थान पर बैठे हुए हैं। कहने लगी महाराज! यदि मुझे पहले ही बता

देते कि आप ही सत्पुरुष हो तो मैं वहीं आपको पहचान लेती। कबीर साहिब कहने लगे, तुझे उस समय विश्वास किस प्रकार आता!

वे सब संत जो सतलोक और अनामी में पहुँचे हैं, मालिक से एकरूप हैं। जब यह बात है तो फिर कौन बड़ा और कौन छोटा? सब एक ही हैं। यदि उनमें से हम किसी को बड़ा और किसी को छोटा मानें तो यह हमारी बड़ी भारी भूल है:

संत संत को दोय कर जाने॥ सो नर पड़ै नरक की खाने॥

सतगुरु के पास हज़ारों लोग आते हैं, उसको देखते हैं, उसका सत्संग सुनते हैं और अपने-अपने विचारों के अनुसार उसका वर्णन करते हैं। कोई उसको शरीफ़ (सज्जन) हमदर्द मनुष्य, कोई फ़िलॉसफ़र (दार्शनिक), कोई आलिम (विद्वान), कोई नीतिशास्त्र का माहिर (ज्ञाता) इत्यादि कहकर, सब अपने-अपने ढंग से तसल्ली करते हैं। पर इन लोगों में वे लोग बिरले ही हैं जो उसके अंदर मालिक को देखते हैं। हर कोई अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार उसको समझकर उसका गुणगान करता है। पर यदि वह केवल मनुष्य है तो वह हमें मनुष्यता से बढ़कर और कुछ नहीं दे सकेगा। वास्तव में वह केवल मनुष्य ही नहीं और कुछ भी है। उसकी पहचान किसी बिरले को होती है जो अंतर में इस योग्य है। जिसका घट तैयार हो गया है, उस पर ही वह अपने आप को प्रकट करता है। जिसकी आँख अभी तक उसको देखने के योग्य नहीं, वह उसको किस प्रकार पहचान सकता है? अंधा आँखों वाले को किस प्रकार देख या पहचान सकता है? जब तक मालिक (सत्पुरुष) स्वयं किसी जीव पर दया न करे, वह गुरु को 'गुरु' रूप में नहीं देख सकता। जब तक सतगुरु, जो सत का स्वरूप है, अपनी पहचान आप न प्रदान करे, जीव को पहचान नहीं हो सकती, चाहे सतगुरु हमेशा पास ही रहता हो। उसकी गति को कौन पहचान सकता है? कई बार उसी के घर के लोग भी उसकी गति को नहीं पहचान सकते।

बिना भाग्य के उसको कोई नहीं पहचान सकता। जिसने उसको पहचान लिया उसने मालिक को पा लिया। भाई नन्दलाल फ़रमाते हैं:

ख़ुदा हाज़िर बुवद दायम बबीं दीदारे-पाकश रा।

दीवाने-नन्दलाल गोया, पृ. 12

अर्थः वह ख़ुद (स्वयं) ख़ुदा हाज़िर-नाज़िर (उपस्थित) है। तू उसका पाक (पवित्र) दीदार (दर्शन) कर।

जब जीव की उसे देखनेवाली आँख खुल जाती है या जब वह किसी को स्वयं अपना ज्ञान देता है, तब उसको अपने अंदर ख़ुदा झलकता दिखाई देने लगता है। भजन-सिमरन का प्रयोजन केवल इतना ही है कि हमारी आँख खुल जाए ताकि हम प्रभु को सब जगह और सतगुरु के अंदर, जहाँ वह विशेष रूप से प्रकट है, देख सकें। यह केवल उसकी बख़्शिश द्वारा ही हो सकता है।

गुरबाणी

1. सतगुरु और मालिक एक हैं

1.1. गुरु और मालिक एक हैं

गुर सतगुर सुआमी भेद न जाणहो जित मिल हर भगति सुखांदी॥
कहो नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओ रैण भगता दी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 77

समुंद विरोल सरीर हम देखिआ इक वसत अनूप दिखाई॥
गुर गोविंद गोविंद गुरू है नानक भेद न भाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

साचे भावै तिस वडीआए॥ कउन सो दूजा तिस समझाए॥
हर गुर मूरत एका वरतै नानक हर गुर भाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1043

गुर की महिमा कथन न जाए॥ गुर परमेसर साचै नाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1271

नानक सोधे सिंम्रिति बेद॥ पारब्रहम गुर नाही भेद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1142

पारब्रहम परमेसर अनूप॥ सफल मूरत गुर तिस का रूप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1152

गुर नाराइण दयु गुर गुर सचा सिरजणहार॥
गुर तुठै सभ किछ पाइआ जन नानक सद बलिहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 218

गुर मेरी पूजा गुर गोबिंद॥ गुर मेरा पारब्रहम गुर भगवंत॥
गुर मेरा देउ अलख अभेउ॥ सरब पूज चरन गुर सेउ॥...
गुर मेरा गिआन गुर रिदै धिआन॥ गुर गोपाल पुरख भगवान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

गुर गोबिंद गुरू गोपाल॥ अपने दास कउ राखनहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 869

गुर परमेसर एक है सभ मह रहिआ समाए॥
जिन कउ पूरब लिखिआ सेई नाम धिआए॥
नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह॥
गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 710

गुर दाता समरथ गुर गुर सभ मह रहिआ समाए॥
गुर परमेसर पारब्रहम गुर डुबदा लए तराए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

गुर समरथ गुर निरंकार गुर ऊचा अगम अपार॥
गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

महिमा कही न जाए गुर समरथ देव॥
गुर पारब्रहम परमेसुर अपरंपर अलख अभेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

गुर अंम्रित नाम पीआलिआ जनम मरन का पथ॥
गुर परमेसर सेविआ भै भंजन दुख लथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49-50

गुर परमेसुर पूजीऐ मन तन लाए पिआर॥
सतगुर दाता जीअ का सभसै दे अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

पारब्रहम प्रभ एक है दूजा नाही कोए॥
जीउ पिंड सभ तिस का जो तिस भावै सो होए॥
गुर पूरै पूरा भइआ जप नानक सचा सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 45

अवर न कोए हर अंम्रित सोए जिन पीआ सो बिधि जाणै॥
धन धंन गुरू पूरा प्रभ पाइआ लग संगत नाम पछाणै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 446

तू आपे गुर चेला है आपे गुर विच दे तुझह धिआई॥
जो तुध सेवह सो तूहै होवह तुध सेवक पैज रखाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 758

गुर समरथ अपार गुर वडभागी दरसन होए॥
गुर अगोचर निरमला गुर जेवड अवर न कोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 52

1.2. गुरुदेव और मालिक एक हैं

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा॥
गुरदेव सखा अगिआन भंजन गुरदेव बंधिप सहोदरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 250

पारब्रहम नानक गुरदेव॥ वडै भाग पाईऐ हर सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 1338

गुरदेव संगत प्रभ मेल कर किरपा हम मूड़ पापी जित लग तरा॥
गुरदेव सतगुर पारब्रहम परमेसर गुरदेव नानक हर नमसकरा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 250

अपणे बालक आप रखिअन पारब्रहम गुरदेव॥
सुख सांत सहज आनद भए पूरन भई सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 819–20

पारब्रहम पूरन गुरदेव॥ कर किरपा लागउ तेरी सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰ 193

होए पवित्र सरीर चरना धूरीऐ॥ पारब्रहम गुरदेव सदा हजूरीऐ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.709

पारब्रहम गुरदेव नीचहो उच थपे॥
काट सिलक दुख माइआ कर लीने अप दसे॥
गुण गाए बेअंत रसना हर जसे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.710

सफल मूरत गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे॥
नानक गुर पारब्रहम परमेसर सदा सदा हजूरे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.802

1.3. सतगुरु और मालिक एक हैं

गुर मेरा खसम सतगुर सरणाई॥
नानक गुर पारब्रहम जा की कीम न पाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1270

पारब्रहम परमेसुर सतगुर सभना करत उधारा॥
कहो नानक गुर बिन नही तरीऐ इह पूरन तत बीचारा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.611

आपे सतगुर आप हर आपे मेल मिलाए॥
आप दइआ कर मेलसी गुर सतगुर पीछै पाए॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.41

पारब्रहम परमेसुर सतगुर वस कीन्हे जिन सगले जंत॥
चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जप निरमल मंत॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.825

सतगुर जेवड अवर न कोए॥ गुर पारब्रहम परमेसर सोए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1271

1.4. गुरु, साहिब का स्वांगी (स्वरूप धरनेवाला) है, उसकी वही जाति है जो मालिक की है

खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूत धोती कीन्ही॥
तूं साहिब हउ सांगी तेरा प्रणवै नानक जात कैसी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

2. हरि का जन और हरि एक हैं

जो प्रानी निस दिन भजै रूप राम तिह जान॥
हर जन हर अंतर नही नानक साची मान॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1427-28

जिह घट सिमरन राम को सो नर मुकता जान॥
तिह नर हर अंतर नही नानक साची मान॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1428

हरि हरि जन दुइ एक हैं बिब बिचार कछु नाहि।
जल ते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि॥

श्री दसम ग्रंथ, पहली सैंची, पृ. 128

हर जन प्रभ रल एको होए हर जन प्रभ एक समान जीउ॥
धुर मरण लिखाइआ गुरमुख सोहाइआ जन उबरे हर हर धिआन जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 447

3. संत और मालिक में कोई भेद नहीं

नानक संत संत हर एको जप हर हर नाम सोहंदी॥
हर राम राम मेरे बाबुला पिर मिल धन वेल वधंदी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 79

राम संत मह भेद किछ नाही एक जन कई मह लाख करोरी॥
जा कै हीऐ प्रगट प्रभ होआ अनदिन कीरतन रसन रमोरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 208

संता कउ मत कोई निंदहो संत राम है एको॥
कहो कबीर मै सो गुर पाइआ जा का नाउ बिबेको॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 793

सोई संत जे भावै राम॥ संत गोबिंद कै एकै काम॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.867

4. सतगुरु, शब्द और मालिक एक हैं

आप कराए करे आप् जीउ आपे सबद सवारे॥
आपे सतगुर आप् सबद् जीउ जुग् जुग भगत पिआरे॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.246

5. गुरु में मालिक विद्यमान है

तुध आपे आप रखिआ सतगुर विच गुर आपे तुध सवारिआ॥
तू आपे पूजह पूज करावह सतगुर कउ सिरजणहारिआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.311

कोई निंदा करे पूरे सतगुरू की तिस नो फिट फिट कहै सभ संसार॥
सतगुर विच आप वरतदा हर आपे रखणहार॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.302

गुर मह आप समोए सबद वरताइआ॥ सचे ही पतीआए सच समाइआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1279

साध रूप अपना तन धारिआ॥ महा अगन ते आप उबारिआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1005

बिन गुर प्रेम न लभई जन वेखहो मन निरजास॥
हर गुर विच आप रखिआ हर मेले गुर साबास॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.996

गुर मह आप रखिआ करतारे॥ गुरमुख कोट असंख उधारे॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1024

सच सचा सतगुर अमर है जिस अंदर हर उर धारिआ॥
सच सचा सतगुर पुरख है जिन काम क्रोध बिख मारिआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.310

गुर सतगुर कै मन पारब्रहम है पारब्रहम छडाई॥
गुर सतगुर ताण दीबाण हर तिन सभ आण निवाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 310

6. सतगुरु सत्पुरुष है

हर का संत सतगुर सत पुरखा जो बोलै हर हर बानी॥
जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 667

धन धन गुर सत पुरख है जिन भगति हर दीनी॥
जिस गुर ते हर पाइआ सो गुर हम कीनी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 163

धन धन सत पुरख सतगुरू हमारा जित मिलिऐ हम कउ सांत आई॥
धन धन सत पुरख सतगुरू हमारा जित मिलिऐ हम हर भगति पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 594

7. सतगुरु अविनाशी पुरुष है

सतगुर मेरा सदा सदा ना आवै ना जाए॥
ओह अबिनासी पुरख है सभ मह रहिआ समाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 759

8. सतगुरु अचल पुरुष है

सतगुर पुरख अचल अचला मत जिस द्रिड़ता नाम अधारे॥
तिस आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतगुर कै बलिहारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1199

9. सतगुरु महापुरुष और पारस हैं

सतगुर महा पुरख है पारस जो लागै सो फल पावैगो॥
जिउ गुर उपदेस तरे प्रहिलादा गुर सेवक पैज रखावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

10. सतगुरु प्रत्यक्ष हरि की मूर्ति है

सतगुरु देउ परतख हर मूरत जो अंम्रित बचन सुणावै॥
नानक भाग भले तिस जन के जो हर चरणी चित लावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1264

11. संत प्रभु के साथ क्रीड़ा करते हैं

तूं संतन का संत तुमारे संत साहिब मन माना जीउ॥
तूं संतन की करह प्रतिपाला॥ संत खेलह तुम संग गोपाला॥
अपुने संत तुध खरे पिआरे तू संतन के प्राना जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 100

12. गुरु 'कर्ता करणहार', दयाल और पूर्ण नारायण है

गुर करता गुर करणहार गुरमुख सची सोए॥
गुर ते बाहर किछ नही गुर कीता लोड़े सो होए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

गुर परमेसर करणैहार॥ सगल स्रिसटि कउ दे आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 741

गुर सुखदाता गुर करतार॥ जीअ प्राण नानक गुर आधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 187

कित मुख गुर सालाहीऐ करण कारण समरथ॥
से मथे निहचल रहे जिन गुर धारिआ हथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

पारब्रहम परमेसर सतगुर आपे करणैहारा॥
चरण धूड़ तेरी सेवक मागै तेरे दरसन कउ बलिहारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 749

गुर करता गुर करणै जोग॥ गुर परमेसर है भी होग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

गुर सालाही सदा सुखदाता प्रभ नाराइण सोई॥
गुर परसाद परम पद पाइआ वडी वडिआई होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1258

गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह॥
गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 710

गुर नाराइण दयु गुर गुर सचा सिरजणहार॥
गुर तुठै सभ किछ पाइआ जन नानक सद बलिहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 218

13. गुरु आदि-जुगादि है, वह आदि-जुगादि जहाज़ है (जीवों को संसार सागर से पार ले जाने के लिए)

गुर की महिमा किआ कहा गुर बिबेक सत सर॥
ओह आद जुगादी जुगह जुग पूरा परमेसर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 397

सतगुर बाझहो मुकत किनेही॥ ओह आद जुगादी राम सनेही॥
दरगह मुकत करे कर किरपा बखसे अवगुण कीना हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1027-28

मसतक भार कलर सिर भारा॥ किउ कर भवजल लंघस पारा॥
सतगुर बोहिथ आद जुगादी राम नाम निसतारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1029

14. गुरु अचरज है, उसकी महिमा और महत्त्व का अनुमान नहीं किया जा सकता

जीअ जंत प्रभ सगल उधारे दरसन देखणहारे॥
गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 618

गुर पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंत न पारावारा॥
कर गह काढ लीओ जन अपुना बिख सागर संसारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

गुर समरथ गुर निरंकार गुर ऊचा अगम अपार॥
गुर की महिमा अगम है किआ कथै कथनहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

महिमा कही न जाए गुर समरथ देव॥
गुर पारब्रहम परमेसुर अपरंपर अलख अभेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 522

गुर की महिमा कथन न जाए॥ पारब्रहम गुर रहिआ समाए॥

गुरु अजुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ को न सकोई॥
जन नानक हर करतै आप बह टिकिआ आपे पैज रखै प्रभ सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

15. मालिक से अभेद होने की महत्ता

अब तउ जाए चढे सिंघासन मिले है सारिंगपानी॥
राम कबीरा एक भए है कोए न सकै पछानी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 969

संतन संग कबीरा बिगरिओ॥ सो कबीर रामै होए निबरिओ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1158

सगल कलेस निंदक भइआ खेद॥ नामे नाराइन नाही भेद॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1166

हरि और गुरु की बख़्शिश

परमार्थ का मार्ग आसान नहीं, अति कठिन है। कठोपनिषद् में आया है:

> **उत्तिष्ठत जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत।**
> **क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया, दुर्गंपथस्तत्कवयो वदन्ति॥**
>
> कठ उपनिषद्, 1:3:14

अर्थ: उठो, जागो, महापुरुषों के पास जाकर उनसे ज्ञान प्राप्त करो। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि यह मार्ग छुरे की धार की तरह तेज़ और मुश्किल है और इस पर चलना कठिन है।

क़ुरान शरीफ़ में इसको 'पुल सिरात' कहा है जो उस्तरे की धार की भाँति तीखा और बाल से भी बारीक़ है। भाई गुरदास जी भी कहते हैं: गुर सिक्खी वालों निक्की ते खंडयों तिक्खी है। वेद-शास्त्रों में भी यम-नियमों की कठिन विधियों और संयमों को पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर कहाँ एक अकेला, निर्बल और सामर्थ्यहीन, मोह-माया का शिकार तुच्छ जीव और कहाँ पाँच बली शत्रु (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार)! मनुष्य भवसागर से पार हो तो किस प्रकार?

यह सच है कि मालिक हमारे उद्धार के लिए सतगुरु को भेजता है, पर उनकी सेवा और रज़ा (इच्छा) में चलना कोई सरल बात नहीं है। जब तक मालिक और सतगुरु अपनी मेहर और बख़्शिश न करे, परमार्थ की कमाई अत्यंत कठिन है। वह मालिक बख़्शिंद (दानी) है, जिसे चाहे बख़्शे और अपने साथ मिला ले:

> आपे जगजीवन सुखदाता आपे बखस मिलाए॥
> जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आख सुणाए॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.32

हाँ, इतना अवश्य है कि जिसको वह बख़्शता है, उसका अपने अवतार सतगुरु से मिलाप करा देता है और सतगुरु उसको नाम (शब्द) के साथ जोड़ देता है, जिसके द्वारा जीव की मालिक तक रसाई (पहुँच) होती है:

विण सचे दूजा सेवदे हुइ मरसन बुट॥
नानक कउ गुर बखसिआ नामै संग जुट॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 315

करम होवै सतगुरू मिलाए॥ सेवा सुरत सबद चित लाए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 109-10

क्रिपा करह ता सतगुर मेलह हर हर नाम धिआई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 757

जो गुण हरि में हैं, वे ही सतगुरु में भी हैं; वह भी पतित-पावन और बख़्शिंद है। वह जीवों के पापों को क्षमा करके उनको ऐसे नामदान की बख़्शिश करता है जिससे उनका मनोबल ऊँचा रहता है:

पतित उधारण सतगुर मेरा मोहे तिस का भरवासा॥
बखस लए सभ सचै साहिब सुण नानक की अरदासा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 620

गुर पूरे की वडी वडिआई हर वडा सेव अतुल सुख पाइआ॥
गुर पूरै दान दीआ हर निहचल नित बखसे चड़ै सवाइआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 305

यहाँ तक कि वह अपने निंदकों के गुनाहों को भी क्षमा करके उन्हें अपने साथ मिला लेता है:

कोई निंदक होवै सतगुरू का फिर सरण गुर आवै॥
पिछले गुनह सतगुर बखस लए सतसंगत नाल रलावै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 855

वह अनेक जीवों के पाप धोकर उन्हें भवसागर से पार करता है:

कउण कउण अपराधी बखसिअन पिआरे साचै सबद वीचार॥
भउजल पार उतारिअन भाई सतगुर बेड़ै चाड़॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

गुरु सच्चा मालिक है, वह कृपा का सागर है, उसकी बख़्शिश द्वारा ही सब कुछ मिलता है:

गुर नाराइण दयु गुर गुर सचा सिरजणहार॥
गुर तुठै सभ किछ पाइआ जन नानक सद बलिहार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 218

हरि और गुरु की बख़्शिश क्या है? केवल नाम। वे सदैव अपने भक्तों को नाम की बढ़ाई प्रदान करते हैं और उसके द्वारा उनका कल्याण करते हैं:

हर भगतां नो नित नावै दी वडिआई बखसीअन नित चड़ै सवाई॥
हर भगतां नो थिर घरी बहालिअन अपणी पैज रखाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 316

अगम अगोचर दरस तेरा सो पाए जिस मसतक भाग॥
आप क्रिपाल क्रिपा प्रभ धारी सतगुर बखसिआ हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 406

लोक-परलोक में नाम से बढ़कर और कोई बख़्शिश नहीं है:

नावै जेवड होर धन नाही कोए॥ जिस नो बखसे साचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

नाम की बख़्शिश (नामदान) और हरि तक गति सत्संग और गुरु द्वारा मिलती है:

जिस नो बखसे दे वडिआई॥ गुर परसाद हर वसै मन आई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 159

भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद॥ साधसंग नानक बखसिंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 391

गुरु की बख़्शिश का साधन नाम की कमाई और हरि का निरंतर सिमरन है, जिसके द्वारा गुरु की मेहर प्राप्त होती है और मेहर से कमाई बनती है। दोनों अत्यंत आवश्यक हैं; जिस प्रकार गाड़ी दोनों पहियों से चलती है:

नाउ नानक बखसीस नदरी करम होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

राम नाम बिन कवन हमारा॥
सुख दुख सम कर नाम न छोडउ आपे बखस मिलावणहारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 416

इक दम साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाए॥
साह साह सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 506

भाणा मानने और हुक्म को पहचानने से भी गुरु की कृपा प्राप्त होती है:

जिन्ही पछाता हुकम तिन्ह कदे न रोवणा॥
नाउ नानक बखसीस मन माहे परोवणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 523

जब संत अपनी मौज से किसी पर बख़्शिश करते हैं तो कोई शक्ति नहीं जो उनकी बख़्शिश को मिटा सके, अर्थात् नाम का जो बीज वे हृदयरूपी धरती में बो देते हैं, वह अंकुरित हुए बिना कदापि नहीं रह सकता और एक दिन उसकी मालिक तक रसाई (पहुँच) अवश्य होगी:

करम मिलै सच पाईऐ धुर बखस न मेटै कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62

भगति करह मरजीवड़े गुरमुख भगति सदा होए॥
ओना कउ धुर भगति खजाना बखसिआ मेट न सकै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 589

काल और माया भी उस बीज को नष्ट नहीं कर सकते, क्योंकि गुरु उनसे बड़ा है। वह सत्पुरुष और हरि का रूप है। इसलिए ईश्वर (निरंजन) सूक्ष्म देश का स्वामी व परमेश्वर (ओ३म्) त्रिलोकी का स्वामी उसके किए हुए को मिटा या बदल नहीं सकते:

गुर की दात न मेटै कोई॥ जिस बखसे तिस तारे सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1030

गुर का सबद न मेटै कोए॥ गुर नानक नानक हर सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864-65

वाहिगुरु (परम पिता) की बख़्शिश अनंत है, जो कभी समाप्त नहीं हो सकती:

नानक पिंड बखसीस का कबहूं निखूटस नाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

यह बख़्शिश बड़े भाग्य से मिलती है:

अगम अगोचर दरस तेरा सो पाए जिस मसतक भाग॥
आप क्रिपाल क्रिपा प्रभ धारी सतगुर बखसिआ हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 406

यह बख़्शिश हो तो जीव आवागमन से बच जाता है:

आपे सचा बखस लए फिर होए न फेरा राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 571

आवण जाणा ना थीऐ निज घर वासा होए॥
सच खजाना बखसिआ आपे जाणै सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 993-94

यह बख़्शिश गुरुमुख पर होती है, मनमुख पर नहीं:

नानक सभ किछ आपे आप है दूजा नाही कोए॥
भगति खजाना बखसिओन गुरमुखा सुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 994

जे गुर झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई॥
गुरमुख बोलह सो थाए पाए मनमुख किछ थाए न पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

नाम का जाप बख़्शिश से होता है:

जिस तूं बखसह नाम जपाए॥ दूत न लाग सकै गुन गाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 416

इसलिए कभी गर्व नहीं करना चाहिए। मनुष्य कुछ भी करने-धरने में समर्थ नहीं:

करन करावनहार सुआमी॥ सगल घटा के अंतरजामी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 266

जब यह बात है तो नम्रता सहित शिष्य तन-मन से सतगुरु के द्वार पर पड़ा रहे और उनकी दया और बख़्शिश की सदा आशा रखे। आदि ग्रन्थ से नीचे कुछ प्रमाण देखें।

गुरबाणी

1. वाहिगुरु बख़्शिंद है

सोई सेविहो जीअड़े दाता बखसिंद॥
किलविख सभ बिनास होन सिमरत गोविंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 321

मिहरवान बखसिंद आप जप सचे तरणा॥
जो तुध भावै सो भला नानक दास सरणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 323

आप पछाणह सबद मरह मनहो तज विकार॥
गुर सरणाई भज पए बखसे बखसणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 430

जो पावह भांडे विच वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा॥
जन नानक कउ हर बखसिआ हर भगति भंडारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 449-50

तूं बखसीसी अगला नित देवह चड़ह सवाइआ॥ वडिआई वडा पाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 467

आनद मूल जगजीवन दाता सभ जन कउ अनद करहो हर धिआवै॥
तूं दाता जीअ सभ तेरे जन नानक गुरमुख बखस मिलावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 494

जीअ प्राण तन धन रखे कर किरपा राखी जिंद॥
नानक सगले दोख उतारिअन प्रभ पारब्रहम बखसिंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 46

देखै सुणै हदूर सद घट घट ब्रहम रविंद॥
अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 47

जिन चाखिआ से त्रिपतासिआ उह रस जाणै जिंद॥
संता संगत मन वसै प्रभ प्रीतम बखसिंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 48-49

संत अराधन सद सदा सभना का बखसिंद॥
जीउ पिंड जिन साजिआ कर किरपा दितीन जिंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 137

तूं दानां तूं बीनां मै बीचार किआ करी॥ नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी॥

संत नामदेव, आदि ग्रन्थ, पृ. 727

नाराइण सद सद बखसिंद॥ नाराइण कीने सूख अनंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 868

आप करे सच अलख अपार॥ हउ पापी तूं बखसणहार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 356

बहुते अउगण कूकै कोई॥ जा तिस भावै बखसे सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 357

आगै ही ते सभ किछ हूआ अवर कि जाणै गिआना॥
भूल चूक अपना बारिक बखसिआ पारब्रहम भगवाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 383

सभे गुनह बखसाए लइओन मेले मेलणहार॥
नानक आखण आखीऐ जे सुण धरे पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 428

2. वाहिगुरु जिसको चाहे स्वयं बख़्शता है, उसमें किसी का दख़ल नहीं

तूं सचा साहिब अत वडा तुहे जेवड तूं वड वडे॥
जिस तूं मेलह सो तुध मिलै तूं आपे बखस लैह लेखा छडे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 317

सची दरगह मंनीअन गुर कै प्रेम पिआर॥
गणत तिना दी को किआ करे जो आप बखसे करतार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 143

मेरे मन सो प्रभ सदा नाल है सुआमी कहो किथै हर पहो नसीऐ॥
हर आपे बखस लए प्रभ साचा हर आप छडाए छुटीऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 170

एह वैरी मित्र सभ कीतिआ नह मंगह मंदा॥
लेखा कोए न पुछई जा हर बखसंदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1096

आखण आखै बकै सभ कोए॥ आपे बखस मिलाए सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 362

सरब निरंतर आपे आप॥ किसै न पूछे बखसे आप॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 412

इक आपे बखस मिलाइअन अनदिन नामे लाए॥
सच कमावह सच रहहे सचे सच समाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 429

पारब्रहम प्रभ दइआ धारी बखस लीन्हे आप॥
सरब सुख हर नाम दीआ नानक सो प्रभ जाप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 501

नानक बखसे पूछ न होए॥ दूजा मेटे एको सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 353

आपे जगजीवन सुखदाता आपे बखस मिलाए॥
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आख सुणाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 32

हर प्रभ दाता एक तूं तूं आपे बखस मिलाए॥
जन नानक सरणागती जिउ भावै तिवै छडाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 234

जिस नो साहिब वडा करे सोई वड जाणी॥
जिस साहिब भावै तिस बखस लए सो साहिब मन भाणी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

भै ते निरभउ पाईऐ मिल जोती जोत अपार॥
नानक खसमै भावै सा भली जिस नो आपे बखसे करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

आपे पुंन सभ आप कराए आप अलिपत वरतीजै॥
आपे सुख दुख देवै करता आपे बखस करीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 551

आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइआ॥
आप अभुल न भुलै कब ही सभ सच तपावस सच थिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 553

आपे सेवा लाइअन आपे बखस करे॥
सभना का मा पिउ आप है आपे सार करे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 653

सच खाणा सच पैनणा सच टेक हर नाउ॥
जिस नो बखसे तिस मिलै महली पाए थाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 565

अणहोदा आप गणाइदे जम मार करे तिन खुआर॥
नानक किस नो आखीऐ जा आपे बखसणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 589

आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाण॥
आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सच नीसाण॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 606

हर जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबद सुहाइआ॥
नानक आपे बखस मिलाए जुग जुग सोभा पाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 769

जा आए ता तिनह पठाए चाले तिनै बुलाए लइआ॥
जो किछ करणा सो कर रहिआ बखसणहारै बखस लइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 907

एह मन माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबद वीचारी॥
आपे बखसे मेल मिलाए नानक सरण तुमारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 908

सभ किछ तेरा खेल है सच सिरजणहारा॥
जिस भावै तिस बखस लैह सच सबद समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 948

जिस बुझाए सो बुझसी सचै सबद पतीनी॥
सभ आपे आप वरतदा आपे बखस मिलाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 949

रस कस सादा बाहरा सची वडिआईऐ॥
जिस नो बखसे तिस दे आप लए मिलाईऐ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 951

लालै लालच तिआगिआ पाइआ हर नाउ॥
तू बखसह ता मेल लैह नानक बल जाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1011

गुरमत साची साचा वीचार॥ आपे बखसे दे वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 666

गुर परसादी हंउमै जाए॥ आपे बखसे लए मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 666

आपे करणी कार आप आपे करे रजाए॥
आपे किस ही बखस लए आपे कार कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1087

आप करे किस आखीऐ आपे बखसणहार॥
गुर सबदी मैल उतरै ता सच बणिआ सीगार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 755

मनमुख दुखीए सदा भ्रम भुले तिन्ही बिरथा जनम गवाइआ॥
नानक नाम रते सेई जन समधे जे आपे बखस मिलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 852

धोते मूल न उतरह जे सउ धोवण पाहे॥
नानक बखसे बखसीअह नाहे त पाही पाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 149

मुंध इआणी भोली निगुणीआ जीउ पिर अगम अपारा॥
आपे मेल मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 245

लेखै कतह न छूटीऐ खिन खिन भूलनहार॥
बखसनहार बखस लै नानक पार उतार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

तुध भावै ता बखस लैह खोटे संग खरे॥
नानक भावै पारब्रहम पाहन नीर तरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 261

तू पिर गुणवंता हउ अउगुणिआरा॥ मै निरगुण बखस नानक वेचारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 561

सभ गुण तेरे ठाकुर मेरे कित मुख तुध सालाही॥
गुण अवगुण मेरा किछ न बीचारिआ बखस लीआ खिन माही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 577

जैसा बालक भाए सुभाई लख अपराध कमावै॥
कर उपदेस झिड़के बहु भाती बहुड़ पिता गल लावै॥
पिछले अउगुण बखस लए प्रभ आगै मारग पावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 624

लेखा मंगै देवणा पुछै कर बीचार जीउ॥
सचे की लिव उबरै बखसे बखसणहार जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 751

दोख हमारे बखसिअन अपणी कल धारी॥
मन बांछत फल दितिअन नानक बलिहारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 820

पिछले गुनह बखसाए जीउ अब तू मारग पाए॥
हर की चरणी लाग रहा विचहो आप गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 994

लाले विच गुण किछ नही लाला अवगणिआर॥
तुध जेवड दाता को नही तू बखसणहार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1011

सभे इछा पूरीआ लग प्रभ कै पावै॥
हउ निरगुण ढाढी बखसिओन प्रभ पुरख वेदावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1097

3. हरि और गुरु की बख़्शिश नाम, अमृत, सच और भक्ति है

हर भगतां नो नित नावै दी वडिआई बखसीअन नित चड़ै सवाई॥
हर भगतां नो थिर घरी बहालिअन अपणी पैज रखाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 316

इक आपणी सिफती लाइअन दे सतगुर मती॥
इकना नो नाउ बखसिओन असथिर हर सती॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 948

अगम अगोचर दरस तेरा सो पाए जिस मसतक भाग॥
आप क्रिपाल क्रिपा प्रभ धारी सतगुर बखसिआ हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 406

जिन्ही पछाता हुकम तिन्ह कदे न रोवणा॥
नाउ नानक बखसीस मन माहे परोवणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 523

धुर भगत जना कउ बखसिआ हर अंम्रित भगति भंडारा॥
मूरख होवै सो उन की रीस करे तिस हलत पलत मुह कारा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 733

हर भगति खजाना बखसिआ गुर नानक कीआ पसाउ जीउ॥
मै बहुड़ न त्रिसना भुखड़ी हउ रजा त्रिपत अघाए जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 763

इह सच सभना का खसम है जिस बखसे सो जन पावहे॥
कहै नानक सच सोहिला सचै घर गावहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 922

4. नाम से बढ़कर और कोई बख़्शिश नहीं

नावै जेवड होर धन नाही कोए॥ जिस नो बखसे साचा सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 364

5. नाम की बख़्शिश मालिक स्वयं प्रदान करता है

राम नाम धन निरमलो जे देवै देवणहार॥
आगै पूछ न होवई जिस बेली गुर करतार॥
आप छडाए छुटीऐ आपे बखसणहार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62-63

6. नाम का जाप भी बख़्शिश से ही होता है

जिस तूं बखसह नाम जपाए॥ दूत न लाग सकै गुन गाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.416

7. नाम और हरि की बख़्शिश गुरु और सत्संग द्वारा होती है

मन करहला मेरे पिआरिआ विच देही जोत समाल॥
गुर नउ निध नाम विखालिआ हर दात करी दइआल॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.235

जिस नो बखसे दे वडिआई॥ गुर परसाद हर वसै मन आई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.159

जिस नो बखसे हर दे वडिआई॥ गुर परसाद वसै मन आई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.665

अवगण बखसणहारा कामण कंत पिआरा घट घट रहिआ समाई॥
प्रेम प्रीत भाए भगती पाईऐ सतगुर बूझ बुझाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.245

गुर पूरे की वडी वडिआई हर वडा सेव अतुल सुख पाइआ॥
गुर पूरै दान दीआ हर निहचल नित बखसे चड़ै सवाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.305

8. सतगुरु पतित उधारन है और गुनाहों को बख़्शने वाला है

विण सचे दूजा सेवदे हुइ मरसन बुट॥
नानक कउ गुर बखसिआ नामै संग जुट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.315

गगै गोबिद चित कर मूड़े गली किनै न पाइआ॥
गुर के चरन हिरदै वसाए मूड़े पिछले गुनह सभ बखस लइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.435

पतित उधारण सतगुर मेरा मोहे तिस का भरवासा॥
बखस लए सभ सचै साहिब सुण नानक की अरदासा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.620

कोई निंदक होवै सतगुरू का फिर सरण गुर आवै॥
पिछले गुनह सतगुर बखस लए सतसंगत नाल रलावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 855

9. गुरु और साधु की संगति द्वारा शिष्य अपने आप को और अपने कुलों को बख़्शवा लेता है

गुर परसादी देवणहार॥ नानक बखसे बखसणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 363

भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद॥ साधसंग नानक बखसिंद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 391

जिउ भावै तिउ रख तू सभ करे तेरा कराइआ॥
इकना बखसह मेल लैह गुरमती तुधै लाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 139

जिन कारण गुरू विसारिआ से न उपकरे अंती वार॥
नानक गुरमती सुख पाइआ बखसे बखसणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 594

आपे बखसे दइआ कर गुर सतगुर बचनी॥
अनदिन सेवी गुण रवा मन सचै रचनी॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 791

निगुणिआ नो आपे बखस लए भाई सतगुर की सेवा लाए॥
सतगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नाम चित लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

हर जीउ आपे बखस मिलाए॥
गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतगुर लए रलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

कउण कउण अपराधी बखसिअन पिआरे साचै सबद वीचार॥
भउजल पार उतारिअन भाई सतगुर बेड़ै चाड़॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

जो सतगुर सेवह आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाए॥
जनम सवारी आपणा भाई कुल भी लई बखसाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.638

ओए आप दुखी सुख कबहू न पावह जनम मरह मर जाहे॥
नानक बखस लए प्रभ साचा जे गुर चरनी चित लाहे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.652

10. बख़्शिश हो तो गुरु का मिलाप होता है

जा हर बखसे ता गुर मिलै असथिर रहै समाए॥
नानक मन ही ते मन मानिआ ना किछ मरै न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.513-14

करम होवै सतगुरू मिलाए॥ सेवा सुरत सबद चित लाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.109-10

11. नाम की कमाई और मालिक का लगातार स्मरण उसकी बख़्शिश पाने का साधन है

राम नाम बिन कवन हमारा॥
सुख दुख सम कर नाम न छोडउ आपे बखस मिलावणहारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.416

सहसा रोग न छोडई दुख ही मह दुख पाहे॥
नानक नदरी बखस लेह सबदे मेल मिलाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.645

ढाह उसारे साज जाणै सभ सोए॥
नाउ नानक बखसीस नदरी करम होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.729

इक दम साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाए॥
साह साह सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.506

12. बख़्शिश हुक्म पहचानने और भाणा मानने से होती है

जिन्ही पछाता हुकम तिन्ह कदे न रोवणा॥
नाउ नानक बखसीस मन माहे परोवणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 523

भाणै बखसे पूरा धणी सच कार कमाईऐ॥
विछुड़िआ कउ मेल लए गुर कउ बल जाईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1011

13. मालिक की बख़्शिश को कोई नहीं मिटा सकता

इकनै भांडे साजिऐ इक चानण तिहु लोएं॥
करम मिलै सच पाईऐ धुर बखस न मेटै कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 62

जो तेरै रंग राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुख नासा॥
तेरी बखस न मेटै कोई सतगुर का दिलासा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 750

भगति करह मरजीवड़े गुरमुख भगति सदा होए॥
ओना कउ धुर भगति खजाना बखसिआ मेट न सकै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 589

14. प्रभु की बख़्शिश अनंत है

इक लोकी होर छमिछरी ब्राहमण वट पिंड खाए॥
नानक पिंड बखसीस का कबहूं निखूटस नाहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 358

इक आपे गुरमुख कीतिअन बूझन वीचारा॥
भगति भी ओना नो बखसीअन अंतर भंडारा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 425

15. यह बख़्शिश गुरुमुख पर होती है, मनमुख पर नहीं

भगति करह मरजीवड़े गुरमुख भगति सदा होए॥
ओना कउ धुर भगति खजाना बखसिआ मेट न सकै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 589

सो सच तेरै नाल है गुरमुख नदर निहाल॥
आपे बखसे मेल लए सो प्रभ सदा समाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.755

जे गुर झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई॥
गुरमुख बोलह सो थाए पाए मनमुख किछ थाए न पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.758

नानक सभ किछ आपे आप है दूजा नाही कोए॥
भगति खजाना बखसिओन गुरमुखा सुख होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.994

गुरमुख आपे बखसिओन हर नाम समाणे॥
आपे भगती लाइओन गुर सबद नीसाणे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1088

मनमुख दुखीए सदा भ्रम भुले तिन्ही बिरथा जनम गवाइआ॥
नानक नाम रते सेई जन समधे जे आपे बखस मिलाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.852

16. बख़्शिश हो तो जीव आवागमन और यम से बच जाता है

ए मन मेरिआ आवा गउण संसार है अंत सच निबेड़ा राम॥
आपे सचा बखस लए फिर होए न फेरा राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.571

सभ को जम के चीरे विच है जेता सभ आकार॥
हुकमी ही जम लगदा सो उबरै जिस बखसै करतार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.851

आवा गउण मिटै गुर सबदी आपे परखै बखस लइआ॥
एका बेदन दूजै बिआपी नाम रसाइण वीसरिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.940-41

आवण जाणा ना थीऐ निज घर वासा होए॥
सच खजाना बखसिआ आपे जाणै सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.993-94

17. बख़्शिश बड़े भाग्य से मिलती है

अगम अगोचर दरस तेरा सो पाए जिस मसतक भाग॥
आप क्रिपाल क्रिपा प्रभ धारी सतगुर बखसिआ हर नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 406

पूरै भाग सतगुर पाईऐ जे हर प्रभ बखस करे॥
ओपावा सिर ओपाउ है नाउ परापत होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 851

18. प्रार्थना

आपे ही चड़ लंघदा पिआरा कर चोज वेखै पातसाह॥
आपे आप दइआल है पिआरा जन नानक बखस मिलाह॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 604

दइआ दइआ कर राखहो हर जीउ हम दीन तेरी सरणाए॥
हम बारिक तुम पिता प्रभ मेरे जन नानक बखस मिलाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 881

सद बखसिंद सदा मिहरवाना सभना दे अधारी॥
नानक दास संत पाछै परिओ राख लेहो इह बारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 713

मेरे हर जीउ सभ को तेरै वस॥
असा जोर नाही जे किछ कर हम साकह जिउ भावै तिवै बखस॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 736

गणती गणी न छूटै कतहू काची देह इआणी॥
क्रिपा करहो प्रभ करणैहारे तेरी बखस निराली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 748

गुरु द्वारा सँभाल

गुरु और शिष्य का संबंध बड़ा गूढ़ है जिसकी मिसाल नहीं दी जा सकती। फिर भी संत-महात्माओं ने समझाने का प्रयत्न किया है, ताकि उस संबंध के बारे में हमें कुछ बोध हो सके। संसार के सारे रिश्ते स्वार्थ और ग़रज़ से बंधे हुए हैं, गुरु का शिष्य के साथ रिश्ता पवित्र है, निस्स्वार्थ है। इस संबंध को समझने के लिए हमें माता और बच्चे के प्यार से कुछ सहायता मिल सकती है। माता जब बच्चे को जन्म देती है, उसकी कितनी सँभाल करती है, उसके दुःख में दुःखी और सुख में सुखी होती है। बच्चे को अपनी कोई सुधि नहीं होती, अपने भले-बुरे का ज्ञान नहीं होता, उसे मलिनता और सफ़ाई की पहचान नहीं होती। बच्चे को दुःख हो तो माता उसके दुःख के कारण बेचैन हो जाती है, उसके दुःख को दूर करने का यत्न करती है और रातें जागकर बिताती है। जब बालक प्रसन्न होता है तो उसकी मुस्कराहट को देखकर माता का तन-मन खिल उठता है। बच्चा मल-मूत्र करके उसमें हाथ मारता है और कई बार मुँह में भी डाल लेता है। माता बच्चे से घृणा नहीं करती और अपने सुख की चिंता न करके बच्चे को साफ़-सुथरा रखती है, दूध पिलाती है, लोरियाँ गाकर सुलाती है। यदि बच्चा रात को पेशाब कर दे तो सर्दी की रातों में भी वह बच्चे को उठाकर बिस्तरे के सूखे हिस्से में सुलाती है, और स्वयं सारी रात भीगे हुए भाग में पड़ी रहती है।

जब बच्चा छोटा होता है, वह अपने घराने की बोली से अनजान होता है। माता बच्चे की आँखों की ओर निहारती है और बच्चा माता की आँखों की ओर देखता है। इस प्रकार बेज़बानी की ज़बान (मूक भाषा) द्वारा बच्चे को अपनी बोली के समझने और बोलने योग्य बना लेती है। माता बच्चे का हर प्रकार से ध्यान रखती है कि कहीं वह आग में हाथ न डाल दे। वह उसको खिलाती-पिलाती है और स्वच्छ रखती है। बच्चे को हृदय से, ध्यानपूर्वक मति और बुद्धि देती है, यहाँ तक कि बच्चा सयाना और जवान हो जाता है। ठीक इसी प्रकार, शिष्य जब सतगुरु के घर जन्म लेता है तब वह परमार्थ से बिलकुल अनजान होता है, उसकी संपूर्ण बुद्धि और मति एक प्रकार की मलिनता की

भाँति होती है जिसमें वह दिन-रात फँसा रहता है। मन-बुद्धि ही फैलाव के कारण हैं, गुरुदेव मन और इंद्रियों को स्थिर करने का साधन प्रदान करते हैं और अपने आंतरिक ध्यान द्वारा इनको एकाग्र करते हैं और बुद्धि को स्थिर करके इस मलिनता से शिष्य को निर्मल करते हैं। परमार्थ में तो मन और इंद्रियों का वश में होना और बुद्धि का स्थिर होना आवश्यक है। साथ ही गुरु अपनी मेहरभरी दृष्टि द्वारा आंतरिक स्थिरता प्रदान करके शिष्य को उस भाषा को बोलने और समझने योग्य बना देते हैं जो बेज़बानी की ज़बान में है। गुरु को शिष्य की बेहतरी और उन्नति का हर समय ध्यान रहता है। वे यह यत्न करते हैं कि शिष्य सब प्रकार की मलिनताओं से पवित्र व निर्मल रहे और उसके सारे अवगुण धुल जाएँ:

सुखदाता गुर सेवीऐ सभ अवगण कढै धोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 43

पूर्ण गुरु शिष्य के सारे दुर्मति के मैल को दूर करता है और सुमति प्रदान करके उसे सयाना बनाता है और उसके बंधनों को काट देता है। ऐसा गुरु धन्य है!

धंन धंन गुरू गुर सतगुर पाधा जिन हर उपदेस दे कीए सिआणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

सिख की गुर दुरमत मल हिरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

सतगुर सिख के बंधन काटै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

गुरु शिष्य को कभी कठिन घड़ी नहीं देखने देता। जिस प्रकार बच्चा अनजान होता है, माता उसको आनेवाली मुसीबतों से बचाती है, उसी प्रकार गुरु शिष्य की आपत्ति-विपत्ति को मिटाता रहता है, जिसके बारे में वह शिष्य को कुछ पता तक नहीं चलने देता:

अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरद समाले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682

गुरु शिष्य के सारे रोग और संताप मिटा देता है। प्रारब्ध के लिखे हुए दु:ख अपने बल द्वारा हलके कर देता है और शिष्य को सांसारिक दु:खों को तुच्छ समझने की शक्ति प्रदान करता है:

भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप॥ तती वाउ न लगई सतगुर रखे आप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 218

वह शिष्य को नाम की दात प्रदान करता है और आत्मिक जीवन की रोटी खिलाकर और आत्मिक जीवन का पानी पिलाकर शिष्य को जाग्रत और जवान कर देता है और उसका लोक-परलोक सँवार देता है:

सतगुर सिख की करै प्रतिपाल॥ सेवक कउ गुर सदा दइआल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

सतगुर सिख का हलत पलत सवारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

सतगुरु शिष्य को माता की तरह ही नहीं, बल्कि इससे भी बढ़कर, अटूट प्यार के साथ पालता है और सदा उसको अपनी दृष्टि में रखता है। वह प्रेम का समुद्र है:

जिउ जननी सुत जण पालती राखै नदर मझार॥
अंतर बाहर मुख दे गिरास खिन खिन पोचार॥
तिउ सतगुर गुरसिख राखता हर प्रीत पिआर॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

माता प्रीत करे पुत खाए॥ मीने प्रीत भई जल नाए॥
सतगुर प्रीत गुरसिख मुख पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 164

गुरु को शिष्य से दूर या पास होने में कोई अंतर नहीं होता। उसका हाथ बड़ा लंबा होता है। उसका हाथ परमात्मा का हाथ होता है और उसके हाथों में परमात्मा की शक्ति होती है:

दस्ते-पीर अज़ गायबाँ कोताह नीस्त, दस्ते-ऊ जुज़ क़ब्जा-ए-अल्लाह नीस्त।

मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 312

दस्ते-ऊ दस्ते-ख़ुदा, चश्मे-ऊ मसते-ख़ुदा।

दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 116

पहाड़ों में, उजाड़ों में, समुद्रों में और उनसे भी परे गुरु का हाथ शिष्य के सिर पर रहता है और उसकी सँभाल करता रहता है। कूँज अपने बच्चों को छोड़कर दूर चली जाती है, पर ध्यान बच्चों में रखती है। कछुआ अंडे ख़ुश्की (धरती) में देकर पानी में रहता है, परंतु यह ध्यान द्वारा अंडों को पकाता रहता है। इसी प्रकार गुरु शिष्य को सदा अपनी दृष्टि में रखकर उसका पालन करता है और शिष्य को अपनी आत्मिक शक्ति द्वारा सँभालता रहता है, ताकि वह त्रिगुणात्मक अंडे से बाहर निकल आए:

जैसी गगन फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली॥
ओह राखै चीत पीछै बिच बचरे नित हिरदै सार समाली॥
तिउ सतगुर सिख प्रीत हर हर की गुर सिख रखै जीअ नाली॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

नानक सतगुर सिख कउ जीअ नाल समारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

हाथ दे राखै अपने कउ सास सास प्रतिपाले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682

गुरु का शिष्य से शुद्ध प्रेम का रिश्ता होता है, वह अपार दया करके लोगों को मालिक के घर जाने का बुलावा देता है और मालिक के आगे प्रार्थना करता है कि वह हमें बख़्श दे और इन बंधनों से मुक्त कर दे:

ख़लक़ रा ख़्वानद सूये दरगाहे-ख़ास,
हक़ रा ख़्वानद अफ़ू कुन दिह ख़लास।

मौलाना रूम

सतगुरु शिष्य का सच्चा मित्र है। जहाँ कहीं कठिनाई आती है वह पहुँचता है और शिष्य की कठिनाइयों को दूर करता रहता है, इसका शिष्य को पता भी नहीं चलता। गुरु और शिष्य के बीच में प्रतिदिन इस प्रकार की घटनाएँ घटती रहती हैं, जिनका शिष्य अनुभव करता रहता है। इतिहास इस प्रकार के वृत्तांतों से भरे पड़े हैं। प्रकट रूप में भी कई बार ऐसी बातें दिखाई देती हैं, जिनको बाहर की बुद्धि ठीक नहीं समझती, पर उनमें भी शिष्य का लाभ और भलाई छुपी होती है, जिसका बाद में पता चलता है। बच्चा चैन से सोया पड़ा है, माता सवेरे

उसके सिरहाने बैठकर किस प्रेमभरी दृष्टि के साथ उसके मुँह की ओर निहारती है, पंखा करती है और प्रतीक्षा करती है कि बच्चा किस समय आँखें खोले और इसी प्रकार सतगुरु मेहरभरी दृष्टि द्वारा अचेत शिष्य की राह देखता है कि मेरा शिष्य कब मोह-माया की निद्रा से जागता है।

यह तो रही इस संसार की बात। सतगुरु शिष्य की मौत के समय, जो सबसे अधिक कष्ट का समय होता है, स्वयं आकर खड़ा हो जाता है, शिष्य की सुरत को साथ ले चलता है और अगली दुनिया में जहाँ लेखा माँगा जाता है, वहाँ आ खड़ा होता है और इस प्रकार अंत समय सहायता करता है:

सचा सतगुर सेव सच सम्हालिआ॥
अंत खलोआ आए जे सतगुर अगै घालिआ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1284

सजण सेई नाल मै चलदिआ नाल चलंन्हि॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंन॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

मेरा गुर परमेसर सुखदाई॥ पारब्रहम का नाम द्रिड़ाए अंते होए सखाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

मौलाना रूम फ़रमाते हैं, "हे मूढ़ मनुष्य! तू जल्दी से जल्दी किसी ऐसे (मुर्शिद) का पल्ला पकड़ ताकि तू दूसरी दुनिया की मुसीबतों से बच जाए।"

दामने-ऊ गीर जू तर बे गुमाँ, ता रही अज़ आफ़ते-आख़िर ज़मां।
मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 73

संसार के लोगों और वस्तुओं का साथ कच्चा यानी अस्थिर है। कोई इस संसार में ही दुःखों और कठिनाइयों के समय साथ छोड़ जाते हैं, कोई बिरले हैं जो अंत समय तक साथ निभाते हैं, पर सतगुरु शिष्य का सच्चा रक्षक और साथी है, वह आवश्यकता और कठिनाई में सदा अंग-संग रहता है और मृत्यु के समय और बाद में भी साथ नहीं छोड़ता:

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ ढूढ सजण संत पकिआ॥
ओए जीवंदे विछुड़ह ओए मुइआ न जाही छोड़॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1102

सतगुरु द्वारा चेताई हुई आत्मा को अंत समय यम नहीं ले जा सकता, बल्कि गुरु स्वयं साथ ले जाता है। तुलसी साहिब फ़रमाते हैं, जिस प्रकार सोने को कभी ज़ंग नहीं लगता और लोहे को घुन नहीं खाता, इसी प्रकार गुरुभक्त, भला हो या बुरा, कभी नरकों में नहीं जाता:

सोना काई नहिं लगै, लोहा घुन नहिं खाय।
बुरा भला जो गुर-भगत, कबहूँ नरक न जाय॥

संतबानी संग्रह, भाग 1, पृ. 214

सतगुरु दोनों लोकों में सदा सहायक है और जहाँ मुसीबत आती है वहाँ शिष्य को छुड़ा लेता है। उसके सिवाय हमारा कोई बेली (सहायक) नहीं है:

मै हर हर खरच लइआ बंन पलै॥ मेरा प्राण सखाई सदा नाल चलै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 94

ऐथै ओथै रखवाला॥ प्रभ सतगुर दीन दइआला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

सो सतगुर पिआरा मेरै नाल है जिथै किथै मैनो लए छडाई॥
तिस गुर कउ साबास है जिन हर सोझी पाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 588

सतगुर बाझ न बेली कोई॥ ऐथै ओथै राखा प्रभ सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1031

सौभाग्य से जब गुरु मिल जाए तब हमारे लोक-परलोक के जीवन का बीमा हो जाता है। वह बड़ा मेहरबान है। वह बिना किसी स्वार्थ के और बग़ैर कोई रिश्वत लिए, आवश्यकता आने पर ख़तरनाक मुसीबतों के समय, हमारी सच्ची सहायता करता है:

मिहरबां बे-रिश्वतां यारी कुनां, दर मक़ामे-सख़्त ओ दर रूदे-गराँ।

मौलाना रूम

गुरु ग़रीब-निवाज़ है। ग़रीबों की लाज रखना गुरु का बिरद या स्वभाव है वह अपनी मेहर द्वारा जीवों की सहायता करता है। उसकी संगति सबसे अधिक

फलदायक है। यदि गुरु किसी के पक्ष में हो और उसके विरुद्ध लाखों भुजाएँ भी हों, तो भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं:

जाम गुरू होए वल लख बाहे किआ किजइ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

वे लोग भाग्यशाली हैं जिनका सतगुरु से मिलाप हो गया। उन्हें किसी बात की चिंता नहीं। अब आदि ग्रन्थ से कुछ प्रमाण देखें।

गुरवाणी

1. सतगुरु शिष्य की माता के समान सँभाल करता है, उसको साँस-साँस चेताकर, ध्यान देकर पालन करता है और अनेक विकारों और विघ्नों से बचाता है और सदा अंग-संग रहता है

जिउ जननी सुत जण पालती राखै नदर मझार॥
अंतर बाहर मुख दे गिरास खिन खिन पोचार॥
तिउ सतगुर गुरसिख राखता हर प्रीत पिआर॥
मेरे राम हम बारिक हर प्रभ के है इआणे॥
धंन धंन गुरू गुर सतगुर पाधा जिन हर उपदेस दे कीए सिआणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

माता प्रीत करे पुत खाए॥ मीने प्रीत भई जल नाए॥
सतगुर प्रीत गुरसिख मुख पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 164

जैसी गगन फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली॥
ओह राखै चीत पीछै बिच बचरे नित हिरदै सार समाली॥
तिउ सतगुर सिख प्रीत हर हर की गुर सिख रखै जीअ नाली॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 168

सतगुर सिख की करै प्रतिपाल॥ सेवक कउ गुर सदा दइआल॥
सिख की गुर दुरमत मल हिरै॥ गुर बचनी हर नाम उचरै॥
सतगुर सिख के बंधन काटै॥ गुर का सिख बिकार ते हाटै॥
सतगुर सिख कउ नाम धन दे॥ गुर का सिख वडभागी हे॥

सतगुर सिख का हलत पलत सवारै॥
नानक सतगुर सिख कउ जीअ नाल समारै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286

भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप॥
तती वाउ न लगई सतगुर रखे आप॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 218

गुर पूरै राखे दे हाथ॥ नानक पारब्रहम समराथ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 184

जिस तूं रखह हथ दे तिस मार न सकै कोए॥
सुखदाता गुर सेवीऐ सभ अवगण कढै धोए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 43

गुर पूरे राखिआ दे हाथ॥ प्रगट भइआ जन का परताप॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 396

त्रै गुण मोहे मोहिआ आकास॥ हम सतगुर राखे दे कर हाथ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 370

माइआ मोह सभो जग बाधा॥
हउमै पचै मनमुख मूराखा॥ गुर नानक बाह पकर हम राखा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 394

2. मालिक अपने भक्तों की सँभाल करता है

इआनप ते सभ भई सिआनप प्रभ मेरा दाना बीना॥
हाथ दे राखै अपने कउ काहू न करते कछु खीना॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 823

तेरी टेक तेरा आधारा हाथ दे तूं राखह॥
जिस जन ऊपर तेरी किरपा तिस कउ बिप न कोऊ भाखै॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 383

दुए कर जोड़ करी बेनंती ठाकुर अपना धिआइआ॥
हाथ दे राखे परमेसर सगला दुरत मिटाइआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 499

हाथ दे राखिओ अपुना कर बिरथा सगल मिटाई॥
निंदक के मुख काले कीने जन का आप सहाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 675

अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरद समाले॥
हाथ दे राखै अपने कउ सास सास प्रतिपाले॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682

जिस के से फिर तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप॥
हाथ दे राखे जन अपने हर होए माई बाप॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 714

महा अगन ते तुध हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई॥
तेरा माण ताण रिद अंतर होर दूजी आस चुकाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 748

मन तन अंतर वस दूखा नास होए॥ हथ दे आप रख विआपै भउ न कोए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 961

3. पूरा सतगुरु दोनों जहानों में सदा अंग-संग रहता है और सदा सहायक होता है

मै हर हर खरच लइआ बंन पलै॥ मेरा प्राण सखाई सदा नाल चलै॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 94

सो सतगुर पिआरा मेरै नाल है जिथै किथै मैनो लए छडाई॥
तिस गुर कउ साबास है जिन हर सोझी पाई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 588

ऐथै ओथै रखवाला॥ प्रभ सतगुर दीन दइआला॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 628

सतगुर बाझ न बेली कोई॥ ऐथै ओथै राखा प्रभ सोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1031

सदा सदा मन नाम सम्हाल॥
गुर पूरे की सेवा पाइआ ऐथै ओथै निबहै नाल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1271

हलत पलत सवारिओन निहचल दितीअन जाए॥
संसार सागर ते रखिअन बहुड़ न जनमै धाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 136

4. सतगुरु अंत समय में और यम के दरबार में भी सहायक होता है

सचा सतगुर सेव सच सम्हालिआ॥
अंत खलोआ आए जे सतगुर अगै घालिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1284

अनदिन साहिब सेवीऐ अंत छडाए सोए॥
सुण सुण मेरी कामणी पार उतारा होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 660

मेरा गुर परमेसर सुखदाई॥
पारब्रहम का नाम द्रिड़ाए अंते होए सखाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

हर जप मंत गुर उपदेस लै जापहो तिन्ह अंत छडाए जिन्ह हर प्रीत चितासा॥
जन नानक अनदिन नाम जपहो हर संतहो इह छूटण का साचा भरवासा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 860

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ ढूढ सजण संत पकिआ॥
ओए जीवंदे विछुड़ह ओए मुइआ न जाही छोड़॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1102

सजण सेई नाल मै चलदिआ नाल चलंन्ह॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंन॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

गुरु का मस्तक पर हाथ

सतगुरु दया का पुंज होता है। उसके बख़्शिश करने के ढंग निराले हैं। किसी को मेहर की एक दृष्टि द्वारा ही निहाल कर देता है। उसके अंदर नाम की झंकार हो रही है। यदि वह प्रसन्न होकर किसी सेवक के सिर या मस्तक पर हाथ रख दे तो वह सेवक निहाल हो जाता है। गुरवाणी में मस्तक पर हाथ रखने के अनेक फलों का विवरण दिया गया है। सतगुरु शिष्य के सिर पर हाथ रखकर मालिक के दर्शन करा सकता है। अंतर में शब्द (नाम) प्रकट हो जाता है और शिष्य सतगुरु के कर कमलों से निकलती रूहानी लहरों से निहाल हो जाता है, इससे उसके पापों का नाश हो जाता है:

मै सुखी हूं सुख पाइआ॥ गुर अंतर सबद वसाइआ॥
सतगुर पुरख विखालिआ मसतक धर कै हथ जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.73

मेरै हीअरै रतन नाम हर बसिआ गुर हाथ धरिओ मेरै माथा॥
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुर नाम दीओ रिन लाथा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.696

जिनके मस्तक पर सतगुरु हाथ रखें वे बड़े भाग्य वाले हैं, पर ऐसे जीव बिरले ही होते हैं:

तिस सालाही जिस हर धन रास॥ सो वडभागी जिस गुर मसतक हाथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1155

जिस मसतक गुर धरिआ हाथ॥ कोट मधे को विरला दास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1340

चारों दिशाओं में वह हाथ शिष्य की सहायता करता है और ऐसे शिष्य को संसार में किसी प्रकार की चिंता नहीं होती। उसके पैरों पर सब जगत झुकता है

और खंड-ब्रह्मांड सभी उसको नमस्कार करते हैं, क्योंकि पूरे गुरु की कृपा द्वारा वह भी पूर्ण महात्मा हो जाता है:

चतुर दिसा कीनो बल अपना सिर ऊपर कर धारिओ॥
क्रिपा कटाख्य अवलोकन कीनो दास का दूख बिदारिओ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 681

दान बडौ अतिवंत महाबलि सेवक दास कहिओ इह तथ॥
ताहे कहा परवाह काहू की जा कै बसीस धरिओ गुर हथ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1405

तिस कउ जगत निविआ सभ पैरी पइआ जस वरतिआ लोई॥
तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकार करह
जिस कै मसतक हथ धरिआ गुर पूरै सो पूरा होई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

ऐसे शिष्य धन्य हैं जिनका सतगुरु से मिलाप हो गया है और जो उसकी छत्रछाया में नित्य चढ़ती कला में रहते हैं।

गुरवाणी

1. शिष्य के मस्तक या सिर पर गुरु के हाथ रखने का फल

मै सुखी हूं सुख पाइआ॥ गुर अंतर सबद वसाइआ॥
सतगुर पुरख विखालिआ मसतक धर कै हथ जीउ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 73

मेरै हीअरै रतन नाम हर बसिआ गुर हाथ धरिओ मेरै माथा॥
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुर नाम दीओ रिन लाथा॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 696

कर धर मसतक थापिआ नाम दीनो दान॥
सफल सेवा पारब्रहम की ता की नही हान॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 817

तेरी भगति भंडार असंख जिस तू देवह मेरे सुआमी तिस मिलह॥
जिस कै मसतक गुर हाथ तिस हिरदै हर गुण टिकह॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1115

तिस सालाही जिस हर धन रास॥ सो वडभागी जिस गुर मसतक हाथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1155

तू सभ मह वरतह हर जगंनाथ॥ सो हर जपै जिस गुर मसतक हाथ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1071

जा कै मसतक राखै हाथ॥ प्रभ मेरो अनाथ को नाथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 900

सतगुर संत मिलाइआ मसतक धर कै हथ॥
वडा साहिब गुरू मिलाइआ जिन तारिआ सगल जगत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 958-59

कर हुकम मसतक हथ धर विचहो मार कढीआ बुरिआईआ॥
सह तुठै नउ निध पाईआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 473

तिस कउ जगत निविआ सभ पैरी पइआ जस वरतिआ लोई॥
तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकार करह
जिस कै मसतक हथ धरिआ गुर पूरै सो पूरा होई॥
गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ को न सकोई॥
जन नानक हर करतै आप बह टिकिआ आपे पैज रखै प्रभ सोई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

संतह चरन मोरलो माथा॥ हमरे मसतक संत धरे हाथा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1206

कित मुख गुर सालाहीऐ करण कारण समरथ॥
से मथे निहचल रहे जिन गुर धारिआ हथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 49

जिस मसतक गुर धरिआ हाथ॥ कोट मधे को विरला दास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1340

दान बडौ अतिवंत महाबलि सेवक दास कहिओ इह तथ॥
ताहे कहा परवाह काहू की जा कै बसीस धरिओ गुर हथ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1405

जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनम संजोग पाइआ॥
ताकी है ओट साध राखहो दे कर हाथ कर किरपा मेलहो हर राइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 686

कर मसतक धारिओ मेरै माथै साधसंग गुण गाए॥
तुमरी क्रिपा ते सभ फल पाए रसक राम नाम धिआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1226

कर मसतक धार बालिक रख लीनो॥ प्रभ अंम्रित नाम महा रस दीनो॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 821

गह भुजा लीने नाम दीने कर धार मसतक राखिआ॥
संसार सागर नह विआपै अमिउ हर रस चाखिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 461

नैण त्रिपतासे देख दरसावा गुर कर धारे मेरै माथे॥
कहो नानक मै अतुल सुख पाइआ जनम मरण भै लाथे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1212-13

जेती सिआनप करम हउ कीए तेते बंध परे॥
जउ साधू कर मसतक धरिओ तब हम मुकत भए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 214

लाथी भूख त्रिसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी॥
कर मसतक गुर पूरै धरिओ मन जीतो जग सारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 215

हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुन अवगुन सभ सहिआ॥
कर मसतक धार साज निवाजे मुए दुसट जो खइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 533

सुनिबो सखी कंत हमारो कीअलो खसमाना॥
कर मसतक धार राखिओ कर अपुना किआ जानै इह लोक अजाना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 372

तुम वड अगम अगाध बोध प्रभ मत देवहो हर प्रभ लहे॥
जन नानक कउ गुर हाथ सिर धरिओ हर राम नाम रव रहे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1336

चतुर दिसा कीनो बल अपना सिर ऊपर कर धारिओ॥
क्रिपा कटाख्य अवलोकन कीनो दास का दूख बिदारिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 681

सतगुरु की शरण

सतगुरु की शरण का अर्थ अपनी इच्छा को गुरु की इच्छा में रखना और अपने आप को पूर्णतया गुरु के अर्पण करना है। यह सारे बंधनों से मुक्त होने का सरल उपाय है। शिष्य गुरु पर पूर्ण विश्वास रखे और अपने आप को गुरु के हवाले कर दे, जिस प्रकार एक ऑपरेशन करवानेवाला रोगी, सर्जन की योग्यता पर भरोसा करके, अपनी ज़िंदगी उसके हवाले कर देता है या जिस प्रकार जंगल में भूला-भटका राही, जो चलने-फिरने में असमर्थ हो या जंगल की राहों को न जानता हो या बीमार या थका-माँदा होने के कारण चलकर जंगल के पार न हो सके, यदि कोई जंगल की राहों का जाननेवाला उसकी सहायता के लिए उधर आ निकले तो वह राही अपने आप को उसके हवाले कर देता है, ताकि वह उसे पार करके बाहर ले जाए। इसी प्रकार गुरु का काम केवल शिक्षक का ही नहीं, बल्कि शिष्य को कठिनाइयों में सहायता करके पार करने का भी है। सच्चा मित्र वही है जो हमें केवल यही न बताए कि किसी मुसीबत में से हम किस प्रकार निकल सकते हैं, बल्कि हमारी मदद करके हमें उसमें से निकाल भी ले।

फ़र्ज़ करो, किसी को विदेश जाना है, वह हवाई या समुद्री सफ़र के बारे में पता करता है। अंत में जब वह इनमें से किसी एक मार्ग से यात्रा करने का निर्णय कर लेता है और किसी निश्चित किए हुए हवाई या समुद्री जहाज़ में बैठ जाता है, वह अपने आप को जहाज़ के चालक या कप्तान के हवाले कर देता है और उसकी सारी चिंता समाप्त हो जाती है। अपने आप को चालक या कप्तान की योग्यता पर छोड़ना पड़ता है। यदि कभी भूलकर यात्री जहाज़ से समुद्र में गिर पड़े तो कप्तान उसको बिना मज़दूरी लिए बचाने का यत्न भी करता है। इसी प्रकार आत्मिक मंडलों पर गमन करनेवालों का हाल है। वे परमार्थ को समझने और गुरु की शिक्षा की जाँच-पड़ताल के लिए बुद्धि और विचार से काम लें, पर जब एक बार गुरु की शरण में आ जाएँ तो उनको सब कुछ गुरु पर छोड़ देना चाहिए। जिस मार्ग पर गुरु लगाए, उसी ओर लग जाना चाहिए, क्योंकि गुरु उन रास्तों के जानकार हैं जिन पर हमें जाना है, किंतु हम उनसे बिलकुल अनजान हैं।

हमें अपने ध्येय, अपनी आशा व इच्छाओं को गुरु के हवाले करना पड़ता है और उसकी सहायता पर विश्वास करना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार ही हम अपना आत्मिक मंडलों पर प्रगति का ध्येय पूरा कर सकते हैं।

विश्वास शरण लेने का अर्थ यही है कि शिष्य गुरु पर पूरा भरोसा करके जिस ओर गुरु चलाता है, चले। उसमें अपनी अक़्ल को दख़ल न देने दे। जो हुक्म मिले, उचित-अनुचित का विचार न करके, उस आज्ञा का पालन करे, क्योंकि गुरु जो भी आज्ञा देगा, वह हमारी उन्नति के लिए होगी, 'चाहे बाहर से हम उसे न समझ सकें। मन, वचन और कर्म से उसकी आज्ञा का पालन करो।' हाफ़िज़ साहिब फ़रमाते हैं:

ब-मै सज्जादा रंगीं कुन गरत पीरे-मुग़ां गोयद।
किह् सालिक बेख़बर नु बवद ज़ि राहो-रस्मे मंज़िल हा।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 29

अर्थ: यदि मुर्शिद नमाज़ के मुसल्ले (वह चटाई या कपड़ा जिस पर बैठकर नमाज़ पढ़ी जाती है) को शराब में रँगने का हुक्म दे, तो तू रँग ले, क्योंकि वह मंज़िलों के रास्ते से बेख़बर नहीं होता।

जब शिष्य, नेक या बद, अच्छा या बुरा, सब कुछ गुरु पर छोड़ देता है तब वह शिष्य की हर प्रकार से सँभाल करता है (देखें: 'सतगुरु की सँभाल' का प्रकरण)। जिस प्रकार माता अनजान बालक का जिसे अपने भले-बुरे का कोई ज्ञान नहीं, पालन करती है, उसी प्रकार गुरु अपने शिष्य का पालन करता है। जैसे-जैसे शिष्य का पात्र या बरतन तैयार होता जाता है, गुरु रूहानी दौलत उसके हवाले करता जाता है। जो बच्चा माता की गोद में जा बैठे उसकी सब चिंताएँ और फ़िक्र दूर हो जाते हैं, वह निश्चिंत होकर सारे सुख पा लेता है और अपने मनोरथ पूर्ण करवा लेता है। इसी प्रकार शिष्य गुरु की शरण में आकर, निश्चिंत हो, सभी सुखों का भागी बन जाता है।

गुरु साहिब बाहें ऊपर उठाकर पुकारते हैं, सज्जनों और बंधुओ! यदि तुम आत्मिक रस लेना चाहते हो तो सतगुरु की शरण ग्रहण करो:

संतहो सुनहो सुनहो जन भाई गुर काढी बाह कुकीजै॥
जे आतम कउ सुख सुख नित लोड़हो तां सतगुर सरन पवीजै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1326

गीता (18:66) में भगवान कृष्ण गुरु के रूप में शिष्य को यह उपदेश देते हैं, "सारे धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ। मैं तुझे सब पापों से बचाऊँगा, चिंता न कर।"

शरण लेने से कमाई करना सरल है। शरण लेने से बच्चों की भाँति होना पड़ता है, अपनी मति छोड़कर गुरु की मति लेनी पड़ती है और मन, वचन और कर्म से उसका होकर रहना पड़ता है। यह कठिन है, पर यदि ऊँचे भाग्य द्वारा शरण मिल जाए तो शिष्य का सब कुछ बन जाता है और वह गुरु के रूप में समा जाता है।

सतगुरु की शरण बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। गुरु की शरण में आना हरि की शरण में आना है, क्योंकि गुरु 'हरि-गुरु' है:

> मै हर बिन अवर न कोए॥
> हर गुर सरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभाग परापत होए॥
>
> गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 81

> जा कै मसतक करम प्रभ पाए॥ साध सरण नानक ते आए॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

मालिक की कृपा दृष्टि हो तो यह गति किसी गुरुमुख को प्राप्त होती है:

> जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बल जाउ॥
> दर सचै सची वडिआई सहजे सच समाउ॥
> नानक नदरी पाईऐ गुरमुख मेल मिलाउ॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

सतगुरु और प्रभु की शरण लेने के अनेक फलों का गुरवाणी में वर्णन है। सतगुरु की शरण लेने से मन वश में आ जाता है, सारे रोग, शोक, दुःख, हर्ष-शोक की स्थिति और तीनों गुणों से अतीत होकर कर्मों के बोझ से जीव छूट जाता है:

> मन मह मुंद्रा हर गुर सरणा॥
>
> गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 879

> गुर पूरा पाइओ मेरे भाई॥ रोग सोग सभ दूख बिनासे सतगुर की सरणाई॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 395

हरख सोग का नगर इह कीआ॥ से उबरे जो सतगुर सरणीआ॥
त्रिहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुख सोभा पाइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

मन निर्मल हो जाता है, सकल मनोरथ पूर्ण होते हैं और सुख की प्राप्ति होती है:

मन मेरे गुर सरण आवै ता निरमल होए॥
मनमुख हर हर कर थके मैल न सकी धोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा॥
उन की सरण परै सो तरिआ संतसंग पूरन आसा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 207

सरब सुखा का दाता सतगुर ता की सरनी पाईऐ॥
दरसन भेटत होत अनंदा दूख गइआ हर गाईऐ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 630

हौमैं और अज्ञान का अँधेरा मिट जाता है और प्रकाश हो जाता है:

जगत जलंदा डिठ मै हउमै दूजै भाए॥
नानक गुर सरणाई उबरे सच मन सबद धिआए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 651

करन करावन सरन परिआ॥
गुर परसाद सहज घर पाइआ मिटिआ अंधेरा चंद चड़िआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

आत्मिक जीवन का दान मिलता है और गुप्त नाम प्रकट हो जाता है:

जीअ दान गुर पूरै दीआ राम नाम चित लाए॥
आप क्रिपाल क्रिपा कर देवै नानक गुर सरणाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

गुपता नाम वरतै विच कलजुग घट घट हर भरपूर रहिआ॥
नाम रतन तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भज पइआ॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

यम का डर दूर हो जाता है और जीव नरकों में नहीं जाता। जन्म-मरण मिट जाता है और जीव भवसागर से पार हो जाता है:

जमकाल निहाले सास आव घटै बेतालिआ॥
नानक गुर सरणाई उबरे हर गुर रखवालिआ॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248-49

राख लीए रखणहारै सदा निरमल करणी॥
नानक नरक न जाहे कबहूं हर संत हर की सरणी॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 460

जिन कउ पूरब लिखिआ सेई नाम धिआए॥
नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

दुख हरत करता सुखह सुआमी सरण साधू आइआ॥
संसार सागर महा बिखड़ा पल एक माहे तराइआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 691

सतगुरु की शरण लेने से मालिक जीव को बख़्श देता है। भय का नाश होता है, अभय पद, सहज पद और परम पद की प्राप्ति होती है। प्रभु की दरगाह में मान मिलता है और मालिक से मिलाप होता है। सतगुरु की शरण से मालिक की शरण प्राप्त हो जाती है। सतगुरु की शरण के बिना जीव अनेक क्लेशों का भागी बनता है, जिस प्रकार कोई बच्चा अपनी माता की गोद से वंचित होकर दु:खों का भागी बनता है।

प्रभु की शरण के फल भी अनेक हैं। गुरवाणी में सतगुरु की शरण लेने का बड़ा आग्रहपूर्वक उपदेश दिया गया है। इन सबके बारे में आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के प्रमाण पाठकों के लिए आगे दिए गए हैं, जो विचार के योग्य हैं।

ੴ

गुरवाणी

1. सतगुरु और प्रभु की शरण

1.1. सतगुरु की शरण और मालिक की कृपा बड़े भाग्य से मिलती है

जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बल जाउ॥
दर सचै सची वडिआई सहजे सच समाउ॥
नानक नदरी पाईऐ गुरमुख मेल मिलाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

अगम दइआल प्रभू ऊचा सरण साधू जोग॥
तिस परापत नानका जिस लिखिआ धुर संजोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 501

मै हर बिन अवर न कोए॥
हर गुर सरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभाग परापत होए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 81

ता की सरण जिन बिसरत नाही॥ वडभागी हर संत मिलाही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 203

जा कै मसतक करम प्रभ पाए॥ साध सरण नानक ते आए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

जीअ दान गुर पूरै दीआ राम नाम चित लाए॥
आप क्रिपाल क्रिपा कर देवै नानक गुर सरणाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ जोनि न पावा॥
बिनवंत नानक गुर सरण तरीऐ आपणे प्रभ भावा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

मेरे इक खिन प्रान न रहहे बिन प्रीतम बिन देखे मरह मेरी माइआ॥
धन धन वड भाग गुर सरणी आए हर गुर मिल दरसन पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 882

दास रेण सोई होआ जिस मसतक करमा॥
कहो नानक बंधन छुटे सतगुर की सरना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 809

जिसह परापत तिस ही लहना॥ संत चरन ओह आइओ सरना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

जिन तुम सिरजे सिरज सवारे तिस धिआवहो दिन रैनेही॥
जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतगुर ओट गहेही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 609

ऐ जी भाग परे गुर सरण तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई॥
अब तब एको एक पुकारउ आद जुगाद सखाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 504

2. सतगुरु की शरण के फल क्या हैं?

2.1. मन वश में आता है

मन मह मुंद्रा हर गुर सरणा॥ नानक राम भगति जन तरणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 879

2.2. जीव हर्ष-शोक और तीनों गुणों से पार हो जाता है

हरख सोग का नगर इह कीआ॥ से उबरे जो सतगुर सरणीआ॥
त्रिहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुख सोभा पाइदा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

2.3. द्वैत भाव और भ्रम का नाश

करउ बंदना अनिक वार सरन परउ हर राए॥
भ्रम कटीऐ नानक साधसंग दुतीआ भाउ मिटाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 296

जगत जलंदा डिठ मै हउमै दूजै भाए॥
नानक गुर सरणाई उबरे सच मन सबद धिआए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 651

2.4. काम, क्रोध आदि विकारों का नाश

काम क्रोध अहंकार माते विआपिआ संसार॥
पउ संत सरणी लाग चरणी मिटै दूख अंधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 51

रविआ राम हिरदै परम गति पाई जा गुर सरणाई आए॥
लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतगुर नाम दिड़ाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रास॥
असट धात पातसाह की घड़ीऐ सबद विगास॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 61

सगल पवित गुन गाए गुपाल॥ पाप मिटह साधू सरन दइआल॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 202

जब ही सरन साध की आइओ दुरमत सगल बिनासी॥
तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 633

2.5. हौमैं (अहंकार) और आपाभाव का नाश

जगत जलंदा डिठ मै हउमै दूजै भाए॥
नानक गुर सरणाई उबरे सच मन सबद धिआए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 651

आप गइआ ता आपह भए॥ क्रिपा निधान की सरनी पए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 202

आवा गवन मिटै प्रभ सेव॥ आप तिआग सरन गुरदेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 288

लालै आपणी जात गवाई॥ तन मन अरपे सतगुर सरणाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 362-63

2.6. अंधकार का विनाश होकर प्रकाश होता है

करन करावन सरन परिआ॥
गुर परसाद सहज घर पाइआ मिटिआ अंधेरा चंद चड़िआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

2.7. निर्मलता आती है और उत्साह पैदा होता है

मन मेरे गुर सरण आवै ता निरमल होए॥
मनमुख हर हर कर थके मैल न सकी धोए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

सगल पवित गुन गाए गुपाल॥ पाप मिटह साधू सरन दइआल॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 202

जत कत पेखउ साधू सरणा॥ हर गुण गाए निरमल मन करणा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 563

आन तिआग भए इक आसर सरण सरण कर आए॥
संत अनुग्रह भए मन निरमल नानक हर गुन गाए॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

प्रभ काट मैल निरमल करे॥ गुर पूरे की सरणी परे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1185

लग संत चरणी पड़े सरणी मन तिना ओमाहा॥
बिनवंत नानक जिन नाम पलै सेई सचे साहा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 543

2.8. सुख की प्राप्ति, दु:खों और पापों का नाश

भाई रे जग दुखीआ दूजै भाए॥
गुर सरणाई सुख लहहे अनदिन नाम धिआए॥
गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

मन हर हर जपन करे॥
हर गुर सरणाई भज पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 82

बिलावल

गुर पूरा पाइओ मेरे भाई॥
रोग सोग सभ दूख बिनासे सतगुर की सरणाई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 395

दुख खावह दुख संचह भोगह दुख की बिरध वधाई॥
नानक बिखम सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई॥
गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 442

मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ जोनि न पावा॥
बिनवंत नानक गुर सरण तरीऐ आपणे प्रभ भावा॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

मेरे मन जप गुर गोपल प्रभ सोई॥
जा की सरण पइआं सुख पाईऐ बाहुड़ दूख न होई॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 617

सरब सुखा का दाता सतगुर ता की सरनी पाईऐ॥
दरसन भेटत होत अनंदा दूख गइआ हर गाईऐ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 630

गणत गणीऐ सहसा दुख जीऐ॥ गुर की सरण पवै सुख थीऐ॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 904

दुख मह जनमै दुख मह मरणा॥ दूख न मिटै बिन गुर की सरणा॥
गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1033

अब मोरो सहसा दूख गइआ॥
अउर उपाव सगल तिआग छोडे सतगुर सरण पइआ॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1213

2.9. सकल मनोरथ और आशाएँ पूर्ण होती हैं

सरन आवै पारब्रहम की ता फिर काहे झूरे॥
चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे॥
गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 132-33

जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा॥
उन की सरण परै सो तरिआ संतसंग पूरन आसा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 207

ऐसा रस अंम्रित मन चाखिआ त्रिपत रहे आघाई॥
कहो नानक मेरी आसा पूरी सतगुर की सरणाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 883-84

सरन परे साचे गुरदेव॥ पूरन होई सेवक सेव॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 396

तूं आपे दाता प्रभ अंतरजामी कर किरपा लोच मेरै मन लाई॥
मै मन तन लोच लगी हर सेती प्रभ लोच पूरी सतगुर सरणाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 493

2.10. जीवन-दान की प्राप्ति

जीअ दान गुर पूरै दीआ राम नाम चित लाए॥
आप क्रिपाल क्रिपा कर देवै नानक गुर सरणाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

2.11. आठों पहर सिमरन का लाभ और मुँह से मीठे वचन निकलते हैं

तेरी सरन पइआ हउ जीवां तू संम्रथ पुरख मिहरवान॥
आठ पहर प्रभ कउ आराधी नानक सद कुरबान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 675

सेवी सतगुर आपणा हर सिमरी दिन सभ रैण॥
आप तिआग सरणी पवां मुख बोली मिठड़े वैण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 136

2.12. मन-तन हरा हो जाता है और हरि रंग की प्राप्ति होती है

हर संग राते मन तन हरे॥ गुर पूरे की सरनी परे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 181

मै सरब सुखा सुख पाइआ अंमाली पिर सरब रहिआ भरपूरे॥
जन नानक हर रंग माणिआ अंमाली गुर सतगुर कै लग पैरे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 564

हउ पापी पतित परम पाखंडी तू निरमल निरंकारी॥
अंम्रित चाख परम रस राते ठाकुर सरण तुमारी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 596

2.13. नाम का प्रकाश

भाई रे जग दुखीआ दूजै भाए॥
गुर सरणाई सुख लहहे अनदिन नाम धिआए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 29

हम चात्रिक दीन सतगुर सरणाई॥ हर हर नाम बूंद मुख पाई॥
हर जलनिध हम जल के मीने जन नानक जल बिन मरीऐ जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 95

तेरा ताण नाम की वडिआई॥ नानक रहणा भगति सरणाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 154

सतगुर विसटु मेल मेरे गोविंदा हर मेले कर रैबारी जीउ॥
हर नाम दइआ कर पाइआ मेरे गोविंदा जन नानक सरण तुमारी जीउ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 174

अपुने दास राखै कंठ लाए॥ सरण नानक हर नाम धिआए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 199

जे गुर की सरणी फिर ओह आवै ता पिछले अउगण बखस लइआ॥
जन नानक अनदिन नाम धिआइआ हर सिमरत किलविख पाप गइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 307

गुर सरणाई उबरे भाई राम नाम लिव लाए॥
नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जित लग पार जन पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 603

मेरे मन सदा रहहो सतगुर की सरणा॥
हिरदै हर नाम मीठा सद लागा गुर सबदे भवजल तरणा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

राम नाम धन है रिद अंतर धन गुर सरणाई पावैगो॥
नानक दइआ दइआ कर दीनी दुख दालद भंज समावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

गुपता नाम वरतै विच कलजुग घट घट हर भरपूर रहिआ॥
नाम रतन तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भज पइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

भाई रे सदा रहहो सरणाई॥ आपणी नदर करे पत राखै हर नामो दे वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 602

दुबिधा छोड कुवाटड़ी मूसहुगे भाई॥
अहिनिस नाम सलाहीऐ सतगुर सरणाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 419

जीअ दान गुर पूरै दीआ राम नाम चित लाए॥
आप क्रिपाल क्रिपा कर देवै नानक गुर सरणाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

2.14. शब्द का प्रकाश

मन रे सदा भजहो हर सरणाई॥
गुर का सबद अंतर वसै ता हर विसर न जाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

जत सत संजम करम कमावै बिन गुर गति नही पाई॥
नानक तिस नो सबद बुझाए जो जाए पवै हर सरणाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 571

सतगुर सरणी जाए पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हर प्रभ केरे राम॥
जन नानक हर मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घर वाजे सबद घणेरे राम॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 538

2.15. सच का प्रकाश

एह जग जलता देख कै भज पए सतगुर सरणा॥
सतगुर सच दिड़ाइआ सदा सच संजम रहणा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 70

अनदिन राते जो हर भाए॥ मेरै प्रभ मेले मेल मिलाए॥
सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सच बुझावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 111

2.16. यम का डर दूर हो जाता है

गुर सरणाई जोहे न साकै दूत न सकै संताई॥
अविगत नाथ निंरजन राते निरभउ सिउ लिव लाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 504

जब ही सरन साध की आइओ दुरमत सगल बिनासी॥
तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी॥

गुरु तेग़ बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ. 633

जमकंकर नेड़ न आइआ॥ सुख नानक सरणी पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 623–24

जमकाल निहाले सास आव घटै बेतालिआ॥
नानक गुर सरणाई उबरे हर गुर रखवालिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248–49

हर जीउ तेरी सदा सरणाई॥ आपे बखसिह दे वडिआई॥
जमकाल तिस नेड़ न आवै जो हर हर नाम धिआवणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 111

2.17. जीव नरकों से बच जाता है

नरक घोर मुह कालै खड़िआ जिउ तसकर पाए गलावै॥
फिर सतगुर की सरणी पवै ता उबरै जा हर हर नाम धिआवै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 303

राख लीए रखणहारै सदा निरमल करणी॥
नानक नरक न जाहे कबहू हर संत हर की सरणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 460

2.18. सुरत की गति उलट जाती है

इस मन कउ होर संजम को नाही विण सतगुर की सरणाए॥
सतगुर मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 558

2.19. जन्म-मरण मिट जाता है

जिन कउ पूरब लिखिआ सेई नाम धिआए॥
नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 53

मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ जोनि न पावा॥
बिनवंत नानक गुर सरण तरीऐ आपणे प्रभ भावा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 453

इह जग मोह हेत बिआपितं दुख अधिक जनम मरणं॥
भज सरण सतगुर ऊबरह हर नाम रिद रमणं॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 505

जंमण मरण न चुकई हउमै करम कमाई॥
गुर सरणाई उबरै नानक लए छडाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1424

मेरे मन साध सरण छुटकारा॥
बिन गुर पूरे जनम मरण न रहई फिर आवत बारो बारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 611

2.20. जीव भवसागर से पार हो जाता है

जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा॥
उन की सरण परै सो तरिआ संतसंग पूरन आसा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 207

अउध अनल तन तिन को मंदर चहु दिस ठाट ठइओ॥
कहे कबीर भै सागर तरन कउ मै सतगुर ओट लइओ॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 336

तट तीरथ भवे सभ धरना॥ से उबरे जे सतगुर की सरना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.394

सरण समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ॥
महा भउजल लंघीऐ सदा हर गुण गाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.405

गुर सरणाई उबरे भाई राम नाम लिव लाए॥
नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जित लग पार जन पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.603

संतन बिन अवर न दाता बीआ॥
जो जो सरण परै साधू की सो पारगरामी कीआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.610

दुख हरत करता सुखह सुआमी सरण साधू आइआ॥
संसार सागर महा बिखड़ा पल एक माहे तराइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.691

राख लीए सतगुर की सरण॥
जै जै कार होआ जग अंतर पारब्रहम मेरो तारण तरण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.827

2.21. लोहे से कंचन हो जाता है

मन सतगुर सरन धिआवैगो॥
लोहा हिरन होवै संग पारस गुन पारस को होए आवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.1311

2.22. जन्म सफल हो जाता है

अटल पदारथ पाइआ॥ भै भंजन की सरणाइआ॥
लाए अंचल नानक तारिअन जिता जनम अपार जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.132

कोट जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै काम॥
सरण साधू निरमला गति होए प्रभ कै नाम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.501

प्रभ की सरन उबरै सभ कोए॥ करन करावन पूरन सच सोए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 202

2.23. जीव का उद्धार होता है

पारब्रहम पूरन जन ओट॥ तेरी सरण उधरह जन कोट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 193

संत सरन जो जन परै सो जन उधरनहार॥
संत की निंदा नानका बहुर बहुर अवतार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 279

राख लीए सतगुर की सरण॥
जै जै कार होआ जग अंतर पारब्रहम मेरो तारण तरण॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 827

2.24. भय दूर हो जाता है

भउ न विआपै तेरी सरणा॥ जो तुध भावै सोई करणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 192

गुर की सरण पए भै नासे साची दरगह माने॥
गुण गावत आराध नाम हर आए अपुनै थाने॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 615

नानक दास साध सरणाई॥ गुर प्रसाद भउ पार पराई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 378

2.25. अभय और अटल पद की प्राप्ति और जीव का छुटकारा होता है

आइओ सरण दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओर॥
अभै पद दान सिमरन सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 701-02

अटल पदारथ पाइआ॥ भै भंजन की सरणाइआ॥
लाए अंचल नानक तारिअन जिता जनम अपार जीउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 132

तिन की सोभा किआ गणी जिनी हर हर लधा॥
साधा सरणी जो पवै सो छुटै बधा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.320

बिन सतगुर सेवे जनम न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई॥
वेद पड़ह तै वाद वखाणह बिन हर पत गवाई॥
सचा सतगुर साची जिस बाणी भज छूटह गुर सरणाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.638

दास रेण सोई होआ जिस मसतक करमा॥
कहो नानक बंधन छुटे सतगुर की सरना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.809

सतगुर सरणी आइआं बाहुड़ नही बिनास॥
हर नानक कदे न विसरउ एह जीउ पिंड तेरा सास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.52

2.26. सतगुरु अपने शरणागत की लाज रखता है

नानक सरन परे दरबार॥ राखी पैज मेरै करतार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.199

सतगुर सरण परे तिन पाइआ मेरे ठाकुर लाज रखाईऐ॥
इक अपणै सुआए आए बहहे गुर आगै जिउ बगुल समाध लगाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.881

भगति वछल हर बिरद है हर लाज रखाइआ॥
जन नानक सरणागती हर नाम तराइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.449

नानक गुर पूरे सरनाई॥ जिन अपने नाम की पैज रखाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.807

2.27. सतगुरु शरण पड़े हुए को बख़्श देता है

आप पछाणह सबद मरह मनहो तज विकार॥
गुर सरणाई भज पए बखसे बखसणहार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.430

जे गुर की सरणी फिर ओह आवै ता पिछले अउगण बखस लइआ॥
जन नानक अनदिन नाम धिआइआ हर सिमरत किलविख पाप गइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 307

कोई निंदक होवै सतगुरू का फिर सरण गुर आवै॥
पिछले गुनह सतगुर बखस लए सतसंगत नाल रलावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 855

2.28. सहज गति और उच्च स्थान की प्राप्ति होती है

जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बल जाउ॥
दर सचै सची वडिआई सहजे सच समाउ॥
नानक नदरी पाईऐ गुरमुख मेल मिलाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

करन करावन सरन परिआ॥
गुर परसाद सहज घर पाइआ मिटिआ अंधेरा चंद चड़िआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 393

सभ तज अनाथ एक सरण आइओ॥
ऊच असथान तब सहजे पाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 189

2.29. दरगाह में मान होता है

गुर की सरण पए भै नासे साची दरगह माने॥
गुण गावत आराध नाम हर आए अपुनै थाने॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 615

गुर सरणाई सगल निधान॥ साची दरगह पाईऐ मान॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1271

2.30. मालिक से मिलाप होता है

हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार॥
संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 80

सतगुर दाता हर नाम का प्रभ आप मिलावै सोए॥
सतगुर हर प्रभ बुझिआ गुर जेवड अवर न कोए॥
हउ गुर सरणाई ढह पवा कर दइआ मेले प्रभ सोए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

रविआ राम हिरदै परम गति पाई जा गुर सरणाई आए॥
लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतगुर नाम दिड़ाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 443

दीन दुआरै आइओ ठाकुर सरन परिओ संत हारे॥
कहो नानक प्रभ मिले मनोहर मन सीतल बिगसारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 534

अनिक जनम विछुड़े दुख पाइआ मनमुख करम करै अहंकारी॥
साधू परसत ही प्रभ पाइआ गोबिद सरण तुमारी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 607

कोई आन आन मेरा प्रभू मिलावै हउ तिस विटहो बल बल घुम गईआ॥
अनेक जनम के बिछुड़े जन मेले जा सत सत सतगुर सरण पवईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 836-37

सेज एक एको प्रभ ठाकुर महल न पावै मनमुख भरमईआ॥
गुर गुर करत सरण जे आवै प्रभ आए मिलै खिन ढील न पईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 837

मेरे इक खिन प्रान न रहहे बिन प्रीतम बिन देखे मरह मेरी माइआ॥
धन धन वड भाग गुर सरणी आए हर गुर मिल दरसन पाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 882

राम नाम धन है रिद अंतर धन गुर सरणाई पावैगो॥
नानक दइआ दइआ कर दीनी दुख दालद भंज समावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

जिस का ग्रिह तिन दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई॥
अनिक उपाव करे नही पावै बिन सतगुर सरणाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

3. सतगुरु शरण विहीन के दोष

जिन हर हर हर रस नाम न पाइआ ते भागहीण जम पास॥
जो सतगुर सरण संगत नही आए ध्रिग जीवे ध्रिग जीवास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 10

बिन सतगुर सेवे जनम न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई॥
वेद पड़ह तै वाद वखाणह बिन हर पत गवाई॥
सचा सतगुर साची जिस बाणी भज छूटह गुर सरणाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 638

4. प्रभु की शरण

प्रभु की शरण और मालिक की मेहर बड़े भाग्य से मिलती है।

रंग रते निरबाण सचा गावही॥ नानक सरण दुआर जे तुध भावही॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 322

वडै भाग पूज गुर चरना॥ सगल तिआग पाई प्रभ सरना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 395–96

मिहरवान बखसिंद आप जप सचे तरणा॥
जो तुध भावै सो भला नानक दास सरणा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 323

महा बिखम संसार विरलै पेखिआ॥
छूटन हर की सरण लेख नानक लेखिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 398

5. प्रभु की शरण के फल

5.1. भय दूर हो जाता है

प्रभ की सरण सगल भै लाथे दुख बिनसे सुख पाइआ॥
दइआल होआ पारब्रहम सुआमी पूरा सतगुर धिआइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 615

तिस की सरण नाही भउ सोग॥ उस ते बाहर कछू न होग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

5.2. यम का भय दूर होता है और जीव भवसागर से पार हो जाता है

जमूआ न जोहै हर की सरणाई॥
हउमै मार सच लिव लाई॥ सदा रहै हर नाम लिव लाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 231

उबरत राजा राम की सरणी॥
सरब लोक माइआ के मंडल गिर गिर परते धरणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 215

हम नीच से ऊतम भए हर की सरणाई॥
पाथर डुबदा काढ लीआ साची वडिआई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 565

5.3. भक्त की लाज की रक्षा

चरन सरन पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ॥
जान बूझ अपना कीओ नानक भगतन का अंकुर राखिओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 677

5.4. सुख-शांति की प्राप्ति

महा कसट काटै खिन भीतर रसना नाम चितारे॥
सीतल सांत सूख हर सरणी जलती अगन निवारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 210

कहो नानक जो प्रभ सरणाई॥ ईहा सुख आगै गति पाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 388-89

जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे॥
जिह नर बिसरिआ पुरख बिधाता ते दुखीआ मह गनणे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 613

5.5. करोड़ों कलंक मिटते हैं और बंधन कट जाते हैं

पारब्रहम की सरणी पाहे॥ कोट कलंक खिन मह मिट जाहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 184

पारब्रहम तेरी सरणाए॥ बंधन काट तरै हर नाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 195

सगल तिआग हर सरणी आइआ॥ तिस जन कहा बिआपै माइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 388

5.6. मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं

सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पद पाई॥
तुध जेवड तूहै पारब्रहम नानक सरणाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 318

दुख बिनसे सहसा गइओ सरन गही हर राए॥
मन चिंदे फल पाइआ नानक हर गुन गाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 300

5.7. दरगाह में मान मिलता है

जो जन हर प्रभ हर हर सरणा तिन दरगह हर हर दे वडिआई॥
धंन धंन साबास कहै प्रभ जन कउ जन नानक मेल लए गल लाई॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 493

गुरु वचन

जब जीव सतगुरु के घर जन्म ले अर्थात् गुरु की शरण में आए तब उसको चाहिए कि वह जितने भी पिछले कर्म-धर्म करता रहा है, सबको छोड़कर गुरु से पूछे कि मुझे क्या करना चाहिए, क्योंकि पिछले कर्म-धर्म उसका जन्म-मरण नहीं मिटा सके और मालिक की प्राप्ति नहीं करवा सके। जिस मार्ग का गुरु उसको उपदेश दे, उस पर चलना ही शिष्य का कर्म और धर्म है। शिष्य गुरु की आज्ञा में जो काम करता है वही उसकी भक्ति है। जब मल्लाह नाव में बैठाकर ले चलता है, उस समय यदि यात्री उसकी आज्ञा में रहेगा तो वह पार हो जाएगा। जो आज्ञा गुरु दे, बिना गिले-शिकवे या मन के दख़ल के, उस पर अमल करे, शिष्य की इसी में भलाई है, गुरु उसका हर प्रकार से ज़िम्मेदार है। गुरु की आज्ञा का प्रेमपूर्वक पालन करे और उसमें अपनी अक़्ल को दख़ल न देने दे, चाहे प्रकट रूप में कोई काम अनुचित ही प्रतीत हो, क्योंकि गुरु समर्थ पुरुष है, उसकी हर बात में कोई न कोई भेद है जिसकी हमें समझ नहीं। हाफ़िज़ साहिब कहते हैं कि यदि मुर्शिद तुझे हुक्म दे कि तू नमाज़ के मुसल्ले (नमाज़ पढ़ने की दरी या चटाई) को शराब से रँग ले, तो ज़रूर रँग ले, क्योंकि रूहानी मंज़िलों की राह और रस्मों (रीति) का तू ज्ञाता नहीं, मुर्शिद ही जाननेवाला है:

ब-मै सज्जादा रंगीं कुन गरत पीरे-मुग़ां गोयद।
किह् सालिक बेख़बर नु-बुवद ज़ि राहो-रस्मे-मंज़िल हा।

दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 29

जो केवल ऊपर ही ऊपर से जी-हुज़ूरी करता है और हुक्म का पालन करनेवाला नहीं है तो उस शिष्य का कल्याण कैसा? गुरु को वे ही स्वीकार हैं जो उसका हुक्म मानते हैं:

But be ye doers of the word and not hearers only,
deceiving your own self. (Bible, *James* 1:22)

शब्द के अभ्यासी बनो, केवल गुरु के ज़बानी जी-हुज़ूरी करनेवाले न बनो। केवल देखने या सुनने से पूरा लाभ किस प्रकार उठा सकोगे? गुरवाणी हुक्म देती है कि गुरु के वचन को सत्य मानकर हृदय में धारण करो और मनुष्य जन्म का निस्तार कर लो:

गुर के बचन सत जीअ धारहो॥ माणस जनम देह निस्तारहो॥

भट्ट गयंद, आदि ग्रन्थ, पृ. 1401

सतगुरु से जो वचन निकलता है वह उससे भिन्न नहीं। सतगुरु वचन के अंदर समा रहा है, उसका वचन उसके हृदय का उभार होता है, जिसमें उसकी सत्ता और आत्मिक जीवनधारा भरी होती है। परमार्थी जीवों को उसके वचन हृदय में तीर की भाँति लगते हैं और ऐसे घाव कर जाते हैं कि उनकी हालत का वर्णन नहीं किया जा सकता:

अंतर पिआस उठी प्रभ केरी सुण गुर बचन मन तीर लगईआ॥
मन की बिरथा मन ही जाणै अवर कि जाणै को पीर परईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 835-36

ज्यों-ज्यों गुरु के वचन पर अभ्यास किया जाता है, वैसे-वैसे ही वह फलता है। सतगुरु के वचन का पालन सतगुरु की भक्ति है। गुरु रामदास जी फ़रमाते हैं कि बैठते, उठते, खड़े होते, रास्ते में चलते समय भी तुम मालिक का ध्यान करते रहो। सतगुरु वचन है और वचन ही सतगुरु है, वचन के द्वारा वह मुक्ति की राह दरसा देगा:

खरे खरोए बैठत ऊठत मारग पंथ धिआवैगो॥
सतगुर बचन बचन है सतगुर पाधर मुकत जनावैगो॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 1309

सतगुरु के वचन अति सुहावने और भले होते हैं, उनके द्वारा ही अमृत की प्राप्ति हो सकेगी। सतगुरु के मुख से निकले वचनों का पालन करके जीव अमर पद को प्राप्त कर लेता है:

सतगुर बचन बचन है नीको गुर बचनी अंम्रित पावैगो॥
जिउ अंबरीक अमरा पद पाए सतगुर मुख बचन धिआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

गुरु वचन के अनुसार मंत्र को जपना (देखें: 'गुरुमंत्र' का प्रकरण) और उसकी कमाई करना सच्ची भक्ति और सार तत्त्व है:

गुर का बचन जप मंत॥ एहा भगति सार तत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 895

सतगुरु के वचनों के अनुसार अभ्यास करना ही सच्चा विचार है:

सतगुर बचन कमावणे सचा एह वीचार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 52

गुरु का वचन सदा जीव के साथ बसता है। उसको जल डुबा नहीं सकता, चोर चुरा नहीं सकता, आग जला नहीं सकती। वह सदा अविनाशी है, अटल है, अभेद है और अनाथों का नाथ है। वह जीव की लाज रखनेवाला है, उसके द्वारा यम की फाँसी और सब भ्रम कट जाते हैं:

गुर का बचन बसै जीअ नाले॥
जल नही डूबै तसकर नही लेवै भाहे न साकै जाले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

गुर का बचन सदा अबिनासी॥ गुर कै बचन कटी जम फासी॥...
गुर का बचन अटल अछेद॥ गुर कै बचन कटे भ्रम भेद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

गुरवाणी में गुरु वचनों के द्वारा ही रामनाम के बोलने का उपदेश है। गुरमत द्वारा ही अपने निजघर की खोज हो सकती है, जन्म-मरण मिट सकता है। इसकी प्राप्ति संतों की सभा में ही हो सकती है। यह दौलत मनमत कर्मों के द्वारा नहीं मिल सकती।

राम नाम* गुर बचनी बोलहो॥ संत सभा मह इह रस टोलहो॥
गुरमत खोज लहहो घर अपना बहुड़ न गरभ मझारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1030

---

* **राम नाम**=रामनाम से आशय रमे हुए नाम या शब्द से है (देखें: 'नाम' का प्रकरण)।

सेवक और शिष्य जो भी सतगुरु के पास आते हैं, वे सब उत्तम वाणी (देखें: 'वाणी' का प्रकरण) को गाते हैं, पर इनमें गाना और सुनना उनका सार्थक है जो सतगुरु की आज्ञा को सत्य-सत्य मानकर उसका पालन करते हैं:

सेवक सिख पूजण सभ आवह सभ गावह हर हर ऊतम बानी॥
गाविआ सुणिआ तिन का हर थाए पावै जिन
सतगुर की आगिआ सत सत कर मानी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 669

जो बार-बार गुरु के दर्शन करते हैं, उनके साथ प्रीति लगाते हैं और जो गुरु के वचनों को 'सत, सत' मानते हैं, वे मालिक के अति प्यारे हो जाते हैं:

लग लग प्रीत बहु प्रीत लगाई लग साधू संग सवारे॥
गुर के बचन सत सत कर माने मेरे ठाकुर बहुत पिआरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 982

गुरु जो हुक्म दे उसका पालन करो। इस तरह तुम शब्द को पहचान सकोगे और सहज घर में पहुँचकर मान पाओगे। इससे तुम्हें सब सुखों का सार प्राप्त हो जाएगा और तुम सुखों के सार को पाओगे और भवसागर से पार हो जाओगे:

गुर कहिआ सा कार कमावहो॥
सबद चीन्ह सहज घर आवहो॥ साचै नाए वडाई पावहो॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 832

गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुख सार॥
गुर की करणी भउ कटीऐ नानक पावह पार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1248

गुरु की आज्ञा का पालन करना और उसकी रज़ा में चलना अत्यंत आवश्यक है, इसी में शिष्य का कल्याण है। सतगुरु को देखता तो सारा जगत है, पर मुक्त होने के लिए उसके वचन का पालन करना, उसके शब्द की दात की कमाई करना अत्यंत आवश्यक है:

सतगुर नो सभ को वेखदा जेता जगत संसार॥
डिठै मुकत न होवई जिचर सबद न करे वीचार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 594

गुरु शब्दमार्गी होना चाहिए, जो शब्द को हमारे अंदर स्थिर कर सके। शब्द नौ द्वारों में नहीं है। जो नौ द्वारों के ऊपर शब्द का बोध करा सके, वही गुरु कहलाने का अधिकारी है (देखें: 'गुरु और शब्द' का प्रकरण)। जब ऐसा गुरु मिल जाए तो शिष्य को उसके कहने के अनुसार व्यवहार करना और उसके भाणे में रहना चाहिए। इस प्रकार वह अपना जन्म सफल कर लेता है और अपने कुलों का भी उद्धार कर लेता है, उसको फिर कोई दुःख नहीं:

तिन का जनम सफल है जो चलह सतगुर भाए॥
कुल उधारह आपणा धंन जणेदी माए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 28

गुर कै भाणै जो चलै दुख न पावै कोए॥
गुर के भाणे विच अंम्रित है सहजे पावै कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

भाणे में रहने से शिष्य अमृत का भागी बनता है, जिसके फलस्वरूप वह निजघर में जा बसता है:

मन मेरे सतगुर कै भाणै चल॥
निज घर वसह अंम्रित पीवह ता सुख लहहे महल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

गुरु वचन को कौन पल्ले बाँधता है? केवल वही जिस पर मालिक दयाल हो:

जिस नो भए गोबिंद दइआला॥ गुर का बचन तिन बाधिओ पाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1348

जो गुरु वचन पर अमल करके हरि को प्राप्त कर लेता है, उस जैसा अपूर्व सामर्थ्य वाला और कोई नहीं, इसलिए हमें हरि का नाम जपना चाहिए:

मेरे मन नाम हरी भज सदा दीबाण॥
जो हर महल पावै गुर बचनी तिस जेवड अवर नाही किसै दा ताण॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰861

गुरवाणी गुरु वचन मानने के अनेक फलों का वर्णन करती है। गुरु के वचन के पालन द्वारा जीव हरि के गुण गाता है, राम के रंग में रँगा जाता है और उसकी रसना अमृत में भीगती है। उसके सब कार्य पूर्ण होते हैं और नौ निधियों की प्राप्ति होती है, ताप-रोग मिटते हैं, मनोवांछित फल मिलते हैं, मन दौड़ना बंद कर देता है, हौमैं का नाश हो जाता है, सुख-दुःख समान प्रतीत होते हैं, तृष्णा और दुर्मति मिट जाती है, पापों का नाश और पापियों का उद्धार होता है, जीव पर से माया का ज़हर उतर जाता है और घर और बाहर से समान रूप में सच्चा उदासीन हो जाता है, यम की फाँसी कट जाती है, यम पास नहीं आता। जीव नरकों में नहीं जाता और जन्म-मरण मिट जाता है। महा संतोष आ जाता है, पूर्ण सहज ध्यान लगता है, अमृत की प्राप्ति होती है और जीव नाम से जुड़ जाता है। उसकी भक्ति सार्थक होती है। हरि को पाकर ठाकुर और सेवक दोनों एक हो जाते हैं। इनके बारे में आदि ग्रन्थ की गुरवाणी के प्रमाण पाठकों के लिए नीचे दिए गए हैं जो विचार के योग्य हैं।

गुरवाणी

1. गुरु वचन क्या है?

1.1. सतगुरु वचन है और वचन सतगुरु है

खरे खरोए बैठत ऊठत मारग पंथ धिआवैगो॥
सतगुर बचन बचन है सतगुर पाधर मुकत जनावैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ॰1309

1.2. गुरु के वचन द्वारा मंत्र का जपना भक्ति का सार तत्त्व है

गुर का बचन जप मंत॥ एहा भगति सार तत॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰895

1.3. गुरु वचन का कमाना सच्चा विचार है

सतगुर बचन कमावणे सचा एह वीचार॥
बिन साधू संगत रतिआ माइआ मोह सभ छार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ॰52

2. गुरु वचन कैसा है?

2.1. गुरु का वचन सदा अविनाशी, अटल और अछेद्य है

गुर का बचन सदा अबिनासी॥ गुर कै बचन कटी जम फासी॥...
गुर का बचन अटल अछेद॥ गुर कै बचन कटे भ्रम भेद॥
गुर का बचन कतहु न जाए॥ गुर कै बचन हर के गुण गाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

गुर का बचन बसै जीअ नाले॥
जल नही डूबै तसकर नही लेवै भाहे न साकै जाले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

3. गुरु वचन कहाँ है?

3.1. गुरु वचन जीवों में रमा हुआ है:

गुर का बचन जीअ कै संग॥ गुर कै बचन रचै राम कै रंग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

गुर का बचन बसै जीअ नाले॥
जल नही डूबै तसकर नही लेवै भाहे न साकै जाले॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 679

गुर का बचन जीअ कै साथ॥ गुर का बचन अनाथ को नाथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

4. गुरु वचन कैसे हैं?

4.1. गुरु वचन तीर की तरह लगते हैं

अंतर पिआस उठी प्रभ केरी सुण गुर बचन मन तीर लगईआ॥
मन की बिरथा मन ही जाणै अवर कि जाणै को पीर परईआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 835-36

4.2. गुरु वचन हृदय को सुख देते हैं

मन लागी प्रीत राम नाम हर हर जपिओ हर प्रभ वडफा॥
सतगुर बचन सुखाने हीअरै हर धारी हर प्रभ क्रिपफा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1336

5. जो गुरु के वचन मानते हैं, वे ठाकुर को अति प्यारे हैं, उनका नाम संसार में प्रकट होता है

लग लग प्रीत बहु प्रीत लगाई लग साधू संग सवारे॥
गुर के बचन सत सत कर माने मेरे ठाकुर बहुत पिआरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 982

निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै॥
गुर कै बचन जपिओ नाउ नानक प्रगट भइओ संसारै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1217

गुर का बचन परगट संसार॥ गुर कै बचन न आवै हार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

6. गुरु वचन को कौन मानता है ?

6.1. जिस पर मालिक दयाल हो

जिस नो भए गोबिंद दइआला॥ गुर का बचन तिन बाधिओ पाला॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1348

गुर बचनात कमात क्रिपा ते बहुर न कतहू धाइओ॥
रहत उपाध समाध सुख आसन भगति वछल ग्रिह पाइओ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1214

6.2. कोई गुरुमुख ही वचन में समाता है

जिन गुरमुख हर आराधिआ से साह वड दाणे॥
हउ सतगुर कउ सद वारिआ गुर बचन समाणे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 726

7. जो गुरु वचन को मानकर हरि को पाता है, उस जैसा अपूर्व सामर्थ्य वाला कोई नहीं

मेरे मन नाम हरी भज सदा दीबाण॥
जो हर महल पावै गुर बचनी तिस जेवड अवर नाही किसै दा ताण॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 861

8. सुखदेव ने जनक के वचन द्वारा हरि को पाया

जपिओ नाम सुक जनक गुर बचनी हर हर सरण परे॥
दालद भंज सुदामे मिलिओ भगती भाए तरे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 995

9. गुरु वचन मानने के फल

9.1. गुरु के वचन द्वारा जीव हरि के गुण गाता है, राम के रंग में रँगा जाता है और रसना अमृत में भीजती है

गुर का बचन जीअ कै संग॥ गुर कै बचन रचै राम कै रंग॥...
गुर का बचन कतहु न जाए॥ गुर कै बचन हर के गुण गाए॥...
गुर कै बचन नरक न पवै॥ गुर कै बचन रसना अंम्रित रवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

गुर कै बचन सुण रसन वखाणी॥ गुर किरपा ते अंम्रित मेरी बाणी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

9.2. कार्य पूर्ण होते हैं और नौ निधियों की प्राप्ति होती है

गुर कै बचन मेरे कारज सिध॥ गुर कै बचन पाइआ नाउ निध॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

गुर बचन कारज सरब पूरन ईत ऊत न हली॥
प्रभ एक अनिक सरबत पूरन बिखै अगन न जली॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1121

9.3. कर्म जाग उठता है

गुर कै बचन जागिआ मेरा करम॥ नानक गुर भेटिआ पारब्रहम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

9.4. ताप व रोग मिट जाते हैं और मनोवांछित फल मिल जाते हैं

सिमर सिमर गुर सतगुर अपना सगला दूख मिटाइआ॥
ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 619

9.5. मन नहीं दौड़ता, जीव शीतल और सुखी हो जाता है

गुर का बचन कतहु न जाए॥ गुर कै बचन हर के गुण गाए॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

गुर मानै मानै सभ कोए॥ गुर बचनी मन सीतल होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1262

अनदिन लाले चाकरी गोले सिर मीरा॥
गुर बचनी मन वेचिआ सबद मन धीरा॥
गुर पूरे साबास है काटै मन पीरा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1010–11

करहो क्रिपा जगजीवन दाते मेरा मन हर सेती राचे॥
सतगुर .बचन दीओ अत निरमल जप हर हर हर मन माचे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 169

9.6. हौमैं का नाश हो जाता है

हउमै मार निवारिआ सीता है चोला॥
गुर बचनी फल पाइआ सह के अंम्रित बोला॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 729

मेरे राम हर जन आरोग भए॥
गुर बचनी जिना जपिआ मेरा हर हर तिन के हउमै रोग गए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 735

गुर कै बचन मिटिआ मेरा आप॥ गुर की दइआ ते मेरा वड परताप॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

9.7. सुख-दु:ख समान प्रतीत होते हैं और तृष्णा नहीं रहती

गुर बचनी समसर सुख दूख॥ कदे न बिआपै त्रिसना भूख॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 897

9.8. दुर्मति दूर हो जाती है

सिख की गुर दुरमत मल हिरै॥ गुर बचनी हर नाम उचरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 286



9.9. पापों का नाश होता है

लिलाट लिखे पाइआ गुर साधू गुर बचनी मन तन राता॥
हर प्रभ आए मिले सुख पाइआ सभ किलविख पाप गवाता॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 984

जिन कउ धुर हर लिखिआ सुआमी तिन हर हर नाम अराधिआ॥
तिन के पाप इक निमख सभ लाथे जिन गुर बचनी हर जापिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1115

तिन के पाप दोख सभ बिनसे जिन मन चित इक अराधिआ॥
तिन का जनम सफलिओ सभ कीआ करतै जिन गुर बचनी सच भाखिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1114-15

9.10. निर्गुणों को तारता है

सतगुर बचन तुम्हारे॥ निरगुण निसतारे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 406

9.11. माया का विष उतर जाता है

सतगुर साजन पुरख वड पाइआ हर रसक रसक फल लागिबा॥
माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुर बचनी बिस हर काढिबा॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 697

9.12. जीव भवसागर से पार हो जाता है

जप मन हर हर हर निसतरै॥
गुर के बचन करन सुन धिआवै भव सागर पार परै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1263

9.13. राजयोग मिलता है

गुर कै बचन कीनो राज जोग॥ गुर कै संग तरिआ सभ लोग॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

9.14. घर और बाहर समान प्रतीत होता है और सच्ची उदासीनता होती है

ऊपर गगन गगन पर गोरख ता का अगम गुरू पुन वासी॥
गुर बचनी बाहर घर एको नानक भइआ उदासी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 992

9.15. भ्रम और अज्ञानता का अँधेरा मिटता है,
हृदय कमल में प्रकाश होता है और सुख की प्राप्ति होती है

गुर कै बचन मिटिआ मेरा भरम॥ गुर कै बचन पेखिओ सभ ब्रहम॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

गुर का बचन अटल अछेद॥ गुर कै बचन कटे भ्रम भेद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगास॥
गुर बचनी सुख ऊपजै भाई सभ फल सतगुर पास॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 639-40

9.16. यम की फाँसी कट जाती है और यम पास नहीं आता

गुर का बचन सदा अबिनासी॥ गुर कै बचन कटी जम फासी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

सभ छुटी सतगुरू पिछै जिन हर हर नाम धिआइआ॥
गुर बचन मारग जो पंथ चाले तिन जम जागाती नेड़ न आइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1116

9.17. जीव नरक में नहीं जाता

गुर कै बचन नरक न पवै॥ गुर कै बचन रसना अंम्रित रवै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

9.18. जन्म-मरण मिट जाता है और मालिक मिलता है

जनम मरन काटे गुर बचनी बहुड़ न संकट दुआरा॥
नानक सरन गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 717

मेरे हर प्रभ की मै बात सुनावै तिस मन देवउ कट काट॥
हर साजन मेलिओ गुर पूरै गुर बचन बिकानो हट हाट॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 986

9.19. महा संतोष होता है और पूर्ण सहज में ध्यान लगता है

त्रिसना बुझै हर कै नाम॥
महा संतोख होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआन॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 682-83

गुर बचनी मन सहज धिआने॥ हर कै रंग रता मन माने॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 796

गुर कै बचन रिदै धिआन धारी॥ रसना जाप जपउ बनवारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 740

9.20. गुरु वचन अनाथों का नाथ है और शिष्यों की लाज रखता है

गुर का बचन जीअ कै साथ॥ गुर का बचन अनाथ को नाथ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 177

गुर कै बचन मोहे परम गति पाई॥ गुर पूरै मेरी पैज रखाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 239

9.21. जीव गति-मिति पाता है और अविगत में समाता है

राम नाम साधू सरणाई॥ सतगुर बचनी गति मित पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1030

गुर बचनी अविगति समाईऐ तत निरंजन सहज लहै॥
नानक दूजी कार न करणी सेवै सिख सो खोज लहै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 940

गुर बचनी सच कार कमावै गति मत तब ही पाई॥
कोट मधे किसह बुझाए तिन राम नाम लिव लाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1260

9.22. अमृत की प्राप्ति होती है

सतगुर बचन बचन है नीको गुर बचनी अंम्रित पावैगो॥
जिउ अंबरीक अमरा पद पाए सतगुर मुख बचन धिआवैगो॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1311

9.23. नाम के साथ जुड़ जाता है

वाजै अनहद मेरा मन लीणा॥ गुर बचनी सच नाम पतीणा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.903

गुर कै बचन धिआइओ मोहे नाउ॥ गुर परसाद मोहे मिलिआ थाउ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.239

तन मह मैल नाही मन राता॥ गुर बचनी सच सबद पछाता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.154

प्रभ कै रंग राच जन रहे॥ गुर कै बचन पदारथ लहे॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ.285

9.24. भक्ति सार्थक होती है और हरि अंदर आ बसता है

गुर कै बचन भगति थाए पाए॥ हर जीउ आप वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.365

9.25. जीव हरि को पा लेता है, ठाकुर-सेवक दोनों एक हो जाते हैं

हर धिआवहो हर प्रभ सत॥
गुर बचनी हर प्रभ जाणिआ सभ हर प्रभ ते उतपत॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ.82

सतगुर बचनी एको जाता॥ नानक राम नाम मन राता॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.415

दूर नाही मेरो प्रभ पिआरा॥
सतगुर बचन मेरो मन मानिआ हर पाए प्रान अधारा॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.1197

हर मंदर सोई आखीऐ जिथहो हर जाता॥
मानस देह गुर बचनी पाइआ सभ आतम राम पछाता॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ.953

गुर बचन धिआइआ जिना अगम हर ते ठाकुर सेवक रल एकिआ॥
सभ कहहो मुखहो नर नरहरे नर नरहरे नर नरहरे हर लाहा
हर भगति विसेखिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1316

9.26. जीव सचरूपी फल पाता है

परहर लोभ निंदा कूड़ तिआगहो सच गुर बचनी फल पाही जीउ॥
जिउ भावै तिउ राखहो हर जीउ जन नानक सबद सलाही जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

10. उपदेश

राम नाम गुर बचनी बोलहो॥ संत सभा मह इह रस टोलहो॥
गुरमत खोज लहहो घर अपना बहुड़ न गरभ मझारा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1030

हर सिमरहो गुर बचन समारहो संगत हर जन भाउ करे॥
हर जन गुर परधान दुआरै नानक तिन जन की रेण हरे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1014

मेरे मन अनदिन धिआए हर नाउ॥
सतगुर कै बचन अराध तू अनदिन गुण गाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 994

गुर के बचन सत जीअ धारहो॥ माणस जनम देह निस्तारहो॥

भट्ट गयंद, आदि ग्रन्थ, पृ. 1401

डिंभी गुरु
(झूठा और पाखंडी गुरु)

डिंभी गुरु कहते हैं कच्चे असमर्थ गुरु को जिसको अपना ज्ञान तो है नहीं, पर संसार को सीख और मति देने को सदा तत्पर रहता है। इस प्रकार के झूठे गुरुओं के लिए कहावत प्रसिद्ध है, 'अंधा गुरु और अंधा चेला। नरका नरकी धक्कम धकेला।' ऐसे भयानक लोगों के पीछे लगने से यह कहावत बनती है, 'आप डुबेंदे बाहमणां जजमान भी गाले।' भेड़ की पूँछ पकड़कर नदी पार नहीं की जा सकती, 'भेडे पूछलि लगिआ किउं पारि लंघीऐ।' (वारां भाई गुरदास, 34:7)। पर हाँ! गाय की पूँछ पकड़कर नदी पार कर सकते हैं।

संसार गुरुओं से भरा पड़ा है। वे इतने अधिक हो गए हैं कि ईंट उठाओ और गुरु मिलता है, शिष्य इतने नहीं मिलते जितने कि गुरु मिलते हैं। सच के खोजियों को जब गुरु से मिलने की तड़प होती है तो वे ऐसे अपने आप बने हुए गुरुओं के पास जाते हैं और श्रद्धा सहित सेवा करते हैं, पर जब पास रहकर देखते हैं कि वह गुरु भी मन-इंद्रियों का उसी तरह गुलाम है, जिस प्रकार और मनुष्य होते हैं और केवल पैसे बटोरने का सामान बनाया हुआ है, तो वे कह उठते हैं हमें ऐसा गुरु नहीं चाहिए और गुरु पद के विरुद्ध जिहाद खड़ा कर देते हैं। वे अपनी चतुराई द्वारा यहाँ तक कह देते हैं कि धर्म पुस्तकों में जहाँ-जहाँ गुरु का उल्लेख आया है, यह केवल उस समय या काल के लिए था, आजकल किसी गुरु की आवश्यकता नहीं और धर्म पुस्तकें ही गुरु का काम दे सकती हैं। उसका फल क्या निकला कि सजीव और चेतन की पूजा की कहीं व्यवस्था दिखाई नहीं देती, उलटे मुर्दापरस्ती का रिवाज हो गया है। देहधारी चेतन संत-महात्मा को किसी घर में आदर की दृष्टि से नहीं देखा जाता, उनके स्थान पर पुरातन ऋषि-मुनियों की काग़ज़ी तस्वीरों से मकान को सजाया जाता है। असली गुलाब के फूल को लोग कम सूँघते हैं, काग़ज़ी नक़ली फूलों का घर-घर रिवाज हो रहा है। चेतन की पूजा कोई नहीं कर रहे, जड़ प्रकृति की पूजा मुख्य रखी जा रही है। अपने शरीर की किताब कोई नहीं पढ़ता, काग़ज़ी किताबों का रिवाज ज़ोरों पर है। जीते-जागते साधु-संत की किसी

को खोज नहीं है, उनका काम लोग मासिक पत्रों और ट्रैक्ट (धार्मिक पुस्तिकाओं) से लेना चाहते हैं। वास्तविकता को भूले हुए लोग यह समझते हैं कि गुरु वह है जो आलिम-फ़ाज़िल (विद्वान-पंडित) हो, जो भाषण दे सके या कथा कर सके, दो-चार किताबों का लेखक हो जाए, कुछ ऋद्धि-सिद्धि की शक्ति रखकर किसी को वर और किसी को शाप दे सके या किसी के दिल का हाल बता दे और इस प्रकार दुनिया को मदारी का खेल दिखाकर इकट्ठा कर सके। यदि यह ठीक है तो जितने गुणी-ज्ञानी हैं, वे सब गुरु होने चाहिएँ, पर देखने में आता है कि वे भी मन-इंद्रियों के उसी प्रकार अधीन हैं जिस प्रकार और सब। इस प्रकार के किताबें पढ़े हुए बेअमल (केवल वाचक) लोगों की हालत उस गधे की तरह है जिसकी पीठ पर बहुत-सी किताबों का या चंदन का भार है, पर वह उनके ज्ञान और सुगंध से बेख़बर है। यदि ऋद्धि-सिद्धि की शक्ति वालों का नाम गुरु है, तो मेस्मेराइज़ (Mesmerize) करनेवाले और मदारी लोग जो शहरों की सड़कों पर पैसा कमाने का तरीक़ा बना रहे हैं, वे सब गुरु हैं।

असल गुरु परमार्थ के तत्त्व का ज्ञाता है और शक्तियाँ रखते हुए भी उनका दिखावे के लिए प्रयोग नहीं करता। बनावटी गुरुओं की गिनती अधिक होने के कारण, सच्चे साधु-संत को भी पाखंडी ही समझा जाता है; लोग उस पर विश्वास नहीं करते, साँप का डसा हुआ रस्सी से भी डरता है। एक बार किसी बनावटी गुरु से धोखा खाकर सच्चे गुरु पर विश्वास करने में लोग संकोच करते हैं। पाखंडी गुरुओं के कारण हमारे दु:खदायक अनुभव ने हमें हद से ज़्यादा होशियार और शक्की बना दिया है।

शिष्य का गुरु को खोजना और पहचान लेना अत्यंत कठिन है। जिस मार्ग से जो परिचित ही नहीं, वह उस मार्ग के नज़ारों का कैसे विश्वास करे! महात्मा की परीक्षा करना भूल है, पर यदि अंधाधुंध भरोसा करें तो भी ख़तरा है, क्योंकि अपूर्ण गुरु द्वारा मुक्ति नहीं हो सकती। काचे गुर ते मुकत न हूआ॥ (गुरु नानक देव; आदि ग्रन्थ, पृ.932) गुरु पदवी कोई दुकानदारी नहीं, यह तो केवल उस मालिक की बख़्शिश है। पाखंडी और दंभी मनुष्यों ने गुरु पद को गिरा दिया है। यह पद केवल रस्मी ही रह गया है:

सिखा कंन चड़ाईआ गुर ब्राहमण थिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ.471

जिस गुरु के द्वारा हमारा भ्रम दूर न हो, वह गुरु किस काम का! वह आप तो डूबा हुआ है, जो उसके साथ लगेगा उसको भी ले डूबेगा:

कबीर माए मूंडउ तिह गुरू की जा ते भरम न जाए॥
आप डुबे चहु बेद मह चेले दीए बहाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1369–70

जो आप ही भवसागर से नहीं तरा, वह दूसरों को किस प्रकार तार सकता है?

जो डुबंदो आप सो तराए किन्ह खे॥
तारेदड़ो भी तार नानक पिर सिउ रतिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1101

जिसका गुरु स्वयं अंधा है, उसके चेलों का कहाँ ठिकाना हो सकता है?

गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं कि जो आंतरिक मार्ग का ज्ञाता नहीं और जिसकी अंतर की आँख नहीं खुली, उसको इस स्थूल दुनिया के परे कुछ दिखाई नहीं देता, वह दूसरों को उस मार्ग पर किस प्रकार लगा सकता है:

गुरू सदाए अगिआनी अंधा किस ओह मारग पाए॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 491

वह तो स्वयं पाँच डाकुओं से लुटा हुआ है, स्वयं मंदमति है, वह रूहानी मार्ग को किस प्रकार पहचान सकता है?

अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधर जाणै॥
आप मुसै मत होछीऐ किउ राह पछाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 767

वह झूठ बोलता है और मुर्दे (जड़ वस्तु) खाता है और स्वयं माया द्वारा लूटा गया है। वह अंधे का अंधा है। अंधे से तात्पर्य केवल यह नहीं कि निरा सूरदास ही हो, नहीं, जिसके अंतर में प्रकाश नहीं हुआ हो उस मूर्ख को अंधा कहा जाता है:

अंधे एह न आखीअन जिन मुख लोइण नाहे॥
अंधे सेई नानका खसमहो घुथे जाहे॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 954



पर जो इस प्रकार का अंधा होते हुए भी दूसरों को रास्ता दिखाने का दंभ करता है वह अवश्य अपने साथियों को गुमराह करता है, वह आगे मालिक की दरगाह में मान नहीं पाता:

कूड़ बोल मुरदार खाए॥ अवरी नो समझावण जाए॥
मुठा आप मुहाए साथै॥ नानक ऐसा आगू जापै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 139-40

गुरु नानक साहिब कहते हैं:

नानक अंधा होए कै दसे राहै सभस मुहाए साथै॥
अगै गइआ मुहे मुह पाहे सो ऐसा आगू जापै॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 140

ऐसे अंधे गुरु के बताए हुए मार्ग पर वही चलेगा जो स्वयं अंधा हो, यदि आँखों वाला होगा तो वह क्यों कुमार्ग पर चलेगा?

अंधे कै राह दसिऐ अंधा होए सो जाए॥
होए सुजाखा नानका सो किउ उझड़ पाए॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

अंधे गुरु से भ्रम दूर नहीं हो सकता, वह मूल को छोड़कर दूसरी ओर चला जाता है। उस पर माया का विष चढ़ा रहता है और माया ही उसके अंदर समाई रहती है:

अंधे गुरू ते भरम न जाई॥ मूल छोड लागे दूजै भाई॥
बिख का माता बिख माहे समाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 232

जिनका गुरु अंधा हो, उसके शिष्य भी अंधे कर्म ही करेंगे। वे अपने भाणे यानी इच्छा में चलते हैं और नित्य झूठ ही झूठ बोलते हैं:

गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेन॥
ओए भाणै चलन आपणै नित झूठो झूठ बोलेन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 951

गुरु होना सरल नहीं, बड़े भारी उत्तरदायित्व का काम है। उसका काम शिष्य की आत्मा को मालिक से मिलाना है। यह काम कोई पूर्ण समर्थ पुरुष ही निभा सकता है। झूठा गुरु तो उल्टा अपना नुक़सान और अकाज कर लेता है। स्वयं भटकता है और साथ ही दूसरों को भटकाता है। यही हाल भेषधारी गुरुओं का भी है:

कबीर बामन गुरू है जगत का भगतन का गुर नाहे॥
अरझ उरझ कै पच मूआ चारउ बेदहो माहे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1377

इसलिए ऐसा पूर्ण गुरु चाहिए जिससे कुछ प्राप्त हो सके और जो कुछ देने की सामर्थ्य रखता हो:

फरीदा सोई सरवर ढूढ लहो जिथहो लभी वथ॥
छपड़ ढूढै किआ होवै चिकड़ डुबै हथ॥

शेख़ फ़रीद, आदि ग्रन्थ, पृ. 1380

जो परमार्थ की कमाई करता है, केवल उसी को उपदेश देने का अधिकार है। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

आप कमाउ अवरा उपदेस॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 185

जिसके अंदर मालिक बसता है, उसकी शिक्षा के द्वारा ही संसार का कल्याण हो सकता है:

जिस कै अंतर बसै निरंकार॥ तिस की सीख तरै संसार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 269

जिस मनुष्य के अंदर जड़ और चेतन माया, ज़र और ज़न, कंचन और कामिनी का विष चढ़ा हुआ है और जो दिखावे के मीठे वचन लोगों को सुनाता है, वह यमपुर का अधिकारी है:

अंतर बिख मुख अंम्रित सुणावै॥ जम पुर बाधा चोटा खावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 194

उसका आचरण तो कुछ और है और कमाई भी उल्टी करता है, हृदय मालिक के प्रेम से शून्य है, पर मुँह से पदों की रचना और चतुराईपूर्ण उक्तियों से लोगों को प्रसन्न करता है। मालिक तो घट-घट की जाननेवाला है, वह बाहर के भेषों पर नहीं रीझता। जो स्वयं तो कमाई नहीं करता और दूसरों को उपदेश देता है, वह जन्म-मरण में आता है:

रहत अवर कछु अवर कमावत॥ मन नही प्रीत मुखहो गंढ लावत॥
जाननहार प्रभू परबीन॥ बाहर भेख न काहू भीन॥
अवर उपदेसै आप न करै॥ आवत जावत जनमै मरै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 269

जो लोग कमाई नहीं करते, केवल कथनी और वाद-विवाद में ही हैं, वे शब्द और वास्तविक तत्त्व को नहीं पहचानते:

उपदेस करै आप न कमावै तत सबद न पछानै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 380

आवश्यकता इस बात की है कि पहले अपने मन का सुधार हो, फिर दूसरों को रिझाए, पहले रामनाम अपने हृदय में बसाए और फिर दुनिया को सुनाए:

प्रथमे मन परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै॥
राम नाम जप हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 381

जिस प्रकार करछी हलवे में भरी रहने पर भी उसके स्वाद से अनजान रहती है, उसी प्रकार हरिनाम से शून्य उपदेशक किसी काम का नहीं:

कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणन्हि सुञीआ॥
सेई मुख दिंसन्हि नानक रते प्रेम रस॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 521

जिनको मन की प्रतीति नहीं उनका ज्ञान-ध्यान निष्फल है:

जिन कउ मन की परतीत नाही नानक से किआ कथहि गिआनै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 647

जिनके हृदय के अंदर तो कपट है और मुख से झूठा ज्ञान कहते हैं, वे केवल पानी को मथ रहे हैं, उसमें से कुछ नहीं निकलता, माया के विष में मत्त लोग भ्रमों में भूले पड़े हैं। ऐसे लोग उपदेश क्या दे सकते हैं:

हृदै कपट मुख गिआनी॥ झूठे कहा बिलोवस पानी॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ. पृ. 656

बिखिआ माते भरम भुलाए उपदेस कहहे किस भाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 909

किसी ऐसे पुरुष के पास बैठो जिसके अंदर अमृत का भंडार हो। यह विचार के योग्य बात है कि जो भी वस्तु मालिक के घर में पड़ी हो, वह नौकर को मिल सकती है, पर जो चीज़ मालिक के घर में ही नहीं, वह नौकर वहाँ से किस प्रकार ले सकता है? जिसका मालिक स्वयं भूखा-नंगा हो, उसका नौकर कहाँ से भरपेट खा सकता है। जिस गुरु की सेवा करने से धर्म राए फिर उससे हिसाब माँगे, उसकी सेवा दु:ख का कारण बनती है। हमें ऐसे गुरु की सेवा करनी चाहिए जो हरि का रूप हो, जिसका दर्शन जीव के लिए सफल हो और फिर धर्म राए हिसाब न माँगे। गुरु रामदास जी इस बारे में फ़रमाते हैं:

साहिब जिस का नंगा भुखा होवै तिस दा नफर किथहो रज खाए॥
जे साहिब कै घर वथ होवै सो नफरै हथ आवै अणहोदी किथहो पाए॥
जिस दी सेवा कीती फिर लेखा मंगीऐ सा सेवा अउखी होई॥
नानक सेवा करहो हर गुर सफल दरसन की फिर लेखा मंगै न कोई॥

आदि ग्रन्थ, पृ. 306

दुनिया ऐसे झूठे गुरुओं से भरी पड़ी है। सच्चा गुरु वह है जो शब्द-स्वरूपी और शब्द-अभ्यासी हो और जो शिष्य को शब्द की धारा से जोड़ सके। जो ऐसे गुरु को छोड़कर किसी झूठे गुरु के पास फँस गया तो वह मायाजाल में ही रह गया। मनुष्य-देह दुर्लभ है, अकारथ चली जाती है, इसलिए कबीर साहिब फ़रमाते हैं कि ऐसे गुरु को छोड़ने में देर न करो: झूठे गुरु के पच्छ को, तजत न कीजै बार। द्वार न पावै सबद का, भटकै बारंबार॥ (कबीर साखी-संग्रह, पृ. 13)

ऐसा अफ़सोसनाक हाल देखकर लोग गुरु पद को बदनाम करते हुए सच्चे साधु-संतों की भी निंदा कर बैठते हैं। हमारे दिलो-दिमाग़ में उनकी ओर से इतनी

नफ़रत हो चुकी है कि हम सच्चे महात्मा के पास जाने में भी संकोच करते हैं, यदि जाते भी हैं तो मलिन बुद्धि होने के कारण हम उन्हें अपनी बुरी नज़रों द्वारा देखते हुए उनका ग़लत अनुमान लगा लेते हैं।

एक मालिक, गुरु और सत्संग, ये तीनों आदि से ही परमार्थ के मूल-तत्त्व माने गए हैं। सच्चे महात्मा और उसकी संगति के बग़ैर जीव का कल्याण नहीं। यदि हमारा सच्चे महात्मा के साथ मेलजोल रहे तो उसकी सच्ची महत्ता और श्रेष्ठता हमारे जीवन में झलकने लगती है और हमारे सब संशय दूर हो जाते हैं, सच्ची महत्ता कभी छिपी नहीं रह सकती। उसके रसभरे वचन और आत्मिक प्रवाह हमारे ऊपर प्रभाव डालते हैं और हम गुरु को उसके सच्चे रंग में समझने लगते हैं।

संसार में डिंभी गुरुओं की इतनी अधिकता है कि लोग समझते हैं कि सच्चा गुरु कोई है ही नहीं और यदि है तो इतनों में उसका पता लगाना कठिन है, इसलिए वे हारकर चुप हो जाते हैं। यदि अंतर में सच्ची खोज करने की लगन हो तो महात्मा से मिलाप की परिस्थिति मालिक आप उत्पन्न कर देता है, वह (गुरु) स्वयं आकर मिल जाता है। यह मालिक का नियम है। दरवाज़ा खटखटाओ वह अवश्य खोला जाएगा, जो माँगो वह दिया जाएगा।

Knock, and it shall be opened unto you.

Bible, Luke 11:9

Ask, and it shall be given you; seek, and ye shall find.

Bible, Mathew 7:7

When the chela is ready, the Guru appears.

सच पूछो तो गुरु आप ही चेले की तलाश कर लेता है। गुरवाणी भी कहती है:

पिता क्रिपाल आगिआ इह दीनी बारिक मुख मांगै सो देना॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1266

गुरु के प्रकट होने में देर नहीं, कमी है तो हमारी तड़प और याचना की। यदि किसी चीज़ की आवश्यकता हो तो हम कितनी ही निराशा होने पर भी प्रयास करते हैं। यदि लाल और हीरे पत्थरों की गोटियों में मिल जाएँ तो क्या हम केवल यह कहकर उन्हें फेंक देंगे कि उनको पत्थरों से अलग-अलग करना कठिन है? पहले विरह पैदा होता है फिर मालिक स्वयं मेहर करके सच्चे गुरु का मिलाप करा देता है। आगे आदि ग्रन्थ से गुरवाणी के कुछ प्रमाण दिए गए हैं।

ੴ

गुरबाणी

1. कच्चा गुरु

केते गुर चेले फुन हूआ॥ काचे गुर ते मुकत न हूआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 932

2. अंधा गुरु

अंधे अकली बाहरे किआ तिन सिउ कहीऐ॥
बिन गुर पंथ न सूझई कित बिधि निरबहीऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 229

गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ॥
बिन सतगुर नाउ न पाईऐ बिन नावै किआ सुआउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेन॥
ओए भाणै चलन आपणै नित झूठो झूठ बोलेन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 951

अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधर जाणै॥
आप मुसै मत होछीऐ किउ राह पछाणै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 767

विण पारसै पूज न होवई विण मन परचे अवरा समझाए॥
गुरू सदाए अगिआनी अंधा किस ओह मारग पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491

नानक अंधा होए कै दसे राहै सभस मुहाए साथै॥
अगै गइआ मुहे मुह पाहे सो ऐसा आगू जापै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 140

अंधे कै राह दसिऐ अंधा होए सो जाए॥
होए सुजाखा नानका सो किउ उझड़ पाए॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

नानक अंधा होए कै रतना परखण जाए॥
रतना सार ना जाणई आवै आप लखाए॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

3. अंधा कौन है?

अंधे एह न आखीअन जिन मुख लोइण नाहे॥
अंधे सेई नानका खसमहो घुथे जाहे॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

सो किउ अंधा आखीऐ जे हुकमहो अंधा होए॥
नानक हुकम न बुझई अंधा कहीऐ सोए॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 954

4. ऐसा गुरु स्वयं डूबता है और शिष्यों को भी डुबो देता है

कूड़ कुसत कमावदे पर निंदा सदा करेन॥
ओए आप डुबे पर निंदका सगले कुल डोबेन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 951

जो डुबंदो आप सो तराए किन्ह खे॥
तारेदड़ो भी तार नानक पिर सिउ रतिआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1101

हंसा देख तरंदिआ बगा आइआ चाउ॥
डुब मुए बग बपुड़े सिर तल उपर पाउ॥

शेख़ फ़रीद, आदि ग्रन्थ, पृ. 1384

कबीर माए मूंडउ तिह गुरू की जा ते भरम न जाए॥
आप डुबे चहु बेद मह चेले दीए बहाए॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1369-70

कबीर ठाकुर पूजह मोल ले मनहठ तीरथ जाहे॥
देखा देखी स्वांग धर भूले भटका खाहे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1371

5. वह अपना नुक़सान करता है, रास्ते में ही रह जाता है और हरि को नहीं पाता

कबीर सिख साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीत॥
चाले थे हर मिलन कउ बीचै अटकिओ चीत॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1369

कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै पर है रेत॥
रास बिरानी राखते खाया घर का खेत॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1369

6. ऐसा गुरु करो जिससे कुछ अध्यात्म की पूँजी मिले

फरीदा सोई सरवर ढूढ लहो जिथहो लभी वथ॥
छपड़ ढूढै किआ होवै चिकड़ डुबै हथ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1380

7. गुरु स्वयं अपनी मेहनत की कमाई खाए

दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेस॥
जे घर घर हंढै मंगदा धिग जीवण धिग वेस॥

गुरु अमर दास, आदि ग्रन्थ, पृ. 550

गुर पीर सदाए मंगण जाए॥ ता कै मूल न लगीऐ पाए॥
घाल खाए किछ हथहो दे॥ नानक राह पछाणह से॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ 1245

8. भेषी या केवल विद्वान गुरु

कबीर बामन गुरू है जगत का भगतन का गुर नाहे॥
अरझ उरझ कै पच मूआ चारउ बेदहो माहे॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 1377

गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथ निबग॥
ओए हर के संत न आखीअह बानारस के ठग॥

कबीर साहिब, आदि ग्रन्थ, पृ. 476

हिरदै जिन्ह कै कपट वसै बाहरहो संत कहाहे॥
त्रिसना मूल न चुकई अंत गए पछुताहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 491

गुरु विहीन के दोष

आजकल घोर कलियुग का समय है, मन-इंद्रियाँ इतनी फैली हुई हैं कि आम लोग भोगों के कीड़े बन चुके हैं। 'खाओ पीओ और मौज करो' का उसूल अपनाया हुआ है, उनको शरीर से परे और कुछ भी वास्तविक प्रतीत नहीं होता। वे शरीर को पकड़े बैठे हैं और इसको चलानेवाली आत्मा का कोई ज्ञान ही नहीं। क्या वह चेतना जो शरीर को सत्ता प्रदान कर रही है, इसके हाड़-मांस से श्रेष्ठ नहीं? आत्मा के कारण ही इस शरीर का सब आदर और शोभा है, आत्मा के इसमें से निकल जाने के बाद कोई इसको एक पल भी नहीं रखता, जल्दी से जल्दी क़ब्रिस्तान या श्मशान में पहुँचा दिया जाता है।

यदि किसी ने अपनी आत्मा को नहीं पहचाना, केवल शरीर को ही पकड़े बैठा रहा, जिसने शरीर की चालक आत्मा को संसार में उलझकर खो दिया और सारे संसार को प्राप्त कर भी लिया तो क्या लाभ है।

जीवन के असली उद्देश्य को समझो। क्या जीवन मांस से और शरीर अपने पहने हुए कपड़ों से अधिक मूल्यवान नहीं? मनुष्य सारे इल्मों (विद्याओं) और विज्ञान के आविष्कारों को प्राप्त करके भी दुःख का रूप बना बैठा है। इसका कारण क्या है? केवल यही कि उसने अपने आप को जानने से पहले प्राकृतिक शक्तियों पर अधिकार पा लिया है जो आज के भयानक युद्धों में मनुष्यों की हत्या करने के काम में लाई जा रही हैं। कुछ ऐसी हवा चल पड़ी है कि लोग यहाँ तक कहते नज़र आते हैं कि हमारा परमात्मा से वास्ता क्या है, गुरु की हमें क्या आवश्यकता है? हम जानें और हमारा ईश्वर। बड़े आश्चर्य की बात है कि मामूली से मामूली काम सीखने के लिए उस्ताद की ज़रूरत पड़ती है तो क्या परमार्थ ही ऐसा साधारण और सरल काम है जो गुरु, पीर या उस्ताद के बग़ैर ही पूर्ण हो सकता है? (देखें: 'गुरु की आवश्यकता' का प्रकरण)।

मनुष्य जीवन सबसे ऊँचा है। जीव को मनुष्य-देह के अंदर ही मालिक से मिलाप करना है, पर यह बाहर ही भटकता रहता है, इस कायारूपी मंदिर में प्रवेश नहीं करता और न अपने आप को जानता है और न मालिक को।

इस कायारूपी मंदिर की कुंजी गुरु के पास है। उनसे कुंजी लेकर जीव इस पिंड से ऊपर उठकर अंड और ब्रह्मांड से पार जा सकता है और मालिक से मिलाप कर सकता है।

गुरु के न मिलने के कारण मनुष्य जीवन व्यर्थ चला जाता है और उसमें जो कार्य सिद्ध करना था उससे जीव वंचित रह जाता है। गुरवाणी कहती है कि जो पुरुष, गुरुमंत्र से हीन हैं उनका जन्म भ्रष्ट है, वे कुत्ते की भाँति भौंक-भौंककर मर जाते हैं, सूअर की भाँति विषयों की विष्टा का आहार करते हैं, गधे की तरह दुनिया का भार ढो-ढोकर खप जाते हैं और साँप की तरह विष घोलते रहते हैं:

> गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह॥
> कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुल खलह॥
>
> गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1356

मनमुख के जन्म को धिक्कार (हज़ार बार लानत) है, जिसने पूरे गुरु की सेवा नहीं की, वह भक्ति से हीन रहकर व्यर्थ जन्म गँवा लेता है, उसका संसार में आना किस काम का!

> ध्रिग ध्रिग मनमुख जनम गवाइआ॥
> पूरे गुर की सेव न कीनी हर का नाम न भाइआ॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

> भाई रे भगतिहीण काहे जग आइआ॥
> पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनम गवाइआ॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 64

हमारे अंदर जन्म-जन्मांतरों की मैल भरी पड़ी है:

> जनम जनम की इस मन कउ मल लागी काला होआ सिआह॥
>
> गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 651

इस मैल को दूर करने का इलाज शब्द की कमाई है, जो गुरु के द्वारा मिलती है। जो गुरु से विहीन है, न उसको शब्द की प्राप्ति हो सकती है और न ही उसकी मैल छूट सकती है:

बिन गुर मैल न उतरै बिन हर किउ घर वास॥
एको सबद वीचारीऐ अवर तिआगै आस॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

विषय-भोगों में जीव सुखी नहीं हो सकता, असली सुख तो आत्मिक रस में है, जो मालिक के मिलाप से उत्पन्न होता है और जो गुरु के बिना प्राप्त नहीं हो सकता:

जे लख इसतरीआ भोग करह नव खंड राज कमाहे॥
बिन सतगुर सुख न पावई फिर फिर जोनी पाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

सतगुरु के बग़ैर सब दुनिया बिलख-बिलखकर मर जाती है, दिन-रात माया की गुप्त अग्नि में तपती और तड़पती रहती है और शांति नहीं पाती:

बिन सतगुर सभ मुई बिललाए॥ अनदिन दाझह सात न पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

लख पीर पैकंबर अउलीए लख काजी मुलां सेख।
किसै सांत न आईआ बिन सतगुरू के उपदेस।

जन्म साखी भाई बाले वाली, पृ. 143

मनमुख की आंतरिक आँख नहीं खुलती, वह अंधा होकर कर्म कमाता है और बिना गुरु के, मोह-माया में बँधा हुआ, दुःख पाता है:

मनमुख अंधा अंध कमावै बिख़ खटे संसारे॥
माइआ मोह सदा दुख पाए बिऩ गुर अत पिआरे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

सब जगत गुरु के बिना बौराया फिरता है और उसे मालिक के घर का बोध नहीं प्राप्त होता। जन्म-मरण में आकर दुःखी रहता है:

बाझ गुरू जगत बउराना भूला चोटा खाई॥
मर मर जंमै सदा दुख पाए दर की खबर न पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

गुरु विहीन होने के अनेक दोष हैं। जीव माया में लिप्त हुआ तृष्णाओं में तपता रहता है और काम, मोह और गर्व में रहता हुआ सद्गति नहीं पाता। उसके अहंकार का रोग नहीं मिटता और न ही मन स्थिर होता है। गुरु बिना सब जगह घोर अंधकार है, जीव को कुछ सूझता नहीं और न ही कमाई हो सकती है। गुरु के बिना परमार्थ का ठीक बोध नहीं हो सकता, न इसको युक्ति आती है और न कोई सिद्धि हो सकती है:

गुर बिन घोर अंधार गुरू बिन समझ न आवै॥
गुर बिन सुरत न सिध गुरू बिन मुकत न पावै॥

भट्ट कल्य, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

मन हाथी है, गुरु महावत है जो ज्ञान के अंकुश द्वारा इसको सीधे रास्ते पर रखता है। गुरु से कुंजी लेकर जीव पिंड से ऊपर उठकर अंड और ब्रह्मांड से पार जा सकता है। गुरु के बिना मन का द्वार नहीं खुलता और घर की राह नहीं मिलती, जीव ग्रंथ-पोथियों को पढ़ता है, तत्त्व की चर्चा और व्याख्या करता है पर तत्त्व से वंचित रह जाता है:

कहो नानक निहचउ धिआवै॥ विण सतगुर वाट न पावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

सिम्रिति सासत्र पड़ह पुराणा॥ वाद वखाणह तत न जाणा॥
विण गुर पूरे तत न पाईऐ सच सूचे सच राहा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1032

उसके सिर पर यम का भय और चौरासी का चक्कर बना रहता है, वह भवसागर से पार नहीं हो सकता:

जिना सतगुर पुरख न भेटिओ से भागहीण वस काल॥
ओए फिर फिर जोन भवाईअह विच विसटा कर विकराल॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

कहो नानक गुर बिन नही तरीऐ इह पूरन तत बीचारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 611

गुरु के बिना भक्ति और भाव नहीं बनता, नाम के साथ प्यार नहीं होता और ज्ञान की प्राप्ति असंभव है:

बिन सतगुर भगति न होवई नाम न लगै पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1417

बिन गुर भगति न भाउ होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1170

भाई रे गुर बिन गिआन न होए॥ पूछहो ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

सब वेद-शास्त्र और अन्य ग्रंथ आदि यही पुकारते हैं कि गुरु के बिना कोई मुक्ति नहीं पा सकता, सबका इस विषय में एक ही मत है:

सासत बेद सिम्रिति सभ सोधे सभ एका बात पुकारी॥
बिन गुर मुकत न कोऊ पावै मन वेखहो कर बीचारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 495

यह गहन विचार से देखा गया है कि बिना पूर्ण गुरु के जीव का उद्धार नहीं होता और उसे हरि के द्वार की प्राप्ति नहीं होती:

बिन गुर न पावैगो हर जी को दुआर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 535

गुरु प्रभु कृपा और पूर्ण भाग्य के बग़ैर नहीं मिलता:

किरपा करे गुर पाईऐ हर नामो दे द्रिड़ाए॥
बिन गुर किनै न पाइओ बिरथा जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

बिन भागा सतगुर ना मिलै घर बैठिआ निकट नित पास॥
अंतर अगिआन दुख भरम है विच पड़दा दूर पईआस॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

निगुरे का दर्शन बुरा है, निगुरे की गति असह्य है और सतगुरु से मुँह फेरने या उसकी निंदा करनेवाले की दुर्गति अकथनीय है। इसके बारे में और ऊपर लिखे विषयों पर, आदि ग्रन्थ की गुरवाणी के अनेक प्रमाण पाठकों के विचार के लिए दिए गए हैं।

ੴ

गुरवाणी

1. गुरु विहीन के दोष

1.1. जन्म व्यर्थ जाता है

नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आण मउजूद॥
बाझहो सतगुर आपणे बैठा झाक दरूद॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1096

जनम मरन कउ इह जग बपुड़ो इन दूजै भगति विसारी जीउ॥
सतगुर मिलै त गुरमत पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 598

गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह॥
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुल खलह॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1356

ध्रिग ध्रिग मनमुख जनम गवाइआ॥
पूरे गुर की सेव न कीनी हर का नाम न भाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1130

भाई रे भगतिहीण काहे जग आइआ॥
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनम गवाइआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 64

जिन हर हर हर रस नाम न पाइआ ते भागहीण जम पास॥
जो सतगुर सरण संगत नही आए ध्रिग जीवे ध्रिग जीवास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 10

जिन ऐसा सतगुर साध न पाइआ ते ध्रिग ध्रिग नर जीवाईऐ॥
जनम पदारथ पुंन फल पाइआ कउडी बदलै जाईऐ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1179

किरपा करे गुर पाईऐ हर नामो दे द्रिड़ाए॥
विन गुर किनै न पाइओ बिरथा जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

1.2. बिना गुरु मैल नहीं उतरता

बिन गुर मैल न उतरै बिन हर किउ घर वास॥
एको सबद वीचारीऐ अवर तिआगै आस॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 18

1.3. धैर्य और संतोष नहीं आता

लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीत मिलाप॥
बिन संगत साध न ध्रापीआ बिन नावै दूख संताप॥
हर जप जीअरे छुटीऐ गुरमुख चीनै आप॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

1.4. सुख और शांति नहीं मिलती

गुर बिन किउ तरीऐ सुख होए॥
जिउ भावै तिउ राख तू मै अवर न दूजा कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

जे लख इसतरीआ भोग करह नव खंड राज कमाहे॥
बिन सतगुर सुख न पावई फिर फिर जोनी पाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 26

सचा सबद सालाहे सच समाईऐ॥
विण सतगुर सेवे नाही सुख निवास फिर फिर आईऐ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 144

बिन सतगुर सभ मुई बिललाए॥ अनदिन दाझह सात न पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 664

मनमुख रोगी है संसारा॥ सुखदाता विसरिआ अगम अपारा॥
दुखीए नित फिरह बिललादे बिन गुर सांत न पावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 118

बिन सतगुर सेवे सात न आवई दूजी नाही जाए॥
जे बहुतेरा लोचीऐ विण करमै न पाइआ जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

1.5. निरंतर दु:ख रहता है

बिन गुर भेटे दुख कमाए॥ मनमुख बहुती मिलै सजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

मनमुख अंधा अंध कमावै बिख खटे संसारे॥
माइआ मोह सदा दुख पाए बिन गुर अत पिआरे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

दुख विच जंमै दुख मरै हउमै करत विहाए॥
आवण जाण न सुझई अंधा अंध कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 947

अन रस मह भोलाइआ बिन नामै दुख पाए॥
सतगुर पुरख न भेटिओ जे सची बूझ बुझाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 430

सतगुर मिलिऐ भुख गई भेखी भुख न जाए॥
दुख लगै घर घर फिरै अगै दूणी मिलै सजाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 586-87

1.6. जग बौराया फिरता है, भ्रमों में भूलता है, मालिक के दर की ख़बर नहीं मिलती

बाझ गुरू जगत बउराना भूला चोटा खाई॥
मर मर जंमै सदा दुख पाए दर की खबर न पाई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

खट दरसन जोगी संनिआसी बिन गुर भरम भुलाए॥
सतगुर सेवह ता गति मित पावह हर जीउ मंन वसाए॥
सची बाणी सिउ चित लागै आवण जाण रहाए॥
पंडित पड़ पड़ वाद वखाणह बिन गुर भरम भुलाए॥
लख चउरासीह फेर पइआ बिन सबदै मुकत न पाए॥
जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतगुर मेल मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

1.7. माया में मोहित रहता है

है निकटे अर भेद न पाइआ॥ बिन सतगुर सभ मोही माइआ॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1139

1.8. तृष्णा की अग्नि में जलता है

जिनी नाम विसारिआ दूजी कारै लग॥
दुबिधा लागे पच मुए अंतर त्रिसना अग॥
गुर राखे से उबरे होर मुठी धंधै ठग॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19

देह देह आखै सभ कोई जै भावै तै दे॥
गुरू दुआरै देवसी तिखा निवारै सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 933

त्रिसना दाधी जल मुई जल जल करे पुकार॥
सतगुर सीतल जे मिलै फिर जलै न दूजी वार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 588

1.9. जीव काम, मोह और गर्व में रहता हुआ गति नहीं पाता

मनमुख काम विआपी मोह संतापी किस आगै जाए पुकारे॥
नानक मनमुख थाउ न पाए बिन गुर अत पिआरे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 245

गुझा कमाणा प्रगट होआ ईत उतह खुआरी॥
नानक सतगुर बाझ मूठा मनमुखो अहंकारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 460

बिन सतगुर भेटे महा गरब गुबार॥ नानक बिन गुर मुआ जनम हार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

बिन सतगुर सोझी ना पवै अहंकार न विचहो जाए॥
अहंकारीआ नो दुख भुख है हथ तडह घर घर मंगाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 303

1.10. हौमैं का रोग नहीं जाता

बिन गुर रोग न तुटई हउमै पीड़ न जाए॥
गुर परसादी मन वसै नामे रहै समाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 36

1.11. मन स्थिर नहीं होता; कठोर हृदय वाले सतगुरु के पास नहीं बैठ सकते

मनमुख प्राणी मुगध है नामहीण भरमाए॥
बिन गुर मनूआ ना टिकै फिर फिर जूनी पाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 313

जिन के चित कठोर हहे से बहहे न सतगुर पास॥
ओथै सच वरतदा कूड़िआरा चित उदास॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 314

1.12. गुरु के बिना घोर अंधकार है, कुछ सूझता नहीं, न कमाई होती है और न युक्ति आती है

जे सउ चंदा उगवह सूरज चड़ह हजार॥
एते चानण होदिआं गुर बिन घोर अंधार॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 463

गुर बिन घोर अंधार गुरू बिन समझ न आवै॥
गुर बिन सुरत न सिध गुरू बिन मुकत न पावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1399

कालर बीजस दुरमत ऐसी निगुरे की नीसाणी॥
सतगुर बाझहो घोर अंधारा डूब मुए बिन पाणी॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1275

बाझ गुरू है अंध गुबारा॥ अगिआनी अंधा अंध अंधारा॥
बिसटा के कीड़े बिसटा कमावह फिर बिसटा माहे पचावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 116

अठसठ मजन कर इसनाना भ्रम आए धर सारी॥
अनिक सोच करह दिन राती बिन सतगुर अंधिआरी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 495

नानक बिन सतगुर भेटे जग अंध है अंधे करम कमाए॥
सबदै सिउ चित न लावई जित सुख वसै मन आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 554

गुरमुख नाद बेद बीचार॥ बिन गुर पूरे घोर अंधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1270

बाझहो गुरू अचेत है सभ बधी जमकाल॥
नानक गुरमत उबरे सचा नाम समाल॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

पर द्रोह करत बिकार निंदा पाप रत कर झार॥
बिना सतगुर बूझ नाही तम मोह महां अंधार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1229

बिन गुर सोझी किसै न होए॥ आपे करै करावै सोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1344

बिन सतगुर सोझी ना पवै अहंकार न विचहो जाए॥
अहंकारीआ नो दुख भुख है हथ तडह घर घर मंगाए॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 303

पसूआ करम करै नही बूझै कूड़ कमावै कूड़ो होए॥
सतगुर मिलै त उलटी होवै खोज लहै जन कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1132

घर होदै धन जग भुखा मुआ बिन सतगुर सोझी न होए॥
सबद सीतल मन तन वसै तिथै सोग विजोग न कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1249

1.13. गुरु बिना राह नहीं मिलती और जीव सदा भटकता रहता है

मनमुख भुलै भुलाईऐ भूली ठउर न काए॥
गुर बिन को न दिखावई अंधी आवै जाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 60

मन कुंचर पीलक गुरू गिआन कुंडा जह खिंचे तह जाए॥
नानक हसती कुंडे बाहरा फिर फिर उझड़ पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 516

कुड कपट कमावै महा दुख पावै विण सतगुर मग न पाइआ॥
उझड़ पंथ भ्रमै गावारी खिन खिन धके खाइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 773

बिन सतगुर को मग न जाणै अंधे ठउर न काई॥
हर सुखदाता मन नही वसिआ अंत गइआ पछुताई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 65

कहो नानक निहचउ धिआवै॥ विण सतगुर वाट न पावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

1.14. गुरु के बिना मन का द्वार नहीं खुलता और तत्त्व नहीं मिलता

गुर कुंजी पाहू निवल मन कोठा तन छत॥
नानक गुर बिन मन का ताक न उघड़ै अवर न कुंजी हथ॥

गुरु अंगद देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1237

बिन गुर तत न पाईऐ अलख वसै सभ माहे॥
सतगुर मिलै त जाणीऐ जां सबद वसै मन माहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1093

सिम्रिति सासत्र पड़ह पुराणा॥ वाद वखाणह तत न जाणा॥
विण गुर पूरे तत न पाईऐ सच सूचे सच राहा हे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1032

1.15. गुरु के बिना जीव अंधा है, उसको घट की राह नहीं मिलती

पढ़ पुस्तक संधिआ बादं॥ सिल पूजस बगुल समाधं॥
मुख झूठ बिभूखन सारं॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं॥
गल माला तिलक लिलाटं॥ दुए धोती बसत्र कपाटं॥
जो जानस ब्रहमं करमं॥ सभ फोकट निसचै करमं॥
कहो नानक निसचौ ध्यावै॥ बिन सतगुर वाट न पावै॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1353

1.16. चौरासी का चक्कर बना रहता है

कोट जनम भ्रमतौ बहु भांती थित नही कतहू पाई॥
पूरा सतगुर सहज न भेटिआ साकत आवै जाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1224

सतगुर सुख सागर जग अंतर होर थै सुख नाही॥
हउमै जगत दुख रोग विआपिआ मर जनमै रोवै धाही॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 603

जिना सतगुर पुरख न भेटिओ से भागहीण वस काल॥
ओए फिर फिर जोन भवाईअह विच विसटा कर विकराल॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

जो बिन सतगुर सेवे खादे पैनदे से मुए मर जंमे कोढ़े॥
ओए हाजर मिठा बोलदे बाहर विस कढह मुख घोले॥
मन खोटे दयि विछोड़े॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 306

1.17. जीव भवसागर से पार नहीं होता

काची गागर देह दुहेली उपजै बिनसै दुख पाई॥
इह जग सागर दुतर किउ तरीऐ बिन हर गुर पार न पाई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 355

नानक मनमुख अंध पिआर॥ बाझ गुर डुबा संसार॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 138

जिन हर हर नाम न चेतिओ सो अउगुण आवै जाए॥
जिस सतगुरु पुरख न भेटिओ सो भउजल पचै पचाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 22

गुर बिन किउ तरीऐ सुख होए॥
जिउ भावै तिउ राख तू मै अवर न दूजा कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 20

पारब्रहम परमेसुर सतगुर सभना करत उधारा॥
कहो नानक गुर बिन नही तरीऐ इह पूरन तत बीचारा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 611

खसम छोड दूजै लगे डुबे से वणजारिआ॥
सतगुर है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ॥ कर किरपा पार उतारिआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 470

1.18. गुरु के बग़ैर भक्ति नहीं हो सकती

भाई रे गुर बिन भगति न होए॥ बिन गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभ कोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 31

मनमुख भगति करह बिन सतगुर विण सतगुर भगति न होई राम॥
हउमै माइआ रोग विआपे मर जनमह दुख होई राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 768

बिन सतगुर भगति न होवई नाम न लगै पिआर॥
जन नानक नाम अराधिआ गुर कै हेत पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1417

बिन गुर पूरे भगति न होए॥ मनमुख रुंने अपनी पत खोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 363

बिन गुर भगति न भाउ होए॥ बिन गुर संत न संग दे॥
बिन गुर अंधुले धंध रोए॥ मन गुरमुख निरमल मल सबद खोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1170

सिफत खजाना बखस है जिस बखसै सो खरचै खाए॥
सतगुर बिन हथ न आवई सभ थके करम कमाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 548

1.19. गुरु के बिना ज्ञान नहीं हो सकता

भाई रे गुर बिन गिआन न होए॥ पूछहो ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 59

गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिन गिआन न भाल जीउ॥
खिंचोताण विगुचीऐ बुरा भला दुए नाल जीउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 751

कुंभे बधा जल रहै जल बिन कुंभ न होए॥
गिआन का बधा मन रहै गुर बिन गिआन न होए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 469

1.20. बिना गुरु के नाम (शब्द) की प्राप्ति नहीं होती

बिन गुर महल न पाईऐ नाम न परापत होए॥
ऐसा सतगुर लोड़ लहो जिदू पाईऐ सच सोए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

बिन सतगुर नाउ न पाईऐ बुझहो कर वीचार॥
नानक पूरै भाग सतगुर मिलै सुख पाए जुग चार॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 649

बिन सतगुर भेटे नाम पाइआ न जाए॥ बिन सतगुर भेटे महा दुख पाए॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ॥
बिन सतगुर नाउ न पाईऐ बिन नावै किआ सुआउ॥
आए गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घर काउ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 58

सतगुर पुरख न मंनिओ सबद न लगो पिआर॥
इसनान दान जेता करह दूजै भाए खुआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 34

सतगुर सिउ चित न लाइओ नाम न वसिओ मन आए॥
ध्रिग इवेहा जीविआ किआ जुग मह पाइआ आए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 510

सतगुर कै भै भंन न घड़िओ रहै अंक समाए॥
अनदिन सहसा कदे न चूकै बिन सबदै दुख पाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 549-50

1.21. गुरु के बिना मुक्ति नहीं

बिन गुर दाते किनै न पाइआ॥ मनमुख लोभ दूजै लोभाइआ॥
ऐसे गिआनी बूझहो कोए॥ बिन गुर भेटे मुकत न होए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1277

बिन सतगुर किनै न पाई परम गते॥ पूछहो सगल बेद सिंम्रिते॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1348

गुर जहाज खेवट गुरू गुर बिन तरिआ न कोए॥
गुर प्रसाद प्रभ पाईऐ गुर बिन मुकत न होए॥

भट्ट गयंद, आदि ग्रन्थ, पृ. 1401

सासत बेद सिम्रिति सभ सोधे सभ एका बात पुकारी॥
बिन गुर मुकत न कोऊ पावै मन वेखहो कर बीचारी॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 495

हाहै हर कथा बूझ तूं मूड़े ता सदा सुख होई॥
मनमुख पड़ह तेता दुख लागै विण सतगुर मुकत न होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 435

बिन सतगुर सेवे जोग न होई॥ बिन सतगुर भेटे मुकत न कोई॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 946

बिन सतगुर मुकत न पाईऐ मनमुख फिरै दिवान॥
सबद न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहे समान॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 39

लख चउरासीह फिरदे रहे बिन सतगुर मुकत न होई॥
पड़ पड़ पंडित मोनी थके दूजै भाए पत खोई॥
सतगुर सबद सुणाइआ बिन सचे अवर न कोई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 70

बिन गुर पूरे नाही उधार॥ बाबा नानक आखै एह बीचार॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 886

हर के नाम बिना सभ झूठ।
बिन गुर पूरे मुकत न पाईऐ साची दरगह साकत मूट॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1151

तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाए॥
बिन गुर मुकत न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 67

कहत नानक इह जीउ करम बंध होई॥
बिन सतगुर भेटे मुकत न होई॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1128

नीर बिलोवै अत स्रम पावै नैनू कैसे रीसै॥
बिन गुर भेटे मुकत न काहू मिलत नही जगदीसै॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1205-06

मत को भरम भुलै संसार॥ गुर बिन कोए न उतरस पार॥...
कहो नानक प्रभ इहै जनाई॥ बिन गुर मुकत न पाईऐ भाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 864

1.22. बिना गुरु दरगाह में मान नहीं मिलता

किउ दरगह पत पाईऐ जा हर न वसै मन माहे॥
गुर मिलिऐ सुख पाईऐ अगन मरै गुण माहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

जिन कै हिरदै नाहे हर सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी॥
जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओह हर दरगह है भ्रसटी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

हौदै परतख गुरू जो विछुड़े तिन कउ दर ढोई नाही॥
कोई जाए मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुह पाही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 308

इह मन साच संतोखिआ नदर करे तिस माहे॥
पंच भूत सच भै रते जोत सची मन माहे॥
नानक अउगण वीसरे गुर राखे पत ताहे॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 19-20

1.23. गुरु के बिना मालिक से मेल नहीं होता

सिध साधिक नावै नो सभ खोजदे थक रहे लिव लाए॥
बिन सतगुर किनै न पाइओ गुरमुख मिलै मिलाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 650

बिन सतगुर किनै न पाइओ कर वेखहो मन वीचार॥
मनमुख मैल न उतरै जिचर गुर सबद न करे पिआर॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 37

बिन सतगुर किनै न पाइओ बिन सतगुर किनै न पाइआ॥
सतगुर विच आप रखिओन कर परगट आख सुणाइआ॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 466

सबद न भीजै साकता दुरमत आवन जान॥
साधू सतगुर जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधान॥

गुरु नानक देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 21

किरपा करे गुर पाईऐ हर नामो दे द्रिड़ाए॥
बिन गुर किनै न पाइओ बिरथा जनम गवाए॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 33

जिस का ग्रिह तिन दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई॥
अनिक उपाव करे नही पावै बिन सतगुर सरणाई॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 205

जिउ बैसंतर कासट मझार बिन संजम नही कारज सार॥
बिन गुर न पावैगो हर जी को दुआर॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 535

बिन सतगुर जग भरम भुलाइआ हर का महल न पाइआ राम॥
गुरमुखे इक मेल मिलाइआ तिन के दूख गवाइआ राम॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 771

आपे आप आप ही आपे सभ आपन खेल दिखाधा॥
पाइओ न जाई कही भांत रे प्रभ नानक गुर मिल लाधा॥

गुरु अर्जुन देव, आदि ग्रन्थ, पृ. 1204

धुर मारे पूरै सतगुरू सेई हुण सतगुर मारे॥
जे मेलण नो बहुतेरा लोचीऐ न देई मिलण करतारे॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 307

2. भाग्य बिना सतगुरु नहीं मिलता

बिन भागा सतगुर ना मिलै घर बैठिआ निकट नित पास॥
अंतर अगिआन दुख भरम है विच पड़दा दूर पईआस॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 40

3. सतगुरु से मुँह फेरनेवाले की गति

3.1. सतगुरु से जो विमुख होते हैं या गुरु से मुँह छिपाते हैं उनका कोई ठिकाना नहीं है, उनकी तृष्णा नहीं जाती और वे नरकों में जाते हैं

सतगुर ते जो मुह फेरह मथे तिन काले॥
अनदिन दुख कमावदे नित जोहे जम जाले॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 30

जो सतगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ॥
जिउ छुटड़ घर घर फिरै दुहचारण बदनाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 645

सतगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुख बुरे दिसंन॥
अनदिन बधे मारीअन फिर वेला न लहंन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233

सतगुर ते जो मुह फेरे ओए भ्रमदे न टिकंन॥
धरत असमान न झलई विच विसटा पए पचंन॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 233

गुर ते मुह फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चित धरै॥
कर आचार बहु संपउ संचै जो किछ करै सो नरक परै॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 1334

जिन गुर गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही॥
तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 308

जिन गुर गोपिआ आपणा तिस ठउर न ठाउ॥
हलत पलत दोवै गए दरगह नाही थाउ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 314

सतगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहे॥
फिर फिर मिलण न पाइनी जंमह तै मर जाहे॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 645

4. सतगुरु की निंदा का फल

हौदे परतख गुरू जो विछुड़े तिन कउ दर ढोई नाही॥
कोई जाए मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुह पाही॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 308

जिन गुरमुख हर आराधिआ तिन संत जना जैकार॥
कोई निंदा करे पूरे सतगुरू की तिस नो फिट फिट कहै सभ संसार॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 302

जो निंदा करे सतगुर पूरे की तिस करता मार दिवावै॥
फेर ओह वेला ओस हथ ना आवै ओह आपणा बीजिआ आपे खावै॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 303

जो मंदा चितवै पूरे सतगुरू का सो आप उपावणहारै मारिआ॥
एह गल होवै हर दरगह सचे की जन नानक अगम वीचारिआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 312

जो निंदा करे सतगुर पूरे की सो अउखा जग मह होइआ॥
नरक घोर दुख खूह है ओथै पकड़ ओह ढोइआ॥
कूक पुकार को न सुणे ओह अउखा होए होए रोइआ॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 309

5. निगुरे की गति

झझै कदे न झूरह मूड़े सतगुर का उपदेस सुण तूं विखा॥
सतगुर बाझहो गुर नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 435

जिन कै हिरदै नाहे हर सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी॥
जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओह हर दरगह है भ्रसटी॥

गुरु रामदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 528

गुर कै दरसन मोख दुआर॥ सतगुर सेवै परवार साधार॥
निगुरे कउ गति काई नाही॥ अवगण मुठे चोटा खाही॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 361

गुरमुख धरती गुरमुख पाणी॥ गुरमुख पवण बैसंतर खेलै विडाणी॥
सो निगुरा जो मर मर जंमै निगुरे आवण जावणिआ॥

गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 117

परमार्थ संबंधी पुस्तकें

***राधास्वामी* परंपरा**

सारबचन राधास्वामी वार्तिक – हुज़ूर स्वामी जी महाराज
सारबचन संग्रह – हुज़ूर स्वामी जी महाराज

परमार्थी पत्र, *भाग 1* – बाबा जैमल सिंह जी

गुरुमत सार – महाराज सावन सिंह जी
गुरुमत सिद्धान्त, *भाग 1, 2* – महाराज सावन सिंह जी
परमार्थी पत्र, *भाग 2* – महाराज सावन सिंह जी
प्रभात का प्रकाश – महाराज सावन सिंह जी
सन्तमत प्रकाश, *भाग 1 से 5* – महाराज सावन सिंह जी
सन्तमत सिद्धान्त – महाराज सावन सिंह जी

आत्म-ज्ञान – महाराज जगत सिंह जी
रूहानी फूल – महाराज जगत सिंह जी

जीज़स क्राइस्ट का उपदेश, *भाग 1* (सेंट जॉन) – महाराज चरन सिंह जी
जीज़स क्राइस्ट का उपदेश, *भाग 2* (सेंट मैथ्यू) – महाराज चरन सिंह जी
जीवत मरिए भवजल तरिए – महाराज चरन सिंह जी
दिव्य प्रकाश – महाराज चरन सिंह जी
प्रकाश की खोज – महाराज चरन सिंह जी
पारस से पारस – महाराज चरन सिंह जी
सत्संग संग्रह, *भाग 1 से 6* – महाराज चरन सिंह जी
सन्तमत दर्शन – महाराज चरन सिंह जी
संत-मार्ग – महाराज चरन सिंह जी
संत संवाद, *भाग 1, 2, 3* – महाराज चरन सिंह जी

अध्यात्म मार्ग – जूलियन जॉनसन
अनमोल ख़ज़ाना – शान्ति सेठी
अन्तर की आवाज़ – सी. डब्लयू. सैंडर्स
अमृत नाम – महिन्दर सिंह जोशी
अमृत वचन – संकलित
उपदेश राधास्वामी – सहगल, शंगारी, भण्डारी, 'ख़ाक'
जिज्ञासुओं के लिए – टी. आर. शंगारी
धरती पर स्वर्ग – दरियाईलाल कपूर
नाम-सिद्धान्त – शंगारी, 'ख़ाक', भण्डारी, सहगल
परमार्थ परिचय – हेक्टर एस्पॉण्डा डबिन

मार्ग की खोज में – फ़्लोरा ई. वुड
मेरा सतगुरु – जूलियन पी. जॉनसन
रूहानी डायरी, भाग 1, 2 – राय साहिब मुंशीराम
सन्तमत विचार – टी. आर. शंगारी, कृपाल सिंह 'ख़ाक़'
सन्त-सन्देश – शान्ति सेठी
सन्त समागम – दरियाई लाल कपूर
हउ जीवा नाम धिआए – हेक्टर एस्पॉण्डा डबिन
हक़-हलाल की कमाई – टी. आर. शंगारी
हंसा हीरा मोती चुगना – टी. आर. शंगारी

रूहानी परंपरा

कामिल दरवेश शाह लतीफ़ – टी. आर. शंगारी
गुरु अर्जुन देव – महिन्दर सिंह जोशी
गुरु नानक का रूहानी उपदेश – जे. आर. पुरी
तुलसी साहिब – जनक पुरी, वीरेन्द्र कुमार सेठी, टी. आर. शंगारी
नाम-भक्ति: गोस्वामी तुलसीदास – के. एन. उपाध्याय, पंचानन उपाध्याय
परम पारस गुरु रविदास – के. एन. उपाध्याय
पलटू साहिब – राजेन्द्र कुमार सेठी, आर. सी. बहल
बोलै शेख़ फ़रीद – टी. आर. शंगारी
भाई गुरदास – महिन्दर सिंह जोशी
मीरा: प्रेम-दीवानी – वीरेन्द्र कुमार सेठी
शम्स तब्रीज़ी – फ़रीदा मैलिकी
सन्त कबीर – शान्ति सेठी
सन्त चरनदास – टी. आर. शंगारी
सन्त तुकाराम – चन्द्रावती राजवाडे
सन्त दरिया (बिहारवाले) – के. एन. उपाध्याय
सन्त दादू दयाल – के. एन. उपाध्याय
सन्त नामदेव – जनक पुरी, वीरेन्द्र कुमार सेठी, टी. आर. शंगारी
संत रज्जब – जनक गोरवानी
सरमद शहीद – टी. आर. शंगारी, पी. एस. 'आलम'
सहजोबाई और दयाबाई–प्रभुप्रेम का रूप – टी. आर. शंगारी
साईं बुल्लेशाह – जनक पुरी, टी. आर. शंगारी
सिंध की त्रिवेणी – जनक गोरवानी
हज़रत सुलतान बाहू – कृपाल सिंह 'ख़ाक'
विनती और प्रार्थना के शब्द – संकलित
संतों की बानी – संकलित

विश्व धर्मों में आध्यात्मिकता

अनंद साहिब – टी. आर. शंगारी
आसा की वार – टी. आर. शंगारी
जपु जी साहिब – टी. आर. शंगारी
जैन धर्म: सार सन्देश – के. एन. उपाध्याय

नितनेम की वाणियाँ और सलोक महला ९ – टी. आर. शंगारी
परमार्थी साखियाँ
बौद्धधर्म: उत्पत्ति और विकास – के. एन. उपाध्याय
रामचरितमानस का सन्देश – एस. एम. प्रसाद
शब्द की महिमा के शब्द – महाराज सावन सिंह जी
सिध गोस्ट और बारह माहा – टी. आर. शंगारी
सुखमनी – टी. आर. शंगारी

शाकाहार व्यंजन

वैष्णव भोजन, भाग 1, 2

बच्चों के लिये पुस्तकें

एक नूर ते सभ जग उपजआ – विक्टोरिया जोन्ज़
आत्मा का सफ़र – विक्टोरिया जोन्ज़

विविध विषय

नारी को अधिकार दो – लीना चावला
सहज की सौग़ात: डेरा बाबा जैमल सिंह

To order books on the internet, please visit: www.rssb.org
भारत में किताबें ख़रीदने के लिये कृपया नीचे लिखे पते पर लिखें:

राधास्वामी सत्संग ब्यास
बी. ए. वी. डिस्ट्रिब्यूशन सेंटर, 5 गुरु रविदास मार्ग
पूसा रोड, नई दिल्ली 110005